www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चौबीस गीता

(प्रथम खण्ड)

(मूल व सरल भाषानुवाद सहित जनोपयोगी संस्करण)

—※—

भाष्यकार:
वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
चार वेद, १०८ उपनिषद, षट्दर्शन, २० स्मृतियाँ,
१८ पुराणों के प्रसिद्ध भाष्यकार और लगभग
५५० हिन्दी ग्रन्थों के रचियता

—※—

प्रकाशक:
संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब (वेद नगर) बरेली (उ०प्र०)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकाशक :
डा० चमनलाल गौतम
संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब (वेद नगर)
बरेली (उ० प्र०)

*

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

*

सर्वाधिकार सुरक्षित

*

मुद्रक :
बनवारीलाल गुप्त
विश्व भारती प्रेस
मथुरा

*

प्रथम संस्करण
१९७१

*

मूल्य ७)५०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूमिका

'गीता" का शाब्दिक अर्थ है—गाया हुआ अथवा कथन किया गया। वैसे आजकल अध्यात्म और ज्ञान-सम्बन्धी छोटी रचनाओं का नाम प्रायः "गीता" हो गया है। इनमें से कुछ में आत्मा परमात्मा के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है, किसी में वेदान्त और ब्रह्मज्ञान की चर्चा की गई है, किसी में हठयोग आदि किसी योग विधि का विवेचन किया गया है, किसी में सम्प्रदाय विशेष के विधि विधानों का प्रतिपादन किया गया है और किसी में कर्मकाण्ड तथा वर्णाश्रम धर्म का विवरण ही पाया जाता है। पर एक बात अवश्य है कि प्रत्येक "गीताकार" ने अपना उद्देश्य अध्यात्म-पथ पर अग्रसर होकर मोक्ष प्राप्त करना ही माना है। उनका कथन है कि यदि कोई मनुष्य हमारे उपदेशानुसार आचरण करता है, भजन, साधन, उपासना अथवा कर्मकाण्ड द्वारा आत्मोन्नति करता है तो वह निश्चय ही भव-बन्धनों से छुटकारा पाकर परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त कर सकेगा।

इस दृष्टिकोण को सामने रख कर अनेक विद्वानों ने जिन "गीताओं" की रचना की है उनकी संख्या बहुत अधिक है। यद्यपि सामान्य पाठक "महाभारत" में युद्ध आरंभ होते समय भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन के प्रति कही गई "भगवत् गीता" को ही एक मात्र गीता समझते हैं, पर धार्मिक ग्रन्थों में उसके अतिरिक्त और भी अनेक "गीता" नाम की रचनायें यत्र-तत्र बिखरी हुई दिखलाई पड़ती हैं। "महाभारत" में ही पिंगल-गीता, शंपाक-गीता, मंकि-गीता, बोध्य-गीता, विचख्यु-गीता, हारीत-गीता, वृत्र-गीता, पराशर-गीता, हंस-गीता, अनुगीता, ब्राह्मणगीता, आदि अनेक गीताएँ मिलती हैं। इनके अतिरिक्त अवधूत गीता, शिव-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गीता, अष्टावक्र-गीता, ईश्वर-गीता, उत्तर-गीता, कपिल-गीता, गणेश-गीता, देवी-गीता, पांडव-गीता, ब्रह्म-गीता, भिक्षु-गीता, यम-गीता, राम-गीता, व्यास-गीता, सूत-गीता, सूर्य-गीता आदि भी विभिन्न पुराणों के अन्तर्गत अथवा स्वतंत्र पुस्तकों के रूप में मिलती हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि इन समस्त गीताओं में 'भगवत्-गीता" ही मुख्य है और अधिकांश गीताऐं उसी से प्रेरणा लेकर अथवा उसका अनुकरण करके रची गई हैं। कुछ लेखकों ने अपनी छोटी-छोटी रचनाओं को भी प्रचार की दृष्टि से 'गीता' का नाम दे दिया है। कितनी ही गीताऐं अपने साम्प्रदायिक मत का प्रतिपादन करने के लिये लिखी गई हैं। इस प्रकार अनेक दृष्टिकोणों और उद्देश्यों से लिखी जाने के कारण इन गीताओं के स्तर और योग्यता में काफी अन्तर पाया जाता है, फिर भी उनमें से कई में अध्यात्म सिद्धान्तों की अच्छी विवेचना की गई है और कुछ मौलिक विचार भी प्रकट किये गये हैं। यद्यपि "भगवत्-गीता" में ज्ञान, कर्म और भक्ति-योग का विवेचन बहुत मार्मिकता के साथ करके अध्यात्म का मार्ग-दर्शन अत्यन्त उत्कृष्ट रूप में किया गया है, फिर भी इन विभिन्न गीताओं में कहीं-कहीं अध्यात्म और आत्मज्ञान सम्बन्धी तथ्यों का विशेष रूप से प्रतिपादन किया गया है। कई गीताकारों ने इन्हीं सब सिद्धान्तों को सार रूप में संक्षेपतः वर्णन करने की चेष्टा की है, जिसमें बड़े ग्रन्थों को पढ़ सकने में असमर्थ पाठक उनसे लाभ उठा सकें। इन विभिन्न गीताओं का अनुशीलन करने से कभी-कभी हमको ऐसा प्रतीत होने लगता है कि वास्तव में उनमें एकाध महत्त्वपूर्ण अध्यात्म-सिद्धान्त को दो-चार श्लोकों में ही बड़े सरल और स्पष्ट रूप से समझा दिया है। बड़े ग्रन्थों के विशद विवेचन का अध्ययन कर सकने की जिनको सुविधा न हो ऐसे व्यक्ति भी उनसे कितने ही उपयोगी तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

इसी विचार से हम ने इस "चौबीस-गीता" ग्रंथ का प्रकाशन किया है। समस्त गीताओं को शीघ्र प्राप्त कर सकना और प्रकाशित कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकना तो संभव न था। जिन पुराणों में वे सम्मिलित हैं, उनमें से कितने ही बाजार में सर्वथा अप्राप्य है। केवल बड़ी बड़ी लायब्रेरियों में उनके दर्शन हो सकते हैं। फिर यदि उनको किसी प्रकार एकत्रित किया भी जा सके तो वह संग्रह इतना बड़ा हो जाता कि सर्व साधारण को उसका खरीदना और पढ़ना कठिन लगता। वैसे भी जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं सब गीताएँ एक समान महत्व पूर्ण नहीं है। उनमें से कितनी ही केवल अपने सम्प्रदाय की पुष्टि की निगाह से लिखी गई हैं और कुछ में केवल नित्य कर्म तथा कर्मकाण्ड सम्बन्धी बातों की ही चर्चा की गई है। इसलिये हमने उनमें से अध्यात्मिक सिद्धान्तों का निरूपण करने वाली गीताओं का ही अधिकांश में संकलन किया है। जिन गीताओं का विषय विवेचन एक दूसरे से मिलता-जुलता है, उनमें से भी एक को ही लिया है और अन्यों को छोड़ दिया है। हमें आशा है कि हमारी संग्रहीत ये चौबीस गीताएँ समस्त गीता साहित्य का सार रूप सिद्ध होंगी, और उनसे पाठक मुख्य-मुख्य अध्यात्म विषयक तत्त्वों का ज्ञान प्राप्त करने में कृतकार्य होंगे। नीचे हम इन विभिन्न गीताओं का संक्षिप्त परिचय देते हैं, जिससे पाठकों को उनके समझने में कुछ सहायता मिल सकेगी।

(१) ब्राह्मण-गीता—यद्यपि यह गीता आकार में अन्य गीताओं से कुछ छोटी ही है, पर इसमें अध्यात्म का विवेचन बड़ी बोधगम्य शैली में किया गया है लेखक ने आरम्भ में ही यह कह दिया है कि सामग्री, समिधा, घृत, सोम आदि से यज्ञ, हवन करना भी कर्म ही है, पर इस कर्म को राक्षस नष्ट करते रहते हैं। इसलिये सर्वोत्तम धर्म-कर्तव्य आत्म का ध्यान करना ही है। इस ज्ञान-यज्ञ में पाँचों इन्द्रियाँ तथा मन और बुद्धि को ही अग्नि की सात जिह्वाएँ मानकर यज्ञ-कर्म की कल्पना की गई है। गीताकार लिखते हैं—

"सूँघने वाला, भक्षण करने वाला, देखने वाला, स्पर्श करने वाला, सुनने वाला, मनन करने वाला और समझने वाला—यह सातों श्रेष्ठ ऋत्विज हैं। ये सातों होता सात हविष्यों का, सात रूपों में विभाजित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैश्वानर में भले प्रकार हवन करके अपने तन्मात्रादि योनियों में शब्दादि विषयों की उत्पत्ति करते हैं। पृथ्वी, वायु, आकाश, जल, तेज, मन और बुद्धि—ये ही सात योनियाँ कही गई हैं। इनके सभी गुण हविष्य रूप हैं। वे अग्निजनित गुण में प्रविष्ट होते हैं, तथा वे अन्तः करण में संस्कार रूप से स्थित रह कर अपनी योनियों में उत्पन्न होते हैं।"

ब्राह्मण–गीता में अध्यात्म विषयक समस्या को अनेक प्रकार से बहुत सूक्ष्य रूप में सुलझाया है और कहा है कि "मैं तो योग रूपी यज्ञ का ही अनुष्ठान किया करता हूं जिसमें ज्ञानाग्नि को प्रज्ज्वलित किया जाता है। इसमें प्राण को स्तोत्र, अपान को शस्त्र और सर्वस्व-त्याग को ही सर्वोत्तम दक्षिणा समझना चाहिये। अहंकार, मन और बुद्धि–यह तीनों ब्रह्म स्वरूप होकर होती, अध्वर्यु और उद्गाता होते हैं। नारायण को जानने वाले ज्ञानी पुरुष इस योग-यज्ञ को वेदानुकूल बतलाते हैं। वही नारायण इस सम्पूर्ण विश्व का संचालक है। जैसे जल नीचे की ओर बहता है वैसे ही ज्ञानी व्यक्ति उसकी प्रेरणा से ही कार्य किया करता है। यही मोक्ष का सच्चा मार्ग है।

(२) पाराशर स्मृति—इसमें धार्मिक जीवन व्यतीत करने के व्यावहारिक नियमों का विशेष रूप से वर्णन किया गया है। लेखक के कथनानुसार मनुष्य की उन्नति-अवनति तथा सुख-दुःख की प्राप्ति का मुख्य हेतु उसके जन्म-जन्मान्तर के कर्म ही हैं। जिस प्रकार बर्तनों पर सोने या चाँदी की कलई चढ़ाने पर वे सोने चाँदी के से दिखाई देते हैं, वैसे ही जीव अपने पूर्व कृत कर्मों के वश में रहता है। जैसे बीज के बिना कोई अंकुर उत्पन्न नहीं होता वैसे ही पुण्य-कर्म के बिना कोई सुख समृद्धि नहीं पा सकता। नास्तिक मनोवृत्ति वालों का कथन है कि "प्रारब्ध प्रत्यक्ष दिखलाई नहीं पड़ती और उसे प्रमाणित करने के लिये कोई अनुमान प्रमाण भी नहीं है।" "पर यह विचार बुद्धि संगत नहीं है, मनुष्य देह को त्यागने के पश्चात् पूर्व-जन्म के कर्मों को तो याद नहीं रख सकते, पर जब वे पहले जन्म के किसी कर्म का फल प्राप्त करते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो स्वयं ही चार प्रकार के कर्मों को याद करते हैं, धर्म करने का कोई समय निश्चिय नहीं है, क्योंकि मृत्यु किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। जब मनुष्य प्रत्येक क्षण मृत्यु-मुख में है, तब निरन्तर धर्म का आचरण करना ही उचित है। जैसे अंधे को कुछ दिखलाई नहीं देता परन्तु अपने प्रति-दिन के अभ्यास द्वारा वह प्रतिदिन बाहर से अपने घर में पहुंच जाता है, उसी प्रकार विवेकवान पुरुष योगयुक्त चित्त से व्यवहार करता हुआ परमगति को पा जाता है।"

गीताकार ने स्थान-स्थान पर नीति का भी बड़ा सुन्दर उपदेश दिया है। कहा है कि "जिस कर्म की हम निन्दा करें उसे स्वयं कभी नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति स्वयं कोई त्रुटि करता हो और उसी त्रुटि के कारण दूसरे की निन्दा करे वह उपहास का पात्र बनता है। इस दृष्टि से डरपोक क्षत्रिय, सर्व भक्षी ब्राह्मण, अकर्मण्य वैश्य, आलसी शूद्र, श्रेष्ठ गुणों से रहित विद्वान्, आचरहीन कुलीन, सत्यभ्रष्ट धार्मिक, दुराचारिणी स्त्री, विषयों में आसक्त योगी, मूर्ख वक्ता, बिना राजा का राष्ट्र और प्रजा द्वेषी राजा यह सभी शोक करने योग्य हैं।"

सांसारिक धर्मो का पालन करते हुये क्रमशः पाप-पुण्य कर्मों की आसक्ति त्याग कर परमब्रह्म में लीन होने का प्रयत्न करे, क्योंकि यही भवसागर से पार होने का सच्चा मार्ग है।

(३) भीष्म-गीता—इसके आरम्भ में लोभी स्वभाव के दोषों का जो वर्णन किया गया है वह सराहनीय है। जैसा किसी कवि ने कहा है कि "लोभ पाप को मूल है" उसी प्रकार भीष्म जी ने भी पाप का अधिष्ठान लोभ को ही बतलाया है। "लोभ उस ग्राह के समान है जो मनुष्य को निगलने के लिये सदा तैयार रहता है। लोभ से ही पाप, अधर्म तथा महान् दुःख उत्पन्न होते हैं। वही शठता और कपट का मूल कारण है। लोभ से ही मनुष्य पापाचारी हो जाता है। लोभ से ही क्रोध एवं काम की उत्पत्ति होती है। माया-मोह, अभिमान, उद्दण्डता, पराधीनता आदि दोषों का मूल भी लोभ ही होता है। अथवा, निर्लज्जता, श्रीहीनता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मनाश, चिन्ता, अपयश की उत्पत्ति का कारण भी लोभ ही है। लोभ से ही कृपणता, घोर तृष्णा, शास्त्र-विरुद्ध कर्म, कुल तथा विद्या का अहंकार, रूप और एश्वर्य का मद, सभी प्राणियों के प्रति द्रोह तथा तिरस्कार का भाव, सब के प्रति अविश्वास और कुटिलता की उत्पत्ति होती है। परधन का अपहरण, परनारी से दुराचार, वाणी और मन का आवेश, परनिन्दा की मनोवृत्ति, जननेन्द्रिय का असंयम, पेटूपन, आत्महत्या की प्रवृत्ति, ईर्ष्या, मिथ्यावादिता, घृणा, आत्म-प्रशंसा, मत्सरता, पाप, दुष्कर कर्मों में प्रवृत्ति, अनुचित कार्यों की ओर झुकाव आदि लोभ से ही होते हैं।"

इससे आगे चल कर भीष्म जी ने अज्ञान के कुपरिणाम, संयम, तप, सत्य आदि का महत्त्व, मैत्री-भाव का शुभ फल, उपवास की आवश्यकता, क्रोध का त्याग दुष्टजनों का त्याग आदि अनेक जीवनोपयोगी गुणों पर प्रकाश डाला है। राजा के धर्मों का भी मार्मिकता के साथ वर्णन किया है क्योंकि उसे शासन-संचालन के लिये सभी प्रकार के व्यक्तियों से सम्पर्क रखना पड़ता है। पापी मनुष्यों की इस लोक और परलोक में जो दुर्गति होती है, उसके सम्बन्ध में भी अनेक तथ्य पूर्ण बातें इस गीता में मिलती हैं। इस दृष्टि से उसे नीति का भंडार ही कहना यथार्थ है। इसके अन्त में जो गौतम ब्राह्मण और राजधर्मा हंस का आख्यान दिया गया है वह सज्जनता और दुष्टता का एक शिक्षाप्रद उदाहरण है।

(४) युधिष्ठिर गीता—इसमें दान देने के सम्बन्ध में सामान्य नियम बतलाये हैं, जिनको प्राचीन काल में उचित माना जाता था। दान का सर्वोत्तम पात्र ब्राह्मण को ही माना गया है, पर वह सत्पात्र और ज्ञानी होना चाहिए। जिसने ब्राह्मण के कर्मों को त्याग दिया है, जो परोपकार और परमार्थ के मार्ग को त्याग कर मुफ्त के धन से उदरपोषण करना ही सबसे बड़ा काम समझता है उसे दान देने से पुण्य के स्थान में उल्टा पाप होता है। कहा गया है कि जो ब्राह्मण श्रोत्रिय, निर्धन, दरिद्रता के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कारण तिरस्कृत जीवन व्यतीत करने वाला हो गौ-दान उसी को करे, धनवान ब्राह्मण को न करे। धनवान को दान करने से क्या लाभ ?" आगे चल कर यमलोक के वर्णन में बतलाया गया है कि दुष्कर्म और दूसरों का अपकार करने वालों की परलोक में बड़ी दुर्दशा होती है। उपवास का महत्व भी बहुत कहा गया है, एक मास तक उपवास करने वाले मरणोपरान्त हँसों के यान में और छः दिन उपवास करने वाले मयूर-यान में जाते हैं। तीन दिन उपवास करने वालों को पुण्यलोक की प्राप्ति होती है। हम इसका अर्थ यही समझते हैं कि जो खान-पान में पूर्ण संयमी है और सामयिक उपवास करके जो स्वास्थ्य को ठीक रखते हैं वे ही सुखी-जीवन व्यतीत करते हैं।

गायत्री जप का विशेष महत्व भी इस 'गीता' में बतलाया गया है। जो दोनों समय सभी को पवित्र करने वाली वेदमाता भगवती गायत्री का जप करता है, वह उन्हीं की कृपा से पवित्र और पापरहित हो जाता है। यदि कोई ग्रह उसके लिये अनिष्टकारी हो तो वह भी गायत्री के प्रभाव से मङ्गलकारी बन जाता है। भयंकर रूप और क्रूर कर्मों वाले राक्षस भी गायत्री-भक्त का अनिष्ट नहीं कर सकते। इस प्रकार गायत्री उपासना लोक-परलोक सर्वत्र कल्याण करने वाली है। अन्त में कुवलाश्व की कथा दी गई है जो मार्कण्डेय पुराण में विस्तृत रूप में वर्णित है।

(५) मनुगीता—इसमें परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग दिखलाते हुए कर्मफल के त्याग करने पर विशेष रूप से जोर दिया गया है। साथ ही उस परमात्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा है—

"वह अनिर्वचनीय वस्तु विभिन्न प्रकार के रस-गन्धों से रहित है। शब्द, स्पर्श और रूप से भी दूर है। मन, बुद्धि और वाणी द्वारा भी अग्राह्य है। वह अव्यक्त, अद्वितीय और रूप रंग से हीन है, तो भी उसी ने प्रजाओं के लिये पाँचों विषयों को रचा है। वह न स्त्री है, न पुरुष है और न नपुंसक ही है। न वह सत् है, न असत् और न सदसत् प्रकार से उभय रूप वाला है। ब्रह्मज्ञानी ही उसका साक्षात् कर सकते हैं। वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कभी क्षय नहीं होता इसलिये उस अविनाशी ब्रह्म को अक्षर भी कहते हैं अविनाशी ब्रह्म से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से इस पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। फिर पृथ्वी पर समस्त पार्थिव जगत उत्पन्न होता है। जब इस जगत का अन्त होने लगता है तो सब प्राणियों के साथ पृथ्वी जल में, जल अग्नि में, अग्नि वायु में और वायु आकाश में लीन हो जाती है। यह प्रलय और पुनः सृष्टि होने का नियम है। परन्तु ज्ञानीजन उस मोक्ष स्वरूप परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होकर इस जगत में पुनर्जन्म धारण नहीं करते।"

"मनु-गीता" के लेखक ने सृष्टि की उत्पत्ति सांख्य सिद्धान्त के अनुसार मानी है। उनका मत यह है कि सभी प्राणी प्रकृति से उत्पन्न होते और अन्त में उसी में लीन हो जाते हैं। पुरुष, प्रकृति, पाँचों विषय, दसों इन्द्रियाँ, अहंकार, मन और पंचभूत इन पच्चीस तत्वों के समूह को ही प्राणी कहा गया है। बुद्धि आदि तत्व पहले प्रकृति से ही उत्पन्न हुये। फिर दूसरी बार वे मैथुन धर्म से सम्पन्न होकर प्रकट होने लगे। पुरुष का आत्मा अव्यक्त है और उसके कर्म व्यक्त हैं, इसलिये मरण काल में वह अव्यक्तत्व को प्राप्त होता है। परन्तु कामनाओं के कारण वह संसार में पुनः लौट आता है।

(६) जापक-गीता—इसमें जप की श्रेष्ठता दिखलाने के लिये एक ऐसे साधक का उपाख्यान कहा गया है, जिसने केवल जप को ही अपने जीवन का एक मात्र उद्देश्य बना लिया था। जब सावित्री देवी उसे वरदान देने आई तब भी उसने यही याचना की कि उसका चित्त सदैव जप में लगा रहे और वह कभी उससे विलग न हो। दीर्घकाल तक जप करने के उपरान्त जब उसका अन्त समय आया तब भी उसने धर्मराज से यही कहा कि जहाँ जप नहीं हो सकता वहाँ मैं नहीं जाऊँगा। उसी अवसर पर वहाँ महाराज इक्ष्वाकु आ पहुंचे। जापकने उनका स्वागत कर के कहा कि आपकी जो इच्छा हो वह मुझ से माँग लीजिये। राजा ने पहले तो क्षत्रिय धर्म के विरुद्ध होने के कारण कुछ माँगना अस्वीकार किया, पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब जापक ने बार-बार कहा तो उन्होंने उसके समस्त जप का फल माँग लिया। जापक इसके लिये तैयार होगया, पर बाद में उन दोनों में विवाद छिड़ गया और जापक ने कहा कि अब अगर आप मेरा दान ग्रहण नहीं करते तो मिथ्याभाषी ठहरेंगे। अपने कथन को प्रमाणित करते हुए उसने कहा—

"आपने कहा—'दीजिए' और मैंने कहा था—'दूंगा' तो अब मैं अपनी बात मिथ्या नहीं होने दूँगा। आप भी सत्य की रक्षा के लिये दृढ़ हो जाइये। मिथ्याभाषी को इस लोक या परलोक में कहीं भी सुख प्राप्त नहीं होता। वह अपने पूर्वजों का भी उद्धार नहीं कर सकता तो संतति का उद्धार भी किस प्रकार करेगा? हे राजन्! जिस प्रकार सत्य परलोक में जीवों को तारता है, उस प्रकार यज्ञ, वेदाध्ययन, दान और नियम भी तारने में समर्थ नहीं है। अब तक लोगों ने जितने तप किये हैं और आगे भी जितने करेंगे, उन सबको सौ गुणा अथवा लक्ष गुणा करे तो भी सत्य से बढ़ कर उनका महत्व नहीं हो सकता।" इस प्रकार जापक ने सत्य के महत्व की जो स्थापना की वह सदैव स्थिर रहेगी।

(७) हंसगीता—यह बहुत छोटी रचना है, पर इससे सार रूप में मानवीय सद्गुणों का जो वर्णन किया गया है, वह ध्यान देने योग्य है। इस में क्रोध के त्याग और क्षमाशीलता की श्रेष्ठता की बड़ी सराहना की गई है। यद्यपि सामान्य जन यही समझते हैं कि क्रोधी और अहंकारी मनुष्य दूसरों को अपमानित या प्रताड़ित करके अपने को बड़ा अथवा शक्तिशाली सिद्ध करता है, पर वास्तव में उसका हृदय उद्वेग और द्वेष भाव के कारण घोर अशान्त रहता है। कहा है—

"विद्वान् पुरुष को यदि कोई वाग्बाण चोट पहुंचाये तो भी उसे शान्त रहना चाहिए। दूसरों के क्रोध को सह कर भी जो प्रसन्न रहता है वह क्रोध करने वाले के पुण्य को स्वयं ग्रहण कर लेता है। जो दूसरे से गाली सुन कर भी बदले में गाली नहीं देता, उस क्षमाशील पुरुष की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सहनशीलता ही गाली देने वाले को भस्म कर देती है। जो किसी से कठोर वचन सुन कर उससे कोई अप्रिय बात नहीं कहता तथा जो किसी से आहत होकर धैर्य रखता है, मारने वाले को न मारता है, न उसकी हानि की इच्छा करता है, उस महान आत्मा से भेंट करने की देवगण भी इच्छा किया करते हैं।"

आगे चल कर सत्य की प्रशंसा में कहा है कि "जिस प्रकार जहाज के द्वारा समुद्र पार किया जाता है, वैसे ही सत्य स्वर्ग लोक तक पहुंचने की सीढ़ी है। जो स्वभाव से सत्यभाषी और धर्म-परायण हैं देवता उन्हीं के निकट आते हैं। व्यर्थ भाषण की अपेक्षा मौन रहना उत्तम है। सत्य भाषण वाणी की दूसरी विशेषता है। प्रिय बोलना तीसरी और धर्मसम्मत बात कहना चौथी विशेषता है। ऐसे ही विभिन्न कल्याणकारी सदुपदेशों से यह गीता भरी है।

(८) कौशिक गीता—इसमें अपनी तपस्या की शक्ति से एक बगुली को जला देने वाले कौशिक ब्राह्मण, एक पतिव्रता स्त्री और धर्म व्याध की कथा कही गयी है। स्त्री ने कौशिक को क्रोध न करने का उपदेश देते हुए कहा—"मनुष्य का एक महान् शत्रु उसके शरीर में ही रहता है, जिसे 'क्रोध, कहते हैं। पर देवगण उसी को ब्राह्मण मानते हैं जिसने क्रोध और मोह को त्याग दिया है। जो सदा सत्य बोले, गुरु को सन्तुष्ट रखे, हिंसित किया जाने पर भी दूसरे की हिंसा करने को उद्यत न हो उसी को देवगण ब्राह्मण कहते हैं। जिसने इन्द्रियों को और काम-क्रोध को जीत लिया है, जो धर्मपरायण और स्वाध्याय में तत्पर रहता है, तथा जो सब प्रकार से पवित्र है, जो धर्मज्ञ और मनस्वी पुरुष सम्पूर्ण संसार के प्रति आत्मभाव रखता है तथा जो सभी धर्मों में समान श्रद्धा रखता है उसे देवगण ब्राह्मण कहते हैं।"

पतिव्रता स्त्री के उचित उपालम्भ से कौशिक की आँखें खुल गईं और वह तपस्वी और ब्राह्मणत्व के झूठे अभिमान को त्याग कर विनीत भाव से स्त्री के बतलाये धर्म व्याध के पास ज्ञान प्राप्त करने पहुंचा।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसका उपदेश सुन कर उसने जिज्ञासा की 'कि हे महामते मुझे आप शिष्टाचार का मार्ग बतलाइये, जिससे मैं अन्य व्यक्तियों के साथ प्रिय व्यवहार कर सकूँ।" धर्मव्याध ने उत्तर दिया--"काम, क्रोध, लोभ, दम्भ और कुटिलता को वश में कर लेने वाले तथा सत्य भाषण में अनुरक्त व्यक्ति शिष्ट कहे जाते हैं और अन्य शिष्ट व्यक्ति उनका आदर करते हैं। उनमें स्वेच्छाचारिता नहीं होती और वे सदैव सदाचार का पालन करते हैं। इस प्रकार के आचरण से जो श्रेष्ठ प्रतिष्ठा प्राप्त होती है, वह किसी अन्य प्रकार से प्राप्त नहीं हो सकती।" इस प्रकार यह "गीता" उपाख्यान के रूप में होने पर भी उच्चकोटि के आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक तथ्यों से युक्त है और विशेष रूप से शिक्षाप्रद है।

(६) विदुर गीता--विदुरजी महाभारत काल के बड़े सदाचारी, नीतिज्ञ और न्यायप्रिय व्यक्ति थे। यद्यपि वे कौरवों के आश्रित थे, पर उनके अनीतिपूर्ण कार्यों को देख कर वे सदैव पाण्डवों के शुभचिन्तक बने रहे और जहाँ तक संभव हुआ उनको कल्याणकारी परामर्श भी देते रहे जब महाभारत संग्राम में समस्त कौरव-पक्ष का नाश होगया और इस कारण महाराज धृतराष्ट्र शोक सागर में निमग्न हो रहे थे, तो विदुरजी ने उनको भी समयानुकूल धर्म का उपदेश दिया। उन्होंने प्राणियों के जीने मरने के विषय में जो कुछ कहा वह अधिकांश में भगवत् गीता से मिलता जुलता ही है। उन्होंने कहा—

"सभी संयोगों का अन्त वियोग में है और सभी के जीवन का अन्त निश्चय ही मृत्यु के रूप में होता है। शूरवीर और कायर दोनों ही प्रकार के व्यक्ति अन्त में काल के ग्रास बनते हैं। युद्ध न करने वाले भी मृत्युको प्राप्त होते हैं और युद्ध करने वालों में से अनेक जीवित भी बच जाते हैं। जब काल आता है तब उसका उल्लंघन करने में कोई समर्थ नहीं होता।" इस विषय में विदुर गीता का कथन है--

अभावादीनि भूतानि भाव मध्यानि भारत।
अभाव निधनान्येव तत्र का परिदेवना॥ (श्लोक. ६)

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह सिद्धान्त "भगवत् गीता" में भी ज्यों का त्यों पाया जाता है—

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।
अव्यक्त निधनान्येव तत्र का परिदेवना ।। (२–२८)

"विदुर-गीता" के श्लोक में "अव्यक्त" के स्थान पर "अभाव" शब्द का प्रयोग किया गया है, शेष शब्द ज्यों के त्यों है । इस प्रकार इस की रचना "भगवतगीता" के आदर्श पर ही की गई है, जो मत पुत्रों का शोक न करने का उपदेश देते समय आवश्यक भी था । समस्त 'विदुर गीता' ऐसे ही उच्च कोटि के अध्यात्म तत्वों से भरपूर है ।

(१०) जाजलि-गीता—इसके आरम्भ में ही युधिष्ठिर ने धर्म के औचित्य के सम्बन्ध में कुछ ऐसे प्रश्न किये हैं, जो वर्तमान समय के आलोचकों के कथनों से मिलते-जुलते हैं । उसने भीष्म पितामह से कहा कि "आपने यद्यपि मेरे हृदय में उठे अनेक प्रश्नों का समाधान कर दिया है, पर अब मैं जिज्ञासा के रूप में एक अन्य प्रश्न पूछना चाहता हूँ । यह सत्य है कि धर्म से ही जीवन धारण और उसका उद्धार होता है, परन्तु उस धर्म का ज्ञान केवल वेद पाठ से कैसे सम्भव है ?" सुविधाजनक स्थिति में रहने वाले मनुष्य का जो धर्म होता है विपत्ति में पड़े व्यक्ति का उससे भिन्न होता है । आपद्धर्म का ज्ञान केवल वेदपाठ से नहीं हो सकता । शास्त्र के जानने वालों ने धर्म का प्रमाण वेद को ही माना है । परन्तु सुना जाता है कि युग-युग में वेदों का ह्रास होता है । सत्युग के धर्म से त्रेता और द्वापर के धर्मों में भिन्नता होती है, और कलियुग का धर्म तो नितान्त भिन्न कहा गया है । ऋषियों ने धर्म की व्यवस्था मनुष्यों की शक्ति के अनुकूल ही की है । पर वेदों का कथन एकांगी सत्य की तरह है । वेदों से ही स्मृतियों का भी प्रसार हुआ है । यदि सभी वेद प्रामाणिक हैं तो स्मृतियाँ भी प्रामाणिक होंगी । परन्तु जब वेदों की प्रामाणिकता ही स्थिर न रहेगी तो स्मृतियाँ कैसे प्रामाणिक कही जायेंगी ? धर्म का अनुष्ठान होते समय बलवान दुरात्माओं द्वारा जो विकार उत्पन्न किये जाते हैं, उसके कारण धर्म की मर्यादा ही मिट जाती है । धर्म के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्ध में आलोचना होने पर वह गंधर्व नगर के समान एक भ्रम दिखाई देता है, फिर विद्वानों द्वारा विचार करने पर वह अदृश्य हो गया जान पड़ता है।"

"धर्म" की इस आधुनिक ढंग की आलोचना के समाधान में भीष्मजी ने जाजलि तपस्वी और तुलाधार वैश्य का जो सम्वाद सुनाया, उसमें स्वीकार किया गया है कि स्वार्थी धर्म याजकों ने सच्चे निष्काम यज्ञ के स्वरूप को विकृत कर डाला है। सच्चा यज्ञ हार्दिक श्रद्धा और अहिंसा पर ही आधारित है, ओर उसको करने से ही धर्म की प्राप्ति हो सकती है।

(११) महेश्वर-गीता—आरम्भ में पार्वती और शिव के प्रश्नोत्तर के रूप में यह बतलाया गया है कि महादेव की अशुभ वेष भूषा, विचित्र वाहन वृषभ, अपवित्र निवास स्थल श्मसान, भूत-पिशाचों की सेना साथ में रखना, भंग धतूरा जैसे विषाक्त पदार्थों का प्रयोग आदि का क्या कारण है? उन्होंने उत्तर दिया कि वे ये सब काम विश्व के हितार्थ, प्राणियों के पालनार्थ ही करते हैं। फिर पार्वतीजी ने लोक कल्याणार्थ धर्म का स्वरूप कथन करने की प्रार्थना की तो भगवान् शिव ने धर्म का पहला लक्षण "अहिंसा" ही बतलाया।

"किसी प्राणी की हिंसा न करना, सत्य वचन, जीवों पर दया, मन और इन्द्रियों का संयम, यथाशक्ति दान—यही गृहस्थाश्रम का श्रेष्ठ धर्म है। परनारी के संसर्ग से बचना, किसी की वस्तु बिना पूछे न लेना, माँस-मदिरा का सेवन न करना यह पाँच नियम कल्याणकारी हैं।" आगे चल कर भी समस्त प्राणियों की रक्षा और यज्ञ आदि के नाम पर किसी प्रकार की हिंसा न करने पर जोर दिया गया है। अधिकांश विद्वान् वैष्णव धर्म और जैन धर्मों को ही अहिंसा और जीव दया का विशेष रूप से अनुयायी मानते हैं, और शैव तथा तांत्रिकों में जो शिव के उपासक कहलाते हैं, मांस-मद्य आदि का बन्धन कम देखने में आता है। पर "महेश्वर गीता" के लेखक ने सर्वत्र अहिंसा का ही प्रतिपादन किया है, जिसे इसकी एक मुख्य विशेषता समझना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शूद्रों के सम्बन्ध में भी इसमें बहुत अधिक उदार विचार प्रकट किये गये हैं जो स्मृतियों आदि में मिलने वाले नियमों और कट्टरतायुक्त विधि विधानों से कहीं अधिक उच्च कोटि के हैं। कहा है कि—"जो शूद्र सत्यभाषी, जितेन्द्रिय और आतिथ्य-परायण है वह महान तप का भागी होता है। उसका सेवा कार्य ही उसके लिये एक बड़ी तपस्या है। सदाचार का सदा पालन और देवताओं तथा द्विजों की पूजा करने वाला बुद्धिमान् शूद्र अपने धर्म का इच्छित फल प्राप्त करता है। इस प्रकार शूद्र सब धर्मों को प्राप्त करने वाले माने जाते हैं। ब्राह्मण आदि तीनों वर्ण शूद्रों के आधार पर ही माने जाने चाहिये। कारीगरी, शिल्प, नाट्य कला आदि शूद्रों के ही कर्त्तव्य कहे गये हैं। ये सब समाज के लिये आवश्यक है। इसलिये शूद्र का महत्त्व किसी से कम नहीं है।"

इस प्रकार "महेश्वर गीता" में अधिकाँश धर्म शास्त्रों में वर्णित चारों वर्ण और आश्रमों के धर्मों का ही वर्णन किया गया है। इस संबंध में उसके विचार बहुत उदार, स्पष्ट और बुद्धिसंगत भी हैं और उनका अनुकरण करने से मनुष्यों का कल्याण होना निश्चित है।

(१२) मङ्कि-गीता—यह एक बहुत ही छोटी रचना है, पर इसमें एक उपाख्यान के रूप में कामना और तृष्णा के फन्दे में पड़ जाने वाले मनुष्य का जो चित्रण किया है वह वास्तव में शिक्षाप्रद और सांसारिक पदार्थों की लिप्सा का स्पष्टतः निराकरण करने वाला है। मंकि ऋषि का यह कथन यथार्थ ही है कि "धन की कामना सुख देने वाली नहीं है। धन मिल जाने पर भी उसकी रक्षा आदि की बड़ी चिन्ता उत्पन्न हो जाती है। यदि वह एक बार प्राप्त होकर फिर नष्ट हो जाय तब तो उससे भयंकर दुःख की प्राप्ति होती है। उद्योग करने पर धन का मिलना, न मिलना भी निश्चित नहीं है।" इसलिये संसार में जीवन निर्वाह के लिये निष्काम भावना रखनी ही सर्वोत्तम है। ऐसा व्यक्ति सम्पत्ति और विपत्ति दोनों में समभाव और ठीक मानसिक संतुलन रखने वाला होता है और वह चाहे घर में रहे चाहे वन में, सांसारिक सफलता असफलता उसकी मानसिक शांति को भंग नहीं कर सकतीं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(१३) याज्ञवल्क्य-गीता—महर्षि याज्ञवल्क्य राजा जनक के आध्यात्मिक गुरु थे। पौराणिक कथाओं से विदित होता है कि वे भारत वर्ष के एक बहुत बड़े तत्त्ववेत्ता और आत्मज्ञानी महापुरुष थे। उनकी रचित याज्ञवल्क्य स्मृति अभी तक अनेक विषयों में प्रमाणभूत मानी जाती है। राजा जनक के प्रश्न करने पर उन्होंने सृष्टि और प्रलय का जो वर्णन किया है वह अन्य पौराणिक वर्णनों की अपेक्षा बहुत स्पष्ट और बुद्धि गम्य है। उदाहरणार्थ जब यह कहा गया कि "प्रकृति जड़ मानी गई है और वह परम तत्त्व (पुरुष) के अधिष्ठान से ही जगत् की रचना और संहार करने में समर्थ होती है।" तो राजा जनक ने शंका की कि "प्रकृति और पुरुष दोनों का ही आदि अन्त नहीं है। वे दोनों ही अमूर्त और अविचल हैं। दोनों ही बुद्धि के द्वारा अग्राह्य हैं। फिर इन दोनों में से एक प्रकृति को ही जड़ क्यों कहा गया ?" इस पर याज्ञवल्क्य जी ने बताया कि "जो निर्गुण है वह सगुण नहीं हो सकता, और सगुण को निर्गुण नहीं बना सकते। अव्यक्त प्रकृति स्वभाव से ही गुणमयी है। वह गुणों को कभी लाँघ नहीं सकती और उन्हीं गुणों को काम में लाती है तथा ज्ञानहीनता भी उसके स्वभाव में है। परन्तु पुरुष स्वभावतः ज्ञान-मय है। क्षर-अक्षर होने के कारण भी वह जड़ ही हो सकती है। पुरुष नित्य होने के कारण चेतन है। परन्तु जब वह पुरुष गुणों के साथ मिल जाता है तो अपने स्वरूप को भूल कर भव-बन्धनों में ग्रस्त हो जाता है। जब वह पुनः अपने स्वरूप को जानकर स्वयं को सृष्टि का कर्त्ता मानने लगता है तो 'सर्ग धर्मा' हो जाता है।"

आगे चल कर योग साधन की विधि बतलाई है जिससे मनुष्य समाधि-अवस्था को प्राप्त होकर परमात्मा का सान्निध्य प्राप्त कर लेता है। ऐसा योगी महान अंधकार के मध्य प्रकाशित प्रज्ज्वलित अग्नि के समान हृदय में निवास करने वाले अविनाशी परब्रह्म से साक्षात्कार करता है। इस साधना को करने वाला योगी दीर्घकाल के पश्चात् अपने जड़ शरीर को छोड़ कर केवल परब्रह्म परमात्मा को ही प्राप्त होता है। यही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योगियों का योग है। इसके अतिरिक्त योग का अन्य क्या लक्षण हो सकता है? जो इसे जान लेते हैं, वे मनीषी पुरुष कृतकृत्य हो जाते हैं।"

महर्षि याज्ञवल्क्य ने योग के सम्बन्ध में और भी बहुत सी महत्त्व-पूर्ण ज्ञातव्य बातें कही हैं। और सूर्य से वरदान प्राप्त करके उन्होंने किस प्रकार शुक्ल यजुर्वेद और अन्य महान् ग्रन्थों की रचना की यह भी सवि-स्तार बतलाया है। इस दृष्टि से "याज्ञवल्क्य गीता" निस्सन्देह एक अनु-पम रचना है, जिससे हम अनेक बहुमूल्य शिक्षाऐं प्राप्त कर सकते हैं।

(१४) वसिष्ठ-गीता—इसमें क्षर-अक्षर का प्रश्न उठाकर सांख्य के चौबीस क्षर-तत्त्वों का निरूपण किया है। पच्चीसवां तत्त्व जो निराकार परब्रह्म है उसी को केवल अक्षर माना गया है। फिर इन चौबीस क्षर-तत्त्वों के संयोग से उस अक्षर तत्त्व में भी क्षर के से लक्षण दिखाई पड़ने लगते हैं। इस फन्दे में फँस कर अज्ञानी जीव कैसे-कैसे खेल खेलता है इसका वर्णन बड़ा प्रभावशाली है—

"वह अज्ञानी जीव अनेक प्रकार के वस्त्र धारण करता, विचित्र भोजनों को खाता और भाँति-भाँति के रत्नाभूषणों को धारण करता है। कभी एक रात्रि के अन्तर से भोजन करता, कभी एक बार अन्न ग्रहण करता, कभी दिन के चौथे, छठे या आठवें प्रहर में भोजन करता है। कभी एक मास तक लगातार उपवास करता, कभी फल खाकर रहता, कभी कन्द मूल से जीवन निर्वाह करता है। कभी गोमूत्र, कभी साग, फूल अथवा सेवार खाता है। कभी जल के आचमन मात्र से सन्तोष करता है। कभी शुष्क पत्र और वृक्ष से गिरे फलों को खाता है। इस प्रकार सिद्धि प्राप्त करने के लिये विभिन्न प्रकार के कठोर नियमों का पालन करता है। वह अनेक धार्मिक चिह्नों को धारण करता है। कभी चारों आश्रमों का अनुसरण करता है और कभी इसके विपरीत मार्ग का अनु-गामी होता है।"

जिन कर्मों को आजकल "धर्मात्मा" कहलाने वालों ने सर्वाधिक पुण्यप्रद समझ रखा है उन सबको वसिष्ठ गीताकार ने अज्ञान का खेल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बतलाया है। वास्तव में मोक्ष इन बाह्य क्रिया-कर्मों से प्राप्त नहीं हो सकती। उसके लिये ज्ञान ही मुख्य आधार है। ज्ञान के साथ जो साधारण धर्माचरण किया जाता है, वह भी महान् फलदायक होता है।

(१५) मार्कण्डेय-गीता—इसके आरम्भ में ऐसे महापुरुषों का वर्णन किया गया है जो पूर्ण सदाचार, सत्य और न्याय का जीवन व्यतीत करते हैं और इस कारण मृत्यु से भी कभी भयभीत नहीं होते। इस संबंध में मुनिवर अरिष्टनेमि ने कहा था कि—"हम पर मृत्यु का कोई वश नहीं चलता। हम शुद्ध आचरण वाले, आलस्य रहित, संध्योपासन परायण, शुद्ध अन्न भोजी, न्याय पूर्वक उपार्जन करने वाले और ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले हैं। हम सत्य को ही जानते हैं, झूँठ से सदा दूर रहते हैं और धर्म पालन में सदैव तत्पर रहते हैं, इसलिये हमें मृत्यु से कुछ भी भय नहीं है।" निश्चय ही सदाचार और कर्मण्यता बहुत बड़ी शक्तियाँ हैं। जहाँ इन दोनों का समन्वय हो जाय वहाँ किसी बात की कमी नहीं रह सकती।

आगे चल कर राजा पृथु के यज्ञ और उसमें गौतम तथा अत्रि की कलह तथा वाग्युद्ध की कथा है। यह वर्णन चाहे सत्य हो अथवा काल्पनिक पर उससे यह अवश्य प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में भी जब धार्मिक-जन त्याग-तपस्या का जीवन व्यतीत करते थे, तब भी वंशगत श्रेष्ठता के अहंकार और अपनों के प्रति पक्षपात का दोष लोगों में काफी मात्रा में पाया जाता था। गौतम ने कहा—"तुम्हारी बुद्धि चंचल है, फिर कभी इस प्रकार न कहना। हमारे प्रथम प्रजापति के रूप में यहाँ साक्षात् इन्द्र उपस्थित है।" अत्रि ने कहा "यह पृथु ही प्रजापति है, यही इन्द्र और यही विधाता है।" इस पर गौतम बोले—"मैं तो तुम्हें मूर्ख या बालक के समान देखता हूँ, यद्यपि किसी कारण से तुम वृद्ध दिखाई पड़ते हो।" जब हम ब्रह्मा के मानस पुत्र सप्त ऋषियों की यह दशा देखते हैं और साथ ही विश्वामित्र और वसिष्ठ की जन्म जात शत्रुता की बात याद करते हैं तो यही समझ में आता है कि इस जगत् में धर्म की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बात कह लेना या उसके रहस्य को जान लेना सहज है पर उस पर आचरण करना विरले व्यक्तियों के लिये ही संभव है—

(१६) भृगु-गीता—इसमें विश्व के स्वरूप का जैसा वर्णन किया गया है, वह आधुनिक वैज्ञानिक खोजों से बहुत कुछ मिलता जुलता है। जहाँ अन्य पुराणों में तारागणों को सूर्य चन्द्र की अपेक्षा बहुत नगण्य और समीप ही बतलाया है, भृगुजी ने स्पष्टतः कहा है कि "इस आकाश का कहीं अन्त नहीं है और सूर्य चन्द्रमा में से ऊपर नीचे जाने पर सूर्य और अग्नि के समान तेज वाले "देवता" अपने प्रकाश से स्वयं प्रकाशित होते हैं। परन्तु उन तेजस्वी नक्षत्र रूपधारी देवताओं को भी आकाश का अन्त दिखाई नहीं देता क्योंकि यह अनन्त और दुर्गम है। आकाश का, जल का, अग्नि का और पवन का परिणाम जानना देवताओं के लिये भी संभव नहीं। अग्नि, वायु, जल और पृथ्वी का उद्गम आकाश ही है और उससे भिन्न कुछ भी नहीं है।" इस अनन्त विश्व के स्वरूप का यही अनुमान एक-एक लाख मन भारी और पचासों गज लम्बी दूरवीनों का उपयोग करने वाले आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी लगाया है।

आत्मा, जीव, परलोक के सम्बन्ध में भी इसमें पूर्ण रूप से तर्कयुक्त प्रश्न किये गये हैं। जैसे "रक्त और माँस के संघात रूप, मेद, स्नायु और अस्थियों के संग्रह रूप इस देह को चीरने पर उसमें कहीं जीवात्मा तो नहीं मिलता। मरते समय इस आशा से गोदान किया जाता है कि यह गौ मुझे पार लगायेगी? मरने वालों में से किसी को पक्षी खा लेते हैं, कोई ऊपर से गिर कर खण्ड खण्ड हो जाता है, कोई अग्नि में जल जाता है, तब वे दुबारा जीवित कैसे हो सकते हैं? जब जड़ से कटे वृक्ष के मूल में पुनः अंकुर नहीं लगते, केवल नया बीज ही उग सकता है, तो मृत्यु को प्राप्त मनुष्य ही कहाँ से लौट आयेगा। प्राचीन काल में बीज मात्र उत्पन्न हुआ था, उसी से यह विश्व चलता चला जा रहा है। मरने वाले तो नष्ट होकर चले जाते हैं और बीज से बीज की उत्पत्ति होती रहती है।" इस प्रकार प्रत्यक्ष वादियों की तरह धर्म शास्त्रों के कथन की ऐसी छानबीन की गई है, कि हम इस गूढ़ विषय की तह तक पहुँच सकते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भृगुजी ने चारों वर्णों और आश्रमों के धर्म बहुत स्पष्ट और बुद्धि-संगत रूप में बतलाये हैं, पर उनमें जो सबसे अधिक महत्त्व पूर्ण बात हमको मिलती है वह यह है कि उन्होंने वर्ण का निर्णय कर्मानुसार किया है और असंदिग्ध शब्दों में कहा है कि—

शूद्रे चैतद्भवेल्लक्ष्यं द्विजे तच्च न विद्यते ।
न वै शूद्रो भवेच्छूद्रो ब्राह्मणो न च ब्राह्मणः ।।

"यदि सत्य आदि सत्कर्म और सद्गुण शूद्र में दिखाई दें तो शूद्र नहीं रहता और यदि ब्राह्मणों में वे गुण न हों तो उसे कभी ब्राह्मण नहीं माना जा सकता ।" "भृगु गीता" का यह वाक्य उन लोगों के लिये विचारणीय है जो जन्म से ऊँच नीच होने की दुहाई देते रहते हैं और नीच कर्मा ब्राह्मण को भी शूद्र आदि से श्रेष्ठ बतलाते हैं ।

(१७) कपिल-गीता - सांख्य-दर्शन के रचयिता महर्षि कपिल को कुछ लोग अनीश्वरवादी कहते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने दर्शन में ईश्वर के सम्बन्ध में कुछ न लिख कर प्रकृति में से ही सब तत्त्वों के निकलने और उससे इस प्राणिमय जगत् के निर्मित्त होने का वर्णन किया है । साथ ही उन्होंने वेदों का उल्लेख भी बहुत कम किया है । इन कारणों से सामान्य पाठक उनको वेद विरोधी तो नहीं, पर उनकी तरफ से उदासीन अवश्य कहने लग जाते हैं । इस "गीता" के आरम्भ में "स्यूम रश्मि" नामक ऋषि के मुख से कपिल को सम्बोधित करके यह कहलाया गया है कि "यदि वेदों के प्रामाणिक होने में ही आपको सन्देह है तो अन्य धर्मशास्त्रों को ही किस आधार पर प्रामाणिक कह सकते हैं ?"

कपिलजी ने कहा—"मैं वेद निन्दक और उनके विरुद्ध बात करने वाला नहीं हूँ । पर कौन-सा वेद वाक्य सबल और कौन-सा निर्बल है, यह जानना अत्यन्त कठिन है । इसलिये जो लोग वेदों के आधार पर पशु-हिंसा का समर्थन करते हैं उनकी सम्मति संदिग्ध ही मानी जायगी । स्वर्ग प्रदायक वैदिक कर्म काण्ड का विरोध न करते हुए भी यह कहा जा सकता है कि ज्ञान-मार्ग पर चलने वाले यम नियमों का पालन करते हुए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परब्रह्म को प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे निष्काम कर्म वाले शीत-उष्ण आदि द्वन्द्वों से विचलित नहीं होते। वे किसी को नमस्कार या आशीर्वाद नहीं देते। किसी कामना के बन्धन में न बँधते हुये वे सब पापों से मुक्त, पवित्र और निर्मल जीवन व्यतीत करते हैं।" निस्सन्देह कर्मकाण्ड का दर्जा कर्म-योग से नीचा है। वह स्वर्ग प्रदायक हो सकता है, पर फिर भी भव-बन्धनों में बाँधने वाला है। "भगवत् गीता" में भी यही सिद्धान्त सर्वत्र प्रतिपादन किया गया है।

(१८) ब्रह्मगीता— इसमें समाज-व्यवस्था और राज्य-व्यवस्था का विवेचन पाया जाता है। कहा गया है कि मानव-सृष्टि के आदि काल में कोई राज्य और राजा न था। सम्पूर्ण प्रजा धर्मानुसार आचरण करके परस्पर रक्षा करती थी। सब मनुष्य धर्म द्वारा परस्पर ही पालेपोसे जाते थे। पर कुछ समय बाद इस व्यवस्था में शिथिलता आ गई, विकृतियाँ उत्पन्न हो गईं और समाज में तरह-तरह के अपराध होने लगे तो सज्जनों की रक्षा और दुष्टों का नियंत्रण करने वाली किसी सत्ता की आवश्यकता प्रतीत हुई। तब मनीषीजनों ने राजनीति शास्त्र की रचना की और राजा की स्थापना की। यद्यपि बाद में राज-पद पुश्तैनी होजाने के कारण राजाओं में भी अनेक दोष पैदा हो गये, पर आरम्भ में उसका जो स्वरूप और उद्देश्य बताया गया था, वह सब दृष्टियों से लोकहित-कारी ही था। इसका उपदेश करते हुए ब्रह्माजी तथा अन्य ऋषियों ने कहा था—

"दण्ड विधान को साथ लेकर चलने वाली यह नीति सम्पूर्ण विश्व की रक्षा करने में समर्थ होगी। दुष्टों के निग्रह और सज्जनों पर अनुग्रह में लगी रह कर यह सर्वत्र प्रचलित होगी। दण्ड के द्वारा जगत् सन्मार्ग पर चलता है। राजा को वही कार्य करना चाहिए जिससे धर्म की वृद्धि होती हो। वह प्रिय-अप्रिय का विचार त्याग कर और काम, क्रोध, लोभ तथा अभिमान को मिटा कर सब जीवों के प्रति समभावी बन कर रहे। जो मनुष्य धर्म से हटते दिखाई दें उन्हें दण्ड दे।" जब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तक राजाओं ने इस नीति पर आचरण किये वे देवताओं की तरह पूजनीय और सम्मान के पात्र बने रहे। पर जब उन्होंने राज्य को अपनी बपौती समझ कर मनमाना कार्य करना आरम्भ किया तो राज्य प्रथा बदनाम हो गई और राजा अत्याचारी तथा अन्यायी समझे जाने लगे। इसलिये कोई भी राजा अथवा अन्य प्रकार का शासक हो, न्याय का पालन और जनता का हित साधन उसका सर्व प्रथम कर्त्तव्य समझना चाहिये।

(१६) बृहस्पति गीता--यद्यपि हिन्दू धर्म में पुनर्जन्म का सिद्धान्त प्रायः सर्वमान्य है, पर मृत्यु के पश्चात् का जीवन कैसा होता है, इसके सम्बन्ध में बहुत कुछ मतभेद पाया जाता है। जब कि ज्ञानी जन स्वर्ग नर्क सब इसी पृथ्वी पर मानते हैं, तब सामान्य जनता आकाश के किसी दूरवर्ती कोने में स्थित स्वर्ग नर्क के अस्तित्व में दृढ़ विश्वास रखती है। विभिन्न पुराणों में तो नर्कों का वर्णन इतने विस्तार से और ऐसे लोम हर्षक रूप में किया गया है कि पाठक स्तब्ध रह जाते हैं। इस "बृहस्पति गीता" में भी आगामी जन्म में कर्मफल का विषय ही वर्णित है, पर उसकी शैली अपने ढंग की निराली है। उसके कथनानुसार पापी व्यक्ति न केवल नर्क में तरह तरह के कष्ट सहन करता है वरन् नर्क से निकलने पर भी संसार में आकर गधा, कुत्ता और शूकर आदि की निकृष्ट योनियों में दुर्दशा को प्राप्त होता है। वह वर्णन एक प्रकार से अतिरंजित-सा लगता है, तो भी कर्म-फल की भावना को हृदयंगम कराने के लिये वह एक अच्छा माध्यम माना जा सकता है--

"वेदाध्ययन करने के उपरान्त भी जो द्विज पतित व्यक्तियों से दान लेता है, उसे गधा की योनि में पन्द्रह वर्ष व्यतीत करने पड़ते हैं और मरने के पश्चात् सात वर्ष तक बैल की योनि में रहना पड़ता है। जो पुरुष विभिन्न अन्नों की चोरी करता है उसे मरने के पश्चात् चूहे, शूकर, कुत्ता की योनियों में जाना पड़ता है। परस्त्री गमन के पाप से मनुष्य को भेड़िया, कुत्ता, सियार, गिद्ध, सर्प, कंक और बगुला की योनियों में रहना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पड़ता है। कृतघ्न व्यक्ति को बहुत समय तक कुम्भीपाक, असिपत्रवन आदि नरकों में रह कर संसार में पन्द्रह वर्ष तक कृमि योनि भोगनी पड़ती है।"

कर्मफल का भोगना एक अनिवार्य तथ्य है। वह चाहे इस संसार में रहकर सहन करना पड़े चाहे किसी अन्य लोक में। बुरे कर्म करने पर हमको किसी न किसी रूप में उसका परिणाम अवश्य मिलेगा।

(२०) उतथ्य गीता—समाज में राजा अथवा शासनकर्त्ता की आवश्यकता किस लिये है और उसका क्या कर्त्तव्य है, यह "उतथ्य-गीता" में बहुत अच्छी तरह बतलाया गया है। यह सत्य है कि राज-मद से अधिकांश व्यक्ति महान्ध हो जाते हैं वे प्रायः अनेक अनुचित कर्म करते हैं। पर यदि राजा न्यायशील और अपने कर्त्तव्य का दृढ़ता पूर्वक पालन करने वाला हो तो उससे प्रजा का बड़ा कल्याण हो सकता है। उतथ्य ने इस सिद्धान्त को बहुत अच्छी तरह समझाया था—

"राजा का उद्देश्य धर्म-पालन और उसकी रक्षा करना ही है। वह विषय-सुख भोगने के लिये राजा नहीं बनाया जाता। धर्माचरण करने वाला राजा देवता हो जाता है, पर अधर्मरत राजा को नरकगामी होना पड़ता है। सभी प्राणी धर्म के आधार पर स्थित हैं, पर राजा धर्म के ऊपर स्थित होता है। इसलिये जो राजा भले प्रकार धर्म का पालन करता हुआ उसके अनुकूल चलता है वह दीर्घकाल तक पृथ्वी का अधीश्वर बना रहता है। यदि राजा पाप कार्यों को नहीं रोकता या स्वयं पाप करता है तो संसार में से धर्म-वृत्ति समाप्त हो जाती है और महान अधर्म फैलने से प्रजा सदा भयभीत रहती है। उस समय "धर्म" की व्यवस्था का आधार कुछ भी नहीं रहता। जब पाप की शक्ति बढ़ जाती है तब मनुष्यों को अपनी स्त्री, सम्पत्ति, घर, खेत, पशु की रक्षा का उपाय भी नहीं सूझता।"

यद्यपि आज "राजा" का शब्द मिटता चला जाता है और एक व्यक्तिगत राजा के स्थान पर अनेक व्यक्ति शासन-संचालक बनाये जाते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं। उनके दूषित आचरणों से आज जनता की जो दुर्दशा हो रही है उसे देखते हुए हमको उक्त कथन सर्वथा सत्य ही प्रतीत होता है।

(२१) पंचशिख-गीता—इसमें आत्मा के अस्तित्व पर बौद्धिक रूप से विचार किया गया है और नास्तिकों के इस मत का कि शरीर के नष्ट होने के साथ आत्मा का भी अन्त हो जाता है तर्कपूर्वक निराकरण गया है। नास्तिक कहते हैं कि "जैसे वट-वृक्ष के बीच में पत्ते पुष्प, फल, मूल, छाल आदि का अस्तित्व छिपा रहता है, जैसे गाय द्वारा खायी जाने वाली घास में उसके दूध का अस्तित्व होता है, जैसे विभिन्न औषधियों में अनेक प्रकार की शक्तियाँ सन्निहित रहती हैं, उसी प्रकार मानव-वीर्य से शरीर बनता है और उसमें चैतन्यता प्रकट हो जाती है।" इसके उत्तर में महर्षि पंचशिख का कथन है कि "यदि शरीर के मरने के साथ आत्मा का भी मरना मान लें, तो उसके द्वारा किये गये कर्मों का अन्त हो जाना भी मानना पड़ेगा। तब शुभ और अशुभ कर्मों का भोगने वाला भी कोई नहीं रहेगा। पर संसार में मनुष्यों को जो सुख-दुःख रूप भोग प्राप्त होते हैं, उन पर गहराई के साथ विचार किया जाय तो स्पष्ट जान पड़ता है कि उनका सम्बन्ध दस जन्म के कर्मों से न होकर पूर्व जन्मों के कर्मों से भी होता है। इससे आत्मा का अस्तित्व और उसकी अमरता सिद्ध होती है। नास्तिकों ने जो दृष्टान्त दिये हैं वे सब मूर्त पदार्थों के हैं, जो जड़ होते हैं। जड़ से जड़ पदार्थ ही उत्पन्न हो सकते हैं। पर आत्मा अमूर्त है, इसलिये मूर्त देह से उसकी समानता नहीं हो सकती।"

वास्तव में कर्म-सिद्धान्त की सार्थकता तभी स्वीकार की जा सकती है जब उनके परिणाम स्वरूप आत्मा का उत्थान अथवा पतन हो। जो लोग देह के साथ ही आत्मा का अन्त मान लेते हैं, उनमें से भी अधिकांश दूसरों का अनहित करने वाले पाप कर्मों में संलग्न होते हैं। इस प्रकार की धारणा से समाज का अस्तित्व भी नहीं रह सकता और सर्वसाधारण का जीवन निर्वाह भी असंभव हो जायगा। यह एक घातक और घोर स्वार्थ परायणता की मान्यता है। इसी कारण अभी तक संसार के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सभी सन्त पुरुषों और विद्वानों ने आत्मा का अस्तित्व स्वीकार किया है।

(२२) सावित्री-गीता—सावित्री-सत्यवान की कथा भारतीय-समाज में सुप्रसिद्ध है। सावित्री ने पतिव्रत का जो अनुपम उदाहरण उपस्थित किया और उसी शक्ति के द्वारा अपने पति को यमराज के फन्दे से छुड़ा लिया, वह विश्वसाहित्य का एक अमर उपाख्यान है। यद्यपि उसमें किसी धार्मिक प्रश्न का समाधान नहीं पाया जाता, पर सावित्री ने अपनी धर्म और नीति युक्त बातों से यमराज को सन्तुष्ट करके जिस प्रकार अपने पति का उद्धार किया वह वार्त्तालाप भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। सावित्री के कथन का मुख्य आशय यही था कि सन्त समागम का परिणाम सदा कल्याणकारी होता है। इसलिये जब मैं आपका पुण्यमय सत्संग कर चुकी तो मेरी कामना—मेरी प्रार्थना अपूर्ण कैसे रह सकती है।' यमराज ने उसके कथन की यथार्थता को स्वीकार किया और सत्यवान को जीवन दान मिल गया।

(२३) ईश्वर-गीता—इसमें विस्तार के साथ जीवात्मा और परमात्मा के विषय में विवेचन किया गया है। जिस प्रकार "भगवत् गीता" में भगवान् कृष्ण ने ईश्वरीय भाव से अर्जुन को आत्मोपदेश किया है और निष्काम-मार्ग से चल कर मुक्त होने की विधि बतलाई है, उसी प्रकार "ईश्वर गीता" में सनक-सनन्दन के प्रश्न करने पर भगवान् शिव ने ज्ञान के सच्चे स्वरूप का दिग्दर्शन कराया है। विद्वानों के मतानुसार ब्रह्मा-विष्णु-महेश में कोई अन्तर नहीं, तीनों ही एक परमात्मा के तीन रूप हैं। जिस प्रकार कृष्णजी ने अर्जुन को विराट रूप दिखलाकर विश्व का वास्तविक स्वरूप समझाया था उसी प्रकार 'ईश्वर-गीता' में भी शिव जी द्वारा नृत्य करते हुए विश्व-रूप दिखाने का वर्णन मिलता है—

सहस्रशिरसं देवं सहस्र चरणाकृतिम्।
सहस्रबाहुं जटिलं चन्द्रार्द्ध कृत शेखरम्॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्रह्माण्ड तेजसा स्वेन सर्वमावृत्यधिष्ठितम् ।
दंष्ट्राकरालं दुर्द्धर्षं सूर्य कोटिसम प्रभम् ।।

"वे भगवान् शिव सहस्रों मस्तकों से युक्त, सहस्रों चरणों, सहस्रों हाथों वाले, जटाधारी तथा अर्द्धचन्द्र से शोभित थे । वे करोड़ों सूर्यों के समान प्रभा वाले थे, जिनके तेज से समस्त ब्रह्माण्ड परिपूर्ण हो रहा था। वे अत्यन्त दुर्द्धर्ष जान पड़ते थे और संसार का संहार करने वाली कराल दाढ़ों वाले दिखाई पढ़ते थे ।"

"ईश्वर गीता" की रचना बहुत कुछ "भगवत् गीता" के आदर्श पर ही हुई है, इसलिये उन दोनों के कितने ही श्लोकों के शब्द और भाव एक दूसरे से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं । एकाध उदाहरण यहाँ दिया जाता है—

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृत मश्नामि प्रयतात्मनः ।।

(भगवत् गीता ९-२६)

पत्रं पुष्पं फलं तोयं मदाराधन कारणात् ।
यो मे ददाति नियतं स मे भक्तः प्रियो मम ।।

(ईश्वर गीता ४-१)

मन्मनाभव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामे वैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ।।

(भ० गी० १८-६५)

कुर्वतो मत्प्रसादार्थं कर्म संसार नाशनम् ।
मन्मना मन्नमस्कारो मद्याजी मत्परायणः ।।

(ई० गी० ११-८५)

"भगवत् गीता" अध्यात्म शास्त्र की दृष्टि से एक विश्व विख्यात रचना है । भारतीय ही नहीं लाखों विदेशी भी उसे श्रद्धापूर्वक पढ़ते और अध्ययन करते हैं । तब उसी की शैली पर रचित "ईश्वर-गीता" भी यदि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

माननीय समझी जाय तो इसमें कोई आपत्तिजनक बात नहीं है। "भगवत्" और 'ईश्वर" शब्द भी एक ही शक्ति के पर्यायवाची हैं। इस लिये हम 'ईश्वर गीता" को महत्त्वपूर्ण और आदरणीय स्थान देना उचित समझते हैं।

"ईश्वर-गीता" की एक बड़ी विशेषता यह है कि उसने "शैव-सिद्धान्त" का प्रतिपादन करते हुए वैष्णव आदि किसी अन्य सम्प्रदाय से द्वेष अथवा हीनता का भाव व्यक्त नहीं किया है। वरन् यही कहा है—

ये चान्ये देवता भक्ता: पूजयन्तीह देवता:।
मद्भावना समायुक्ता मुच्यन्ते तेऽपि मानव: ॥

अर्थात् "जो व्यक्ति अन्य देवताओं के भक्त हैं और उनकी पूजा करते हैं, पर साथ ही मेरे प्रति श्रद्धा-भावना रखते हैं, वे भी मुक्त होजाते हैं।"

यह समन्वय भावना ही सच्चे धर्म का मूल है और मध्यकाल में इसी का अभाव हो जाने से हिन्दू जाति में साम्प्रदायिकता का विष उत्पन्न हो गया, और उसके कारण इस जाति को बड़ी दुर्दशा और दुर्गति का सामना करना पड़ा। इसलिये यदि हम "भगवत् गीता" और "ईश्वर गीता" जैसे समन्वय-वादी रचनाओं को पढ़ कर साम्प्रदायिक पक्षपात को त्याग कर शुद्ध मन से परमात्मा का स्मरण करें तो हमारा निस्सन्देह कल्याण होगा।

(२४) व्यास-गीता—इसमें ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासी आदि चारों आश्रमों के व्यक्तियों के धर्म-कर्त्तव्य और आचार-विचार का वर्णन किया गया है। इसमें ब्रह्मचारी के लिये जो विधि-विधान बतलाया गया है उसका उद्देश्य यह है कि उसे आरम्भ से ही ऐसा सीधा-सादा और कठोर जीवन व्यतीत करना चाहिये। जिससे आगामी समय में सब प्रकार के संघर्षों में धैर्य पूर्वक टिका रहे और समस्त अवरोधों को पार करके विजय प्राप्त कर सके। गृहस्थ के लिये सुखोपभोग की अपेक्षा समाज-सेवा और समाजोन्नति को प्राथमिकता देनी चाहिये। यदि समाज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुखी और समुन्नत होगा तो उसके सदस्य भी उन्नति शील जीवन व्यतीत कर सकेंगे। इसमें सबसे अधिक उत्तरदायित्व ब्राह्मणों का बतलाया गया है। वे ही समाज के नेता और मार्ग दर्शक माने गये हैं इसलिये उनको ऐसा जीवन बिताना चाहिये जिससे दूसरे लोगों को भी परोपकार, परमार्थ और सेवा की प्रेरणा मिले। इसीलिये "व्यास गीता" में कहा गया है—

वृत्ति संकोचमन्विच्छेत् नेहेत धन विस्तरम्।
धन लोभे प्रसक्तस्तु ब्रह्मण्या देवहीयते।
वेदानधीत्य सकलान् यज्ञांश्चावाप्य सर्वश।
नतां गति भवाप्नोति संकोचाद्यामवाप्नुयात्॥

"ब्राह्मण को सदा त्याग की ही चेष्टा करनी चाहिये, धन के बढ़ाने की नहीं। क्योंकि जो ब्राह्मण धन का लोभी हो जाता है उसका पतन होने लगता है। चाहे समस्त वेद पढ़ डाले और बहुत यज्ञ-याग कर ले, पर ब्राह्मणत्व का जो उत्थान त्याग और अपरिग्रह से होता है, वह और किसी तरह संभव नहीं।"

ब्राह्मण ही नहीं, मानव-मात्र के लिये यही एक स्वर्ण सन्देश है। जिस दिन मनुष्य "अपने लिये कम और दूसरों को अधिक" के आदर्श का पालन करने लग जायगा उसी दिन पृथ्वी पर स्वर्ग उतर आयेगा।

अध्यात्म भारतीय संस्कृति का मूल है। हमारे प्राचीन मनीषी एक मात्र भौतिक उन्नति से कभी सन्तुष्ट नहीं हुए। उनका कथन था कि 'जो धन धर्म के आधार पर कमाया और खर्च नहीं किया जाता वह मनुष्य की उन्नति के बजाय उसकी अधोगति का कारण बनता है।" इसी दृष्टि से "गीता" में मानव-जीवन का आध्यात्मिक मार्ग दर्शन किया गया है। इससे विदित होता है कि संसार में रहते हुए मनुष्य को किस प्रकार कामना और आसक्ति से रहित जीवन व्यतीत करना चाहिये, जिससे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समस्त लोक व्यवहार को करते हुये भी वह भव-बन्धन में ग्रस्त न हो। कुछ गीताकारों ने पूर्ण त्यागयुक्त तपस्वी अथवा संन्यासी के मार्ग का भी प्रतिपादन किया है। धर्मशास्त्र की भाषा में उसे 'निवृत्ति' मार्ग कहा जाता है। ये 'प्रवृत्ति' और 'निवृत्ति' दोनों ही मार्ग धर्मानुकूल हैं, पर संसार से पूर्णतया सम्बन्ध विच्छेद करके संन्यासी अथवा परमहंस का जीवन बिता सकना वर्तमान काल के व्यक्तियों के लिये प्रायः असम्भव है। इसलिये हम "भगवत् गीता' के इसी सिद्धान्त को सर्वश्रेष्ठ मानते हैं कि "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" (तुम कर्त्तव्य-पालन की दृष्टि से लौकिक व्यवहारों को करते रहो पर फल की चिन्ता मत करो) इन चौबीस गीताओं में से अधिकांश में विभिन्न शैलियों में इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है।

यदि अच्छी तरह से विचार किया जाय तो यही जीवन का सर्वोच्च सिद्धान्त हो सकता है। संसार में जितने भी जीवात्मा हैं वे सब एक ही स्थान से आये हैं, एक ही जगह सब को लौट कर जाना है और वे एक ही परम पिता के पुत्र या अंश हैं। यह एक ऐसा सिद्धान्त है कि जिससे किसी मजहब का कोई समझदार व्यक्ति इन्कार नहीं कर सकता। मनुष्यमात्र आपस में भाई हैं इस बात को मुँह से तो सब कहते हैं पर इसको एक अकाट्य सत्य के रूप में मान कर इसके अनुसार आचरण करने वाले अगर कहीं मिल सकते हैं तो ऐसा भारतवर्ष में ही संभव है। अपनी त्रुटि के कारण चाहे वे इसका पूर्णरूप से पालन न कर सकें अथवा साम्प्रदायिक मतभेद के कारण विरोधियों के साथ अनुदारता का वर्ताव करने लग जायें, पर परमात्मा और जीवात्मा की एकता में उनको दृढ़ विश्वास होता है। इससे समय आने पर वे अन्य अनेक लोगों की अपेक्षा जीवदया और प्राणीमात्र की हितभावना का अच्छा परिचय देते हैं।

कुछ गीताओं में जो वर्णाश्रम धर्म और राजा के कर्त्तव्यों की भी विवेचना की गई है, वह कुछ लोगों को कदाचित् अनावश्यक अथवा मह-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वहीन जान पड़े । पर उनको समझना चाहिये कि अब डेढ़-दो हजार वर्ष पूर्व जब ये गीताएँ लिखी गई थीं भारतीय समाज में वर्णाश्रम की अच्छी प्रतिष्ठा थी और वही समाज की स्थिरता का आधार था । इसी प्रकार राजा भी समाज में सुख-शान्ति की स्थापना करने में एक प्रमुख साधन था । राजा को यहाँ जो ईश्वर का अंश माना गया है, उसकी भी चर्चा एक गीता में की गई है । उस स्थिति में जब प्रजा अन्ध विश्वासों में डूबी थी और विश्व का नियंत्रण करने वाली शक्तियों का उसे बहुत ही कम ज्ञान था, अगर राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि बतला कर उसे नियंत्रण में रखा गया तो यह एक आवश्यक बात ही कही जायगी ।

खेद का विषय है कि पास में इतना अमूल्य ज्ञान और साधन होते हुए भी भारतीय जनता अधिकांश में उससे वंचित बनी है । अध्यात्म की शक्ति बड़ी प्रबल है और उससे लौकिक और पारलौकिक सभी सफलतायें निश्चित रूप से प्राप्त की जा सकती हैं । गीता शास्त्र उस ज्ञान को प्राप्त करने का सब से सरल और प्रभावशाली साधन है । इसके माध्यम से अध्यात्म के महान सिद्धान्त को सहज में हृदयंगम किया जा सकता है । इन चौबीस गीताओं में, जिन्हें मोतियों की तरह मुख्य रूप से "महाभारत" रूपी सागर में से चुन-चुन कर निकाला गया है पाठक को अध्यात्म रूपी प्रकाश का स्पष्ट रूप से दर्शन हो सकता है ।

--श्रीराम शर्मा आचार्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राप्ति होगी ? आपको पति रूप में पाने वाली मुझ ब्राह्मणी की क्या गति होगी ? ॥१–४॥ पत्नी को यह बात सुन कर शान्त चित्त वाले उन ब्राह्मण ने हँसते हुए कहा–हे सुभगे ! तुम पाप से सदा दूर रहने वाली हो, इसलिये मैं तुम्हारी इस बात पर बुरा नहीं मानता ॥५॥

ग्राह्यं दृश्यं च सत्यं वा यदिदं कर्म विद्यते ।
एतदेव व्यवस्यन्ति कर्म कर्मेति कर्मिणः ॥६
मोहमेव नियच्छन्ति कर्मणा ज्ञानवर्जिताः ।
नैष्कर्म्यं नचलोकेऽस्मिन् मुहूर्तमपि लभ्यते ॥७
कर्मणा मनसा वाचा शुभं वा यदि वाशुभम् ।
जन्मादिमूर्तिभेदान्तं कर्म भूतेषु वर्तते ॥८
रक्षोभिर्वध्यमानेषु दृश्यद्रव्येषु वर्त्मसु ।
आत्मस्थमात्मना तेभ्यो दृष्टमायतनं मता ॥९
यत्र तद् ब्रह्म निर्द्वन्द्वं यत्र सोमः सहाग्निया ।
व्यवायं कुरुते नित्यं धीरो भूतानि धारयन् ॥१०

संसार में ग्रहण करने योग्य दीक्षा तथा व्रत हैं और इन नेत्रों से देखे जाने वाले जो स्थूल कर्म हैं, उन्हीं को यथार्थ रूप से कर्म मानते हैं । तथा कर्म करने वाले लोग भी ऐसे कर्म को ही कर्म कहते हैं ॥६॥ किन्तु, जिन्हें ज्ञान प्राप्त, नहीं हुआ, वे कर्म के नाम पर मोह को संग्रहीत करते हैं । इस संसार में दो घड़ी भी कर्म किये बिना रह सकना संभव नहीं है ॥७॥ मन, वाणी और क्रिया के द्वारा जो शुभ या अशुभ कार्य किया जाता है, वह तथा जन्म,स्थिति, मृत्यु और शरीर परिवर्त्तन आदि कर्म सब प्राणियों में विद्यमान हैं ॥८॥ जहाँ सोम, घृत आदि द्रव्यों का प्रयोग होता है, उन कर्मों के मार्गों को जब राक्षसों ने नष्ट करना आरंभ कर दिया, तो मैं उन कर्मों से विरक्त होगया और फिर मैंने स्वयं अपने ही भीतर विद्यमान हुए आत्मा के स्थान को देखा ॥९॥ जहाँ वह द्वन्द्व-रहित परब्रह्म परमात्मा प्रतिष्ठित है, जहाँ सोम का अग्नि के साथ नित्य संयोग होता है और जहाँ सब भूतों का धारक धीर वायु निरंतर चलता रहता है ॥१०॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यत्र ब्रह्मादयो युक्तास्तदक्षरमुपासते ।
विद्वांसः सुव्रता यत्र शान्तात्मानोजितेन्द्रियाः ॥११
घ्राणेन न तदाघ्रेयं नास्वाद्यं चैव जिह्वया ।
स्पर्शनेन तदस्पृश्यं मनसा त्ववगम्यते ॥१२
चक्षुषामविषह्यं च यत् किंचिच्छ्रवणात् परम् ।
अगन्धमरसस्पर्शमरूपाशब्दलक्षणम् ॥१३
यतः प्रवर्तते तन्त्रं यत्र च प्रतितिष्ठति ।
प्राणोऽपानः समानश्च व्यानश्चोदान एव च ॥१४
तत एव प्रवर्तन्ते तदेव प्रविशन्ति च ।
समानव्यानयोर्मध्ये प्राणापानौ विचेरतुः ॥१५
तस्मिल्लीने प्रलीयेत समानो व्यान एव च ।
अपानप्राणयोर्मध्ये उदानो व्याप्य तिष्ठति ।
तस्माच्छयानं पुरुषं प्राणापानौ न मुञ्चतः ॥१६

जहाँ ब्रह्मा आदि देवता और श्रेष्ठ व्रत का पालन करने वाले शान्त चित्त, संयमी विज्ञ योग-सम्पन्न होकर उस अविनाशी ब्रह्म की उपासना में लगे रहते हैं ॥११॥ वह अविनाशी ब्रह्म नासिका द्वारा सूँघने और जिह्वा द्वारा स्वाद लेने के योग्य नहीं है। वह त्वचा के द्वारा स्पर्श भी नहीं किया जा सकता । उसका अनुभव तो केवल बुद्धि के द्वारा ही हो सकता है ॥१२॥ वह नेत्रों का विषय भी नहीं है तथा श्रवणेन्द्रिय के द्वारा सुने जाने की वस्तु भी नहीं है। गन्ध, रस, स्पर्श, रूप और शब्द आदि कोई भी लक्षण उसमें नहीं है ॥१३॥ उसी से सृष्टि आदि बढ़ती और उसी में उसकी स्थिति है । प्राण, अपान, समान,व्यान और उदान उसी से उत्पन्न होकर उसी में लीन हो जाते हैं। समान और व्यान के मध्य में प्राण और अपान घूमते हैं । उस अपान सहित प्राण के विलय होने पर समान और व्यान भी विलीन हो जाते हैं। अपान और प्राण के मध्य उदान सबको व्याप्त करके स्थित है, इसीलिये सोये हुए पुरुष का प्राण और अपान त्याग नहीं करते ॥१४–१६॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राणानामायतत्वेन तमुदानं प्रचक्षते ।
तस्मात् तपो व्यवस्यन्ति मग्दतं ब्रह्मवादिनः ॥१७
तेषामन्योन्यभक्षाणां सर्वेषां देहचारिणाम् ।
अग्निर्वैश्वानरोमध्ये सप्तधा दीव्यतेऽन्तरा ॥१८
घ्राणंजिह्वा चचक्षुश्चत्वक् च श्रोत्रं च पञ्चमम् ।
मनो बुद्धिश्च सप्तैता जिह्वा वैश्वानरार्चिषः ॥१९
घ्रेयं दृश्यं पेयं च स्पृश्यं श्रव्यं तथैव च ।
मन्तव्यमथ बोद्धव्यं ताः सप्त समिधो मम ॥२०

प्राणों का आधार होने से ज्ञानीजन उसे उदान कहते हैं । इसलिये ब्रह्मवादीजन मुझमें स्थित तप का निश्चय करते हैं ॥१७॥ परस्पर एक–दूसरे की अपेक्षा से रहने वाले और सभी शरीरों में संचार करने वाले उन पंच प्राणों के मध्य में स्थित समान वायु का स्थान नाभि-मण्डल है । उसके मध्य में स्थित वैश्वानर अग्नि सात रूपों में प्रकाशित है ॥१८॥ नासिका, जिह्वा, नेत्र, त्वचा और पाँचवाँ कान, मन और बुद्धि उस वैश्वानर अग्नि की यह सात जिह्वाऐं मानी गयी हैं । सूँघने योग्य गन्ध, देखने योग्य रूप, पीने योग्य रस, छूने योग्य वस्तु, सुनने योग्य शब्द, मन के मनन करने और बुद्धि के द्वारा समझने योग्य विषय, यह सातों मुझ वैश्वानर अग्नि की समिधाऐं हैं ॥१९–२०॥

घ्राता भक्षयिता द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता च पञ्चमः ।
मन्ता बोद्धा च सप्तैते भवन्ति परमर्त्विजः ॥२१
घ्रेये पेये दृश्ये च स्पृश्ये च श्रव्ये तथैव च ।
मन्तव्येऽप्यथ बोद्धव्ये सुभगे पश्य सर्वदा ॥२२
हवींष्यग्निषु होतारः सप्तधा सप्त सप्तसु ।
सम्यक् प्रक्षिप्य विद्वांसो जनयन्ति स्वयोनिषु ॥२३
पृथिवी वायुराकाशमापो ज्योतिश्च पञ्चमम् ।
मनो बुद्धिश्च सप्तैता योनिरित्येव शब्दिताः ॥२४
हविर्भूया गुणाः सर्वे प्रविशन्त्यग्निजं गुणम् ।
अन्तर्वासमुशित्वा च जायन्ते स्वासु योनिषु ॥२५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सूँघने वाला, भक्षण करने वाला, देखने वाला, स्पर्श करने वाला, सुनने वाला, मनन करने वाला और समझने वाला—यह सातों श्रेष्ठ ऋत्विज हैं ॥२१॥ हे सुभगे ! सूँघने योग्य, पान करने योग्य, दर्शन योग्य, छूने योग्य, सुनने योग्य तथा मनन करने और समझने योग्य सब विषयों पर तुम सदा दृष्टि रखो ॥२२॥ ऊपर कहे गये सात होता, सात हविष्यों का, सात रूपों में विभाजित वैश्वानर में भले प्रकार हवन करके विद्वद्जन अपने तन्मात्रादि योनियों में शब्दादि विषयों की उत्पत्ति करते हैं ॥२३॥ पृथिवी, वायु, आकाश, जल, तेज, मन और बुद्धि यह सात योनि कही गयी हैं ॥२४॥ इनके सभी गुण हविष्य रूप हैं, वे अग्नि जनित गुण में प्रविष्ट होते हैं तथा वे अन्तःकरण में संस्कार रूप से स्थित रह कर अपनी योनियों में उत्पन्न होते हैं ॥२५॥

तत्रैव च निरुध्यन्ते प्रलये भूतभावने ।
यतः संजायते गन्धस्ततः संजायते रसः ॥२६
ततः संजायते रूपं ततः स्पर्शोऽभिजायते ।
ततः संजायते शब्दः संशयस्तत्र जायते ।
ततः संजायते निष्ठा जन्मैतत् सप्तधा विदुः ॥२७
अनेनैव प्रकारेण प्रगृहीतं पुरातनैः ।
पूर्णाहुतिभिरापूर्णास्त्रिभिः पूर्यन्ति तेजसा ॥२८
अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
निबोध दशहोतॄणां विधानमथ यादृशम् ॥२९
श्रोत्रं त्वक् चक्षुषी जिह्वानासिका चरणौ करौ ।
उपस्थं वायुरिति वा होतॄणि दश भामिनि ॥३०

प्रलय काल में वे अन्तःकरण में ही अवरुद्ध रहते और भूतों के रचना-काल में वहीं से उत्पन्न होते हैं । वहीं से गंध की तथा रस की उत्पत्ति होती है ॥२६॥ वहीं से रूप, स्पर्श और शब्द प्रकट होता है । वहीं संशय उत्पन्न होता है और निश्चयात्मक बुद्धि भी वहीं उत्पन्न होती है । यह सात प्रकार का जन्म कहा गया है ॥२७॥ इसी प्रकार प्राचीन कालीन ऋषियों ने श्रुति के अनुसार घ्राण आदि का रूप ग्रहण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया। ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय रूप तीन आहुतियों से सभी लोक परिपूर्ण हैं तथा वे सब लोक आत्म ज्योति से भी प्रकाशमान् हैं ॥२८॥ ब्राह्मण ने कहा—इस विषय में विज्ञजन जिस प्राचीन इतिहास का उदाहरण देते हैं और दस होता मिल कर जिस प्रकार यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं—उसे सुनो ॥२९॥ हे भामिनि ! श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा, नासिका, मुख, हाथ, पाँव, उपस्थ और गुदा यह दस होता माने गये हैं ॥३०॥

शब्दस्पर्शौ रूपरसौगन्धौ वाक्यं क्रिया गतिः ।
रेतोमूत्रपुरीषाणां त्यागो दश हवीषि च ॥३१
दिशो वायु रविश्चन्द्रः पृथ्व्यग्नी विष्णुरेव च ।
इन्द्रः प्रजापतिर्मित्रमग्नयो दश भामिनि ॥३२
दशेन्द्रियाणि होतॄणि हवींषि दश भाविनि ।
विषया नाम समिधो हूयन्ते तु दशाग्निषु ॥३३
चित्तं स्रुवश्च वित्तं च पवित्रं ज्ञानमुत्तमम् ।
सुविभक्तमिदं सर्वं जगदासीदिति श्रुतम् ॥३४
सर्वेमेवाथ विज्ञेयंचित्तं ज्ञानमवेक्षते ।
रेतः शरीरभृत्काये विज्ञाता तु शरीरभृत् ॥३५

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, वाणी, क्रिया, गति, वीर्य, मूत्र और मल का त्याग यह जो दस विषय हैं, वही हविष्य समझने चाहिए ॥३१॥ दिशा, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, पृथिवी, अग्नि, विष्णु, इन्द्र, प्रजापति और मित्र इन दस देवताओं को अग्नि कहा गया है ॥३२॥ दस इंद्रिय रूपी होता इन दस देवता रूप अग्नि में, दस विषय रूप हविष्य अथवा समिधाओं का होम करते रहते हैं ॥३३॥ इस यज्ञ में चित्त स्रुवा और पवित्र श्रेष्ठ ज्ञान ही धन है। यह सुना जाता है कि पहिले यह सम्पूर्ण संसार भले प्रकार विभाजित था ॥३४॥ जानने में आने वाला यह सम्पूर्ण विश्व चित्त रूप है। यह ज्ञान की अपेक्षा रखता है और वीर्य से उत्पन्न होने वाले शरीरों में निवास करने वाला यह जीव ही उसे जानने वाला कहा जाता है ॥३५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीरभृद् गार्हपत्यस्तस्मादन्यः प्रणीयते ।
मनश्चाहवनीयस्तु तस्मिन् प्रक्षिप्यते हविः ॥३६
ततो वाचस्पतिर्जज्ञे तं मनः पर्यवेक्षते ।
रूपं भवति वै वर्ण समनुद्रवते मनः ॥३७
कस्माद् वागभवत् पूर्वं कस्मात् पश्चान्मनोऽभवत् ।
मनसा चिन्तितं वाक्यं यदा समभिपद्यते ॥३८
केन विज्ञानयोगेन मतिश्चित्तं समास्थिता ।
समुन्नीता नाध्यगच्छत् का वै तां प्रतिबाधते ॥३९
तामपानः पतिर्भूत्वा तस्मात् प्रेषत्यपानताम् ।
तां गतिं मनसः प्राहुर्मनस्तस्मादपेक्षते ॥४०

देह का अभिमानी जीव ही गार्हपत्य अग्नि है, उससे जो दूसरा अग्नि प्रकट होता है, वह मन है। उस मन को ही आहवनीय अग्नि समझो। उसी में उस पूर्वोक्त हविष्य की आहुति दी जाती है ॥३६॥ उससे वाचस्पति अथवा वेदवाणी प्रकट होती है, उसका द्रष्टा मन है। मन के बाद रूप उत्पन्न होता है, जो नीले, पीले आदि रंगों से सर्वदा रहित है। वह रूप मन की ओर ही दौड़ता है ॥३७॥ ब्राह्मणी ने कहा—वाक् की पहिले उत्पत्ति किस कारण हुई? मन पीछे क्यों उत्पन्न हुआ? जब कि मन के द्वारा सोचने-विचारने के बाद ही वचन को व्यवहृत किया जाता है ॥३८॥ मति चित्त के आश्रित किस विज्ञान के प्रभाव से होती है? ऊँची उठायी जाने पर वह विषयों की ओर क्यों नहीं चलती, उसके इस मार्ग में कौन बाधा डालता है? ॥३९॥ ब्राह्मण ने कहा—गति रूप होकर अपान उस मति को अपान के भाव की ओर खींच ले जाता है। अपान भाव की वह प्राप्ति मन की गति कही जाती है, इसलिये मन को उसकी अपेक्षा रखनी होती है॥४०॥

प्रश्नं तु वाङ्मनसोर्मां यस्मात् त्वमनुपृच्छसि ।
तस्मात् ते वर्तयिष्यामि तयोरेव समाह्वयम् ॥४१
उभे वाङ्मनसी गत्वा भूतात्मानमपृच्छताम् ।
आवयोः श्रेष्ठमाचक्ष्व च्छिन्धि नौ संशयं विभो ॥४२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन इत्येव भगवांस्तदा प्राह सरस्वती ।
अहं वै कामधुक् तुभ्यमिमि हितं प्राह वागथ ॥४३
स्थावरं जङ्गमं चैव विद्धयभे मनसी मम ।
स्थावरं मत्सकाशे वै जङ्गमं विषये तव ॥४४
यस्तु तं विषयं गच्छेन्मन्त्रो वर्णः स्वरोऽपि वा ।
तन्मनो जङ्गमो नाम तस्मादसि गरीयसी ॥४५

परंतु, तुमने मुझसे वाणी और मन के विषय में ही पूछा हैं, इसलिये तुम्हें मैं उन दोनों का संवाद ही कहता हूँ ॥४१॥ मन और वाणी दोनों ने जीवात्मा से प्रश्न किया—हे प्रभो ! हम दोनों में श्रेष्ठ कौन है, यह बता कर हमारे संशय को दूर कीजिये ॥४२॥ तब भगवान् आत्म-देवता ने कहा—मन ही श्रेष्ठ है, इस पर सरस्वतीजी ने कहा कि 'मैं कामधेनु बन कर तुम्हारे लिये सभी कुछ प्रदान करती हूँ'। इस प्रकार वाणी ने स्वयं ही अपने श्रेष्ठ होने की बात कही ॥४३॥ ब्राह्मण ने कहा—स्थावर और जंगम यह दोनों मेरे मन हैं। स्थावर अर्थात् बाह्य इंद्रियों के द्वारा ग्रहण किया जाने वाला यह जगत् मेरे निकट है और जङ्गम अर्थात् इंद्रियों से परे जो स्वर्ग आदि हैं, उन सब पर तुम्हारा अधिकार है ॥४४॥ जो मन्त्र, वर्ण या स्वर्ण उस अलौकिक विषय को प्रकाशित करने वाला है, उसका अनुगामी मन भी यद्यपि जंगम कहा जाता है, तो भी वाणी रूपा तुम्हारे द्वारा ही मन का उस इंद्रियातीत विश्व में प्रवेश होता है। इसलिये तुम मनसे भी श्रेष्ठ तथा गौरवमयी हो ॥४५॥

यस्मादपि समाधिस्ते स्वयमभ्येत्य शोभने ।
तस्मादुच्छ्वासमासाद्य प्रवक्ष्यामि सरस्वति ॥४६
प्राणापानान्तरे देवी वाग् वै नित्यं स्म तिष्ठति ।
प्रेर्यमाणा महाभागे विना प्राणमपानती ।
प्रजापतिमुपाधावत् प्रसीद भगवन्निति ॥४७
ततः प्राणः प्रादुरभूद् वाचमाप्याययन् पुनः ।
तस्तादुच्छ्वासमासाद्य न वागवदति कर्हिचित् ॥४८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घोषिणी जातनिर्घोषा नित्यमेव प्रवर्तते ।
तयोरपि घोषिण्या निर्घोषैव गरीयसी ॥४९
गौरिव प्रसवत्यर्थान् रसमुत्तमशालनी ।
सतत स्यन्दते ह्येषा शाश्वत ब्रह्मवादिनी ॥५०
दिव्यादिव्यप्रभावेण भारती गौःशुचिस्मिते ।
एतयोरन्तरं पश्य सूक्ष्मयोः स्यन्दमानयोः ॥५१

क्योंकि हे शोभने ! हे सरस्वति ! तुमने स्वयं ही मेरे समीप आकर अपने पक्ष को पुष्ट किया है, इससे उच्छ्वास लेकर मैं भी कुछ कहूँगा ॥४६॥ हे सुभगे ! प्राण और अपान के मध्य में देवी सरस्वती सदा प्रतिष्ठित रहती हैं । प्राण की सहायता के बिना जब वह अत्यंत नीची दशा को प्राप्त होने लगीं, तब दौड़ती हुई प्रजापति के समीप जाकर बोलीं कि हे भगवन् ! प्रसन्न होओ ॥४७॥ उस समय वाणी को पुष्ट करता हुआ प्राण फिर प्रकट हुआ । इसीलिये उच्छ्वास लेते समय वाणी किसी प्रकार का शब्द नहीं बोलती ॥४८॥ वाणी के दो रूप हैं— घोष-मय और घोष-रहित । घोष-रहित वाणी सब अवस्थाओं में सदा विद्यमान रहती है । घोष मय वाणी से घोष-रहित वाणी ही अत्यंत श्रेष्ठ कही गयी है ॥४९॥ घोष-मय वाणी भी श्रेष्ठ गुणों से सुशोभित होती है । वह दूध देने वाली गौ के समान सदा श्रेष्ठ रस देती और मनोवांछित पदार्थों को उत्पन्न करती है तथा ब्रह्म की प्रतिपादिका उपनिषद् वाणी की बोधक है । इस प्रकार वाणी रूपी गौ दिव्य और अदिव्य प्रभाव वाली है । दोनों ही सूक्ष्म हैं तथा इच्छित पदार्थों को उत्पन्न करती हैं । इन दोनों के अंतर को तुम स्वयं ही देखो ॥५०-॥

अनुत्पन्नेषु वाक्येषु चोद्यमाना विवक्षया ।
किन्नु पूर्व तदा देवी व्याजहार सरस्वती ॥५२
प्राणेन या सम्भवतेशरीरे,प्राणादपानं प्रतिपद्यते च ।
उदानभूता च विसृज्य देहं व्यानेन सर्व दिवमावृणोति ॥५३
ततः समाने प्रतितिष्ठतीह इत्येवपूर्व प्रजजल्प वाणी ।
तस्मान्मनःस्थावरत्वाद्विशिष्ट तथादेवीजङ्गमत्वाद्विशिष्ट ॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
सुभगे सप्तहोतृणां विधानमिह यादृशम् ।।५२

ब्राह्मणी ने कहा—हे स्वामिन् ! जब वाक्यों की उत्पत्ति नहीं हुई थी, उस समय कुछ कहने की इच्छा वाली देवी सरस्वती ने किस प्रकार कहा था ? ।।५२।। ब्राह्मण ने कहा—वह वाक् शरीर में प्राण से उत्पन्न होती है और तब प्राण से अपानभाव को प्राप्त होती हैं। फिर उदान रूप होकर देह को छोड़ती और व्यान रूप से सम्पूर्ण आकाश को व्याप्त कर लेती है। फिर समान वायु में स्थित होती है। वाणी ने पहिले अपनी उत्पत्ति इस प्रकार बतायी थी । इसलिये स्थावर होने से मन और जङ्गम होने से वाणी श्रेष्ठ है ।।५३-५४।। ब्राह्मण ने कहा—हे सुभगे ! इसी संबंध में इस प्राचीन इतिहास का भी उदाहरण देते हैं। सप्त होताओं के यज्ञ का जैसा विधान है, उसे सुनो ।।५५।।

घ्राणश्चक्षुश्च जिह्वा च त्वक् श्रोत्रं चैव पञ्चमम् ।
मनो बुद्धिश्च सप्तैते होतारः पृथगाश्रिताः ५६

सूक्ष्मेऽवकाशे तिष्ठन्तो न पश्यन्तीतरेतरम् ।
एतान् वैसप्तहोतॄंत्वं स्वभावाद् विद्धि शोभने ।।५७
सूक्ष्मेऽवकाशे सन्तस्ते कथं नान्योन्यदर्शिनः ।
कथंस्वभावा भगवन्नेतदाचक्ष्व मे प्रभो ।।५८
गुणाज्ञानमविज्ञानं गुणज्ञानमभिज्ञता ।
परस्परं गुणानेते नाभिजानन्ति कर्हिचित् ।।५९
जिह्वा चक्षुस्तथा श्रोत्रं वाङ्मनो बुद्धिरेव च ।
न गन्धानधिगच्छन्ति घ्राणस्तानधिगच्छति ।।६०

नासिका, नेत्र, जिह्वा, त्वचा, श्रोत्र, मन और बुद्धि यह सात होता पृथक् रहते हैं। यद्यपि इन सभी का निवास सूक्ष्म शरीर में है तो भी वे एक दूसरे को नहीं देख पाते। इन सात होताओं को तुम स्वभाव से पहिचानने का प्रयत्न करो ।।५६-५७।। ब्राह्मणी ने कहा—हे प्रभो ! जब यह सभी सूक्ष्म शरीर में रहते हैं तो एक दूसरे को क्यों नहीं देख

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाते ? उनके स्वभाव किस प्रकार के हैं, यह मेरे प्रति कहिये ॥५८॥ ब्राह्मण ने कहा—हे प्रिये ! गुणों का न जानना ही गुणवान् का न जानना कहा जाता है और गुणों का जानना गुणवान् को जानना है। यह नासिका आदि सात होता परस्पर एक-दूसरे के गुणों के गुणों को कदापि नहीं जान पाते ॥५९॥ जिह्वा, नेत्र, कान, त्वचा, मन और बुद्धि इनको गंधों का ज्ञान नहीं हो सकता, केवल नासिका ही उनका अनुभव करती है ॥६०॥

'घ्राणं चक्षुस्तथा श्रोत्रं वाङ्मनो बुद्धिरेव च ।
न रसानधिगच्छन्ति जिह्वा तानधिगच्छति ॥६१
घ्राणं जिह्वा तथा श्रोत्रं वाङ्मनो बुद्धिरेव च ।
न रूपाण्यधिगच्छन्ति चक्षुस्तान्यधिगच्छति ॥६२
घ्राणं जिह्वा ततश्चक्षुः श्रोत्रं बुद्धिर्मनस्तथा ।
न स्पर्शानधिगच्छन्ति त्वक् च तानधिगच्छति ॥६३
घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च वाङ्मनो बुद्धिरेव च ।
न शब्दानधिगच्छन्ति श्रोत्रं तानधिगच्छति ॥६४
घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक् श्रोत्रं बुद्धिरेव च ।
संशयं नाधिगच्छन्ति मनस्तमधिगच्छति ॥६५

नासिका, कान, नेत्र, त्वचा, मन और बुद्धि—यह रसों का स्वाद नहीं ले सकते, केवल जिह्वा ही उसमें समर्थ है ॥६१॥ नासिका, जिह्वा, कान, त्वचा, मन और बुद्धि—इन्हें रूप का ज्ञान नहीं हो सकता—यह कार्य केवल नेत्र का ही है ॥६२॥ नासिका, जिह्वा, नेत्र, कान, बुद्धि और मन के द्वारा स्पर्श का अनुभव नहीं हो सकता, केवल त्वचा ही इसका अनुभव करने में समर्थ है ॥६३॥ नासिका, जिह्वा, नेत्र, त्वचा, मन और बुद्धि—इनको शब्दज्ञान नहीं होता, कान को ही यह ज्ञान होता है ॥६४॥ नासिका, जिह्वा, नेत्र, त्वचा, कान और बुद्धि संशय अर्थात् संकल्प-विकल्प नहीं कर सकते, मन के द्वारा इसका किया जाता संभव है॥६५॥

घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्च त्वक् श्रोत्रं मन एव च ।
न निष्ठामधिगच्छन्ति बुद्धिस्तामधिगच्छति ॥६६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
इन्द्रियाणां च संवादं मनसश्चैव भामिनि ।।६७
नाघ्राति मामृते घ्राणं रसं जिह्वा न वेत्ति च ।
रूपं चक्षुर्न गृह्णाति त्वक् स्पर्शं नावबुध्यते ।।६८
न श्रोत्रं बुध्यते शब्दं मया हीनं कथंचन ।
प्रवरं सर्व भूतानामहमस्मि सनातनम् ।।६९
अगाराणीव शून्यानि शान्तार्चिष इवाग्नयः ।
इन्द्रियाणि न भासन्ते मया हीनानि नित्यशः ।।७०

नासिका, जिह्वा, नेत्र, त्वचा, कान और मन किसी बात का निश्चय नहीं कर सकते, क्योंकि निश्चयात्मक ज्ञान तो बुद्धि में ही होता है ।।६६।। इस विषय में इन्द्रिय और मन के संवाद रूप में एक पुरातन इतिहास का दृष्टान्त दिया जाता है ।।६७।। एक समय की बात है—मन ने इंद्रियों से कहा—बिना मेरी सहायता के नासिका सूँघ नहीं सकती, जीभ रसास्वादन नहीं कर सकती, नेत्र देख नहीं सकते, त्वचा स्पर्श नहीं कर सकती और कान सुन नहीं सकते, इसलिये सब भूतों में मैं ही सनातन एवं श्रेष्ठ हूँ ।।६८–६९।। मेरे बिना सभी इंद्रियाँ बुझी हुई लपटों वाले अग्नि के समान और सूने घर के समान सदा श्रीहीन प्रतीत होती हैं ।।७०।।

काष्ठानीवार्द्र शुष्काणि यतमानैरपीन्द्रियैः ।
गुणार्थान् नाधिगच्छन्ति मामृते सर्वजन्तवः ।।७१
एवमेतद् भवेत् सत्यं यथैतन्मन्यते भवान् ।
ऋतेऽस्मानस्मदर्थास्त्वंभोगान् भुङ्क्ते भवान्यदि ।।७२
यद्यस्मासु प्रलीनेषु तर्पणं प्राणधारणम् ।
भोगान् भुङ्क्ते भवान् सत्यं यथैतन्मन्यते तथा ।।७३
अथवास्मासु लीनेषु तिष्ठत्सुविषयेषु च ।
यदि संकल्पमात्रेण भुङ्क्ते भोगान् यथार्थवत् ।।७४
अथ चेन्मन्यसे सिद्धिमस्मदर्थेषु नित्यदा ।
घ्राणेन रूपमादत्स्व रसमादत्स्व चक्षुषा ।।७५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रोत्रेण गन्धानादत्स्व स्पर्शानादत्स्व जिह्वया ।
त्वचा च शब्दमादत्स्व बद्धया स्पर्शमथापि च ।।७६

संसार के सभी प्राणी इंद्रियों के द्वारा प्रयत्न करते रहने पर भी मेरे बिना विषयों का वैसे ही अनुभव नहीं कर सकते, जसे कि सूखे या गीले काष्ठ को कोई अनुभव नहीं होता ।।७१।। इंद्रियों ने कहा—यदि आप भी हमारी सहायता प्राप्त हुए बिना ही विषयों का अनुभव करने में समर्थ होते तो हम आपकी इस बात को सत्य मान लेतीं ।।७२।। हमारे लीन हो जाने पर भी आप तृप्त रह पावें और जीवन-धारण में समर्थ हों तथा सब प्रकार के भोगों को भोग सकें तो आपका कहना अथवा मान्यता सत्य हो सकती है ।।७३।। अथवा हम सब इंद्रियाँ लीन हों अथवा विषयों में लगी रहें, यदि आप अपने संकल्प से ही विषयों का यथार्थ अनुभव कर सकते हैं और सदा आप इसमें सफल रहते हैं तो नाक के द्वारा रूप का अनुभव करके देखिये, नेत्र के द्वारा रस का आस्वादन करिये अथवा कान के द्वारा गंध का ही अनुभव करके दिखायें । इसी प्रकार जिह्वा से स्पर्श का, त्वचा से शब्द का और बुद्धि से स्पर्श का ही अनुभव करें ।।७४—७६।।

बलवन्तो ह्यनियमा नियमा दुर्बलीयसाम् ।
भोगानपूर्वानादत्स्व नोच्छिष्टं भोक्तमर्हति ।।७७
यथा हि शिष्यः शास्तारं श्रुत्यर्थमभिधावति ।
तयः श्रुतमुपादाय श्रुत्यर्थनुपतिष्ठति ।।७८
विषयानेवमस्माभिर्दर्शि तानभिमन्यसे ।
अनागतानतीतांश्च स्वप्ने जागरणे तथा ।।७९
वैमनस्यं गतानां च जन्तूनामल्पचेतसाम् ।
अस्मदथे कृते कार्ये दृश्यते प्राणधारणम् ।।८०

आप सशक्त हैं, नियमों के बंधन में नहीं रहते, नियमों का बंधन तो अशक्तों के लिये है । आप नये ढँग से नये भोगों का ही अनुभव करें, हमारा उच्छिष्ट सवन करना ठीक नहीं है ।।७७।। श्रुति का अर्थ समझने के लिये जैसे शिष्य गुरु के समीप जाता है और उनसे अर्थ-ज्ञान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त कर स्वयं उसका विचार अथवा अनुसरण करता है, वैसे ही आप भी सोते जागते सभी समय हमारे द्वारा प्रदर्शित भूत तथा भविष्य के विषयों का उपभोग करने में समर्थ होते हैं ॥७८–७९॥ मन-रहित तथा अल्प बुद्धि वाले प्राणियों में भी हमारे लिये ही कार्य किये जाने पर प्राण का धारण करना देखा जाता है ॥८०॥

बहूनपि हि संकल्पान् मत्वा स्वप्नानुपास्य च ।
बुभुक्षया पीडयमानो विषयानेव धावति ॥८१
अगारमद्वारमिव प्रविश्य संकल्पभोगन् विषये निबद्धान् ।
प्राणक्षये शान्तिमुपैति नित्यं दारुक्षयेऽग्निर्ज्वलितोयथैव॥८२
कामं तु नः स्वेषु गुणेषु सङ्गः
कामं च नान्योन्यगुणोपलब्धिः ।
अस्मान् विना नास्ति तवोपलब्धि-
स्तावद्दते त्वां न भजेत् प्रहर्षः ॥८३
अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
सुभगे पञ्चहोतृणां विधानमिह यादृशम् ॥८४
प्राणापानावुदानश्च समानो व्यान एव च ।
पञ्चहोतृंस्तथैतान् वै परं भावं विदुर्बुधाः ॥८५

अनेक संकल्पों का मनन और स्वप्नों का आश्रय लेकर भोगों के उपभोग की कामना वाला प्राणी विषयों की ओर दौड़ता है ॥८१॥ विषय-वासना से अनुविद्ध, मनुष्य संकल्प से उत्पन्न भोगों को भोग कर प्राण शक्ति के क्षीण होजाने पर द्वार-हीन गृह में प्रविष्ट मनुष्य के समान उसी प्रकार शान्त हो जाता है, जिस प्रकार समिधाओं के जल जाने पर अग्नि स्वयं ही शान्त हो जाता है ॥८२॥ चाहे हमारी अपने-अपने गुणों में आसक्ति हो और चाहे हम परस्पर एक-दूसरे के गुणों को न जान सकें, परंतु, यह सत्य है कि आप हमारे सहायता के अभाव में किसी भी विषय का अनुभव नहीं कर सकते । इसके विपरीत, आपके अभाव में हम केवल हर्ष से ही वंचित होती हैं ॥८३॥ ब्राह्मण ने कहा– हे सुभगे ! पंच होताओं के यज्ञ का जो विधान है, अब मैं उसके विषय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

में एक प्राचीन दृष्टान्त कहता हूँ ॥८४॥ प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान यह पंच प्राण हैं। विज्ञजन इन्हें सर्व श्रेष्ठ कहते हैं ॥८५॥

स्वभावात् सप्तहोतार इति मे पूर्विका मतिः ।
यथा वै पञ्चहोतारः परो भावस्तदुच्यताम् ॥८६
प्राणेन सम्भृतो वायुरपानो जायते ततः ।
अपाने सम्भृतो वायुस्ततो व्यानः प्रवर्तते ॥८७
व्यानेन सम्भृतो वायुस्ततोदानः प्रवर्तते ।
उदाने सम्भृतो वायुः समानो नाम जायते ॥८८
तेऽपृच्छन्त पुरा सन्तः पूर्वजातं पितामहम् ।
यो नः श्रेष्ठस्तमाचक्ष्व स नः श्रेष्ठो भविष्यति ॥८९

ब्राह्मणी ने कहा—पहिले तो मैं स्वभावतः सात होता होना समझती थी, किन्तु अब आपके मुख से पाँच होताओं की बात सुनी है। यह पाँचों होता किस प्रकार हैं, इनकी श्रेष्ठता कहिये ॥८६॥ ब्राह्मण ने कहा—हे प्रिये। प्राण के द्वारा पुष्ट होकर वायु अपान रूप होजाता है। अपान के द्वारा पुष्ट होकर व्यान रूप, व्यान के द्वारा पुष्ट होकर उदान रूप और उदान से पुष्ट होकर समान रूप होता है। एक बार इन पंच वायु ने सबके पूर्वज पितामह ब्रह्माजी से पूछा—हे भगवन्! हम में जो श्रेष्ठ है, उसका नाम कहिये, जिससे वही हम में प्रधान होगा ॥८७—८९॥

यस्मिन् प्रलीने प्रलयं व्रजन्ति सर्वे प्राणाः प्राणभृतां शरीरे ।
यस्मिन्प्रचीर्णेच पुनश्चरन्तिसवै श्रेष्ठो गच्छतयत्रकामः ॥९०
मयि प्रलीने प्रलयं व्रजन्ति सर्वे प्राणाः प्राणभृतां शरीरे ।
मयि प्रचीर्णेच पुनश्चरन्ति श्रेष्ठोह्यहंपश्यत मां प्रलीनम् ॥९१
प्राणः प्रालीयत ततः पुनश्च प्रचचार ह ।
समानश्चाप्युदानश्च वचोऽब्रूतां पुनः शुभे ॥९२
न त्वं सर्वमिदं व्याप्य तिष्ठसीह यथा वयम् ।
न त्वं श्रेष्ठो हि नः प्राण अपानो हि वशे तव ।
प्रचचार पुनः प्राणस्तमपानोऽभ्यभाषत ॥९३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मयि प्रलीने प्रलयं व्रजन्ति सर्वे प्राणाः प्राणभृतां शरीरे ।
मयिप्रचीर्णे च पुनश्चरन्ति श्रेष्ठो ह्यहं पश्यतमां प्रलीनम् ॥९४
व्यानश्च तमुदानश्च भाषमाणमथोचतुः ।
अपान न त्वं श्रेष्ठोऽसि प्राणो हि वशगस्तव ॥९५

ब्रह्माजी ने कहा—देहधारियों के देह में स्थित हुए तुम में से जिसके लीन होजाने पर सभी प्राण लीन हो जाँय और जिसके संचरण करने पर सभी संचार करने लगें, वही श्रेष्ठ है। अब तुम जहाँ चाहो, वहाँ जाओ ॥९०॥ प्राण ने कहा—मेरे लीन होने पर देहधारियों के देह में स्थित सब प्राण लीन हो जाते हैं और मेरे संचार करने पर सभी संचार करने लगते हैं, इसलिये मैं ही सबसे श्रेष्ठ हूँ। अब मैं लीन होता हूँ ॥९१॥ ब्राह्मण ने कहा—हे शुभे ! इस प्रकार कह कर प्राण थोड़ी देर के लिये छिप कर पुनः चलने लगा। तब समान और उदान वायु ने उससे कहा ॥९२॥ हे प्राण ! जिस प्रकार हम इस शरीर में व्याप्त हैं, उस प्रकार व्याप्त होकर तुम शरीर में नहीं रहते हो, इसलिये तुम हमसे श्रेष्ठ नहीं हो सकते। केवल अपान ही तुम्हारे अधीन है। तब प्राण पहले के समान ही फिर चलने लगा। फिर अपान ने कहा ॥९३॥ अपान बोला—मेरे लीन हो जाने पर देह में स्थित सभी प्राणों का लय हो जाता है और मेरे संचरण करने पर सभी संचार करने लगते हैं। इसलिये मैं ही सर्व श्रेष्ठ हूँ। देखो, अब मैं विलीन होता हूँ ॥९४॥ ब्राह्मण ने कहा—तब व्यान और उदान उक्त अपान से कहने लगे—हे अपान ! केवल प्राण ही तुम्हारे वश में हैं, अतः तुम हम से श्रेष्ठ नहीं हो सकते ॥९५॥

अपानः प्रचचाराथ व्यानस्तं पुनरब्रवीत् ।
श्रेष्ठोऽहमस्मि सर्वेषां श्रूयतां येन हेतुना ॥९६
मयि प्रलीने प्रलयं व्रजन्ति सर्वेप्राणाः प्राणभृतां शरीरे ।
मयिप्रची र्णेच पुनश्चरन्ति श्रेष्ठो ह्यहंपश्यतमां प्रलीनम्॥९७
प्रालीयत ततो व्यानः पुनश्च प्रचचार ह ।
प्राणापानावुदानश्च समानश्च तमब्रुवन् ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न त्वं श्रेष्ठोऽसि नो व्यान समानस्तु वशे तव ॥९८
प्रचाचर पुनर्व्यानः समानः पुनरब्रवीत् ।
श्रेष्ठोऽहमस्मि सर्वेषां श्रूयतां येन हेतुना ॥९९
मयि प्रलीने प्रलयं व्रजन्ति सर्वे प्राणाः प्राणभृतां शरीरे ।
मयि प्रचीर्णे चपुनश्चरन्तिश्रेष्ठो ह्यहं पश्यतमां प्रलीनम्॥१००

यह सुनकर अपान पूर्ववत् चलने लगा, तब व्यान ने उससे कहा—मैं सभी से श्रेष्ठ हूँ और अपनी श्रेष्ठता का कारण भी कहता हूँ, उसे सुनो ॥९६॥ मेरे लय होने पर देह में स्थित सभी प्राणों का लय हो जाता है तथा मेरे संचरण करने पर सभी संचार करने लगते हैं। इसलिये मैं ही सर्वश्रेष्ठ हूँ। देखो, मैं विलीन होता हूँ ॥९७॥ ब्राह्मण ने कहा—तब व्यान कुछ देर के लिये लीन होकर पुनः चलने लगा। उस समय प्राण, अपान, उदान और समान ने उससे कहा—व्यान तुम्हारे वश में केवल समान वायु है, इसलिये तुम हमसे श्रेष्ठ नहीं हो ॥९८॥ यह सुनकर व्यान पूर्ववत् चलने लगा, तब समान ने फिर कहा—मैं जिस कारण सभी से श्रेष्ठ हूँ, वह तुम्हें बताता हूँ ॥९९॥ मेरे लीन होने पर सब प्राण लीन हो जाते हैं और संचार करने पर सभी संचार करने लगते हैं। इसीलिये मैं सर्वश्रेष्ठ हूँ। देखो, अब मैं विलीन होता हूँ ॥१००॥

समानः प्रचाराथ उदानस्तमुवाच ह ।
श्रेष्ठोऽहमस्मि सर्वेषां श्रूयतां येन हेतुना ॥१०१
मयि प्रलीने प्रलयं व्रजन्ति सर्वे प्राणाः प्राणभृतां शरीरे ।
मयि प्रचीर्णे च पुनश्चरन्तिश्रेष्ठो ह्ययं पश्यतमांप्रलीनम्॥१०२
तयः प्रालीयतोदानः पुनः प्रचचार ह ।
प्राणापानौ समानश्च व्यानश्चैव तमब्रुवन् ।
उदान न त्वं श्रेष्ठोऽसि व्यान एव वशे तव ॥१०३
ततस्तानब्रवीद् ब्रह्मा समवेतान् प्रजापतिः ।
सर्वे श्रेष्ठा न व श्रेष्ठाः सर्वे चान्योन्यधर्मिणः ॥१०४
सर्वे स्वविषये श्रेष्ठाः सर्वे चान्योन्यधर्मिणः ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इति तानब्रवीत सर्वान समवेतान् प्रजापतिः ॥१०५
एकः स्थिरश्चास्थिरश्च विशेषात् पञ्च वायवः ।
एक एक मभौवात्माः बहुधाप्युपचीयते ॥१०६
परस्परस्य सुहृदो भावयन्तः परस्परम् ।
स्वस्ति व्रजत भद्रं वो धारयध्वं परस्परम् ॥१०७

ब्राह्मण ने कहा--समान कुछ देर के लिये विलीन होकर फिर पूर्ववत् चलने लगा। उस समय प्राण, अपान, व्यान और उदान ने उससे कहा--हे समान ! तुम हमसे श्रेष्ठ कदापि नहीं हो सकते। क्योंकि केवल व्यान ही तुम्हारे अधीन है। यह सुनकर समान पहिले के समान पहिले के समान ही चलने लगा। तब उदान ने उससे कहा--सर्व श्रेष्ठ मैं ही हूँ, इसका कारण भी तुम्हें बताता हूँ ॥१०१॥ मेरे विलीन होने पर देह में स्थित सभी प्राण लीन हो जाते हैं और मेरे संचरण से कभी संचार करने लगते हैं। इसलिये मैं ही सबसे श्रेष्ठ हूँ। देखो, मैं अब विलीन होता हूँ ॥१०२॥ यह सुनकर उदान कुछ देर के लिये विलीन होकर पुनः पूर्ववत् चलने लगा। तब प्राण, अपान, समान और व्यान ने उससे कहा--हे उदान ! केवल व्यान ही तुम्हारे वश में है, तुम हम से श्रेष्ठ नहीं हो सकते ॥१०३॥ ब्राह्मण ने कहा--फिर वे सभी प्राण ब्रह्माजी के पास गये, तब उनसे ब्रह्माजी ने कहा--हे वायुगण ! तुम सभी श्रेष्ठ हो अथवा तुम में से कोई भी श्रेष्ठ नहीं है। तुम सबका धारण रूप जो धर्म है वह एक दूसरे की अपेक्षा से है ॥१०४॥ अपने-अपने स्थान पर सभी श्रेष्ठ हो और सभी का धर्म परस्पर अवलम्बित है। यह बात उन सभी प्राणों से प्रजापति ब्रह्माजी ने कहा ॥१०५॥ एक ही वायु स्थिर और अस्थिर रूप से प्रतिष्ठित है। उसीके भेद विशेष से पाँच वायु कहे जाते हैं। इस प्रकार मेरा एक ही आत्मा अनेक रूपों में बढ़ता है ॥१०६॥ तुम्हारा कल्याण हो । कुशल पूर्वक यहाँ से जाकर एक दूसरे के हितैषी रहते हुए, परस्पर की उन्नति में सहायक रह कर एक दूसरे को धारण करो ॥१०७॥

अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
नारदस्य च संवादमृषेर्देवमतस्य च ॥१०८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जन्तोः संजायमानस्य किं नु पूर्वं प्रवर्तते ।
प्राणोऽपानः समानो वा व्यानो वोदान एव च ॥१०९
येनायं सृज्यते जन्तुस्ततोऽन्यः पूर्वमेति तम् ।
प्राणद्वन्द्वं हि विज्ञेयं तिर्यगूर्ध्वमधश्च यत् ॥११०

ब्राह्मण ने कहा—इस विषय में विज्ञजन देवर्षि नारद और देवमत के संवाद रूप में एक पुरातन इतिहास को दृष्टान्त रूप में कहते हैं ॥ १०८॥ देवमत ने प्रश्न किया—हे देवर्षे ! जीव के जन्म लेने पर उसके शरीर में सबसे पहिले प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान में से किसकी प्रवृत्ति होती है ॥१०९॥ नारदजी बोले—हे मुने ! यह जीव जिस निमित्त कारण से उत्पन्न होता है, उससे भिन्न अन्य पदार्थ भी पहिले कारण रूप से प्रकट होता है । उसे प्राणों का द्वन्द्व कहते हैं । उसे ऊपर, तिर्यक् और अधोलोक में व्याप्त समझना चाहिये ॥११०॥

केनायं सृज्यते जन्तुः कश्चान्यः पूर्वमेति तम् ।
प्राणद्वन्द्वं च मे ब्रूहि तिर्यगूर्ध्वमधश्च यत् ॥१११
संकल्पाज्जायते हर्षः शब्दादपि च जायते ।
रसात् संजायते चापि रूपादपि च जायते ॥११२
शुक्राच्छोणितसंसृष्टात् पूर्वं प्राणः प्रवर्तते ।
प्राणेन विकृते शुक्रे ततोऽपानः प्रवर्तते ॥११३
शुक्रात् संजायते चापि रसादपि च जायते ।
एतद् रूपमुदानस्य हर्षो मिथुनमन्तरा ॥११४
कामात् संजायते शुक्रं शुक्रात् संजायते रजः ।
समानव्यानजनिते सामान्ये शुक्रशोणिते ॥११५

देवमत ने पूछा—इस जीव की उत्पत्ति किस निमित्त से होती है ? दूसरा कौन-सा पदार्थ पहिले कारण रूप से उपस्थित होता है ? प्राणों का द्वन्द्व क्या है, जो तिर्यक्, ऊपर, मध्य और नीचे व्याप्त कहा गया है ॥१११॥ नारदजी ने कहा—हे मुने ! संकल्प से हर्ष की उत्पत्ति होती है । तथा मनोनुकूल शब्द से, रस से और रूप से भी हर्ष उत्पन्न होता है ॥११२॥ रज मिश्रित वीर्य से पहिले प्राण अपना कार्य आरंभ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता है। उस प्राण के द्वारा वीर्य में विकार उत्पन्न होता है, तब अपान प्रवृत्ति करता है ॥११३॥ शुक्र से और रस से भी हर्ष उत्पन्न होता है, हर्ष को ही उदान समझना चाहिये। उक्त कारण और कार्य रूप मिथुन के मध्य में हर्ष व्याप्त होकर रहता हैं ॥११४॥ प्रवृत्ति का मूल भूत काम है, उसी के द्वारा वीर्य प्रकट होता है। उसीके द्वारा रज प्रकट होता है। यह वीर्य और रज दोनों ही समान और व्यान से उत्पन्न होने के कारण सामान्य कहे जाते हैं ॥११५॥

प्राणापानाविदं द्वन्द्वमवाक् चोर्ध्वं च गच्छतः।
व्यानः समानश्चैवोभी तिर्यग् द्वन्द्वत्व मुच्यते ॥११६
अग्निर्वै देवताः सर्वा इति देवस्य शासनम्।
संजायते ब्राह्मणस्य ज्ञानं बुद्धिसमन्वितम् ॥११७
तस्य धूमस्तमो रूपं रजो भस्मसु तेजसः।
सर्वं संजायते तस्य यत्र प्रक्षिप्यते हविः ॥११८
सत्त्वात् समानो व्यानश्च इति यज्ञविदो विदुः।
प्राणापानावाज्यभागौ तयोर्मध्ये हुताशनः ॥११९
एतद् रूपमुदानस्य परमं ब्राह्मणा विदुः।
निर्द्वन्द्वमिति यत् त्वेतत् तन्मे निगदतः शृणु ॥१२०

प्राण और अपान यह दोनों द्वन्द्व ही हैं। यह नीचे और ऊपर को गमनशील हैं। व्यान और समान यह दोनों ही तिर्यक् द्वन्द्व कहे जाते हैं ॥११६॥ अग्नि ही सब देवताओं में श्रेष्ठ हैं, वही पर ब्रह्म हैं। यह वेद और परमात्मा की आज्ञा रूप है। उस वेद के द्वारा ही ब्राह्मण में बुद्धिमय ज्ञान की उत्पत्ति होती है ॥११७॥ उस अग्नि का धूँआ तमोगुण युक्त और भस्म रजोगुण युक्त है। जिस अग्नि के लिये हविष्य होम किया जाता है, वह अग्नि इस सम्पूर्ण विश्व को उत्पन्न करने वाला है ॥११८॥ यज्ञ के जानने वाले ज्ञानियों को यह विदित है कि सतोगुण से समान और व्यान उत्पन्न होते हैं। प्राण और अपान यह दोनों आज्य भाग नाम की दो आहुतियों के तुल्य समझने चाहिये। उनके मध्यभाग में अग्नि स्थित है। उदान का उत्कृष्ट रूप यही है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसे ब्राह्मण भले प्रकार जानते हैं । जिसे निर्द्वन्द्व कहते हैं, उसे भी कहता हूँ, तुम ध्यान पूर्वक मेरे मुख से श्रवण करो ॥११९–१२०॥

अहोरात्रमिदं द्वन्द्वं तयोर्मध्ये हुताशनः ।
एतद् रूपमुदानस्य परमं ब्राह्मणा विदुः ॥१२१
सच्चासच्चैव तद् द्वन्द्वं तयोर्मध्ये हुताशनः ।
एतद् रूपमुदानस्य परमं ब्राह्मणा विदुः ॥१२२
ऊर्ध्वं समानो व्यानश्च व्यस्यते कर्म तेन तत् ।
तृतीयं तु सामानेन पुनरेव व्यवस्यते ॥१२३
शान्त्यर्थं व्यानमेकं च शान्तिर्ब्रह्म सनातनम् ।
एतद् रूपमुदानस्य परमं ब्राह्मणा विदुः ॥१२४

यह दिन और रात्रि भी द्वन्द्व हैं, इनके मध्य भाग में अग्नि स्थित हैं । ब्राह्मणों ने उदान का उत्कृष्ट स्वरूप इसी को स्वीकार किया है ॥१२१॥ सत्–असत् भी द्वन्द्व हैं, इनके भी मध्यभाग में अग्नि हैं । ब्राह्मणों ने इसे उदान का परमोत्कृष्ट रूप माना है ॥१२२॥ ऊर्ध्व (अर्थात् ब्रह्म) जिस संकल्प से समान और व्यान हो जाता है, उसीसे कर्म विस्तृत होता है । इसलिये संकल्प को ही रोकने की चेष्टा करे । जाग्रत और स्वप्न के अतिरिक्त जो तृतीयावस्था है, उसके द्वारा उपलक्षित ब्रह्म का निश्चय समान के द्वारा ही होता है ॥१२३॥ शान्ति के लिये केवल व्यान है । शान्ति ही सनातन ब्रह्म है । ब्राह्मणों ने इस शान्ति को ही उदान का परमोत्कृष्ट स्वरूप स्वीकार किया है ॥१२४॥

अत्राप्युदाहरन्तीम मितिहासं पुरातनम् ।
चातुर्होत्रविधानस्य विधानमिह यादृशम् ॥१२५
तस्य सर्वस्य विधिवद् विधानमुपदिश्यते ।
शृणु मे गदतो भद्रे रहस्यमिदमद्भुतम् ॥१२६
करणं कर्म कर्ता च मोक्ष इत्येव भाविनि ।
चत्वार एते होतारो यैरिदं जगदावृतम् ॥१२७
हेतूनां साधनं चैव शृणु सर्वमशेषतः ।
घ्राणं जिह्वा च चक्षुश्चत्वक् च श्रोत्रं च पञ्चमम् ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनो बुद्धिश्च सप्तैते विज्ञेया गुणहेतवः ॥१२८
गन्धो रसश्च रूपं च शब्दः स्पर्शश्च पञ्चमः ।
मन्तव्यमथ बोद्धव्यं सप्तैते कर्महेतवः ॥१२९
घ्राता भक्षयिता द्रष्टावक्ता श्रोता च पञ्चमः ।
मन्ता बोद्धा च सप्तेतै विज्ञेयाः कर्तृहेतवः ॥१३०

ब्राह्मण ने कहा—इसी विषय में चार होताओं वाले यज्ञ का जो विधान है, उसे बताने वाले विज्ञ इस पुरातन इतिहास को उदाहरण रूप से कहा करते हैं ॥१२५॥ हे भद्रे ! उस सब के विधि विधान का उपदेश किया जारहा है, उसके अद्भुत रहस्य को मुझसे सुनो ॥१२६॥ करण, कर्म, कर्त्ता और मोक्ष यह चार होता कहे गये हैं, जिनके द्वारा यह सम्पूर्ण विश्व आवृत है ॥१२७॥ इनके हेतुओं को युक्तियों से सिद्ध किया जाता है । उसे पूरी तरह सुनो । नासिका, जिह्वा, नेत्र, त्वचा और कान तथा मन, बुद्धि—यह सात कारण रूप हेतु हैं, इन्हें गुणयुक्त समझना चाहिये ॥१२८॥ गंध, रस, रूप, शब्द और स्पर्श तथा मन्तव्य और बोद्धव्य—यह सात विषय कर्म रूप हेतु कहे गये हैं ॥१२९॥ सूँघने वाला, भक्षण करने वाला, देखने वाला, बोलने वाला, सुनने वाला, मनन करने वाला और निश्चयात्मक बुद्धि वाला—यह सात कर्त्ता रूप हेतु होते हैं ॥१३०॥

स्वगुणं भक्षयन्त्येते गुणवन्तः शुभाशुभम् ।
अहं च निर्गुणोऽनन्तः सप्तैते मोक्षहेतवः ॥१३१
विदुषां बुध्यमानानां स्वं स्वं स्थानंयथाविधि ।
गुणास्ते देवताभूताः सततं भुञ्जते हविः ॥१३२
अदन्नन्नान्थोऽविद्वान् ममत्वेनोपपद्यते ।
आत्माथ पाचयन्नन्नं ममत्वेनोपहन्यते ॥१३३
अभक्ष्यभक्षणं चैव मद्यपानं च हन्तितम् ।
स चान्नं हन्ति तं चान्नं स हत्वा हन्यते पुनः ॥१३४
हन्ता ह्यन्नमिदं विद्वान् पुनर्जनयतीश्वरः ।
नचान्नाज्जायते तस्मिन् सूक्ष्मो नाम व्यतिक्रमः ॥१३५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह प्राण आदि इंद्रियाँ गुणमय हैं, इसलिये अपने शुभ-अशुभ विषय रूप गुणों का उपभोग करती हैं। मैं गुण-रहित और अनन्त हूँ, ऐसा मानने पर, इन घ्राण आदि सातों को मोक्ष का हेतु ही समझना चाहिये ॥१३१॥ विभिन्न विषयों का अनुभव करने -वाले विज्ञजनों के घ्राण आदि अपने-अपने स्थान का यथाविधि ज्ञान रखते हैं और सदा देवता रूप होकर हविष्य को भोगते हैं ॥१३२॥ अज्ञानी पुरुष अन्न भक्षय के समय उसके प्रति ममतामय हो जाते हैं। इसी प्रकार अपने ही लिये भोजन बनाने वाला भी ममता दोष से ही मृत्यु को प्राप्त होता है॥१३३ वह अभक्ष्य का भक्षण और मद्यपान आदि दुर्व्यसनों में पड़ जाता है, जो कि उसके लिये घातक होते हैं। वह भोजन के द्वारा उस अन्न की हत्या करता है, इसलिये स्वयं भी उस अन्न के द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है ॥१३४॥ जो इस अन्न का भक्षण करता है, अर्थात् अन्न युक्त सभी प्रपंच को अपने में लय करता है, वह ईश्वर, सर्व समर्थ होकर फिर अन्न आदि उत्पन्न करने वाला होता है। उस अन्न के द्वारा उस विज्ञ पुरुष में कोई सूक्ष्म दोष भी प्रकट नहीं होता ॥१३५॥

मनसा गन्यते यच्च यच्च वाचा निगद्यते ।
श्रोत्रेण श्रूयते यच्च चक्षुषा यच्च दृश्यते ॥१३६
स्पर्शेन स्पृश्यते यच्च घ्राणेन घ्रायते च यत् ।
मनः षष्ठानि संयम्य हवींष्येतानि सर्वशः ॥१३७
गुणवत्पावको मह्यं दीव्यतेऽन्तः शरीरगः ।
योगयज्ञः प्रवृत्तो मे ज्ञानवह्निप्रदोद्भव ।
प्राणस्तोत्रोऽपानशस्त्रः सर्वत्यागसुदक्षिणः ॥१३८
कर्तानुमन्ता ब्रह्मात्मा होताध्वर्युः कृतस्तुतिः ।
ऋतं प्राशास्ता तच्छस्त्रमपवर्गोऽस्य दक्षिणा ॥१३९
ऋचश्चाप्यत्र शंसन्ति नारायणविदो जनाः ।
नारायणाय देवाय यदविन्दन् पशून् पुरा ॥१४०
तत्र सामानि गायन्ति तत्र चाहुर्निदर्शनम् ।
देवंनारायणं भीरु सर्वात्मानं निबोध तम् ॥१४१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो मन से जाना जाता है, वाणी से कहा जाता है, कान से सुना जाता है, नेत्र से देखा जाता है, त्वचा से स्पर्श किया जाता है, नासिका से सूँघा जाता हैं—यह मन्तव्य आदि छः विषय रूपी हविष्य हैं। इनका मन आदि छहों इंद्रियों की संयम में रखते हुए स्वयं में होम करे। उस होम के अधिष्ठानभूत गुणमय तथा अग्नि स्वरूप परब्रह्म मेरे शरीर और मन के भीतर प्रकाशमान हैं ॥१३६–१३७॥ मैंने योग-यज्ञ के अनुष्ठान का आरंभ कर दिया है।इस यज्ञ का प्राकट्य ज्ञानाग्नि को प्रकाशित करता है। इसमें प्राण स्तोत्र, अपान शस्त्र और सर्वस्व त्याग ही सर्वोत्तम दक्षिणा समझनी चाहिये ॥१३८॥ कर्त्ता, अनुमन्ता और आत्मा अर्थात् अहंकार, मन और बुद्धि–यह तीनों ब्रह्म स्वरूप होकर होता, अध्वर्यु और उद्गाता होते हैं। सत्य भाषण को प्रशास्ता का शास्त्र और अपवर्ग को उस यज्ञ की दक्षिणा समझना चाहिये ॥१३९॥ नारायण को जानने वाले ज्ञानी पुरुष इस योग यज्ञ के प्रमाण में ऋचाओं को भी उपस्थित करते हैं। प्राचीन काल में भक्तजनों ने भगवान् नारायण देव को प्राप्त करने के निमित्त इन्द्रिय रूपी पशुओं को अपने वश में किया था ॥१४०॥ भगवत्प्राप्ति होने पर परमानन्द को प्राप्त हुए सिद्ध पुरुष जिस सामगान को करते हैं, उसका दृष्टान्त तैत्तरीयोपसिषद् के विद्वान् मन्त्र रूप से उपस्थित करते हैं। हे भीरु ! तुम भी उन सर्वात्मा भगवान् नारायण देव को जानने का यत्न करो ॥१४१॥

एकः शास्ता न द्वितीयोऽस्ति शास्ता
यो हृच्छयस्तमहमनुब्रवीमि।
तौनैव युक्तः प्रवणादिवोदकं
तथा नियुक्तोऽस्मि तथा वहामि ॥१४२
एको गुरुर्नास्ति ततो द्वितीयो यो हृच्छयस्तमहमनुब्रवीमि।
तेनानुशिष्टा गुरुणा सदैव पराभूता दानवाः सर्व एव ॥१४३
एको बस्धुर्नास्ति ततो द्वितीयो यो हृच्छयस्तमहमनुब्रवीमि।
तेनानुशिष्टा बान्धवा बन्धुमन्तः सप्तर्षयश्चैवदिवि प्रभान्ति॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एकः श्रोतानास्ति ततो द्वितीयो यो हृच्छयस्तमहमनुब्रवीमि।
तस्मिन् गुरौगुरुवासं निरुष्य शक्रो गतःसर्वलोकामरत्वम्॥

ब्राह्मण ने कहा—सम्पूर्ण विश्व का शासक एक ही है। जो परमात्मा सभी के हृदयों में स्थित है, मैं उसी को सब का शासक कह रहा हूँ। जैसे जल नीचे की ओर बहता है वैसे ही उसकी प्रेरणा से मैं जिस कार्य में नियुक्त होता हूँ, उसका पालन करने में लगा रहता हूँ ॥१४२॥गुरु एक ही है, दूसरा नहीं। हृदय में स्थित परमात्मा को ही मैं गुरु कह रहा हूँ। उस गुरु के अनुशासन से सभी दानव परास्त हो गये हैं ॥१४३॥ एक ही बन्धु है, दूसरा नहीं। हृदय में स्थित परमात्मा को ही मैं बन्धु कह रहा हूँ। उसी के उपदेश से बांधवों को बंधुओं की प्राप्ति होती है और सप्तर्षि आकाश में प्रकाशमान होते हैं ॥१४४॥ एक ही श्रोता है, दूसरा नहीं। हृदय में स्थित परमात्मा को ही मैं श्रोता कह रहा हूँ। इन्द्र ने उसी को गुरु माना और गुरुकुल में निवास करने का नियम पूर्ण किया हैं। इसी से उन इन्द्र को सब लोकों का राज्य और अमरत्व प्राप्त हो गया ॥१४५॥

एको द्वे ष्टानास्ति ततो द्वितीयो यो हृच्छयस्तमहमनुब्रवीमि।
तेनानुशिष्टा गुरुणा सदैव लोके द्विष्टाः पन्नगाः सर्व एव॥
अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्।
प्रजापतौ पन्नगानां देवर्षीणां च संविदम् ॥१४७

देवर्षयश्च नागाश्चाप्यसुराश्च प्रजापतिम्।
पर्यपृच्छन्नुपासिनाः श्रेयो नः प्रोच्यतामिति ॥१४८
तेषां प्रोवाच भगवाञ्श्रेयः समनुपृच्छताम्
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म ते श्रुत्वा प्राद्रवन् दिशः ॥१४९
तेषां प्रद्रवमाणानामुपदेशार्थमात्मनः।
सर्पाणां दंशने भावः प्रवृत्तः पूर्वमेव तु ॥१५०
असुराणां प्रवृत्तस्तु दम्भभावः स्वभावजः।
दानं देवा व्यवसिता दममेवः महर्षयः ॥१५१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक ही शत्रु है, दूसरा नहीं जो हृदय में स्थित है, उसी परमात्मा को मैं शत्रु कह रहा हूँ। उसी गुरु की प्रेरणा से संसार के सम्पूर्ण सर्प द्वेष भाव वाले बने रहते हैं ॥१४६॥ प्राचीन काल में सर्पो, देवताओं और ऋषियों की जो बात प्रजापति से हुई थी, उसे जानने वाले पुरुष उस विषय में दृष्टान्त रूप से कहा करते हैं ॥१४७॥ एक समय देवता, ऋषि, नाग और असुरों ने प्रजापति के समीप बैठ कर प्रश्न किया कि हमारे कल्याण का जो उपाय हो, वह हमारे प्रति कहिये ॥१४८॥ उस उस कल्याण सम्बंधी प्रश्न करने वालों से प्रजापति ब्रह्माजी ने ओ३म् एकाक्षर ब्रह्म रूप ओंकार का उच्चारण किया, जिसे सुन कर सब लोग अपनी-अपनी दिशा में भाग गये ॥१४९॥ फिर उन्होंने उस उपदेश के अर्थ पर विचार किया तो नागों के मन में अन्य प्राणियों को उसने की प्रवृत्ति उत्पन्न हुई, असुरों के मन में स्वाभाविक रूप से दम्भ उत्पन्न हुआ और देवताओं ने दान का विचार किया तथा महर्षियों ने इंद्रिय संयम को अपनाया ॥१५०-१५१॥

एकं शारतारमासाद्य शब्देनैकेन संस्कृताः ।
नाना व्यवसिताः सर्वे सर्पदेवर्षिदानवाः ॥१५२
शृणोत्ययं प्रोच्यमानं गृह्णातिश्च यथातथम् ।
पृच्छातस्तदतो भूयो गुरुरन्यो न विद्यते ॥१५३
तस्य चानुमते कर्म ततः पश्चात् प्रवर्तते ।
गुरुर्बोद्धा च श्रोता च द्वेष्टा च हृदि निसृतः ॥१५४
पापेन विचरल्लोके पापचारी भवत्ययम् ।
शुभेन विचरल्लोके शुभचारी भवत्युत॥१५५

इस प्रकार सर्प, देवता, ऋषि और दानव यह सभी एक ही उपदेष्टा गुरु के पास गये थे और गुरु के एक शब्द से ही उनकी बुद्धि संस्कृत हुई, तो भी उनमें विभिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों की उत्पत्ति हुई ॥१५२॥ श्रोता गुरु के जिस उपदेश को सुनता है, उसे भिन्न-भिन्न रूप में ग्रहण करता है। इसलिये, प्रश्न कर्त्ता शिष्य के लिये अपने अन्तर्यामी से बढ़ कर अन्य कोई गुरु नहीं है ॥१५३॥ प्रथम वह कर्म का अनुमोदन करता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और फिर उसकी कर्म में प्रवृत्ति होती है। इस प्रकार हृदय में रहने वाला परमात्मा को ही गुरु, ज्ञानी, श्रोता और द्वेष्टा समझना चाहिये ॥१५४॥ लोक में पाप कर्म करता हुआ विचरने वाला ही पापाचारी है। और जो शुभ कर्मों को करता है, उसे शुभाचारी कहा जाता है ॥१५५॥

कामचारी तु कामेन य इन्द्रियसुखे रतः ।
ब्रह्मचारी सदैवैष य इन्द्रियजये रतः ॥१५६
अपेतव्रतकर्मा तु केवलं ब्रह्मणि स्थितः ।
ब्रह्मभूतश्चरँल्लोके ब्रह्मचारी भवत्यम् ॥१५७
ब्रह्मैव समिधस्तस्य ब्रह्माग्निर्ब्रह्मसम्भवः ।
आपो ब्रह्म गुरुर्ब्रह्म स ब्रह्मणि समाहितः ॥१५८
एतदेवंदृशं सूक्ष्मं ब्रह्मचर्यं विदुर्बुधाः ।
विदित्वा चान्वपद्यन्त क्षेत्रज्ञेनानुदर्शिताः ॥१५९

इस प्रकार कामनाओं द्वारा इंद्रिय सुख में लगा हुआ मनुष्य कामाचारी और इंद्रिय-संयमशील पुरुष ब्रह्मचारी होता है ॥१५६॥ व्रत और कर्मों का त्याग करके ब्रह्म में ही स्थित रहने वाला पुरुष ब्रह्मरुप होकर संसार में विचरण करता है, प्रमुख रूप से ब्रह्मचारी उस को समझना चाहिये ॥१५७॥ उसकी समिधा ब्रह्म है, ब्रह्म ही अग्नि है, उसी से वह उत्पन हुआ है। ब्रह्म ही जल है और वही उस ब्रह्मचारी का गुरु है। उसको चित्त की वृत्तियाँ उस ब्रह्म में ही सदा विलीन रहती हैं ॥१५८॥ ज्ञानीजन इसी को सूक्ष्म ब्रह्मचर्य कहते हैं। तत्त्वदर्शी पुरुष से उपदेश प्राप्त कर प्रबुद्ध हुए आत्मज्ञानी ही इस ब्रह्मचर्य के स्वरूप को जानते और उसका पालन करने में सदा लगे रहते हैं ॥१५९॥

संकल्पदंशमशकं शोकहर्षहिमातपम् ।
मोहान्धकारतिमिरं लोभव्याधिसरीसृपम् ॥१६०
विषयैकात्ययाध्वानं कामक्रोधविरोधकम् ।
तदतीत्य महादुर्गं प्रविष्टोऽस्मि महद् वनम् ॥१६१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्वतद् वनं महाप्राज्ञ के वृक्षाः सरितश्च काः ।
गिरयः पर्वताश्चैव कियत्यध्वनि तद् वनम् ॥१६२

नैतदस्ति पृथग्भावः किंचिदन्यत् ततः सुखम ।
नतदस्त्यपृथग्भावः किंचिद् दुःखतरं ततः ॥१६३
तस्माद् ह्रस्वतरं नास्ति न ततोऽस्ति महत्तरम् ।
नास्ति तस्मात् सूक्ष्मतरं नास्त्यन्तय् तत्समं सुखम् ॥१६४
न तत्राविश्य शोचन्ति न प्रहृष्यन्ति च द्विजा ।
न च बिभ्य ति केषांचित् तेभ्यो बिभ्यति केचन ॥१६५

ब्राह्मण ने कहा—जहाँ संकल्प रूपी डास-मच्छर अधिक होते हैं, शोक और हर्ष रूपी उष्णता और शीत का कष्ट रहता है, मोह रूपी अंधकार फैलाहुआ है तथा लोभ और व्याधि रूपी नाग घूमते रहते है ॥१६०॥ जहाँ विषयों का मार्ग है, जिस पर अकेले ही चलना पड़ता है और काम-क्रोध रूपी शत्रुओं ने डेरा डाल रखा है, उस विश्व रूपी दुर्गम मार्ग को लाँघ कर अब मैं ब्रह्मरूपी महावन में प्रविष्ट हो चुका हूँ ॥१६१॥ ब्राह्मणी ने कहा—हे महाप्राज्ञ ! वह वन कहाँ है ? उसमें कौन-कौन से वृक्ष, नदी, गिरि और पर्वत आदि हैं और वह कितनी दूर है ॥१६२॥ ब्राह्मण ने कहा—उस वन में भेद-अभेद नहीं है, वह इन दोनों से परे है । वहाँ लौकिक सुख अथवा दुःख किंचित् भी नहीं है ॥१६३॥ उससे अधिक छोटी अथवा अधिक बड़ी कोई वस्तु नहीं है । उससे अधिक सूक्ष्म का भी वहाँ अभाव है तथा उसके समान सुखरूप भी दूसरा नहीं है ॥१६४॥ उस वन में प्रवेश करने पर हर्ष या शोक भी नहीं रहता । वे किसी प्राणी से भयभीत नहीं होते और न उससे कोई प्राणी भयभीत होता ॥१६५॥

तस्मिन् वने सप्त महाद्रुमाश्च फलानि सप्तातिथयश्च सप्त ।
सप्ताश्रमाः सप्त समाधयश्च दीक्षाश्च सतैग्तदरण्यरूपम् ॥१६६
पञ्चवर्णानि दिव्यानि पुष्पाणि च फलानि च ।
सृजन्तः पादपास्तत्र व्याप्य तिष्ठन्ति तद् वनम् ॥१६७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुवर्णानि द्विवर्णानि पुष्पाणि च फलानि च ।
सृजन्तः पादपास्तत्र व्याप्य तिष्ठिन्ति तद् वनम् ।।१६८

सुरभीणि द्विवर्णानि पुष्पाणि च फलानि च ।
सृजन्तः पादपास्तत्र व्याप्य तिष्ठन्ति तद् वनम् ।।१६९

सुरभीण्येकवर्णानि पष्पाणि च फलानि च ।
सृजन्तः पादपास्तत्र व्याप्य तिष्ठन्ति तद् वनम् ।।१७०

वहाँ सात विशाल वृक्ष हैं, उसके सात ही फल हैं और उन फलों के भोगने वाले अतिथि भी सात ही हैं। सात आश्रम, सात प्रकार की समाधि और सात प्रकार की दीक्षाएँ हैं। उस वन का यही स्वरूप है ।।१६६।। वे वृक्ष पाँच प्रकार के रंग वाले दिव्य पुष्पों और फलों को उत्पन्न करते हुए सब ओर से वन को व्याप्त किये हुय हैं।।१६७।। वहाँ अन्य वृक्ष भी सुन्दर दो रंग के पुष्पों और फलों की सृष्टि करते हुए उस वन को सब ओर से व्याप्त किये हुए स्थित हैं ।।१६८।। तीसरी प्रकार के वृक्ष भी दो रंग के पुष्प-फल उत्पन्न करते हुए, सब ओर से वन को व्याप्त किये खड़े हैं ।।१६९।। चौथे प्रकार के केवल एक रंग वाले सुगन्धित पुष्पों और फलों को उत्पन्न करते हुए सब ओर से वन को व्याप्त किये हुए खड़े हैं ।।१७०।।

बहून्यात्तवर्णानि पुष्पाणि च फलानि च
विसृजन्तो महावृक्षौ तद् वनं व्याप्य तिष्ठतः ।।१७१

एकोवह्निः सुमना ब्राह्मणोऽत्र पञ्चेन्द्रियाणिसमिधश्चात्रसन्ति।
तेभ्यो मोक्षाः सप्तफलन्तिदीक्षागुणाःफलान्यतिथयःफलाशाः।।
आतिथ्यं प्रतिगृह्णन्ति तत्र तत्र महर्षयः ।
अचितेषु प्रलीनेषु तेष्वन्यद् रोचते वनम् ।।१७३
प्रज्ञावृक्षं मोक्षफलं शान्तिच्छाया समन्वितम् ।
ज्ञानाश्रयं तृप्तितोयमन्तःक्षेत्रज्ञभास्करम् ।।१७४
येऽधिगच्छन्ति तं सन्तस्तेषां नास्त भयं पुनः ।
ऊर्ध्वं चाधश्च तिर्यक् च तस्य नान्तो ऽधिगम्यते ।।१७५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वहाँ दो महावृक्ष अव्यक्त रंग वाले पुष्पों और फलों को उत्पन्न करते हुए उस वन को व्याप्त करते हुए खड़े हैं ॥१७१॥ उस वन में एक ही अग्नि है, जीव रूप शुद्ध चेता ब्राह्मण हैं, पाँचों इंद्रियाँ समिधाएँ, उनसे प्राप्त होने वाले मोक्षफल के सात प्रकार हैं। इस यज्ञ की दीक्षा फल गुण है, जो अवश्य होता है और सात अतिथि ही उन फलों के भोगने वाले हैं ॥१७२॥ वे महर्षिगण ही इस यज्ञ में अतिथि होते हैं पूजा स्वीकार करते ही वे लीन हो जाते हैं। फिर वह ब्रह्मस्वरूप वन विलक्षण रूप से प्रकाशमान होता है ॥१७३॥ उसमें प्रज्ञा रूपी वृक्ष सुशोभित हैं, मोक्ष रूपी फल उत्पन्न होते हैं और शान्ति रूपिणी छाया फैली रहती है। ज्ञान आश्रय स्थान और तृप्ति ही जल है तथा आत्मा रूपी सूर्य के प्रकाश से वह वन प्रकाशमान रहता है ॥१७४॥ उस वन का आश्रय लेने वाले श्रेष्ठ पुरुषों को फिर कभी भय नही होता वह वन ऊपर नीचे, इधर-उधर सभी दिशाओं में व्याप्त है, कहीं भी उसका अन्त नहीं है ॥१७५॥

सप्त स्त्रियस्तत्र वसन्ति सद्यस्त्ववाङ्मुखा नुपभत्यो जनित्र्यः ।
ऊर्ध्वं रसानाददते प्रजाभ्यः सर्वान् यथा सत्यमनित्यता च ॥
तत्रैव प्रतितिष्ठन्ति पुनस्तत्रोपयन्ति च
सप्त सप्तर्षयः सिद्धा वसिष्ठप्रमुखैः सह ॥१७७
यशो वर्चो भगश्चैव विजयः सिद्धतेजसः ।
एवमेवानुवर्तन्ते सप्त ज्योतींषि भास्करम् ॥१७८
गिरयः पर्वताश्चैव सन्ति तत्र समासतः ।
नद्यश्च सरितो वारि वसन्त्यो ब्रह्मसम्भवम् ॥१७९
नदीनां सङ्गमश्चैव वैताने समुपह्वरे ।
स्वात्मतृप्ता यतो यान्ति साक्षादेव पितामहम्॥१८०

वहाँ सात स्त्रियाँ रहती हैं, वे लज्जावश अपने मुख नीचे किये रहती हैं, वे चिन्मय ज्योति से प्रकाशित रहती हैं, वे सब की माता हैं और उस वन की प्रजा से सभी प्रकार के श्रेष्ठ रस वैसे ही ग्रहण करती हैं, जैसे अनित्यता द्वारा सत्य ग्रहण किया जाता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है ॥१७६॥ वसिष्ठ आदि के सहित सात सिद्ध सप्तर्षि उसी वन में लय को प्राप्त होते और उसी से प्रकट होते हैं ॥१७७॥ यश, प्रभा, ऐश्वर्य, विजय, सिद्धि और तेज—यह सातों ज्योतियाँ उस आत्मा का अनुसरण करती हैं ॥१७८॥ गिरि, पर्वत, झरने, नदियाँ और सरिताएँ उस ब्रह्म तत्त्व में ही स्थित हुई ब्रह्म से उत्पन्न जल को प्रवाहित करती रहती हैं ॥१७९॥ उसी अत्यन्त गूढ़ हृदयाकाश में नदियों का संगम भी संक्षेप रूप से होता है, जहाँ योग रूपी यज्ञ विस्तृत होता रहता है, उसी को आत्मज्ञान से तृप्त हुए पुरुष प्राप्त होते हैं ॥१८०॥

कृशाशाः सुव्रताशाश्च तपसादग्धकिल्बिषाः ।
आत्मन्यात्माविश्य ब्रह्माणं समुपासते ॥१८१
शममप्यत्र शंसन्ति विद्यारण्यविदो जनाः ।
तदारण्यमभिप्रेत्य यथाधीरभिजायत ॥१८२
एतदेवेदृशं पुण्यमरण्यं ब्राह्मणा विदुः ।
विदित्वा चानुतिष्ठन्ति क्षेत्रज्ञेनानुदर्शिताः ॥१८३
गन्धान् न जिघ्रामिरसान् न वेद्मि
रूपंन पश्यामि न च स्पृशामि ।
न चापि शब्दान् विविधाञ्शृणोमि
न चापि संकल्पमुपैमि कंचित् ॥१८४
अर्थानिष्टान्कामयते स्वभावः
सर्वान् द्वेष्यान् प्रद्विषते स्वभावः ।
कामद्वेषावुद्भवतः स्वभावात्
प्राणापानौ जन्तुदेहान्निवेश्य ॥१८५

क्षीण आशा वाले और श्रेष्ठ व्रत के पालन की इच्छा वाले पुरुष, जिनके सभी पाप तप के द्वारा भस्म हो चुके हैं, अपनी बुद्धि को आत्मा में लगा कर परब्रह्म परमात्मा की उपासना में सदा लगे रहते हैं॥१८१॥ विद्या के प्रभाव से ब्रह्म रूपी वन का रूपज्ञान होता है । इसके जानने वाले पुरुष इस वन में प्रविष्ट होने के विचार से मनोनिग्रह की ही प्रशंसा करते हैं । क्योंकि, मनोनिग्रह से ही बुद्धि में स्थिरता आती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है ॥१८२॥ ऐसे गुण वाले इस पवित्र वन को विज्ञ ब्राह्मण जानते हैं तथा तत्त्वदर्शी पुरुष के उपदेश से वृद्धि को प्राप्त हुए आत्मज्ञानी उस ब्रह्म रूप वन को शास्त्रानुसार जानकर शम आदि साधनों के पालन में लग जाते हैं ॥१८३॥ ब्राह्मण ने कहा—मैं गंधों को नहीं सूँघता, रसों का स्वाद होंगे नहीं लेता, रूप को तहीं देखता, किसी वस्तु स्पर्श नहीं करता, शब्दों को नहीं सुनता और किसी प्रकार का संकल्प भी नहीं करता ॥१८४॥ स्वभाव ही इच्छित पदार्थों की कामना वाला है और वही सब द्वेष करने योग्य वस्तुओं से द्वेष करता है। जैसे प्राण और अपान स्वभाव से ही देहों में प्रवेश कर अन्न-पाचन आदि का कार्य करते हैं, वैसे ही राग-द्वेष की उत्पति भी स्वभाव से ही होती है ॥१८५॥

तेभ्यश्चान्यांस्तेषु नित्यांश्च भावान्
भूतात्मानं लक्षयेरञ्शरीरे ।
तस्मिंस्तिष्ठन्नास्मि सक्तः कथंचित्
कानक्रोधाभ्याँ जरया मृत्युना च ॥१८६
आकामयानस्य च सर्वकामा-
नविद्विषाणस्य च सर्वदोषान् ।
न मे स्वभावेषु भवन्ति लेपा-
स्तोयस्य बिन्दोरिव पुस्करेषु ॥१८७
नित्यस्य चैतस्य भवन्त्यनित्या
निरीक्ष्यमाणस्य बहुस्वभावान् ।
न सज्जते कर्मसु भोगजालं
दिवीव सूर्यस्य मयूखजालम् ॥१८८
अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
अध्वर्युयतिसंवादं तं निबोध यशस्विनि ॥१८९
प्रोक्ष्यमाणं पशुं दृष्ट्वा यज्ञकर्मण्यथाब्रवीत् ।
यतिरध्वर्युमासीनो हिंसेयमिति कुत्सयन् ॥१९०

इन वाह्य इंद्रियों और विषयों से भिन्न स्वप्न और सुषुप्ति के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वासना युक्त विषय और इंद्रियों में भी जो नित्यत्व हैं, उनसे भी भिन्न लक्षण वाले भूतात्मा को योगीजन शरीर के भीतर देखते हैं । मैं भी उसी भूतात्मा में स्थित होकर किसी प्रकार भी काम, क्रोध, जरा, मृत्यु से प्रभावित नहीं हूँ ॥१८६॥ सब कामनाओं में से मैं किसी की भी कामना नही करता और सब दोषों में से किसी दोष से द्वेष भी नहीं करता । जैसे कमल पत्र पर जल की बूँद लिप्त नहीं होती, वैसे ही मेरे स्वभाव को राग-द्वेष छू नहीं रहे हैं ॥१८७॥ अनेक प्रकार के स्वभाव वाली उन इन्द्रियादि को देखने वाले इस नित्य रूप आत्मा के लिये सभी भोग अनित्य होते हैं । इसलिये, जैसे आकाश में किरणें सूर्य को लिप्त नहीं कर पाती, वैसे ही उस विद्वान् को वे भोग कर्मों में लिप्त नही कर सकते ॥१८८॥ हे यशस्विनि ! इस विषय में अध्वर्यु और यति का जो प्राचीन इतिहास उदाहरण के रूप में कहा जाता है, उसे मेरे द्वारा सुनो ॥१८९॥ किसी यज्ञ-कर्म में पशु का प्रोक्षण हो रहा था, उसे देख कर वहाँ बैठे हुए एक यति ने उसकी निन्दा करते हुए कहा कि यह तो हिंसा है ॥१९०॥

तमध्वर्युः प्रत्युवाच नायं छागो विनश्यति ।
श्रेयसा योक्ष्यते जन्तुर्यदि श्रुतिरियं तथा ॥१९१
योह्यस्य पार्थिवो भागः पृथिवीं स गमिष्यति ।
यदस्य वारिजं किंचिदपस्तत् सम्प्रवेक्ष्यति ॥१९२
सूर्यं चक्षुर्दिशः श्रोत्रं प्राणोऽस्य दिवमेव च ।
आगमे वर्तमानस्य न मे दोषोऽस्ति कश्चन ॥१९३
प्राणैर्वियोगे च्छागस्य यदि श्रेयः प्रपश्यसि ।
छागार्थे वर्तते यज्ञो भवतः किं प्रयोजनम् ॥१९४
अत्र त्वां मन्यतां भ्राता पिता माता सखेति च ।
मन्त्रयस्वैनमुन्नीय परवन्तं विशेषतः ॥१९५

अध्वर्यु ने उत्तर दिया—यह पशु नष्ट नहीं होगा । यदि इससे सम्बंधित श्रुति सत्य है तो इस प्राणी का अवश्य ही कल्याण होगा ॥१९१॥ इसके शरीर का पार्थिव भाग पृथिवी में मिल जायगा और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जलीय भाग जल में लीन हो जायगा ॥१६२॥ नेत्र सूर्य में लीन हो जायेंगे, कान दिशाओं में लीन होंगे और प्राण आकाश में । मैं शास्त्र की आज्ञा के अनुसार ही कार्य कर रहा हूँ । इसलिये मुझे कोई दोष नहीं लग सकता ॥१६३॥ यतिने कहा—यदि बकरे के प्राणों के निकल जाने में भी तुम उसका कल्याण देखते हो,तब इस यज्ञ को बकरे के कल्याणार्थ ही समझना चाहिये । इससे तुम्हारा क्या प्रयोजन सिद्ध होगा ? ॥१६४॥ श्रुति का कहना है कि इस विषय में तुझे तेरे भाई, पिता, माता और मित्र की अनुमति लेनी चालिये । इसके अनुसार तो इस पराधीन हुए पशु को साथ लेजाकर इसके पिता-माता आदि से अनुमति प्राप्त करनी चाहिये ॥१६५॥

एवमेवानुमन्येरंस्तान् भवान् द्रष्टुमर्हति ।
तेषामनुमतं श्रुत्वा शक्या कर्तुं विचारणा ॥१६६
प्राणा अप्यस्य छागस्य प्रापितास्ते स्वयोनिषु ।
शरीरं केवलं शिष्टं निश्चेष्टमिति मे मतिः ॥१६७
इन्धनस्य तु तुल्येन शरीरेण विचेतसा ।
हिंसानिर्वेष्टुकामानामिन्धनं पशुसंज्ञितम् ॥१६८
अहिंसा सर्वधर्माणामिति वृद्धानुशासनम् ।
यदहिंस्रं भवेत् कर्म तत् कार्यमिति विद्महे ॥१६९
अहिंसेति प्रतिज्ञेयं यदि वक्ष्याम्यतः परम् ।
शक्यं बहुविधं कर्तुं भवता कार्यदूषणम् ॥२००

प्रथम इस पशु के उन संबंधियों से मिलो और उनकी अनुमति प्राप्त होने पर उसके अनुसार विचार करो ॥१६६॥ तुमने इस छाग की इंद्रियों का उनके कारणों में लय कर दिया है । मैं समझता हूँ कि अब तो इसका चेष्टा-रहित शरीर ही शेष रहा है ॥१६७॥ अब यह अचेतन देह ईंधन के समान ही रह गई है । हिंसा के प्रायश्चित्त की कामना से उसके द्वारा यज्ञ करने वालों के लिये ईंधन ही पशु रूप है ॥१६८॥ वृद्ध पुरुषों ने अहिंसा को ही सब धर्मों में श्रेष्ठ कहा है । मेरा भी यही मत है कि जिस कार्य में हिंसा न होती हो, वही कार्य करना चाहिये ॥१६९॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसके बाद भी यदि मुझे कुछ कहना अभीष्ट हो तो मैं यही कह सकता हूँ कि सभी को अहिंसा-धर्म का पालन करने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिये। अन्यथा आप विभिन्न प्रकार के कार्य-दोषों का सम्पादन कर सकते हैं ॥२००॥

अहिंसा सर्वभूतानां नित्यमस्मासु रोचते ।
प्रत्यक्षतः साधयामो न परोक्षमुपास्महे ॥२०१
भूमेर्गन्धगुणान् भुञ्क्षे पिबस्यापोमयान्रसान् ।
ज्योतिषां पश्यसे रूपं स्पृशस्यनिलजान् गुणान् ॥२०२
शृणोष्याकाशजाञ्शब्दान् मनसामन्यसे मतिम् ।
सर्वाण्येतानि भूतानि प्राणा इति च मन्यसे ॥२०३
प्राणादाने निवृत्तोऽसि हिं[illegible]ां वर्तते भवान् ।
नास्ति चेष्टा विना [illegible]ां।क वा त्वं मन्यसे द्विज ॥२०४
अक्षरं च क्षरं [illegible] द्वैधीभावोऽयमात्मनः ।
अक्षरं तत्र सद्भावः स्वभावः क्षर उच्यते ॥२०५

किसी प्राणी की हिंसा न करना ही हम सदा उचित मानते हैं। क्योंकि, हमें प्रत्यक्ष फल की साधना में विश्वास है, परोक्ष की उपासना में नहीं है ॥२०१॥ अध्वर्यु ने कहा—हे यते ! आप यह तो स्वीकार करते ही हैं कि सब भूतों में प्राण है, फिर भी तुम पृथिवी गंधमय गुणों का उपभोग करते, जल के गुण रसों का पान करते, तेज के गुण रूप को देखते, वायु के गुण स्पर्श से अनुभव करते, आकाश के गुण शब्दों को सुनते और मन के द्वारा मति का मनन भी करते हो ॥२०२-२०३॥ एक ओर किसी प्राणी का प्राण नहीं लेना चाहते और दूसरी ओर हिंसा में प्रवृत्त हो। परंतु, हिंसा के बिना कोई भी चेष्टा नहीं हो सकती। फिर तुम अपने द्वारा हिंसा-व्रत का पालन होना किस प्रकार समझते हो ? ॥२०४॥ यति ने कहा—आत्मा क्षर और अक्षर दो रूप वाला है। जिसकी सत्ता तीनों काल में भी नष्ट नहीं होती, उसे सत्स्वरूप अक्षर कहते हैं और जो सभी कालों में नहीं है वह क्षर कहा जाता है।२०५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राणो जिह्वा मनः सत्त्वं सद्भावो रजसा सह ।
भावैरेतैर्विमुक्तस्य निर्द्वन्द्वस्य निराशिषः ।।२०६
समस्य सर्वभूतेषु निर्ममस्य जितात्मनः ।
समन्तात् परिमुक्तस्य न भयं विद्यते क्वचित् ।।२०७
सद्भिरेवेह संवासः कार्यो मतिमतां वर ।
भवतो हि मतं श्रुत्वा प्रतिभाति मतिर्मम ।।२०८
भगवन् भगवद्बुद्ध्या प्रतिपन्नो ब्रवीम्यहम् ।
व्रतं मन्त्रकृतं कर्तुर्नापराधोऽस्ति मे द्विज ।।२०९
उपपत्त्या यतिस्तूष्णीं वर्तमानस्ततः परम् ।
अध्वर्युरपि निर्मोहः प्रचचार महामखे ।।२१०

प्राण, जिह्वा, मन और रजोगुण सहित सत्त्वगुण—यह माया के सहित सद्भाव माने गये हैं । इन भावों से मुक्त, द्वन्द्व-रहित, कामना-रहित, सब में समता रखने वाले, ममता रहित, जितात्मा तथा सब ओर बंधन-रहित पुरुष को कभी भी भय की प्राप्ति नहीं होती ।।२०६-२०७।। अध्वर्यु ने कहा—हे बुद्धिमानों में श्रेष्ठ ! हे यते ! इस लोक में आपके समान साधु पुरुषों की संगति में ही रहना चाहिये । आपका मत जानकर मेरी बुद्धि भी उसका अनुमोदन करने लगी है ।।२०८।। हे भगवान् ! हे द्विज ! मैं आपकी बुद्धि के द्वारा ज्ञान से सम्पन्न होकर कहता हूँ कि मैं वेद मन्त्रों में कहे हुए व्रत का ही पालन कर रहा हूँ । इसलिये, इसमें मेरा कोई अपराध नहीं माना जा सकता ।।२०९।। ब्राह्मण ने कहा—अध्वर्यु की युक्ति से यति चुप होगया और अध्वर्यु भी मोह को त्याग कर उस महायज्ञ के लिये अग्रसर हुआ ।।२१०।।

एवमेतादृशं मोक्षं सुसूक्ष्मं ब्राह्मणा विदुः ।
विदित्वा चानुतिष्ठन्ति क्षेत्रज्ञेनार्थदर्शिना ।।२११

इस प्रकार विज्ञ ब्राह्मण मोक्ष का अत्यंत सूक्ष्म स्वरूप कहते हैं और तत्त्वदर्शी पुरुषों के उपदेशानुसार आत्मज्ञानी पुरुष उस मोक्ष-धर्म को जानते और अनुष्ठान करते हैं ।।२११।।

———

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पराशर गीता

अतः परं महाबाहो यच्छ्रेयस्तद् वदस्व मे ।
न तृप्याम्यमृतस्येव वचसस्ते पितामह ॥१
किं कर्म पुरुषः कृत्वा शुभं पुरुषसत्तम ।
श्रेयः परमवाप्नोति प्रेत्य चेह च तद् वद ॥२
अत्र ते वर्तयिष्यामि यथापूर्वं महायशाः ।
पराशरं महात्मानं पप्रच्छ जनको नृपः ॥३
किं श्रेयः सर्वभूतानामस्मिल्लोके परत्र च ।
यद् भवेत् प्रतिपत्तव्यं तद् भवान् प्रब्रवीतु मे ॥४
ततः स तपसा युक्तः सर्वधर्मविधानवित् ।
नृपायानुग्रहमना मुनिर्वाक्यमथाब्रवीत् ॥५

युधिष्ठिर ने कहा—हे महाबाहो ! कल्याण–प्राप्ति का जो उपाय हो, वह मेरे प्रति कहिये । जैसे अमृत-पान करने से मन नहीं भरता, वैसे ही आपका उपदेशामृत सुनने से भी तृप्ति नहीं हो रही है ॥१॥ हे पुरुष श्रेष्ठ । कौन-सा शुभ कर्म करने पर मनुष्य को इहलोक एवं परलोक में परम-कल्याण प्राप्त हो सकता है । कृपया मुझे बताने का कष्ठ करें ॥२। भीष्मजी ने कहा—हे राजन् ! इस सम्बन्ध में एक प्राचीन प्रसंग तुम्हारे प्रति कहूँगा । एक समय की बात है राजा जनक ने महर्षि पराशर से प्रश्न किया था ॥३॥ सभी प्राणियों के जानने योग्य इहलोक और परलोक में भी कल्याण करने वाली कौन-सी वस्तु है, यह मेरे प्रति कहिये ॥४॥ इस पर सभी धर्मों के विधान के ज्ञाता उन तपस्वी महर्षि पराशर ने राजा जनक पर अनुग्रह करने के विचार से इस प्रकार कहा ॥५॥

धर्म एव कृतः श्रेयानिह लोके परत्र च ।
तस्माद्धि परमं नास्ति यथा प्राहुर्मनीषिणः ॥६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रतिपद्य नरो धर्म स्वर्गलोके महीयते ।
धर्मात्मकः कर्म विधिर्दे हिनां नृपसत्तम ।।७
तस्मिन्नाश्रमिणः सन्तः स्वकर्माणीह कुर्वते ।।८
चतुर्विधा हि लोकेऽस्मिन् यात्रा तात विधियते ।
मर्त्या यत्रावतिष्ठन्ते सा च कामात् प्रवर्तते ।।९
सुकृतासुकृतं कर्म निषेव्य विविधैः क्रमैः ।
दशार्धप्रविभक्तानां बहुधा गतिः ।।१०

पराशर बोले—जैसा की मनीषी पुरुष कहते हैं, धर्म का विधिवत् अनुष्ठान करने से इहलोक और परलोक में भी कल्याण होता है। श्रेय अन्य कोई साधन नहीं है ।।६।। हे नृप श्रेष्ठ ? धर्म का ज्ञान प्राप्त कर उसका आश्रय लेने वाले पुरुष का सम्मान स्वर्गलोक में भी होता है। धर्म का लक्षण वेदों में 'सत्यंवद, धर्मचर, यजेत, जुहुयात्' इत्यादि वाक्यों से किया गया है। यही कर्त्तव्य विधान है ।।७।। सभी आश्रम-धर्मों का पालन करने वाले पुरुष अपने अपने धर्म में स्थित रह कर ही इस विश्व में अपने-अपने कर्मों को करते रहते हैं ।।८।। इस लोक में चार प्रकार की जीविका का विधान हुआ है। इन्हीं के आश्रम में मनुष्य रहते हैं। उनकी वह जीविका दैवेच्छा पर निर्भर रहती है ।।९।। विभिन्न प्रकार के क्रम से पाप अथवा पुण्य का सेवन करते हुए जो जीव अपने स्थूल देह को छोड़ देते हैं, उनको प्राप्त होने वाली गति भी विभिन्न प्रकार कही गयी है ।।१०।।

सोवर्णं राजतं चापि यथा भाण्डं निषिच्यते ।
तथा निषिच्यते जन्तुः पूर्वकर्मवशानुगः ।।११
नाबीजाज्जायते किंचिन्नाकृत्वा सुखमेधते
सुकृतैर्विन्दते सौख्यं प्राप्य देहक्षयं नरः ।।१२
दैवं तात न पश्यामि नास्ति दैवस्य साधनम् ।
स्वभावतो हि संसिद्धा देवगन्धर्वदानवाः ।।१३
प्रेत्य जातिकृतं कर्म न स्मरन्ति सदा जनाः ।
ते वै तस्य फलप्राप्तौ कर्म चापि चतुर्विधम् ।।१४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लोकयात्राश्रयश्चैव शब्दो वेदाश्रयः कृतः ।
शान्त्यर्थं मनसस्तात नैतद् वृद्धानुशासनम् ॥१५

जैसे बर्तनों पर सोने या चाँदी की कलई चढ़ने पर वे सोने चाँदी के से दिखाई देते हैं, वैसे ही जीव अपने पूर्व कृत कर्मों के वश में रहता हुआ उनसे लिप्त रहता है ॥११॥ बीज के बिना कोई अंकुर उत्पन्न नहीं होता, इसी प्रकार पुण्य कर्म के बिना कोई सुख- समृद्धि नहीं पा सकता । इसलिये शरीर छोड़ने के बाद जीव को अपने पुण्य कर्मों के द्वारा ही सुख मिल सकता है ॥१२॥ उस सम्बन्ध में नास्तिकों का मत है कि 'प्रारब्ध प्रत्यक्ष दिखायी नहीं देता, उसे सिद्ध करने के लिये कोई अनुमान प्रमाण भी उपलब्ध नहीं है । इसलिये देव, गंधर्व, दानव आदि योनियों की प्राप्ति स्वभाव से ही होती है ॥१३॥ इसका उत्तर हो सकता है कि देह छोड़ कर दूसरे जन्म में गये हुए जीव पूर्वजन्म के कर्मों की याद नहीं रख सकते । परन्तु पूर्व जन्म में किये किसी कर्म का फल प्राप्त होने पर वे ही चार प्रकार के कर्मों को याद करते हैं ॥ ४॥ नास्तिकों का यह कह कहना, कि लोक यात्रा का निर्वाह करने और मन को शान्ति देने के लिये वेदों में कहे गये शब्दों को शान्ति देने के लिये वेदों में कहे गये शब्दों को प्रमाण भानते हैं, ठीक नहीं हैं क्योंकि ज्ञान-प्रवृद्ध पुरुषों की ऐसी मानता नहीं है॥१५॥

चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम् ।
कुरुते यादृशं कर्म तादृशं प्रतिपद्यते ॥१६
निरन्तरं च मिश्रं च लभते कर्म पार्थिव ।
कल्याणं यदि वा पापं न तु नाशोऽस्य विद्यते ॥१७
कदाचित् सुकृतं तात कूटस्थमिव तिष्ठति ।
मज्जमानस्य संसारे यावद् दुःखाद् विमच्यते ॥१८
ततो दुःखक्षयं कृत्वा सुकृतं कर्म सेवते ।
सुकृतक्षयाद् दुष्कृतं तद् विद्धि मनुजाधिप ॥१९
दमः क्षमा धृतिस्तेजः संतोषः सत्यवादिता ।
ह्रीर्हिसाव्यसनिता दाक्ष्यं चेति सुखावहाः ॥२०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नेत्र, मन, वाणी, क्रिया द्वारा चार प्रकार के कर्म किये जाते हैं। जो जैसा कर्म करता है, उसे उसका वैसा ही फल प्राप्त होता है ॥१६॥ कर्म–फल रूप में कभी सुख, कभी दुःख अथवा कभी सुख-दुःख की एक साथ प्राप्ति होती है। पुण्य अथवा पाप दोनों प्रकार के कर्म, बिना फल भोगे, नष्ट नहीं होते ॥१७॥ संसार सिंधु में डूबते हुए मनुष्य के पुण्य कर्म कभी-भी दुःख से छुटकारा मिलने तक स्थिर रहते हैं और दुःख भोग लेने पर पुण्य के फल रूप सुख के भोग का आरम्भ होता है। कभी पुण्य के क्षीण हो जाने पर पाप का फल भोगना होता है। राजन् ! यह बात भले प्रकार समझ लेनी चाहिये ॥१८-१९॥ इन्द्रिय संयम, क्षमा, धैर्य, तेज, संतोष, सत्यवादिता, लज्जा, अहिंसा, दुर्व्यसनों का न होना और दक्षता, यह सभी कर्म सुख दायक है ॥२०॥

दुष्कृते सुकृते चापि न जन्तुर्नियतो भवेत् ।
नित्यं मनःसमाधाने प्रयतेत विचक्षणः ॥२१
नायं परस्य सुकृतं दुष्कृतं चापि सेवते ।
करोति यादृशं कर्म तादृशं प्रतिपद्यते ॥२२
सुखदुःखे समाधाय पुमानन्येन गच्छति ।
अन्येनैव जनः सर्वः संगतो यश्च पार्थिवः ॥२३
परेषां यदसूयेत न तत् कुर्यात् स्वयं नरः ।
यो ह्यसूयुस्तथायुक्तः सोऽवहासं नियच्छति ॥२४
भीरू राजन्यो ब्राह्मणः सर्वभक्ष्यो
वैश्योऽनीहावान् हीनवर्णोऽलसश्च ।
विद्वांश्चाशीलो वृत्तहीनःकुलीन
सत्याद् विभ्रष्टो धार्मिकः स्त्रीच दुष्टा ॥२५
रागी युक्तः पचमानोऽऽत्महेतो-
र्मूर्खो वक्ता नृपहीनं च राष्ट्रम् ।
एते सर्वे शोच्यतां यान्ति राजन्
यश्चायुक्तः स्नेहहीनः प्रजासु ॥२६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विद्वान पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह जीवन भर पाप में अथवा पुण्य में भी आसक्ति न रखे और अपने मन को परब्रह्म के ध्यान में लगाये रखने का प्रयत्न करे ॥२१॥ कोई प्राणी, किसी दूसरे प्राणी के किये हुए शुभ या अशुभ कर्म का फल नहीं भोगता। वह स्वयं जैसा करता है उसका वैसा ही फल भोगता है ॥२२॥ विवेकी पुरुष सुख अथवा दुःख को अपने में विलीन कर लेता है और दूसरे मार्ग से चलता है (उसे मोक्ष मिलती है) तथा जो स्त्री, पुत्र, धन आदि में आसक्ति रखते हैं, वे दूसरे मार्ग पर चलते हुए जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहते हैं ॥२३॥ दूसरे के जिस कर्म की निन्दा करे, उस कर्म को स्वयं भी नहीं करना चाहिये। जिस निन्द्य कर्म को स्वयं करता और उसी के करने पर दूसरे की निन्दा करता है, वह मनुष्य उपहास का पात्र बनता है ॥२४॥ हे राजन्! डरपोक क्षत्रिय, सर्व भक्षी ब्राह्मण, अकर्मण्य वैश्य, आलसी शूद्र, श्रेष्ठ गुणों से हीन विद्वान्, अनाचारी कुलीन, सत्य-भ्रष्ट धार्मिक, दुराचारिणी स्त्री, विषयों में आसक्त योगी, केवल अपने पोषण के लिये भोजन बनाने वाला पुरुष, मूर्ख वक्ता बिना राजा का राष्ट्र और प्रजा-द्वेषी आर्जतेन्द्रिय राजा-यह सभी शोक करने के योग्य हैं ॥२५-२६॥

मनोरथरथं प्राप्य इन्द्रियाख्यहयं नरः ।
रश्मिभिर्ज्ञानसम्भूतैर्यो गच्छति स बुद्धिमान् ॥२७
सेवाऽऽश्रितेन मनसा वृत्तिहीनस्य शस्यते ।
द्विजातिहस्तान्निर्वृत्ता न तु तुल्यात् परस्परात् ॥२८
आयुर्न सुलभं लब्ध्वा नावकर्षेद् विशाम्पते ।
उत्कर्षार्थं प्रयतेत नरः पुण्येन कर्मणा ॥२९
वर्णेभ्यो हि परिभ्रष्टो न वै सम्मानमर्हति ।
न तु यः सत्क्रियां प्राप्य राजसं कर्म सेवते ॥३०

पराशर जी बोले—हे राजन्? इन्द्रिय रूपी अश्वों वाला एक मनोमय रथ है। इस रथ के अश्वों की बागडोर ज्ञानाकार वृत्तियाँ हैं। इन उपकरणों वाले रथ पर चढ़ कर जो यात्रा करता है, वह पुरुष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बुद्धिमान है ॥२७॥ इन्द्रियों के बाह्य विषयों से रहित होकर जो पुरुष परमात्मा की शरण में गये हुए मन से उपासना करता है, उसकी उपासना को श्रेष्ठ माना गया है। इस प्रकार की उपासना किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण के वरद हस्त से ही मिल सकता है। समान योग्यता वाले परस्पर के मनुष्यों के द्वारा उसकी उपलब्धि संभव नहीं है ॥२८॥ मनुष्य देह की आयु सरलता से नहीं मिलती, वह तो बहुत दुलर्भ हैं उसे प्राप्त करके आत्मा की अवनति न होने दे, वरन् पुण्य कर्मों के अनुष्ठान द्वारा आत्मा की उन्नति के लिये प्रयत्नशील रहे ॥२९॥ दुष्कर्म करके वर्ण से भ्रष्ट हुआ मनुष्य सम्मान के योग्य नहीं रहता और सत्वगुण द्वारा सत्कारित मनुष्य भी यदि राजसकर्ग करने लगे तो वह भी सम्मान के अयोग्य ही होता है ॥३०॥

वर्णोत्कर्षमवाप्नोति नरः पुण्येन कर्मणा।
दुर्लभं तमलब्ध्वा हि हन्यात् पापेन कर्मणा ॥३१
अज्ञानाद्धि कृतं पापं तपसैवाभिनिर्णुदेत्।
पापं हि कर्म फलति पापमेव स्वयं कृतम्।
तस्मात् पापं न सेवेत कर्म दुःखफलोदयम् ॥३२
पापानुबन्धं यत् कर्म यद्यपि स्यान्महाफलम्।
तन्न सेवेत मेधावी शुचिः कुशलिनं यथा ॥३३
किं कष्टमनुपश्यामि फलं पापस्य कर्मणः।
प्रत्यापन्नस्य हि ततो नात्मा तावद् विरोचते ॥३४
प्रत्यापत्तिश्च यस्येह बालिशस्य न जायते।
तस्यापि सुमहांस्तापः प्रस्थितस्योपजायते ॥३५

पुण्य कर्म से मनुष्य को उत्तम वर्ण की प्राप्ति होती हैं। पापी के लिये श्रेष्ठ वर्ण दुर्लभ है, वह उसे प्राप्त नहीं कर सकता। क्योंकि, अपने पाप कर्म के द्वारा ही वह अपने को नष्ट कर लेता है ॥३१॥अनजान में हुए पाप को तपस्या के द्वारा नष्ट कर देना चाहिये। क्योंकि, अपने द्वारा किया हुआ पाप कर्म दुःख रूप में फल देता है। इसलिये दुःख रूप फल दाता पाप कर्म का कभी सेवन नहीं करना चाहिये ॥३२॥ पाप से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सम्बन्धित कर्म का लौकिक सुख रूप फल कितना ही बड़ा क्यों न हो, बुद्धिमान पुरुष के लिये वह कभी भी सेवनीय नहीं है। जैसे पवित्र पुरुष चाण्डाल से दूर रहता है, वैसे उससे दूर रहना चाहिये ॥३३॥ पाप कर्म का क्या मुझे कोई दुःखदायी फल दिखाई देता है ? अर्थात् नहीं दिखाई देता। इस प्रकार मानने वाले पुरुष की पाप में प्रवृत्ति होने के कारण, उसे परमात्मा का चिन्तन करना नहीं सुहाता ॥३४॥ जिस मूर्ख को इस विश्व में तत्वज्ञान नहीं मिलता, उस पुरुष को परलोक यात्रा करने पर, वहाँ घोर संताप सहना होता है ॥३५॥

विरक्तं शोध्यते वस्त्रं न तु कृष्णोहसं हितम्
प्रयत्येन मनुष्येन्द्र पापमेवं निबोध मे ॥३६
स्वयं कृत्वा तु यः पापं शुभमेवानुतिष्ठति ।
प्रायश्चित्तं नरः कर्तुमुभयं सोऽश्नुते पृथक् ॥३७
अज्ञानात् तु कृतां हिंसामहिंसा व्यपकर्षति ।
ब्राह्मणाः शास्त्रनिर्देशादित्याहुर्ब्रह्मवादिनः ॥३८
तथा कामकृतं नास्य विहिंसैवानुकर्षति ।
इत्याहुर्ब्रह्मशास्त्रज्ञा ब्राह्मणा ब्रह्मवादिनः ॥३९
अहं तु तावत् पश्यामि कर्म यद् वर्तते कृतम् ।
गुणयुक्तं प्रकाशं वा पापेनानुपसंहितम् ॥४०

हे मनुष्येन्द्र ! जो वस्त्र रंगा हुआ नहीं होता, वह धोने से स्वच्छ हो जाता है, परन्तु काले रंग में रंगा होने पर प्रयत्न करने से भी श्वेत नहीं हो पाता। पाप को भी वैसा ही समझना चाहिये। क्योंकि, उसका रंग शीघ्र ही नहीं उतर पाता ॥३६॥ जो मनुष्य जान बूझ कर पाप करता और फिर उससे प्रायश्चित रूप में शुभ कर्म करने लगता है, उसे अपने शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के कर्मों का फल पृथक्-पृथक् भोगना होता है ॥३७॥ अहिंसा व्रत का पालन करने से अनजान में हुई अहिंसा का पाप दूर हो जाता है—यह बात ब्रह्मवादी ब्राह्मण शास्त्रानुकूल बताते हैं। परन्तु, स्वेच्छा पूर्वक की हुई हिंसा के पाप को अहिंसा व्रत भी नष्ट नहीं कर सकता। ऐसा वेदज्ञ तथा उपदेष्टा विप्रों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का कहना है ॥३८-३९॥ परन्तु, मुझे ती यह दिखाई देता है कि जो कर्म किया गया हैं, वह चाहे पुण्य हो अथवा पाप, प्रकट रूप में किया गया हो या अप्रकट रूप में, अपना यथा योग्य फल अवश्य ही दिखाता है ॥४०॥

यथा सूक्ष्माणि कर्माणि फलतीह यथातथम् ।
बुद्धियुक्तानि तानीह कृतानि मनसा सह ॥४१
भवत्यल्पफलं कर्म सेवितं नित्यनुल्बणम् ।
अबुद्धिपूर्वं धर्मज्ञ कृतनुग्रेण कर्मणा ॥४२
कृतानि यानि कर्माणि दैवतैर्मुनिभिस्तथा ।
न चरेत् तानि धर्मात्मा श्रुत्वा चापि न कुत्सयेत् ॥४३
संचिन्त्य मनसा राजन् विदित्वा शक्यमात्मनः ।
कपोति यः शुभं कर्म स वै भद्राणि पश्यति ॥४४
नवे कपाले सलिलं सन्यस्तं हीयते यथा ।
नवेतरे तथाभावं प्राप्नोति सुखभावितम् ॥४५

हे धर्मज्ञ ! जैसे मन से सोच कर बुद्धि द्वारा किये गये स्थूल या सूक्ष्म कर्म अपना फल अवश्य देते हैं, वैसे ही हिसा आदि उग्र कर्म के द्वारा अनजान में किया हुआ घोर पाप भी बना रहने पर अपना फल अवश्य देता है । परन्तु, जान कर किये गये कर्म की अपेक्षा अनजान में किये हुए कर्म का पाप-फल न्यून हो जाता है ॥४१-४२॥ देवताओं और मुनियों द्वारा भी जो अनुचित कर्म किये जाँय, उनका अनुकरण धर्मात्मा पुरुषों को नहीं करना चाहिये । साथ ही उनके उन कर्मों को सुन कर उनकी निन्दा करना भी उचित नहीं है ॥४३॥ हे राजन् ? मन ने खूब विचार करके कि'अमुक कार्य मैं कर सकूँगा अथवा नहीं, जो मनुष्य शुभ कर्म का आरम्भ करता है, उसे अवश्य ही अपना कल्याण दिखाई देता है ॥४४॥जैसे नये बने हुए कोरे कच्चे घड़े में रखा हुआ जल नष्ट होजाता है. परन्तु पके हुए घड़े में खराब नहीं होता, वैसे ही परिपक्व अतःकरण में सम्पादित हुआ सुख देने वाला शुभ कर्म नष्ट नहीं होता ॥४५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सतोयेऽन्यत् तु यत् योयं तस्मिन्नेव प्रसिच्यते ।
वृद्धे वृद्धिमवाप्नोति सलिले सलिलं यथा ॥४६
एवं कर्माणि यानीह बुद्धियुक्तानि पार्थिव ।
समानि चैव यामोह तानि पुण्यतमान्यपि ॥४७
राज्ञा जेतव्याः शत्रवश्चोन्नताश्च
सम्यक् कर्तव्यं पालनं च प्रजानाम् ।
अग्निश्चेयो बहुभिश्चापि यज्ञै-
रन्त्ये मध्ये वा वनमाश्रित्य स्थेयम् ॥४८
दमान्वितः पुरुषो धर्मशीलो
भूतानि चात्मानमिवानुपश्येत् ।
गरीयसः पूजयेदात्मशक्त्या
सत्येन शीलेन सुखं नरेन्द्र ॥४९

जिस पके हुए घड़े में जल रखा है उसमें और जल डाला जाय तो पहिले का और नया जल मिल कर बढ़ जाता और घड़ा जल से परिपूर्ण हो जाता है, इसी प्रकार विवेक पूर्वक किये गये संचित पुण्य कर्मों के साथ नवीन पुण्य कर्म मिलकर अधिकतम श्रेष्ठ हो जाते हैं ॥४६-४७॥हे राजन् ! बढ़े हुए शत्रुओं को जीतना राजा का कर्त्तव्य है । उसे प्रजा का भी न्याय पूर्वक पालन करना चाहिये । विभिन्न प्रकार के यज्ञानुष्ठान द्वारा अग्नि देवता को तृप्त करे और वैराग्य उत्पन्न होने पर मध्यम या अन्तिम अवस्था मे वन में निवास करे॥४८॥ हे नरेन्द्र ? इन्द्रिय को वश में रखता हुआ धर्मात्मा होकर सभी प्राणियों को अपने समान समझे । विद्या, तप और अवस्था में जो अपने में बड़े हों, उनका यथाशक्ति पूजन करे । सत्य बोलना और शुभ आचरण ही सुख का कारण है ॥४९॥

कः कस्य चोपकुरुते कश्च कस्मै प्रयच्छति ।
प्राणी करोत्ययं कर्म सर्वमात्मार्थमात्मना ॥५०
गौरवेण परित्यक्तं निःस्नेहं परिवर्जयेत् ।
सोदर्यं भ्रातरमपि किमुतान्यं पृथग्जनम् ॥५१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विशिष्टस्य विशिष्टाच्च तुल्यौ दानप्रतिग्रहौ ।
तयोः पुण्यतरं दानं तद् द्विजस्य प्रयच्छतः ।।५२
न्यायागतं धनं चैव न्यायेनैव विवर्धितम् ।
संरक्ष्यं यत्नमास्थाय धर्मार्थमिति निश्चयः ।।५३
न धर्मार्थी नृशंसेन कर्मणा धनमर्जयेत् ।
शक्तितः सर्वकार्याणि कुर्यान्नर्द्धिमनुस्मरेत् ।।५४
अपो हि प्रयतः शीतास्तापिता ज्वलनेन वा ।
शक्तितोऽतिथये दत्त्वा क्षुधार्तायाश्नुते फलम् ।।५५

पराशरजी ने कहा—कौन किसका उपकार करता है ? कौन किसे कुछ देता है ? यह सभी कार्य जीव अपने लिये ही करता है ।।५०।। अपना सगा भाई भी यदि अच्छे स्वभाव को त्याग दे और स्नेह को छोड़ दे तो लोग उसका भी त्याग कर देते हैं, फिर दूसरों का तो कहना ही क्या ? ।।५१।। श्रेष्ठ पुरुष को दिया हुआ दान और श्रेष्ठ पुरुषों से प्राप्त प्रतिग्रह, यह दोनों ही समान हैं । फिर भी इन दोनों में से ब्राह्मण को दान स्वीकार करने की अपेक्षा दान देना ही अधिक पुण्य युक्त माना गया है ।।५२।। धर्मशास्त्र का निश्चय है कि न्याय से प्राप्त किया और न्याय से ही बढ़ाया गया धन धर्म के उद्देश्य से संचित करने योग्य होता है ।।५३।। धर्म की कामना वाले पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह क्रूर कर्म से धनोपार्जन न करे । अपनी शक्ति हो जितने शुभ कर्म करे और धन को बढ़ाने के लिये चिन्तित न हो ।।५४।। ऋतु के अनुसार ठंडा अथवा गर्म जल और पवित्र अन्न प्यासे और भूखे अतिथि को जो अपनी शक्ति के अनुसार देता है, वह श्रेष्ठ फल प्राप्त करता है ।।५५।।

रन्तिदेवेन लोकेष्टा सिद्धिः प्राप्ता महात्मना ।
फलपत्रैरथो मूलैर्भुनीनर्चितवांश्च सः ।।५६
तैरेव फलपत्रैश्च स माठरमतोषयत् ।
तस्माल्लेभे परं स्थानं शैब्योऽपि पृथिवीपतिः ।।५७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवतातिथिभृत्येभ्यः पितृभ्यश्चात्मनस्तथा ।
ऋणवान् जायते मर्त्यस्तस्मादनृणतां व्रजेत् ।।५८
स्वाध्यायेन महर्षिभ्यो देवेभ्यो यज्ञकर्मणा ।
पितृभ्यः श्राद्धदानेन नृणामभ्यर्चनेन च ।।५९
बाचा शेषावहार्येण पालनेनात्मनोऽपि च ।
यथावद् भृत्यवर्गस्य चिकीर्षेत् कर्म आदितः ।।६०

महान् आत्मा रन्तिदेव ने ऋषि मुनियों का फल-मूल और पत्तों के द्वारा पूजन किया था, इससे उन्हें वह सिद्धि मिल गई, जिसकी अभिलाषा सभी लोग किया करते हैं। पृथिवीपति राजा शैव्य ने भी फल पत्तों से ही माठर मुनि को संतुष्ट किया था, इससे उन्हें श्रेष्ठ लोक की प्राप्ति हो गई थी ।।५७।। प्रत्येक मनुष्य देवता, अतिथि, भरण-पोषण योग्य कुटुम्बी, पितर और स्वयं का भी ऋणी होकर उत्पन्न होता है, इसलिए उसे ऋण-मुक्त होने का यत्न करना चाहिये।।५८।। वेद आदि का स्वाध्याय करके ऋषियों के, यज्ञानुष्ठान द्वारा देवताओं के, श्राद्ध और दान से पितरों के तथा स्वागत, सत्कार, सेवा आदि के द्वारा अतिथियों का ऋण चुक जाता है ।।५९।। अपने ऋण से मुक्त होने के लिये वेद वाणी का पाठ, श्रवण, मनन करे और यज्ञ शेष अन्न का भोजन तथा सभी जीवों की तत्परता से रक्षा करे। भरण-पोषण योग्य कुटुम्बियों का पालन आरम्भ से ही करे, इससे उनके ऋण से लुटकारा मिल सकता है ।।६०।।

प्रयत्नेन च संसिद्धा धनैरपि विवर्जिताः ।
सम्यग्घूत्वा हुतवहं मुनयः सिद्धिमागताः ।।६१
विश्वामित्रस्य पुत्रत्वमृचीकतनयोऽगमत् ।
ऋग्भिः स्तुत्वा महाबाहो देवान् वै यज्ञभागिनः ।।६२
गतः शुक्रत्वमुशना देवदेवप्रसादनात् ।
देवीं स्तुत्वा तु गगने मोदते यशसा वृतः ।।६३
असितो देवलश्चैव तथा नारदपर्वतौ ।
कक्षीवान् जामदग्न्यश्च रामस्ताण्डयस्तथाऽऽत्मवान् ।।६४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वसिष्ठो दग्निश्च श्वामित्रो[illegible] च।
भरद्वाजौ रश्मश्रुः [illegible] श्रुतश्रवा ॥६५
एते महर्ष[illegible] स्तुत्वा। ष्णुमृग्भिः समाहिताः।
लेभिरे तप सिद्धि प्रसादात् तस्य धीमतः ॥६६

ऋषि-मुनियों के पास किसी प्रकार का धन नहीं था, फिर भी उन्हें अपने ही प्रयत्न से सिद्धि प्राप्त हुई। विधि पूर्वक अग्निहोत्र करने से उन्हें वह सिद्धि प्राप्त हुई थी ॥६१॥ हे महाबाहो! ऋचीक के पुत्रों ने यज्ञ में भाग लेने वाले देवताओं की वेदमंत्रों से स्तुति की, इसलिये वे विश्वामित्र के पुत्र हो गये ॥६२॥ उशना ऋषि ने देवाधिदेव महादेवजी को प्रसन्न करके उनसे शुक्रत्व प्राप्त किया और उसी नाम से प्रसिद्ध हो गये। उन्होंने भगवती पार्वती की भी स्तुति की थी, जिससे वे यशस्वी ऋषि आकाश में ग्रह रूप होकर आनन्द मग्न हैं ॥६३॥ असित, देवल, नारद, पर्वत, कक्षीवान, जमदग्नि पुत्र परशुराम, मन पर अधिकार रखने वाले ताण्डय, वसिष्ठ, जमदग्नि विश्वामित्र, भरद्वाज, हरिश्मश्रु, कुण्डधार और श्रुतश्रवा—इन ऋषियों वेद की ऋचाओं द्वारा भगवान् विष्णु की एकाग्रमन से स्तुति की थी और उन्हीं श्री हरि की कृपा से तपस्या करके सिद्ध हो गये थे ॥६४--६६॥

अनर्हाश्चार्हतां प्राप्ताः सन्तः स्तुत्व तमेव ह।
न तु वृद्धिमिहान्विच्छेत् कर्म कृत्वा जुगुप्सितम् ॥६७
येऽर्था धर्मेण ते सत्या येऽधर्मेण धिगस्तु तान्।
धर्मं वै शाश्वतं लोके न जह्याद् धनकाङ्क्षया ॥६८
आहिताग्निर्हि धर्मात्मा यः स पुण्यकृदुत्तमः।
वेदा हि सर्वे राजेन्द्र स्थितास्त्रिष्वग्निषु प्रभो ॥६९
स चाप्यन्याहितो विप्रः क्रिया यस्य न हीयते।
श्रेयो ह्यनाहिताग्नित्वमग्नि होत्रं न निष्क्रियम् ॥७०

जो पूजनीय नहीं थे, वे भी श्रीहरि की स्तुति करके पूजनीय सन्त हो गये और अन्त में उन्हीं को प्राप्त हुए। इस लोक में निन्दनीय आचरण करने वाले पुरुष को अपने अभ्युत्थान की कभी आशा नहीं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करनी चाहिये ॥६७॥ जो धन धर्म का पालन करते हुए प्राप्त होता है, वही यथार्थ धन है। अधर्म से प्राप्त हुआ धन धिक्कार देने के योग्य होता है। विश्व में धन के लिये शाश्वत धर्म का कभी भी त्याग करना ठीक नहीं है ॥६८॥ हे राजेन्द्र ! नित्य प्रति अग्निहोत्र करने वाला ही धर्मात्मा और पुण्यकर्माओं में उत्तम पुरुष है। हे प्रभो ? सभी वेद दक्षिणआहवनीय और गार्हपत्यइन तीनों अग्नियों में प्रतिष्ठित हैं ॥६९॥ वही ब्राह्मण अग्निहोत्री है, जिसका सदाचार और सत्कर्म कभी लुप्त नहीं होता। सदाचार का भले प्रकार पालन हो और अग्निहोत्र न हो सके, तो भी ठीक है। परन्तु, सदाचार को छोड़ कर केवल अग्निहोत्र करने से कभी कल्याण नहीं होता ॥७०॥

अग्निरात्मा च माता च पिता जनयिता तथा।
गुरुश्च नरशार्दूल परिचर्या यथातथम् ॥७१
मानं त्यक्त्वा यो नरो वृद्धसेवी
विद्वान् क्लीबः पश्यति प्रीतियोगात्।
दाक्ष्येण हीनो धर्मयुक्तो नदान्तो
लोकेऽस्मिन् वै पूज्यते सद्भिरार्यः ॥७२
वृत्तिः सकाशात् वर्णेभ्यस्त्रिभ्यो हीनस्य शोभना।
प्रीत्योपनीता निर्दिष्टा धर्मिष्ठान् कुरुते सदा ॥७३
वृत्तिश्चेन्नास्ति शूद्रस्यपितृपैतामही ध्रुवा।
न वृत्तिं परतो मार्गेच्छुश्रूषां तु प्रयोजयेत् ॥७४
सद्भिस्तु सह संसर्गः शोभते धर्मदर्शिभिः।
नित्यं सर्वास्ववस्थासु नासद्भिरिति मे मतिः ॥७५

हे नरशार्दूल ! अग्नि, आत्मा, माता, जन्म देने वाले पिता और गुरु-इन सभी की यथा योग्य भरसक सेवा करनी चाहिये ॥७१॥ अभिमान को छोड़ कर जो मनुष्य वृद्ध पुरुषों की सेवा करे तथा काम युक्त भोगों में आसक्ति रहित होकर सबको प्रेम दृष्टि से देखे, विद्वान हो और मन में चतुराई न रख कर धर्म में लगा रहे, दूसरा को दमन न करे, ऐसा पुरुष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस लोक में श्रेष्ठ माना जाता है और सत्पुरुष उसका सदा आदर करते हैं ॥७२॥ पराशर जी ने कहा—शूद्र का श्रेष्ठ कर्त्तव्य तीनों वर्णों की सेवा करके जीवन-निर्वाह करना है। शूद्र के लिये जो सेवावृत्ति कही हैं, उनका प्रेम पूर्वक पालन करने से वे वृत्तियाँ ही उन्हें धर्मज्ञ बनाती हैं ॥७३॥ यदि शूद्र के पास उसके पिता और पितामह का दिया हुआ जीविका का कोई साधन नहीं है तो वह किसी अन्य वृत्ति को न खोजे। उसे तो तीनों वर्णों की सेवा करके ही जीविका कमानी चाहिये ॥७४॥ धर्मदर्शी सत्पुरुषों का सत्संग करना ही सर्व श्रेष्ठ है। किसी भी दशा में, कभी भी दुष्ट पुरुषों का संग ठीक नहीं है—यह मेरा दृढ़ विचार है ॥७५॥

यथोदयगिरौ द्रव्यं संनिकर्षेण दीप्यते ।
तथा सत्संनिकर्षेण हीनवर्णोऽपि दीप्यते ॥७६
यादृशेन हि वर्णेन भाव्यते शुक्लमम्बरम् ।
तादृशं कुरुते रूपमेतदेवमवेहि मे ॥७७
तस्माद् गुणेषु रज्येथा मा दोषेषु कदाचन ।
अनित्यमिह मर्त्यानां जीवितं हि चलाचलम् ॥७८
सुखे वा यदि व दुःखे वर्तमानो विचक्षणः ।
यश्निनोति शुभान्येव स तन्त्राणीहपश्यति ॥७९
धर्मादपेतं यत् कर्म यद्यपि स्यान्महाफलम् ।
न तत् सेवेत मेधावी न तद्धितमिहोच्यते ॥८०

सूर्य की समीपता प्राप्त होने पर जैसे उदयाचल की सभी वस्तुएँ चमक उठती हैं, वैसे ही साधु पुरुषों का संग पाकर निम्न वर्णका मनुष्य भी सद्गुणों से युक्त ही शोभा पाने लगता है ॥७६॥ सफेद कपड़े को जिस रंग में रंगें, वह उसी रंग का हो जाता है। इसी प्रकार जैसी संगति होती है, वैसा ही रंग अपने ऊपर चढ़ जाता है—इसे भले प्रकार जान लो ॥७७॥ इसलिये हे राजन्! तुम सदगुणों में ही अनुराग रक्खो, दोषों से नेह मत करो। क्योंकि, इस संसार में मनुष्यों का जीवन अनित्य और चलानमान है ॥७८॥ जो विद्वान् सुख अथवा दुःख में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहता हुआ भी श्रेष्ठ कर्मों को ही सदा करता है, वही सब शास्त्रों को देखने और समझने वाला मानना चाहिये ॥७९॥ धर्म के विपरीत कर्म यदि लौकिक दृष्टि से अत्यंत लाभप्रद भी हों तो बुद्धिमान पुरुष को उनका कभी भी सेवन नहीं करना चाहिये। क्योंकि, ऐसा करना इस संसार में हितकारक नहीं कहा जाता ॥८०॥

(धर्मेण सहितं यत् तु भवेदल्पफलोदयम् ।
तत् कार्यमविशङ्केन कर्मात्यन्तं सुखावहम् ॥)
यो हृत्वा गोसहस्राणि नृपो दद्यादरक्षिता ।
स शब्दमात्रफलभाग् राजा भवति तस्करः ॥८१
स्वयम्भूरसृजच्चाग्रे धातारं लोकसत्कृतम् ।
धातासृजत् पुत्रमेकं लोकानां धारणे रतम् ॥८२
तमर्चयित्वा वैश्यस्तु कुर्यादत्यर्थमृद्धिमत् ।
रक्षितव्यं तु राजन्यैरुपयोज्यं द्विजातिभिः ॥८३
अजिह्मैरशठक्रोधैर्हव्यकव्यप्रयोक्तृभिः ।
शूद्रैर्निर्मार्जनं कार्यमेवं धर्मो न नश्यति ॥८४
अप्रणष्टे ततो धर्म्म भवन्ति सुखिताः प्रजाः ।
सुखेन तासां राजेन्द्र मोदन्ते दिवि देवताः ॥८५

धर्मानुकूल कार्य न्यून लाभ वाला हो तो भी शंका छोड़ कर उसे कर लेना चाहिये। क्योंकि, अन्त में वह अत्यन्त सुखदायक होता है। जो राजा दूसरों से हजारों गौएँ छीन कर उनका दान करता हैं तथा प्रजा की रक्षा नहीं करता, वह कहने भर को दानी अथवा राजा है। यथार्थ में तो उसे तस्कर ही समझना चाहिये॥८१॥परमात्मा ने सर्वप्रथम संसार-पूज्य ब्रह्मा को प्रकट किया। उस ब्रह्मा ने एक पुत्र (पर्जन्य) को उत्पन्न किया। वह पर्जन्य सभी लोकों को धारण करने में लगा रहता है ॥८२॥ वैश्य का कर्त्तव्य है कि उसी पर्जन्य का पूजन करे और कृषि-कर्म तथा पशुपालन के द्वारा उसे अत्यन्त समृद्धिशाला बनावे। राजा उसकी रक्षा करे और ब्राह्मण भी कुटिलता, कपट।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और क्रोध को छोड़ कर हव्य कव्य के प्रयोग द्वारा यज्ञानुष्ठान में उस अन्न-धन को उपयोग में लावें। शूद्रों को चाहिये कि वे यज्ञ भूमि और त्रैवर्णिकों के गृहों को स्वच्छ रखें। इस प्रकार करने से धर्म नष्ट नहीं होता ॥८३-८४॥ धर्म नष्ट न हो। उसका पालन होता रहने से ही सम्पूर्ण प्रजा सुखी रहती है। हे राजेन्द्र ! प्रजाओं के सुखी रहने पर स्वर्ग के देवता भी प्रसन्न रहते हैं ॥८५॥

तस्माद् यो रक्षति नृपः स धर्मेणेति पूज्यते ।
अधीते चापि यो विप्रो वैश्योयश्चार्जने रतः ॥८६
यश्च शुश्रूषश्रु शूद्रः सततं नियतेन्द्रियः ।
अतोऽन्यथा यष्येन्द्र स्वधर्मात् परिहीयते ॥८७
प्राणसंतापनिर्दिष्टाः काकिण्योऽपि महाफलाः ।
न्यायेनोपार्जिता दत्ताः किमुतान्याः सहस्रशः ॥८८
सत्कृत्य हि द्विजातिभ्यो यो ददाति नराधिपः ।
यादृशं तादृशं नित्यमश्नाति फलमूर्जितम् ॥८९
अभिगम्य च तत् तुष्ट्या दत्तमाहुरभिष्टुतम् ।
याचितेन तु यद् दत्तं तदाहुर्मध्यमं बुधाः ॥९०

प्रजा की धर्म पूर्वक रक्षा करने वाला राजा उसी धर्माचरण के कारण संसार में पूजा जाता है। इसी प्रकार धर्मपूर्वक स्वाध्याय करने वाला ब्राह्मण, धर्मानुसार धनोपार्जन में लगा रहने वाला वैश्य और जितेन्द्रिय रह कर तीनों वर्णों की सेवा में लगा रहने वाला शूद्र-यह सभी अपने-अपने धर्म पर चलने के कारण ही विश्व में सम्मानित होते हैं। हे राजन् ! जो इसके विपरीत आचरण करते हैं, वे अपने धर्म से पतित हो जाते हैं ॥८६-८७॥ प्राणों को कष्ट देकर भी न्याय से उपार्जित थोड़ी-सी कौड़ियाँ भी दान करने पर महान् फल दायिनी होती हैं, तो फिर सहस्रों की संख्या में दी जाने वाली अन्य वस्तुओं का तो कहना ही क्या है ? ॥८८॥ जो ब्राह्मणों का सत्कार करके उन्हें दान करता है, वह राजा वैसे ही श्रेष्ठ फल का सदा उपभोग करने का अधिकारी होता है ॥८९॥ जो दान ब्राह्मण के घर पर स्वयं जाकर दिया जाता है, वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रशंसनीय है तथा माँगने पर जो दान दिया जाता है, वह विद्वानों द्वारा मध्यम श्रेणी का दान कहा गया है ॥९०॥

अवज्ञया दीयते यत् तथैवाश्रद्धयापि वा ।
तमाहुरधमं दानं मुनयःसत्यवादिनः ॥९१
अतिकामेन्मज्जमानो विविधेन नरः सदा ।
तथा प्रयत्नं कुर्वीत यथा मुच्येत संश्रयात् ॥९२
दमेन शोभते विप्रः क्षत्रियो विजयेन तु ।
धनेन वैश्यः शूद्रस्तु नित्यं दाक्ष्येण शोभते ॥९३
प्रतिग्रहागता विप्रे क्षत्रिये युधि निर्जिताः ।
वैश्ये न्यायार्जिताश्चैव शूद्रे शुश्रूषयार्जिताः ॥९४
स्वल्पाप्यर्थाः प्रशस्यन्ते धर्म्यास्यार्थे महाफलाः ॥९५

जो दान अवहेलना या अश्रद्धा पूर्वक दिया जाता है, उसे सत्य-वक्ता मुनियों ने अधम श्रेणी का बताया है । जिस प्रकार के उपायों द्वारा डूबता हुआ मनुष्य समुद्र से पार हो जाता है, वैसे ही संसार-समुद्र से छुटकारा पाने के लिये तुमको भी वैसा ही प्रयत्न करना चाहिये ॥९१-९२॥ इंद्रिय संयम से ब्राह्मण, युद्ध में विजय प्राप्त करने से क्षत्रिय, न्याय पूर्वक उपार्जन किये हुए धन से वैश्य और सदा सेवा-कार्य में कुशलता का परिचय देने से शूद्र सुशोभित होता है ॥९३॥ पराशर जी ने कहा—ब्राह्मण के यहाँ प्रतिग्रह से प्राप्त धन, क्षत्रिय के यहाँ युद्ध जीत कर लाया हुआ धन, वैश्य के यहाँ न्याय पूर्वक उपार्जित धन और शूद्र के यहाँ सेवा से प्राप्त हुआ धन यदि थोड़ा भी हो तो अत्यन्त प्रशंसनीय है । यदि उसका उपयोग धर्म-कार्य में हो तो वह महान् फलदायक हो जाता है ॥९४-९५॥

नित्यं त्रयाणां वर्णानां शुश्रूषुः शुद्र उच्यते ।
क्षत्रधर्मा वैश्यधर्मा नावृत्तिः पतते द्विजः ।
शूद्रधर्मा यदा तु स्यात् तदा पतति वै द्विजः ॥९६
वाणिज्यं पाशुपाल्यं च तथा शिल्पोपजीवनम् ।
शूद्रस्यापि विधीयन्ते यदा वृत्तिर्न जायते ॥९७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रङ्गावतरणं चैव तथा रूपोपजीवनम् ।
मद्यमांसोपजीव्यं च विक्रयं लोहचर्मणोः ॥९८
अपूर्विणा न कर्तव्यं कर्म लोके विगर्हितम् ।
कृतपूर्वं तु त्यजतो महान् धर्म इति श्रुतिः ॥९९
संसिद्धः पुरुषो लोके यदाचरति पापकम् ।
तदेनाभिप्लुतमनास्तच्च न ग्राह्यमुच्यते ॥१००

शूद्र को तीनों वर्णों की सदा सेवा करने वाला कहा है। जीविका के न होने पर ब्राह्मण यदि क्षत्रिय या वैश्य के धर्म से जीवन-निर्वाह करे वह पतित नहीं होता। परन्तु, यदि वह शूद्र का धर्म अपनाता हैं तो उसी समय पतित हो जाता है ॥९६॥ जब सेवा वृत्ति के द्वारा शूद्र की जीविका न चल सकती हो, तब उसके लिये भी व्यापार, पशुपालन, शिल्पकला आदि से जीवन-निर्वाह करने की अनुमति दी गई है ॥९७॥ स्त्री आदि का वेश बना कर रंगमंच पर नृत्य करना, खेल दिखाना, बहुरूपिया बनना, माँस-मदिरा के विक्रय से जीविका चलाना, अथवा लोहा या चमड़ा बेचना यह सब कर्म निन्दित कहे गये हैं। जिसके यहाँ यह कार्य परम्परागत न हों, उसे इनका आरम्भ करना उचित नहीं हैं। जिसके यहाँ पहिले से यह कार्य होते हों, वह भी इन्हें त्याग दे तो बड़ा धर्म होता है—ऐसा श्रुति कहती है ॥९८—९९॥ कोई प्रसिद्ध पुरुष अहंकार अथवा लोभ के वशीभूत होकर पाप का आचरण करने लगे तो उसका वह कार्य अनुकरणीय नहीं कहा गया ॥१००॥

श्रूयन्ते हि पुराणेषु प्रजा धिग्दण्डशासनाः ।
दान्ता धर्मप्रधानाश्च न्यायधर्मानुवृत्तिकाः ॥१०१
धर्म एव सदा नृणामिह राजन् प्रशस्यते ।
धर्मवृद्धा गुणानेव सेवन्ते हि नरा भुवि ॥१०२
तं धर्ममसुरास्तात नामृष्यन्त जनाधिप ।
विवर्धमानाः क्रमशस्तत्र तेऽन्वाविशन् प्रजाः ॥१०३
तासां दर्पः समभवद् प्रजानां धर्मनाशनः ।
दर्पात्मनां ततः पश्चात् क्रोधस्तासामजायत ॥१०४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ततः क्रोधाभिभूतानां वृत्तं लज्जासमन्वितम् ।
ह्रीश्चैवाप्यनशद् राजंस्ततो मोहो व्यजायत ॥१०५

पुराणों में सुना जाता है कि पूर्वकाल में अधिकांश मनुष्य संयमी होते थे और सदा धर्ममय और न्यायोचित आचरण करते थे। उस समय अपराधियों को केवल धिक्कारना ही दंड माना जाता था ॥१०१॥ हे राजन् ! इस विश्व में मनुष्यों के धर्म की ही सदा प्रशंसा हुई है। धर्म में बढ़े-चढ़े व्यक्ति इस पृथ्वी पर केवल सद्गुणों का ही सेवन करते हैं ॥१०२॥ हे तात ! हे जनाधिप ! असुरों ने उस धर्म को सहन नहीं किया और वे क्रमशः वृद्धि को प्राप्त होते हुए प्रजा के शरीर में प्रविष्ट हो गये ॥१०३॥ उससे प्रजाओं में धर्म नाशक दर्प की उत्पत्ति हुई और जब प्रजाओं के मन में दर्प उत्पन्न हुआ, तब उससे क्रोध भी प्रकट हो गया ॥१०४॥ हे राजन् ! फिर क्रोधाक्रान्त मनुष्यों को लज्जायुक्त सदाचार का लोप हो गया। उनका संकोच नष्ट हुआ और फिर उनमें मोह का प्रादुर्भाव हुआ ॥१०५॥

ततो पहपरीतास्ता नाश्यन्त यथा पुरा ।
परस्परावमर्देन वर्धयन्त्यो यथासुखम् ॥१०६
ताः प्राप्य तु सधिग्दण्डो न कारणमतोऽभवत् ।
ततोऽभ्यगच्छन् देवांश्च ब्राह्मणाश्चावमन्य ह ॥१०७
एतस्मिन्नेव काले तु देवा देववरं शिवम् ।
अगच्छन् शरणं धीरं बहुरूपं गुणाधिकम् ॥१०८
तेन स्म ते गगनगाः सपुराः पातिताः क्षितौ ।
त्रिधाप्येकेन बाणेन देवाप्यायिततेजसा ॥१०९
तेषामधिपतिस्त्वासीद् भीमो भीमपराक्रमः ।
देवतानां भयकरः स हृतः शूलपाणिना ॥११०

मोह से आवृत्त होने पर उनमें विवेक पूर्ण दृष्टि न रही, इसलिए वे परस्पर एक-दूसरे को नष्ट करके अपनी-अपनी सुख-वृद्धि का प्रयत्न करने लगे ॥१०६॥ उन लोगों के बिगड़ने पर धिक्कार का दण्ड उन्हें सुधारने में सफल नहीं रहा। वे सब मनुष्य देवता और ब्राह्मणों का अपमान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते हुए इच्छानुसार विषय-भोगों का उपभोग करने में लग गये ॥१०७ ऐसा अवसर आने पर सभी देवता अनेक रूप धारण करने वाले, अत्यंत गुणशाली, स्वभाव से धीर देवेश्वर भगवान् शिव जी की शरण में उपस्थित हुए ॥१०८॥ तब भगवान् शिव ने देवताओं द्वारा प्रवृद्ध किये तेजवाले एक ही शक्तिशाली बाण से तीन नगरों युक्त आकाश में विचरण करने वाले उन सभी असुरों को मार कर धराशायी कर दिया ॥१०९॥ उन असुरों के स्वामी का भयंकर आकार था और वह भीषण पराक्रमी था। देवताओं को वह सदा डराये रखता था। शूल-पाणि शिवजी ने उसे भी मार दिया ॥११०॥

तस्मिन् हतेऽथ स्वं भावं प्रत्यपद्यन्त मानवाः ।
प्रापद्यन्त च वेदान् वै शास्त्राणि च यथा पुरा ॥१११
ततोऽभिषिच्य राज्येन देवानां दिवि वासवम् ।
सप्तर्षयश्चान्वयुङ्क्त नराणां दण्डधारणे ॥११२
सप्तर्षीणामणोर्ध्वं च विपृथुर्नाम पार्थिवः ।
राजानः क्षत्रियाश्चैव मण्डलेषु पृथक् पृथक् ॥११३
महाकुलेषु ते जाता वृद्धाः पूर्वतराश्च ये ।
तेषामप्यासुरो भावो हृदयान्नापसर्पति ॥११४
तस्मात् तेनैव भावेन सानुषङ्गेण पार्थिवाः ।
आसुराण्येव कर्माणि न्यसेवन् भीमविक्रमाः ॥११५

उस असुर के मरने पर सभी मनुष्य प्रकृतिस्थ हो गये और उन्हें पहिले के समान ही वेद-शास्त्रों का ज्ञान होगया ॥१११॥ फिर सप्तर्षियों ने स्वर्ग में देवताओं के राज्य पर इन्द्र को अभिषिक्त किया और वे स्वयं मनुष्य का शासन-कार्य करने लगे ॥११२॥ सप्तर्षियों के बाद विपृथु नामक राजा पृथ्वी का स्वामी हुआ फिर अनेक क्षत्रिय राजा विभिन्न मण्डलों के अधिपति बन गये ॥११३॥ उस समय उच्चकुल में उत्पन्न, अवस्था और गुणों में प्रवृद्ध तथा उनसे भी पूर्ववर्ती जो पुरुष थे, उन सब के हृदयों से आसुर भाव पूर्ण रूपेण नहीं निकल पाया था ॥११४॥ इसलिये, उसी आनुषंगिक आसुर भाव से प्रभावित हुए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कितने ही भीषण पराक्रम वाले राजा असुरों के योग्य कर्मों में ही रत रहने लगे ॥११५॥

प्रत्यतिष्ठंश्च तेष्वेव तान्येव स्थापयन्त्यपि ।
भजन्ते तानि चाद्यापि ये बालिशतरा नराः ॥११६
तस्मादहं ब्रवीमि त्वां राजन् संचिन्त्य शास्त्रतः ।
संसिद्धाधिगमं कुर्यात् कर्म हिंसात्मकं त्यजेत् ॥११७
न संकरेण द्रविणं प्रचिन्वीयाद विचक्षणः
धर्मार्थं न्यायमुत्सृज्य न तत् कल्याणमुच्यते ॥११८
स त्वमेवंविधो दान्तः क्षत्रियःप्रियबान्धवः ।
प्रजा भृत्यांश्च पुत्रांश्च स्वधर्मेणानुपालय ॥११९
इष्टानिष्टसमायोगो वैरं सौहार्दमेव च ।
अथ जातिसहस्राणि बहूनि परिवर्तते ॥१२०

अत्यंत मूर्ख मनुष्य आज भी उस आसुर भाव में रत हैं और वे उसी भाव को स्थापित करते तथा उसी को अपनाते हैं ॥११६॥ इस लिये हे राजन् ! मैं विचार पूर्वक शास्त्रानुसार कहता हूँ कि मनुष्य अपनी उन्नति का प्रयत्न तो करे, परन्तु हिंसात्मक कर्म को छोड़ दे ॥११७॥ बुद्धिमान पुरुष का कर्त्तव्य है कि धर्म करने का विचार रखे और न्याय को छोड़ कर पाप युक्त मार्ग से धन इकट्ठा न करे, क्योंकि वह कल्याण करने वाला नहीं कहा गया है ॥११८॥ तुम भी जितेन्द्रिय क्षत्रिय रहते हुए अपने बन्धु बान्धवों के प्रति प्रेम रखो और प्रजा, भृत्य तथा पुत्रों का अपने धर्म के अनुसार पालन करो ॥११९॥ इष्ट, अनिष्ट का संयोग, वैर और सौहार्द्र इन सब का अनुभव करने में मनुष्य के कई हजार जन्म व्यतीत हो जाते हैं ॥१२०॥

तस्माद् गुणेषु रज्येथा मा दोषेषु कथंचन ।
निर्गुणोऽपि हि दुर्बुद्धिरात्मनः सोऽतिरज्यते ॥१२१
मानुषेषु महाराज धर्माधर्मौ प्रवर्ततः ।
न तथान्येषुभूतेषु मनुष्यरहितेष्विह ॥१२२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मशीलो नरो विद्वानीहकोऽनीहकोपि वा ।
आत्मभूतः सदालोके चरेद् भूतान्यहिंसया ।।१२३
यदा व्यपेतहृल्लेखं मनो भवतितस्य वै।
नानृतं चैव भवति तदा कल्याणमृच्छति ।।१२४

इसलिये सद्गुणों में अनुराग रखो, दोषों में किसी प्रकार भी नहीं। क्योंकि गुणहीन और बुद्धिहीन मनुष्य भी अपने गुणों के अभिमान में रहता है ।।१२१।। हे महाराज ! जैसे मनुष्यों में धर्म और अधर्म दोनों का निवास रहता है,वैसे मनुष्यों से भिन्न प्राणियों में नहीं रहता।।१२२।।धर्मशील और विद्वान् पुरुष चाहे चेष्टावान् हो अथवा चेष्टारहित हो, उसका कर्त्तव्य है कि संसार में सभी प्राणियों के प्रति सदा आत्मभाव रखे और सब में समान व्यवहार रखते हुए किसी की भी हिंसा न करे।।१२३।।मनुष्य का मन जब कामना और कर्म के संस्कारों को त्याग देता है, तब वह मिथ्या आचरण भी नहीं करता। तभी वह कल्याण को प्राप्त कर पाता है ।।१२४।।

एष धर्मविधिस्तात गृहस्थस्य प्रकीर्तितः ।
तपोविधिं तु वक्ष्यामि तन्मे निगदतः शृणु ।।१२५
प्रायेण च गृहस्थस्य ममत्वं नाम जायते ।
सङ्गागतं नरश्रेष्ठ भावे राजसतामसैः ।।१२६
गृहाण्याश्रित्य गावश्च क्षेत्राणि च धनानि च ।
दाराः पुत्राश्च भृत्याश्च भवन्तीह नरस्य वै ।।१२७
एवं तस्य प्रवृत्तस्य नित्यमेवानुपश्यतः ।
रागद्वेषौ विवर्धेते ह्यनित्यत्वमपश्यतः ।।१२८
रागद्वेषाभिभूतं च नरं द्रव्यवशानुगम् ।
मोहजाता रतिर्नाम समुपैति नराधिप ।।१२९
कृतार्थं भोगिनं मत्वा सर्वो रतिपरायणः ।
लाभं ग्राम्यसुखादन्यं रतितो नानुपश्यति ।।१३०

पराशरजी ने कहा—हे तात ! मैंने तुम्हारे प्रति गृहस्थ के धर्म का विधान कहा है। अब मैं तप की विधि कहता हूँ उसे मेरे मुख से श्रवण करो ।।१२५।। हे राजन् ! गृहस्थ जब राजस और तामस भावों के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संसर्ग में आता है, तब उसे पदार्थ और व्यक्ति में ममता उत्पन्न हो जाती है ॥१२६॥ घर के आश्रित होने पर गौ, कृषि, धन-धान्य, स्त्री-पुरुष और भरण-पोषण के योग्य कुटुम्बी जन तथा भृत्यादि से सम्बन्ध स्थापित होता है ॥१२७॥ प्रवृत्ति मार्ग में इस प्रकार स्थित हुआ वह मनुष्य प्रतिदिन उन वस्तुओं को देखता है। परन्तु, उन वस्तुओं के अनित्य होने की ओर उसका ध्यान नहीं जाता। इसीलिये उसके मन में इन वस्तुओं के प्रति राग-द्वेष बढ़ने लगते हैं ॥१२८॥ हे नराधिप राग-द्वेष के वश में पड़ कर मनुष्य जब द्रव्य में अनुरक्त हो जाता है, तब मोह से उत्पन्न हुई रति उसके पास आ जाती है ॥१२९॥ तब, उस रति की उपासना में रत सभी व्यक्ति भोगी को ही कृतार्थ मानते हैं और रति के द्वारा जिस विषय सुख की उसे प्राप्ति होती है, उससे अधिक अन्य कोई लाभ नहीं समझते ॥१३०॥

ततो लोभाभिभूतात्मा संगाद् वर्धयते जगत् ।
पुष्ट्यर्थं चैव तस्येह जनस्यार्थं चिकीर्षति ॥१३१
स जानन्नपि चाकार्यमर्थार्थं सेवते नरः ।
बालस्नेहपरीतात्मा तत्क्षयाच्चानुतप्यते ॥१३२
ततो मानेन सम्पन्नो रक्षन्नात्मपराजयम् ।
करोति येन भोगी स्यामिति तस्माद् विनश्यति ॥१३३
तथा हि बुद्धियुक्तानां शाश्वतं ब्रह्मवादिनाम् ।
अन्विच्छतां शुभं कर्म नराणां त्यजतां सुखम् ॥१३४
स्नेहायतननाशाच्च धननाशाच्च पार्थिव ।
अधिव्याधिप्रतापाच्च निर्वेदमुपगच्छति ॥१३५

फिर उनके मन पर लोभ अधिकार कर लेता है और वे आसक्ति के वश में पड़े हुए अपने परिजनों की वृद्धि करते रहते हैं। फिर उन कुटुम्बियों के पालन-पोषण के लिये धन-संग्रह करने की कामना होती है ॥१३१॥ यद्यपि मनुष्य को ज्ञान है कि अमुक कार्य पाप रूप है तो भी धन के निमित्त उसे करना पड़ता है। बालकों के स्नेह में मन डूब जाता है और जब उनमें से किसी की मृत्यु हो जाती है, तब उनके

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लिये बारबार संताप करता है ॥१३२॥ धन के कारण सम्मान बढ़ जाने पर वह मान युक्त पुरुष अपना अपमान न हो, इसके लिये प्रयत्न शील रहता है और भोग-सामग्रियों से सम्पन्न होने के उद्देश्य से वह सभी कार्य करता और ऐसा प्रयत्न करता-करता ही एक दिन नाश को प्राप्त हो जाता है ॥१३३॥ यथार्थ में जो पुरुष शुभ कर्मों का अनुष्ठान करते हुए उनके द्वारा सुख-प्राप्ति की इच्छा को छोड़ देते हैं, उन समत्व बुद्धि वाले ब्रह्मवादी पुरुषों को ही शाश्वत पद प्राप्त होता है ॥१३४॥ हे भूपते ! संसारी मनुष्यों को तो वैराग्य तभी होता है जब उनके स्नेह के आधारभूत स्त्री पुत्र आदि नष्ट हो जाते हैं, धन नहीं रहता और रोग तथा चिन्ता में सन्तप्त रहना पड़ता है ॥१३५॥

निर्वेदादात्मसम्बोधः सम्बोधाच्छास्त्रदर्शनम् ।
शास्त्रार्थदर्शनाद् राजंस्तप एवानुपश्यति ॥१३६
दुर्लभो हि मनुष्येन्द्र नरः प्रत्यवमर्शवान् ।
यो वै प्रियसुखे क्षीणे तपः कर्तुं व्यवस्यति ॥१३७
तपः सर्वगतं तात हीनस्यापि विधीयते ।
जितेन्द्रियस्य दान्तस्य स्वर्गमार्गप्रवर्तकम् ॥१३८
प्रजापतिः प्रजाः पूर्वमसृजत् तपसाविभुः ।
क्वचित् क्वचिद् ब्रह्मपरो व्रतान्यास्थायपार्थिव ॥१३९
आदित्या वसवो रुद्रास्तथैवाग्न्यश्विमारुताः ।
विश्वेदेवास्तथा साध्याः पितरोऽथ भरुदगणाः ॥१४०
यक्षराक्षसगन्धर्वाः सिद्धाश्चान्ये दिवौकसः ।
संसद्धास्तपसा तात ये चान्ये स्वर्गवासिनः ॥१४१

हे राजन् ! वैराग्य होने पर, उससे आत्मतत्व की जिज्ञासा होती है। उस जिज्ञासासे शास्त्रों के अर्थ आदि को समझने में मन लगता है और अर्थ आदि समझने से तप को ही कल्याण साधन देखता है ॥१३६॥ हे मनुष्येन्द्र !संसारमें ऐसा विवेकी पुरुष दुर्लभ है जो अपने प्रियजनों द्वारा प्राप्त होने वाले सुख के क्षीण होने पर तप को अपना कर्त्तव्य निश्चित करता है ॥१३७॥ हे तात ! तपस्या करने में सभी का अधिकार है। तपस्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का विधान जितेन्द्रिय और मन को वश में रखने वाले नीचे वर्ण के पुरुष को भी है। क्योंकि तपस्या ही पुरुष को स्वर्ग के मार्ग पर लाती है ॥१३८॥ हे पृथ्वीनाथ ! प्राचीन काल में प्रजापति तपस्या में स्थित हुए तथा कभी-कभी ब्रह्म परायण व्रत में भी स्थित होते हुए इस जगत की रचना की ॥१३९॥ आदित्य, वसु, रुद्र, अग्नि, आश्विनीकुमार, वायु, विश्वेदेव, साध्य, पितर, मरुद्गण यक्ष, राक्षस, गंधर्व, सिद्ध और स्वर्ग में निवास करने वाले अन्य सभी देवताओं ने तपस्या के द्वारा ही सिद्धि प्राप्त की है॥१४०-१४१॥

ये चादौ ब्राह्मणाः सृष्टा ब्रह्मणा तपसा पुरा।
ते भावयन्तः पृथिवीं विचरन्ति दिवं तथा ॥१४२
मर्त्यलोके च राजानो ये चान्ये गृहमेधिनः।
महाकुलेषु दृश्यन्ते तत् सर्वं तपसः फलम् ॥१४३
कौशिकानि च वस्त्राणि शुभान्याभरणानि च।
वाहनासनपानानि तत् सर्वं तपसः फलम् ॥१४४
मनोऽनुकूलाः प्रमदा रूपवत्यः सहस्रशः।
वासः प्रासादपृष्ठे च तत् सर्वं तपसः फलम् ॥१४५

प्राचीनकाल में ब्रह्माजी ने जिन मरीचि आदि ब्राह्मणों को उत्पन्न किया था, वे सब तपस्या के बल से ही पृथ्वी और आकाश को पवित्र करते हुए घूमते हैं ॥१४२॥ मृत्यु लोक में जो राजा आदि तथा अन्यान्य उच्च कुलों में उत्पन्न गृहस्थ देखे जाते हैं, वह उनकी तपस्या का फल ही समझना चाहिये ॥१४३॥ रेशमी वस्त्र, श्रेष्ठ आभूषण, वाहन, आसन और श्रेष्ठ भोजन, रहन-सहन की साज-सज्जा आदि तपस्या के फल रूप में ही है ॥१४४॥ मन के अनुकूल आचरण करने वाली हजारों रूपवती युवतियाँ और राजभवनों में निवास आदि यह सभी सुख तपस्या के प्रभाव से ही मिलता है ॥१४५॥

शयनानि च मुख्यानि भोज्यानि विविधानि च।
अभिप्रेतानि सर्वाणि भवन्ति शुभकर्मिणाम् ॥१४६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नाप्राप्यं तपसः किंचित् त्रैलोक्येऽपि परंतप ।
उपभोगपरित्यागः फलान्यकृतकर्मणाम् ॥१४७
सुखितो दुःखितो वापि नरो लोभं परित्यजेत ।
अवेक्ष्य मनसा शास्त्रं बुद्धयाच नृपसत्तम ॥१४८
असंतोषोऽसुखायेति लोभादिन्द्रियसम्भ्रमः ।
ततोऽस्य नश्यति प्रज्ञाविद्ये वाभ्यासवर्जिता ॥१४९
नष्टप्रज्ञो यदातु स्यात् तदा न्यायं न पश्यति ।
तस्मात् सुखक्षये प्राप्ते पुमानुग्रं तपश्चरेत् ॥१५०

श्रेष्ठ शय्या, अनेक प्रकार के उत्तम भोजन और मनके इच्छित सभी पदार्थ शुभ कर्म करने वाले पुरुषों को ही प्राप्त हो सकते हैं ॥१४६॥ हे परंतप ! तीनों लोकों में ऐसी कोई वस्तु नहीं, जो तप से अप्राप्य हो । परन्तु, जिन व्यक्तियों ने कामना के योग्य अथवा निषिद्ध कर्मों को नहीं किया, उनके तप का फल सुख-भोग का छोड़ देना ही है ॥१४७॥ हे नरोत्तम ! मनुष्य को चाहिये कि वह सुख में हो अथवा दुःख में, मन और बुद्धि से शास्त्र के तत्त्व को समझे ओर लोभ को छोड़ दे ॥१४८॥ असंतोष से दुःख उत्पन्न होता है । लोभ से मन और इंद्रियाँ विचलित हो जाती हैं, तब बिना अभ्यास के विद्या के नष्ट होने के समान ही मनुष्य की बुद्धि नष्ट हो जाती है ॥१४९॥ बुद्धि के नष्ट हो जाने पर मनुष्य न्याय-अन्याय को नहीं देख पाता । इसलिये सुख के नष्ट हो जाने पर उसे उग्र तप करना चाहिये ॥१५०॥

यदिष्टं तत् सुखं प्राहुर्द्वेष्यं दुःखमिहेष्यते ।
कृताकृतस्य तपसः फलं पश्यस्व यादृशम् ॥१५१
नित्यं भद्राणि पश्यन्ति विषयांश्चोपभुञ्जते ।
प्राकाश्यं चैव गच्छन्ति कृत्वा निष्कल्मषं तपः ॥१५२
अप्रियाण्यवमानांश्च दुःखं बहुविधात्मकम् ।
फलार्थी तत्फलं त्यक्त्वा प्राप्नोति विषयात्मकम् ॥१५३
धर्मे तपसि दाने च विचिकित्सास्य जायते ।
स कृत्वा पापकान्येव निरयं प्रतिपद्यते ॥१५४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुखे तु वर्तमानो वै दुःखे वापि नरोत्तम ।
सुवृत्ताद् यो न चलते शास्त्रचक्षुः स मानवः ।।१५१

जो मन को अनुकूल प्रतीत होता है वह सुख कहा जाता है और जो मन के प्रतिकूल है, वही दुःख है । तप करने से सुख और न करने से दुःख होता है । इस प्रकार तप करने का जो फल होता है या न करने का जो फल होता है, उसे भले प्रकार समझ लेना चाहिये।।१५१।। पाप-रहित तपस्या करने वाले मनुष्य सदा अपना कल्याण देखते हैं । वे इच्छानुसार भोगों को भोगते हुए संसार में प्रसिद्धि को प्राप्त होते हैं ।।१५२।। मनोनुकूल फल की कामना वाला मनुष्य सकाम कर्म का अनुष्ठान करता है । उससे वह अप्रिय, अपमान और अनेक प्रकार के कष्टों को भोगता है । परन्तु यदि उस फल की कामना को छोड़ दे तो सभी विषयों के आत्मस्वरूप परब्रह्म को प्राप्त कर लेता है ।।१५३।। जिस मनुष्य को धर्म, तपस्या और दान में संशय उत्पन्न हो जाता है, वह मनुष्य पाप कर्मों को करता हुआ नरक को ही प्राप्त होता है ।।१५४।। हे नरोत्तम ! मनुष्य सुख में स्थित हो अथवा दुःख में परन्तु सदाचार को कभी भी नहीं छोड़ता, वह शास्त्रों का जानने वाला हो जाता है ।।१५५।।

इषुप्रपातमात्रं हि स्पर्शयोगे रतिः स्मृता ।
रसने दर्शने घ्राणे श्रवणे च विशाम्पते ।।१५६
ततोऽस्य जायते तीव्रा वेदना तत्क्षयात् पुनः ।
अबुधा न प्रशंसन्ति मोक्षं सुखमनुत्तमम् ।।१५७
ततः फलार्थं सर्वस्य भवन्ति ज्यायसे गुणाः ।
धर्मवृत्त्या च सततं कासार्थाभ्यां न हीयते ।।१५८
अप्रयत्नागताः सेव्या गृहस्थैर्विषयाः सदा ।
प्रयत्नेनोपगम्यश्च स्वधर्म इति मे मतिः ।।१५९

जितनी देर में धनुष से छूटा हुआ बाण पृथ्वी पर गिरता है, उतनी ही देर स्पर्शेन्द्रिय, रसना, नेत्र, नासिका और श्रोत्रेन्द्रिय के सुखों का अनुभव करने में लगती है । अर्थात् सुख इतनी देर टिक पाता है ।।१५६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब वह सुख क्षीण हो जाता है, तब मनुष्य के मन में उसके लिये तीव्र वेदना होती है। इस पर भी अज्ञानी मनुष्य सर्वश्रेष्ठ मोक्ष रूप सुख की प्रशंसा नहीं करते ॥१५७॥ इसलिये, विवेकी पुरुष के मन में उत्तम मोक्ष रूप फल को पाने के लिये शम-दम आदि गुण उत्पन्न होते हैं। धर्म का लगातार पालन करने से उसे वन और भोगों से कभी भी वंचित नहीं होना पड़ता ॥१५८॥ इसलिये, गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह बिना प्रयत्न के स्वयं प्राप्त हुए विषयों का सेवन करे। यदि प्रयत्न करे तो अपने धर्म के पालन का ही करे –यह मेरा मत है ॥१५९॥

मानिनां कुलजातानां नित्यं शास्त्रार्थचक्षुषाम्।
क्रियाधर्मविमुक्तानामशक्त्या संवृतात्मनाम् ॥१६०
क्रियमाणं यदा कर्म नाशं गच्छति मानुषम्।
तेषां नान्यदृते लोके तपसः कर्म विद्यते ॥१६१
सर्वात्मनानुकुर्वीत गृहस्थः कर्मनिश्चयम्।
दाक्ष्येण हव्यकव्यार्थं स्वधर्मे विचरन् नृप ॥१६२
यथा दीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम् ॥१६३
एवमाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम् ॥१६४

श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, सम्मानित, शास्त्रार्थ के ज्ञाता पुरुषों का तथा असमर्थ होने से धर्म-कर्म-हीन और आत्मतत्व के न जानने वाले पुरुषों का भी इस संसार में किया हुआ कर्म नष्ट हो जाता हैं तो यही मानना पड़ता है कि उनके लिये भी तपस्या के अतिरिक्त कोई अन्य सत्कर्म इस संसार में नहीं है ॥१६०-१६१॥ हे राजन् ! गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह सदा अपने कर्म का निश्चय करके स्वधर्म का पालन करे और सावधानी से यज्ञ, श्राद्ध आदि कर्मों का अनुष्ठान कर ॥१६२॥ जैसे नद समुद्र में जाकर मिल जाते हैं, वैसे सभी आश्रमों को गृहस्थाश्रम में जाकर ही सहारा लेना होता है ॥१६३-१६४॥

वर्णो विशेषवर्णानां महर्षे केन जायते।
एतदिच्छाम्यहं ज्ञातुं तद् ब्रूहि वदतां वर ॥१६५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदेतज्जायतेऽपत्यं स एवायमिति श्रुतिः ।
कथं ब्राह्मणतो जातो विशेषग्रहणंगतः ।।१६६

एवमेतन्महाराज येन जातः स एव सः ।
तपसस्त्वपकर्षेण जातिग्रहणतां गतः ।।१६७
सुक्षेत्राच्च सुबीजाच्च पुण्यो भवति सम्भवः ।
अतोऽन्यतरतो भीनादवरो नाम जायते ।।१६८
वक्त्राद् भुजाभ्यामूरुभ्यां पद्भ्यां चैवाथ जज्ञिरे ।
सृजतः प्रजापतेर्लोकानिति धर्मविदो विदुः ।।१६९
मुखजा ब्राह्मणास्तात बाहुजाः क्षत्रियः स्मृताः ।
ऊरुजा धनिनो राजन् पादजाः परिचारकाः ।।१७०

राजा जनक ने प्रश्न किया—हे वक्ताओं में श्रेष्ठ महर्षे ! वर्णों का जो विशेष-विशेष वर्ण है, उसकी उत्पत्ति किस प्रकार होती है ? इसे जानने की मेरी इच्छा है—अतः इस विषय को मेरे प्रति कहे ।।१६५।। श्रुति का कहना है कि जिससे जो संतान उत्पन्न होती है, वह उसी के समान समझी जाती है । जब प्रारम्भ में ब्रह्माजी से ब्राह्मणों का जन्म हुआ और उन ब्राह्मणों से सब का जन्म होने पर वे क्षत्रिय आदि किस प्रकार हो गये ? ।।१६६।। पराशर जी बोले—यह सत्य है कि जो जिससे जन्म लेता है, वह उसी के समान होता है । फिर भी तपस्या की कमी के कारण निकृष्ट जाति की प्राप्ति हो जाती है ।।१६७ श्रेष्ठ क्षेत्र और श्रेष्ठ बीज से उत्पन्न होने वाला पवित्र ही होता है । यदि क्षेत्र और बीज में कोई एक भी निकृष्ट हो तो संतान भी निकृष्ट ही होती है ।।१६८।। धर्म के ज्ञाता विद्वान यह जानते हैं कि प्रजापति ब्रह्माजी जब विश्व-रचना करने लगे तब उनके मुख, भुजा, अरु, और पाँव से मनुष्य की उत्पत्ति हुई ।।१६९।। मुख सेउत्पन्न मनुष्य ब्राह्मण, भुजाओं से उत्पन्न हुए क्षत्रिय, ऊरुओं से उत्पन्न हुए धनवान (वैश्य) और पाँवों से उत्पन्न हुए सेवक अर्थात् शूद्र-कहे गये ।।१७०।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चतुर्णामेव वर्णानामागमः पुरुषर्षभ ।
अतोऽन्ये त्वतिरिक्ता ये ते वै संकरजाः स्मृताः ॥१७१

क्षत्रियातिरथाम्बष्ठा उग्रा वैदेहकास्तथा ।
श्वपाकाः पुल्कसाः स्तेना निषादाः सूतमागधाः ॥१७२
अयोगाः करणा व्रात्याश्चाण्डालाश्च नराधिप ।
एते चतुर्भ्यो वर्णेभ्यो जायन्ते वै परस्परात् ॥१७३

ब्रह्मणैकेन जातानां नानात्वं गोत्रतः कथम् ।
बहूनीह हि लोके वै गोत्राणि मुनिसत्तम ॥१७४
यत्र यत्र कथं जाताः स्वयोनिं मुनयो गताः ।
शुद्धयोनौ समुत्पन्ना वियोनौ च तथा परे ॥१७५

हे पुरुष प्रवर ! इस भाँति ब्रह्माजी ने अपने चार अंगों से चार वर्णों को उत्पन्न किया । इनसे भिन्न भी जो मनुष्य हैं, वे इन्हीं चार वर्णों के सम्मिश्रण से उत्पन्न हुए हैं, इसलिये उन्हें वर्णसंकर कहा गया है ॥१७१॥ क्षत्रिय, अतिरथ, अम्बष्ठ, उग्र, वैदेह, श्वपाक, पुल्कस, स्तेन, निषाद, सूत, मागध, अयोग, करण, व्रात्य और चाण्डाल यह चार वर्णों के अनुलोम और विलोम वर्ण की स्त्रियों से संसर्ग होने के कारण उत्पन्न हुए हैं ॥१७२-१७३॥ जनक ने कहा—हे मुनिश्रेष्ठ ! जब सभी को ब्रह्माजी ने उत्पन्न किया है, तब उनके गोत्र पृथक्-पृथक् किस प्रकार हो गये ? मनुष्यों के अनेकों गोत्र इस संसार में सुने जाते हैं ॥१७४॥ जहाँ जहाँ जन्म ग्रहण करके जो ऋषि मुनि विपरीत योनियों में उत्पन्न हुए हैं, उन्हें ब्राह्मणत्व की प्राप्ति किस प्रकार होगई ॥१७५॥

राजन्नेतद् भवेद् ग्राह्यमपकृष्टेन जन्मना ।
महात्मनां समुत्पत्तिस्तपसा भावितात्मनाम् ॥१७६

उत्पाद्य पुत्रान् मुनयो नृपते यत्र तत्र ह ।
स्वेनैव तपसा तेषामृषित्वं विदधुः पुनः ॥१७७
पितामहश्च मे पूर्वमृष्यशृङ्गश्च काश्यपः ।
वेदस्ताण्ड्यः कृपश्चैव कक्षीवान् कमठादयः ॥१७८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यवक्रीतश्च नृपते द्रोणश्च वदतां वरः ।
आयुर्मतङ्गो दत्तश्च द्रुपदो मत्स्य एव च ॥१७९
एते स्वां प्रकृतिं प्राप्ता वैदेह तपसोऽऽश्रयात् ।
प्रतिष्ठिता वेदविदो दमेन तपसैव हि ॥१८०

पराशरजी ने कहा—हे राजन् ! जिसके अन्तःकरण तप के द्वारा शुद्ध होगये, उन महात्माओं द्वारा जो सन्तान उत्पन्न है अथवा वे अपनी इच्छा से जिस योनि मैं भी जन्म ग्रहण करते हैं, यदि वह क्षेत्र की दृष्टि से निकृष्ट भी हैं तो उसे उत्कृष्ट मानते हैं ॥१७६॥ हे नरेश्वर ! मुनियों ने जहाँ तहाँ अनेकों पुत्र उत्पन्न किये और उन सभी को अपनी तपस्या के बल से ऋषि ही बना लिया ॥१७७॥ हे जनक ! मेरे पितामह वसिष्ठ, काश्यप गोत्रीय ऋष्यशृङ्ग, वेद, ताण्डच, कृप, कक्षीवान्, कमठ आदि, यवक्रीत, वक्ताओं में उत्तम द्रोण, आयु, मतङ्ग, दत्त, द्रुपद और मत्स्य यह सभी तप के प्रभाव से ही अपनी-अपनी प्रकृति को प्राप्त हुए थे। इंद्रिय संयम और तपस्या के बल से ही वे वेदों के ज्ञाता होकर समाज में प्रतिष्ठा को प्राप्त हुए थे ॥१७८-१८०॥

मूलगोत्राणि चत्वारि समुत्पन्नानि पार्थिव ।
अङ्गिराः कश्यपश्चैव वसिष्ठो भृगुरेव च ॥१८१
कर्मतोऽन्यानि गोत्राणि ससुत्पन्नानि पार्थिव ।
नामधेयानि तपसा तानि च ग्रहणं सताम् ॥१८२
विशेषधर्मान् वर्णानाँ प्रब्रूहि भगवन् मम ।
ततः सामान्यधर्माश्चसर्वत्र कुशलो ह्यसि ॥१८३
प्रतिग्रहो याजनं च तथैवाध्यापनं नृप ।
विशेषधर्मा विप्राणां रक्षा क्षत्रस्य शोभना ॥१८४
कृषिश्च पाशुपाल्यं च वाणिज्यं च विशामपि ।
द्विजानां परिचर्या च शूद्रकर्म नराधिप॥ १८५

हे पृथिवीपते ! प्रथम अङ्गिरा, कश्यप, वसिष्ठ और भृगु यही चार मूल गोत्र उत्पन्न हुए। कर्म के अनुसार दूसरे गोत्रों की उत्पत्ति बाद में हुई। वे गोत्र और नाम अपने गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषियों के महान् तप

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के कारण ही सज्जनों के समाज में सुप्रसिद्ध और सम्मानित हुए हैं ॥१८१-१८२॥ जनक ने कहा—हे भगवन् ! सभी वर्णों के विशेष धर्म मेरे प्रति कहिये। फिर सामान्य धर्मों का भी विवेचन करिये। क्योंकि आप सभी धर्मों के प्रतिपादन में कुशल हैं ॥१८३॥ पराशरजी ने कहा—हे नृप ! दान लेना, यज्ञ कराना और विद्या पढ़ाना—ब्राह्मणों के विशेष धर्म हैं। क्षत्रियों का श्रेष्ठ धर्म प्रजा की रक्षा करना है ॥१८४॥ हे नरेन्द्र ! खेती, पशु-पालन और व्यापार-यह वैश्यों के कर्म कहे गये हैं तथा द्विजातियों की सेवा करना ही शूद्र का धर्म माना गया है ॥१८५॥

विशेषधर्मा नृपते वर्णानां परिकीर्तिताः ।
धर्मान् साधारणांस्तात विस्तरेण शृणुष्व मे ॥१८६
आनृशंस्यमहिंसा चाप्रमादः संविभागिता ।
श्राद्धकर्मातिथेयं च सत्यमक्रोध एव च ॥१८७
स्वेषु दारेषु संतोषः शौचं नित्यानसूयता ।
आत्मज्ञानं तितिक्षा च धर्माः साधारणा नृप ॥१८८
ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्यास्त्रयो वर्णा द्विजातयः ।
अत्र तेषामधीकारो धर्मेषु द्विपदां वर ॥१८९
विकर्माकस्थिता वर्णाः पतन्ते नृपते त्रयः ।
उन्नमन्ति यथासन्तमाश्रित्येह स्व कर्मसु ॥१९०

हे राजन् ! वर्णों के यह विशेष धर्म कहे गये हैं, अब उनके साधारण धर्मों को विस्तार सहित कहता हूँ उसे ध्यान पूर्वक सुनो ॥१८६॥ क्रूरता का न रखना, अहिंसा, प्रमाद न रहना, देवता और पितर आदि को उनका भाग देना, दान देना, श्राद्ध करना, अतिथि-सत्कार, सत्य-भाषण, क्रोध न करना, स्वपत्नी व्रत पालन करना, पवित्र रहना, पराये दोष न देखना, आत्मज्ञान और सहनशीलता—यह सभी वर्णों के सामान्य धर्म कहे गये हैं ॥१८१-१८८॥ ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य-यह तीनों वर्ण द्विजाति कहे जाते हैं। उपरोक्त धर्मों में इनका अधिकार माना गया है ॥१८९॥ विपरीत कर्मों के करने पर यह तीनों वर्ण पतित हो जाते हैं। जैसे सत्पुरुषों का आश्रय लेकर अपने-अपने कर्मों में लगे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहने से इनका अभ्युत्थान होता है, वैसे ही विपरीत कर्मों के करने से पतन होता है ॥१९०॥

न चापि शूद्रः पततीति निश्चयो
न चापि संस्कारमिहार्हतीति वा ।
श्रुतिप्रवृत्तं न च धर्ममाप्नुते
न चास्य धर्मे प्रतिषेधनं कृतम् ॥१९१

वैदेह कं शूद्रमुदाहरन्ति
द्विजा महाराज श्रुतोपपन्नाः ।
अहं हि पश्यामि नरेन्द्र देवं
विश्वस्य विष्णं जगतः प्रधानम् ॥१९२

सतां वृत्तमधिष्ठाय निहीना उद्दिधीर्षवः ।
मन्त्रवर्जं न दुष्यन्ति कुर्वाणाः पौष्टिकीः क्रियाः ॥१९३
यथा यथा हि सद्वृत्तमालम्बन्तीतरे जनाः ।
तथा तथा सुखं प्राप्य प्रेत्य चे मोदते ॥१९४
किं कर्म दूषयत्येनमथो जातिर्महामुने ।
संदेहो मे समुत्पन्नस्तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥१९५

शूद्र को उपनयन आदि संस्कार का अधिकार नहीं है। वह पतित भी नहीं होता। वैदिक अग्निहोत्र आदि के अनुष्ठान का विधान भी उसके लिये नहीं है। परन्तु, उपरोक्त सामान्य धर्मों का वह पालन करना चाहे तो उनका निरोध भी नहीं है ॥१९१॥ हे जनक ! वेद-शास्त्रों के ज्ञान से सम्पन्न द्विज शूद्र को प्राजपति के समान मानते हैं। परन्तु, मैं तो उसे विश्व के मुख्य रक्षक भगवान् विष्णु के समान ही समझता हूँ ॥१९२॥ यदि शूद्र अपने उद्धार की कामना करता हो तो उसे सदाचार का पालन और आत्मोन्नति करने वाली सब क्रियाओं का अनुष्ठान करना चाहिये। परन्तु, वैदिक मंत्र का उच्चारण न करें तो वे दोष के भागी होगें ॥१९३॥ इतर जातीय मनुष्य ज्जों ज्यों सदाचार का आश्रय लेते जाते हैं, त्यों त्यों ही वे सुख प्राप्त करते और इहलोक-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परलोक दोनों में सुख-भोग करते हैं ॥१९४॥ जनक बोले हे महामुने ! मनुष्य अपने कर्म से दूषित होता है या जाति से ? मेरे मन में उत्पन्न हुए इस संदेह को विवेचन द्वारा दूर करिये ॥१९५॥

असंशयं महाराज उभयं दोषकारकम् ।
कर्म चैव हि जातिश्च विशेषं तु निशामय ॥१९६
जात्या च कर्मणा चैव दुष्टं कर्म न सेवते ।
जात्या दुष्टश्च यःपापं न करोति स पूरुषः ॥१९७
जात्या प्रधानं पुरुषं कुर्वाणं कर्म धिक्कृतम् ।
कर्म तद् दूषयत्येनं तस्मात् कर्म शोभनम् ॥१९८

कानि कर्माणि धर्म्याणि लोकेऽस्मिन् द्विजसत्तम ।
न हिंसन्तीह भूतानि क्रियमाणानि सर्वदा ॥१९९
शृणु मेऽत्र महाराज यन्मां त्वं परिपृच्छसि ।
यानि कर्माण्यहिंस्राणि नरं त्रायन्ति सर्वदा ॥२००

पराशरजी ने कहा—हे महाराज ! कर्म और जाति दोनों से दोष उत्पन्न होते हैं—इसमें संदेह नहीं । परन्तु, इसमें भी जो विशेष बात है-उसे तुम्हारे प्रति कहता हूँ ॥१९६॥ जो मनुष्य जाति कर्म दोनों से ही श्रेष्ठ है तथा पाप-कर्म का न करने वाला है अथवा जाति से दूषित होने पर भी पाप-कर्म से दूर रहता है, वही पुरुष कहा जाने के योग्य समझना चाहिये ॥१९७॥ श्रेष्ठ जाति वाला पुरुष भी निन्दित कर्म करे तो वह उस कर्म के कारण ही कलंकित होता है । इसलिये किसी प्रकार भी बुरा कर्म न करे ॥१९८॥ जनक ने कहा—हे द्विजोत्तम ! इस लोक में ऐसे धर्मानुकूल कर्म कौन-कौन से हैं, जिनका अनुष्ठान करने में किसी जीव की हिंसा नहीं होती ? । १९९॥ पराशरजी ने कहा—हे राजन् ! जिन कर्मों के सम्बन्ध में तुमने प्रश्न किया है, उन्हें कहता हूँ । हिंसा से पहिले कर्म मनुष्य की सदा ही रक्षा करते हैं ॥२००॥

संन्यस्याग्नीनुदासीनाः पश्यन्ति विगतज्वराः ।
नैः श्रेयसं कर्मपथं समारुह्य यथाक्रमम् ॥२०१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रश्रिता विनयोपेता दमनित्याः सुसंशिताः ।
प्रयान्ति स्थानमजरं सर्वकर्मविवर्जिताः ॥२०२

सर्वे वर्णा धर्मकार्याणि सम्यक्
कृत्वा राजन् सत्यवाक्यानि चोक्त्वा ।
त्यक्त्वाधर्मं दारुणं जीवलोके
यान्ति स्वर्गं नात्र कार्यो विचारः ॥२०३

पिता सखायो गुरवः स्त्रियश्च
न निर्गुणानां हि भवन्ति लोके ।
अनन्यभक्ताः प्रियवादिनश्च
हिताश्च वश्याश्च भवन्ति राजन् ॥२०४

पिता परं दैवतं मानवानां
मातुर्विशिष्टं पितरं वदन्ति ।
ज्ञानस्य लाभं परमं वदन्ति
जितेन्द्रियार्थाः परमाप्नुवन्ति ॥२०५

अग्निहोत्र का त्याग कर उदासीन भाव से-रहने वाले सन्यासी सब प्रकार की चिन्ताओं से मुक्त होते हैं और कल्याणकारी कर्म के पथ पर बढ़ कर नम्रता, विनय और संयम आदि गुणों के द्वारा तीव्र व्रत का पालन करते हैं। वे सब कर्मों से मुक्त हुए अविनाशी पद को प्राप्त होते हैं।.२०१-२०२॥ हे राजन् ! सभी वर्ग के मनुष्य इस जीव जगत् में अपने-अपने धर्म के अनुसार कर्म करते और सदा सत्य बोलते हुए पाप कर्मों को छोड़ कर स्वर्ग लोक को प्राप्त होते हैं। इस विषय में कोई अन्य विचार नहीं करना चाहिये ॥२०३॥ पराशरजी ने कहा—हे राजन् ! संसार में पिता, मित्र, गुरुजन, स्त्रियाँ आदि कोई भी उसके नहीं होते जो सब प्रकार से गुणहीन हैं। परन्तु, जो प्रभु-भक्त, प्रिय-भाषी, हितकारी और इन्द्रियों को जीतने वाले होते हैं, वही उसके होते हैं ॥२०४॥ मनुष्यों के लिये पिता सर्व श्रेष्ठ देवता है। कुछ लोग माता से भी अधिक पिता को बताते हैं। ज्ञान-लाभ को ही श्रेष्ठ पुरुषों ने परम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

लाभ कहा है। जिन्होंने श्रोत्र आदि इन्द्रियों और शब्द आदि विषयों को जीत लिया है, वे परमपद को प्राप्त होते हैं ॥२०५॥

रणाजिरे यत्र शराग्निसंस्तरे
नृपात्मजो घातमवाप्य दह्यते।
प्रयाति लोकानमरैः सुदुर्लभान्
निषेवते स्वर्गफलं यथासुखम् ॥२०६
श्रान्तं भीतं भ्रष्टशस्त्रं रुदन्तं
पराङ्मुखं पारिबर्हैश्च हीनम्।
अनुद्यन्तं रोगिणं याचमानं
न वैहिंस्याद् बालवृद्धौ च राजन् ॥२०७
पारिबर्हैः सुसंयुक्तमुद्यतं त्यक्तां गतम्।
अतिक्रमेत् तं नृपतिः संग्रामे क्षत्रियात्मजम् ॥२०८
तुल्यादिह वधः श्रेयान् विशिष्टाच्चेतिनिश्चयः।
निहीनात् कातराच्चैव कृपणाद् गर्हितो वधः ॥२०९
पापात् पापसमाचारान्निहीनाच्च नराधिप।
पाप एव वधः प्रोक्तो नरकायेति निश्चयः ॥२१०

क्षत्रिय-पुत्र यदि युद्ध स्थल में आहत होकर बाणों की चिता में जलता है तो वह देवताओं को भी दुर्लभ लोकों में जाता है तथा वहाँ स्वर्गीय फल को आनन्द पूर्वक भोगता है ॥२०६॥ हे राजन्! जो युद्ध में थक गया हो, डरा हुआ हो, जिसने हथियार फेंक दिये हों, जो रोता तथा पीठ दिखा कर भाग रहा हो, जिसके पास युद्ध का कोई सामान शेष न बचा हो, जो युद्ध से सम्बन्धित प्रयत्न को त्याग चुका हो, जो रोगी हो और प्राणों की भीख माँगता हो अथवा जो बालक अथवा वृद्ध हो, ऐसे शत्रु को न मारे ॥२०७॥ परन्तु, जिसके पास युद्ध-सामग्री हो, जो युद्ध के लिये उद्यत हो, जो अपनी बराबरी का हो, युद्ध क्षेत्र में उस क्षत्रिय पुत्र को जीतने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिये ॥२०८॥ अपने समान या अपने से बड़े वीर के हाथ से मरना उत्तम है, युद्ध-शास्त्र के जानने वालों का यह निश्चय है। अपने से हीन, कातर और दीन पुरुष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के हाथ से मरने पर निन्दा होती है ॥२०९॥ हे नराधिप ! पापी, पाप का आचरण करने वाले और हीन मनुष्य के हाथ से मरना पाप रूप ही कहा गया है शास्त्र का निश्चय है कि वह नरक में डालने वाला है ॥२१०॥

न कश्चित् त्राति वै राजन् दिष्टान्तवशमागतम् ।
सावशेषायुषं चापि कश्चिन्नैवापकर्षति ॥२११
स्निग्धैश्च क्रियमाणानि कर्माणीह निवर्तयेत ।
हिंसात्मकानि सर्वाणि नायुरिच्छेत् परायुषा ॥२१२
गृहस्थानां तु सर्वेषां विनाशमभिकाङ्क्षताम् ।
निधनं शोभनं तात पुलिनेषु क्रियावताम् ॥२१३
आयुषि क्षयमापन्ने पञ्चत्वमुपगच्छति ।
तथा ह्यकारणाद् भवति कारणैरुपपादितम् ॥२१४
तथा शरीरं भवति देहाद् येनोपपादितम् ।
अध्वानं गतकश्चायं प्राप्तश्चायं गृहाद् गृहम् ॥२१५

हे राजन् ! मृत्यु के आश्रित प्राणी की रक्षा कोई नहीं कर सकता और जिसकी आयु शेष है, उसे कोई नहीं मार सकता ॥२११॥ किसी की प्राण-रक्षा के लिये यदि कोई हिंसात्मक कर्म करने को उद्यत हो, तो उसे न करे। क्योंकि दूसरे की आयु नष्ट करके अपनी आयु बढ़ाने की इच्छा उचित नहीं ॥२१२॥ हे तात ! मृत्यु की कामना करने वाले सभी गृहस्थों के लिये वहीं मृत्यु सर्वश्रेष्ठ मानी गई है, जो गंगा आदि के किनारों पर उत्तम कर्मों को करते हुए प्राप्त हो ॥२१३॥ आयु के समाप्त होने पर ही देहधारी जीव को पंचत्व की प्राप्ति होती है। कभी यह अकारण भी हो जाता है और कभी अनेक कारणों से उपपादित होता है ॥२२४॥ शरीर को पाकर हठ पूर्वक जो लोग उसे छोड़ देते हैं, उनको उसी जैसी यातनामय शरीर पुनः मिलता है। ऐसे व्यक्ति एक घर से दूसरे घर में जाने के समान ऐक देह से बूसरे देह को प्राप्त होते रहते हैं ॥२१५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्वितीयं कारणं तत्र नान्यत् किंचन विद्यते ।
तद् देहं देहिनां युक्तं पञ्चभूतेषु वर्तते ॥२१६
शिरास्नाय्वस्थिसंघातं बीभत्सामेध्यसंकुलम् ।
भूतानामिन्द्रियाणां घ गुणानां च समागमम् ॥२१७
त्वगन्तं देहमित्याहुर्विद्वांसोऽध्यात्मचिन्तकाः ।
गुणैरपि परिक्षीणं शरीरं मर्त्यतां गतम् ॥२१८
शरीरिणा परित्यक्तं निश्चेष्टं गतचेतनम् ।
भूतैः प्रकृतिमापन्नैस्ततो भूमौ निमज्जति ॥२१९
भावितं कर्मयोगेन जायते तत्र तत्र ह ।
इदं शरीरं वैदेह म्रियते यत्र यत्र ह ।
तत्स्वभावोऽपरो दृष्टो विसर्गः कर्मणस्तथा ॥२२०

उनके ऐसी अवस्था के प्राप्त होने में आत्महत्या रूप पाप के अतिरिक्त अन्य कोई कारण नहीं है । उन प्राणियों को वह पंचभूतमय देह मिलना उचित ही है ॥२१६॥ यह देह नस, नाड़ी और अस्थियों का समूह है । यह घृणित और अपवित्र मल मूत्र आदि से परिपूर्ण है । पंचमहाभूतों, श्रोत्र आदि इन्द्रियों तथा उनके विषयों का एक समुदाय है ॥२१७॥ आध्यात्मिक तत्व के जानने वालों का कथन है कि इस शरीर के बाहरी भाग पर चमड़ा मात्र है । यह सौंदर्य आदि गुणों से हीन तथा नष्ट होने वाला है ॥२१८॥ जब जीवात्मा इस शरीर को छोड़ देता है, तब यह चेष्टा और चेतना से रहित हो जाता और इसके पाँचों भूत अपनी अपनी प्रकृति में मिल जाते हैं तथा यह पृथिवी में पूरी तरह छिप जाता है ॥२१९॥ हे जनक ! यह शरीर कहीं तो मृत्यु को प्राप्त होता है और फिर प्रारब्ध कर्म के योग से कहीं जन्म लेता है । कर्मों का फल रूप पुनर्जन्म स्वभाव सिद्ध देखा गया है ॥२२०॥

न जायते तु नृपते कंचित् कालमयं पुनः ।
परिभ्रमति भूतात्मा द्यामिवाम्बुधरो महान् ॥२२१
स पुनर्जायते राजन् प्राप्येहायतनं नृप ।
मनसः परमो ह्यात्मा इन्द्रियेभ्यः परं मनः ॥२२२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विविधानां च भूतानां जङ्गमाः परमा नृप ।
जङ्गमानामपि तथा द्विपदाः परमा मताः ।।२२३
द्विपदानामपि तथा द्विजा वै परमाः स्मृताः ।
द्विजानामपि राजेन्द्र प्रज्ञावन्तः परा मताः ।
प्रज्ञानामात्मसम्बुद्धाः सम्बुद्धानाममानिनः ।।२१४
जातमन्वेति मरणं नृणामिति विनिश्चयः ।
अन्तवन्ति हि कर्माणि सेवन्ते गुणतः प्रजाः ।।२२५

हे राजन् ! जैसे विशाल बादल आकाश में सब ओर भ्रमण करता है, वैसे ही जीव अपने प्रारब्ध कर्म के फल से कुछ काल तक जन्म न लेकर भ्रमण करता रहता है ।।२२१।। हे राजन् ! वह कोई आधार पाकर वहां पुनर्जन्म धारण करता है । मन से आत्मा श्रेष्ठ है और इन्द्रियों से श्रेष्ठ मन है ।।२२२।। हे राजन् ! संसार के विविध जीवों में चलने-फिरने वाले जीव श्रेष्ठ हैं और चलने-फिरने वालों में भी दो पाँव वाले जीव उत्तम कहे गये हैं ।।२२३।। उन मनुष्यों में द्विज श्रेष्ठ हैं, द्विजों में बुद्धिमान श्रेष्ठ हैं, बुद्धिमानों में आत्मज्ञानी श्रेष्ठ हैं और उनमें भी जो अहंकार-रहित हैं वे सर्व श्रेष्ठ माने गये हैं ।।२२४।। जन्म के साथ मृत्यु भी मनुष्यों के पीछे लगी है—विद्वानों का निश्चय यही है । सम्पूर्ण प्रजा सत्त्वादि गुणों की प्रेरणा से नाशवान् कर्मों का आचरण करती है ।।२२५।।

आपन्ने तूत्तरां काष्ठां सूर्ये यो निधनं व्रजेत् ।
नक्षत्रे च मुहूर्ते च पुण्ये राजन् स पुण्यकृत् ।।२२६
अयोजयित्वा क्लेशेन जनं प्लाव्य च दुष्कृतम् ।
मृत्युनाऽऽत्मकृते नेह कर्ण कृत्वाऽऽत्मशक्तिभिः ।।२२७
विषमुद्बन्धनं दाहोदस्युहस्तात् तथा वधः ।
दंष्ट्रिभ्यश्च पशुभ्यश्च प्राकृतो वध उच्यते ।।२२८
न चेभिः पुण्यकर्माणो युज्यन्ते चाभिसंधिजैः ।
एवंविधैश्च बहुभिरपरैः प्राकृतैरपि ।।२२९
ऊर्ध्वं भित्त्वा प्रतिष्ठन्ते प्राणाः पुण्यवतां नृप ।
मध्यतो मध्यपुण्यानामधो दुष्कृतकर्मणाम् ।।२३०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एकः शत्रुर्न द्वितीयोऽस्ति शत्रु
रज्ञानतुल्यः पुरुषस्य राजन् ।
येनावृतः कुरुते सम्प्रयुक्तो
घोराणि कर्माणि सुदारुणानि ॥२३१

प्रबाधनार्थं श्रुतिधमयुक्तान्
वृद्धानुपास्य प्रभवेत यस्य ।
प्रयत्नसाध्यो हि स राजपुत्र
प्रज्ञाशरेणोन्मथितः परैति ॥२३२

अधीत्य वेदं तपसा ब्रह्मचारी
यज्ञाञ्शक्त्या संनिगृह्यह पञ्च ।
वनं गच्छेत् पुरुषोधर्मकामः
श्रेयः स्थित्वा स्थापयित्वा स्ववंशम् ॥२३३

उपभोगैरपि त्यक्तं नात्मानं सादयेन्नरः ।
चण्डालत्वेऽपि मानुष्यं सर्वथा तात शोभनम् ॥२३४
इयं हि योनिः प्रथमा यां प्राप्य जगतीपते ।
आत्मा वै शक्यते त्रातुं कर्मभिः शुभलक्षणैः ॥२३५

हे राजन् ! सूर्य के उत्तरायण होने पर जो श्रेष्ठ नक्षत्र और पुण्य मुहूर्त्त में मृत्यु को प्राप्त होता है, वह पुरुष पुण्यात्मा होता है ॥२२६ वह किसी को कष्ट नहीं देता, प्रायश्चित्त के द्वारा ही अपने पाप को नष्ट कर डालता है और अपने भरसक शुभ कर्मों को करता हुआ स्वेच्छा पूर्वक मृत्यु का वरण करता है ॥२२७॥ परन्तु, विष-पान करने से, कण्ठ में फाँसी लगाने से, अग्नि में दग्ध होने से, लुटेरों के द्वारा वध होने या दाढ़ वाले पशुओं के द्वारा मारे जाने से जो मृत्यु को प्राप्त होता है वह अधम श्रेणी की मृत्यु है ॥२२८॥ पुण्य कर्म करने वाले मनुष्य इस प्रकार से प्राण-त्याग नहीं करते और ऐसे अन्य अधम उपायों के द्वारा भी वे मृत्यु को प्राप्त नहीं होता ॥२२९॥ हे नरेन्द्र ! पुण्यात्माओं के प्राण ब्रह्मरन्ध्र भेद कर निकलते हैं, मध्यम श्रेणी के पुण्य वालों के प्राण मध्य द्वार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(मुख, नेत्र आदि) के द्वारा निकलते हैं और जो केवल पापकर्मी हैं, उनके प्राण निकृष्ट द्वार (गुदा, शिश्न) से निकलते हैं ।।२३०।। हे राजन् ! पुरुष एक शत्रु बड़ा प्रबल है, उसके समान अन्य कोई शत्रु नहीं । उस शत्रु रूप अज्ञान से आवृत्त और प्रेरित हुआ मनुष्य घोर और क्रूर कर्मों में लग जाता है ।।२३१।। हे राजपुत्र ! अज्ञान रूप उस शत्रु को जीतने में वही समर्थ होता है, जो वेदों में कहे गये धार्मिक वृद्धों की सेवा करके स्थिर बुद्धि पा लेता है । क्योंकि, अज्ञानी शत्रु को जीतना महान् प्रयत्न से सिद्ध होने वाला कार्य है । वह बुद्धि रूपी बाण की चोट से ही नाश को प्राप्त होता है ।।२३२।। द्विज का कर्त्तव्य है कि वह प्रथम ब्रह्मचर्याश्रम में रह कर तप करता हुआ वेदाध्ययन करे । फिर गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट होकर अपने भरसक इन्द्रिय संयम रखता हुआ पंचमहायज्ञ करे । फिर अपने पुत्र को घर बार सौंप कल्याणमार्ग में स्थित होकर धर्म-पालन की इच्छा से वन को जाय ।।२३३।। हे तात ! उपभोग-साधनों के न रहने पर भी अपने को हीन नहीं समझना चाहिये । चाण्डाल की योनि में भी यदि जन्म मिले तो वह भी मनुष्यों से भिन्न जीवों की अपेक्षा सब प्रकार श्रेष्ठ ही है ।।२३४।। हे पृथिवीपते ! मनुष्य योनि ही अद्वितीय योनि है । इसके प्राप्त होने पर मनुष्य शुभ कर्मों को करके अपनी आत्मा का उद्धार कर सकता है ।।२३५।।

कथं न विप्रणश्येम योनितोऽस्या इति प्रभो ।
कुर्वन्ति धर्मं मनुजाः श्रुतिप्रामाण्यदर्शनात् ।।२३६
यो दुर्लभतरं प्राप्य मानुष्यं द्विषने नरः ।
धर्मावमन्ता कामात्मा भवेत्स खलु वञ्च्यते ।।३३७
यस्तु प्रीतिपुरोगेन चक्षुषा तात पश्यति ।
दीपोपमानि भूतानि यावदर्थान्न पश्यति ।।२३८
सान्त्वेनान्नप्रदानेन प्रियवादेन चाप्युत ।
समदुःखसुखो भूत्वा स परत्र महीयते ।।२३९
दानं त्यागः शोभना मूर्तिरद्भ्यो
भूतप्लाव्यं तपसा वै शरीरम् ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सरस्वतीनैमिषपुष्करेषु
ये चाप्यन्ये पुण्यदेशाः पृथिव्याम् ॥२४०

'हे प्रभो ! हम ऐसा कौन सा उपाय करें, जिससे हमें मनुष्य योनि से पतित न होना पड़े' यह विचार कर और वेदोक्त प्रमाणों को समझ कर मनुष्य धर्मानुष्ठान में लगे रहते हैं ॥२३६॥ जो अत्यन्त दुर्लभ-मानव देह को प्राप्त करके भी दूसरों से द्वेष करने में लगा है और धर्म का आदर नहीं करता तथा कामनाओं में आसक्त है, वह परम लाभ से वंचित रह जाता है ॥२३७॥ हे तात ! जो सब प्राणियों को दीपक के समान बढ़ने के योग्य मानता है और उन्हें स्नेह पूर्वक देखता हुआ विषयों से दृष्टि फेर लेता है, वह परलोक में भी सम्मान प्राप्त करता है ॥२३८॥ जो सभी को सान्त्वना देता, भूखों को भोजन प्रदान करता और मीठे वचनों से सबका सत्कार करता है, वह सुख दुःख में समान रहता हुआ, परलोक में प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है ॥२३९॥ सरस्वती के तीर पर, नैमिषारण्य क्षेत्र या पुष्कर क्षेत्र में अथवा पृथिवी के अन्य पावन तीर्थों में जाकर दान देना, भोगों को त्यागना, शान्त भाव से रहना और तप तथा तीर्थ के जल से शरीर और मन को पवित्र रखे ॥२४०॥

गृहेषु येषामसवः पतन्ति
तेषामथो निर्हरणं प्रशस्तम् ।
यानेन वै प्रापणं च श्मशाने
शौचेन नूनं विधिना चैव दाहः ॥२४१
इष्टिः तुष्टिर्यजनं याजनं च
दानं पुण्यानां कर्मणां च प्रयोगः ।
शक्त्या पित्र्यं यच्च किंचित् प्रशस्तं
सर्वाण्यात्मार्थे मानवोऽयं करोति ॥२४२
धर्मशास्त्राणि वेदाश्च षडङ्गानि नराधिप ।
श्रेयसोऽर्थे विधीयन्ते नरस्याक्लिष्टकर्मणः ॥२४३
एतद् वै सर्वमाख्यातं मुनिना सुमहात्मना ।
विदेहराजाय पुरा श्रेयसोऽर्थे नराधिप ॥२४४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिनके प्राण घर में निकल रहे हो, उन्हें तुरन्त घर के बाहर ले जाना श्रेष्ठ है। मृत्यु होने पर उन्हें विमान पर शयन करावे और शास्त्र वर्णित विधि से उनका दाह-संस्कार करना उचित है ॥२४१॥ अपनी शक्ति के अनुसार इष्टि-पुष्टि, यजन, याजन, दान, पुण्य, श्राद्ध आदि जो कर्म मनुष्य करता है, वह किसी दूसरे के लिये नहीं, अपने लिये ही करता है ॥२४२॥ हे राजन्! धर्मशास्त्र तथा षडाङ्ग युक्त वेद पुण्य कर्मों के करने वाले पुरुष के कल्याण के निमित्त ही कर्त्तव्य का विधान बताते हैं ॥२४३॥ भीष्मजी ने कहा—हे युधिष्ठिर! प्राचीन काल में विदेह राज जनक के कल्याण के लिये महर्षि पराशर ने उन्हें यह उपदेश दिया था ॥२४४॥

पुनरेव तु पप्रच्छ जनको मिथिलाधिपः।
पराशरं महात्मानं धर्मे परमनिश्चयम् ॥२४५
किं श्रेयः का गतिर्ब्रह्मन् किं कृतं न विनश्यति।
क्व गतो न निवर्तेत तन्मे ब्रूहि महामते ॥२४६

असङ्गः श्रेयसो मूलं ज्ञानं चैव परा गतिः।
चीर्णं तपो न प्रणश्येद्वापः क्षेत्रे न नश्यति ॥२४७
छित्त्वाधर्ममयं पाशं यदा धर्मेऽभिरज्यते।
दत्त्वाभयकृतं दानं तदा सिद्धिमवाप्नुते ॥२४८
यो ददाति सहस्राणि गवामश्वशतानि च।
अभयं सर्वभूतेभ्यः सदा तमभिवर्तते ॥२४९
वसन् विषयमध्येऽपि न वसत्येव बुद्धिमान्।
संवसत्येव दुर्बुद्धिरसत्सु विषयेष्वपि ॥२५०

भीष्मजी ने कहा—फिर मिथिलापति राजा जनक ने धर्म के संबंध में श्रेष्ठ निश्चय वाले महर्षि पराशर से पुनः यह प्रश्न किया ॥२४५॥ जनक ने कहा—हे महामते! श्रेय का साधन और श्रेष्ठ गति कौन-सी है? कौन-सा कर्म नाश को प्राप्त नहीं होता? कहाँ गया हुआ जीव संसार में लौट कर नहीं आता? मेरे इन प्रश्नों का उत्तर दीजिये॥२४६॥ पराशरजी बोले—आसक्ति का न होना ही श्रेय का मूल कारण है। ज्ञान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ही सर्वोत्तम गति है। स्वयं की हुई तपस्या और सुपात्र को दिया हुआ दान-इनका कभी नाश नहीं होता ॥२४७॥ जो मनुष्य अधर्म युक्त बन्धन को काट कर धर्म में आसक्त होता है और सभी प्राणियों को भय-रहित कर देता है, उसे उसी समय श्रेष्ठ सिद्धि उपलब्ध हो जाती है ॥२४ ॥ जो एक सहस्र गौ और एक सौ अश्व दान करता तथा दूसरा प्राणियों को अभयदान देता है, उन दोनों में अभयदान देने वाला श्रेष्ठ है ॥२४६॥ बुद्धिमान् पुरुष विषयों के मध्य रह कर भी, उनमें न रहने के ही समान है। परन्तु, जो दूषित बुद्धि वाला है, वह विषयों के मध्य न रह कर भी सदा उन्हीं में फँसा रहता है ॥२५०॥

नाधर्मः श्लिष्यते प्राज्ञं पयः पुष्करपर्णवत् ।
अप्राज्ञमधिकं पापं श्लिष्यते जतुकाष्ठवत् ॥२५१
नाधर्मः कारणापेक्षी कर्तारमभिमुञ्चति ।
कर्ता खलु यथाकलं ततः समभिपद्यते ॥२५२
न भिद्यन्ते कृतात्मान आत्मप्रत्ययदर्शिनः ।
बुद्धिकर्मेन्द्रियाणां हि प्रमत्तो यो नबुद्धयते ।
शुभाशुभे प्रसक्तात्मा प्राप्नोति सुमहद् भयम् ॥२५३
वीतरागो जितक्रोधः सम्यग् भवति यःसदा ।
विषये वर्तमानोऽपि न स पापेन युज्यते ॥२५४
मर्यादायां धर्मसेतुर्निबद्धो नैव सीदति ।
पुष्टस्रोत इवासक्तः स्फीतो भवति संचयः ॥२५५

जैसे जल कमल-पत्र पर लिपट नहीं सकता, वैसे ही ज्ञानियों को अधर्म लिप्त नहीं करता। परन्तु, लाह के काठ पर चिपकने के समान, पाप अज्ञानी मनुष्य में लिपट जाता है ॥२५१॥ अधर्म फल मिलने के अवसर की प्रतीक्षा करता है, इसलिए कर्त्ता से दूर नहीं होता। परन्तु, समय के उपस्थित होने पर कर्त्ता को पाप-फल अवश्य भोगना होता है ॥२५२॥ जिन पुरुषों का अन्तःकरण पवित्र है तथा जो आत्मज्ञानी हैं वह कर्मों के अच्छे या बुरे फल से कभी नहीं घबराते। जो ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों द्वारा होने वाले पापों पर प्रमादवश विचार नहीं करते और अच्छे या बुरे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फल के भेद में आसक्ति रखते हैं, वे महान् भय को प्राप्त होते हैं ॥८॥ ॥२५३॥ जो विषयों से विरक्त होकर क्रोध पर भी विजय प्राप्त कर लेता है तथा सदाचार का सदा पालन करता है, वह विषयों के मध्य रहता हुआ भी पाप कर्म में लिप्त नहीं होता ॥२५४॥ जैसे नदी पर बँधा हुआ दृढ़ बाँध नहीं टूटता और उसके कारण जल का स्रोत बह जाता है, वैसे ही मर्यादा पर बँधा हुआ धर्म रूपी बाँध भी कभी नहीं टूट सकता और उससे वासना रहित तप बढ़ता ही रहता है ॥२५॥

यथा भानुगतं तेजो मणिः शुद्धः समाधिना ।
आदत्ते राजशार्दूल तथा योगः प्रवर्तते ॥२५६
यथा तिलानामिह पुष्पसंश्रयात्
पृथक्पृथग्याति गुणोऽतिसौम्यताम् ।
तथा नराणां शुचि भावितात्मनां
यथाऽऽश्रयं सत्त्वगुण प्रवर्तते ॥२५७
जहाति दारांश्च जहाति सम्पदः
पदं च यानं विविधाश्च याःक्रियाः ।
त्रिविष्टपे जातमतिर्यदा नर-
स्तदास्य बुद्धिर्विषयेषु भिद्यते ॥२५८
प्रसक्तबुद्धिर्विषयेषु यो नरो
न बुध्यते ह्यात्महितं कथंचन ।
स सर्वभावानुगतेन चेतसा
नृपामिषेणेव झषो विकृष्यते ॥२५९
संघातवन्मर्त्यलोकः परस्परमपाश्रितः ।
कदलीगर्भनिःसारो नौरिवाप्सु निमज्जति ॥२६०

जैसे शुद्ध सूर्यकान्त मणि सूर्य के तेज को ग्रहण करती है, वैसे ही समाधि के द्वारा योगी भी ब्रह्म के स्वरूप को ग्रहण कर लेता है।२५६। जैसे तिल-तैल विभिन्न प्रकार के सुगंधित पुष्पों के सुवास से मनोरम सुगंध वाला हो जाता है, वैसे ही सत्पुरुषों की संगति से पवित्र मन वाले

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुरुषों का स्वभाव सतोगुणी हो जाता है ॥२५७॥ जब मनुष्य सर्वश्रेष्ठ पद की प्राप्ति के लिये इच्छा करने लगता है, तब उसकी बुद्धि विषयों का त्याग कर देती है और फिर वह स्त्री, सम्पत्ति, पैदल, वाहन आदि विभिन्न प्रकार की सम्पत्तियों को भी छोड़ देता है ॥२५८॥ परन्तु, विषयों में आसक्त बुद्धि वाला पुरुष अपने हित की किसी बात को नहीं समझता। जैसे मछली काँटे पर लिपटे हुए मांस से आकर्षित होकर संकट में पड़ती है, वैसे ही वह मनुष्य सब वासनाओं से लिप्त हुए मनसे विषयों की ओर आकर्षित होकर दुःख भोगता है ॥२५९॥ जैसे शरीर के अंग-प्रत्यंग परस्पर में एक दूसरे के आश्रित हैं, वैसे ही इस संसार के सब प्राणी एक-दूसरे के आश्रित समझने चाहिये। यह जगत केले के भीतरी भाग के समान सारहीन है। जैसे नाव पानी में डूब जाती है, वैसे ही काल के प्रवाह में सब कुछ डूब जाता है ॥२६०॥

न धर्मकालः पुरुषस्य निश्चितो
न चापि मृत्युः पुरुषं प्रतीक्षते ।
सदा हि धर्मस्य क्रियैव शोभना
यदा नरो मृत्युमुखेऽभिवर्तते ॥२६१
यथान्धः स्वगृहे युक्तो ह्यभ्यासादेव गच्छति ।
तथा युक्तेन मनसा प्राज्ञो गच्छति तां गतिम् ॥२६२
मरणं जन्मनि प्रोक्तं जन्म वै मरणाश्रितम् ।
अविद्वान् मोक्षधर्मेषु बद्धो भ्रमति चक्रवत् ।
बुद्धिमार्गप्रयातस्य सुखं त्विह परत्र च ॥२६३
विस्तराः क्लेशसंयुक्ताः संक्षेपास्तु सुखावहाः ।
परार्थं विस्तराः सर्वे प्यागमात्महितं विदुः ॥२६४
यथा मृणालानुगतमाशु मुञ्चति कर्दमम् ।
तथाऽऽत्मा पुरुषस्येह मनसा परिमुच्यते ॥२६५

धर्म करने का कोई समय निश्चित नहीं है। क्योंकि, मृत्यु किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। जब, मनुष्य का प्रत्येक क्षण मृत्यु-मुख में है, तब उसे निरन्तर धर्म का आचरण करना ही ठीक है ॥२६१॥ जैसे अंधे को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुछ दिखाई नहीं देता परन्तु अपने प्रतिदिन के अभ्यास से ही बाहर से घर में आ पहुंचता है, वैसे ही विवेकी पुरुष योगमय चित्त के द्वारा ही परमगति को पा लेता है ॥२६२॥ जन्म में मृत्यु निहित है और मृत्यु मे जन्म स्थित है। मोक्ष के धर्म को जो नहीं जानता, वह ज्ञानहीन पुरुष संसार के बन्धन में पड़ा हुआ जन्म-मरण के चक्र में फिरता रहता है। परन्तु, ज्ञानमार्गीय पुरुष को इहलोक और परलोक दोनों में सुख मिलता है ॥२६३॥ कर्मों का विस्तार क्लेशप्रद और संक्षेप सुख देने वाला होता है।। सभी कर्म पराये अर्थ अर्थात् मन और इन्द्रियों को सन्तुष्ट करने वाले होते हैं। परन्तु, अपने लिये हितकर तो त्याग ही हो सकता है ॥२६४॥ जैसे कमल नाल में लगी कीच जल से धुल जाती है, वैसे ही त्यागी पुरुष का आत्मा मन से संसार-बन्धन से छूट जाता है ॥२६५॥

मनः प्रणयतेऽऽत्मानं स एनमभियुङ्क्ति ।
युक्तो यदा स भवति तदा तं पश्यते परम् ॥२६६
परार्थेवर्तमानस्तु स्वं कार्यं योऽभिमन्यते ।
इन्द्रियार्थेषु संयुक्तः स्वकार्यात् परिमुच्यते ॥२६७
अधस्तिर्यग्गतिं चैव स्वर्गे चैव परां गतिम् ।
प्राप्नोति स्वकृतैरात्मा प्राज्ञस्येहेतरस्य च ॥२६८
मृण्मये भाजने पक्वे यथा वै न श्यति द्रवः ।
तथा शरीरं तपसा तप्तं विषयमश्नुते ॥२६९
विषयानश्नुते यस्तु न स भोक्ष्यत्यसंशयम् ।
यस्तु भोगास्त्यजेदात्मास वै भोक्तुं व्यवस्यति ॥२७०
नीहारेण हि संवीतः शिश्नोदरपरायणः ।
जात्यन्ध इव पन्थानमावृतात्मा न बुद्धचते ॥२७१
वणिग् यथा समुद्राद् वै यथार्थं लभते धनम् ।
तथा मर्त्यार्णवे जन्तोः कर्मविज्ञानतो गतिः ॥२७२
अहोरात्रमये लोके जरारूपेण संसरन् ।
मृत्युर्ग्रसति भूतानि पवनं पन्नगो यथा ॥२७३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वयंकृतानि कर्माणि जाती जन्तुः प्रपद्यते ।
नाकृत्वा लभते कश्चित् किंचिदत्र प्रियाप्रियम् ॥२७४
शयानं यान्तमासीनं प्रवृत्तं विषयेषु च ।
शुभाशुभानि कर्माणि प्रपद्यन्ते नरं सदा ॥२७५

आत्मा को योग की ओर ले जाने वाला मन है । योगी इस मन को योग में लीन करता है और योग में सिद्धि प्राप्त कर लेने पर उसे परमात्मा का साक्षात्कार होता है ॥२६६॥ जो विषय भोगों में परार्थ प्रवृत्त होने पर भी उसे अपना ही प्रमुख कार्य मानता है, वह अपने यथार्थ कर्त्तव्य से गिर जाता है । २६७॥ इस लोक में बुद्धिमान अथवा मूर्ख कोई भी हो, उसकी आत्मा नरक को, पशु-पक्षी आदि की योनि को स्वर्ग को अथवा परमगति को अपने कर्मों के अनुसार ही प्राप्त करता है ॥२६८॥ जैसे पके हुए घड़े में रखा हुआ जल न तो चूता है और न खराब ही होता है, वैसे ही तप के द्वारा तपा हुआ सूक्ष्म देह भी ब्रह्मलोक तक विषयों को प्राप्त कर लेता है ॥२६९॥ शब्द,स्पर्श आदि विषयों का उपभोग करने वाला मनुष्य ब्रह्मानन्द के सुख को नहीं पाता । परन्तु, विषयों को त्याग कर देने वाले को ब्रह्मानन्द की अनुभूति होती है ॥२७०॥ जैसे जन्मान्ध पुरुष को मार्ग दिखायी नहीं देता, वैसे ही शिश्न और उदर का ध्यान रखने वाले अज्ञानी पुरुष माया के कुहरे से ढके होने के कारण मोक्ष-मार्ग को नहीं देख सकते ॥२७१॥ जैसे वैश्य समुद्र मार्ग से परदेश जाकर अपने मूल धन के अनुसार धन कमाता है, वैसे ही संसार समुद्र में रहकर जीव अपने कर्म और विज्ञान के अनुसार ही गति पाता है ॥२७२॥ दिन और रात्रि वाले जगत् में बूढ़ापा रूप से विचरण करती हुई मृत्यु सभी प्राणियों का उसी प्रकार भक्षण कर जाती है, जैसे सर्प वायु का पान किया करता है ॥२७३॥ जगत् में उत्पन्न होकर प्राणी अपने पूर्वकृत कर्मों का ही फल भोगता है । पूर्वजन्म में यदि कुछ कर्म न किया हो तो यहाँ किसी इष्ट या अनिष्ट फल को प्राप्त नहीं कर सकता ॥२७४॥ मनुष्य सोते हुए, चलते हुए अथवा भोगों को भोगते हुए, सभी दिशाओं में उसके शुभ या अशुभ कर्म उसे सदा प्राप्त होते रहते हैं ॥२७५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न ह्यन्यत् तीरमासाद्य पुनस्ततुं व्यवस्यति ।
दुर्लभो दृश्यते ह्यस्य विनिपातो महार्णवे ॥२७६
यथा भावावसन्ना हि नौर्महाम्भसि तन्तुना ।
तथा मनोभियोगाद् वै शरीरं प्रचिकीर्षति ॥२७७
यथा समुद्रमभितः संश्रिताः सरितोऽपराः ।
तथाद्या प्रकृतिर्योगादभिसंश्रियते सदा ॥२७८
स्नेहपाशैर्बहुविधैरासक्तमनसो नराः ।
प्रकृतिस्था विषीदन्ति जले सैकतवेश्मवत् ॥२७९
शरीरगृहसंज्ञस्य शौचतीर्थस्य देहिनः ।
बुद्धिमार्गप्रयातस्य सुखं त्विह परत्र च ॥२८०

समुद्र-पार पहुँच जाने पर फिर उसमें कोई तैरना नहीं चाहता, वैसे ही संसार-सागर से पार हुए प्राणी का उसमें फिर लौटना दुर्लभ ही है ॥२७६॥ जैसे गहरे जल में स्थित नाव,नाविक के द्वारा रस्सी से खींची जाने पर उसी की इच्छानुसार चलती है, वैसे ही यह प्राणी अपने देह रूपी नाव को अपनी इच्छानुसार चलाने की चेष्टा करता है ॥२७७॥ जैसे सब ओर से आई हुई अनेक नदियाँ समुद्र में मिल जाती हैं, वैसे ही योगाभ्यास से वश में किया हुआ मन मूल प्रकृति में सदा के लिये लीन हो जाता है ॥२७८॥ विभिन्न प्रकार के स्नेह-बन्धनों में जिनका मन बँधा हुआ है, वे प्रकृतिस्थ प्राणी जल में ठहर जाने वाले बालू के मकान के समान दुःख से संतप्त होकर नष्ट हो जाते हैं ॥२७९॥ जो शरीर को घर और बाहरी-भीतरी पवित्रता को तीर्थ मानता है और बुद्धि पूर्वक कल्याण मार्ग पर चलता है, वह प्राणी इहलोक और परलोक दोनों का सुख प्राप्त करता है ॥२८०॥

विस्तराः क्लेशसंयुक्ताः संक्षेपास्तु सुखावहाः ।
परार्थं विस्तराः सर्वे त्यागमात्महितं विदुः ॥२८१
संकल्पजो मित्रवर्गो ज्ञातयः कारणात्मकाः ।
भार्या पुत्रश्च दासश्च स्वमर्थमनुयुज्यते ॥२८२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न माता न पिता किंचित् कस्यचिद् प्रतिपद्यते ।
दानपथ्यौदनो जन्तुः स्वकर्मफलमश्नुते ॥२८३
माता पुत्रः पिता भ्राता भार्या मित्रजनस्तथा ।
अष्टापदपदस्थाने लक्षमुद्रेव लक्ष्यते ॥२८४
सर्वाणि कर्माणि पुरा कृतानि
शुभाशुभान्यात्मनो यान्ति जन्तोः ।
उपस्थितं कर्मफलं विदित्वा
बुद्धिं तथा चोदयतेऽन्तरात्मा ॥२८५

कर्मों का विस्तार क्लेश प्रद और संक्षेप सुख देने वाला है । सभी कर्म परार्थ अर्थात् मन-इन्द्रियों की सन्तुष्टि के कारण हैं । अपना हित करने वाला तो त्याग ही है ॥२८१॥ किसी न किसी संकल्प को लेकर ही लोग मित्रता स्थापित करते हैं । कुटुम्बी भी किसी मतलब को लेकर नाता रखते हैं । पत्नी,पुत्र, सेवक भी अपने-अपने स्वार्थ वश ही साथ रहते हैं ॥२८२॥ माता-पिता भी किसी के परलोक-साधन में सहायक नहीं हो सकते । परलोक-मार्ग में तो अपने द्वारा किया हुआ दान ही मार्ग व्यय का कार्य करता है । क्योंकि प्रत्येक जीव अपने ही कर्म का फल भोगने का अधिकार है ॥२८३॥ माता, पिता, पुत्र, पत्नी और मित्रजन— यह सभी सुवर्ण की मुद्रा के स्थान पर लाख की मुद्रा के समान दिखायी देते हैं ॥२८४॥ पूर्वजन्म के सभी शुभ या अशुभ कर्म प्राणी का अनुसरण करते हैं—यह जानकर प्राप्त परिस्थिति को अपना कर्म-फल मानने वाले जिस मनुष्य का मन अन्तर्मुख हो गया है, वह भविष्य में दुःख से बचा रहने के लिये अपनी बुद्धि को शुभ कर्मों में प्रेरित करता है ॥२८५॥

व्यवसायं समाश्रित्य सहायान्योऽधिगच्छति ।
न तस्य कश्चिदारम्भः कदाचिदवसीदति ॥२८६
अद्वैधमनसं युक्तं शूरं धीरं विपश्चितम् ।
न श्रीः संत्यजते नित्यमादित्यमिव रश्मयः ॥२८७
आस्तिक्यव्यवसायाभ्यामुपायाद् विस्मयाद् धिया ।
समारभेदनिन्द्यात्मा न सोऽर्थः परिषीदति ॥२८८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्वः स्वानि शुभाशुभानि नियतं कर्माणि जन्तुःस्वयं
गर्भात् सम्प्रतिपद्यते तदुभयं यत् तेन पूर्वकृतम् ।
मृत्युश्चापरिहारवान् समगतिः कालेन विच्छेदिना
दारोश्चूर्णमिवाश्मसारविहितं कर्मान्ति प्रापयेत् ॥२८८
स्वरूपतामात्मकृतं च विस्तरं
कुलान्वयं द्रव्यसमृद्धिसंचयम् ।
नरो हि सर्वो लभते यथाकृतं
शुभाशुभेनत्कृतेन कर्मणा ॥२९०
इत्युक्तो जनको राजन् यथातथ्यं मनीषिणा ।
श्रुत्वा धर्मविदां श्रेष्ठः परां मुदमवाप ह ॥२९१

जो पुरुष दृढ़ निश्चय पूर्वक उद्योग करता हुआ उसके अनुकूल साधन एकत्र करता है, उसका कोई भी कार्य, कभी निष्फल नहीं होता ॥२८६॥ दुविधा-रहित, उद्योगी, शूर, धीर और विद्वान् पुरुष को सम्पत्ति उसी प्रकार नहीं छोड़ सकती, जिस प्रकार सूर्य को रश्मियाँ नहीं छोड़ सकतीं ॥२८७॥ जो उदार और विशाल हृदय वाला है, आस्तिक भाव, निश्चय और आवश्यक उपाय के सहित, अहंकार को छोड़कर बुद्धि पूर्वक कार्यारम्भ करता है, उसे कभी असफलता नहीं मिलती ॥२८८॥ पूर्वजन्म में जो कर्म किए हैं, उन शुभाशुभ कर्मों के निश्चित फलों को सभी प्राणी गर्भ में आते ही भोगने लगते हैं । जैसे आरे से चीरे हुए लकड़ी के बुरादे को वायु उड़ाकर ले जाता है, वैसे ही अटल मृत्यु, विनाशकारी काल की सहायता से मनुष्य को नष्ट कर डालती है ॥२८९॥ सभी मनुष्य अपने द्वारा किये हुए शुभाशुभ कर्म के अनुसार सुन्दर या कुरूप होते हैं । उन्हीं के अनुसार पुत्र और पौत्र आदि की वृद्धि, श्रेष्ठ या अधम कुल में जन्म और धन आदि की समृद्धि रूप फल की प्राप्ति होती है ॥२९०॥ भीष्म जी ने कहा—हे राजन् ! ज्ञानी और महात्मा पराशरजी के मुख से इस यथार्थ उपदेश को श्रवण कर धर्मज्ञाताओं में श्रेष्ठ राजा जनक को अत्यन्त प्रसन्नता हुई ॥२९१॥

———

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

३--भीष्म गीता

पापस्य यदधिष्ठानं यतः पापं प्रवर्तते ।
एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं तत्त्वेन भरतषभ ॥१

पापस्य यदधिष्ठानं तच्छृणुष्व नराधिप ।
एको लोभो महाग्राहो लोभात् पापं प्रवर्तते ॥२

अतः पापमधर्मश्च तथा दुःखमनुत्तमम् ।
निकृत्याः मूलमेतद्धि येन पापकृतो जनाः ॥३
लोभात् क्रोधः प्रभवति लोभात् कामः प्रवर्तते ।
लोभान्मोहश्च माया च मानः स्तम्भः परासुता ॥४

अक्षमा ह्रीपरित्यागः श्रीनाशो धर्मसंक्षयः ।
अभिध्याप्रख्यता चैव सर्वं लोभात् प्रवर्तते ॥५

युधिष्ठर ने कहा—हे भरत श्रेष्ठ ! पाप का अधिष्ठान क्या है और उसकी प्रवृत्ति किस प्रकार से होती है, मैं यह आपके द्वारा सुनने के लिये उत्सुक हूँ ॥१॥ भीष्मजी ने कहा—हे राजन् ! पाप के अधिष्ठान को सुनो । लोभ ही पाप का अधिष्ठान है । वह मनुष्य को निगलने के लिये ग्राह के समान है । उसी से पाप की प्रवृत्ति होती है ॥२॥ लोभ से ही पाप, अधर्म और महान् दुःख उत्पन्न होते हैं । वही शठता और कपट का मूल कारण है । लोभ से ही मनुष्य पाप का आचरण करने वाले हो जाते हैं ॥३॥ लोभ से ही क्रोध की तथा काम की उत्पत्ति होती है, लोभ ही माया, मोह, अभिमान, उद्दण्डता, पराधीनता आदि दोषों को प्राप्त कराने वाला है ॥४॥ अक्षमा, निर्लज्जता, श्री-हीनता, धर्म-नाश, चिन्ता और अपयश की उत्पत्ति का कारण लोभ ही है ॥५॥

अत्यागश्चातितर्षश्च विकर्मसु च याः क्रियाः ।
कुलविद्यामदश्चैव रूपैश्वर्यमदस्तथा ॥६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्वभूतेष्वभिद्रोहः सर्वभूतेष्वसत्कृतिः ।
सर्वभूतेष्वविश्वासः सर्वभूतेष्वनार्जवम् ॥७
हरणं परवित्तानां परदाराभिमर्शनम् ।
वाग्वेगो मनसो वेगो निन्दावेगस्तथैव च ॥८
उपस्थोदरयोर्वेगो मृत्युवेगश्च दारुणः ।
ईर्ष्यावेगश्च बलवान् मिथ्यावेगश्च दुर्जयः ॥९
रसवेगश्च दुर्वार्यः श्रोत्रवेगश्च दुःसहः ।
कुत्सा विकत्था मात्सर्यं पापं दुष्करकारिता ।
साहसानां च सर्वेषामकार्याणां क्रियास्तथा ॥१०

लोभ से ही कृपणता, घोर तृष्णा, शास्त्र-विरुद्ध कर्म, कुल तथा विद्या आदि से सम्बन्धित अहंकार, रूप और ऐश्वर्य का मद, सभी प्राणियों के प्रतिद्रोह तथा तिरस्कार का भाव, सबके प्रति अविश्वास और कुटिलता पूर्ण बर्ताव आदि की उत्पत्ति है ॥६-७॥ परधन का अपहरण, पर नारियों से बलात्कार, वाणी और मन का वेग, परनिन्दा की प्रवृत्ति, जननेन्द्रिय का असंयम, उदर का वेग, आत्म हत्या की प्रवृत्ति, ईर्ष्या, मिथ्यात्व, रसनेन्द्रिय और श्रोत्रेन्द्रिय का वेग, घृणा, आत्म प्रशंसा, मत्सरता, पाप, दुष्कर कर्मों में प्रवृत्ति, न करने योग्य कार्यों का करना आदि भी लोभ से ही होते हैं ॥८-१०॥

जातौ बाल्ये च कौमारे यौवने चापि मानवाः ॥११
न संत्यजन्त्यात्मकर्म यो न जीर्यति जीर्यतः ।
यो न पूरयितुं शक्यो लोभः प्राप्त्या कुरूद्वह ॥१२
नित्यं गम्भीरतोयाभिरापगाभिरिवोदधिः ।
न प्रहृष्यति यो लाभैः कामैर्यश्च न तृष्यति ॥१३
यो न देवैर्न गन्धर्वैर्नासुरैर्न महोरगैः ।
ज्ञायते नृप तत्त्वेन सर्वैर्भूतगणैस्तथा ॥१४
स लोभः सह मोहेन विजेतव्यो जितात्मना ।
दम्भो द्रोहश्च निन्दा च पैशुन्यं मत्सरस्तथा ॥
भवन्त्येतानि कौरव्य लुब्धानामकृतात्मनाम् ॥१५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिसके कारण जन्म काल, बाल्यकाल, कौमार और युवावस्था में बुरे कर्मों का त्याग नहीं हो पाता और जिसके कारण वृद्ध मनुष्य भी अपने को जीर्ण नहीं समझता, वह लोभ ही है। जैसे गहरे जल वाली अनेक नदियों के मिल जाने से भी समुद्र भरता नहीं, वैसे ही अनेक पदार्थों की प्राप्ति होने पर भी लोभ का पेट नहीं भर पाता ॥११-१२॥ बहुत-सी वस्तुओं के लाभ से भी लोभी की संतुष्टि नहीं होती। लोभी मनुष्य भोगों से कभी तृप्त नही हो पाता। देवता, गन्धर्व, राक्षस, नाग तथा समस्त भूतों के द्वारा भी लोभ का वास्तविक स्वरूप नहीं जाना जाता ॥१३-१४॥ जिसने अपने मन और इन्द्रियादि को वशीभूत कर लिया है, उसे मोह सहित लोभ को जीतना आवश्यक है। दम्भ, द्रोह, निन्दा, इधर-उधर भिड़ाना तथा मत्सरता आदि दोष इन्द्रियों को न जीतने वाले लोभी पुरुषों में ही होते हैं ॥१५॥

सुमहान्त्यपि शास्त्राणि धारन्ति बहुश्रुताः ॥१६
छेत्तारः संशयानां च क्लिश्यन्तीहाल्पबुद्धयः।
द्वेषक्रोधप्रसक्ताश्च शिष्टाचारबहिष्कृताः ॥१७
अन्तःक्रूरा वङ्मधुरा कुपाश्छन्नास्तृणैरिव।
धर्मवैतंसिकाः क्षुद्रा मुष्णन्ति ध्वजिनो जगत् ॥१८
कुर्वते च बहून् मार्गांस्तान् हेतुबलमाश्रिताः।
सतां मार्गान् विलुम्पन्ति लोभाज्ञानेषु निष्ठिताः ॥१९
धर्मस्य ह्रियमाणस्य लोभग्रस्तैर्दुरात्मभिः।
या या विक्रियते संस्था ततः सापि प्रपद्यते ॥२०

जो बहुश्रुत विद्वान् शास्त्रों को कण्ठस्थ करते और सब की शंकाएँ दूर करते हैं, वे भी इस लोभ में फँसकर अपनी बुद्धि गँवा देते तथा निरंतर क्लेश पाते हैं ॥१६॥ वे द्वेष और क्रोध के वशीभूत होकर शिष्टाचार का त्याग कर भीतर से अत्यन्त कठोर रहते और ऊपर से मीठे वचन कहते हैं। वे घास आदि से ढके हुए कुए के समान होते हुए, धर्म के नाम पर धोका देते और संसार को लूटते हैं ॥१७-१८॥ युक्ति के बल से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनेक असत् मार्ग निकाल कर लोभ और अज्ञान में पड़े रह कर सत्पुरुषों के मार्ग को नष्ट कर डालते हैं ॥१९॥ लोभग्रस्त दुरात्माओं द्वारा धर्म की विकृत की गई स्थिति उसी रूप में प्रचलित हो जाती है ॥२०॥

दर्पः क्रोधो मदः स्वप्नो हर्षः शोकोऽतिमानिता ।
एत एव हि कौरव्य दृश्यन्ते लुब्धबुद्धिषु ॥२१
एतानशिष्टान् बुध्यस्व नित्यं लोभसमन्वितान् ।
शिष्टांस्तु परिपृच्छेथा यान् वक्ष्यामि शुचिव्रतान् ॥२२
येष्वावृत्तिभयं नास्ति परलोकभयं न च ।
नामिषेषु प्रसगोऽस्ति न प्रियेष्वप्रियेषु च ॥२३
शिष्टाचारः प्रियो येषु दमो येषु प्रतिष्ठितः ।
सुखं दुःखं समं येषां सत्यं येषां परायणम् ॥२४
दातारो न ग्रहीतारो दयावन्तस्तथैव च ।
पितृदेवातिथेयाश्च नित्योद्युक्तास्तथैव च ॥२५

लोभ बुद्धि वाले मनुष्यों में दर्प, क्रोध, मद, दुःस्वप्न हर्ष, शोक और अत्यन्त अभिमान दोष देखे जाते हैं ॥२१॥ सदा लोभ में रत मनुष्यों को अशिष्ट समझना चाहिए और शिष्ट पुरुषों से ही अपनी शंकाओं का समाधान कराना चाहिये पवित्र नियमों का पालन करने वाले उन शिष्ट पुरुषों का तुम्हें परिचय देता हूँ ॥२२॥ जिन्हें संसार में पुनर्जन्म का भय नहीं, परलोक का भी भय नहीं तथा जो भोगों में लिप्त नहीं और प्रिय में राग तथा अप्रिय में द्वेष नहीं रखते ॥२३॥ जिनमें शिष्टाचार और इन्द्रिय संयम है, जो सुख-दुःख को समान मानते हैं और जिनका परम आश्रय सत्य ही है ॥२४॥ वे दान देते हैं, ग्रहण नहीं करते । वे स्वभाव से ही दयामय होते हैं । देवता, पितर और अतिथि की सेवा में रत तथा सत्कर्म में सदा तत्पर रहते हैं ॥२५॥

सर्वोपकारिणो वीराः सर्वधर्मानुपालकाः ।
सर्वभूतहिताश्चैव सर्वदेयाश्च भारत ॥२६
न ते चालयितुं शक्या धर्मव्यापारकारिणः ।
न तेषां भिद्यते वृत्तं यत्पुरा साधुभिः कृतम् ॥२७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न त्रासिनो न चपला न रौद्राः सत्पथे स्थिताः ।
ते सेव्याःसाधुभिर्नित्यं येष्वहिंसा प्रतिष्ठिता ॥२८
कामक्रोधव्यपता ये निर्ममा निरहंकृताः ।
सुव्रताः स्थिरमर्यादास्तानुपास्व च पृच्छ च ॥२९
न धनार्थं यशोऽर्थं वा धर्मस्तेषां युधिष्ठिर ।
अवश्यं कार्य इत्येव शरीरस्य क्रियास्तथा ॥३०

वे वीर, परोपकारी, सभी धर्मों के रक्षक और सम्पूर्ण प्राणियों का हित साधन करने वाले होते हैं और पराये हित के लिये अपना सर्वस्व निछावर कर देते हैं ॥२६॥ वे सत्कर्म से विचलित नहीं होते और धर्मानुष्ठान में ही लगे रहते हैं । उत्तम पूर्व पुरुषों ने जिस सदाचार का पालन किया, उसी का वे पालन करते हैं । उनका वह आचार कभी नष्ट नहीं होता ॥२७॥ वे किसी को डराते नहीं, चपलता नहीं करते, वे किसी के लिये भयंकर कर्म वाले नहीं बनते । वे सदा सन्मार्ग में स्थित रह कर अहिंसा का पालन करते हैं । ऐसे शिष्ट पुरुषों का सदा सत्संग करना चाहिये ॥२८॥ जो काम, क्रोध से रहित, ममता और अहंकार से बचे हुए, श्रेष्ठ व्रत का पालन करने वाले और धर्म की मर्यादा को रखने वाले महापुरुष हैं, उन्हीं का सत्संग करते हुए अपनी शंकाओं को पूछो ॥२९॥ हे युधिष्ठिर ! वे धन बटोरने अथवा यश कमाने के लिये धर्म का पालन नहीं करते । वे तो शारीरिक क्रियाओं को धार्मिक रूप से करना आवश्यक समझ कर ही, करते हैं ॥३०॥

न भय क्रोधचापल्ये न शोकस्तेषु विद्यते ।
न धर्म ध्वजिनश्चैव न गुह्य कश्चिदाह्य स्थिताः ॥३१
येष्वलोभस्तथामोहो ये च सत्यार्जवे स्थिताः ।
तेषु कौन्तेय रज्येथा येषां न भ्रश्यते पुनः ॥३२
ये न हृष्यन्ति लाभेषु नालाभेषु व्यथन्ति च ।
निर्ममा निरहंकाराः सत्त्वस्थाः समदर्शिनः ॥३३
लाभालाभौ सुखदुःखे च तात
प्रियाप्रिये मरणं जीवितं च ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समानि येषां स्थिरविक्रमाणां
बुभुत्सतां सत्त्वपथे स्थितानाम् ।।३४
धर्मप्रियांस्तान् सुमहानुभावान्
दान्तोऽप्रमत्तश्च समर्चयेथाः ।
दैवात् सर्वे गुणवन्तो भवन्ति
शुभाशुभे वाक्प्रलापास्तथान्ये ।।३५

उनमें भय, क्रोध, चपलता और शोक नहीं होता। वे पाखण्डी नहीं होते तथा किसी रहस्यमय धर्म का आश्रय कभी नहीं लेते ।।३१।। जिनमें लोभ, मोह का भाव नहीं है, जिनमें सत्यता और सरलता स्थित है और जो कभी सदाचार से गिरते नहीं, वैसे पुरुषोंके प्रति ही तुम्हें स्नेह रखना चाहिये ।।३२।। जो लाभ होने पर हर्ष से फूल नहीं उठते, हानि होने पर संताप नहीं करते, जो ममता और अहंकार से पृथक् हैं और सतोगुणी तथा समदर्शी होते हैं ।।३३।। जो लाभ-हानि, सुख-दुःख, प्रिय-अप्रिय और जीवन-मरण को समान देखते हैं, जो सुदृढ़ पराक्रमी, अध्यात्मिक उन्नति की कामना करने वाले और सत्यमार्ग में स्थित हैं, उन धर्म-प्रेमी सज्जनों की जितेन्द्रिय रहते हुए सेवा करो। यह सभी महापुरुष स्वभाव से ही गुणी और यथार्थवक्ता होते हैं। इनसे भिन्न व्यक्ति व्यर्थ ही प्रलाप करते हैं ।।३४-३५।।

अनर्थानामधिष्ठानमुक्तो लोभः पितामह ।
अज्ञानमपि वै तात श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ।।३६
करोति पापं योऽज्ञानान्नात्मनो वेत्ति च क्षयम् ।
प्रद्वेष्टि साधुवृत्तांश्च स लोकस्यैति वाच्यताम् ।।३७
अज्ञानान्निरयं याति तथाज्ञानेन दुर्गतिम् ।
अज्ञानात् क्लेशमाप्नोति तथापत्सु निमज्जति ।।३८
अज्ञानस्य प्रवृत्तिं च स्थानं वृद्धिक्षयोदयौ ।
मूलं योगं गतिं कालं कारणं हेतुमेव च ।।३९
श्रोतुमिच्छामि तत्त्वेन यथावदिह पार्थिव ।
अज्ञानप्रसवं हीदं यद् दुःखमुपलभ्यते ।।४०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युधिष्ठिर ने पूछा—हे पितामह ! आपने सभी अनर्थोंके अधिष्ठान रूप लोभ को तो कहा, परन्तु मैं अज्ञान का भी यथार्थ वर्णन सुनना चाहता हूँ। वह मेरे प्रति कहिये ।।३६।। भीष्मजी बोले—हे युधिष्ठिर ! अज्ञानके वश में पड़ा हुआ जो मनुष्य पाप करता है और पाप-कर्म से हुई हानि को हानि नहीं मानता और उत्तम पुरुषों से द्वेष करता है, संसार में वह अत्यन्त निन्दित होता है ।।३७।। अज्ञान ही जीवात्मा को नरक में डालने वाला है। अज्ञान ही उसकी दुर्गति का कारण है। अज्ञान के कारण ही उसे कष्ट उठाना और विपत्तियों के सागरमें डूबना होता है ।।३८।। युधिष्ठिर ने पूछा—अज्ञान की उत्पत्ति, स्थिति, वृद्धि क्षय, उद्गम, मूल, योग, गति, काल,कारण और हेतु मेरे प्रति कहिये ।।३९।। इस विषय को मैं यथार्थ रूप से उसके तत्व-विवेचन सहित सुनना चाहता हूँ, क्योंकि, यह जो दुःख की प्राप्ति होती, उसकी उत्पत्ति भी अज्ञान से ही है ।।४०।।

रागो द्वेषस्तथा मोहो हर्षः शोकोऽभिमानिता ।
कामः क्रोधश्च दर्पश्च तन्द्री चालस्यमेव च ।।४१
इच्छा द्वेषस्तथा तापः परवृद्धच्युपतापिता ।
अज्ञानमेतन्निर्दिष्टं पापानां चैव याः क्रियाः ।।४२
एतस्य वा प्रवृत्तेश्च वृद्धयादीन्यांश्च पृच्छसि ।
विस्तरेण महाराज शृणु तच्च विशेषतः ।।४३
उभावेतौ समफलौ समदोषौ च भारत ।
अज्ञानं चातिलोभश्चाप्येकं जानीहि पार्थिव ।।४४
लोभप्रभवमज्ञानं वृद्धं भूयः प्रवर्धते ।
स्थाने स्थानं क्षये क्षैण्यमुपैति विविधां गतिम् ।।४५

भीष्मजी बोले—हे युधिष्ठिर ! राग, द्वेष, मोह, हर्ष, शोक, अभिमान, काम, क्रोध, दर्प, तन्द्रा, आलस्य, इच्छा, वैर, ताप, ईर्षा और पापाचरण यह सब अज्ञान के ही कार्य हैं ।।४१-४२।। हे राजन् ! तुमने इस अज्ञान की उत्पत्ति और वृद्धि के संबन्ध में जो प्रश्न किया, उसके विषय में विस्तार पूर्वक वर्णन सुनो।।४३।। हे भारत ! अज्ञान और अत्यंत लोभ इन दोनों को समान समझो, क्योंकि इनके दोष और परिणाम भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एक से ही हैं ।।४४।। लोभ से अज्ञान उत्पन्न होता और लोभ की वृद्धि से ही बढ़ता जाता है । लोभ के बने रहने तक अज्ञान भी बना रहता है और लोभ क्षीण होता है तो अज्ञान भी क्षीण हो जाता है । अज्ञान और लोभ से ही जीव को विभिन्न योनियों में जन्म लेना होता है ।।४५।।

मूलं लोभस्य मोहो वै कालात्मगतिरेव च ।
छिन्ने भिन्ने तथा लोभे कारणं काल एव च ।।४६
तस्याज्ञानाद्धि लोभो हि लोभादज्ञानमेव च ।
सर्वदोषास्तथा लोभात् तस्माल्लोभं विवर्जयेत् ।।४७
जनको युवनाश्वश्च वृषादर्भिः प्रसेनजित् ।
लोभक्षयाद् दिवं प्राप्तास्तथैवान्ये नराधिपाः ।।४८
प्रत्यक्षं तु कुरुश्रेष्ठ त्यज लोभमिहात्मना ।
त्यक्त्वा लोभं सुखं लोके प्रेत्य चानुचरिष्यसि ।।४९

मोह ही लोभ का मूल है । यह मोहात्मक एवं कालरूप अज्ञान ही मनुष्य की दुर्गति का कारण है । लोभ के छिन्नभिन्न होने में भी कालात्मक मोह को ही कारण समझना चाहिये ।।४६।। मूर्ख मनुष्य में अज्ञान से लोभ की और लोभ से अज्ञान की उत्पत्ति होती है । लोभ ही सब दोषों का कारण है इसलिये लोभ का त्याग करना आवश्यक है ।।४७।। जनक, युवनाश्व, वृषादर्भि, प्रसेनजित् अथवा अन्य राजागण लोभ को नष्ट करके ही दिव्य लोक को प्राप्त कर सके ।।४८।। इस प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले लोभ का प्रयत्न पूर्वक त्याग करो । हे कुरुश्रेष्ठ ! जब लोभ को छोड़ दोगे तब इस लोक में सुख पाते हुए मरण के पश्चात् परलोक में भी सुख पूर्वक विचरण करोगे ।।४९।।

स्वाध्याये कृतयत्नस्य नरस्य च पितामह ।
धर्मकामस्य धर्मात्मन् किं नु श्रेय इहोच्यते ।।५०
बहुधा दर्शने लोके श्रेयो यदिह मन्यसे ।
अस्मिँल्लोके परे चैव तन्मे ब्रूहि पितामह ।।५१
महानयं धर्मपथो बहुशाखश्च भारत ।
किंस्विदेवेह धर्माणामनुष्ठेयतमं मतम् ।।५२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मस्य महतो राजन् बहुशाखस्य तत्त्वतः ।
यन्मूलं परमं तात तत् सर्वं ब्रूह्यशेषतः ।।५३
हन्त ते कथयिष्यामि येन श्रेयो ह्यवाप्स्यसि ।
पीत्वामृतमिव प्राज्ञो ज्ञानतृप्तो भविष्यसि ।।५४
धर्मस्य विधयो नैके ये वै प्रोक्ता महर्षिभिः ।
स्वं स्व विज्ञानमाश्रित्य दमस्तेषां परायणम् ।।५५

युधिष्ठिर ने कहा—हे पितामह ! स्वाध्याय में लगे हुए, धर्म पालन की इच्छा रखने वाले मनुष्य के लिये इस लोक में श्रेय क्या कहा गया है ? ।।५०।।संसार में श्रेय को प्रतिपादित करने वाले दर्शन अनेक प्रकार के हैं, परन्तु, जिसे आप इहलोक और परलोक में भी कल्याणकारी श्रेय मानते हों, वह मेरे प्रति कहिये ।।५१।। धर्म का मार्ग गहन है और इस में से अनेक शाखाएँ जाती हैं । इन धर्म-शाखों में से कौनसा धर्म सर्व श्रेष्ठ तथा पालन करने योग्य कहा है ? ।।५२।। अनेक शाखों वाले इस महान् धर्म का यथार्थ मूल क्या है ? यह सब मेरे प्रति सविस्तर कहिये ।।५३।। पितामह ने कहा–हे युधिष्ठिर ! तुम जिस उपाय से कल्याण को प्राप्त करोगे, वह तुम्हें प्रसन्नता पूर्वक बताता हूँ । जैसे अमृत-पान से पूर्ण तृप्ति होती है, वैसे ही तुम ज्ञानी होकर ज्ञान रूप अमृत को पीकर पूर्ण तृप्त हो जाओगे ।।५४।। महर्षियों ने अपने-अपने मतानुसार धर्म की विभिन्न विधियाँ कही हैं, परन्तु, उन सबका एक मात्र आधार इन्द्रियों को अपने वश में करना ही है ।।५५।।

दमं निःश्रेयसं प्राहुर्वृद्धा निश्चितदर्शिनः ।
ब्राह्मणस्य विशेषेण दमो धर्मः सनातनः ।।५६
दमात् तस्य क्रियासिद्धिर्यथावदुपलभ्यते ।
दमो दानं तथा यज्ञानधीतं चातिवर्तते ।।५७
दमस्तेजो वर्धयति पवित्रं च दमः परम् ।
विपाप्मा तेजसा युक्तः पुरुषो विन्दते महत् ।।५८
दमेन सदृशं धर्मं नान्यं लोकेषु शुश्रुम ।
दमो हि परमो लोके प्रशस्तः सर्वधर्मिणाम् ।।५९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रेत्य चात्र मनुष्येन्द्र परमं विन्दते सुखम् ।
दमेन हि समायुक्तो महान्तं धर्ममश्नुते ।।६०

धर्म के ज्ञाता वृद्ध पुरुष इन्द्रिय संयम को ही परम कल्याण का साधन कहते हैं । ब्राह्मण के लिये तो इन्द्रिय संयम ही विशेष रूपसे सनातन धर्म है ।।५६।। संयम से ही अपने श्रेष्ठ कर्मों की सिद्धि मिलती है । संयम ही दान, यज्ञ और स्वाध्याय से अधिक है ।।५७।। संयम ही तेज को बढ़ाता है, वही परम पवित्र साधन है । संयम से ही पाप-शून्य तेजस्वी पुरुष परमपद को पाता है ।।५८।। संसार में इन्द्रिय-संयम के समान अन्य कोई धर्म नहीं सुना जाता । संसार में सभी धर्मावलम्बी संयम को ही श्रेष्ठ बताते हैं । सभी ने संयम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है ।।५९।। राजन् ! संयम से युक्त पुरुष को महान् धर्म प्राप्त होता है । वह इहलोक और परलोक में भी अत्यंत सुख पाता है ।।६०।।

सुखं दान्तः प्रस्वपिति सुखं च प्रतिबुध्यते ।
सुखं पर्येति लोकांश्च मनश्चास्य प्रसीदति ।।६१
अदान्तः पुरुषः क्लेशमभीक्ष्णं प्रतिपद्यते ।
अनर्थाश्च बहूनन्यान् प्रसृजत्यात्मदोषजान् ।।६२
आश्रमेषु चतुर्ष्वाहुर्दममेवात्तमं व्रतम् ।
तस्य लिङ्गानि वक्ष्यामि येषां समुदयो दमः ।।६३
क्षमा धृतिरहिंसा च समता सत्यमार्जवम् ।
इन्द्रियाभिजयो दाक्ष्यं मार्दवं ह्रीरचापलम् ।।६४
अकार्पण्यमसंरम्भः संतोष. प्रियवादिता ।
अविहिंसानसूया चाप्येषां समुदयो दमः ।।६५

जिसने अपने मन और इन्द्रियों को जीत लिया है, वह सुख पूर्वक शयन करता है और सुख पूर्वक ही उठता है । वह सदा प्रसन्न मन रहता हुआ लोकों में विचरण करता है ।।६१।। जिसके मन-इंद्रिय वश में नहीं है, वह सदा क्लेश पाता है और वह अपने हीं अनर्थों की रचना करता है ।।६२।। चारों आश्रमों में संयम को ही श्रेष्ठ व्रत कहा है । अब संयम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के उन लक्षणों को कहता हूँ, जिन के प्रकट होने को ही संयम कहा जाता है ।।६३।।क्षमा, धीरज, अहिंसा समता, सत्यवादिता, सरलता, इंद्रिय का जीवन, दक्षता, कोमलता, लज्जा स्थिरता, उदारता, क्रोध, हीनता, संतोष, मिष्ट भाषण, किसी जीव को न सताना और पराये दोष न देखना—इन सद्गुणों का प्रगट होना ही संयम कहा गया है ।।६४-६५।।

गुरुपूजा च कौरव्य दया भूतेष्वपैशुनम् ।
जनवादं मृषावादं स्तुतिनिन्दाविसर्जनम् ।।६६

कामं क्रोधं च लोभं च दर्पं स्तम्भं विकत्थनम् ।
रोषमीर्ष्याविमानं च नैव दान्तो निषेवते ।।६७
अनिन्दितो ह्यकामात्मा नाल्तेष्वर्थ्यनसूयकः ।
समुद्रकल्पः स नरो न कथंचन पूर्यते ।।६८

अहं त्वयि मयि त्वं च मयि ते तेषु चाप्यहम् ।
पूर्वसम्बन्धिसंयोगं नैतद् दान्तो निषेवते ।।६९
सर्वा ग्राम्यास्तथाऽऽरण्यायाश्च लोके प्रवृत्तयः ।
निन्दां चैव प्रशंसां च यो नाश्रयति मुच्यते ।।७०

संयमी पुरुष के प्रति आदर का भाव, सभी प्राणियों के प्रति दया और किसी की बुराई न करने की प्रवृत्ति—जिसमें यह गुण हैं वह जनापवाद, मिथ्या भाषण निन्दा-स्तुति की प्रवृत्ति, काम, क्रोध, लोभ, दर्प, जडत्व, आत्मप्रशंसा, रोष, ईर्ष्या और पराया अपमान—इन दुर्गुणों में कभी नहीं फँसता ।।६६-६७।। संयमी पुरुष की निन्दा कभी नहीं होती, वह अपने मनमें किसी वस्तु की कामना नहीं करता, वह किसी से कुछ माँगता नहीं और पराये दोषों को नहीं देखता । वह समुद्र के समान गम्भीर और धर्म-संचय से कभी तृप्त नहीं होता ।।६८।। 'मैं तेरा तू मेरा वह मेरा, मैं उसका' आदि पूर्व-संबन्धियों के सम्बन्ध का चिन्तन जितेन्द्रिय पुरुष कभी नहीं करता ।।६९।।संसार में सभी ग्रामीणों और वनवासियों की विभिन्न प्रवृत्तियों में नहीं रमा रहता और परायी निन्दा-स्तुति से भी दूर रहता है, वह मुक्त हो जाती है ।।७०।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैत्रोऽथ शीलसम्पन्नः प्रसन्नात्मात्माऽऽत्मविच्च यः ।
मुक्तस्य विविधैः सङ्गैस्तस्य प्रेत्य फलं महत् ॥७१
सुवृत्तः शीलसम्पन्नः प्रसन्नात्माऽऽत्मविद्बुधः ।
प्राप्येह लोके सत्कारं सुगतिं प्रतिपद्यते ॥७२
कर्म यच्छुभमेवेह सद्भिराचरितं च यत् ।
तदेव ज्ञानयुक्तस्य मुनेर्वर्त्म न हीयते ॥७३
निष्क्रम्य वनमास्थाय ज्ञानयुक्तो जितेन्द्रियः ।
कालाकाङ्क्षी चरत्येवं ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥७४
अभयं यस्य भूतेभ्यो भूतानामभयं यतः ।
तस्य देहाद् विमुक्तस्य भयं नास्ति कुतश्चन ॥७५

जो सबसे मित्रता रखता, शील स्वभाव वाला प्रसन्न मन, विभिन्न आसक्तियों से रहित तथा आत्मज्ञानी है, वह परलोक में मोक्ष फल महान् फल प्राप्त करता है ॥७१॥ सदाचारी, शीलवान्, प्रसन्न मन और आत्म तत्व का ज्ञाता पुरुष इस लोक में सत्कार पाता हुआ परलोक में भी परम गतिको प्राप्त करता है॥७२॥इस लोक शुभ कर्म और सत्पुरुषों केसमान आचरण करते वाला ही ज्ञानियों के मार्ग पर चलने वाला है । वह इस प्रकार के आचरण को स्वाभाविक बना लेता और उससे कभी गिरता नहीं॥७३॥ ज्ञानी एवं संयमी पुरुष घर छोड़ कर वन का आश्रय लेता और मृत्यु काल की प्रतीक्षा में निर्द्वन्द्व विचरण करता है । इस प्रकार उसे ब्रह्म भाव की प्राप्ति होती है ॥७४॥ जो अन्य प्राणियों से नहीं डरता जिससे दूसरे प्राणी नहीं डरते, उस देहाभिमान-शून्य पुरुष को कहीं भी भय नहीं रहता ॥७५॥

अवाचिनोति कर्माणि न च सम्प्रचिनोति ह ।
सतः सर्वेषु भूतेषु मैत्रायणगतिश्चरेत् ॥७६
शकुनीनामिवाकाशे जले वारिचरस्य च ।
यथा गतिर्न दृश्येत तथा तस्य न संशयः ॥७७
गृहानुत्सृज्य यो राजन् मोक्षमेवाभिपद्यते ।
लोकास्तेजोमयास्तस्य कल्पन्ते शाश्वतीः समाः ॥७८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संन्यस्य सर्वकर्माणि संन्यस्य विधिवत् तपः ।
संन्यस्य विविधा विद्याः सर्वं संन्यस्य चैव ह ।।७९
कामे शुचिरनावृत्तःप्रसन्नात्माऽऽत्मविच्छुचिः ।
प्राप्येह लोके सत्कारं स्वर्गं समभिपद्यते ।।८०

वह प्रारब्ध कर्मों को उपभोग करता हुआ उन्हें क्षीण करता और कर्त्तव्य के अभिमान तथा फल की आसक्तिसे रहित होने के कारण नवीन कर्मों को एकत्र नहीं करता । सभी प्राणियों में समान भाव से रह कर-सभी को मित्र के समान अभय देता हुआ घूमता है ।।७६।। जैसे आकाश में पक्षियों का और जल में रहने वाले जीवों का पद चिन्ह नहीं देखा, जाता, वैसे ज्ञानी की गति जानने में नहीं आती, इसमें सन्देह नहीं है।।७७।। हे राजन् ! घर-बार त्याग कर मोक्ष-मार्ग का आश्रय लेने वाले को अनंत वर्षों के लिये दिव्य तेज वाले लोकों की प्राप्ति होती है ।।७८।। जो शुद्ध आचार-विचार और निर्मल अन्तःकरण वाले हैं, जिनकी कामनायें श्रेष्ठ हैं और जो भोगों से विरक्त हो चुके हैं, वह आत्मज्ञानी पुरुष सभी कर्मों का, तप का और विभिन्न विद्याओं का विधिपूर्वक त्याग कर इहलोक में सम्मान प्राप्त किया है उसे परलोक में भी स्वर्ग प्राप्ति होती है ।।७९-८०।

यच्च पैतामहं स्थानं ब्रह्मराशिसमुद्भवम् ।
गुहायां पिहितं नित्यं तद् दमेनाभिगम्यते ।।८१
ज्ञानारामस्य बुद्धस्य सर्वभूताविरोधिनः ।
नावृत्तिभयमस्तीह परलोकभयं कुतः ।।८२
एक एव दमे दोषो द्वितीयो नोपपद्यते ।
यदेनं क्षमया युक्तमशक्तं मन्यते जनः ।।८३
एकोऽस्य सुमहाप्राज्ञ दोषः स्यात् सुमहान् गुणः ।
क्षमया विपुला लोकाः सुलभा हि सहिष्णुता ।।८४
दान्तस्य किमरण्येन तथादान्तस्य भारत ।
यत्रैव निवसेद् दान्तस्तदरण्यं स चाश्रमः ।।८५

पितामह ब्रह्माजी का जो श्रेष्ठ धाम ब्रह्मराशि से प्रकट हुआ है, वह हृदय-गुहा में ही है और संयम के द्वारा ही उसकी प्राप्ति हो सकती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है ।।८१।। जिसका किसी प्राणी से विरोध नहीं है और जो ज्ञान रूप आत्मा में रमण करता रहता है; उस ज्ञानी को पुनर्जन्म का भय नहीं रहता तो उसे परलोक का भय ही कैसे रहेगा ? ।।८२।। संयमी क्षमाशील होती है, इसलिये उसे असमर्थ समझ लेते हैं । इस प्रकार संयम में यही एक दोष है ।।८३।। हे अत्यन्त बुद्धिमान युधिष्ठर ! यह एक दोष ही उस का महान् गुण समझना चाहिये । क्षमा-धारण करने से उसमें सहिष्णुता उत्पन्न होती और अन्त पुण्य लोक सुलभ होते हैं ।।८४।। संयम को वन में जाने की क्या आवश्यकता है ? असंयमी को वन में रहने से क्या लाभ है ? इसलिये संयमी पुरुष जहाँ भी रहे वहीं वन और आश्रय है ।।८५।।

एतद् भीष्मस्य वचनं श्रुत्वा राजा युधिष्ठिरः ।
अमृतेनेव संतृप्त प्रहृष्टः समपद्यत ।।८६
पुनश्च परिपप्रच्छ भीष्मं धर्मभृतां वरम् ।
तपः प्रति स चोवाच तस्मै सर्वं कुरूद्वह ।।८७
सर्वमेतत् तपोमूलं कवयः परिचक्षते ।
न ह्यतप्ततपा मूढः क्रियाफलमवाप्नुते ।।८८
प्रजापतिरिदं सर्वं तपसैवासृजत् प्रभुः ।
तथैव वेदानृषयस्तपसा प्रतिपेदिरे ।।८९
तपसैव ससर्जान्नं फलमूलानि यानि च ।
त्रोल्लोकांस्तपसा सिद्धाः पश्यन्ति सुसमाहिताः ।।९०

वैशम्पायनजी बोले—भीष्म पितामह के ऐसे वचन सुन कर युधिष्ठिर अत्यन्त प्रसन्न हुए जैसे अमृत-पान करके ही तृप्त हो गये हों ।।८६।। फिर उन्होंने धर्मात्माओं में श्रेष्ठ पितामह से तपस्या के सम्बन्ध में पुनः पूछा, तब उन्होंने तप के सम्बन्ध में कहना प्रारम्भ किया ।।८७।। भीष्मजी ने कहा—विद्वानों का कहना है कि इस सम्पूर्ण विश्व का मूल कारण तपस्या ही है । इसलिये तपस्या न करने वाले मूर्ख पुरुष को अपने शुभ कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता ।।८८।। प्रजापति ने इस विश्व की रचना तपस्या से ही की है और उसी के द्वारा ऋषियों ने वेद-ज्ञान पाया ।।८९ संसार के सभी फल, मूल, अन्नों को विधाता ने तप से ही उत्पन्न किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है । तप के द्वारा सिद्ध बन कर एकाग्र मन वाले महात्मा तीनों लोकों को प्रत्यक्ष देखते हैं ।।६०।।

औषधान्यगदादीनि क्रियाश्च विविधास्तथा ।
तपसैव हि सिद्धचन्ति तपोमूलं हि साधनम् ।।६१
यद् दुरापं भवेत् किंचित् तत् सर्वं तपसो भवेत् ।
ऐश्वर्यमृषयः प्राप्तास्तपसैव न संशयः ।।६२
सुरापोऽसम्मतादायी भ्रूणहा गुरुतल्पगः ।
तपसैव सुतप्तेन नरः पापात् प्रमुच्यते ।।६३
तपसोबहुरूपस्य तैस्तैर्द्वारैः प्रवर्तनः ।
निवृत्या वर्तमानस्य तपो नानशनात् परम ।।६४
अहिंसा सत्यवचनं दानमिन्द्रियनिग्रहः ।
एतेभ्यो हि महाराज तपो नानशनात् परम् ।।६५

औषधि, आरोग्य और विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ तप के द्वारा ही सिद्ध होती हैं, क्योंकि तपस्या ही सब साधनों का मूल है ।।६१।। संसार की सभी दुर्लभ वस्तुएँ तपस्या से ही सुलभ हो सकतीहै । इसमें संदेह नहीं कि अणिमा आदि अष्ट सिद्धियाँ ऋषियों को तपस्या के द्वारा ही प्राप्त हुई हैं ।।६२।। सुरा पान करने वाला, किसी की वस्तु चुराने वाला, गर्भ हत्या और गुरु पत्नी में गमन करने वाला भी भले प्रकार तपस्या करके पाप से छूट सकता है ।।६३।। तपस्या के अनेक प्रकार हैं, उनमें प्रवृत्त होने के लिये विभिन्न साधन और उपाय हैं । परन्तु, निवृत्ति मार्ग पर चलने वाले पुरुष के लिये उपवास ही श्रेष्ठ तप है ।।६४।। अहिंसा, सत्य भाषण, दान और संयम से भी बड़ा तप है उपवास से बढ़ कर कोई तप नहीं है ।।६५।।

न दुष्करतरं दानान्नातिमात्रमाश्रयः ।
त्रैविद्येभ्यः परं नास्ति संन्यासः परमं तपः ।।६६
इन्द्रियाणीह रक्षन्ति स्वर्गधर्माभिगुप्तये ।
तस्मादर्थे च धर्मे च तपो नानशनात् परम् ।।६७
ऋषयः पितरो देवा मनुष्या मृगपक्षिणः ।
यानि चान्यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च ।।६८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तपःपरायणाः सर्वे सिद्ध्यन्ति तपसा च ते ।
इत्येवं तपसा देवा महत्त्वं प्रतिपेदिरे ।।९९
इमानीष्टविभागानि फलानि तपसः सदा ।
तपसा शक्यते प्राप्तुं देवत्वमपि निश्चयात् ।।१००

दान से अधिक दुष्कर कोई धर्म नहीं, माता की सेवा से बढ़ कर कोई अन्य आश्रय नहीं, तीनों वेदों के विद्वान से बढ़ कर कोई ज्ञाता नहीं और सन्यास से बढ़ कर कोई तप नहीं ।।९६।। धार्मिक मनुष्य इस लोक में स्वर्ग के साधन भूत धर्म की रक्षा के लिये इन्द्रिय संयम में तत्पर रहते हैं । परन्तु धर्म और पुरुषार्थ की सिद्धि का श्रेष्ठ साधन तप ही है और तप में सर्व श्रेष्ठ उपवास है ।।९७।। ऋषि, पितर, देवता, मनुष्य, मृग, पक्षी तथा अन्य सभी स्थावर, जंगम, प्राणी हैं, वे सभी तपस्या-रत रहते हैं । क्योंकि तपस्या से ही उन्हें सिद्धि प्राप्त होती है । देवगण भी अपने महत्वपूर्ण पदों को तपस्या से ही प्राप्त कर सके हैं ।।९८-९९।। यह जितने भी इच्छित फल कहे हैं, उनकी सिद्धि तपस्या से ही होती है । देवत्व भी तपस्या के प्रभाव से प्राप्त हो सकता है ।।१००।।

सत्यं धर्मं प्रशंसन्ति विप्रर्षिपितृदेवताः ।
सत्यमिच्छाम्यहं श्रोतुं तन्मे ब्रूहि पितामह ।।१०१
सत्यं किंलक्षणं राजन् कथं वा तदवाप्य ।
सत्यं प्राप्य भवेत् किं च कथं चैव तदुच्यताम् ।।१०२
चातुर्वर्ण्यस्य धर्माणां संकरो न प्रशस्यते ।
अविकारितम सत्यं सर्ववर्णेषु भारत ।।१०३
सत्यं सत्सु सदा धर्मः सत्यं धर्मः सनातनः ।
सत्यमेव नमस्येत सत्यं हि परमा यतिः ।।१०४
सत्यं धर्मस्तपो योगः सत्यं ब्रह्म सनातनम् ।
सत्यं यज्ञः परः प्रोक्तः सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ।।१०५

युधिष्ठिर ने पूछा—हे पितामह ! ब्राह्मण, ऋषि, पितर, और देवगण—यह सभी सत्य भाषण की प्रशंसा करते हैं । इसलिये सत्य क्या है, मैं यह सुनना चाहता हूँ ।।१०१।। सत्य का लक्षण, उसकी प्राप्ति के उपाय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसके पालन से लाभ तथा साधन आदि मेरे प्रति कहिये ॥१०२॥ भीष्म जी बोले—ब्राह्मण आदि चारों वर्णों के धर्मों का परस्पर सम्मिश्रण उचित नहीं है। सभी वर्णों में विकार-रहित सत्य विद्यमान रहता है ॥१०३॥ सत्य रूप धर्म का पालन सत्पुरुष सदा करते रहे हैं। सत्य ही सनातन धर्म तथा जीव की परम गति है। इसलिये सत्य के आगे ही मस्तक झुकाना चाहिये ॥१०४॥ सत्य ही धर्म, तप तथा योग है। सत्य ही सनातन ब्रह्म और परम यज्ञ कहा जाता है। सभी कुछ सत्य पर प्रतिष्ठित है ॥१०५॥

आचारानिह सत्यस्य यथावदनुपूर्वशः ।
लक्षणं च प्रवक्ष्यामि सत्यस्येह यथाक्रमम् ॥१०६
प्राप्यतु च यथा सत्यं तन्न श्रोतुमिहार्हसि ।
सत्यं त्रयोदशविधं सर्वलोकेषु भारत ॥१०७
सत्यं च समता चैव दमश्चैव न संशयः ।
अमात्सर्यं क्षमा चैव ह्रीस्तितिक्षानसूयता ॥१०८
त्यागो ध्यानमथार्यत्वं धृतिश्च सततं स्थिरा ।
अहिंसा चैव राजेन्द्र सत्याकारास्त्रयोदश ॥१०९
सत्यं नामाव्ययं नित्यमविकारि तथैव च ।
सर्वधर्माविरुद्धेन योगेनैतदवाप्यते ॥११०

अब में सत्य के आचार और लक्षणों का क्रमशः ठीक वर्णन करूँगा ॥१०६॥सत्य की प्राप्ति किस प्रकार होती है, यह भी कहूँगा। तुम ध्यान देकर सुनो। सब लोकों में सत्य के तेरह प्रकार माने जाते हैं ॥१०७॥ राजेन्द्र ! सत्य, समता, संयम, अमात्सर्य, क्षमा, लज्जा, तितिक्षा, अनसूया, त्याग, परमात्मा-चिन्तन, आर्यत्व, धृति और अहिंसा यह तेरहों भेद सत्य के कहे गये हैं ॥१०८-१०९॥ नित्य, विकारी और अविनाशी होना सत्य का ही लक्षण है। सभी धर्मों के अनुकूल कर्त्तव्य-पालन रूप योग के द्वारा यह सत्य ही प्राप्त होता है ॥११०॥

आत्मनीष्टे तथानिष्टे रिपौ च समता तथा ।
इच्छाद्वेषक्षयं प्राप्य कामक्रोधक्षयं तथा ॥१११

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दमो नान्यस्पृहा नित्यं गाम्भीर्यं धैर्यमेव च ।
अभयं रोगशमनं ज्ञानेनैतदवाप्यते ।।११२
अमात्सर्यं बुधाः प्राहुर्दाने धर्मे च संयमः ।
अवस्थितेन नित्यं च सत्येनामत्सरी भवेत् ।।११३
अक्षमायाः क्षमायाश्च प्रियाणीहाप्रियाणि च ।
क्षमते सम्मतः साधुः साध्वाप्नोति च सत्यवाक् ।।११४
कल्याणं कुरुते बाढं धीमान् न ग्लायते क्वचित् ।
प्रशान्तवाङ्मना नित्यं ह्रीस्तु धर्मादवाप्यते ।।११५

अपने प्रिय से भी प्रिय मित्र में और अप्रिय से अप्रिय शत्रु में समान भाव का होना ही समता है तथा राग, द्वेष, काम और क्रोध का त्याग करने से ही समता प्राप्त हो सकती है ।।११०।। परायी वस्तु की इच्छा न करना, गंभीरता और धैर्य रखना, भय को त्याग देना और मानसिक रोगों का शमन करना-यह दम अर्थात् संयम है । यह ज्ञान के द्वारा प्राप्त हो सकता है ।।११२।। दान धर्म में संयमशील रहना अर्थात् दूसरों की देखा-देखी दान धर्म का आडम्बर न करना अमात्सर्य कहा गया है । इस की प्राप्ति सत्य के पालन से संभव है ।।११३।। सहनीय और असहनीय व्यवहारों तथा प्रिय और अप्रिय वचनों को भी समान रूप से सहन कर लेने वाला सर्व सम्मत एवं क्षमाशील पुरुष ही श्रेष्ठ है । क्योंकि सत्य बोलने वाले को ही क्षमाभाव की प्राप्ति होती है ।।११४।। दूसरों का भले प्रकार कल्याण करने वाला, मन में खेद न मानने वाला और शान्त मन-वाणी वाला पुरुष ही लज्जाशील माना गया है । लज्जा नामक गुण धर्माचरण से ही प्राप्त होता है ।।११५।।

धर्मार्थहेतोः क्षमते तितिक्षा क्षान्तिरुच्यते ।
लोकसंग्रहणार्थं वै सा तु धैर्येण लभ्यते ।।११६
त्यागः स्नेहस्य यत् त्यागो विषयाणां तथैव च ।
रागद्वेषप्रहीणस्य त्यागो भवति नान्यथा ।।११७
आर्यता नाम भूतानां यः करोति प्रयत्नतः ।
शुभं कर्म निराकारो वीतरागस्तथैव च ।।११८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धृतिर्नाम सुखे दुःखे यथा नाप्नोति विक्रियाम् ।
तां भजेत सदा प्राज्ञो य इच्छेद् भूतिमात्मनः ॥११६
सर्वथा क्षमिणा भाव्यं तथा सत्यपरेण च ।
वीतहर्षभयक्रोधो धृतिमाप्नोति पण्डितः ॥१२०

धर्म और अर्थ के लिये कष्ट सहन करना ही 'तितिक्षा' है। लोक में आदर्श उपस्थित करने के लिये उसका पालन करे। इसकी प्राप्ति धैर्य से से सम्भव है ॥११६॥ विषयों की आसक्ति का त्याग ही यथार्थ त्याग है। राग-द्वेष के छोड़ने पर ही त्याग की सिद्धि होती है, अन्यथा नहीं हो सकती ॥११७॥ प्रयत्न पूर्वक प्राणियों का हित करना और उसी में लगे रहना आर्यत्व है इसकी प्राप्ति आसक्ति के त्याग से होती ॥११८॥ सुख-दुःख की प्राप्ति से मन में विकार का न होना ही धृति है। जिसे अपनी उन्नति की कामना हो, उसे इसका पालन करना चाहिये ॥११९॥ सदा क्षमा-भाव रखना और सत्य में तत्पर रहना चाहिये। हर्ष, भय और क्रोध का त्याग करने वाले पुरुष को धैर्य की प्राप्ति होती है ॥१२०॥

अद्रोहः सर्वभूतेषु कर्मणा मनसा गिरा ।
अनुग्रहश्च दानं च सतांधर्मः सनातनः ॥१२१
एते त्रयोदशाकाराः पृथक् सत्यंकलक्षणाः ।
भजन्ते सत्यमेवेह बृंहयन्ते च भारत ॥१२२
नान्तः शक्यो गुणानां च वक्तुं सत्यस्य पार्थिव ।
अतः सत्यं प्रशंसन्ति विप्राः सपितृदेवताः ॥१२३
नास्ति सत्यत् परो धर्मो नानृतात् पातकं परम् ।
स्थितिर्हि सत्यं धर्मस्य तस्मात् सत्यं न लोपयेत् ॥१२४
उपैति सत्याद् दानं हि तथा यज्ञाः सदक्षिणाः ।
त्रेताग्निहोत्रं वेदाश्च ये चान्ये धर्मनिश्चयाः ॥१२५
अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया धृतम् ।
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेव विशिष्यते ॥१२६

मन, वाणी और क्रिया से किसी प्राणी के साथ द्रोह न करे। दया और दान श्रेष्ठ पुरुषों का सनातन धर्म कहा गया है ॥१२१॥ यह तेरह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकार के धर्म सत्य के ही लक्षण स्वरूप हैं। यह सत्य का आश्रय लेकर उसका पालन और वृद्धि करते रहते हैं ॥१२२॥ सत्य के गुण असीम हैं, उन्हें वाणी से नहीं कह सकते। पितरों और देवताओं सहित ब्राह्मण भी सत्य की प्रशंसा करते हैं ॥१२३॥ सत्य से बढ़ कर कोई धर्म नहीं तथा झूठ से बढ़ कर कोई पाप नहीं हैं। सत्य ही धर्म का आधार है, इसलिये सत्य का लोप नहीं करना चाहिये ॥१२४॥ दान का, दक्षिणा वाले यज्ञ का, विविध अग्नियों में हवन का, तथा वेदादि शास्त्रों के अध्ययन का फल सत्य के द्वारा ही प्राप्त हो जात है ॥१२५॥ ओर एक सहस्र अश्वमेध यज्ञों को और दूसरी ओर अकेले को, तुला पर रखें तो उनमें सत्य का पलड़ा ही भारी रहेगा ॥१२६॥

यतः प्रभवति क्रोधः कामो वा भरतर्षभ ।
शोकमोहौ विधित्साच परासुत्वं तथा मदः ॥१२७
लोभो मात्सर्यमीर्ष्या कुत्सा सूया कृपातथा ।
एतत् सर्वं महाप्राज्ञ याथातथ्येन मे वद ॥१२८
त्रयोदशैतेऽतिबलाः शत्रवः प्राणिनां स्मृताः ।
उपासन्ते महाराज समन्तात् पुरुषानिह ॥१२९
एते प्रमत्तं पुरुषमप्रमत्तास्तुवन्ति च ।
वृका इव विलुम्पन्ति दृष्ट्वैपुरुषं बलात् ॥१३०

युधिष्ठिर ने कहा—हे पितामह ! क्रोध, काम, शोक, मोह, विधित्सा, परासुता, मद, लोभ, मात्सर्य, ईर्ष्या, निन्दा, दोष-दृष्टि और दैन्य भाव—इन सब दोषों की उत्पत्ति कैसे होती है, यह मेरे प्रति कहिए ॥१२७-१२८॥ भीष्मजी बोले—हे राजन् ! उपरोक्त तेरह दोष जीवात्माओं के प्रबल शत्रु माने जाते हैं। यह दोष जीवों को सब ओर से घेरे हुए हैं ॥१२९॥ यह दोष प्रमादी मनुष्यों को अत्यन्त पीड़ित करने वाले हैं और उस पर भेड़िये के समान तुरन्त आक्रमण कर देते हैं ॥१३०॥

एभ्यः प्रवर्तते दुःखमेभ्यः पापं प्रवर्तते ।
इति मर्त्यो विजानीयात् सततं पुरुषर्षभ ॥१३१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एतेषामुदयं स्थानं क्षयं च पृथिवीपते ।
हन्त ते कथयिष्यामि क्रोधस्योत्पत्तिमादितः ॥१३२
यथातत्त्वं क्षितिपते तदिहैकमनाः शृणु ।
लोभात् क्रोधः प्रभवति परदोषैरुदीर्यते ॥१३३
क्षमया तिष्ठते राजन् क्षमया विनिवतते ।
संकल्पाज्जायते कामः सेव्यमानो विवर्धते ॥१३४

यदा प्राज्ञो विरमते तदा सद्यः प्रणश्यति ।
परासुता क्रोधलोभादभ्यासाच्च प्रवर्तते ॥१३५
दयया सर्वभूतानां निर्वेदात् सा निवर्तते ।
अवद्यदर्शनादेति तत्त्वज्ञानाच्च धीमताम् ॥१३६

इन दोषों से ही सब को दुःख मिलता है। इनकी ही प्रेरणा से मनुष्य पाप कर्मों में प्रवृत्त होता है। यह बात सभीके लिये जानने योग्य है ॥१३१॥ इनकी उत्पत्ति किस प्रकार से होती है, किस प्रकार यह स्थिर रहते हैं, कैसे इनको नष्ट किया जा सकता है—यह सब तुम्हारे प्रति कहता हूँ। सर्वप्रथम क्रोधकी उत्पत्ति कहूँगा,उसे तुम एकाग्र मन से सुनो ॥१३२॥ राजन् ! लोभ से क्रोध उत्पन्न होता है, उसकी वृद्धि पराये दोषों के देखने से होती है। क्षमा करने से वह क्षमता और निवृत्त हो जाता है ॥१३३॥ काम की उत्पत्ति संकल्प से होती है ! वह सेवन करने से प्रवृद्ध हो जाता है। उससे विरक्त होने पर वह तत्काल मिट जाता है ॥१३४॥ क्रोध, लोभ और अभ्यास से परासुता की उत्पत्ति है। सभी जीवों पर दया करने से तथा वैराग्य से उसकी निवृत्ति होती है। पराये दोषों के देखने से वह प्रकट हो जाती और तत्वज्ञान से मिट जाती है ॥१३५-१३६॥

अज्ञानप्रभवो मोहः पापाभ्यासात् प्रवर्तते ।
यदा प्राज्ञेषु रमते तदा सद्यः प्रणश्यति ॥१३७
विरुद्धानीह शास्त्राणि ये पश्यन्ति कुरूद्वह ।
विधित्सा जायते तेषां तत्त्वज्ञानान्निवर्तते ॥१३८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रीत्या शाकः प्रभवति वियोगात् तस्य देहिनः ।
यदा निरर्थकं वेत्ति तदा सद्यः प्रणश्यति ॥१३९
परासुता क्रोधलोभादभ्यासाच्च प्रवर्तते ।
दयया सर्वभूतानां निर्वेदात् सा निवर्तते ॥१४०

अज्ञान से मोह उत्पन्न होता है और पाप का कारण बढ़ता जाता है । जब विद्वानों के संग में अनुराग होता है, तब वह मोह नष्ट हो जाता है ॥१३७॥ धर्म-विरुद्ध शास्त्रों का अवलोकन करने से अनुचित कर्मों की इच्छा रूप विधित्सा की उत्पत्ति होती है। इसकी निवृत्ति तत्वज्ञान से ही संभव है ॥१३८॥ प्रेमी के वियोग से शोक उत्पन्न होता है। परन्तु, शोक को व्यर्थ मान लेने पर वह तुरन्त शान्त हो जाता है ॥१३९॥ क्रोध,लोभ और अभ्यास के कारण परासुता अर्थात् हत्या की प्रवृत्ति होती है । सब प्राणियों के प्रति दया और वैराग्य से वह नष्ट हो जाती है ॥१४०॥

सत्यत्यागात् तु मात्सर्यमहितानां च सेवया ।
एतत् तु क्षीयते तात साधूनामुपसेवनात् ॥१४१
कुलाज्ज्ञानात् तथैश्वर्यान्मिदो भवति देहिनाम् ।
एभिरेव तु विज्ञातैः स च सद्यः प्रणश्यति ॥१४२
ईर्ष्या कामात् प्रभवति संहर्षाच्चैव जायते ।
इतरेषां तु सत्त्वानां प्रज्ञया सा प्रणश्यति ॥१४३
विभ्रमाल्लोकबाह्यानां द्वेष्यैर्वाक्यैरसम्मतैः ।
कुत्सा संजायते राजँल्योकान् प्रेक्ष्याभिशाम्यति ॥१४४
प्रतिकर्तुं न शक्ता ये बलस्थायापकारिणे ।
असूया जायते तीव्रा कारुण्याद् विनिवर्तते ॥१४५

सत्य का त्याग और दुष्टों का संग करने से मात्सर्य दोष उत्पन्न होता है तथा श्रेष्ठ पुरुषों की सेवा और सत्संग से वह मिट जाता है ॥१४१॥ अपने श्रेष्ठ कुल, उत्कृष्ट ज्ञान और ऐश्वर्य का अभिमान होने पर देहाभिमानी पुरुष मदमत्त हो जाते हैं । परन्तु उनके यथार्थ रूप का ज्ञान होने पर वह मद शीघ्र उतर जाता है ॥१४२॥ किसी वस्तु की चाह होने पर भी उसका अभाव होना और दूसरों के पास उस वस्तु को देखना ईर्ष्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का कारण है। परन्तु, विवेक से ईर्ष्या का नाश हो जाता है ॥१४३॥ समाज-बहिष्कृत और पतित मनुष्यों के अप्रमाणिक भ्रमपूर्ण वचनों से निन्दा की प्रवृत्ति होती है। परन्तु. वह निन्दा वृत्ति श्रेष्ठ पुरुषों के आदर्श से नष्ट हो जाती है ॥१४४॥ अपना अहित करने वाले बलवान पुरुष से बदला लेने की तीव्र प्रवृत्ति 'असूया' है। परन्तु, दया-भाव से वह प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है ॥१४५॥

कृपणान् सततं दृष्ट्वा ततः संजायते कृपा ।
धर्मनिष्ठां यदा वेत्ति तदा शाम्यति सा कृपा ॥१४६
अज्ञानप्रभवो लोभ भूतानां दृश्यते सदा ।
अस्थिरत्वं च भोगानां दृष्ट्वा ज्ञात्वा निवर्तते ॥१४७
एतान्येव जितान्याहुः प्रशमाच्च त्रयोदश ।
एते हि धार्तराष्ट्राणां सर्वे दोषास्त्रयोदश ॥१४८
त्वया सत्यार्थिना नित्यं विजिता ज्येष्ठसेवनात् ॥१४९

कृपण मनुष्यों को देखने से कृपणता उत्पन्न होती है, परन्तु धर्मनिष्ठों के आचरण को जान लेने पर उसका नाश हो जाता है ॥१४६॥ अज्ञान के कारण भोगों के प्रति लोभ देखा जाता है। परन्तु भोगों का क्षण भंगुर होना जानने और देखने से उसकी निवृत्ति हो जाती है ॥१४७॥ यह तेरहों दोष शान्त-भाव के द्वारा जीते जा सकते हैं। धृतराष्ट्र के पुत्रों में यह सब दोष हैं और तुम इनको त्याग कर सत्य का ग्रहण करने की इच्छा करते हो, इसलिये श्रेष्ठ पुरुषों के संग से तुम उन दोषों पर विजय प्राप्त कर चुके हो ॥१४८-१४९॥

आनृशंस्यं विजानामि दर्शनेन सतां सदा ।
नृशंसान्न विजानामि तेषां कर्म च भारत ॥१५०
कण्टकान् कूपमग्निं च वर्जयन्ति यथा नराः ।
तथा नृशंसकर्माणं वर्जयन्ति नरा नरम् ॥१५१
नृशंसो दह्यते नित्यं प्रेत्य चेह च भारत ।
तस्मात्त्वं ब्रूहि कौरव्य तस्य धर्मविनिश्चयम् ॥१५२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्पृहा स्याद् गर्हिता चैव विधित्सा चैव कर्मणाम् ।
आक्रोष्टा क्रुश्यते चैव वञ्चितो बुद्धयते स च ॥१५३
दत्तानुकीर्तिर्विषमः क्षुद्रो नैकृतिकः शठः ।
असंविभागी मानी च तथा सङ्घी विकत्थनः ॥१५४
सर्वातिशङ्की पुरुषो बलीशः कृपणोऽथवा ।
वर्गप्रशंसी सततमाश्रमद्वेषसंकरी ॥१५५
हिंसाविहारः सततमविशेषगुणागुणः ।
बह्वलीकोऽमनस्वी च लुब्धोऽत्यर्थं नृशसकृत् ॥१५६

युधिष्ठर ने प्रश्न किया—हे भरतनन्दन ! श्रेष्ठ पुरुषों के सेवन और दर्शन सदा से करते रहने के कारण कोमलता पूर्वक बर्ताव करना तो मैं जानता हूँ, परन्तु नृशंस मनुष्यों और उनके कर्मों को मैं नहीं जानता ॥१५०॥ जैसे मार्ग में काँटे, कुए और अग्नि से बचकर राहगीर चलते हैं वैसे ही नृशंस कर्म वाले व्यक्ति को भी लोग दूर से ही त्याग देते हैं ॥१५१॥ कुरुनन्दन ! नृशंस मनुष्य इस लोक और परलोक दोनों में ही शोकानल में दग्ध होता रहता है । आप मुझे नृशंस मनुष्य और उसके धर्म-कर्म का ज्ञान कराइये ॥१५२॥ भीष्मजी बोले—राजन् ! जिसके मन में अत्यन्त घृणित इच्छाएँ रहती हैं, जो हिंसा-प्रधान कुत्सित कर्मों को करने की इच्छा करता है, स्वयं पर निन्दा में रत रहता है, अपने को दैव से वंचित समझता हुआ पाप-कर्म में लग जाता है, अपने द्वारा दिये गये दान का बारम्बार बखान करता है, मन में विषमता रहती है, नीचे कर्मों को करता है, परायी जीविका को नष्ट करता है, शठ है, भोग्य वस्तुओं को एकाकी ही भोगता है, अभिमान युक्त, विषयों में आसक्त और अपनी प्रशंसा में बढ़ाचढ़ा कर बात कहता है, सब के प्रति संदेह रखता है, काक के समान वंचक दृष्टि वाला, अत्यन्त कृपणता युक्त, अपने ही वर्ग का प्रशंसक, आश्रमों से द्वेष रखने वाला, वर्णसंकरता फैलाने वाला, हिंसा के लिये ही घूमने वाला, गुण को अवगुण समझने वाला, अत्यन्त मिथ्यावादी, अनुदार और अत्यन्त लोभी मनुष्य ही नृशंस-कर्मा कहा जाता है ॥१५३-१५६॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मशीलं गुणोपेतं पापमित्यवगच्छति ।
आत्मशीलप्रमाणेन न विश्वसिति कस्यचित् ॥१५७
परेषां यत्र दोषः स्यात् तद् गुह्यं सम्प्रकाशयेत् ।
समानेत्वेव दोषेषु वृत्त्यर्थमुपघातयेत् ॥१५८
तथोपकारिणं चैव मन्यते वञ्चितं परम् ।
दत्त्वापि च धनं काले संतपत्युपकारिणे ॥१५९
भक्ष्यं पेयमथालेह्यं यच्चान्यत् साधु भोजनम् ।
प्रेक्षमाणेषु योऽश्नीयान्नृशंसमिति तं वदेत् ॥१६०

वह धर्मात्मा और गुणवान् मनुष्यों को पाप कर्मा समझता और अपने ही स्वभाव को ठीक मानता हुआ किसी पर भी विश्वास नहीं करता ॥१४७॥ किसी की बदनामी होने के समय उसके गुप्त दोषों को भी प्रकट कर देता है तथा अपने और दूसरे के समान अपराध होने पर भी वह दूसरे को ही नष्ट कर देता है ॥१५८॥ अपने ऊपर उपकार करने वाले को जाल में फँसा हुआ मानता है और यदि उसे कभी धन देता है, तो उसके लिये बहुत समय तक पछिताया करता रहता है ॥१५९॥ जो मनुष्य दूसरे मनुष्यों के उपस्थित रह कर देखते रहने पर भी श्रेष्ठ भक्ष्य, पेय, लेह्य अथवा अन्य भोज्य पदार्थों को अकेला ही भक्षण कर लेता है, उसे भी नृशंस कहते हैं ॥१६०॥

ब्राह्मणेभ्यः प्रदायाग्रं यः सुहृद्भिः सहाश्नुते ।
स प्रेत्य लभते स्वर्गमिह चानन्त्यमश्नुते ॥१६१
एष ते भरतश्रेष्ठ नृशंसः परिकीर्तितः ।
सदा विवर्जनीयो हि पुरुषेण विजानता ॥१६२
हृतार्थो यक्ष्यमाणश्च सर्ववेदान्तगश्च यः ।
आचार्यपितृकार्यार्थं स्वाध्यायार्थमथापि च ॥१६३
एते वै साधवो दृष्टा ब्राह्मणा धर्मभिक्षवः ।
निःस्वेभ्यो देयमेतेभ्यो दान विद्या च भारत ॥१६४
अन्यत्र दक्षिणादानं देयं भरतसत्तम ।
अन्येभ्योऽपि बहिर्वेदि चाकृतान्नं विधीयते ॥१६५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो व्यक्ति प्रथम ब्राह्मण को देकर फिर अपने सुहृदों सहित बैठ कर भोजन करता है, वह इस लोक में अत्यन्त सुख भोगता हुआ मरने पर भी स्वर्ग प्राप्त करता है ॥१६१॥ इस पर तुम्हारे प्रश्न के उत्तर में नृशंस मनुष्य का परिचय दिया है। समझदार व्यक्ति को उससे सदा बच कर चलना चाहिए ॥१६२॥ भीष्मजी ने कहा--- राजन् ! सभी वेदों और उपनिषदों में पारंगत ब्राह्मण यदि यज्ञ कराने वाला हो और उसका धन चोर चुरालें तो राजा को चाहिए कि वह उसे आचार्य दक्षिणा देने, पितरों का श्राद्ध करने तथा शास्त्रों का स्वाध्याय करने के लिये धन प्रदान करे। यह श्रेष्ठ ब्राह्मण धर्मार्थ धन की याचना करते देखे गये हैं, इन्हें दान और विद्या प्राप्ति के लिये धन देना उचित है ॥१६३-१६४॥ इससे भिन्न परिस्थिति हो तो ब्राह्मण को केवल दक्षिणा दे तथा ब्राह्मणेतर मनुष्य के लिये भी यज्ञ वेदी से बाहर कच्चा अन्न दे ॥१६५॥

सर्वरत्नानि राजा हि यथार्हं प्रतिपादयेत् ।
ब्राह्मणा एव वेदाश्च यज्ञाश्च बहुदक्षिणाः ।
अन्योन्यं विभवाचारा यजन्ते गुणतः सदा ॥१६६
यस्य त्रैवार्षिकं भक्तं पर्याप्तं भृत्यवृत्तये ।
अधिकं चापि विद्येत स सोमं पातुमर्हति ॥१६७
यज्ञश्चेत् प्रतिरुद्धः स्यादंशेनैकेन यज्वनः ।
ब्राह्मणस्य विशेषेण धार्मिकं सति राजनि ॥१६८
यो वैश्यः स्याद् बहुपशुर्हीनक्रतुरसोमपः ।
कुटुम्बात् तस्यतद् वित्तं यज्ञार्थं पार्थिवो हरेत् ॥१६९
आहरेदथ नो किञ्चित् कामं शूद्रस्य वेश्मनः ।
न हि यज्ञेषु शूद्रस्य किञ्चिदस्ति परिग्रहः ॥१७०

राजा का कर्त्तव्य है कि ब्राह्मणों के लिये उसकी योग्यतानुसार सब प्रकार के रत्न दे, क्योंकि ब्राह्मण ही वेद तथा बहुत संख्या वाली दक्षिणा से युक्त यज्ञ स्वरूप हैं। अपनी सम्पत्ति के अनुसार सभी कार्यों को करने वाले वे विप्रगण सदा परस्पर मिलकर गुणमय यज्ञ का अनुष्ठान करते रहते हैं ॥१६६॥ जिस ब्राह्मण के पास अपने पालन करने योग्य कुटुम्बियों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के भरण-पोषणार्थ तीन वर्ष तक उपभोग करने के लिये पर्याप्त धन हो अथवा उससे भी अधिक हो, वही ब्राह्मण सोमयाग का अनुष्ठान करे ॥१६७॥ धार्मिक राजा के विद्यमान रहते हुए भी यदि किसी यज्ञकर्त्ता का, विशेषतः ब्राह्मण का यज्ञ धनाभाव में अपूर्ण रहे तो राजा का कर्त्तव्य है कि उसके राज्य में जो अधिक पशुओं से सम्पन्न तथा ऐश्वर्यवान् वैश्य हो उससे अथवा यदि वह यज्ञ या सोमयाग से रहित हो तो उसके कुटुम्बियों से उस धन को यज्ञ के निमित्त ले ले ॥१६८-१६९॥ किन्तु, राजा अपनी इच्छा से किसी नीच के घर से थोड़ा धन भी न ले, क्योंकि उसे उसका किंचित भी अधिकार नहीं है ॥१७०॥

योऽनाहिताग्निः शतगुरयज्वा च सहस्रगुः ।
तयोरपि कुटुम्बाभ्यामाहरेदविचारयन् ॥१७१
अदातृभ्यो हरेत् वित्तं विख्याप्य नृपतिः सदा ।
तथैवाचरतो धर्मो नृपतेः स्यादथाखिलः ॥१७२

तथैव शृणु मे भक्तं भक्तानि षडनश्नतः ।
अश्वस्तनविधानेन हर्तव्यं हीनकर्मणः ॥१७३
खलात् क्षेत्रात् तथारामाद् यतो वाप्युपपद्यते ।
आख्यातव्यं नृपस्यैतत् पृच्छतेऽपृच्छतेऽपि वा ॥१७४

न तस्मै धारयेद् दण्डं राजा धर्मेण धर्मवित् ।
क्षत्रियस्य तु बालिश्याद् ब्राह्मणः क्लिश्यतेक्षुधा ॥१७५

जिस वैश्य के पास एक सौ गौएँ हों और वह अग्निहोत्र कर्म से शून्य हो, अथवा जिसके पास एक हजार गौएँ हों और वह यज्ञ से विमुख हो तो उससे बिना विचारे ही धन ले ले ॥१७१॥ धन के होते हुए भी जो दान न करते हों, उनके दोष का ढिंढोरा कर धर्म के लिये उनका धन ले लो, ऐसा करने वाला राजा सम्पूर्ण धन को प्राप्त करता है ॥१७२॥ युधिष्ठिर ! अब मैं तुम्हें अन्न के विषय में जो बात कहता हूं, वह सुनो । यदि ब्राह्मण अन्न के अभाव में निरन्तर छः मास तक उपवास करे तो उस अवस्था में वह किसी निकृष्टकर्मा मनुष्य के घर से उतना धन अपहृत कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकता है, जिससे उसका एक दिन का भोजन हो सके परन्तु दूसरे दिन के लिये कुछ भी शेष न रहे ॥१७३॥ खलिहान, खेत, उद्यान अथवा जहाँ से भी अन्न प्राप्त हो सके, वहीं से भोजन मात्र के लिये अन्न उठा ले और फिर राजा पूछे चाहे न पूछे उससे जाकर अपनी वह बात कह दे ॥१७४॥ धर्मज्ञ राजा उस दशा में उसे दंडित न करे, क्योंकि क्षत्रिय नरेश की उपेक्षा से ही ब्राह्मण को भूख का क्लेश प्राप्त होता है ॥१७५॥

श्रुतशीले समाज्ञाय वृत्तिमस्य प्रकल्पयेत् ।
अथैनं परिरक्षेत पिता पुत्रमिवौरसम् ॥१७६

इष्टिं वैश्वानरीं नित्यं निर्वपेदब्दपर्यये ।
अनुकल्पः परो धर्मो धर्मवादेस्तु केवलम् ॥१७७
विश्वैर्देवैश्च साध्यैश्च ब्राह्मणैश्च महर्षिभिः ।
आपत्सु मरणाद् भीतैर्विधिः प्रतिनिधीकृतः ॥१७८

प्रभुः प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्तते ।
न साम्परायिकं तस्य दुर्मतेर्विद्यते फलम् ॥१७९
न ब्राह्मणो निवेदेत किंचिद् राजनि वेदवित् ।
स्ववीर्याद् राजवीर्याच्च स्ववीर्यं बलवत्तरम् ॥१८०

राजा का कर्त्तव्य है कि उसके शास्त्रज्ञान और स्वभाव को जानकर उसकी आजीविका की व्यवस्था करे और जैसे पिता अपने पुत्र की रक्षा करता है, वैसे ही ब्राह्मण भी उसकी रक्षा करे ॥१७६॥ प्रतिवर्ष के आग्रयण आदि यज्ञ न हो पावें तो प्रतिदिन वैश्वानरी इष्टि का समर्पण करे। मुख्य कर्म के स्थान पर किये जाने वाले गौण कर्म का नाम अनुकल्प है। धर्मज्ञों द्वारा कहा गया अनुकल्प भी परम धर्म है ॥१७७॥ क्योंकि विश्वेदेव, साध्य, ब्राह्मण और महर्षियों ने मृत्यु के भय से आपत्कालीन प्रत्येक विधि का प्रतिनिधि निश्चित कर दिया है ॥१७८॥ जो व्यक्ति मुख्य विधि के अनुसार समर्थ है, परन्तु गौण विधि का प्रयोग करता है, वह कुबुद्धि वाला मानव पारलौकिक फल को प्राप्त नहीं कर सकता ॥१७९॥ वेदज्ञ, ब्राह्मण को राजा के सामने अपनी आवश्यकता नहीं कहनी चाहिए, क्योंकि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्मण की शक्ति और राजा की शक्ति दोनों में, उसकी अपनी ही शक्ति बलवान होती है ।।१८०।।

तस्माद् राज्ञः सदा तेजो दुःसहं ब्रह्मवादिनाम् ।
कर्ता शास्ता विधाता च ब्राह्मणो देव उच्यते ।।१८१
तस्मिन्नाकुशलं ब्रूयान्न शुष्कामीरयेद् गिरम् ।
क्षत्रियो बाहुवीर्येण तरेदापदमात्मानः ।।
धनैर्वैश्यश्च शूद्रश्च मन्त्रैर्होमैश्च वै द्विजः ।।१८२
नैव कन्या न युवतिर्नामन्त्रज्ञो न बालिशः ।
परिवेष्टाग्निहोत्रस्य भवेन्नासंस्कृतस्तथा ।।१८३
नरकं निपतन्त्येते जुह्वानाः स च यस्य तत् ।
तस्माद् वैतानकुशलो होता स्याद् वेदपारगः ।।१८४
प्राजापत्यमदत्त्वाश्वमग्न्याधेयस्य दक्षिणाम् ।
अनाहिताग्निरिति ह प्रोच्यते धर्मदर्शिभिः ।।१८५

इस प्रकार ब्रह्मवादियों का तेज राजा के लिये दुःसह है । क्योंकि ब्राह्मण ही इस विश्व का कर्त्ता, शासक, धारक, पोषक और देवता कहा जाता है ।।१८१।। इसलिए उसके प्रति अमंगल की बात न कहे, रूखे वचनों का प्रयोग न करे । क्षत्रिय अपने भुजबल से, वैश्य और शूद्र धन-बल से तथा ब्राह्मण मंत्र और होम की शक्ति से ही विहत्ति से पार हो सकता है ।।१८२।। कन्या, युवती, मन्त्रज्ञान से रहित, मूर्ख और संस्कार हीन पुरुष को हवन नहीं करना चाहिए ।।१८३।। ऐसे हवनकर्त्ता और यजमान दोनों उत्तम गति नहीं पाते । इसलिये यज्ञकार्य में कुशल है और वेद-पारंगत विद्वान् को होना ही चाहिए ।।१८४।। अग्निहोत्र आरम्भ करके भी जो व्यक्ति प्रजापति देव के लिये अश्व रूप दक्षिणा नहीं देता, उसे धर्म दर्शियों ने अनाहिताग्नि कहा है ।।१८५।।

पुण्यानि यानि कुर्वीत श्रद्दधानो जितेन्द्रियः ।
अनाप्तदक्षिणैर्यज्ञैर्न यजेत कथञ्चन ।।१८६
प्रजाः पशूंश्च स्वर्गं च हन्ति यज्ञो ह्यदक्षिणः ।
इन्द्रियाणि यशः कीर्तिमायुश्चाप्यवकृन्तति ।।१८७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उदक्यामासते ये च द्विजाः केचिदनग्नयः ।
होमं चाश्रोत्रियं येषां ते सर्वे पापकर्मिणः ॥१८८
उदपानोदके ग्रामे ब्राह्मणो वृषलीपतिः ।
उषित्वा द्वादश समाः शूद्रकर्मैव गच्छति ॥१८९

अभार्यां शयने बिभ्रच्छूद्रं वृद्धं च वै द्विजः ।
अब्राह्मणं मन्यमानस्तृणेष्वासीत पृष्ठतः ।
तथा संशुष्यते राजञ्शृणु चात्र वचो मम ॥१९०

मनुष्य जो पुण्य कर्म करे, वह श्रद्धा पूर्वक और जितेन्द्रिय भाव से होना चाहिए । बिना दक्षिणा दिये यज्ञ न करे ॥१८६॥ बिना दक्षिणा का यज्ञ प्रजा और पशुओं को नष्ट कर डालता है । स्वर्ग-प्राप्ति में भी बाधक होता है । वह इन्द्रिय, यश, कीर्त्ति, और आयु को क्षीण कर देता हैं ॥१८७॥ रजस्वला से समागम करने वाले, घर में अग्नि-स्थापन न करने वाला, अथवा वेद-विरुद्ध विधि से होम करने वाला-यह सभी पाप-कर्मी कहे गये हैं ॥१८८॥ जिस ग्राम में सब एक कुँए का पानी पीते हैं, उसमें बारह वर्ष पर्यन्त रहने से और शूद्रा से विवाह करने से ब्राह्मण भी शूद्र हो जाता है ॥१८९॥ पर स्त्री को पर्यंक शायिनी बनाने वाला ब्राह्मण अथवा शूद्र आदि को उच्च आसन देकर स्वयं नीचे बैठने वाला ब्राह्मण अपने ब्रह्मणत्व से गिर जाता है । उसकी शुद्धि जिस प्रकार हो सकती है, वह सुनो ॥१९०॥

यदेकरात्रेण करोति पापं
निकृष्टवर्णं ब्राह्मणः सेवमानः ।
स्थानासनाभ्यां विहरन् व्रती स
त्रिभिर्वर्षैः शमयेदात्मपापम् ॥१९१

न नर्मयुक्तमनृतं हिनस्ति
न स्त्रीषु राजन् न विवाहकाले ।
न गुर्वर्थे नात्मनो जीवितार्थे
पञ्चानृतान्याहुरपातकानि ॥१९२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रद्दधानः शुभां विद्यां हीनादपि समाप्नुयात् ।
सुवर्णमपि चामेध्यादादीताविचारयन् ॥१९३
स्त्रीरत्नं दुष्कुलाच्चापि विषादप्यमृतं पिवेत् ।
अदूष्या हि स्त्रियो रत्नमाप इत्येव धर्मतः ॥१९४
गोब्राह्मणहितार्थं च वर्णानां संकरेषु च ।
वैश्यो गृह्णीत शस्त्राणि परित्राणार्थमात्मनः ॥१९५

किसी नीच की सेवा करने और उसके साथ एक आसन पर बैठने आदि से जो पाप लगता है, उसे दूर करने के लिये तीन वर्षों तक व्रत-पालन पूर्वक पृथिवी पर विचरण करे ॥१९१॥ राजन् ! परिहास में, स्त्री के निकट, विवाह के समय, गुरु के कार्य में अथवा अपनी प्राण रक्षा के उद्देश्य से मिथ्या भाषण करना हानिकारक नहीं । इन पाँच अवसरों पर झूँठ कहना पाप नहीं माना जाता ॥१९२॥ नीच वर्ण के पुरुष से भी श्रेष्ठ विद्या श्रद्धा सहित ग्रहण करे और सोना अपवित्र स्थान में भी पड़ा हो तो उसे बिना हिचक उठा ले ॥१९३॥ नीच कुल से भी उत्तम स्त्री हो तो उसे ले ले, विष के स्थान से भी अमृत मिले तो उसे पीले, क्योंकि स्त्रियां, रत्न और जल यह धर्मतः दूषित नहीं माने जाते ॥१९४॥ गौ और ब्राह्मण के हित में, वर्णसंकरता रोकने के लिये और अपनी रक्षा के लिये वैश्य को भी हथियार ग्रहण करना चाहिए ॥१९५॥

सुरापानं ब्रह्महत्या गुरुतल्पमथापि वा ।
अनिर्देश्यानि मन्यन्ते प्राणान्तमिति धारणा ॥१९६
सुवर्णहरणं स्तैन्यं विप्रस्वं चेति पातकम् ।
विहरन् मद्यपानाच्च अगम्यागमनादपि ॥१९७
पतितैः सम्प्रयोगाच्च ब्राह्मणीयोनितस्तथा ।
अचिरेण महाराज पतितो वै भवत्युत ॥१९८
संवत्सरेण पतति पतितेन सहाचरन् ।
याजनाध्यापनाद् यौनान्न तु यानासनाशनात् ॥१९९
एतानि हित्वातोऽन्यानि निर्देश्यानीति भारत ।
निर्दश्यानेन विधिना कालेनाव्यसनी भवेत् ॥२००

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मदिरापान, ब्रह्महत्या और गुरुपत्नी गमन—इन महापातकों से मुक्त होने के लिये कोई प्रायश्चित नहीं कहा है। विद्वानों की धारणा है कि उन का प्रायश्चित अपने प्राणों का अन्त करने से ही हो सकता है॥१९६॥ स्वर्ण चुराना, अन्य वस्तुएँ चुराना और ब्राह्मण का धन छीनना यह महा पाप है। मदिरा पीने, अगम्या के साथ गमन करने, पतितों से सम्पर्क रखने और ब्रह्म तर का ब्राह्मणी से गमन करने वाला पुरुष पतित हो जाता है॥१९७-१९८॥ पतित के साथ सम्पर्क रखने वाला मनुष्य एक वर्ष में पतित हो जाता है और उसके यहाँ विवाह-सम्बन्ध करने, साथ में भोजन आदि करने से उसी समय पतित हो जाता है॥१९९॥ उपरोक्त पाप अनिर्देश्य अर्थात् प्रायश्चित्त रहित और अन्य सभी पाप निर्देश्य कहे गये हैं। उनका जो प्रायश्चित्त शास्त्र में कहा गया है। उसके अनुसार प्रायश्चित्त करता हुआ, पाप-कर्म छोड़ दे॥२००॥

अन्नं वीर्यं ग्रहीतव्यं प्रेतकर्मण्यपातिते।
त्रिषु त्वेतेषु पूर्वेषु न कुर्वीत विचारणाम्॥२०१
अमात्यान् वा गुरून् वापि जह्याद् धर्मेण धार्मिकः।
प्रायश्चित्तमकुर्वाणैर्नैतैरर्हति संविदम्॥२०२
अधर्मकारी धर्मेण तपसा हन्ति किल्बिषम्।
ब्रुवन् स्तेन इति स्तेनं तावत् प्राप्नोति किल्बिषम्॥२०३
अस्तेनं स्तेन इत्युक्त्वा द्विगुणं पापमाप्नुयात्।
त्रिभागं ब्रह्महत्यायाः कन्या प्राप्नोति दुष्यती॥२०४
यस्तु दूषयिता तस्याः शेषं प्राप्नोति पाप्मनः।
ब्राह्मणानवगर्ह्यैह स्पृष्ट्वा गुरुतरं भवेत्॥२०५

पूर्वोक्त तीन प्रकार के पापियों की मृत्यु पर उनके दाहादि क्रिया किये बिना ही कुटुम्बिजन उनके अन्न-धन पर अधिकार कर लें। इसमें किसी अन्य विचार की आवश्यकता नहीं है॥२०१॥ धार्मिक राजा को अपने गुरुजन और मन्त्री आदि के पतित हो जाने पर उन्हें भी त्याग देना चाहिए। जब तक यह अ ने पापों का प्रायश्चित्त न कर लें तब तक इनके साथ भाषण न रखे॥२०२॥ पापाचारी मनुष्य धर्म के आच-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रण और तप के द्वारा अपने पाप को नष्ट कर डालता है। चोर को 'यह चोर है' ऐसा कह देने से ही चोर के समान ही पाप-भागी होना होता है ॥२०३॥ चोर नहीं है, उसे चोर बताने वाले को चोर से दुगुना पाप भागी होना पड़ता है। कुमारी कन्या के स्वेच्छा से चरित्र भ्रष्ट होने पर तीन चौथाई पाप लगता है ॥२०४॥ तथा उसे कलंकित करने वाला पुरुष एक चौथाई पाप का भागी होता है। ब्राह्मणों को गाली देना या धक्के देकर निकालना भी अत्यन्त पाप कर्म कहा है ॥२०५॥

वर्षाणां हि शतं तावत् प्रतिष्ठां नाधिगच्छति ।
सहस्रं चैव वर्षाणां निपत्य नरकं वसेत् ॥२०६
तस्मान्नैवावगर्ह्यैत नैव जातु निपातयेत् ।
शोणितं यावतःपांसून् संगृह्णीयाद् द्विजक्षतात् ॥
तावतीः स समा राजन् नरके प्रतिपद्यते ॥२०७
भ्रूणहाऽऽहवमध्ये तु शुद्ध्यते शस्त्रपाततः ।
आत्मानं जुहुयादग्नौ समिद्धे तेन शुद्धयते ॥२०८
सुरापो वारुणीमुष्णां पीत्वा पापाद् विमुच्यते ॥२०९
तया स काये निर्दग्धे मृत्युं वा प्राप्य शुद्धयति ।
लोकांश्च लभते विप्रो नान्यथा लभते हि सः ॥२१०

वह सौ वर्षों तक प्रेत के समान भटकता है, कहीं भी ठहरने के लिए स्थान नहीं मिलता। फिर उसे एक हजार वर्षों तक नरक में रहना होता है ॥२०६॥ इसलिए ब्राह्मण को गाली न दे, उसे भूमि पर न गिरावे। ब्राह्मण के देह में घाव होने पर, उससे निकला हुआ रक्त जितने धूल-कणों को भोगता है, उतने वर्षों तक चोट पहुँचाने वाले को नरक में रहना पड़ता है ॥२०७॥ यदि भ्रूण हत्या करने वाले की मृत्यु रणक्षेत्र में शास्त्र लगने से हो जाय तो वह शुद्ध हो जाता है अथवा जलती हुई अग्नि में अपने शरीर को होम देने से भी शुद्धि हो जाती है ॥२०८॥ मदिरा पीने वाला व्यक्ति मदिरा को खूब गरम करके पी लेने पाप-मुक्त हो जाता है या उससे देह जल कर मृत्यु हो जाय तो पाप से छूट जाता है। इस प्रकार शुद्ध हुआ ब्राह्मण ही श्रेष्ठ लोकों को पा सकता है ॥२०९-२१०॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुरुतल्पमधिष्ठाय दुरात्मा पापचेतनः ।
स्त्र्याकारां प्रतिमां लिंग्य मृत्युना सोऽभिशुद्धयति ।।२११
अथवा शिश्नवृषणावादायाञ्जलिना स्वयम् ।।२१२
नैर्ऋतीं दिशमास्थाय निपतेत् स त्वजिह्मगः ।
ब्राह्मणार्थेऽपि वा प्राणान् संत्यजेत् तेन शुद्धयति ।।२१३
अश्वमेधेन वापीष्ट्वा अथवा गोसवेन वा ।
अग्निष्टोमेन वा सम्यगिह प्रेत्य च पूज्यते ।।२१४
तथैव द्वादशसमाः कपाली ब्रह्महा भवेत् ।
ब्रह्मचारी भवेन्नित्यं स्वकर्म ख्यापयन् मुनिः ।।
एवं वा तपसा युक्तो ब्रह्महा सवनी भवेत् ।।२१५

पाप युक्त विचारों वाला पुरुष गुरु पत्नी गमन करे तो उसे लोहे की गरम की हुई नारी से आलिंगन करके प्राण देने पर ही पाप से छुटकारा मिलता है ।।२११।। अथवा अपने शिश्न और कण्डकोषों को स्वयं ही काट कर हाथ में लेकर नैर्ऋत्य की ओर जाता हुआ गिर पड़े अथवा ब्राह्मण के किसी भी कार्य में प्राण छोड़ दे तो वह शुद्ध हो जाता है ।।२१२-२१३।। अथवा अश्वमेध यज्ञ, गोसव नामक यज्ञ अग्निष्टोम द्वारा भले प्रकार यजन करने पर इहलोक और परलोक में पूजित होता है ।।२१४।। ब्रह्महत्या करने वाला, उसे मृतक ब्राह्मण की खोपड़ी लेकर अपना पाप कर्म सब को सुनाता रहे और बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य पूर्वक तीनों काल स्नान करे। इस प्रकार तप में संलग्न रहने से वह शुद्ध हो जाता है ।।२१५।।

एवं तु समभिज्ञातामात्रेयीं वा निपातयेत् ।
द्विगुणा ब्रह्महत्या वै आत्रेयीनिधने भवेत् ।।२१६
सुरापो नियताहारो ब्रह्मचारी क्षितीशयः ।।२१७
ऊर्ध्वं त्रिभ्योऽपि वर्षेभ्यो यजेताग्निष्टुता परम् ।
ऋषभं हस्रं वा गा दत्त्वा शौचमाप्नुयात् ।।२१८
वैश्यं हत्वा तु वर्षे द्वे ऋषभैकशतं च गाः ।
शूद्रं हत्वाब्दमेवैकमृषभं च शतं च गाः ।।२१९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्ववराहखरान् हत्वा शौद्रमेव व्रतं चरेत् ।
मार्जारचाषमण्डूकान् काकं व्यालं च मूषिकम् ॥
उक्तः पशुसमो दोषो राजन् प्राणिनिपातनात् ॥२२०

जान-बूझ कर गर्भिणी स्त्री की हत्या करने वाले पुरुष को उस हत्या के कारण दो ब्रह्महत्याओं का पाप लगता है ॥२१६॥ मदिरा पान करने वाले को अल्पाहारी और ब्रह्मचारी रहकर पृथ्वी पर सोना चाहिये। तीन वर्ष तक इस प्रकार का आचरण करने के बाद अग्निष्टोम करना चाहिये। फिर एक हजार बैल अथवा गौएँ दान करे तो शुद्धि होती है। ॥२१७-२१८॥ यदि वैश्य की हत्या करे तो दो वर्ष तक पूर्वोक्त नियमों के पालन पूर्वक एक सौ बैल और इतनी ही गौएँ दान करे। शूद्र की हत्या करने वाले को एक वर्ष तक पूर्वोक्त नियमों का पालन करते हुए एक बैल और एक सौ गौएँ दान करनी चाहिए ॥२१९॥ कुत्ते, सूअर, गदहे की हत्या करने वाले को शूद्र हत्या सम्बन्धी व्रत का पालन करना चाहिए। बिल्ली, नीलकंठ, मेंडक, काक, नाग, चूहा आदि की हत्या का प्रायश्चित भी पशु-बध के समान कहा गया है ॥२२०॥

प्रायश्चित्तान्यथान्यानि प्रवक्ष्याम्यनुपूर्वशः ॥२२
अल्पे वाप्यथ शोचेत पृथक् संवत्सरं चरेत् ।
त्रीणि श्रोत्रियभार्यायां परदारे च द्वे स्मृते ॥२२२

काले चतुर्थे भुञ्जानो ब्रह्मचारी व्रती भवेत् ।
स्थानासनाभ्यां विहरेत् त्रिरह्नाभ्युपयन्नपः ।
एवमेव निराकर्ता यश्चाग्नीनपविध्यति ॥२२३
त्यजत्यकारणे यश्च पितरं मातरं गुरुम् ।
पतितः स्यात्सकारण्य यथा धर्मेषु निश्चयः ॥२२४

प्रासाच्छादनमात्रं तु दद्यादिति निदर्शनम् ।
(ब्रह्मचारी द्विजेभ्यश्च दत्त्वा पापात् प्रमुच्यते ।)
भार्यायां व्यभिचारिण्यां विरुद्धायां विशेषतः ।
यत् पुंसः परदारेषु तदेनां चारयेद् व्रतम् ॥२२५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अब अन्य प्रायश्चित भी क्रमशः कहता हूँ। अनजाने में कीड़े मकोड़े मर जाँय तो पश्चाताप करना चाहिये। गोवध के सिवा अन्य पापों में से प्रत्येक के लिए एक-एक वर्ष का व्रत पालन करे। क्षेत्रिय की स्त्री से समागम करने पर तीन वर्ष तथा अन्य पर स्त्रियों से व्यभिचार करने पर दो वर्ष तक ब्रह्मचर्य रखे और चौथे पहर में एक बार भोजन करे अपने लिए पृथक् आसन और स्थान की व्यवस्था कर भ्रमण शील रहे। दिन में तीन बार स्नान करे, इससे वह पाप मुक्त होता है। अग्निभ्रष्ट करने वाले को भी प्रायश्चित कहा गया है ॥२२१-२२३॥ अकारण ही पिता, माता और गुरु का परित्याग करने वाला पतित हो जाता है। उसे केवल भोजन-वस्त्र दे और पैतृक सम्पति से वंचित कर दे। वह ब्रह्मचर्य व्रत-पालन पूर्वक ब्राह्मणों को दान दे तो उस पाप से छूट जाता है—ऐसा ही शास्त्रों का विधान है॥२२४॥ यदि पत्नी व्यभिचार-कर्म में पकड़ ली गई हो तो व्यभिचार करने वाले पुरुष के लिए जो प्रायश्चित कहा है, वही उससे कराना उचित है ॥२२५॥

श्रेयांसं शयनं हित्वा यान्यं पापं निगच्छति।
श्वभिस्तामर्दयेद् राजा संस्थाने बहुविस्तरे ॥२२६
पुमांसमुन्नयेत् प्राज्ञः शयने तप्त आयसे।
अप्यादधीत दारूणि तत्र दह्येत पापकृत् ॥२२७
एष दण्डो महाराज स्त्रीणां भर्तृष्वतिक्रमात्।
संवत्सराभिशस्तस्य दुष्टस्य द्विगुणो भवेत् ॥२२८
द्वे तस्य त्रीणि वर्षाणि चत्वारि सहसेविनि।
कुचरः पञ्चवर्षाणि चरेद् भैक्ष्यं मुनिव्रतः ॥२२९
परिवित्तिः परिवेत्ता या चैव परिविद्यते।
पाणिग्रहास्त्वधर्मेण सर्वे ते पतिताः स्मृताः ॥२३०

जो अपने श्रेष्ठ पति को ाग कर अन्य पापी पुरुष के पास जात है, उस कुलटा को खुले मैदान में कुत्ते से नुचवा डाले ॥२२६॥ इसी प्रकार व्यभिचारी पुरुष को राजा लोहे की शय्या को तपा कर उस पर सुलावे और ऊपर से लकड़ी रख कर आग लगा दे, जिससे वह पापी जल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर भस्म हो जाय। पति की अवेहलना कर पर-पुरुषों से व्यभिचार करने वाली स्त्री के लिए भी यही दंड-विधान है। एक वर्ष के भीतर प्रायश्चित न करने वाले दुष्ट पुरुष को दुगुना दण्ड मिलना चाहिये। उस पतित पुरुष के संसर्ग में जो मनुष्य दो, तीन, चार, पांच आदि जितने वर्ष रहे, उतने ही वर्ष मुनियों के अनुरूप व्रत धारण कर पृथ्वी पर भ्रमण करता हुआ, भिक्षावृत्ति से जीवनोपार्जन करे ॥२२७-२२९॥ बड़े भाई का विवाह होने से पहले ही यदि छोटा भाई विवाह करले तो बड़े को 'परिविित्त' कहते हैं। छोटे भाई को 'परिवेता' और उसकी पत्नी को 'परिवेदनीया' कहते हैं। यह सभी पतित कहे गए हैं ॥२३०॥

चरेयुः सर्व एवैते वीरहा यद् व्रतं चरेत्।
चान्द्रायणं चरेन्मासं कृच्छ्रं वा पापशुद्धये ॥२३१
परिवेत्ता प्रयच्छेत तां स्नुषां परिवित्तये।
ज्येष्ठेन त्वभ्यनुज्ञातो यवीयानप्यनन्तरम्।
एवं च मोक्षमाप्नोति तौ च सा चैव धर्मतः ॥२३२
अमानुषीषु गोवर्ज्यमनावृष्टिर्न दुष्यति।
अधिष्ठात्रवमन्तारं पशूनां पुरुषं विदुः ॥२३३
परिधायोर्ध्ववाल तु पात्रमादाय मृन्मयम्।
चरेत् सप्तगृहान्नित्यं स्वकर्म परिकीर्तयन् ॥२३४
तत्रैव लब्धभोजी स्याद् द्वादशाहात्स शुद्ध्यति।
चरेत् संवत्सरं चापि तद् व्रतं येन कृन्तति ॥२३५

यह तीनों ही पृथक्-पृथक् अपनी शुद्धि के लिए उसी व्रत का आचरण करें जो यज्ञहीन ब्राह्मण के लिए कहा गया है। अथवा उसे एक मास तक चान्द्रायण या कृच्छ्र चान्द्रायण व्रत करना चाहिए ॥२३१॥ परिवेत्ता अपनी उस नववधू को पतोहू के रूप में अपने बड़े भाई को सौंपे तथा उसकी आज्ञा मिलने पर ही पत्नी रूप में ग्रहण करे। ऐसा करके वे तीनों ही पाप मुक्त हो जाते हैं ॥२३२॥ पशुओं में गौ के अतिरिक्त यदि किसी की अनजाने हत्या हो जाय तो वह पाप नहीं मानी जाती, क्योंकि मनुष्य को पशुओं का अधिष्ठाता और पालक कहा गया है ॥२३३॥ गो-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हत्यारे को उस गाय की पूँछ को इस प्रकार पकड़ना चाहिए कि उसका बाल ऊपर की ओर रहे। फिर फिर मिट्टी का पात्र लेकर प्रतिदिन सात घरों में भिक्षा माँगता हुआ अपने अपराध-कर्म को लोगों को सुनाता रहे उन सात घरों की भिक्षा से प्राप्त अन्न को ही खाकर रहे तो बारह दिनों में ही शुद्ध हो जाता है। अधिक पाप होने पर उस व्रत का एक वर्ष तक अनुष्ठान करके वह अपने पाप को नष्ट कर डालता है ॥२३४-२३५॥

भवेत्तु मानृषेष्वेवं प्रायश्चित्तमनुत्तमम् ।
दानं वा दानशक्तेषु सर्वमेतत् प्रकल्पयेत् ॥२३६
अनास्तिकेषु गोमात्रं दानमेकं प्रचक्षते ।
श्ववराहमनुष्याणां कुक्कुटस्य खरस्य च ॥
मांसं मूत्रं पुरीषं च प्राश्य संस्कारमर्हति ॥२३७

ब्राह्मणस्तु सुरापस्य गन्धमादाय सोमपः ॥२३८
अपस्त्र्यहं पिवेदुष्णं त्र्यहमुष्णं पयः पिबेत् ।
त्र्यहमुष्णं पयः पीत्वा वायुभक्षोभवेत्त्र्यहम् ॥२३९
एवमेतत् समुद्दिष्टं प्रायश्चित्तं सनातनम् ।
ब्राह्मणस्य विशेषेण यदज्ञानेन सम्भवेत् ॥२४०

इस प्रकार मनुष्यों के लिये परम श्रेष्ठ प्रायश्चित निश्चित किया गया है। कुत्ता, शूकर, मनुष्य, मुर्गा, और गधे का मांस अथवा मलमूत्र भक्षण कर लेने पर द्विज का संस्कार पुनः करना चाहिए ॥२३६-२३७॥ सोम-पायी ब्राह्मण यदि शराबी की गंध सूँघ ले तो उसे तीन दिन तक गरम जल पीकर रहना चाहिए। फिर तीन दिन तक दूध पान करे और फिर तीन दिन केवल वायु पीकर ही रहे तो शुद्ध हो जाता है ॥२३८-२३९॥ इस प्रकार यह सनातन प्रायश्चित्त सब के लिए कहा है। ब्राह्मण के लिए इसका विशेष रूप से विधान किया गया है। अनजाने में बन जाने वाले पाप के लिए ही प्रायश्चित्त होता है ॥२४०॥

कथान्तरमथासाद्य खड्गयुद्धविशारदः ।
नकुलः शरतल्पस्थमिदमाह पितामहम् ॥२४१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धनुः प्रहरणं श्रेष्ठमतीवात्र पितामह ।
मतस्तु मम धर्मज्ञ खड्ग एव सुसंशितः ॥२४२
विशीर्णे कार्मुके राजन् प्रक्षीणेषु च वाजिषु ।
खड्गेन शक्यते युद्धे साध्वात्मा परिरक्षितुम् ॥२४३
शरासनधरांश्चैव गदाशक्तिधरांस्तथा ।
एकः खड्गधरो वीरः समर्थः प्रतिबाधितुम् ॥२४४
अत्र मे संशयश्चैव कौतूहलमतीव च ।
किंस्वित् प्रहरणं श्रेष्ठं सर्वयुद्धेषु पार्थिव ॥२४५

वैशम्पायन बोले—जनमेजय ! कथा प्रसंग समाप्त होने को था, तभी अवसर पाकर नकुल ने बाण शय्या पर शयन करते हुए पितामह से पूछा ॥२४१॥ नकुल बोले—हे धर्मज्ञ पितामह ! यद्यपि विश्व में धनुष को अत्युत्तम माना गया है, किन्तु मुझे तो तीक्ष्ण खड्ग ही श्रेष्ठ लगता है ॥२४२॥ जब धनुष टूट जाता और घोड़े नष्ट हो जाते हैं, उस स्थिति में भी रणक्षेत्र में खड्ग के द्वारा अपने देह की भले प्रकार रक्षा की जासकती है ॥२४३॥ खड्ग धारण करने वाला एक वीर ही धनुष, गदा एवं शक्ति धारण करने वाले अनेकों योद्धाओं को बाधा दे सकता है ॥२४४॥ इस संबंध में मेरे मन में अत्यन्त कौतूहल और संशय है कि सम्पूर्ण युग में कौन-सा आयुध उत्तम है ॥२४५॥

कथं चोत्पादितःखड्गः कस्मै चार्थाय केन च ।
पूर्वाचार्यं च खड्गस्य प्रब्रूहि प्रपितामह ॥२४६
तस्य तद् वचनं श्रुत्वा माद्रीपुत्रस्य धीमतः ।
स तु कौशलसंयुक्तं सूक्ष्मचित्रार्थसम्मतम् ॥२४७
ततस्यस्योत्तरं वाक्यं स्वरवर्णोपपादितम् ।
शिक्षया चोपपन्नाय द्रोणशिष्याय भारतः ॥२४८
उवाच स तु धर्मज्ञो धनुर्वेदस्य पारगः ।
शरतल्पगतो भीष्मो नकुलाय महात्मने ॥२४९
तत्त्वं शृणुष्व माद्रेय यदेतत् परिपृच्छसि ।
प्रबोधितोऽस्मि भवता धातुमानिव पर्वतः ॥२५०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पितामह ! खड्ग किस प्रकार और किस प्रयोजन के लिए उत्पन्न हुआ है ? किसने इसे उत्पन्न किया ? खड्ग युद्ध का प्रथम आचार्य कौन था ? यह सब मेरे प्रति कहें ॥२४६॥ वैशम्पायनजी बोले—जनमेजय ! माद्रीपुत्र नकुल की यह वाक् चतुरता युक्त तो थी ही, किन्तु सूक्ष्म और विचित्र अर्थ वाली भी थी । उसे सुनकर धनुर्वेद पारंगत धर्मज्ञ भीष्म ने द्रोणशिष्य नकुल को सुन्दर स्वर और वर्णों वाली वाणी में इस प्रकार उत्तर देना प्रारम्भ किया ॥२४७-२४९॥भीष्मजी बोले—माद्रीनन्दन ! तुम अपने प्रश्न का तत्व सुनो । मैं तो रक्त से लथपथ हुआ गेरू से रँगे पर्वत के समान पड़ा हुआ था, किन्तु तुमने इस प्रश्न से मुझे जगा दिया है ॥२५०॥

सलिलैकार्णवं तात पुरा सर्वमभूदिदम् ।
निष्प्रकम्पमनाकाशमनिर्देश्यमहीतलम् ॥२५१
तमसाऽऽवृतमस्पर्शमतिगम्भीरदर्शनम् ।
निःशब्दं चाप्रमेयं च तत्र जज्ञे पितामहः ॥२५२
सोऽसृजद् वातमग्निं च भास्करं चापि वीर्यवान् ।
आकाशमसृजच्चोर्ध्वमधो भूमिं च नैर्ऋतीम् ॥२५३
नभः सचन्द्रतारं च नक्षत्राणि ग्रहांस्तथा ।
संवत्सरानृतून् मासान् पक्षानथलवान्क्षणान् ॥२५४
ततः शरीरं लोकस्थं स्थापयित्वा पितामहः ।
जनयामास भगवान् पुत्रानुत्तमतेजसः ॥२५५

प्राचीन काल में यह सम्पूर्ण विश्व जल के महासागर के रूप में था उस समय इसमें कम्पन नहीं था । आकाश कहीं न था और पृथ्वी जैसी भी कोई वस्तु न थी ॥२५१॥ सब कुछ अन्धकार से ढका था । शब्द और स्पर्श का भी अनुभव नहीं हो रहा था । वह एकार्णव अत्यन्त गंभीर एवं सीमा-रहित था । उसी में पितामह ब्रह्माजी प्रकट हुए ॥२५२॥ उन शक्तिवंत ब्रह्माजी ने वायु, अग्नि और सूर्य की रचना की । आकाश, ऊपर, नीचे, पृथ्वी तथा राक्षसों को उत्पन्न किया ॥२५३॥ चन्द्रमा और तारागण युक्त व्योम, नक्षत्र, ग्रह, संवत्सर, ऋतु, मास,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पक्ष,लव और राक्षसों को भी उन्होंने बनाया ॥२५४॥ फिर भगवान् ब्रह्मा ने लौकिक शरीर धारण कर मुनिश्रेष्ठ मरीचि, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वशिष्ठ, अंगिरा तथा स्वभाव और ऐश्वर्य से युक्त रुद्र—इन तेजस्वी पुत्रों की सृष्टि की ॥२५५-२५६॥

मरीचिमृषिमात्रिं च पुलस्त्यं पुलहं क्रतुम् ।
वसिष्ठाङ्गिरसौ चोभौ रुद्रं च प्रभुमीश्वरम् ॥२५६
प्राचेतसस्तथा दक्षः कन्याषष्टिमजीजनत् ।
ता वै ब्रह्मर्षयः सर्वाः प्रजार्थं प्रतिपेदिरे ॥२५७
ताभ्यो विश्वानि भूतानि देवाः पितृगणास्तथा ।
गन्धर्वाप्सरसश्चैव रक्षांसि विविधानि च ॥२५८
पतत्रिमृगमीनाश्च प्लवङ्गाश्च महोरगाः ।
तथा पक्षिगणाः सर्वे जलस्थलविचारिणः ॥२५९
उद्भिदः स्वेदजाश्चैव साण्डजाश्च जरायुजाः ।
जज्ञे तात जगत् सर्वं तथा स्थावरजङ्गमम् ॥२६०

प्रचेताओं के पुत्र दक्ष ने साठ कन्याएँ उत्पन्न की, जिन्हें प्रजोत्पत्ति के निमित्त ब्रह्मर्षियों ने पत्नी रूप में ग्रहण किया ॥२५७॥ उन्हीं कन्याओं से सभी प्राणी, देवता,पितर, गंधर्व, अप्सरा,राक्षस, पशु, पक्षी, मत्स्य, वानर, नाग, जल और थल में विचरण करने वाले सब प्रकार के पक्षिगण उद्भिज्ज, स्वेदज, अण्डज और जरायुज प्राणियों की उत्पत्ति हुई। इस प्रकार सम्पूर्ण स्थावर-जंगम जगत उत्पन्न हुआ ॥२५८-२६०॥

भूतसर्गमिमं कृत्वा सर्वलोकपितामहः ।
शाश्वतं वेदपठितं धर्मं प्रयुयुजे ततः ॥२६१
तस्मिन् धर्मे स्थिता देवाः सहाचार्यपुरोहिताः ।
आदित्या वसवो रुद्राः ससाध्या मरुदश्विनः ॥२६२
भृग्वत्र्यङ्गिरसः सिद्धाः काश्यपाश्च तपोधनाः ।
वसिष्ठगौतमागस्त्यास्तथा नारदपर्वतौ ॥२६३
ऋषयो वालखिल्याश्च प्रभासाः सिकतास्तथा ।
घृतपाः सोमपायव्या वह्यानरमरीचिपाः ॥२६४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अकृष्टाश्चैव हंसाश्च ऋषयो वाग्नियोनयः ।
वानप्रस्थाः पृश्नयश्च स्थिता ब्रह्मानुशासने ॥२६५

सब लोकों के पितामह ब्रह्मा ने इन सभी प्राणियों की सृष्टि करके उनके ऊपर वेदोक्त सनातन धर्म के पालन का कार्य सौंपा ॥२६१॥ आचार्यों और पुरोहितों सहित देवता, आदित्य वसुगण, रुद्रगण, साध्यगण मरुद्गण और अश्विनीकुमार—यह सभी उस सनातन धर्म में दीक्षित हुए ॥२६२॥ भृगु, अत्रि और अंगिरा, काश्यपगण, वशिष्ठ, गौतम, अगस्त्य, नारद, पर्वत, बालखिल्य ऋषि, प्रभास, घृतप, सोमप, वायव्य, मरीचिप, वैश्वानर, अकृष्ट, हंसमुनि अग्नि से उत्पन्न ऋषिगण, वानप्रस्थ और पृश्निगण—यह सभी ब्रह्माजी आज्ञा के अनुवर्ती रह कर सनातन-धर्म का आचरण करने लगे ॥२६३--२६५॥

दानवेन्द्रास्त्वतिक्रम्य तत् पितामहशासनम् ।
धर्मस्यापचयं चक्रुः क्रोधलोभसमन्विताः ॥२६६
हिरण्यकशिपुश्चैव हिरण्याक्षो विरोचनः ।
शम्बरो विप्रचित्तिश्च विराधो नमुचिर्बलिः ॥२६७
एते चान्ये च बहवः सगणा दैत्यदानवाः ।
धर्मसेतुमतिक्रम्य रेमिरेऽधर्मनिश्चयाः ।।२६८
सर्वे तुल्याभिजातीया यथा देवास्तथा वयम् ।
इत्येवं धर्ममास्थाय स्पर्धमानाः सुरर्षिभिः ॥२६९
न प्रियं नाप्यनुकोशं चक्रुर्भूतेषु भारत ।
त्रीनुपायानतिक्रम्य दण्डेन रुरुधुः प्रजाः ॥२७०

इसके विपरीत दानवों के अधिपतियों ने लोभ-प्रवृत्ति के वशीभूत हो ब्रह्माजी के आदेश से विपरीत मार्ग ग्रहण किया ॥२६६॥ हिरण्यकशिपु हिरण्याक्ष, विरोचन, शम्बर, विप्रचित्ति, विराध, नमुचि और बलि—ये तथा अन्य अनेक दैत्य-दानव अपने दल के साथ धर्मकी मर्यादा को लाँघ कर, पाप कर्म करने का निश्चय करके आमोद-प्रमोद में लग गए ॥२६७-२६८॥ वे सब दैत्य कहते थे कि हम और देवगण एक ही जाति के हैं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसलिए देवताओं में और हम में कोई अन्तर नहीं है। इस प्रकार जातीय धर्म के आश्रय में वे देवर्षियों से स्पर्धा करने लगे ॥२६९॥ वे प्राणियों का प्रिय नहीं करते थे, न दया-भाव ही रखते थे। उन्होंने साम, दाम, भेद रूपी उपायों को त्याग कर केवल दण्ड द्वारा ही प्रजा पीडन प्रारम्भ किया ॥२७०॥

न जग्मुःसंविदं तैश्च दर्पादसुरसत्तमाः।
अथ वै भगवान् ब्रह्मा ब्रह्मर्षिभिरुपस्थितः ॥२७१

तदा हिमवतः शृङ्गे सुरम्ये पद्मतारके।
शतयौजनविस्तारे मणिरत्नचयाचिते ॥२७२
तस्मिन् गिरिवरे पुत्र पुष्पितद्रुमकानने।
तस्थौ स विबुधश्रेष्ठो ब्रह्मा लोकार्थसिद्धये ॥२७३
ततो वर्षसहस्रान्ते वितानमकरोत् प्रभुः।
विधिना कल्पदृष्टेन यथावच्चोपपादितम् ॥२७४

ऋषिभिर्यज्ञपटुभिर्यथावत् कर्मकर्तृभिः।
समिद्भिः परिसंकीर्णं दीप्यमानैश्च पावकैः ॥२७५
काञ्चनैर्यज्ञभाण्डैश्च भ्राजिष्णुभिरलंकृतम्।
वृतं देवगणैश्चैव प्रवरैर्यज्ञमण्डलम् ॥२७६

वे घमण्ड के कारण प्रजाओं से बात नहीं करते थे। फिर ब्रह्माजी ब्रह्मर्षियों के सहित हिमालय की शिखर पर गये। वह इतना ऊँचा था कि उस पर तारे खिले हुए कमल जैसे लगते थे। उसका विस्तार सौ योजन का था और वह मणि-रत्नों से परिपूर्ण था ॥२७१-२७२॥ वहाँ के वृक्ष पुष्पों से परिपूर्ण थे। उस श्रेष्ठ पर्वतशिखर पर सम्पूर्ण विश्व की कार्य सिद्धि के लिए ब्रह्माजी ने निवास किया ॥२७३॥ कई हजार वर्ष बीत जाने पर ब्रह्माजी ने वहाँ शास्त्रोक्त विधि से एक यज्ञ का आरम्भ किया। यज्ञ में पारंगत महर्षियों और कार्यकर्त्ताओं ने विधिवत् उस यज्ञ का सम्पादन किया। यज्ञ वेदियों पर समिधाएँ बिखरी हुई थीं। स्थान-स्थान पर अग्नि प्रज्वलित थी। सुवर्ण के चमचमाते हुए यज्ञपात्र

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञ मण्डप को सुशोभित कर रहे थे। यज्ञ मण्डप श्रेष्ठ देवताओं और सभासद बने महर्षियों से शोभायमान था ॥२७४--२७६॥

तथा ब्रह्मर्षिभिश्चैव सदस्यैरुपशोभितम् ।
तत्र घोरतमं वृत्तमृषीणां मे परिश्रुतम् ॥२७७
चन्द्रमा विमलं व्योम तथाभ्युदिततारकम् ।
विकीर्याग्निं तथा भूतमुत्थितं श्रूयते तदा ॥२७८
नीलोत्पलसवर्णाभं तीक्ष्णदंष्ट्रं कृशोदरम् ।
प्रांशुं सुदुर्धर्षतरं तथैव ह्यमितौजसम् ॥२७९
तस्मिन्नुत्पतमाने च प्रचचाल वसुन्धरा ।
महोर्मिकलितावर्तश्चुक्षुभे स महोदधिः ॥२८०

उस अवसर पर वहाँ एक अत्यन्त भयङ्कर घटना हुई, जिससे मैंने ऋषियों से सुना था। जैसे ताराओं के प्रकट होने पर स्वच्छ आकाश में चन्द्रोदय होता है, वैसे ही उस यज्ञ मण्डप में अग्नि को इधर उधर बिखेर कर एक भयङ्कर भूत उपस्थित हो गया ॥२७७--२७८॥ उसका रङ्ग नीलकमल के समान श्याम, दाढें अत्यन्त तीक्ष्ण और पेट अत्यन्त कृश था। वह अत्यन्त ऊँचा, घोर दुर्धर्ष और महान् तेजस्वी लगता था ॥२७९॥ उसके प्रकट होते ही पृथिवी काँपने लगी, समुद्र क्षुब्ध हो गया, उसमें उत्ताल तरंगें और भँवरें उठने लगीं ॥२८०॥

पेतुरुल्का महोत्पाताः शाखाश्च मुमुचुर्द्रुमाः ।
अप्रशान्ता दिशः सर्वाः पवनश्चाशिवो ववौ ॥२८१
मुहुर्मुहुश्च भूतानि प्राव्यथन्त भयात् तथा ।
ततः स तुमुलं दृष्ट्वा तं च भूतमुपस्थितम् ॥२८२
महर्षिसुरगन्धर्वानुवाचेदं पितामहः ।
मयैवं चिन्तितं भूतमसिर्नामैष वीर्यवान् ।
रक्षणार्थाय लोकस्य वधाय च सुरद्विषाम् ॥२८३
ततस्तद्रूपमुत्सृज्य बभौ निस्त्रिंश एव सः ।
विमलस्तीक्ष्णधारश्च कालान्तक इवोद्यतः ॥२८४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ततः स शितिकण्ठाय रुद्रायार्षभकेतवे ।
ब्रह्मा ददावसिं तीक्ष्णमधर्मप्रतिवारणम् ॥२८५

आकाश से उल्कायें गिरने लगीं, अनेक उत्पात होने लगे, वृक्ष अपनी शाखाओं को स्वयं गिराने लगे, सभी दिशाएँ अशान्त हो उठीं और अमङ्गलकारी वायु ने प्रचण्ड रूप धारण कर लिया ॥२८१॥ सभी प्राणी भय से व्याकुल हो गये। उस भयङ्कर भूत को देख कर ब्रह्माजी ने महर्षियों, देवताओं और गंधर्वों से कहा ॥२८२॥ इस भूत का चिन्तन मैंने ही किया था। यह असि नामक प्रबल आयुध है। सम्पूर्ण विश्व की रक्षा और देवताओं के बैरी राक्षसों को मारने के लिये इसे मैंने प्रकट किया है ॥२८३॥ फिर वह भूत उस रूप को छोड़ कर तीस अंगुल से कुछ बड़े खड्ग के रूप में हो गया। उसकी धार अत्यन्त तीक्ष्ण थी। वह चमचमाता हुआ खड्ग काल और अन्तक के समान उद्यत दिखाई देता था ॥२८४॥ फिर ब्रह्माजी ने अधर्म को नष्ट करने वाला वह तीक्ष्ण खड्ग वृषभचिह्न से युक्त ध्वजा वाले नीलकण्ठ रुद्र को प्रदान की ॥२८५॥

ततः स भगवान् रुद्रो महर्षिजनसंस्तुतः ॥२८६
प्रगृह्यासिममेयात्मा रूपमन्यच्चकार ह ।
चतुर्बाहुः स्पृशन् मूर्ध्ना भूस्थितोऽपि दिवाकरम् ॥२८७
ऊर्ध्वदृष्टिर्महालिङ्गो मुखाज्ज्वालाः समुत्सृजन् ।
विकुर्वन् बहुधा वर्णान् नीलपाण्डुरलोहितान् ॥२८८
बिभ्रत्कृष्णाजिनं बासो हेमप्रवरतारकम् ।
नेत्रं चैकं ललाटेन भास्करप्रतिमं वहन् ॥
शुशुभातेऽतिविमले द्वे नेत्रे कृष्णपिङ्गले ॥२८९
ततो देवो महादेवः शूलपाणिर्भगाक्षिदा ।
सम्प्रगृह्य तु निस्त्रिंशं कालाग्निसमवर्चसम् ॥२९०
त्रिकूटं चर्म चोद्यम्य सविद्युतमिवाम्बुदम् ।
चचार विविधान् मार्गान् महाबलपराक्रमः ।
विधुन्वन्नसिमाकाशे तथा युद्धचिकीर्षया ॥२९१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस समय रुद्र देवता की महर्षियों ने प्रशंसा की। तब अप्रमेय स्वरूप रुद्र ने खड्ग लेकर एक अन्य चतुर्भुज रूप धारण किया, जो पृथिवी पर खड़ा होकर भी अपने मस्तक से सूर्य को स्पर्श कर रहा था ॥२८६-२८७॥ उसकी दृष्टि ऊपर की ओर थी, वह महान चिह्न धारण किये था। उसके मुख से अग्नि की लपटें निकल रही थीं और अङ्गों से नीला, श्वेत तथा लाल–अनेक रङ्ग प्रकट हो रहे थे ॥२८८॥ उसने काला मृगचर्म धारण किया हुआ था, जिसमें सुवर्ण से बने तार जड़े थे। उसके ललाट में सूर्य के समान एक तेजस्वी नेत्र था। काले और पिंगल रङ्ग के दो स्वच्छ नेत्र भी सुशोभित थे ॥२८९॥ फिर भगदेवता के नेत्रों को नष्ट करने वाले महान् बली और पराक्रमी शूलपाणि शङ्कर काल और अग्नि के समान तेजोमय खड्ग को विद्युतमय मेघ के समान चमकती हुई त्रिकोण ढाल को हाथ में लेकर मार्गों में विचरण करने लगे और युद्ध की इच्छा से खड्ग को आकाश में घुमाने लगे ॥२९०-२९१॥

तस्य नादं विनदतो महाहासं च मुञ्चतः।
बभौ प्रतिभयं रूपं तदा रुद्रस्य भारत ॥२९२
तद्रूपधारिणं रुद्रं रौद्रकर्मचिकीर्षया।
विशम्य दानवाः सर्वे हृष्टाः समभिदुद्रुवुः ॥२९३
अश्मभिश्चाभ्यवर्षन्त प्रदीप्तैश्च तथोल्मुकैः।
घोरैः प्रहरणैश्चान्यैः क्षुरधारैरयोमयैः ॥२९४
ततस्तु दानवानीकं सम्प्रणेतारमच्युतम्।
रुद्रं दृष्ट्वा बलोद्भूतं प्रमुमोह चचाल च ॥२९५

उस समय जोर से गर्जन और अत्यन्त अट्टहास करते हुये रुद्रदेव का स्वरूप अत्यन्त भयङ्कर जान पड़ता था ॥२९२॥ भयानक कर्म की इच्छा से उसी के अनुरूप वेश धारण करने वाले रुद्रदेव को देखकर सभी दानव हर्ष और उत्साह पूर्वक उनके ऊपर टूट पड़े ॥२९३॥ कुछ लोग पत्थर फेंकने लगे, कुछ अङ्गार बरसाने लगे, कुछ भयङ्कर शस्त्रास्त्रों का प्रयोग करने लगे और कितने ही लोहे से बने छुरों की तीक्ष्ण धारों से चोट करने लगे ॥२९४॥ फिर दानवों ने देवताओं के सेनाध्यक्ष रूप रुद्रदेव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को युद्ध से पीछे हटते हुये नहीं देखा तो वे विचलित और मोहित हो गए ॥२६५॥

चित्रं शीघ्रपदत्वाच्च चरन्तमसिपाणिनम् ।
तमेकमसुराः सर्वे सहस्रमिति मेनिरे ॥२६६
छिन्दन् भिन्दन् रुजन् कृन्तन्दारयन्पोथयन्नपि ।
अचरद् वैरिसङ्घेषु दावाग्निरिव कक्षगः ॥२६७
असिवेगप्रभग्नास्ते छिन्नबाहूरुवक्षसः ।
सम्प्रकीर्णान्त्रिगात्राश्च तेतुरुर्व्यां महाबलाः ॥२६८
अपरे दानवा भग्नाः खड्गपातावपीडिताः ।
अन्योन्यमभिनर्दन्तो दिशः सम्प्रतिपेदिरे ॥२६९
भूमिं केचित् प्रविविशुः पर्वतानपरे तथा ।
अपरे जग्मुराकाशमपरेऽम्भः समाविशन् ॥३००

तब शीघ्रता से पाँव उठाने के कारण विचित्र गति वाले एक मात्र खण्डधारी रुद्रदेव को वे असुर सहस्रों के समान मानने लगे ॥२६६॥ जैसे शुष्क काष्ठ और तृणादि में लगा हुआ दावानल वन के सभी वृक्षों को भस्म कर डालता है, वैसे ही शत्रु समुदाय में दैत्यों को मारते, काटते, चीरते, घायल करते और पृथिवी पर गिराते हुये रुद्रदेव विचरण करने लगे ॥२६७॥ खड्ग के वेग से दैत्यों में भगदड़ मच गयी । कितनों ही की भुजाएँ और जाँघें कट कर गिर गयीं । अनेकों के हृदय विदीर्ण हो गये अनेकों की आँतें बाहर निकल आईं । इस प्रकार महान् बलशाली दैत्य धराशायी हो गए ॥२६८॥अन्त में दानवगण खड्ग की चोट से पीड़ित हो मैदान छोड़ गये । परस्पर डाँट-डपट करते हुये वे सभी दिशाओं में भाग गये ॥२६९॥ अनेक दानव पृथिवी में घुस गये, अनेकों पर्वतों में जा छिपे, बहुत से आकाश में उड़ चले और अनेकों ने जल में ही शरण ली ॥३००॥

तस्मिन् महति संवृत्ते समरे भृशदारुणे ।
बभूव भूः प्रतिभया मांसशोणितकर्दमा ॥३०१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दानवानां शरीरैश्च पतितैः शोणितोक्षितैः ।
समाकीर्णा महाबाहो शैलैरिव सकिंशुकैः ॥३०२
सरुद्रोदानवान् हत्वा कृत्वा धर्मोत्तरं जगत् ।
रौद्रं रूपमथोत्क्षिप्य चक्रे रूपं शिवं शिवः ॥३०३
ततो महर्षयः सर्वे सर्वे देवगणास्तथा ।
जयेनाद्भुतकल्पेन देवदेवं तथार्चयन् ॥३०४
ततः स भगवान् रुद्रो दानवक्षतजोक्षितम् ।
असिं धर्मस्य गोप्तारं ददौ सत्कृत्य विष्णवे ॥३०५

अत्यन्त घोर युद्ध होने के कारण पृथिवी पर मांस और रक्त की कीच हो गई, इस कारण वह अत्यन्त भयङ्कर लगने लगी ॥३०१॥ रक्त से लथपथ हुये दानव-देहों से ढकी हुई यह पृथिवी पलाश के फूलों से सम्पन्न पर्वत शिखरों से आच्छादित हुई लगती थी ॥३०२॥ दानवों का संहार कर संसार में धर्म की स्थापना कर रुद्रदेव ने अपने रौद्ररूप का त्याग कर दिया और कल्याण करने वाले वे शिव अपने मंगलमय रूप में शोभा पाने लगे ॥३०३॥ फिर सभी महर्षियों और देवताओं ने उस विचित्र विजय से सन्तुष्ट होकर देवाधिदेव शङ्कर का पूजन किया ॥३०४॥ फिर भगवान शङ्कर ने दानवों के रक्त से रञ्जित उस धर्म रक्षक खड्ग को अत्यन्त सत्कार सहित भगवान् विष्णु के हाथ में दिया ॥३०५॥

विष्णुर्मरीचये प्रादान्मरीचिर्भगवानपि ।
महर्षिभ्यो ददौ खड्गमृषयो वासवाय च ॥३०६
महेन्द्रो लोकपालेभ्यो लोकपालास्तु पुत्रक ।
मनवे सूर्यपुत्राय ददुः खड्गं सुविस्तरम् ॥३०७
ऊचुश्चैनं तथा वाक्यं मानुषाणां त्वमीश्वरः ।
असिना धर्मगर्भेण पालयस्व प्रजा इति ॥३०८
धर्मसेतुमतिक्रान्ताः स्थूलसूक्ष्मात्मकारणात् ।
विभज्य दण्डं रक्ष्यास्तु धर्मतो न यदृच्छया ॥३०९
दुर्वाचा निग्रहो दण्डो हिरण्यबहुलस्तथा ॥३१०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यङ्गता च शरीरस्य वधो वानल्पकारणात् ।
असेरेतानि रूपाणि दुर्वारादीनि निर्दिशेत् ।।३११

भगवान् विष्णु ने वह खड्ग मरीचि को दिया । मरीचि ने महर्षियों को और महर्षियों ने वह इन्द्र को दे दिया ।।३०६।। फिर वह विशाल खड्ग इन्द्र ने लोकपालों को और लोकपालों ने सूर्यपुत्र मनु को दे दिया ।।३०७।। खड्ग देखकर मनु से उन्होंने कहा कि 'तुम मनुष्यों के शासक हो, अतः इस धर्मगर्भित खड्ग के द्वारा प्रजापालन में तत्पर रहो ।।३०८।। जो व्यक्ति स्थूल या सूक्ष्म शरीर के सुख के लिये धर्म की मर्यादा को लाघें, उन्हें न्यायपूर्वक पृथक्-पृथक् दण्ड देते हुये, धर्मपूर्वक प्रजा की रक्षा करना । किसी के प्रति स्वेच्छाचार का प्रयोग न करना । कटु वचन से अपराधी का दमन 'वाग्दण्ड' है । अपराधी से धन वसूल करना 'अर्थ-दण्ड' है । देह के किसी अङ्ग का काटना 'कायदण्ड' है । किसी घोर अपराध के कारण वध करना 'प्राणदण्ड' है । यह चारों प्रकार के दण्ड तलबार के दुर्निवार या दुर्धर्षरूप हैं । यह बात समस्त प्रजा में घोषित कर देनी चाहिये ।।३०९-३११।।

असेरेवं प्रमाणानि परिपाल्य व्यतिक्रमात् ।
स विसृज्यथ पुत्रं स्वं प्रजानामधिपं ततः ।।३१२
मनुः प्रजानां रक्षार्थं क्षुपाय प्रददावसिम् ।
क्षुपाज्जग्राह चेक्ष्वाकुरिक्ष्वाकोश्च पुरूरवाः ।।३१३
आयुश्च तस्माल्लेभे तं नहुषश्च ततो भुवि ।
ययातिर्नहुषाच्चापि पूरुस्तस्माच्च लब्धवान् ।।३१४
अमूर्तरयसस्तस्मात्ततो भूमिशयो नृपः ।
भरतश्चापि दौष्यन्तिर्लेभे भूमिशयादसिम् ।।३१५

प्रजा के द्वारा धर्मोल्लंघन होने पर खड्ग द्वारा प्रमाणित होने वाले इन दण्डों का यथायोग्य प्रयोग करना चाहिये, जिससे धर्म की रक्षा हो सके । यह कह कर लोकपालों ने अपने पुत्र मनु को विदा किया । फिर मनु ने वह खड्ग प्रजा-रक्षणार्थ क्षुप को दे दिया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्षुप से इक्ष्वाकु ने और इक्ष्वाकु से पुरूरवा ने उसे प्राप्त किया ।।३१२-३१३।। पुरूरवा से आयु ने, आयु से नहुष ने, नहुष से ययाति ने तथा ययाति से पूरु ने वह खड्ग ग्रहण किया ।।३१४।। पुरु से अमूर्तरया ने उस खड्ग को पाया । अमूर्तरया से राजा भूमिशय ने और भूमिशय से दुष्यन्तपुत्र भरत ने उसे प्राप्त किया ।।३१५।।

तस्माल्लेभे च धर्मज्ञो राजन्नैलविलस्तथा ।
ततस्त्वैलविलाल्लेभे धुन्धुमारो नरेश्वरः ।।३१६
धुन्धुमाराच्च काम्बोजो मुचुकुन्दस्ततोऽलभत् ।
मुचुकुन्दान्मरुत्तश्च मरुत्तादपि रैवतः ।।३१७
रैवताद् युवनाश्वश्च युवनाश्वात्ततो रघुः ।
इक्ष्वाकुवंशजस्तस्माद्धरिणाश्वः प्रतापवान् ।।३१८

हरिणाश्वादसि लेभे शुनकः शुनकादपि ।
उशीनरो वैधर्मात्मा तस्माद् भोजः स यादवः ।। १९
यदुभ्यश्च शिबिर्लेभे शिबेश्चापि प्रतर्दनः ।
प्रतर्दनादष्टकश्च पृषदश्वोऽष्टकादपि ।।३२०

राजन् ! भरत से ऐलबिल ने वह खड्ग प्राप्त किया । ऐलबिल से महान् धुन्धुमार को वह खड्ग प्राप्त हुआ ।।३१६।। धुन्धुमार से कम्बोज और कम्बोज से मुचकुन्द ने वह खड्ग पाया मुचकुन्द से मरुत्त ने और मरुत्त से रैवत ने प्राप्त किया ।।३१ ।। रैवत से युवनाश्व ने, उससे इक्ष्वाकुवंशी रघु ने, रघु हरिणाश्व ने, हरिणाश्व से शुनक ने, शुनक से उशीनर ने, उशीनर से यदुवंशी राजा भोज ने उस तलवार को प्राप्त किया ।।३१८-३१९।। भोज से शिव ने शिब से प्रतर्दन ने, प्रतर्दन से अष्टक ने और अष्टक से पृषदश्व ने उस खड्ग को पाया ।।३२०।।

पृषदश्वाद् भरद्वाजो द्रोणस्तस्मात् कृपस्ततः ।
ततस्त्वं भ्रातृभिः सार्धं परमासिमवाप्तवान् ।।३२१
कृत्तिकास्तस्य नक्षत्रमग्निश्च दैवतम् ।
रोहिणी गोत्रमस्याथ रुद्रश्च गुरुरुत्तमः ।।३२२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

असेरष्टौ हि नामानि रहस्यानि निबोध मे ।
पाण्डवेय सदा यानि कीर्तयन् लभते जयम् ।।३२३

असिर्विशसनः खड्गस्तीक्ष्णधारो दुरासदः ।
श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मपालस्तथैव च ।।
अग्रच प्रहरणानां च खड्गो माद्रवतीसुत ।
महेश्वरप्रणीतश्च पुराणे निश्चयं गतः ।
(एतानि चैव नामानि पुराणे निश्चितानि वै ।)।।३२४-३२८
प्रथुस्तूत्पादयामास धनुराद्यमरिंदमः ।
इति प्रमाणं ऋषिं प्रोक्तं असि सर्वत्र पूजयेत् ।।३२९

पृषदश्व से भरद्वाजवंशी द्रोणाचार्य को वह तलवार मिली । द्रोणाचार्य से कृपाचार्य ने प्राप्त की । कृपाचार्य से भाइयों सहित तुमने उस खड्ग विद्या को प्राप्त किया ।।३२१।। उस तलवार का नक्षत्र कृत्तिका है, देवता अग्नि, गोत्र रोहिणी और श्रेष्ठ गुरु रुद्रदेव हैं ।।३२२।। हे पाण्डव ! इसके आठ गोपनीय नाम हैं, तुम उन्हें मुझसे सुनो, उन नामों का कीर्तन करने वाले को युद्ध में विजय प्राप्त होती है ।।३२३।। असि, विशासन, खड्ग, तीक्ष्णधार, दुरासद, श्रीगर्भ, विजय और धर्मपाल—यह आठ नाम हैं ।। २४।। माद्रीपुत्र ! खड्ग सभी आयुधों में उत्तम है । भगवान् रुद्र ने ही सर्वप्रथम इसका प्रयोग किया था । पुराण में इसका श्रेष्ठत्व निर्णीत है । इसके उपरोक्त सभी नाम पुराणों में कहे गये हैं शत्रु संहारक राजा पृथु ने सर्व प्रथम धनुष की रचना की और उन्हीं ने इस पृथिवी से विभिन्न प्रकार के अन्न-बीजों का दोहन किया । उसी वेनुपुत्र पृथु ने पूर्ववत् इस पृथिवी की धर्म-पूर्वक रक्षा की थी । यह ऋषियों द्वारा कही हुई बात है । इसे प्रमाण मानकर विश्वास करना चाहिए । युद्ध-विशारद पुरुषों को सदा खड्ग का पूजन करना उचित है ।।३२५-३२९।।

पितामह महाप्राज्ञ कुरूणां प्रीतिवर्धन ।
प्रश्नं कश्चित् प्रवक्ष्यामि तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ।।३३०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कीदृशा मानवाः सौम्याः कैःप्रीतिःपरमा भवेत् ।
आयत्यां च तदात्वे च के क्षमास्तान् वदस्व मे ।।३ १
न हि तत्र धनं स्फीतं न च सम्बन्धिबान्धवाः ।
तिष्ठन्ति यत्र सुहृदस्तिष्ठन्तीति मतिर्मम ।।३३२
दुर्लभो हि सुहृच्छ्रोता दुर्लभश्च हितः सुहृत् ।
एतद् धर्मभृतां श्रेष्ठ सर्वं व्याख्यातुमर्हसि ।।३३३
सधेयान् पुरुषान् राजन्नसधेयांश्च तत्त्वतः ।
वदतो मे निबोध त्वं निखिलेन युधिष्ठिर ।।३३४

युधिष्ठिर ने कहा—कौरव कुल की प्रीति बढ़ाने वाले अत्यन्त ज्ञानी पितामह ! मैं कुछ अन्य प्रश्न प्रस्तुत कर रहा हूँ, उनका उत्तर देने की कृपा कीजिए ।।३३०।। सौम्य स्वभाव के मनुष्य कैसे होते हैं ? प्रेम किन के साथ करना चाहिए ? वर्तमान और भविष्य में कौन-कौन से मनुष्य उपकार करने वाले होते हैं ? उन सब का वर्णन मेरे प्रति करिये ।।३३१।। मैं समझता हूँ कि जहाँ सुहृदजन खड़े हों वहाँ प्रचुर धन, सम्बन्धी और बन्धु बांधव कोई काम नहीं आता ।।३३२।। हित की बात सुनने वाला सुहृद दुर्लभ है, हित करने वाला सुहृद भी सरलता से उपलब्ध नहीं होता । पितामह ! इन सब शंकाओं का विशद विवेचन करने की कृपा करिये ।।३३३।। भीष्मजी बोले—युधिष्ठिर ! सन्धि किन के साथ करे, किन के साथ न करे, यह बात मैं तुम्हें बताता हूँ, ध्यान से सुन ।।३३४।।

लुब्धः क्रूरस्त्यक्तधर्मा निकृतिः शठ एव च ।
क्षुद्रः पापसमाचारः सर्वशङ्की तथालसः ।।३३५
दीर्घसूत्रोऽनृजुः क्रुष्टो गुरुतारप्रधर्षकः ।
व्यसने यः परित्यागी दुरात्मा निरपत्रपः ।।३३६
सर्वतः पापदर्शी च नास्तिको वेदनिन्दकः ।
सम्प्रकीर्णेन्द्रियो लोके यः कामं निरतश्चरेत् ।।३३७
असत्यो लोकविद्विष्टः समये चानवस्थितः ।
पिशुनोऽथाकृतप्रज्ञो मत्सरी पापनिश्चयः ।।३३८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुःशीलोऽथाकृतात्मा च नृशंसः कितवस्तथा ।
मित्रैरपकृतिर्नित्यमिच्छतेऽर्थं परस्य यः ॥३९

ददतश्च यथाशक्ति यो न तुष्यति मन्दधीः ।
अधैर्यमपि यो युङ्क्ते सदा मित्रं नरर्षभ ॥३४०
अस्थानक्रोधनोऽयुक्तो यश्चाकस्माद् विरुध्यते ।
सुहृदश्चैव कल्याणानाशु त्यजति किल्बिषी ॥३४१

अल्पेऽप्यपकृते मूढस्तथाज्ञानात् कृतेऽपि च ।
कार्यसेवी च मित्रेषु मित्रद्वेषी नराधिप ॥३४२
शत्रुमित्रमुखो यश्च जिह्मप्रेक्षी विलोचनः ।
न विरज्यति कल्याणे यस्त्यजेत् तादृशं नरम् ॥३४३

पानपो द्वेषणः क्रोधी निर्घृणः परुषस्तथा ।
परोपतापी मित्रध्रुक् तथा प्राणिवधे रतः ॥३४४
कृतघ्नश्चाधमो लोके न संधेयः कदाचन ।
छिद्रान्वेषी ह्यसंधेयः संधेयानपि मे शृणु ॥३४५

लोभी,क्रूर, अधर्मी, कपटी, शठ, क्षुद्र, पापाचारी, संदेही, आलसी, दीर्घसूत्री, कुटिल, निन्दित, गुरुपत्नी गामी, संकट में साथ छोड़ने वाला, दुरात्मा, निर्लज्ज, पाप-दृष्टि वाला, नास्तिक, वेद निन्दक, स्वेच्छाचारी, मिथ्याभाषी, सभी का द्वेष पात्र, प्रतिज्ञा भंग करने वाला, चुगलखोर, पाप बुद्धि वाला, ईर्ष्यालु, पाप पूर्ण विचार वाला, दुष्ट, चंचल मन वाला, नृशंस, धूर्त्त, मित्र-निन्दक, पर धन लोलुप, शक्ति भर देने पर भी असंतुष्ट रहने वाला, मन्दबुद्धि, मित्र को धैर्य-रहित करने वाला, असावधान, अकारण क्रोधी, अकस्मात् वैर साधन करने वाला, मित्रघाती, पापी, स्वार्थी, कपटी, कुटिल, विपरीत दर्शी, भले मित्र का भी त्याग कर देने वाला, मद पान करने वाला, द्वेषी, क्रोधी, निर्दयी, क्रूर, पर-संतापी, मित्र द्रोही, हिंसक, कृतघ्न और नीच पुरुष के साथ सन्धि न करे। पर छिद्रान्वेषी के साथ भी सन्धि न करे। अब सन्धि करने योग्य पुरुषों के लक्षण कहता हूँ ॥३३५-३४५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कुलीना वाक्यसम्पन्ना ज्ञायविज्ञानकोविदाः ।
रूपवन्तो गुणोपेतास्तथाऽलुब्धा जितश्रमाः ।।३४६
सन्मित्राश्च कृतज्ञाश्च सर्वज्ञा लोभवर्जिताः ।
मायुर्यगुणासम्पन्नाः सत्यसंधा जितेन्द्रियाः ।।३४७
व्यायामशीलाः सततं कुलपुत्राः कुलोद्वहाः ।
दोषैः प्रमुक्ताः प्रथितास्ते ग्राह्याः पार्थिवैनराः ।।३४८

कुलीन, वाणी-कुशल, समर्थ, ज्ञान-विज्ञान में पारंगत, रूपवान, गुणवान, लोभ-रहित, अथक कार्य-रत, श्रेष्ठ मित्रों से सम्पन्न, कृतज्ञ, सर्वज्ञ, लोभ से दूर रहने वाले, मधुर स्वभाव वाले, सत्य प्रतिज्ञ, जितेन्द्रिय, व्यायामशील, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न, अपने कुल का भार वहन करने में योग्य, दोष-रहित एवं लोक प्रसिद्ध मनुष्यों को ही राजा अपना मित्र बनावे ।।३४६-३४८।।

यथाशक्ति समाचाराः सम्प्रतुष्यन्ति हि प्रभो ।
नास्थाने क्रोधवन्तश्च न चाकस्माद् विरागिणः ।
विरक्ताश्च न दुष्यन्ति मनसाप्यर्थकोविदाः ।।३४६
आत्मानं पीडयित्वापि सुहृत्कार्यपरायणाः ।
विरज्यन्ति न मित्रेभ्यो वासो रक्तमिवाविकम् ।।३५०
क्रोधाश्च लोभमोहाभ्यां नानर्थे युवतीषु च ।
न दर्शयन्ति सुहृदो विश्वस्ता धर्मवत्सलाः ।।३५१
लोष्टकाञ्चनतुल्यार्थाः सुहृत्सु दृढबुद्धयः ।
ये चरन्त्यभिमानानि सृष्टार्थमनुषङ्गिणः ।।३५२
संगृह्णन्तः परिजनं स्वाम्यर्थपरमाः सदा ।
ईदृशैः पुरुषश्रेष्ठैर्यः संधिं कुरुते नृपः ।।
तस्य विस्तार्यते राज्यं ज्योत्स्ना ग्रहपतेरिव ।।३५३

अपने सामर्थ्यभर कर्त्तव्य का ठीक प्रकार पालन करने वाले, बिना अवसर क्रोध न करने वाले, अकस्मात् स्नेह को न छोड़ने वाले, उदासीन होने पर भी मन से बुराई की इच्छा न करने वाले, अर्थ के तत्व को जानने वाले और स्वयं कष्ट पाकर पराया कार्य करने वाले, ऊन द्वारा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रंग न छोड़ने के समान मित्र के स्नेह को न छोड़ने वाले, क्रोध के वशीभूत होकर मित्र का अनर्थ न करने वाले, लोभ-मोह में पड़कर मित्र की युवतियों की ओर आकर्षित न होने वाले, मित्र के विश्वासी और धर्मरत, मिट्टी और स्वर्ण को समान समझने वाले, सुहृदों के प्रति सुस्थिर बुद्धि वाले, शास्त्रों के अनुकूल आवरण वाले, संतोषी, कुटुम्ब का संग्रह करते हुए स्वजन एवं स्वामी के कार्य में सदा तत्पर रहने वाले पुरुषों के साथ जो राजा सन्धि रखता है, उसका राज्य चन्द्रमा की चाँदनी के समान वृद्धि को प्राप्त होता रहता है ।।३४६-३५३।।

शास्त्रनित्या जितक्रोधा बलवन्तो रणे सदा ।
जन्मशीलगुणोपेताः संधेयाः पुरुषोत्तमाः ।।३५४
ये च दोषसमायुक्ता नराः प्रोक्ता मयानघ ।।३५५
तेषामप्यधमा राजन् कृतघ्ना मित्रभेदकाः ।
त्यक्तव्यास्तु दुराचाराः सर्वेषामिति निश्चयः ।।३५६
विस्तरेणाथ सम्बन्धं श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ।
मित्रद्रोही कृतघ्नश्च यः प्रोक्तस्तद् वदस्व मे ।।३५७
हन्त ते वर्तयिष्येऽहमितिहासं पुरातनम् ।
उदीच्यां दिशियद् वृत्तम्लेच्छेषुमनुजाधिप ।।३५८
ब्राह्मणो मध्यदेशीयः कश्चिद् वै ब्रह्मवर्जितः ।
ग्रामं वृद्धिश्रुतं वीक्ष्य प्राविशद् भैक्ष्यकाङ्क्षया ।।३५९
तत्र दस्युर्धनयुतः सर्ववर्णविशेषवित् ।
ब्रह्मण्यः सत्यसंधश्च दाने च निरतोऽभवत् ।।३६०

प्रतिदिन शास्त्रों का स्वाध्याय करने वाले, क्रोध पर अधिकार रखने वाले, युद्ध में प्रबल, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न, शीलवान् और श्रेष्ठ गुण सम्पन्न पुरुष ही मित्र बनाने के योग्य होते हैं ।।३५४।। अनघ ! मैंने जिन दोष युक्त मनुष्यों का वर्णन किया है, उनमें कृतघ्न पुरुष 'अधम' होते हैं । वे मित्रों की भी हत्या कर डालते हैं । इस प्रकार के दुराचारी व्यक्तियों को दूर से ही छोड़ दे ऐसा सर्व सम्मत निश्चय है ।।३५५-३५६।। युधिष्ठिर ने पूछा—आपने जिसे मित्रद्रोही एवं कृतघ्न कहा है, उसका यथार्थ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इतिहास मैं सुनना चाहता हूँ। वह मेरे प्रति कहिये ॥३५७॥ भीष्मजी ने कहा—राजन् ! मैं तुम्हें एक प्राचीन इतिहास सुनाता हूँ। यह घटना उत्तर दिशा में म्लेच्छों के यहाँ घटी थी ॥३५८॥ एक मध्यदेशीय ब्राह्मण जिसने वेद नहीं पढ़ा था, किसी सम्पन्न ग्राम में भिक्षा माँगने के लिये पहुँचा ॥३५९॥ उस ग्राम में एक डाकू रहता था, वह सभी वर्णों की विशेषता का ज्ञाता था। उसके हृदय में ब्राह्मणों के प्रति भक्ति-भाव था तथा सत्यवक्ता और दान करने वाला भी था ॥३६०॥

तस्य क्षयमुपागम्य ततो भिक्षामयाचत ।
प्रतिश्रयं च वासार्थं भिक्षां चैवाथ वार्षिकीम् ॥३६१
प्रादात् तस्मै स विप्राय वस्त्रं च सदृशं नवम् ।
नारीं चापि वयोपेतां भर्त्रा विरहितां तथा ॥३६२
एतत् सम्प्राप्य हृष्टात्मा दस्योः सर्वं द्विजस्तथा ।
तस्मिन् गृहवरे राजंस्तया रेमे स गौतमः ॥३६३
कुटुम्बार्थं च दास्याश्च साहाय्यं चाप्यथाकरोत् ।
तत्रावसत् स वर्षाश्च समृद्धे शबरालये ॥३६४
बाणवेधे परं यत्नमकरोच्चैव गौतमः ।
चक्राङ्कान् स च नित्यं वै सर्वतो वनगोचरान् ॥३६५
जघान गौतमो राजन् यथा दस्युगणास्तथा ।
हिंसापटुर्घृणाहीनः सदा प्राणिवधे रतः ॥३६६

ब्राह्मण ने उसके घर जाकर भिक्षा माँगी। डाकू ने उसके रहने को एक घर दिया और वर्ष भर के निर्वाहार्थ अन्न-भिक्षा का प्रबंध भी कर दिया। नवीन वस्त्र दिये तथा पति-रहित एक युवती दासी भी उसकी सेवा में नियुक्त कर दी ॥३६१-३६२॥ डाकू से यह सब वस्तुएँ पाकर ब्राह्मण अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उस सुन्दर घर में दासी के सहित सुख-पूर्वक निवास करने लगा ॥३६३॥ वह दासी के कुटुम्ब के लिये कुछ सहायता करने लगा। भील के उस समृद्धिशाली भवन में ब्राह्मण अनेक वर्षों तक रहा ॥३६४॥ उसका नाम गौतम था। बाण द्वारा लक्ष्य-वेध का उसने प्रयत्न पूर्वक अभ्यास किया और डाकुओं की तरह ही वन में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घूमकर हिंसों का शिकार करने लगा। वह हिंसा में अत्यन्त चतुर था, उसमें दया नहीं थी तथा जीव-हिंसा की ताक में ही लगा रहता था ॥३६५-३६६॥

गौतमः सनिकर्षेण दस्युभिः समतामियात् ।
तथा तु वसतस्तस्य दस्युग्रामे सुखं तदा ।
अगमन् बहवो मासा निघ्नतः पक्षिणो बहून् ॥३६७
ततः कदाचिदपरो द्विजस्तं देशमागतः ॥३६८
जटाचीराजिनधरः स्वाध्यायपरमः शुचिः ।
विनीतो नियताहारो ब्रह्मण्यो वेदपारगः ॥३६९
स ब्रह्मचारी तद्दृश्यः सखा तस्यैव सुप्रियः ।
तं दस्युग्राममगमद् यत्रासौ गौतमोऽवसत् ॥३ ०

डाकुओं के सम्पर्क में रहकर गौतम भी उनके समान दस्यु बन गया। डाकुओं के ग्राम में सुख पूर्वक निवास करते और प्रतिदिन अनेक पक्षियों को मारते हुए उसे अनेक मास व्यतीत हो गये ॥३६७॥ फिर एक दिन, एक अन्य ब्राह्मण उस ग्राम में आया। वह मृगचर्म, जटा, और वल्कल धारी था। सदा स्वाध्याय-परायण, पवित्र, विनयशील, नियमानुकूल आहार करने वाला, ब्राह्मणभक्त और वेदों में विद्वान् था ॥३६८-३६९॥ वह ब्रह्मचारी, गौतम के ग्राम का रहने वाला ही था। उससे उसकी अत्यन्त मित्रता भी थी वह घूमता हुआ दस्युओं के उसी ग्राम में जा पहुँचा ॥६७०॥

स तु विप्रगृहान्वेषी शूद्रान्नपरिवर्जकः ।
ग्रामं दस्युसमाकीर्णं व्यचरत् सर्वतोदिशम् ॥३७१
ततः स गौतमगृहं प्रविवेश द्विजोत्तमः ।
गौतमश्चापि सम्प्राप्तस्तावन्योन्येन संगतौ ॥ ३७२
चक्राङ्गभारस्कन्धं तं धनुष्पाणिं धृतायुधम् ।
रुधिरेणावसिक्ताङ्गं गृहद्वारमुपागतम् ॥३७३
तं दृष्ट्वा पुरुषादाभमपध्वस्तं क्षयागतम् ।
अभिज्ञाय द्विजो व्रीडन्निदं वाक्यमथाब्रवीत् ॥३७४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किमिदं कुरुषे मोहाद् विप्रस्त्वं हि कुलोद्वहः ।
मध्यदेशपरिज्ञातो दस्युभावं गतः कथम् ॥३७५

वह शूद्र के यहाँ का अन्न ग्रहण नहीं करता था, इसलिए उस ग्राम में ब्राह्मण के घर को खोजता हुआ सर्वत्र घूमने लगा ॥३७१॥ वह घूमता हुआ गौतम के घर पहुँचा । उसी समय गौतम भी शिकार से लौट रहा था, तभी उनकी परस्पर भेंट हो गई ॥३७२॥ ब्राह्मण ने गौतम के कंधे पर मरा हुआ हंस, हाथ में धनुष-बाण तथा सम्पूर्ण शरीर रक्त रंजित देखा । घर के द्वार पर आने वाला गौतम नरभक्षी राक्षस जैसा तथा ब्राह्मणत्व से पतित प्रतीत हुआ । उसे उस अवस्था में भी ब्राह्मण ने पहिचान लिया । उसे पहिचान कर वह ब्रह्मचारी अत्यन्त लज्जित होकर उससे कहने लगे । अरे ! तू तो मध्यदेशीय कुलीन ब्राह्मण था, मोहवश यह क्या करने लगा है ? तू दस्यु किस प्रकार बन बैठा ? ॥३७३-३७५॥

पूर्वान् स्मर द्विज ज्ञातीन् प्रख्यातान् वेदपारगान् ।
तेषां वंशेऽभिजातस्त्वमीदृशः कुलपांसनः ॥३७६
अवबुध्यात्मनाऽऽत्मानं सत्त्वं शीलं श्रुतं दमम् ।
अनुक्रोशं च सस्मृत्य त्यज वासमिमं द्विज ॥३७७
स एवमुक्तः सुहृदा तेन तत्र हितैषिणा ।
प्रत्युवाच ततो राजन् विनिश्चित्य तदार्तवत् ॥३७८
निर्धनोऽस्मि द्विजश्रेष्ठ नापि वेदविदप्यहम् ।
वित्तार्थमिह सम्प्राप्तं विद्धि मां द्विजसत्तम ॥३७९
त्वद्दर्शनात् तु विप्रेन्द्र कृतार्थोऽस्म्यद्य वै द्विज ।
आवां हि सह यास्यावः श्वोवसस्वाद्य शर्वरीम् ॥३८०
स तत्र न्यवसद् विप्रो घृणी किञ्चिद संस्पृशन् ।
क्षुधितश्छन्द्यमानोऽपि भोजनं नाययनन्दत् ॥३८१

ब्रह्मन् ! तेरे पूर्वजों की कितनी ख्याति थी ? उनकी तो कुछ याद कर ! वे कैसे वेदों के विद्वान् थे ? और तू उन्हीं के कुल में उत्पन्न होकर ऐसा कुल कलंक सिद्ध हुआ ॥३७६॥ अरे, तू द्विज है, अब भी स्वयं को पहिचान । द्विजोचित सत्त्व, शील, शास्त्र ज्ञान, संयम और दया का ध्यान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर इस घर को त्याग दे ॥३७७॥ राजन् ! अपने हितैषी सुहृद ब्राह्मण के इस प्रकार कथन पर गौतम मन ही मन कुछ निश्चय करता हुआ कहने लगा ॥३७८॥ विप्रवर ! मैं निर्धन तथा वेद-ज्ञान शून्य हूँ, इसलिए धनोपार्जन के लिए ही मुझे यहाँ आया हुआ समझिये ॥३७९॥ द्विजोत्तम ! मैं आज आपके दर्शन कर कृतार्थ हो गया । अब आप रात-भर यहीं निवास करें । कल प्रातःकाल हम दोनों हो साथ चलेंगे ॥३८०॥ वह ब्राह्मण दयावान था । गौतम के कहने से उसके यहाँ ठहर गया । परन्तु, किसी भी वस्तु को हाथ से स्पर्श नहीं किया । यद्यपि उसे भूख लगी थी परन्तु गौतम द्वारा बहुत बार अनुनय-विनय करने पर भी उसने वहाँ का अन्न ग्रहण नहीं किया ॥३८१॥

तस्यांनिशायां व्युष्टायां गतेतस्मिन् द्विजोत्तमे ।
निष्क्रम्य गौतमोऽगच्छत् समुद्रं प्रति भारत ॥३८२
सामुद्रिकान् स वणिजस्ततोऽपश्यन् स्थितान् पथि ।
स तेन सह सार्थेन प्रययौ सागरं प्रति ॥३८३
स तु सार्थो महान् राजन् कस्मिंश्चिद् गिरिगह्वरे ।
मत्तेन द्विरदेनाथ निहतः प्रायशोऽभवत् ॥३८४
सकथंचिद्भयात् तस्माद् विमुक्तो ब्राह्मणस्तथा ।
कांदिग्भूतो जीवितार्थी प्रदुद्रावत्तरां दिशम् ॥३८५

भीष्मजी बोले—युधिष्ठिर ! रात व्यतीत होने पर सबेरा हुआ और वह ब्राह्मण वहाँ से चला गया । तभी गौतम उस घर को त्याग कर समुद्र की ओर चल दिया ॥३८२॥ उसने मार्ग में देखा कि समुद्र के निकट निवास करने वाले कुछ व्यापारी वैश्य ठहरे हुए हैं । वह उन्हीं के साथ लगकर समुद्र की ओर जाने लगा ॥३८३॥ वैश्यों का वह दल किसी पर्वत की गुफा में ठहरा था, तभी तक मदमस्त हाथी ने उस पर आक्रमण कर दिया और दल के बहुत से व्यक्ति मारे गए ॥३८४॥ गौतम उस भय से तो किसी प्रकार बच गया, परन्तु घबराहट में वह 'किधर जाना चाहिए' इसका निश्चय न कर सका और अपने प्राण-रक्षार्थ वह उत्तर दिशा की ओर द्रुतगति से चल पड़ा ॥३८५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स तु सार्थपरिभ्रष्टस्तस्माद् देशात् तथा च्युतः ।
एकाकी व्यचरत् तत्र वने किंपुरुषो यथा ॥३८६

स पन्थानमथासाद्य समुद्राभिसरं तदा ।
आससाद वनं रम्यं दिव्यं पुष्पितपादपम् ॥३८७
सर्वर्तुकैराम्रवणैः पुष्पितैरुपशोभितम् ।
नन्दनोद्देशसदृशं यक्षकिन्नरसेवितम् ॥३८८

शालैस्तालैस्तमालैश्च कालागुरुवनैस्तथा ।
चन्दनस्य च मुख्यस्य पादपैरुपशोभितम् ।
गिरिप्रस्थेषु रम्येषु तेषु तेषु सुगन्धिषु ।
समन्ततो द्विजश्रेष्ठास्तत्राक्रूजन्त वै तदा ॥३८९
मनुष्यवदनाश्चान्ये भारुण्डा इति विश्रुताः ।
भूलिङ्गशकुनाश्चान्ये सामुद्राःपर्वतोद्भवाः ॥३९०

व्यापारियों के दल का साथ छूट गया, इसलिये उस स्थान से भी भ्रष्ट होकर वह एकाकी ही वन में घूमने लगा, जैसे कोई किंपुरुष घूम रहा हो ॥३८६॥ तभी समुद्र की ओर जाने वाला एक मार्ग उसने देखा। उसी के सहारे वह दिव्य और सुरम्य वन में पहुँच गया। वहाँ के सभी वृक्ष सुन्दर पुष्पों से सुशोभित थे ॥३८७॥ सभी ऋतुओं में पुष्पित-पल्लवित होने वाली आम के पेड़ों की पंक्तियाँ वन को सुशोभित कर रहे थे। यक्ष-किन्नरों से सेवित वह प्रदेश नन्दनकानन के समान मनोरम प्रतीत होता था ॥३८८॥ शाल, ताल, तमाल, काले अगरु के वन और श्रेष्ठ चन्दन की द्रुमावलि उस जंगल की शोभा बढ़ा रहे थे। वहाँ के रमणीय और सुगन्धित पहाड़ी समतल प्रदेशों में चारों ओर श्रेष्ठ पक्षी कलरव कर रहे थे ॥३८९॥ कहीं मनुष्यों जैसे मुख वाले 'भारुण्ड' पक्षी बोलते थे और कहीं समुद्र के किनारे तथा पर्वतों पर रहने वाले 'भूलिग' पक्षी एवं अन्य पक्षी चहचहा रहे थे ॥३९०॥

स तान्यतिमनोज्ञानि विहगानां रुतानि वै ।
शृण्वन् सुनमणीयानि विप्रोऽगच्छत गौतमः ॥३९१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ततोऽपश्यत् सुरम्येषु सुवर्णसिकताचिते ।
देशे समे सुखे चित्रे स्वर्गोद्देशसमे नृप ।।३९२
श्रिया जुष्टं महावृक्षं न्यग्रोधं च सुमण्डलम् ।३९३
शाखाभिरनुरूपाभिर्भूयिष्ठं छत्रसंनिभम्
तस्य मूलं च संसिक्तं वरचन्दनवारिणा ।।३९४
दिव्यपुष्पान्वितं श्रीमत् पितामहसभोपमम् ।
तं दृष्ट्वा गौतमः प्रीतो तनःकान्तमनुत्तमम् ।।३९५

पक्षियों के उन सुमधुर एवं मनोहरी रमणीय कलरवों को सुनता हुआ गौतम आगे बढ़ता हुआ चलने लगा ।।३९१।। फिर उन रमणीय प्रदेशों में से सुवर्णमयी बालुका से व्याप्त, समतल, सुखद, विचित्र और स्वर्गीय भूमि जैसे एक मनोहर स्थान पर, उसने बरगद का एक सुन्दर एवं विशाल वृक्ष देखा, जो चारों ओर मंडलाकर फैला हुआ था । अपनी अनेक सुन्दर शाखाओं के कारण वह पेड़ एक महान् छत्र के समान लगता था । उसकी जड़ चन्दन के जल से सींची गई थी ।।३९२-३९४।। ब्रह्माजी की सभा के समान सुशोभित वह वृक्ष दिव्य पुष्पों से सुशोभित था । उस अत्यन्त श्रेष्ठ और मनोरम वट वृक्ष को देखकर गौतम अत्यन्त प्रसन्न हुआ ।।३९५।।

मेध्यं सुरगृहप्रख्यं पुष्पितैः पादपैर्वृतम् ।
तमासाद्य मुदा युक्तस्तस्याधस्तादुपाविशत् ।।३९६
तत्रासीनस्य कौन्तेय गौतमस्य सुखः शिवः ।
पुष्पाणि समुपस्पृश्य प्रववावनिलः शुभः ।
ह्लादयन् सर्वगात्राणि गौतमस्य तदा नृप ।।३९७
स तु विप्रः प्रशान्तश्च स्पृष्टः पुण्येन वायुना ।
सुखमासाद्य सुष्वाप भास्करश्चास्तमभ्ययात् ।।३९८
ततोऽस्त भास्करे याते संध्याकाल उपस्थिते ।
आजगाम स्वभवनं ब्रह्मलोकात् खगोत्तमः ।।३९९
नाडीजङ्घ इति ख्यातो दयितो ब्रह्मणः सखा ।
बकराजो महाप्राज्ञः कश्यपस्यात्ससम्भवः ।।४००

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह पवित्र, देवगृह के समान सुन्दर और खिले हुए वृक्षों से घिरा था। उस वृक्ष के पास पहुँच कर गौतम प्रसन्न होता हुआ उसकी छाया में बैठ गया ॥३९६॥ राजन् ! वहाँ गौतम के बैठते ही पुष्पों के स्पर्श से सुगन्धित मंद पवन चलने लगा, जो अत्यन्त सुखद और कल्याणकारी प्रतीत होता था और गौतम के सम्पूर्ण अंग उससे आह्लादित हो रहे थे ॥३९७॥ उस पवित्र पवन के स्पर्श से गौतम को बड़ी शान्ति प्राप्त हुई। सुख का अनुभव करता हुआ वह वहीं लेट गया, उसी समय सूर्यास्त हो गया ॥३९८॥ सूर्य के अस्त हो जाने पर संध्या काल हुआ और तभी वहाँ ब्रह्मलोक से एक श्रेष्ठ पक्षी आया। वह उसी वृक्ष पर रहता था ॥३९९॥ वह 'नाडीजंघ' नामक पक्षी महर्षि कश्यप का पुत्र और ब्रह्माजी का प्रिय सखा था। वह बगुलों का राजा एवं अत्यन्त बुद्धिमान था ॥४००॥

राजधर्मेति विख्यातो बभूवाप्रतिमो भुवि।
देवकन्यासुतः श्रीमान् विद्वान् देवसमप्रभः ॥४०१
मृष्टाभरणसम्पन्नो भूषणैरर्कसंनिभैः।
भूषितः सर्वगात्रेषु देवगर्भः श्रिया ज्वलन् ॥४०२
तमागतं खगं दृष्ट्वा गौतमो विस्मितोऽभवत्।
क्षुत्पिपासापरिश्रान्तो हिंसार्थी चाभ्यवैक्षत ॥४०३
स्वागतं भवतो विप्र दिष्ट्या प्राप्तोऽसि मे गृहम्।
अस्तं च सविता यातः संध्येयं समुपस्थिता ॥४०४
मम त्वं निलयं प्राप्तः प्रियातिथिरनिन्दितः।
पूजितो यास्यसि प्रातर्विधिदृष्टेन कर्मणा ॥४०५

वह अनुपम पक्षी पृथ्वी पर 'राजधर्मा' के नाम से प्रसिद्ध था। देव कन्या के उदर से उत्पन्न होने के कारण वह देवताओं जैसी कान्तिवाला, अत्यन्त विद्वान् तथा दिव्य तेज वाला दिखाई देता था ॥४०१॥ उसके अंगों में सूर्य-रश्मियों के समान चमकते हुए आभूषण सुशोभित थे। वह देवपुत्र अपने सम्पूर्ण शरीर में विशुद्ध एवं दिव्य आभूषण धारे हुए दिव्य दीप्ति से दमक रहा था ॥४०२॥ उस पक्षी को आया देखकर गौतम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आश्चर्य चकित हो गया। वह भूखा, प्यासा एवं थका हुआ था। इसलिए राजधर्मा को मार डालने की इच्छा से उसने उसकी ओर देखा ॥४०३॥ तभी राजधर्मा के निकट आकर कहा—द्विजश्रेष्ठ ! आपका स्वागत है। यह घर मेरा है और आप यहाँ आये हैं, यह मेरा अत्यन्त सौभाग्य है। सूर्य भगवान् अस्ताचलगामी हो गए और अब संध्याकाल आ गया है ॥४०४॥ आप मेरे घर पर आने वाले प्रिय एवं श्रेष्ठ अतिथि हैं। शास्त्रोक्त विधि से मैं आज आपका पूजन करूँगा। रात्रि में मेरा आतिथ्य स्वीकार कर सबेरा होने पर यहाँ से जाँय ॥४०५॥

गिरं तां मधुरां श्रुत्वा गौतमो विस्मितस्तदा।
कौतूहलान्वितो राजन् राजधर्माणमैक्षत ॥४०६
भोः कश्यपस्य पुत्रोऽहं माता दाक्षायणी च मे।
अतिथिस्त्वं गुणोपेतः स्वागतं ते द्विजोत्तम ॥४०७
तस्मै दत्त्वा स सत्कारं विधिदृष्टेन कर्मणा।
शालपुष्पमयीं दिव्यां बृसीं वै समकल्पयत् ॥४०८
भगीरथरथाक्रान्तदेशान् गङ्गानिषेवितान्।
ये चरन्ति महामीनांस्तांश्च तस्यान्वकल्पयत् ॥४०९
वह्निं चापि सुसंदीप्तं मीनांश्चापि सुपीवरान्।
स गौतमायातिथये न्यवेदयत काश्यपिः ॥४१०

भीष्मजी बोले—राजन् ! पक्षी की उस सुमधुर वाणी से गौतम अत्यन्त आश्चर्यान्वित हुआ। वह कौतूहल पूर्वक उस राजधर्मा को देखने लगा ॥४०६॥ राजधर्मा ने कहा—विप्रवर ! मैं महर्षि कश्यप का पुत्र हूँ। मेरी माता दक्ष प्रजापति की कन्या है। मैं, आप गुणज्ञ अतिथि का स्वागत करता हूँ ॥४०७॥ भीष्मजी ने कहा—युधिष्ठिर ! यह कह कर राजधर्मा ने शास्त्रोक्त रीति से गौतम का सत्कार किया और शाल के पुष्पों का आसन बनाकर बैठने को दिया ॥४०८॥ महाराज भगीरथ के रथ से आक्रान्त हुए जिन भूखण्डों में गंगाजी बहती हैं, वहाँ, गंगाजी के जल में से कुछ मत्स्य लाकर राजधर्मा ने गौतम के भोजन का प्रबन्ध किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

॥४०९॥ कश्यपपुत्र राजधर्मा ने अग्नि प्रज्वलित कर मोटे-मोटे मत्स्य लाकर अपने अतिथि गौतम को भेंट किये ॥४१०॥

भुक्तवन्तं च तं विप्रं प्रीतात्मानं महातपाः ।
क्लमापनयनार्थं स पक्षाभ्यामभ्यवीजयत् ॥४११
ततो विश्रान्तमासीनं गोत्रप्रश्नमपृच्छत ।
सोऽब्रवीद् गौतमोऽस्मीति ब्रह्म नान्यदुदाहरत् ॥४१२
तस्मै पर्णमयं दिव्यं दिव्यपुष्पाधिवासितम् ।
गन्धाढ्यं शयनंप्रादात् स शिश्ये तत्र वै सुखम् ॥४१३
अथोपविष्टं शयने गौतमं धर्मराट् तदा ।
पप्रच्छ काश्यपो वाग्मी किमागमनकारणम् ॥४१४
ततोऽब्रवीद् गौतमस्तं दरिद्रोऽहं महामते ।
समुद्रगमनाकाङ्क्षी द्रव्यार्थमिति भारत ॥४१५

जब गौतम उन मत्स्यों से अपनी तृप्ति कर चुका, तब वह अत्यन्त तपस्वी पक्षी उसका श्रम दूर करने के लिए अपने पंखों से हवा करने लगा ॥४११॥ विश्राम कर लेने पर राजधर्मा ने उससे गोत्र पूछा, तब गौतम ने कहा कि मैं गौतम नामक ब्राह्मण हूँ। इससे अधिक उसने कुछ न बताया ॥४१२॥ तब राजधर्मा ने उसके लिए पुष्पों से युक्त पत्रों का एक दिव्य बिछौना तैयार किया। उस सुगन्धित बिछौने को पाकर गौतम ने उस पर सुख पूर्वक शयन किया ॥४१३॥ जब गौतम उस बिछौने पर बैठा तब बातचीत में कुशल कश्यप पुत्र ने पूछा—ब्रह्मन् ! आप यहाँ किसलिए पधारे हैं ॥४१४॥ तब गौतम ने कहा—महामते ! मैं निर्धन हूँ और धन के लिए समुद्र तट पर जाने की इच्छा से ही घर से चला हूँ ॥४१५॥

तं काश्यपोऽब्रवीत् प्रीतो नोत्कण्ठां कर्तुमर्हसि ।
कृतकार्यो द्विजश्रेष्ठ सद्रव्योयास्यसे गृहान् ॥४१६
चतुर्विधा ह्यर्थसिद्धिर्बृहस्पतिमतं यथा ।
पारम्पर्यं तथा दैवं काम्यं मैत्रमिति प्रभो ॥४१७
प्रादुर्भूतोऽस्मि ते मित्रं सुहृत्त्वं च मम त्वयि ।
सोऽहं तथा यतिष्यामि भविष्यसि यथार्थवान् ॥४१८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ततः प्रभातसमये सुखं दृष्ट्वाब्रवीदिदम् ।
गच्छ सौम्य पथानेन कृतकृत्यो भविष्यसि ।।४१९
इतस्त्रियोजनं गत्वा राक्षसाधिपतिर्महान् ।
विरूपाक्ष इति ख्यातः सखा मम महाबलः ।।४२०

यह सुनकर राजधर्मा प्रसन्न होता हुआ बोला—विप्रवर ! अब आप वहाँ तक जाने की चिन्ता न करें, आपका काम यहीं हो जायगा। आप यहाँ से ही धन लेकर अपने घर को लौट जाँय ।।४१६।। प्रभो ! वृहस्पति जी के मत से अर्थ सिद्धि चार प्रकार से होती है—वंश परम्परा से, प्रारब्ध अनुकूल होने से, धन के लिए किये गए सत्प्रयत्न से और मित्र के सहयोग से ।।४१७।। मैं आपका मित्र हो गया, आपके प्रति मेरा सौहार्द बढ़ गया है, इसलिए मैं आपको धन प्राप्त कराने का प्रयत्न करूंगा ।।४१८।। फिर सबेरा होने पर राजधर्मा ने ब्राह्मण को सुखी करने का उपाय सोचकर इस प्रकार कहा—सौम्य ! इस मार्ग से जाने पर आपका कार्य सिद्ध होगा। यहाँ से तीन याजन दूर जाने पर एक नगर मिलेगा, उसमें रहने वाले राक्षसराज विरुपाक्ष मेरे परम मित्र हैं ।।४१९-४२०।।

तं गच्छ द्विजमुख्य त्वं स मद्वाक्यप्रचोदितः ।
कामानभीप्सितांस्तुभ्यं दाता नास्त्यत्र संशयः ।।४२१
इत्युक्तः प्रययौ राजन् गौतमो विगतक्लमः ।
फलान्यमृतकल्पानि भक्षयन् स यथेष्टतः ।।४२२
चन्दनागुरुमुख्यानि त्वक्पत्राणां वनानि च ।
तस्मिन् पथि महाराज सेवमानो द्रुतं ययौ ।।४२३
ततो मेरुव्रजं नाम नगरं शैलतोरणम् ।
शैलप्राकारवप्रं च शैलयन्त्राकुलं तथा ।।४२४
विदितश्चाभवत् तस्य राक्षसेन्द्रस्य धीमतः ।
प्रहितः सुहृदा राजन् प्रीयमाणः प्रियातिथिः ।।४२५

विप्रवर ! आप उनके पास जांय। मेरे कहने से वे आपको मनचाहा धन प्रदान करेंगे और कामनाएँ पूर्ण कर देंगे, इसमें संदेह नहीं है ।।४२१।। राजन् ! इस प्रकार कहे जाने पर गौतम वहाँ से चल दिया।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उसकी सब थकान दूर हो गई थी। मार्ग में तेजपातों के वन में चन्दन और अगरु के वनों की अधिकता थी। उनमें विश्राम करता और अमृत जैसे मीठे फल खाता हुआ वह शीघ्रता से आगे बढ़ा ॥४२२-४२३॥ चलते-चलते वह मेरुव्रज नामक नगर में पहुंचा। उस नगर के चारों ओर पर्वतों के टीले और चार दीवारी थी। उसका मुख्य द्वार भी टीला ही था। नगर की रक्षा के लिए सब ओर बड़ी-बड़ी शिलाएँ और यंत्र लगे हुए थे ॥४२४॥ अत्यन्त बुद्धिमान् राक्षसराज विरुपाक्ष को सेवकों ने सूचना दी कि आपके मित्र ने अपने एक प्रिय अतिथि को आपके पास भेजा है, जो कि अत्यन्त प्रसन्न है ॥४२५॥

ततः स राक्षसेन्द्रः स्वान् प्रेष्यानाह युधिष्ठिर ।
गौतमो नगरद्वाराच्छीघ्रमानीयतामिति ॥४२६
ततः पुरवरात् तस्मात् पुरुषाः श्येनचेष्टनाः ।
गौतमेत्यभिभाषन्तः पुरद्वारमुपागमन् ॥४२७
ते तमूचुर्महाराज राजप्रेष्यास्तदा द्विजम् ।
त्वरस्व तूर्णमागच्छ राजा त्वां द्रष्टुमिच्छति ॥४२८
राक्षसाधिपतिर्वीरो विरूपाक्ष इति श्रुतः ।
स त्वां त्वरति वै द्रष्टुं तत् क्षिप्रं संविधीयताम् ॥४२९
ततः स प्राद्रवद् विप्रो विस्मयाद् विगतक्लमः ।
गौतमः परमर्धिं तां पश्यन् परमविस्मितः ॥४३०
तैरेव सहितो राज्ञो वेश्म तूर्णमुपाद्रवत् ।
दर्शनं राक्षसेन्द्रस्य काङ्क्षमाणो द्विजस्तदा ॥४३१

युधिष्ठिर ! इस समाचार के मिलते ही राक्षसराज ने अपने सेवकों से कहा कि उसे नगर द्वार से शीघ्र ही यहाँ ले आओ ॥४२६॥ यह आदेश मिलते ही सेवक गण गौतम को पुकारते हुए नगर द्वार पर बाज के समान द्रुतगति से पहुँचे ॥४२७॥ उन राजसेवकों ने उससे कहा—ब्रह्मन् ! शीघ्रता कीजिए। महाराज आपसे मिलना चाहते हैं, इसलिए शीघ्र चलिए ॥४२८॥ विरूपाक्ष नामक प्रसिद्ध एवं वीर राक्षसराज आपको देखने के लिए उत्सुक हैं, इसलिए आप उनसे मिलने की शीघ्रता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करें ॥४२९॥ बुलावा सुनाते ही गौतम का श्रम दूर हो गया। वह तुरन्त चल पड़ा। राक्षसराज की उस महान् समृद्धि पर उसे अत्यन्त आश्चर्य हो रहा था ॥४३०॥ राक्षसराज विरूपाक्ष के दर्शन की इच्छा से वह ब्राह्मण शीघ्र ही उन सेवकों के साथ राज भवन में जा पहुँचा ॥४३१॥

ततः स विदितो राज्ञः प्रविश्य गृहमुत्तमम् ।
पूजितो राक्षसेन्द्रेण निषसादासनोत्तमे ॥४३२
पृष्टश्च गोत्रचरणं स्वाध्यायं ब्रह्मचारिकम् ।
न तत्र व्याजहारान्यद् गोत्रमात्राद्दते द्विजः ॥४३३
ब्रह्मवर्नसहीनस्य स्वाध्यायोपरतस्य च ।
गोत्रमात्रविदो राजा निवासं समपृच्छत ॥४३४
क्व ते निवासः कल्याण किंगोत्रा ब्राह्मणी च ते ।
तत्त्वं ब्रूहि न भीः कार्या विश्वसस्व यथासुखम् ॥४३५

भीष्मजी ने कहा – राजन् ! फिर राजा को उसके आने की सूचना दी गई और तब वह उसके श्रेष्ठ भवन में पहुँचा। वहाँ विरूपाक्ष ने उसका विधिवत् पूजन किया। फिर वह एक उत्तम आसन पर बैठाया गया ॥४३२॥ विरूपाक्ष ने गौतम से उसका गौत्र, शाखा और ब्रह्मचर्य-पालन करते हुए किये गये स्वाध्याय के संबंध में उससे पूछा, परन्तु उसने केवल अपना गौत्र ही बताया ॥४३३॥ तब उस ब्राह्मणोचित तेज-विहीन स्वाध्याय से उपरत, गौत्र मात्र के जानने वाले से राजा ने उसके निवास स्थान के सम्बन्ध में प्रश्न किया ॥४३४॥ राक्षसराज ने पूछा—तुम्हारा घर कहाँ है ? तुम्हारी पत्नी किस गोत्र की है ? भय न करो, सब ठीक ठीक बताओ। मुझ पर विश्वास करो और सुख पूर्वक रहो ॥४३५॥

मध्यदेशप्रसूतोऽहं वासो मे शबरालये ।
शूद्रा पुनर्भूर्भार्या मे सत्यमेतद् ब्रवीमि ते ॥४३६
ततो राजा विममृशे कथं कार्यमिदं भवेत् ।
कथंवा सुकृतं मे स्यादिति बुद्ध्यान्वचिन्तयत् ॥४३७
अयं वै जन्मना विप्रः सुहृत् तस्य महात्मनः ।
सम्प्रेषितश्च तेनायं काश्यपेन ममान्तिकम् ॥४३८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तस्य प्रियं करिष्यामि सहि मामाश्रितः सदा ।
भ्राता मे बान्धवश्चासौ सखा च हृदयङ्गमः ।।४३९
कार्तिक्यानद्य भोक्तारः सहस्रं मे द्विजोत्तमाः ।
तत्रायमपि भोक्ता च देयमस्मै च मे धनम् ।।४४०
स चाद्य दिवसः पुण्यो ह्यतिथिश्चायमागतः ।
संकल्पितं चैव धनं किं विचार्यामतः परम् ।।४४१

गौतम ने कहा—मेरा जन्म मध्य देश में हुआ, परन्तु अब एक भील के यहाँ रहता हूं । मेरी पत्नी शूद्र जाति की एवं पुनर्भू भार्या है । यह मैं सत्य कहता हूँ ।।४३६।। भीष्मजी बोले—युधिष्ठिर ! इसे सुनकर राक्षस-राज सोचने लगे कि इस प्रकार मुझे पुण्य की प्राप्ति कैसे हो सकती है ? उन्होंने सोचा—यह जन्म मात्र से ही ब्राह्मण है, परन्तु महात्मा राजधर्मा का सुहृद है । उन्होंने इसे भेजा है, इसलिए इसका कार्य अवश्य करूंगा । वह मुझ पर सदैव भरोसा रखता है तथा मेरा भाई, बान्धव एवं सखा है ।।४३७-४३९।। आज कार्तिकी पूर्णिमा है, मेरे यहाँ हजारों उत्तम ब्राह्मण भोजन करेंगे । उन्हीं के साथ यह भी भोजन कर लेगा और धन भी पा लेगा । यह ब्राह्मण अतिथि रूप से यहाँ आया है और मैंने भी धन-दान का संकल्प किया हुआ है । फिर क्या विचार करना है ? ।।४४०-४४१।।

ततः सहस्रं विप्राणां विदुषां समलंकृतम् ।
स्नातानातसम्प्राप्तं सुमहत् क्षौमवाससाम् ।।४४२
तानागतान् द्विजश्रेष्ठान् विरूपाक्षो विशाम्पते ।
यथार्हं प्रतिजग्राह विधिदृष्टेन कर्मजा ।।४४३
बृस्यस्तेषां तु संन्यस्ता राक्षसेन्द्रस्य शासनात् ।
भूमौ वरकुशाः स्तीर्णाः प्रेष्यैर्भरतसत्तम ।।४४४
तासु ते पूजिता राज्ञा निषण्णा द्विजसत्तमाः ।
तिलदर्भोदकेनाथ अर्चिता विधिवद् द्विजाः ।।४४५

फिर भोजन के समय हजारों ब्राह्मण स्नान करके, रेशमी वस्त्र और अलंकार धारण किये वहाँ आये । विरूपाक्ष ने उन श्रेष्ठ ब्राह्मणों का शास्त्रोक्त विधि से यथा योग्य स्वागत किया । राक्षसराज की आज्ञा से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सेवकों ने उनके लिए आसन भूमि पर आसन बिछा दिये । राजा के द्वारा सम्मानित वे ब्राह्मण जब उन आसनों पर बैठ गये तब राजा ने तिल, कुश और जल से उनका विधिवत् पूजन किया ।।४४२-४४५।।

विश्वेदेवाः सपितरः साग्नयश्चोपकल्पिताः ।
विलिप्ताः पुष्पवन्तश्च सुप्रचाराः सुपूजिताः ।
व्यराजन्त महाराज नक्षत्रपतयो यथा ।।४४६
ततो जाम्बूनदीः पात्रीर्वज्राङ्का विमलाः शुभाः ।
वाराान्नपूर्णा विप्रेभ्यः प्रादान्मधुघृतप्लुताः ।।४४७
तस्य नित्यं सदाऽऽषाढ्यां माध्यां च वहवो द्विजाः ।
ईप्सितं भोजनवरं लभन्ते सत्कृतं सदा ।।४४८
विशेषतस्तु कार्तिक्यां द्विजेभ्यः सम्प्रयच्छति ।
शरद्ऋचपाये रत्नानि पौर्णमास्यामिति श्रुतिः ।।४४९

उनमें विश्वेदेवों, पितरों और अग्नि देवता की भावना करके उन सब को चन्दन लगाया, पुष्प मालाएँ पहिनाईं और उत्तम विधि से पूजन किया । राजन् ! उन आसनों पर विराजमान हुए वे ब्राह्मण चन्द्रमा के समान सुशोभित हुए ।।४४६।। फिर उसने हीरों से जटित स्वर्ण की स्वच्छ एवं सुन्दर थालियों में घृत से निर्मित पदार्थ परोस कर ब्राह्मणों के समक्ष रखे ।।४४७।। आषाण और माघ की पूर्णिमा को सदा अनेक ब्राह्मण सत्कार पूर्वक अपनी इच्छा के अनुकूल श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करते थे । सुनने में आया है कि विशेषतः कार्तिकी पूर्णिमा को, जब शरद ऋतु समाप्त होती है, वह ब्राह्मणों को रत्न-दान करता था ।।४४८-४४९।।

सुवर्णं रजतं चैव मणीनथ च मौक्तिकान् ।।४५०
वज्रान् महाधनांश्चैव वैदूर्याजिनराङ्कवान् ।
रत्नराशीन् विनिक्षिप्य दक्षिणार्थे स भारत ।।४५१
ततः प्राह द्विजश्रेष्ठान् विरूपाक्षो महाबलः ।
गृह्णीत रत्नान्येतानि यथोत्साहं यथेष्टतः ।।४५२
येषु येषु च भाण्डेषु भुक्तं वो द्विजसत्तमाः ।
तान्येवादाय गच्छध्वं स्ववेश्मानीति भारत ।।४५३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इत्युक्तवचने तस्मिन् राक्षसेन्द्रे महात्मनि
यथेष्टं तानि रत्नानि जगृहुर्ब्राह्मणर्षभाः ।।४५४
ततो महार्हैस्ते सर्वे रत्नैरभ्यर्चिताः शुभैः ।
ब्राह्मणा मृष्टवसनाः सुप्रीताः स्म ततोऽभवन् ।।४५५

भोजन के अनन्तर अनेक सोने, चाँदी, मणि, मुक्ता, हीरे, वैदूर्यमणि, मृगचर्म एवं रत्नों के ढेर लगाकर विरूपाक्ष ने ब्राह्मणों से कहा–विप्रवरो ! आप अपनी इच्छा और उत्साह के अनुसार इन रत्नों को उठा ले जाइये। जिन पात्रों से आपने भोजन किया है, उन्हें भी साथ ले जाँय ।।४५०-४५३।। महात्मा राक्षसराज के इस प्रकार कहने पर उन ब्राह्मणों ने अपनी इच्छा के अनुसार वे सभी रत्न ले लिये। उन सुन्दर महामूल्य रत्नों द्वारा पूजे हुए वे श्रेष्ठ वस्त्र धारी ब्राह्मण अत्यन्त प्रसन्न हुए ।।४५४-४५५।।

www.vicharkrantibooks.org

ततस्तान् राक्षसेन्द्रश्च द्विजानाह पुनर्वचः ।
नानादेशगतान् राजन् राक्षसान् प्रतिषिध्य वै ।।४५६
अद्यैकं दिवसं विप्रा न वोऽस्तीह भयं क्वचित् ।
राक्षसेभ्यः प्रमोदध्वमिष्टतो यात माचिरम् ।।४५७
ततः प्रदुद्रुवुः सर्व विप्रसंघाः समन्ततः ।
गौतमोऽपि सुवर्णस्य भारमादाय सत्वरः ।।४५८
कृच्छ्रात् समुद्धरन् भारं न्यग्रोधं समुपागमत् ।
न्यषीदच्च परिश्रान्तः क्लान्तश्च क्षुधितश्च सः ।।४५९
ततस्तमभ्यगाद् राजन् राजधर्मा खगोत्तमः ।
स्वागतेनाभिनन्दंश्च गौतमं मित्रवत्सलः ।।४६०

फिर विरूपाक्ष ने विभिन्न देशों से आये हुए राक्षसों को हिंसा-कर्म से रोक कर उन ब्राह्मणों से कहा–विप्रो ! आज के दिन आप लोगों की ओर से कोई भय नहीं है। इसलिए शीघ्र ही सुख पूर्वक अपने-अपने इच्छित स्थानों को चल जाने में विलम्ब न कीजिये ।।४५६-४५७।। यह सुनकर सभी ब्राह्मण चारों ओर तेजी से चले गए। सुवर्ण का भार बड़ी कठिनता से ढोता हुआ गौतम भी शीघ्रता से चलता हुआ वट वृक्ष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के पास पहुँच कर, थक कर बैठ गया। वह भूख से अत्यन्त पीड़ित और क्लान्त हो रहा था ॥४५८-४५९॥ फिर पक्षी श्रेष्ठ एवं मित्रवत्सल राजधर्मा ने गौतम के पास आकर उसका स्वागत तथा अभिनन्दन किया ॥४६०॥

तस्य पक्षाग्रविक्षेपैः क्लमं व्यपनयत् खगः ।
पूजां चाप्यकरोद् धीमान् भोजन चाप्यकल्पयत् ॥४३१
स भुक्तवान् सुविश्रान्तो गौतमोऽचिन्त यत् तदा ।
हाटकस्याभिरूपस्य भारोऽय सुमहान् मया ॥४६२
गृहीतो लोभमोहाभ्यां दूरं च गमनं मम ।
न चास्ति पथि भोक्तव्यं प्राणसंधारणं मम ॥४६३
किं कृत्वा फारयेयं वै प्राणानित्यभ्यचिन्तयत् ।
ततः स पथि भोक्तव्यं प्रेक्षमाणो न किंचन ॥४६४
कृतघ्नः पुरुषव्याघ्र मनसेदमचिन्तयत् ।
अयं बकपतिः पार्श्वेमांसराशिः स्थितो महान् ॥४६५
इमं हत्वा गृहीत्वा च यास्येऽहं समभिद्रुतम् ॥४६६

उस मेधावी पक्षी ने अपने पंखों के अगले भाग से गौतम की हवा की और उसका पूजन कर भोजन की व्यवस्था की ॥४६१॥ भोजन और विश्राम के बाद गौतम सोचने लगा—मैंने लोभ-मोह के वशीभूत होकर सुन्दर सुवर्ण का यह महान् भार ग्रहण कर लिया। अभी मुझे बहुत दूर चलना है, मार्ग में भोजन के लिये कुछ भी नही है, जिससे मैं अपनी प्राण रक्षा कर सकूँगा॥४६२-४६३॥अब मैं किस उपाय द्वारा प्राण धारण कर सकूँगा ? इस प्रकार सोचता हुआ वह कृतघ्न निश्चय करने लगा कि यह बगुलों का राजा राजधर्मा मेरे पास ही तो है। यह मांस का बहुत सारा लोथड़ा है। इसी को मार कर साथ ले लूँ और शीघ्रता से चल दूँ ॥४६४--४६६॥

अथ तत्र महार्चिष्माननलो वातसारथिः ।
तस्याविदूरे रक्षार्थं खगेन्द्रेण कृतोऽभवत् ॥४६७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स चापि पार्श्वे सुष्वाप विश्वस्ता बकराट् तदा ।
कृतघ्नस्तु स दुष्टात्मा तं जिघांसुरथाग्रतः ।।४६८
ततोऽलातेन दीप्तेन विश्वस्तं निजघान तम् ।
निहत्य च मुदा युक्तः सोऽनुबन्धं न दृष्टवान् ।।४६९
स तं विपक्षरोमाणं कृत्वाग्नावपचत् तदा ।
तं गृहीत्वा सुवर्णं च ययौ द्रुततरं द्विजः ।।४७०

भीष्मजी बोले–युधिष्ठिर ! राजधर्मा ने अपने मित्र गौतम के रक्षार्थ उससे थोड़ी दूर पर अग्नि जला रखी थी, हवा के कारण उससे बड़ी-बड़ी लपटें उठने लगीं ।।४६७।। राजधर्मा को अपने मित्र पर विश्वास था, इसलिए उसके निकट ही सो गया । यह देख कर गौतम ने जलती हुई लकड़ी उठा कर उसके सिर पर प्रहार किया और उसकी हिंसा कर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई । मित्र-वध के पाप की ओर उसने ध्यान नहीं दिया ।।४६८-४६९।। गौतम ने उस मृत पक्षी के पंख और बाल नोंचकर उसे अग्नि में पकाया और साथ लेकर तथा सुवर्ण का भार सिर पर उठा कर तेजी से वहाँ से भाग निकला ।।४७०।।

(ततो दाक्षायणीपुत्रं नागर्तं तं तु भारत ।
विरूपाक्षश्चिन्तलन् वै हृदयेन विदूयता) ।।
ततोऽन्यस्मिन् गते चाह्नि विरूपाक्षोऽब्रवीत् सुतम् ।
न प्रेक्षे राजधर्माणमद्य पुत्र खगोत्तमम् ।।४७१
स पूर्वसंध्यां ब्रह्माणं वन्दितुं याति सर्वदा ।
मां वाहृष्ट्वाकदाचित् स न गच्छति गृहं खगः ।।४७२
उभे द्विरात्रिसंध्ये वै नाभ्यगात् स ममालयम् ।
तस्मान्न शुद्धचते भावो मम स ज्ञायतां सुहृत् ।।४७३
स्वाध्यायेन वियुक्तो हि ब्रह्मवर्चसवर्जितः ।
तद्व्रतस्तत्र मे शङ्का हन्यात् तं स द्विजाधमः ।।४७४
दुराचारस्तु दुर्बुद्धिरिङ्गितैर्लक्षितो मया ।
निष्कृपो दारुणाकारो दुष्टो दस्युरिवाधमः ।।४७५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस दिन जब राजधर्मा अपने मित्र विरूपाक्ष के यहाँ न पहुंचा तो विरूपाक्ष का हृदय व्याकुल हो उठा और वह चिन्ता करने लगे और दूसरा दिन बितने पर तो उन्होंने अपने पुत्र से कहाकि मैं आज राजधर्मा को नहीं देख रहा हूँ। वे नित्य प्रति प्रातः काल ब्रह्माजी की वन्दना से लौटते हुए मुझ से मिले बिना कभी अपने घर को नहीं लौटते थे ॥४७१-४७२॥ आज दो संध्याएँ व्यतीत होने पर भी, वे मेरे घर नहीं आये, इससे संदेह हो रहा है। तुम उनका पता लगाओ ॥४७३॥ स्वाध्याय रहित अधम ब्राह्मण गौतम ब्रह्मतेज रहित एवं हिंसक जान पड़ता था। उस पर मुझे संदेह था कि कहीं मेरे मित्र की हत्या न कर डाले ॥१७४ उसकी चेष्टाओं से वह मुझे दुर्बुद्धि, दुराचारी एवं निर्दयी जान पड़ता था। आकार से ही वह भयानक और दुष्ट डाकू के समान अधम था ॥४७५॥

गौतमः स गतस्तत्र तेनोद्विग्नं मनो मम।
पुत्र शीघ्रमितो गत्वा राजधर्मनिवेशनम्।
ज्ञायतां स विशुद्धात्मा यदि जीवति मा चिरम् ॥४७६
स एवमुक्तस्त्वरितो रक्षोभिः सहितो ययौ।
न्यग्रोधं तत्र चापश्यत् कङ्कालं राजधर्मणः ॥४७७

स रुदन्नगमत् पुत्रो राक्षसेन्द्रस्य धीमतः।
त्वरमाणः परं शक्त्या गौतमग्रहणाय वै ॥४७८
ततोऽविदूरे जगृहुर्गौतमं राक्षसास्तदा।
राजधर्मशरीरं च पक्षास्थिचरणोज्झितम् ॥४७९

मतादायाथ रक्षांसि द्रुतं मेरुव्रजं ययुः।
राज्ञश्च दर्शयामासुः शरीरं राजधर्मणः ॥४८०
कृतघ्नं पुरुषं तं च गौतमं पापकारिणम् ॥४८१

वह यहाँ से लौट कर उन्हीं के स्थान पर गया, इसलिए मैं उद्वेगित हूँ। बेटा ! तुम शीघ्र वहाँ जाकर पता लगाओ कि राजधर्मा जीवित हैं या नहीं ? इस कार्य में देर न करो ॥४७६॥ पिता की आज्ञा प्राप्त कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राक्षसों को साथ ले वह उस वटवृक्ष के निकट पहुंचा। वहाँ उसे राजधर्मा का कंकाल पड़ा दिखाई दिया ॥४७७॥ विरूपाक्ष का पुत्र राजधर्मा की दशा देख कर रो उठा और पूरी शक्ति से गौतम को पकड़ने के लिए दौड़ा ॥४७८॥ कुछ दूर जाने पर ही राक्षसों ने गौतम को पकड़ लिया। उन्हें उसके पास पंख, पैर तथा अस्थि-रहित शव भी मिल गया ॥४७९॥ गौतम को लेकर वे तुरन्त मेरुव्रज पहुंचे। वहाँ राजा को उन्होंने राजधर्मा का मृत देह दिखाया और पापाचारी गौतम को सामने उपस्थित किया ॥४८०-४८१॥

रुरोद राजा तं दृष्ट्वा सामात्यः सपुरोहितः।
आर्तनादश्च सुमहानभूत् तस्य निवेशने।
सस्त्रीकुमारं च पुरं बभूवास्वस्थमानसम् ॥४८२
अथाब्रवीन्नृपः पुत्रं पापोऽयं वध्यतामिति।
अस्य मांसैरिमे सर्वे विहरन्तु यथेष्टतः ॥४८३
पापाचारः पापकर्मा पापात्मा पापसाधनः।
हन्तव्योऽयं मम मतिर्भवद्भिरिति राक्षसाः ॥४८४
इत्युक्ता राक्षसेन्द्रेण राक्षसा घोरविक्रमाः।
नैच्छन्त तं भक्षयितुं पापकर्माणमित्युत ॥४८५

अपने मित्र की यह दशा देख कर मन्त्री आदि के सहित विरूपाक्ष रोने लगे। राजभवन में आर्तनाद गूँज उठा। सर्वत्र शोक छा गया ॥४८२॥ तब राजा ने अपने पुत्र से कहा—इस पापी को मार कर सभी राक्षसों में इसका माँस उपभोगार्थ बांट दो॥४८३॥ राक्षसो! यह पापाचारी, पापकर्मा और पापात्मा है। इसके सभी साधन पापमय हैं। इस लिये इसकी हत्या कर देनी चाहिये ॥४८४॥ विरुपाक्ष के आदेश पर भी भयंकर राक्षसों ने गौतम को खाने की इच्छा नहीं की, क्योंकि वह महा पापी था ॥४८५॥

दस्यूनां दीयतामेष साध्वद्य पुरुषाधमः।
इत्यूचुस्ते महाराज राक्षसेन्द्रं निशाचराः ॥४८६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शिरोभिः प्रणताः सर्वे व्याहरन् राक्षसाधिपम् ।
न दातुमर्हसि त्वं नो भक्षणायास्य किल्बिषम् ॥४८७
एवमस्त्विति तानाह राक्षसेन्द्रो निशाचरान् ।
दस्यूनां दीयतामेष कृतघ्नोऽद्यैव राक्षसाः ॥४८८
इत्युक्ता राक्षसास्तेन शूलपट्टिशपाणयः ।
कृत्वा तं खण्शः पाप दस्युभ्यः प्रददुस्तदा ॥४८९
दस्यवश्चापि नैच्छन्त तमत्तु पापकारणम् ।
क्रव्यादा अपि राजेन्द्र कृतघ्नं नोपभुञ्जते ॥४९०

तब उन राक्षसों ने राजा से कहा—प्रभो ! इस नराधम का माँस दस्युओं को दे दें, हमें इसका पाप भक्षण न करावें । सभी राक्षसों ने विरूपाक्ष के चरणों में मस्तक रख कर प्रार्थना की ॥४८६-४८७॥ राक्षस राजने उनसे कहा—यही सही, इस कृतघ्न को दस्युओं को दे डालो ॥४८८॥ राजा की आज्ञा प्राप्त कर हाथ में शूल और पट्टिश लिये हुए राक्षसों ने गौतम के खण्ड-खण्ड कर दस्युओं को दे दिया ॥४८९॥ उन दस्युओं ने भी उस पापकर्मा का भक्षण न किया । मांसभक्षी जीव भी कृतघ्न का माँस नहीं खाते ॥४९०॥

ब्रह्मघ्ने च सुरापे च चौरे भग्नव्रते तथा ।
निष्कृतिर्विहिता राजन् कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः ॥४९१
मित्रद्रोही नृशंसश्च कृतघ्नश्च नराधमः ।
क्रव्यादैः कृमिभिश्चैव न भुज्यन्ते हि तादृशाः ॥४९२
ततश्चितां बकपतेः कारयामासराक्षसः ।
रत्नैर्गन्धैश्च बहुभिर्वस्त्रैश्च समलंकृताम् ॥४९३
ततः प्रज्वाल्य नृपतिर्बकराजं प्रतापवान् ।
प्रेतकार्याणि विधिवद् राक्षसेन्द्रश्चकार ह ॥४९४
तस्मिन् काले च सुरभिर्देवी दाक्षायणी शुभा ।
उपरिष्टात् ततस्तस्य सा बभूव पयस्विनी ॥४९५

ब्रह्म-हत्यारे शराब पीने वाले, चोर तथा व्रत तोड़ने वाले के लिए भी शास्त्र में प्रायश्चित कहा है, परन्तु कृतघ्न के उद्धार का कोई विधान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नहीं है ॥४९१॥ मित्रद्रोही, नृशंस, नराधम और कृतघ्न मनुष्यों का मांस मांस भोजी जीव-जन्तु और कीड़े भी नहीं खाते ॥४९२॥ भीष्मजी ने कहा—युधिष्ठर ! उसके पश्चात् विरूपाक्ष ने राजधर्मा के लिए चिता बनवा कर उसे रत्नों, चन्दनादि सुगंधों एवं वस्त्रों से भले प्रकार सजवाया ॥४९३॥ फिर राजधर्मा के मृत शरीर को उस चिता पर रख कर विरूपाक्ष ने उसमें अग्नि लगायी और विधि सहित मित्र दाह-संस्कार किया ॥४९५॥ उसी समय दिव्य गौ दक्षपुत्री सुरभि आकाश में आकार चिता के ठीक ऊपर स्थित हो गयी ॥४९५॥

तस्या वक्त्राच्च्युतः फेनः क्षीरमिश्रस्तदानघ ।
सोऽपतद् वै ततस्तस्यां चितायां राजधर्मणः ॥४९६
ततः संजीवितस्तेन बकराजस्तदानघ ।
उत्पत्य च समीयाय विरूपाक्षं बकाधिपः ॥४९७
ततोऽभ्ययाद् देवराजो विरूपाक्षपुरं तदा ।
प्राह चेदं विरूपाक्षं दिष्ट्या संजीवितस्त्वया ॥४९८
श्रावयामास चेन्द्रस्तं विरूपाक्षं पुरातनम् ।
यथा शापः पुरा दत्तो ब्रह्मणा राजधर्मणः ॥४९९
यदा बकपतौ राजन् ब्रह्माणं नोपसर्पति ।
ततो रोषादिदं प्राह खगेन्द्राय पितामहः ॥५००

उसके मुख से दूध मिश्रित फेन झरने लगा और वह फेन ठीक राजधर्मा की उस चिता पर गिरा ॥४९६॥ अनघ ! उस फेन के प्रभाव से राजधर्मा उसी समय जीवत हो उठा और उड़ कर विरूपाक्ष से जा मिला ॥४९७॥ उसी समय सुरराज इन्द्र विरूपाक्ष के पास आकर बोले कि "तुम्हारे बकराज को पुनर्जीवन मिला, यह अत्यन्त सौभाग्य की बात है ॥४९८॥ इन्द्र ने उन्हें एक पुरातन कथा सुनाई, जिनके अनुसार ब्रह्माजी ने राजधर्मा को शाप दिया ॥४९९॥ एक समय की बात है कि सभा में राजधर्मा नहीं पहुंच पाये, इस पर ब्रह्माजी ने अत्यन्त क्रोध में शाप दे डाला ॥५००॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यस्मान्मूढो मम सभां नागतोऽसौ बकाधमः ।
तस्माद् वधं स दुष्टात्मा नचिरात् समवाप्स्यति ।।५०१
तदयं तस्य वचनान्निहतो गौतमेन वै ।
तेनैवामृततसिक्तश्च पुनः संजीवितो बकः ।।५०२
राजधर्मा बकः प्राह प्रणिपत्य पुरन्दरम् ।
यदि तेऽनुग्रहकृता मयि बुद्धिः सुरेश्वर !
सखायं मे सुदयितं गौतमं जीवयेत्युत ।।५०३
तस्य वाक्यं समादाय वासवः पुरुषर्षभ ।
सिक्त्वामृतेन तं विप्रं गौतमं जीवयत् तदा ।।५०४
सभाण्डोपस्करं राजंस्तमासाद्य बकाधिपः ।
सम्परिष्वज्य सुहृदं प्रीत्या परमया युतः ।।५०५
अथ तं पापकर्माणं राजधर्मा बकाधिपः ।
विसर्जयित्वा सधनं प्रविवेश स्वमालयम् ।।५०६

वह मूर्ख बगुला आज मेरी सभा में उपस्थित नहीं हुआ, इसीलिए उसे शीघ्रही हत्या के संकट में पड़ना होगा।।५०१।।ब्रह्माजी के उस शाप-वश ही गौतम ने बकराज की हत्या की थी । ब्रह्माजी ने ही अमृत छिड़क कर पुनर्जीवित किया है ।।५०२।। फिर राजधर्मा ने इन्द्र को प्रणाम करके कहा—देवराज ! यदि आपकी मुझ पर कृपा है तो मेरे मित्र गौतम को भी पुनर्जीवन प्रदान कीजिये ।।५०३।। पुरुष श्रेष्ठ ! राजधर्मा के इस प्रकार अनुरोध पर इन्द्र ने गौतम को भी अमृत छिड़ कर जीवित किया ।।५०४।। बर्तन और स्वर्णादि सहित अपने सुहृद गौतम को जीवित देख कर राजधर्मा ने अत्यन्त स्नेह से उसे हृदय से लगाया ।।५०५।। फिर राजधर्मा ने उस पापाचारी गौतम को धन सहित विदा करके अपने निवास स्थान में प्रवेश किया ।।५०६।।

यथोचितं च स बको ययौ ब्रह्मसदस्तथा ।
ब्रह्मा चैनं महात्मानमातिथ्येनाभ्यपूजयत् ।।५०७
गौतमश्चापि सम्प्राप्य पुनस्तं शबरालयम् ।
शूद्रायां जनयामास पुत्रान् दुष्कृतकारिणः ।।५०८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शापश्च सुमहांस्तस्य दत्तः सुरगणैस्तदा।
कुक्षौ पुनर्भ्वाः पापोऽयं जनयित्वा चिरात् सुतान्।
निरयं प्राप्स्यति महत् कृतघ्नोऽयमिति प्रभो ॥५०९
एतत् प्राह पुरा सर्वं नारदो मम भारत ॥५१०
संस्मृत्य चापि सुमहदाख्यानं भरतर्षभ ।
मयापि भवते सर्वं यथावदनुवर्णितम् ॥५११

फिर राजधर्मा यथोचित रीति से पितामह ब्रह्माजी की सभा में उपस्थित हुआ और ब्रह्माजी ने भी उस महात्मा का स्वागत-सत्कार किया ॥५०७॥ गौतम भी वहाँ से चल कर पुतः भीलों में जाकर रहने लगा और उसने बहुत-से पुत्र उत्पन्न किये ॥५०८॥ फिर देवताओं ने गौतम को शाप दिया कि यह पापी अत्यन्त कृतघ्न है और बहुत दिनों से विषय-वासना में पड़ा हुआ है। अपने पापों के कारण यह घोर नरक को प्राप्त होगा ॥५०९॥ युधिष्ठिर! पूर्वकाल में यह सम्पूर्ण प्रसंग मुझे महर्षि नारद ने सुनाया था। इस महान् आख्यान को याद करके मैंने तुम्हारे प्रति कहा है ॥५१०-५११॥

कुतः कृतघ्नस्य यशः कुतः स्थानं कुतः सुखम्।
अश्रद्धेयः कृतघ्नो हि कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः ॥५१२
मित्रद्रोहो न कर्त्तव्यः पुरुषेण विशेषतः।
मित्रध्रुङ्नरकं घोरमनन्तं प्रतिपद्यते ॥५१३
कृतज्ञेन सदा भाव्यं मित्रकामेन चैव ह।
मित्राच्च लभते सर्वं मित्रात् पूजां लभेत च ॥५१४
मित्राद् भोगांश्च भुञ्जीत मित्रेणापत्सु मुच्यते।
सत्कारैरुत्तमैर्मित्रं पूजयेत विचक्षणः ॥५१५

कृतघ्न को यश किस प्रकार मिल सकता है? उसे स्थान और सुखकी प्राप्ति किस प्रकार हो सकती है? कृतघ्न विश्वासपात्र नहीं होता। इस लिए शास्त्रों में उसके लिए कोई प्रायश्चित्त नहीं कहा है ॥५१२॥ मनुष्य को विशेष ध्यान पूर्वक मित्र द्रोह के पाप से बचना उचित है। मित्रद्रोही मनुष्य अनन्त काल के लिए घोर नरक को प्राप्त होता है॥५१३॥ प्रत्येक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनुष्य को सदा कृतघ्न रहना उचित है और उसे मित्रकी आकाक्षा रखनी चाहिये । क्योंकि मित्र के सहयोग से सम्मान आदि सभी कुछ प्राप्त होता है ।।५१४।। मित्र की सहायता से भोगों की प्राप्ति होती है और मित्र की सहायता से ही विपत्तियों से छूट पाता है । इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति सत्कारादि द्वारा मित्रकी पूजा करे ।।४१५।।

परित्याजो बुधैः पापः कृतघ्नो निरपत्रपः ।
मित्रद्रोही कुलाङ्गारः पापकर्मा नराधमः ।।५१६
एष धर्मभृतां श्रेष्ठ प्रोक्तः पापो मया तव ।
मित्रद्रोही कृतघ्नो वै किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।।५१७
एतच्छ्रुत्वा तदा वाक्यं भीष्मेणोक्तं महात्मना ।
युधिष्ठिरः प्रीतमना बभूव जनमेजय ।।५१८

पापी, कृतघ्न, निर्लज्ज, मित्रद्रोही, कुलांगार और पापकर्मी पुरुष का विद्वान व्यक्तियों को सदा त्याग करना चाहिये ।।५१६।। युधिष्ठिर ! इस प्रकार मैंने तुम्हें पापी, मित्रद्रोही और कृतघ्न पुरुष के विषय में बताया है अब और क्या सुनने की इच्छा रखते हो ।।५१७।। वेशम्पायनजी ने कहा—जनमेजय ! महात्मा भीष्म के इन वाक्यों को सुनकर महाराज युधिष्ठिर अपने मन में अत्यन्त प्रसन्न हुए ।।५१८।।

—:※:—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

४-युधिष्ठिर गीता

श्रुत्वा स राजा राजर्षेरिन्द्रद्युम्नस्य तत् तदा ।
मार्कण्डेयान्महाभागात् स्वर्गस्य प्रतिपादनम् ॥१
युधिष्ठिरो महाराज पुनः पप्रच्छ तं मुनिम् ।
कीदृशीषु ह्यवस्थासु दत्त्वा दानं महामुने ॥२
इन्द्रलोकं त्वनुभवेत् पुरुषस्तद् ब्रवीहि मे ।
गार्हस्थ्येऽप्यथवा बाल्ये यौवने स्थविरेऽपि वा ।
यथा फलं समश्नाति तथा त्वं कथयस्व मे ॥३
वृथा जन्मानि चत्वारि वृथा दानानि षोडश ।
वृथा जन्म ह्यपुत्रस्य ये च धर्मबहिष्कृताः ॥४
परपाकेषु येऽश्नन्ति आत्मार्थं च पचेत् तु यः ।
पर्यश्नन्ति वृथा ये च तदसत्यं प्रकीर्त्यते ॥५

वैशम्पायनजी बोले कि महाभाग मार्कण्डेयजी के द्वारा राजर्षि इंद्र-द्युम्न को पुनः स्वर्ग प्राप्त होने की बात सुनकर उन मुनिवर से राजा युधिष्ठिर ने पूछा ॥१॥ महामुने ! किन अवस्थाओं में देने वाले मनुष्य को इन्द्रलोक का सुख प्राप्त होता है, यह मेरे प्रति कहिये ॥२॥ मनुष्य जो फल बाल्यावस्था, गृहस्थाश्रम, युवावस्था या वृद्धावस्था में दान देने से प्राप्त करता है, उसका वर्णन मुझसे करने की कृपा कीजिये ॥३॥ मार्कण्डेयजी ने कहा—चार प्रकार के जीवन और सोलह प्रकार के दान व्यर्थ माने गये हैं । जिसके पुत्र नहीं है, जो धर्म से भ्रष्ट हो चुके हैं, जो सदा दूसरों की रसोई में भोजन किया करते हैं अथवा जो केवल अपने लिये ही रसोई तैयार करते हैं और अतिथि आदि को न खिला कर स्वयं अकेले ही भोजन कर लेते हैं, उनका भोजन असत् कहा जाता है । इसलिये, इन चार प्रकार के मनुष्यों का जन्म वृथा ही है ॥४-५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आरूढपतिते दत्तमन्यायोपहृतं च यत् ।
व्यर्थं तु पतिते दानं ब्राह्मणे तस्करे तथा ॥६
गुरौ चानृतिके पापे कृतघ्ने ग्रामयाजके ।
वेदविक्रयिणे दत्तं तथा वृषलयाजके ॥७
ब्रह्मबन्धुषु च यद् दत्तं यद् दत्तं वृषलीपतौ ।
कीजनेषु च यद् दत्तं व्यालग्राहे तथैव च ॥८
परिचारकेषु यद् दत्तं वृथा दानानि षोडश ।
तमोवृतस्तु यो दद्याद् भयात् क्रोधात् तथैव च ॥९
भुङ्क्ते च दानं तत् सर्वं गर्भस्थस्तु नरः सदा ।
ददद् दानं द्विजातिभ्यो वृद्धभावेन मानवः ॥१०

जो वानप्रस्थ आश्रम में जाकर पुनः गृहस्थी हो गया हो वह 'आरूढ़ पतित' कहा जाता है । उसको दान देना व्यर्थ है । इसी प्रकार अन्याय से कमाये हुये धन का दान अथवा पतित ब्राह्मण या चोर को दिया हुआ दान व्यर्थ ही समझना चाहिये ॥६॥ गुरुजन, झूठ बोलने वाला, पापी, कृतघ्न, ग्राम पुरोहित, वेद को बेचने वाला, अयोग्य से यज्ञ कराने वाला, अधम ब्राह्मण, शूद्रा को पत्नी बनाने वाला ब्राह्मण, सर्प को पकड़ कर उनके द्वारा जीविका कमाने वाला, सेवक और स्त्री इनको दिया हुआ दान व्यर्थ है । (इसमें गुरुजनों, सेवकों और स्त्रियों को जो कुछ दिया जाय, वह दान नहीं कहा जा सकता, वह तो मनुष्यमात्र का कर्त्तव्य है ।) ॥७-८॥ जो मनुष्य तमोगुण के कारण भय अथवा क्रोध से दान दे, वह अपने उन दिये हुये दानों का फल अगला जन्म धारण के समय गर्भावस्था में भोगता है । तात्पर्य यह कि तामसी दान का फल दुःख रूप में तथा श्रेष्ठ ब्राह्मण को दिये हुये दान का महत्त्व अधिक होने पर जैसी कामना हो, वैसा फल मिलता है ॥९-१०॥

तस्मात् सर्वास्ववस्थासु सर्वदानानि पार्थिव ।
दातव्यानि द्विजातिभ्यः स्वर्गमार्गजिगीषया ॥११
चातुर्वर्ण्यस्य सर्वस्य वर्तमानः प्रतिग्रहे ।
केन विप्रा विशेषेण तारयन्ति तरन्ति च ॥१२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जपैर्मन्त्रैश्च होमैश्च स्वाध्यायाध्ययनेन च ।
नावं वेदमयीं कृत्वा तारयन्ति तरन्ति च ॥१३
ब्राह्मणांस्तोषयेद् यस्तु तुष्यन्ते तस्य देवताः ।
वचनाच्चापि विप्राणां स्वर्गलोकमवाप्नुयात् ॥१४
पितृदैवतपूजाभिर्ब्राह्मणाभ्यर्चनेन च ।
अनन्तं पुण्यलोकं तु गन्तासि त्वं न संशयः ॥१५

इसलिये जो मनुष्य स्वर्गारोहण की इच्छा करे उसे श्रेष्ठ ब्राह्मणों को ही सब प्रकार के दान देने चाहिये ॥११॥ युधिष्ठिर ने पूछा—जो ब्राह्मण चारों वर्णों में से सभी का दान लेते हैं, वे किस विशेष धर्म के पालन द्वारा दूसरों को तारते और स्वयं भी तर जाते हैं ॥१२॥ मार्कण्डेयजी बोले—जप, मन्त्र, होम, स्वाध्याय और वेदाध्ययन द्वारा वेदमयी तरणि को बनाकर ब्राह्मणगण दूसरों को तारते और स्वयं भी तरते हैं ॥१३॥ ब्राह्मणों को संतुष्ट करने वालों पर सब देवता प्रसन्न रहते हैं। ब्राह्मणों के आशीर्वाद से भी स्वर्ग की प्राप्ति संभव है ॥१४॥ हे राजन् ! तुम पितरों और देवताओं के पूजन और ब्राह्मणों के आदर सत्कार करने के कारण अक्षय पुण्यलोक को प्राप्त होगे, इसमें सन्देह नहीं है ॥१५॥

श्लेष्मादिभिर्व्याप्ततनुर्म्रियमाणो विचेतनः ।
ब्राह्मणा एव सम्पूज्याः पुण्यं स्वर्गमभीप्सता ॥१६
श्राद्धकाले तु यत्नेन भोक्तव्या ह्यजुगुप्सिताः ।
दुर्वर्णः कुनखी कुष्ठी मायावी कुण्डगोलकौ ॥१७
वर्जनीयाः प्रयत्नेन काण्डपृष्ठाश्च देहिनः ।
जुगुप्सितं हि यच्छ्राद्धं दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥१८
ये ये श्राद्धे न युज्यन्ते मूकान्धबधिरादयः ।
तेऽपि सर्वे नियोक्तव्या मिश्रिता वेदपारगैः ॥१९
प्रतिग्रहश्च वै देयः शुणु यस्य युधिष्ठिर ।
प्रदातारं तथाऽऽत्मानं यस्यारयति शक्तिमान् ॥२०

जो श्लेष्मायुक्त हो गया हो, जो मरने के समीप हो और अचेतावस्था में पड़ा हो, उसे यदि पुण्यमय स्वर्गलोक की कामना हो तो ब्राह्मणों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

का पूजन भी करे ॥१६॥ श्राद्ध में श्रेष्ठ ब्राह्मणों को ही भोजन करावे। घृणोत्पादक वर्ण वाले, काले या टेढ़े नख वाले, कुष्ठी, धूर्त्त, माता के व्यभिचार से उत्पन्न, पीठ पर तरकस बाँध कर क्षत्रिय वृत्ति से पेट पालने वाले, ऐसे ब्राह्मण श्राद्ध में त्याज्य हैं। क्योंकि, उनको भोजन कराने से श्राद्ध निन्दित हो जाता है और निन्दित श्राद्ध से अग्नि द्वारा काष्ट के नष्ट होने के समान यजमान नष्ट हो जाता है ॥१७-१८॥ किन्तु, नेत्र-हीन, वाणी-हीन, श्रोत्र-हीन आदि जिन ब्राह्मणों को श्राद्ध में वर्जित कहा है, वे सब ब्राह्मण वेदज्ञानी ब्राह्मणों के साथ श्राद्ध में सम्मिलित हो सकते हैं ॥१९॥ हे युधिष्ठिर ! जो दान ग्रहण करने वाला दाता को और स्वयं को भी तार सके, उस व्यक्ति के सम्बन्ध में तुम्हें बताता हूँ ॥२०॥

तस्मिन् देयं द्विजे दानं सर्वागमविजानता ।
प्रदातारं यथाऽऽत्मानं तारयेद् यः स शक्तिमान् ॥२१
न तथा हविषो होमैर्न पुष्पैर्नानुलेपनैः ।
अग्नयः पार्थ तुष्यन्ति यथा ह्यातिथिभोजने ॥२२
तस्मात् त्वं सर्वयत्नेन यतस्वातिथिभोजने ।
पादोदकं पादघृतं दीपमन्नं प्रतिश्रयम् ॥२३
प्रयच्छन्ति तु ये राजन् नोपसर्पन्ति ते यमम् ।
देवमाल्यापनयनं द्विजोच्छिष्टावमार्जनम् ॥२४
आकल्पः परिचर्या च गात्रसंवाहनानि च ।
अत्रैकैकं नृपश्रेष्ठ गोदानाद्धयतिरिच्यते ॥२५

शक्तिशाली ब्राह्मण वही है जो दाता को और स्वयं को भी संसार-सागर से तार सके। इसलिये ज्ञानीजन उन्हीं को दान दें ॥२१॥ अग्नि देवता अतिथियों को भोजन कराने से जितने प्रसन्न होतेहैं, उतने हविष्य के हवन और पुष्प चन्दन आदि चढ़ाने से भी नहीं होते ॥२२॥ इसलिये हे राजन् ! तुम अतिथियों को भोजन दिया करो। जो पुरुष अतिथि के चरण धोने के लिये जल, पाँवों में मलने के लिये तेल, भोजन के लिये अन्न, निवास के लिये स्थान और प्रकाश के लिये दीपक प्रदान करते हैं, वे यम सदन में कभी नहीं जावे ॥२३॥ देव विग्रहों पर चढ़े हुये चन्दन,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

फूल आदि को यथा समय उतारना, ब्राह्मणों की जूठन उठाना, उन्हें चन्दन, माला से विभूषित करना, उनके चरण आदि अङ्गों को दबाना तथा अन्य प्रकारों से सेवा-सुश्रूषा करना आदि प्रत्येक कार्य गौ का दान करने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है ।।२४-२५।।

कपिलायाः प्रदानात् तु मुच्यते नात्र संशयः ।
तस्मादलंकृतां दद्यात् कपिलां तु द्विजातये ।।२६
श्रोत्रियाय दरिद्राय गृहस्थायाग्निहोत्रिणे ।
पुत्रदाराभिभूताय तथा ह्यनुपकारिणे ।।२७
एवंविधेषु दातव्या न समृद्ध षु भारत ।
को गुणो भरतश्रेष्ठ समृद्ध ष्वभिवर्जितम् ।।२८
एकस्यैका प्रदातव्या न बहूनां कदाचन ।
सा गौर्विक्रयमापन्ना हन्यात् त्रिपुरुषं कुलम् ।।
न तारयति दातारं ब्राह्मणं नैव नैव तु ।।२९
सुवर्णस्य विशुद्धस्य सुवर्णं यः प्रयच्छति ।
सुवर्णानां शतं तेन दत्तं भवति शाश्वतम् ।।३०

कपिला गौ का दान करने से सभी पापों से छुटकारा होता है, इसलिये कपिला गौ को अलङ्कार आदि से सजा कर उसे ब्राह्मण को दान करना उचित है ।।२६।। जिसे दान दिया जाय, वह ब्राह्मण श्रोत्रिय, निर्धन, गृहस्थ, नियमित अग्निहोत्र करने वाला, दरिद्रता के कारण स्त्री-पुत्रों से तिरस्कार पाने वाला, दाता का जिसने कभी प्रत्युपकार न किया हो और भविष्य में भी कभी जिससे प्रत्युपकार की कोई आशा न हो ।।२७।। हे भारत ! गौ का दान ऐसे ही ब्राह्मण को करे, धनवान ब्राह्मण को न करे । धनवान को दान करने से क्या लाभ है ? ।।२८।। एक ब्राह्मण को ही एक गौ दे, बहुतों को देने से कहीं वह दान की हुई गौ बेच दी जाय तो वह माता की तीन पीढ़ियों के लिये हानिप्रद होगी । उससे दाता और गृहीता कोई भी पार नहीं उतर सकता ।।२९।। जो मनुष्य श्रेष्ठ वर्ण वाले ब्राह्मण को सुवर्ण-दान करे, उसे सौ सुवर्ण मुद्राओं के फल की प्राप्ति होती है ।।३०।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अनड्वाहं तु यो दद्याद बलवन्तं धुरंधरम् ॥३१
स निस्तरति दुर्गाणि स्वर्गलोकं च गच्छति ।
वसुन्धरां तु यो दद्याद् द्विजाय विदुरात्मने ।
दातारं ह्यनुगच्छन्ति सर्वे कामाभिवाञ्छिताः ॥३२
पृच्छन्ति चात्र दातारं वदन्ति पुरुषा भुवि ।
अध्वनि क्षीणागात्राश्च पांसुपादावगुण्ठिताः ॥३३
तेषामेव श्रमार्तानां यो ह्यन्नं कथयेद् बुधः ।
अन्नदातृसमः सोऽपि कीर्त्यते नात्र संशयः ॥३४
तस्मात्त्वं सर्वदानानिहित्वान्नं सम्प्रयच्छ ह ।
न हीदृशं पुण्यफलं विचित्रमिह विद्यते ॥३५
यथाशक्ति च यो दद्यादन्नं विप्रेषु संस्कृतम् ।
स तेन कर्मणाऽऽप्नोति प्रजापतिसलोकताम् ॥३६
अन्नमेव विशिष्टं हि तस्मात् परतरं न च ॥३७
अन्नं प्रजापतिश्चोक्तः स च संवत्सरो मतः ।
संवत्सरस्तु यज्ञोऽसौ सर्वं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥३८
तस्मात् सर्वाणि भूतानि स्थावराणि चराणि च ।
तस्मादन्नं विशिष्टं हि सर्वेभ्य इति विश्रुतम् ॥३९
येषां तटाकानि महोदकानि
वाप्यश्च कूपाश्च प्रतिश्रयाश्च ।
अन्नस्य दानं मधुरा च वाणी
यमस्य ते निवेचना भवन्ति ॥४०

जो मनुष्य ब्राह्मण को ऐसा बैल दान देते हैं, जो अपने कंधे पर जुआ उठाने का सामर्थ रखते हैं, उन दाताओं को दुःख और संकटों से छुटकारा मिलता है और वे स्वर्ग लोक को प्राप्त होते हैं ॥३१॥ जो विद्वान् ब्राह्मण को भूमि प्रदान करता है, उस दाता को सभी इच्छित भोग बिना प्रयास ही प्राप्त हो जाते हैं ॥३२॥ मार्ग चलने से थके हुए, दुबले-पतले, धूल भरे पैरों वाले, भूखे-प्यासे पथिक आकर पूछने लगें कि हमें भोजन कहां मिल सकेगा ? उनको अन्न मिलने का पता देने से भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्न-दान के समान ही पुण्य होता है ॥३३-३४॥ इसलिये, सभी दानोंको छोड़ कर केवल अन्नदान करते रहो। क्योंकि, संसार में अन्नदान के समान पुण्य प्रदान करने वाला और विलक्षण अन्य दान कोई नहीं है ॥३५॥ अपने सामर्थ्य के अनुसार श्रेष्ठ प्रकार से बनाया हुआ अन्न जो व्यक्ति ब्राह्मणों को देता है, वह अपने उस पुण्य कार्य के बल से प्रजापति के लोक को प्राप्त होता है ॥३६॥ इसलिये, अन्न ही सबसे महत्वपूर्ण है, उससे बढ़ कर अन्य और कोई वस्तु नहीं है। वेदों में अन्न को प्रजापति कहा गया है और प्रजापति को संवत्सर तथा संवत्सर साक्षात् यज्ञ स्वरूप है एवं यज्ञ में सभी स्थित हैं ॥३७-३८॥ यज्ञसे सभी चर-अचर जगत की उत्पति है। इसलिए अन्न ही सब पदार्थों में श्रेष्ठ है। इसे सभी जानते हैं ॥३९॥ अगाध जल वाले तालाब, पोखर, बावड़ी कुए खदवाने वाले,धर्मशालाएँ बनवाने वाले,अन्नदान करने वाले,मीठे वचन बोलने वाले व्यक्ति यमराज की दण्ड देने वाली वाणी नहीं सुनते ॥४०॥

धान्यं श्रमेणार्जितवित्तसंचितं
विप्रे सुशीले च प्रयच्छते यः।
वसुन्धरा तस्य भवेत् सुतुष्टा
धारां वसूनां प्रतिमुञ्चतीव ॥४१

अन्नदाः प्रथमं यान्ति सत्यवाक् तदनन्तरम्।
अयाचितप्रदाता च समं यान्ति त्रयो जनाः ॥४२
कौतूहलसमुत्पन्नः पर्यपृच्छद् युधिष्ठिरः।
मार्कण्डेयं महात्मानं पुनरेव सहानुजः ॥४३

यमलोकस्य चाध्वानमन्तरं मानुषस्य च।
कीदृशं किम्प्रमाणं वा कथं वा तन्महामुने।
तरन्ति पुरुषाश्चैव केनोपायेन शंस मे ॥४४

जो मनुष्य श्रेष्ठ ब्राह्मण को अपने द्वारा उपार्जित धन-धान्य प्रदान करता है, उस पर वसुन्धरा की अत्यन्त कृपा होती और उसके घर में धन की धारा-सी प्रवाहित रहती है ॥४१॥ प्रथम अन्नदाता स्वर्ग में जाते

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं, उसके बाद सत्यवादी और फिर बिना याचना दान देने वाले स्वर्ग को प्राप्त होते हैं। इन तीनों प्रकार के पुण्यात्माओं की एक जैसी गति कही गई है ॥४२॥ वैशम्पायन जी बोले—हे जनमेजय ! इस पर भाइयों सहित युधिष्ठिर अत्यन्त कौतूहल में होकर मार्कण्डेयजी से इस प्रकार पुनः पूछने लगे ॥४३॥ महामुने ! यमलोक मनुष्य लोक से कितनी दूरी पर है, वह कितना बड़ा और कैसा है तथा किस उपाय से मनुष्य उस यमलोक के संकटों से छूट सकते हैं, यह मेरे प्रति कहिये ॥४४॥

सर्वगुह्यतमं प्रश्नं पवित्रमृषिसंस्तुतम् ।
कथयिष्यामि ते राजन् धर्म्यं धर्मभृतां वर ॥४५
षडशीतिसहस्राणि योजनानां नराधिप ।
यमलोकस्य चाध्वानमन्तरं मानुषस्य च ॥४६
आकाशं तदपानीयं घोरं कान्तारदर्शनम् ।
न तत्र वृक्षच्छाया वा पानीयं केतनानि च ॥४७
विश्रमेद् यत्र वै श्रान्तः पुरुषोऽध्वनि कर्शितः ।
नीयते यमदूतैस्तु यमस्याज्ञाकरैर्बलात् ॥४८
नराःस्त्रियस्तथैवान्ये पृथिव्यां जीवसञ्ज्ञिताः ।
ब्राह्मणेभ्यः प्रदानानि नानारूपाणि पार्थिव ॥४९
हयादीनां प्रकृष्टानि तेऽध्वानं यान्ति वै नराः ।
संनिवार्यातपं यान्ति छत्रेणैव हि छत्रदाः ॥५०

मार्कण्डेयजी बोले—धर्मज्ञों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर ! तुम्हारा प्रश्न जिस विषय के लिये है, वह अत्यन्त गोपनीय पवित्र, धर्म सम्मत और ऋषि-गण के लिये भी आदर के योग्य है। उसे मैं तुम्हारे प्रति कहता हूँ॥४५॥ राजन् ! मनुष्य लोक से यमलोक छियासी हजार योजन दूर है इतना अन्तर है ॥४६॥ उसके मार्ग में जल सहित आकाश ही है, वह बड़ा भयानक और दुर्गम मार्ग है। वहाँ छाया के लिये वृक्ष नहीं हैं तथा जल या कोई भी ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ मार्ग का थका हुआ जीव क्षण भर भी विश्राम कर पावे ॥४७॥ यमराज के आदेश में रहने वाले दूत इस पृथ्वी के पुरुषों, स्त्रियों तथा अन्य जीवों को बल पूर्वक बांध ले जाते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

॥४८॥ जिन्होंने इस पृथ्वी पर ब्राह्मणों को विभिन्न प्रकार के अश्व आदि श्रेष्ठ वाहन दान किये हैं, वे उस मार्ग पर सुखपूर्वक यात्रा करते हैं। जिन्होंने छत्र-दान किया है, वे वहाँ छत्र के द्वारा धूप से बचाव करते हुए चलते हैं ॥४९-५०॥

तृप्ताश्चैवान्नदातारो ह्यतृप्ताश्चाप्यनन्नदाः ।
वस्त्रिणो वस्त्रदा यान्ति अवस्त्रा यान्त्यवस्त्रदाः ॥५१
हिरण्यदाः सुखं यान्ति पुरुषास्त्वभ्यलंकृताः ।
भूमिदास्तु सुखं यान्ति सर्वैः कामैः सुतर्पिताः ॥५२
यान्ति चैवापरिक्लिष्टा नराः सस्यप्रदायकाः ।
नराः सुखतरं यान्ति विमानेषु गृहप्रदाः ॥५३
पानीयदा ह्यतृषिताः प्रहृष्टमनसो नराः ।
पन्थानं द्योतयन्तश्च यान्ति दीपप्रदाः सुखम् ॥५४
गोप्रदास्तु सुखं यान्ति निर्मुक्ताः सर्वपातकैः ।
विमानैर्हससंयुक्तैर्यान्ति मासोपवासिनः ॥५५

जिन्होंने अन्न का दान किया है, वे भोजन से तृप्त रहते हुए यात्रा करते हैं। परन्तु, जिन्होंने अन्न का दान नहीं किया, उन्हें यात्रा में भूख का कष्ट सहना होता है। वस्त्रदान करने वाले वस्त्र पहने हुए तथा वस्त्र न देने वाले व्यक्ति नंगे रह कर ही उस मार्ग पर चलते हैं ॥५१॥ सुवर्ण का दान करने वाले सुवर्णाभूषणों से अलंकृत होकर सुख पूर्वक चलते हैं और भूमिदान करने वाले मनुष्य सभी इच्छित भोगों को पाकर तृप्त हुए वहाँ जाते हैं ॥५२॥ खेत में खड़ी हुई खेती का दान करने वालों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता तथा घर का दान करने वालों को वहाँ जाने के लिये विमानों की सुख-सुविधा उपलब्ध होती है ॥५३॥ जलदान करने वालों को प्यास से पीड़ित नहीं होना पड़ता, वे प्रसन्न मन से मार्ग को पार करते हैं और दीप-दान करने वालों के मार्ग में प्रकाश रहता है। इससे यात्रा सुखपूर्वक पूर्ण होती है ॥५४॥ गोदान करने वालों के सभी पाप छूट जाते हैं और वे सुख पूर्वक जाते हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिन्होंने एक मास तक उपवास किया है, वे हंस में जुते हुए विमानों पर चढ़ कर जाते है ॥५५॥

तथा बर्हिप्रयुक्तैश्च षष्ठरात्रोपवासिनः ।
त्रिरात्रं क्षपते यस्तु एकभक्तेन पाण्डव ॥५६

अन्तरा चैव नाश्नाति तस्य लोका ह्यनामयाः ।
पानीयस्य गुणा दिव्याः प्रेतलोकसुखावहाः ॥५७
तत्र पुष्पोदका नाम नदी तेषां विधीयते ।
शीतलं सलिलं तत्र पिवन्ति ह्यमृतोपमम् ॥५८
ये च दुष्कृतकर्माणः पूयं तेषां विधीयते ।
एवं नदी महाराज सर्वकामप्रदा हि सा ॥५९

तस्मात् त्वमपि राजेन्द्र पूजयैनान् यथाविधि ।
अध्वनि क्षीणगात्रश्च पथि पांसुसमन्वितः ॥६०
पृच्छते ह्यन्नदातारं गृहमायाति चाशया ।
तं पूजयाथ यत्नेन सोऽतिथिर्ब्राह्मणश्च सः ॥६१

जो छटवीं रात तक का उपवास रखते हैं, मयूरयान से जाते हैं और जो एक बार भोजन करके तीन रात्रि तक कुछ नहीं खाते अथवा तीन रात्रि तक बीच में भोजन नहीं करते, उस उपवास व्रत के प्रभाव से उन्हें पुण्यलोक की प्राप्ति होती है ॥५६॥ जलदान के प्रभाव को अत्यन्त अलौकिक कहा है। उससे परलोक में सुख मिलता है। जलदान करने वाले पुण्यात्माओं को पुष्पोदका नाम की नदी मार्ग में मिलती है। वे उसका ठंडा और मधुर जल पीते हैं ॥५७-५८॥ राजन् ! वह पुष्पोदका नदी सभी कामनाओं को देती है। परन्तु पापियों के लिये उस नदी का जल पीव बन जाता है ॥५९॥ इसलिये, राजेन्द्र ! इन ब्राह्मणों का तुम भी यथाविधि पूजन करो। मार्ग चलने से थक कर दुर्बल हुआ, धूलि-धूसरित, अन्नदाता का पता पूछता भोजन की आशा से जो घर पर आवे, उसका यत्न पूर्वक सत्कार करो। क्योंकि जो अतिथि है, वह यदि ब्राह्मण न हो तो भी ब्राह्मण के समान ही है ॥६०-६१॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तं यान्तमनुगच्छन्ति देवाः सर्वे सवासवाः ।
तस्मिन् सम्पूजिते प्रीता निराशायान्त्यपूजिते ॥६२
तस्मात् त्वमपि राजेन्द्र पूजयैनं यथाविधि ।
एतत् ते शतशः प्रोक्तं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥६३
पुनः पुनरहं श्रोतुं कथां धर्मसमाश्रयाम् ।
पुण्यामिच्छामि धर्मज्ञ कथ्यमानांत्वया विभो ॥६४
धर्मान्तरं प्रति कथां कथ्यमानां मया नृप ।
सर्वपापहरां नित्यं शृणुष्वावहितो मम ॥६५

जब किसी के घर पर ऐसा अतिथि जाता है, उस समय इन्द्र आदि सभी देवता उसके पीछेपीछे वहाँ जाते हैं और उस अतिथि के सत्कार को देख कर वे देवता भी प्रसन्न होते और यदि उसका निरादर होता है तो देवता भी निराश हो जाते हैं ॥६२॥ इसलिये, राजाओं में इन्द्ररूप युधिष्ठिर ! तुम भी अतिथिसत्कार यथाविधि करते रहो । यह बात मैंने कई बार कही है, अब, और क्या सुनने की इच्छा है ? ॥६३॥ युधिष्ठिर ने कहा—हे धर्मज्ञ ! हे विभो ! आपके मुख से कही हुई पुण्यमयी धर्मचर्चा को मैं बारम्बार सुनने की इच्छा करता हूँ ॥६४॥ मार्कण्डेयजी ने कहा—महाराज ! अब तुम्हें अन्य धर्म-सम्बन्धी बातें सुनाता हूँ, उन्हें तुम सावधान होकर सुनो । वे बातें पापों को सदा नष्ट करने वाली हैं ॥६५॥

कपिलायां तु दत्तायां यत् फलं ज्येष्ठपुष्करे ।
तत् फलं भरतश्रेष्ठ विप्राणां पादधावने ॥६६
द्विजपादोदकक्लिन्ना यावत् तिष्ठति मेदिनी ।
तावत् पुष्करपर्णेन पिवन्ति पितरो जलम् ॥६७
स्वागतेनाग्नयस्तृप्ता आसनेन शतक्रतुः ।
पितरः पादशौचेन अन्नाद्येन प्रजापतिः ॥६८
यावद् वत्सस्य वै पादौ शिरश्चैव प्रदृश्यते ।
तस्मिन् काले प्रदातव्या प्रयत्नेनान्तरात्मना ॥६९
अन्तरिक्षगतो वत्सो यावद् योन्यां प्रदृश्यते ।
तावद् गौ पृथिवी ज्ञेया यावद् गर्भं न मुञ्चति ॥७०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हे भरत श्रेष्ठ ! जो फल ज्येष्ठ पुष्कर तीर्थ में कपिला गौ का दान करनेसे प्राप्त होता है, वही फल ब्राह्मणोंके चरण धोने से प्राप्त होता है ॥६६॥ ब्राह्मणों के चरण धोने के जल से पृथ्वी जब तक भीगी रहती है, तब तक पितरगण कमल के पत्ते से जल पीते हैं ॥६७॥ ब्राह्मण का स्वागत करने से अग्नि देवता तृप्त होते हैं, उसे आसन देने से इन्द्र और पाँव धोने से पितर तृप्त होते हैं तथा उनके लिये भोजन-योग्य देने से ब्रह्मा तृप्त हो जाते हैं ॥६८॥ जिस समय गर्भवती गौ बालक उत्पन्न कर रही हो, और जब उस बछड़े का मुख और दो पाँव ही निकले दिखाई दे रहे हों तभी उस गौ का पवित्र भाव से दान कर देना उचित है ॥६९॥जब तक बछड़ा योनि से निकलते समय लटकता दिखाई दे, अर्थात् पृथ्वी को न छुए और गौ उसे योनि से बिल्कुल अलग न कर दे, तब तक वह गौ पृथ्वी रूप ही होती है ॥७०॥

यावन्ति तस्या रोमाणि वत्सस्य च युधिष्ठिर ।
तावद् युगसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥७१
सुवर्णनासां यः कृत्वा सुखुरां कृष्णधेनुकाम् ।
तिलैः प्रच्छादितां दद्यात् सर्वरत्नैरलंकृताम् ॥७२
प्रतिग्रहं गृहीत्वा यः पुनर्ददति साधवे ।
फलानां फलमश्नाति तदा दत्त्वा च भारत ॥७३
ससमुद्रगुहा तेन सशैलवनकानना ।
चतुरन्ता भवेद् दत्ता दृथिवी नात्र संशयः ॥७४
अन्तर्जानुशयो यस्तु भुङ्क्ते संसक्तभाजनः ।
यो द्विजः शब्दरहितं स क्षमस्तारणाय वै ॥७५

हे युधिष्ठिर ! उस गौ का दान करने से उस गौ और बछड़े के शरीर में जितने रोम होते हैं, उतने ही सहस्र युगों तक दान करने वाला स्वर्ग-लोक में निवास करता है ॥७१॥ जो दाता सुवर्ण की नासिका और श्रेष्ठ चाँदी के खुरों से सजी हुई तथा सब प्रकार के रत्नादि से अलंकृत हुई श्यामा गौ को तिलों से आच्छादित कर दान करता है अथवा वैसे दान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को ग्रहण करने वाला दान लेकर फिर किसी श्रेष्ठ पुरुष को देता है, वह सर्वश्रेष्ठ फल को प्राप्त करता है ।।७२-७३।। उस गौ का दान करने से समुद्र, गुहा वन, और काननों से युक्त चारों ओर की भूमि दान देने के समान फल मिलता है, इसमें सन्देह नहीं है ।।७४।। जो द्विज अपने हाथों को घुटनों के भीतर किये हुए मौन भाव से बैठा हुआ पात्र में एक हाथ लगाये हुए भोजन करता है वह स्वयं तो तरता ही है, दूसरों को भी तार देता है ।।७५।।

अपानपा न गदितास्तथान्ये ये द्विजातयः ।
जपन्ति संहितां सम्यक् ते नित्यं तारणक्षमाः ।।७६
हव्यं कव्यं च यत् किंचित् सर्वं तच्छ्रोत्रियोऽर्हति ।
दत्तंहि श्रोत्रिये साधौ ज्वलितेऽग्नौ यथाहुतम् ।।७७
मन्युप्रहरणा विप्रा न विप्राः शस्त्रयोधिनः ।
निहन्युर्मन्युना विप्रा वज्रपाणिरिवासुरान् ।।७८
धर्माश्रितेयं तु कथा कथितेयं तवानघ ।
यां श्रुत्वा मुनयः प्रीता नैमिषारण्यवासिनः ।।७९
वीतशोकभयक्रोधा विपाप्मानस्तथैव च ।
श्रुत्वेमां तु कथां राजन् न भवन्तीह मानवा ।।८०

मदिरा-पान न करने वाले, दोषारोपण से रहित तथा विधि सहित वेद संहिताओं का पाठ करने वाले, यह दूसरों को तारने सदा समर्थ होते हैं ।।७६।। हव्य और कव्य के सम्पूर्ण पदार्थों को पाने का अधिकारी श्रोत्रिय ब्राह्मण ही है । प्रज्वलित अग्नि में दी हुई आहुति के समान ही श्रेष्ठ श्रोत्रिय को दिया हुआ दान फल युक्त होता है ।।७७।। ब्राह्मण कभी लोहे के शस्त्र से नहीं लड़ते । उनका तो क्रोध ही अस्त्र शस्त्र हैं । जैसे इन्द्र अपने हाथ में वज्र लेकर असुरों का संहार करते हैं, वैसे ही, ब्राह्मण अपने क्रोध से ही अपराधी को नष्ट करने में समर्थ हैं ।।७८।। हे पाप रहित ! यह धर्म युक्त कथा जो मैंने तेरे प्रति कही है, इसे सुनने पर नैमिषारण्य में निवास करने वाले ऋषि बड़े प्रसन्न हुए थे ।।७९।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राजन् ! इस कथा को सुन कर मनुष्य शोक, भय, क्रोध और और पाप से छूट कर, इस संसार में पुनर्जन्म-धारण नहीं करते ॥८०॥

किं तच्छौचंभवेद् येन विप्रः शुद्धः सदा भवेत् ।
तदिच्छामि महाप्राज्ञ श्रोतुं धर्मभृतां वर ॥८१
वाक्शौचंकर्मशौचं च यच्चशौचं जलात्मकम् ।
त्रिभिः शौचैरुपेतो यः स स्वर्गी नात्र संशयः ॥८२
सायं प्रातश्च संध्यां यो ब्राह्मणोऽभ्युपसेवते ।
प्रजपन् पावनीं देवीं गायत्रीं वेदमातरम् ॥८३
स तया पावितो देव्या ब्राह्मणो नष्टकिल्बिषः ।
न सीदेत् प्रतिगृह्णानो महीपति ससागराम् ॥८४
ये चास्य दारुणाः केचिद् ग्रहाःसूर्यादयो दिवि ।
ते चास्यसौम्याजायन्तशिवाः शिवतराः सदा ॥८५

युधिष्ठिर ने प्रश्न किया—हे महाप्राज्ञ महर्षे ! आप धर्मात्माओं में श्रेष्ठ हैं । मेरे प्रति वह शौच कहिये, जिससे ब्राह्मण सदा शुद्ध रहा आता है । उसे सुनने की मेरी इच्छा है ॥८१॥ मार्कण्डेय जी ने कहा—वाक्शौच अर्थात् वाणी की पवित्रता, कर्मशौच अर्थात् क्रिया की पवित्रता, तथा जलशौच अर्थात् जल से देह की शुद्धि, इस प्रकार शौच के तीन भेद हैं । जो इनसे सम्पन्न है, वह स्वर्गलोक को पाने का अधिकारी है । इसमें संदेह नहीं है ॥८२॥ जो ब्राह्मण प्रातः सायं दोनों समय संध्या तथा सभी को पवित्र करने वाली वेदमाता भगवती गायत्री का मन्त्र जप करता है, वह उन गायत्री की कृपा से ही परम पवित्र और पाप-रहित हो जाता है । यदि वह समुद्र तक सम्पूर्ण पृथिवी का दान भी ले ले तो उसे किसी प्रकार का संकट नहीं सता सकता ॥८३-८४॥ यही नहीं, किन्तु, आकाशस्थ सूर्य आदि ग्रहों में जो कोई ग्रह उसके लिये अनिष्ट-कारी और भयंकर हो, वह ग्रह उस गायत्री मन्त्र के जपने-मात्र से उसके लिये सर्वदा सौम्य, सुख देने वाला और महान् मंगलकारी होता है ॥८५॥

सर्वे नानुगतं चैनं दारुणाः पिशिताशनाः ।
घोररूपा महाकाया धर्षयन्ति द्विजोत्तमम् ॥८६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नाध्यापनाद् याजनाद् वा अन्यस्माद् वा प्रतिग्रहात् ।
दोषो भवति विप्राणां ज्वलिताग्निसमा द्विजाः ॥८७
दुर्वेदा वा सुवेदा वा प्राकृताः संस्कृतास्तथा ।
ब्राह्मणा नावमन्तव्या भस्मच्छन्ना इवाग्नयः ॥८८
यथा श्मशाने दीप्तौजाः पावको नैव दुष्यति ।
एवं विद्वानविद्वान् वा ब्राह्मणो दैवतं महत् ॥८९
प्राकारैश्च पुरद्वारैः प्रासादैश्च पृथग्विधैः ।
नगराणि न शोभन्ते हीनानि ब्राह्मणोत्तमैः ॥९०

विशाल देह वाले, भयङ्कर रूप वाले, सम्पूर्ण क्रूर कर्मों के करने वाले, मांस भक्षण करने वाले राक्षस भी गायत्री जप करने वाले उस श्रेष्ठ ब्राह्मण पर आक्रमण करने में समर्थ नहीं हो सकते ॥८६॥ संध्योपासना करने वाले वे ब्राह्मण प्रज्वलित अग्नि के समान तेजस्वी होते हैं। विद्याध्ययन कराने, यज्ञानुष्ठान कराने तथा दूसरे से दान आदि कारणों से भी दोष उनके पास नहीं आते ॥८७॥ ब्राह्मण वेदपाठी हों या न हों, श्रेष्ठ संस्कारवान हों अथवा सामान्य मनुष्यों के समान संस्कार शून्य हों, उनका अपमान न करे। क्योंकि वे भस्म में छिपे हुए अग्नि के समान होते हैं ॥८८॥ प्रज्वलित अग्नि जैसे श्मशान में भी अपवित्र नहीं होती, वैसे ही ब्राह्मण विद्वान् हो अथवा अविद्वान्, उसे महान् देवता ही समझना चाहिये ॥८९॥ प्राचीरों, नगर के द्वारों और विभिन्न प्रकार के प्रासादों से भी श्रेष्ठ ब्राह्मण न रहें, तो नगर सुशोभित नहीं होते ॥९०॥

वेदाढ्या वृत्तसम्पन्ना ज्ञानवन्तस्तपस्विनः ।
यत्र तिष्ठन्ति वै विप्रास्तन्नाम नगरं नृप ॥९१
व्रजे वाप्यथवारण्ये यत्र सन्ति बहुश्रुताः ।
तत् तन्नगरमित्याहुः पार्थ तीर्थं च तद् भवेत् ॥९२
रक्षितारं च राजानं ब्राह्मणं च तपस्विनम् ।
अभिगम्याभिपूज्याथ सद्यः पापात् प्रमुच्यते ॥९३
पुण्यतीर्थाभिषेकं च पवित्राणां च कीर्तनम् ।
सद्भिः सम्भाषणं चैव प्रशस्तं कीर्त्यते बुधैः ॥९४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

साधुसङ्गमपूतेन वाक्सुभाषितवारिणा ।
पवित्रीकृतमात्मानं सन्तो मन्यन्ति नित्यशः ।।९५

राजन् ! वेद ज्ञाता, सदाचारी और तपस्या में रत ब्राह्मणों का जहाँ निवास हो, वही नगर है ।।९१।। गौओं के रहने का स्थान हो अथवा वन-प्रान्त, जहाँ बहुश्रुत ब्राह्मणों का निवास हो, वही नगर और तीर्थ समझना चाहिये ।।९२।। प्रजा की रक्षा में तत्पर राजा और तपस्या में लगा रहने वाला ब्राह्मण, इनके पास जाकर पूजा-सेवा करने से उसी समय सभी पापों से छूट जाता है ।।९३।। पुण्यतीर्थों में स्नान और पवित्र मन्त्रों का कीर्तन तथा श्रेष्ठ पुरुषों से वार्तालाप, इन तीनों कार्य को विद्वज्जन परम श्रेष्ठ बताते हैं ।।९४।। सत्सङ्ग से पवित्र हुई श्रेष्ठ सम्भाषण रूप वाणी और जल से स्नान, इनके द्वारा सन्तजन अपने को सदा ही पवित्र हुआ मान लेते हैं ।।९५।।

त्रिदण्डधारणं मौनं जटाभारोऽथ मुण्डनम् ।
वल्कलाजिनसंवेष्टं व्रतचर्याभिषेचनम् ।।९६
अग्निहोत्रं वने वासः शरीरपरिशोषणम् ।
सर्वाण्येतानि मिथ्या स्युर्यदि भावो न निर्मलः ।।९७
न दुष्करमनाशित्वं सुकरं ह्यशनं विना ।
विशुद्धि चक्षुरादीनां षण्णामिन्द्रियगामिनाम् ।।९८
विकारि तेषां राजेन्द्र सुदुष्करकरं मनः ।
ये पापानि न कुर्वन्ति मनोवाक्कर्मबुद्धिभिः ।
ते तपन्ति महात्मानो न शरीरस्य शोषणम् ।।९९
न ज्ञातिभ्यो दया यस्य शुक्लदेहोऽविकल्मषः ।
हिंसासातपसस्तस्य नानाशित्वं तपः स्मृतम् ।।१००

त्रिदण्ड धारण, मौनावलम्बन, सिर पर जटाओं का भार, मूँड़ मुड़ाना, देह पर वल्कल और मृगचर्म लपेटना, व्रत का आचरण करना, स्नान करना, अग्निहोत्र करना, वन में निवास करना और अपने देह को सुखा लेना—यह सब भाव शुद्ध हों तभी उपयोगी हैं, अन्यथा व्यर्थ समझने चाहिये ।।९६-९७।। चक्षु आदि इन्द्रियों के आहार का त्याग

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करना कठिन नहीं है, क्योंकि इन्द्रियों के विषयों का उपभोग न करें तो वह स्वयं ही सुगमता से होजाता है। परन्तु, राजन्! मन अत्यन्त विकारवान् है, अत. भावों के शुद्ध हुए बिना, उसको वश में करना दुष्कर कार्य है ॥९८॥ महात्मा और तपस्वी वे ही हैं जो मन, वचन, कर्म और बुद्धि से कभी पाप नहीं करते। शरीर को सुखा देना ही तपस्या नहीं कहा जा सकता ॥९९॥ जिसने व्रत, उपवास आदि के द्वारा देह की शुद्धि कर ली और विभिन्न प्रकार के पाप कर्म भी नहीं करता, परन्तु अपने कुटुम्बियों के प्रति मन में दया नहीं, उसकी वह निर्दयता ही उसके तप को नष्ट कर देती है। केवल भोजन का त्याग करना ही तपस्या नहीं है ॥१००॥

तिष्ठन् गृहे चैव मुनिर्नित्यं शुचिरलंकृतः।
यावज्जीवं दयावांश्च सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥१०१

न हि पापानि कर्माणि शुद्धयन्त्यनशनादिभिः।
सीदत्यनशनादेव मांसशोणितलेपनः ॥१०२
अज्ञातं कर्म कृत्वा च क्लेशो नान्यत् प्रहीयते।
नाग्निर्दहति कर्माणि भावशून्यस्य देहिनः ॥१०३

पुण्यादेव प्रव्रजन्ति शुद्धयन्त्यनशनानि च।
न मूलफलभक्षित्वान्न मौनान्नानिलाशनात् ॥१०४
शिरसो मुण्डनाद् वापि न स्थानकुटिकासनात्।
न जटाधारणाद् वापि न तु स्थण्डिलशय्यया ॥१०५

निरन्तर घर पर रहने वाले के यदि भाव शुद्ध हैं और उसमें सभी सद्गुण हैं तथा जीवन भर प्राणियों पर दया करता रहा है, उसे मुनि ही समझना चाहिए। क्योंकि, वह अपने श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा सभी पापों से छूट जाता है ॥१०१॥ भोजन के त्याग से पाप कर्मों का शोधन होता है, ऐसा नहीं समझना चाहिए। किन्तु, भोजन के त्याग से रक्त-मांस से लिया हुआ यह देह क्षीण अवश्य हो जाता है ॥१०२॥ जिन कार्यों का विधान शास्त्रों में नहीं है, उनको करने से केवल क्लेश ही मिलता है,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उनके द्वारा पाप नष्ट नहीं हो सकते । अग्निहोत्र आदि शुभ कर्म भी श्रद्धा विहीन पुरुष के पाप-कर्मों को दग्ध करने में सहायक नहीं होते ।।१०३।। पुण्य के प्रभाव से ही श्रेष्ठ गति की प्राप्ति होती है । उपवास भी पुण्य से ही शुद्ध करने वाला होता है । केवल मूल, फल भक्षण करने, मौन रहने अथवा वायु पीकर रहने से शुद्धि नहीं हो जाती ।।१०४।। मूँड मुँड़ाने, एक स्थान पर कुटिया बनाकर निवास करने, सिर पर जटा धारण करने और वेदी पर सोने से भी, पवित्र भाव के बिना शुद्धि नहीं होती ।।१०५।।

नित्यं ह्यनशनाद् वापि नाग्निशुश्रूषणादपि ।
न चोदकप्रवेशेन न [illegible]क्ष्माशयनादपि ।।१०६
ज्ञानेन कर्मणा वापि जरामरणमेव च ।
व्याधयश्च प्रहीयन्ते प्राप्यते चोत्तमं पदम् ।।१०७
बीजानि ह्यग्निदग्धानि न रोहन्ति पुनर्यथा ।
ज्ञानदग्धैस्तथा क्लेशैर्नात्मा संयुज्यते पुनः ।।१०८
आत्मना विप्रहीणानि काष्ठकुड्योपमानि च ।
विनश्यन्ति न संदेहः फेनानीव महार्णवे ।। १०९
आत्मानं विन्दते येन सर्वभूतगुहाशयम् ।
श्लोकेन यदि वार्धेन क्षीणं तस्य प्रयोजनम् ।।११०

नित्य उपवास करने, सब ओर अग्नि जलाकर तापने, जल में प्रवेश करने तथा पृथिवी पर सोने से भी शुद्धि होना संभव नहीं है ।।१०६।। तत्व ज्ञान के होने और श्रेष्ठ कर्म करने से ही मृत्यु तथा बुढ़ापा आदि मिट सकते और श्रेष्ठ पद की प्राप्ति हो सकती है ।।१०७।। जैसे अग्नि में जलने पर बीज पुनः नहीं उग सकते वैसे ही ज्ञानाग्नि में पड़कर अविद्या आदि क्लेशों के दग्ध हो जाने पर आत्मा का उनसे संयोग नहीं होता ।।१०८।। जीवात्मा के द्वारा परित्याग किये गये सभी शरीर काष्ठ और भीत के समान जड़ होकर महासागर में उठे हुए फेनों की भाँति ही नाश को प्राप्त होते हैं, इसमें संदेह नहीं ।।१०९।। सम्पूर्ण भूतों के हृदय में शयन करने वाले परमेश्वर का ज्ञान यदि एक-आध श्लोक से ही हो जाय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तो उसके लिए सब शास्त्रों का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं रहती ।।११०।।

द्वयक्षरादभिसंधाय केचिच्छ्लोकपदाङ्कितैः ।
शतैरन्यैः सहस्रैश्च प्रत्ययो मोक्षलक्षणम् ।।१११
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ।
ऊचुर्ज्ञानविदो वृद्धाः प्रत्ययो मोक्षलक्षणम् ।।११२
विदितार्थस्तु वेदानां परिवेद प्रयोजनम् ।
उद्विजेत् स तु वेदेभ्यो दावाग्नेरिव मानवः ।।११३
शुष्कं तर्कं परित्यज्य आश्रयस्व श्रुतिस्मृतिम् ।
एकाक्षराभिसम्बद्धं तत्त्वं हेतुभिरिच्छसि ।
बुद्धिर्न तस्य सिद्धयेत साधनस्य विपर्ययात् ।।११४
वेदपूर्वं वेदितव्यं प्रयत्नात्
तद् वै वेदस्तस्य वेदः शरीरम् ।
वेदस्तत्त्वं तत्समासोपलब्धौ
क्लीबस्त्वात्मा तत् स वेद्यस्य वेद्यम् ।।११५

किसी को राम, कृष्ण, शिव आदि दो अक्षरों से ही परमात्म तत्व का ज्ञान हो जाता है । किसी को श्लोक और पदों से युक्त अन्य सैंकड़ों और हजारों शास्त्र वचनों से ईश्वर के स्वरूप का ज्ञान है । जिस प्रकार भी हो सके, बोध से ही मोक्ष प्राप्त हो सकता है ।।१११।। जिसके मन में संशय भरा है, उसके लिये इहलोक, परलोक अथवा सुख कुछ भी नहीं है । वृद्धजनों और ज्ञानियों का कहना है कि ज्ञान ही मोक्ष का लक्षण है ।।११२।। वेदों के वास्तविक प्रयोजन को जानने वाला मनुष्य सभी वेदों से उसी प्रकार उपरत हो जाता है, जैसे दावानल से मनुष्य दूर हो जाते हैं ।।११३।। प्रणव से सम्बन्धित परमात्मतत्त्व को यदि संदेह-रहित भाव से समझना हो तो सभी तर्कों का त्याग कर श्रुति-स्मृति के वचनों का आश्रय लो । क्योंकि, उपरोक्त साधनों का आश्रय न लेने वाले की बुद्धि तत्व-निर्णय में समर्थ नहीं हो सकती ।।११४।। वेदों के द्वारा ही उस जानने योग्य परमात्म तत्त्व का ज्ञान प्रयत्न पूर्वक करे, क्योंकि परमात्म-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तत्त्व वेद स्वरूप ही है । उसे प्राप्त करने में वेद ही हेतु है, क्योंकि वेद उसका शरीर माना गया है । वह तत्त्व जानने में अत्यन्त गहन होने के कारण, जीवात्मा स्वयं ही उसे जानने में समर्थ नहीं हो सकता ॥११५॥

वेदोक्तमायुर्देवानामाशिषश्चैव कर्म्मणाम् ।
फलत्यनुयुगं लोके प्रभावश्च शरीरिणाम् ॥११६
इन्द्रियाणां प्रसादेन तदेतत् परिवर्जयेत् ।
तस्मादनशनं दिव्यं निरुद्धेन्द्रियगोचरम् ॥११७
तपसा स्वर्गगमनं भोगो दानेन जायते ।
ज्ञानेन मोक्षो विज्ञेयस्तीर्थस्नानादघक्षयः ॥११८
एवमुक्तस्तु राजेन्द्र प्रत्युवाच महायशाः ।
भगवन् श्रोतुमिच्छामि प्रधानविधिमुत्तमम् ॥११९
यत् त्वमिच्छसि राजेन्द्र दानधर्मं युधिष्ठिर ।
इष्टं चेदं सदा मह्यं राजन् गौरवस्तथा ॥१२०

वेदों में देवताओं की आयु और कर्मों के शुभाशुभ फल आदि का पूर्ण उल्लेख है । उसी के अनुसार संसार में देह धारण करने वालों का प्रभाव प्रत्येक युग में फलवान होता है ॥११६॥ इसलिये इन्द्रियों की शुद्धि के द्वारा इन सांसारिक विषय भोगों का त्याग कर दे । इन्द्रियों के निर्मल होने तथा उनके संयम से विषयों का त्याग होना दिव्य हो जाता है ॥११७॥ तप के द्वारा स्वर्ग की प्राप्ति होती है और दान के द्वारा भोगों की । ज्ञान के द्वारा मोक्ष मिलता और तीर्थ स्नान से पापों का क्षय हो जाता है, यह जानना चाहिए ॥११८॥ वैशम्पायन जी बोले कि मार्कण्डेय जी के इस प्रकार कहने पर महा यशस्वी युधिष्ठिर ने कहा—भगवन् ! अब मैं दान की प्रधान और उत्तम विधि सुनने का इच्छुक हूं ॥११९॥ मार्कण्डेयजी बोले - युधिष्ठिर ! जिस दान-धर्म को सुनने की तुम्हें उत्कंठा है, वह दान धर्म गौरव मय होने के कारण मुझे सदा प्रिय लगता है ॥१२०॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शृणु दानरहस्यानि श्रुतिस्मृत्युदितानि च ।
छायायां करिणः श्राद्धं तत् कर्णपरिवीजिते ।
दश कल्पायुतानीह न क्षीयेत युधिष्ठिर ॥१२१
जीवनाय समाक्लिन्नं वसु दत्त्वा महीयते ।
वैश्यं तु वासयेद् यस्तु सर्वयज्ञैः स इष्टवान् ॥१२२
प्रतिस्रोतश्चित्रवाहाः पर्जन्योऽन्नानुसंचरन् ।
महाधुरि यथा नावा महापापैः प्रमुच्यते ॥१२३
विप्लवे विप्रदत्तानि दधिमस्त्वक्षयाणि च ।
पर्वसु द्विगुणं दानमृतौ दशगुणं भवेत् ॥१२४
अयने विषुवे चैव षडशीतिमुखेषु च ।
चन्द्रसूर्योपरागे च दत्तमक्षयमुच्यते ॥१२५

दान के जो रहस्य श्रुति-स्मृतियों में कहे हैं, उनको सुनो । गुरुवार के दिन अमावस पड़े तो उसमें पीपल की छाया को गजच्छाया पर्व कहते हैं । उस गजच्छाया में, जहाँ पीपल के पत्तों की हवा लगे, उस प्रदेश में जल के समीप किया हुआ श्राद्ध एक लाख कल्पों तक नष्ट नहीं होता ॥१२१॥ जीविका के लिये राँधे गये अन्न का दान करने वाला स्वर्ग में निवास करता है और जो आश्रय की टटोल करने वाले पथिक के ठहरने के लिये स्थान दे, वह सब यज्ञों का अनुष्ठान पूरा कर लेता है ॥१२२॥ पूर्व की ओरे प्रवाहित होने वाली नदी का प्रवाह जहाँ पश्चिम की ओर मुड़ गया हो, उसे प्रतिस्रोत तीर्थ कहते हैं । उसमें किया हुआ श्रेष्ठ घोड़ों का दान अक्षय पुण्य देता है । अन्न के लिये घूमने वाले अतिथि रूपी इन्द्र को भोजन से सन्तुष्ट करना भी अक्षय पुण्य को उत्पन्न करता है । ग्रहण के समय नदियों के महान् प्रवाह मे खड़े होकर ब्राह्मणों को दिये हुए दधिमण्ड और पूर्वोक्त पदार्थ भी अक्षय-पुण्य प्राप्त कराने वाले हैं । इसी प्रकार नदियों के महान् प्रवाह में स्नान करने से घोर पापों से भी मुक्ति प्राप्त होती है ॥१२३॥ पर्व के अवसर पर दान देने से दुगुना और ऋतु के प्रारम्भ होने पर दान देने से दस गुना पुण्य होता है । उत्तरायण अथवा दक्षिणायन आरम्भ होने के दिन तुला और मेष की संक्राति वाले विषुव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योग में एवं मिथुन, कन्या, धनु, और मीन की संक्रातियों में अथवा चन्द्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण के समय का दान अक्षय कहा गया है ।।१२४-१२५।।

ऋतुषु दशगुणं वदन्ति दत्तं
शतगुणमृत्वयनादिषु ध्रुवम् ।
भवति सहस्रगुणं दिनस्य राहो-
र्विषुवति चाक्षयमश्नुते फलम् ।।१२६
नाभूमिदो भूमिमश्नाति राजन्
नायानदो यानमारुह्य याति ।
यान् यान् कामान् ब्राह्मणेभ्यो ददाति
तांस्तान् कामान् जायमानः स भुङ्क्ते ।।१२७
अग्नेरपत्यं प्रथमं सुवर्णं
भूर्वैष्णवी सूर्यसुताश्च गावः ।
लोकास्त्रयस्तेन भवन्ति दत्ता
यः काञ्चन गाञ्च महीं च दद्यात् ।।१२८
परं हि दानान्न बभूव शाश्वतं
भव्यं त्रिलोके भवते कुतः पुनः ।
तस्मात् प्रधानं परमं हि दानं
वदन्ति लोकेषु विशिष्टबुद्धयः ।।१२९

ऋतु प्रारम्भ होने के दिन दिया हुआ दान दस गुना और अयन आदि के दिन दिया हुआ दान सौ गुना फलदायक कहा गया है । इसी प्रकार ग्रहण के दिन दान करने का फल हजार गुना और विषुवयोग में दान करने का फल अक्षय भोग वाला होता है ।।१२६।। हे राजन् ! भूमिदान न करने वाला मनुष्य परलोक में पृथिवी का उपभोग नहीं कर सकता । अश्वादि का दान न करने वाला, किसी सवारी पर नहीं चढ़ सकता । इस जन्म में जिन वस्तुओं को ब्राह्मणों को दान करता है, वे वस्तुऐं परजन्म में उसे प्राप्त होती हैं ।।१२७।। सुवर्ण अग्नि की प्रथम संतति है । पृथिवी भगवान् विष्णु की पत्नी और गौऐं सूर्य की कन्या

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हैं। इसलिये सुवर्ण, गौ और पृथिवी, इन तीनों का दान करने पर तीनों लोकों का दान सम्पन्न होजाता है ॥१२८॥ जब त्रैलोक्य में दान से बढ़ कर शाश्वत पुण्य प्रदान करने वाला कोई अन्य कर्म पहिले कभी नहीं हुआ तो अभी ही कैसे हो सकता है ? इसीलिये, श्रेष्ठ बुद्धि वाले पुरुष दान को ही सर्वश्रेष्ठ पुण्यकर्म कहते हैं ॥१२९॥

श्रुत्वा तु राजा राजर्षेरिन्द्रद्युम्नस्य तत् तथा ।
मार्कण्डेयान्महाभागात् स्वर्गस्य प्रतिपादनम् ॥१३०
युधिष्ठिरो महाराज पप्रच्छ भरतर्षभ ।
मार्कण्डेयं तपोवृद्धं दीर्घायुषमकल्मषम् ॥१३१
विदितास्तव धर्मज्ञ देवदानवराक्षसाः ।
राजवंशाश्च विविधा ऋषिवंशाश्च शाश्वताः ॥१३२
न तेऽस्त्यविदितं किञ्चिदस्मिँल्लोके द्विजोत्तम ।
कथां वेत्सि मुने दिव्यां मनुष्योरगरक्षसाम् ॥१३३
देवगन्धर्वयक्षाणां किन्नराप्सरसां तथा ।
इदमिच्छाम्यहं श्रोतुं तत्त्वेन द्विजसत्तमः ॥१३४
कुवलाश्व इति ख्यात इक्ष्वाकुरपराजितः ।
कथं नामविपर्यासाद् धुन्धुमारत्वमागतः ॥१३५

वैशम्पायन जी बोले—जनमेजय ! मार्कण्डेय मुनि के द्वारा इन्द्रद्युम्न को पुनः स्वर्ग प्राप्त होने की बात सुनकर महाराज युधिष्ठिर ने उन पाप-रहित, दीर्घायु एवं तपोवृद्ध महात्मा से इस प्रकार प्रश्न किया ॥१३०-१३१॥ धर्मज्ञ ! आप देवता, दानव और राक्षसों को भले प्रकार जानते हैं और अनेकों राजवंशों तथा ऋषियों की प्राचीन वंश परम्परा का भी आपको पूर्णज्ञान है ॥१३२॥ विप्रोत्तम ! संसार में कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिसे आप न जानते हों। आप मनुष्य, नाग, राक्षस, देवता, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर और अप्सराओं की दिव्य कथाओं के भी ज्ञाता हैं ॥१३३॥ द्विजोत्तम ! मैं अब यह जानना चाहता हूँ कि इक्ष्वाकु वंशी राजा कुवलाश्व अपना नाम बदल कर 'धुन्धुमार' क्यों कहाने लगे थे ॥१३४-१३५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एतदिच्छामि तत्त्वेन ज्ञातुं भार्गवसत्तम ।
विपर्यस्तं यथा नाम कुवलाश्वस्य धीमतः ॥१३६
युधिष्ठिरेणैवमुक्तो मार्कण्डेयो महामुनिः ।
धौन्धुमारमुपाख्यानं कथयामास भारत ॥१३७

हन्त ते कथयिष्यामि शृणु राजन् युधिष्ठिर ।
धर्मिष्ठमिदमाख्यानं धुन्धुमारस्य तच्छृणु ॥१३८
यथा स राजा इक्ष्वाकुः कुवलाश्वो महापतिः ।
धुन्धुमारत्वमगमत् तच्छृणुष्व महीपते ॥१३९
महर्षिविश्रुतस्तात उत्तङ्क इति भारत ।
मरुधन्वसु रम्येषु आश्रमस्तस्य कौरव ॥१४०

भृगुवर ! बुद्धिमान राजा कुवलाश्व के इस नाम परिवर्तन का वास्तविक कारण जानने की मुझे उत्कण्ठा है ॥१३६॥ वैशम्पायनजी बोले—भारत ! धर्मराज युधिष्ठिर के इस प्रकार कहने पर महामुनि मार्कण्डेयजी ने धुन्धुमार का उपाख्यान प्रारम्भ किया ॥१३७॥ मार्कण्डेयजी ने कहा—युधिष्ठिर ! राजन् ! सुनो । धुन्धुमार का आख्यान धर्मयुक्त है । मैं इसे तुम्हें सुनाता हूँ ॥१३८॥ राजन् ! इक्ष्वाकुवंशी राजा कुवलाश्व जिस पर धुन्धुमार के नाम से प्रसिद्ध हुए, उसे सुनो ॥१३९॥ कौरव ! महर्षि उतङ्क का नाम अत्यन्त विख्यात है, उनका आश्रम मरु के रमणीय प्रदेश में है ॥१४०॥

उत्तङ्कस्तु महाराज तपोऽतप्यत् सुदुश्चरम् ।
आरिराधयिषुर्विष्णुं बहून् वर्षगणान् विभुः ॥१४१
तस्य प्रीतः स भगवान् साक्षाद् दर्शनमेयिवान् ।
दृष्ट्वैव चर्षिः प्रह्वस्तं तुष्टाव विविधैः स्तवैः ॥१४२

त्वया देव प्रजाः सर्वाः ससुरासुरमानवाः ।
स्थावराणि च भूतानि जङ्गमानि तथैव च ॥१४३
ब्रह्म वेदाश्च वेद्यं च त्वया सृष्टं महाद्युते ।
शिरस्ते गगनं देव नेत्रे शशिदिवाकरौ ॥१४४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निःश्वासः पवनश्चापि तेजोऽग्निश्च तवाच्युत ।
बाहवस्ते दिशः सर्वाः कुक्षिश्चापि महार्णवः ।।१४५
ऊरू ते पर्वता देव खं नाभिर्मधुसूदन ।
पादौ ते पृथिवी देवी रोमाण्योषधयस्तथा ।।१४६

महाराज ! उत्तङ्क ने भगवान् विष्णु को प्रसन्न करने की इच्छा से अनेक वर्षों तक घोर तप किया ।।१४१।। उनके तप से प्रसन्न होकर भगवान् ने उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिया, उस समय महर्षि नम्रता से झुक कर विभिन्न प्रकार से उनकी स्तुति करने लगे ।।१४२।। देव ! देवता, असुर, मनुष्य आदि सम्पूर्ण प्रजा आपसे ही उत्पन्न हुई है । स्थावर-जङ्गम सभी प्राणियों की सृष्टि आपके द्वारा ही हुई है ।।१४३।। ब्रह्मा, वेद और सभी ज्ञातव्य वस्तुएँ आपने प्रकट की हैं । आकाश आपका मस्तक, चन्द्र सूर्य नेत्र, वायु श्वास एवं अग्नि आपका तेज है । सभी दिशएँ आपकी भुजाएँ और महासागर कुक्षि स्थान है । हे मधुसूदन ! पर्वत आपके ऊरु और अन्तरिक्ष नाभि है । पृथ्वी आपके चरण और औषधियाँ रोम हैं ।।१४४-१४६।।

इन्द्रसोमाग्निवरुण देवासुरमहोरगाः ।
प्रह्वास्त्वामुपतिष्ठन्ति स्तुवन्तो विविधैः स्तवैः ।।१४७
त्वया व्याप्तानि सर्वाणि भूतानि भुवनेश्वर ।
योगिनः सुमहावीर्याः स्तुवन्ति त्वां महर्षयः ।।१४८
त्वयितुष्टे जगत् स्वास्थ्यं त्वयि क्रुद्धे महद्भयम् ।
भयानामपनेतासि त्वमेकः पुरुषोत्तम ।।१४९
देवानां मानुषाणां च सर्वभूतसुखावहः ।
त्रिभिर्विक्रमणैर्देव त्रयो लोकास्त्वया हृताः ।।१५०

प्रभो ! इन्द्र, सोम, अग्नि, वरुण, देवता, असुर और नाग--यह सभी आपके समक्ष सिर झुकाकर, विभिन्न प्रकार के स्तोत्रों द्वारा स्तुति कर, आपको करबद्ध प्रणाम करते हैं ।।१४७।। भुवनेश्वर ! आपने समस्त भूतों को व्याप्त किया हुआ है । महाशक्ति वाले योगी और महर्षि भी आपकी स्तुति करते हैं ।।१४८।। आपके सन्तुष्ट होने पर ही संसार स्वस्थ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और सुखी होता है तथा आपके क्रोधित होने पर घोर भय उपस्थित होता है। उस समय आप ही उस सम्पूर्ण भय को शान्त करने में समर्थ हैं ॥१४६॥ आप देवताओं, मनुष्यों और सब प्राणियों को सुखी करने वाले हैं। आपने तीन पग रखकर ही तीनों लोक जीत लिये थे ॥१५०॥

असुराणां समृद्धानां विनाशश्च त्वया कृतः।
तव विक्रमणैर्देवा निर्वाणमगमन् परम् ॥१५१
पराभूताश्च दैत्येन्द्रास्त्वयि क्रुद्धे महाद्युते।
त्वं हि कर्ता विकर्ता च भूतानामिह सर्वशः ॥१५२
आराधयित्वा त्वां देवाः सुखमेधन्ति सर्वशः।
एवं स्तुतो वृषीकेश उत्तङ्केन महात्मना ॥१५३
उत्तङ्कमब्रवीद् विष्णुः प्रीतस्तेऽहं वरं वृणु।
पर्याप्तो मे वरो ह्येष यदहं दृष्टवान् हरिम् ॥१५४
पुरुषं शाश्वतं दिव्यं स्रष्टारं जगतः प्रभुम्।
प्रीतस्तेऽहमलौल्येन भक्त्या तव च सत्तम।
अवश्यं हि त्वया ब्रह्मन् मतो ग्राह्यो वरो द्विज ॥१५५

आपने समृद्धिशाली असुरों का नाश किया। आपके ही पराक्रम से देवतागण परम सुख शान्ति को प्राप्त हुए हैं ॥१५१॥ आपके कुपित होने पर ही दैत्यराज देवताओं से हार जाते हैं। आप विश्व के समस्त प्राणियों की सृष्टि और संहार करने वाले हैं। आपकी आराधना से ही सब देवता सुख-समृद्धि पाते हैं ॥१५२॥ महात्मा उत्तङ्क द्वारा इस प्रकार स्तुति करने पर सभी इन्द्रियों के प्रेरक भगवान् विष्णु बोले—मुनिश्रेष्ठ ! मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। मुझसे कोई वर माँग लो ॥ १५३॥ उत्तङ्क बोले—प्रभो ! सम्पूर्ण विश्व के रचयिता आप दिव्य पुराणपुरुष एवं सर्वशक्तिमान् श्री हरि का मुझे दर्शन हुआ है, यही मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ वर है ॥१५४॥ भगवान् ने कहा—मैं तुम्हारे लोभ-रहित होने और श्रेष्ठ भक्ति के कारण तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। द्विजवर ! तुम्हें मुझसे कोई वर अवश्य माँगना चाहिए ॥१५५॥

एवं स छन्द्यमानस्तु वरेण हरिणा तदा ॥१५६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्तङ्कः प्राञ्जलिर्वव्रे वरं भरतसत्तम ।
यदि मे भगवन् प्रीतः पुण्डरीकनिभेक्षण ॥१५७
धर्मे सत्ये दमे चैव बुद्धिर्भवतु मे सदा ।
अभ्यासश्चभवेद्भक्त्यात्वयिनित्यं ममेश्वर ॥१५८
सर्वमेतद्धि भविता मत्प्रसादात् तव द्विज ।
प्रतिभास्यति योगश्च येन युक्तो दिवौकसाम् ॥१५९
त्रयाणामपि लोकानां महत् कार्यं करिष्यसि ।
उत्सादनार्थं लोकानां धुन्धुर्नाम महासुरः ।
तपस्यसि तपो घोरं श्रृणु यस्तं हनिष्यति ॥१६०

मार्कण्डेयजी बोले--भरतश्रेष्ठ ! इस प्रकार भगवान् का आग्रह देखकर उत्तङ्क मुनि ने हाथ जोड़कर वर माँगा ॥१५६॥ हे भगवन् ! हे कमलनयन ! यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हैं तो मेरी बुद्धि सदैव धर्म, सत्य और इन्द्रिय संयम में लगी रहे और आपके भजन का जो मुझे अभ्यास है, वह सदा स्थिर रहे ॥१५७-१५८॥ भगवान् ने कहा—ब्रह्मन् ! मेरी कृपा से यह सब तो होगा ही साथ ही तुम्हारे हृदय में उस योगविद्या का भी प्रकाश होगा, जिससे सम्पन्न होकर तुम देवताओं और तीनों लोकों की महान् कार्य सिद्धि में समर्थ होंगे ॥१५९॥ धुन्धु नाम से प्रसिद्ध एक महान् असुर त्रिलोकी का संहार करने के लिए घोर तप कर रहा है । जो वीर उस असुर को मारेगा उसका भी परिचय सुनो ॥१६०॥

राजा हि वीर्यवांस्तात इक्ष्वाकुरपराजितः ॥१६१
बृहदश्व इति ख्यातो भविष्यति महीपतिः ।
तस्य पुत्रः शुचिर्दान्तः कुवलाश्व इति श्रुतः ॥१६२
स योगबलमास्थाय मामकं पार्थिवोत्तमः ।
शासनात् तव विप्रर्षे धुन्धुमारो भविष्यति ।
एवमुक्त्वा तु तं विप्रं विष्णुरन्तरधीयत ॥१६३

इक्ष्वाकु वंश में बृहदश्व नामक एक प्रसिद्ध महा पराक्रमी एवं अजेय राजा उत्पन्न होंगे । उनका पवित्र एवं जितेन्द्रिय पुत्र कुवलाश्व के नाम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से प्रख्यात होगा ॥१६१-१६२॥ तुम्हारे आदेश से वे राजाओं में श्रेष्ठ कुवलाश्व ही मेरे योगबल के आश्रय से उस धुन्धु नामक राक्षस का संहार करेंगे और विश्व में धुन्धुमार के नाम से विख्यात होंगे ॥१६३॥

इक्ष्वाकौसंस्थिते राजन् शशादः पृथिवीमिमाम् ।
प्राप्तः परमधर्मात्मा सोऽयोध्यायां नृपोऽभवत् ॥१६४
शशादस्य तु दायादः ककुत्स्थो नाम वीर्यवान् ।
अनेनाश्चापि काकुत्स्थः पृथुश्चानेनसः सुतः ॥१६५
विष्वगश्वः पृथोः पुत्रस्तस्मादद्रिश्च जज्ञिवान् ।
अद्रेश्च युवनाश्वस्तु श्रावस्तस्यात्मजोऽभवत् ॥१६६
तस्य श्रावस्तको ज्ञेयः श्रावस्ती येन निर्मिता ।
श्रावस्तकस्य दायादो बृहदश्वो महाबलः । १६७
बृहदश्वस्य दायादः कुवलाश्व इति स्मृतः ।
कुवलाश्वस्य पुत्राणां सहस्राण्येकविंशतिः ॥१६८
सर्वे विद्यासु निष्णाता बलवन्तो दुरासदाः ।
कुवलाश्वश्च पितृता गुणैरभ्यधिकोऽभवत् ॥१६९

मार्कण्डेयजी ने कहा—महाराज इक्ष्वाकु की मृत्यु होने पर उनके परम धर्मात्मा पुत्र शशाद ने पृथिवी पर राज्य किया और अयोध्या में अपना निवास स्थान रखा ॥१६४॥ शशाद के पुत्र ककुत्स्थ हुए। ककुत्स्थ के अनेना और अनेना के पुत्र पृथु हुए ॥१६५॥ पृथु के विष्वगश्व और उसके पुत्र अद्रि हुए। अद्रि के पुत्र का नाम युवनाश्व और उसके पुत्र का नाम श्राव हुआ ॥१६६॥ श्राव का पुत्र श्रावस्त हुआ। उसने श्रावस्ती पुरी बसायी। उसी श्रावस्त के पुत्र महान् बलशाली वृहदश्व हुए ॥१६७॥ वृहदश्व के पुत्र कुवलाश्व हुए, इनके यहाँ इक्कीस हजार पुत्र उत्पन्न हुए ॥१६८॥ वे सभी सम्पूर्ण विद्याओं में पारगत, बलवान् एवं दुर्धर्ष वीर थे। कुवलाश्व भी श्रेष्ठ गुण वाले एवं अपने पिता से भी महान् हुए ॥१६९॥

समये तं पिता राज्ये बृहदश्वोऽभ्यषेचयत् ।
कुवलाश्वं महाराज शूरमुत्तमधार्मिकम् ॥१७०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुत्रसंक्रामितश्रीस्तु बृहदश्वो महीपतिः ।
जगाम तपसे धीमांस्तपोवनममित्रहा ।।१७१
अथ शुश्राव राजर्षि तमुत्तङ्को नराधिप ।
वन सम्प्रस्थितं राजन् बृहदश्वं द्विजोत्तमः ।।१७२
तमुत्तङ्को महातेजाः सर्वास्त्रविदुषां वरम् ।
न्यवारयदमेयात्मा समासाद्य नरोत्तमम् ।।१७३
भवता रक्षणं कार्यं तत् तावत् कर्तुमर्हसि ।
निरुद्विग्ना वयं राजंस्त्वत्प्रसादाद् भवेमहि ।।१७४
त्वया हि पृथिवी राजन् रक्ष्यमाणा महात्मना ।
भविष्यति निरुद्विग्ना नारण्यं गन्तुमर्हसि ।।१७५

राजा बृहदश्व ने यथा समय अपने श्रेष्ठ धर्मात्मा एवं वीर पुत्र कुवलाश्व को राज्य सिंहासन पर अभिषिक्त किया ।।१७०।। शत्रुओं का नाश करने वाले बुद्धिमान् राजा बृहदश्व राज्यश्री को अपने पुत्र के लिये सौंप कर तप करने के लिए वन में चले गए ।।१७१।। फिर द्विजश्रेष्ठ उत्तङ्क ने सुना कि राजर्षि बृहदश्व तपोवन के लिए चले जा रहे हैं ।।१७२।। वे मनुष्य श्रेष्ठ राजा समस्त अस्त्र-शस्त्रों के ज्ञाताओं में सर्व-श्रेष्ठ थे । विशाल हृदय उत्तङ्क ने उन्हें वन में जाने से रोकते हुए इस प्रकार कहा ।।१७३।। उत्तङ्क बोले---राजन् ! प्रजा की रक्षा करना आपका कर्त्तव्य है, इसलिए प्रथम वही कार्य आपको करना चाहिए, जिससे हम सब निर्भय रह सकें ।।१७४।। आप जैसे महात्मा राजा से सुरक्षित होकर ही यह पृथिवी भय से बच सकती है । इसलिए आप वन मे न जाँय ।।१७५।।

पालने हि महान् धर्मः प्रजानामिह दृश्यते ।
न तथा दृश्यतेऽरण्ये मा भूत् ते बुद्धिरीदृशी ।।१७६
ईदृशो न हि राजेन्द्र धर्मः क्वचन दृश्यते ।
प्रजानां पालने यो वै पुरा राजर्षिभिः कृतः ।।१७७
रक्षितव्याः प्रजा राज्ञा तास्त्वं रक्षितुमर्हसि ।
निरुद्विग्नस्तपश्चर्तुं न हि शक्नोमि पार्थिव ।।१७८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ममाश्रसमीपे वै समेषु मरुधन्वसु ।
समुद्रो बालूकापूर्ण उज्जालक इति स्मृतः ।।१७९
बहुयोजनविस्तीर्णो बहुयोजनमायतः ।
तत्र रौद्रो दानवेन्द्रो महावीर्यपराक्रमः ।।१८०
मधुकैटभयोः पुत्रो धुन्धुर्नाम सुदारुणः ।
अन्तर्भूमिगतो राजन् वसत्यमितविक्रमः ।।१८१

क्योंकि यहाँ रहकर प्रजा-पालन में जो धर्म आपके लिए देखते हैं, वह वन में रहकर तप करने में नहीं दिखायी देता । इसलिए आपकी वैसी बुद्धि न हो, यही उचित है ।।१७६।। प्राचीन कालीन राज-ऋषियों ने जिस धर्म का पालन किया है, वह धर्म प्रजाओं की रक्षा में ही सुलभ है । ऐसा धर्म अन्य कार्य में दिखाई नहीं देता ।।१७७।। राजा के लिए प्रजापालन ही धर्म है । इसलिए आपको प्रजाओं की रक्षा में ही तत्पर रहना चाहिए । राजन् ! मैं भी शान्ति से तपस्या नहीं कर पा रहा हूँ ।।१७८।। मेरे आश्रम के निकट ही समस्त मरु प्रदेश में उज्जालक नामक एक बालुकामय समुद्र है ।।१७९।। उसका विस्तार कई योजन का है । वहाँ एक अत्यन्त पराक्रमी तथा भयङ्कर दानवराज निवास करता है । वह मधुकैटभ का पुत्र है । क्रूर स्वभाव वाले उस राक्षस का नाम धुन्धु है । वह अत्यन्त पराक्रमी दानव पृथिवी के भीतर छिपा रहता है ।।१८०-१८१।।

तं निहत्य महाराज वनं त्वं गन्तुमर्हसि ।
शेते लोकविनाशाय तप आस्थाय दारुणम् ।।१८२
त्रिदशानां विनाशाय लोकानां चापि पार्थिव ।
अवध्यो दैवतानां हि दैत्यानामथ रक्षसाम् ।।१८३
नागानामथ यक्षाणां गन्धर्वाणां च सर्वशः ।
अवाप्य स वरं राजन् सर्वलोकपितामहात् ।।१८४
तं विनाशय भद्रं ते मा ते बुद्धिरतोऽन्यथा ।
प्राप्स्यस महतींकोति शाश्वतोमव्ययां ध्रुवाम् ।।१८५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राजन् ! उसका संहार करके ही आपका वन में जाना उचित है। वह सम्पूर्ण लोकों और देवताओं के संहारार्थ घोर तपस्या के आश्रय में, सोता है ॥१८२॥ वह सब लोकों के पितामह ब्रह्माजी से वर पाकर देवताओं, दैत्यों, राक्षसों, नागों, यक्षों और सभी गंधर्वों के लिए अवध्य हो चुका है ॥१८३-१८४॥ राजन् ! आपका कल्याण हो। उस दैत्य का आप संहार करिये। इसके विपरीत कोई विचार न रखिये। उसे मारकर आप चिरस्थायी महान् कीर्ति को प्राप्त करेंगे ॥१८५॥

क्रूरस्य तस्य स्वपतो बालुकान्तर्हितस्य च।
संवत्सरस्य पर्यन्ते निःश्वासः सम्प्रवर्तते ॥१८६
यदा तदा भूश्चलति सशैलवनकानना।
तस्य निःश्वत्सवातेन रज उद्धूलते महत् ॥१८७
आदित्यपथमाश्रित्य सप्ताहं भूमिकम्पनम्।
सविस्फुलिङ्गं सज्वालं धूममिश्रं सुदारुणम् ॥१८८
तेन राजन् न शक्नोमि तस्मिन् स्थातुं स्व आश्रमे।
तं विनाशय राजेन्द्र लोकानां हितकाम्यया ॥१८९
लोकाःस्वस्था भविष्यन्ति तस्मिन् विनिहतेऽसुरे।
त्वं हि तस्य विनाशाय पर्याप्त इति मे मतिः ॥१९०

बालू के भीतर छिपकर रहने वाला वह क्रूर असुर एक वर्ष में केवल एक बार श्वास लेता है ॥१८६॥ जब वह श्वास लेता है, तब पर्वत, वन और काननों सहित यह सम्पूर्ण पृथिवी डोलने लगती है। उसके श्वास की आँधी से धूल का बवंडर अत्यन्त ऊँचा उठाकर सूर्य के मार्ग को भी ढक लेता है और वहाँ सात दिनों तक भूकंप होता रहता है। अग्नि की चिङ्गारियाँ, ज्वालाएँ और धूम उठ कर भयंकर दृश्य की सृष्टि करते हैं ॥१८७-१८८॥ राजन् ! इसीलिए अपने आश्रम में रहना मेरे लिए कठिन हो गया है। आप सभी के उपकारार्थ उस राक्षस का वध करिये ॥१८९॥ उस राक्षस के मर जाने पर सभी स्वस्थ और सुखी हो जाँयगे। मुझे विश्वास है कि आप एकाकी ही उसे नष्ट करने में समर्थ हैं ॥१९०॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तेजसा तव तेजश्च विष्णुराप्याययिष्यति ।
विष्णुना च वरो दत्तः पूर्वं मम महीपते ।।१९१
यस्तं महासुरं रौद्रं वधिष्यति महीपतिः ।
तेजस्तं वैष्णवमिति प्रवेक्ष्यति दुरासदम् ।।१९२

तत् तेजस्त्वं समाधाय राजेन्द्र भुवि दुःसहम् ।
तं निषूदय राजेन्द्र दैत्यंरौद्रपराक्रमम् ।।१९३
न हि धुन्धुर्महातेजास्तेजसाल्पेन शक्यते ।
निर्दग्धुं पृथिवीपाल स हि वर्षशतैरपि ।।१९४

राजन् ! भगवान् विष्णु अपने तेज से आपके तेज की वृद्धि करेंगे । प्राचीन काल में उन्होंने मुझे यह वर दिया था कि जो दुर्धर्ष वीर उस राक्षस का वध करने को उद्यत होगा, उसके अन्तर में मेरा वैष्णव तेज प्रविष्ट हो जायगा ।।१९१-१९२।। इसलिए आप भगवान् विष्णु का असहनीय तेज धारण करके पृथिवी पर निवास करने वाले उस भयंकर पराक्रमी दैत्य का संहार कीजिये ।।१९३।। भूपते ! धुन्धु अत्यन्त तेजस्वी राक्षस है । साधारण तेज के द्वारा तो वह सौ वर्षों में भी नष्ट नहीं किया जा सकता ।।१९४।।

स एवमुक्तो राजर्षिरुत्तङ्केनापराजितः ।
उत्तङ्कं कौरवश्रेष्ठ कृताञ्जलिरथाब्रवीत् ।।१९५
न तेऽभिगमनं ब्रह्मन् मोघमेतद् भविष्यति ।
पुत्रो ममायं भगवन् कुवलाश्व इति स्मृतः ।।१९६
धृतिमान् क्षिप्रकारी च वीर्येणाप्रतिमो भुवि ।
प्रियं च ते सर्वमेतत् करिष्यति न संशयः ।।१९७

पुत्रैः परिवृतः सर्वैः शूरैः परिघबाहुभिः ।
विसर्जयस्व मां ब्रह्मन् न्यस्तशस्त्रोऽस्मि साम्प्रतम् ।।१९८
तथास्त्विति च तेनोक्तो मुनिनामिततेजसा ।
स तमादिश्य तनयमुत्तङ्काय महात्मने ।।१९९
क्रियतामिति राजर्षिर्जगाम वनमुत्तमम् ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क एष भगवन् दैत्यो महावीर्यस्तपोधन ।
कस्य पुत्रोऽथ नप्ता वा ईतदिच्छामि वेदितुम् ।।२००

मार्कण्डेयजी बोले—कौरव श्रेष्ठ युधिष्ठिर ! उत्तङ्क द्वारा इस प्रकार आग्रह किये जाने पर अपराजित वीर राजर्षि वृहदश्व ने उनसे करबद्ध निवेदन किया ।।१९५।। ब्रह्मन् ! आपका आगमन सफल होगा । मेरा यह पुत्र कुवलाश्व पृथिवी में अनुपम वीर है । यह धैर्य और स्फूर्ति वाला है ।।१९६।। परिघ के समान मोटी भुजाओं वाले अपने सभी शूर वीर पुत्रों के साथ जाकर यह आपका सम्पूर्ण इच्छित कार्य सिद्ध करेगा, इसमें संदेह नहीं है । ब्रह्मन् ! आप मुझे जाने दें । मैंने तो सभी शस्त्रास्त्रों का त्याग कर दिया है ।।१९७-१९८।। यह सुनकर महर्षि उतङ्क ने 'तथास्तु' कह कर राजा को वन में जाने की अनुमति दी । फिर राजर्षि वृहदश्व ने उन महात्मा उत्तङ्क को अपना पुत्र सौंपते हुए उसे धुन्धु का संहार करने की आज्ञा दी और स्वयं वन के लिए प्रस्थान किया ।।१९९।। युधिष्ठिर बोले—हे तपोधन ! यह पराक्रमी दैत्य कौन था ? किसका पुत्र और नाती था ? मैं यह सब जानने को उत्सुक हूँ ।।२००।।

एवं महाबलो दैत्यो न श्रुतो मे तपोधन ।।२०१
एतदिच्छामि भगवन् याथातथ्येन वेदितुम ।
सर्वमेव महाप्राज्ञ विस्तरेण तपोधन ।।२०२
शृणु राजन्निदं सर्वं यथावृत्तं नराधिप ।
कथ्यमानं महाप्राज्ञ विस्तरेण यथातथम् ।।२०३
एकार्णवे तदा लोके नष्टे स्थावरजङ्गमे ।
प्रणष्टेषु च भूतेषु सर्वेषु भरतर्षभ ।।२०४
प्रभवं लोककर्तारं विष्णुं शाश्वतमव्ययम् ।
यमाहुर्मुनयः सिद्धाः सर्वलोकमहेश्वरम् ।।२०५
सुष्वाप भगवान् विष्णुरप्सु योगत एव साः ।
नागस्य भोगे महति शेषस्यामिततेजसः ।।२०६

तपोधन मुनीश्वर ! ऐसा महाबली दैत्य तो मेरे सुनने में कभी नहीं आया । इसलिए इसके विषय में सभी वास्तविक बात जानना चाहता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हूँ। आप यह सम्पूर्ण कथा सविस्तार मेरे प्रति कहें ॥२०१-२०२॥ मार्कण्डेयजी ने कहा—राजन् ! तुम अत्यन्त बुद्धिमान हो। यह सम्पूर्ण वृत्तान्त यथार्थ रूप से मैं तुम्हारे प्रति विस्तार पूर्वक कहता हूँ ॥२०३॥ भरतश्रेष्ठ ! यह उस समय की बात है, जब यह सम्पूर्ण स्थावर जंगम विश्व एकार्णव के जल में डूब चुका था और सभी प्राणी नष्ट हो चुके थे ॥२०४॥ उस समय भगवान् विष्णु एकार्णव के जल में अत्यन्त तेजस्वी शेष नाग के विशाल शरीर की शैय्या पर योग निद्रा के आश्रय में शयन करते थे। वे भगवान् ही सिद्ध, मुनि सभी की उत्पत्ति का कारण, लोकों के रचयिता, सर्व व्यापी, सनातन अविनाशी एवं सर्व लोक महेश्वर कहे जाते हैं ॥२०५-२०६॥

लोककर्त्ता महाभाग भगवानच्युतो हरिः।
नागभोगेन महता परिरभ्य महीमिमाम् ॥२०७
स्वपतस्तस्य देवस्य पद्मं सूर्यसमप्रभम्।
नाभ्यां विनिःसृतं दिव्यं तत्रोत्पन्नः पितामहः ॥२०८
साक्षाल्लोकगुरुर्ब्रह्मा पद्मे सूर्यसमप्रभः।
चतुर्वेदश्चतुर्मूर्तिस्तथैव च चतुर्मुखः ॥२०९
स्वप्रभावाद् दुराधर्षो महाबलपराक्रमः।
कस्यचित् त्वथ कालस्य दानवौ वीर्यवत्तमौ।
मधुश्च कैटभश्चैव दृष्टवन्तौ हरिं प्रभुम् ॥२१०

महाभाग ! अपनी महिमा से च्युत न होने वाले लोक रचयिता भगवान् विष्णु नाग के विशाल फल पर धारण की हुई इस पृथिवी पर शयन कर रहे थे तभी उन दिव्य स्वरूप नारायण की नाभि से सूर्य के समान प्रकाशमान एक दिव्य कमल उत्पन्न हुआ। उसी में से सूर्य के समान तेजस्वी सभी लोकों के गुरु एवं पितामह ब्रह्माजी उत्पन्न हुए ॥२०७-२०८॥ वे ब्रह्माजी चारों वेदों के पारंगत है। जरायुज आदि चारों प्रकार की सृष्टि उन्हीं का स्वरूप है। वे चार मुख वाले और महान् बली एवं पराक्रमी हैं। अपने प्रभाव से वे दुर्धर्ष हैं ॥२०९॥ ब्रह्माजी की

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पत्ति के कुछ काल पश्चात् मधु और कैटभ नाम के दो पराक्रमी दानवों ने भगवान् विष्णु को देखा ॥२१०॥

शयानं शयने दिव्ये नागभोगे महाद्युतिम् ॥२११
बहुयोजनविस्तीर्णे बहुयोजनमायते ।
किरीटकौस्तुभधरं पीतकौशेयवाससम् ॥२१२
दीप्यमानं श्रिया राजंस्तेजसा वपुषा तथा ।
सहस्रसूर्यप्रतिममद्भुतोपमदर्शनम् ॥२१३
विस्मयः सुमहानासीन्मधुकैटभयोस्तथा ।
दृष्ट्वा पितामहं चापि पद्मे पद्मनिभेक्षणम् ॥२१४
वित्रासयेतामथ तौ ब्रह्माणममितौजसम् ।
वित्रस्यमानो बहुशो ब्रह्मा ताभ्यां महायशाः ॥२१५
अकम्पयत् पद्ममालं ततोऽबुध्यत केशवः ।
अथापश्यत गोविन्दो दानवौ वीर्यवत्तरौ ॥२१६

वे शेषनाग की दिव्य शैय्या पर सो रहे थे, उनका तेज महान् था और जिस शैय्या पर वे सोते हैं उसका विस्तार कई योजनों का है। भगवान् श्रीहरि के मस्तक पर किरीट, कण्ठ में कौस्तुभ मणि और शरीर पर रेशमी पीताम्बर सुशोभित है ॥२११-२१२॥ राजन् ! अपने तेज से वे अत्यन्त तेजस्वी थे। देह से सहस्रों सूर्यों के समान प्रकाशमान थे और उनकी शोभा अद्भुत तथा उपमा-रहित थी ॥२१३॥ भगवान् को देखकर मधु-कैटभ अत्यन्त आश्चर्य में पड़े। फिर उन्होंने कमल में बैठे हुए कमल नयन ब्रह्माजी को देखा। तब वे दोनों दैत्य ब्रह्माजी को डराने लगे। उनके ऐसा करने पर ब्राह्माजी ने उस कमल नाल को हिलाया, इससे भगवान् विष्णु जाग उठे और उन्होंने उन दोनों अत्यन्त पराक्रमी दानवों को सामने देखा ॥२१४-२१६॥

दृष्ट्वा तावब्रवीद् देवः स्वागतं वां महाबलौ ।
ददामि वां वरं श्रेष्ठं प्रीतिर्हि मम जायते ॥२१७
तौ प्रहस्य हृषीकेशं महादर्पौ महाबलौ
प्रत्यब्रूतां महाराज सहितौ मधुसूदनम् ॥२१८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आवां वरय देव त्वं वरदौ स्वः सुरोत्तम ।
दातारौ स्वो वरं तुभ्यं तद् ब्रवीह्यविचारयन् ॥ २१६
प्रतिगृह्णे वरं वीरावीप्सितश्च वरो मम ।
युवां हि वीर्यसम्पन्नौ न वापस्ति समः पुमान् ॥२२०

उन दोनों को देखकर भगवान् बोले—तुम दोनों अत्यन्त बली हो। तुम्हारा स्वागत है। तुम्हें देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है, इसलिए तुम दोनों को एक श्रेष्ठ वर दे रहा हूं ॥२१७॥ राजन् ! वे दोनों महाबली दैत्य अत्यन्त अभिमानी थे। उन्होंने हँस कर भगवान् विष्णु से एक साथ कहा ॥२१८॥ सुरश्रेष्ठ ! देव ! तुम्हीं हमसे वर माँग लो, हम तुम्हें वर देने में समर्थ हैं, तुम्हारी इच्छा के अनुसार वर देंगे। अतः बिना सोच विचार किये जो चाहो, वही माँग लो ॥२१९॥ भगवान् विष्णु बोले—वीरो ! तुमसे मैं अवश्य वर माँगूगा। तुमसे वर प्राप्त करने की मुझे इच्छा है। क्योंकि तुम दोनों ही अत्यन्त पराक्रमी एवं अनुपम वीर हो ॥२२०॥

वध्यत्वमुपगच्छेतां मम सत्यपराक्रमौ ।
एतदिच्छाम्यहं कामं प्राप्तुं लोकहिताय वै ॥२२१
अनृतं नोक्तपूर्वं नौ स्वैरेष्वपि कुतोऽन्यथा ।
सत्ये धर्मे च निरतौ विद्धचावां पुरुषोत्तम ॥२२२
बले रूपे च शौर्ये च न शमे च समोऽस्ति नौ ।
धर्मे तपसि दाने च शीलसत्त्वदमेषु च ॥२२३
उपप्लवो महानस्मानुपावर्तत केशव ।
उक्तं प्रतिकुरुष्व त्वं कालो हि दुरतिक्रमः ॥२२४

सत्य पराक्रम वालो ! तुम दोनों मेरे हाथों से मृत्यु को प्राप्त होओ, सम्पूर्ण विश्व के कल्याणार्थ तुमसे यही वर प्राप्त करना चाहता हूँ ॥२२१॥ मधु-कैटभ ने कहा—पुरुषोत्तम ! हमने स्वच्छन्द वर्ताव में भी कभी मिथ्या नहीं कहा है, तो अन्य समय में मिथ्या किस प्रकार बोलेंगे ? हम दोनों को ही आप सत्य एवं धर्म में अनुरक्त समझिये ॥२२२॥ बल, रूप, शौर्य एवं मनोनिग्रह में भी हमारे समान कोई नहीं है। धर्म, तप, दान, शील, सत्य एवं इन्द्रिय संयम में भी हमारी तुलना नहीं हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकती ॥२२३॥ किन्तु केशव ! हम पर यह महान् संकट आ गया है। अब आप भी अपनी बात पूर्ण करिये। काल का उल्लंघन अत्यन्त दुष्कर है ॥२२४॥

आवामिच्छावहे देव कृतमेकं त्वया विभो।
अनावृतेऽस्मिन्नाकाशे वधं सुरवरोत्तम ॥२२५
पुत्रत्वमधिगच्छाव तव चापि सुलोचन।
वर एष वृतो देव तद् विद्धि सुरसत्तम।
अनृतं मा भवेद् देव यद्धि नौ संश्रुतं तदा ॥२२६
बाढमेवं करिष्यामि सर्वमेतद् भविष्यति।
स विचिन्त्याथ गोविन्दो नापश्यद् यदनावृतम्।
अवकाशं पृथिव्यां वा दिवि वा मधुसूदनः ॥२२७
स्वकावनावृतावूरू दृष्ट्वा देववरस्तदा।
मधुकैटभयो राजन् शिरसी मधुसूदन।
चक्रेण शितधारेण न्यकृन्तत महायशाः ॥२२८

विभो ! हम दोनों केवल यही सुविधा चाहते हैं कि आप हमें इस खुले आकाश में ही मारिये ॥२२५॥ सुलोचन ! हम दोनों आपके पुत्र हों, यही वर आपसे माँगते हैं। इसे आप भले प्रकार समझलें। हमारी प्रतिज्ञा असत्य न होने पावे इस पर भगवान् विष्णु ने कहा—सब कुछ तुम्हारी इच्छानुसार ही होगा ॥२२६-२२७॥ भगवान् विष्णु को जब कहीं भी खुला आकाश दिखायी न दिया, स्वर्ग और पृथिवी पर कहीं भी खुला आकाश न मिला तब उन्होंने अपनी दोनों जाँघों को वस्त्र-रहित कर मधु-कैटभ के मस्तकों को उन्हीं पर रखा और तीक्ष्ण धार वाले चक्र के द्वारा उन्हें काट डाला ॥२२८॥

धुन्धुर्नाम महाराज तयोः पुत्रो महाद्युतिः।
स तपोऽतप्यत महन्महावीर्यपराक्रमः ॥२२९
अतिष्ठदेकपादेन कृशो धमनिसततः।
तस्मै ब्रह्मा ददौ प्रीतो वरं वव्रे स च प्रभुम् ॥२३०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवदानवयक्षाणां सर्पगन्धर्वरक्षसाम् ।
अवध्योऽहं भवेयं वै वर एष वृतो मया ॥२३१
एवं भवतु गच्छेति तमुवाच पितामहः ।
स एवमुक्तस्तत्पादौ मूर्ध्ना स्पृश्य जगाम ह ॥२३२
स तु धुन्धुर्वरं लब्ध्वा महावीर्यपराक्रमः ।
अनुस्मरन् पितृवधं द्रुतं विष्णुमुपागमत् ॥२३३
स तु देवान् सगन्धर्वान् जित्वा धुन्धुरमर्षणः ।
बबाध सर्वानसकृद् विष्णुं देवांश्च वै भृशम् ॥२३४

मार्कण्डेयजी ने कहा––राजन् ! उन मधु-कैटभ का ही पुत्र वह धुन्धु है, जो अत्यन्त तेजस्वी तथा महान् बली-पराक्रमी है। उसने घोर तप किया है ॥२२९॥ वह दीर्घ काल तक एक पाँव के सहारे खड़ा रहा। उस समय उसका देह इतना दुर्बल होगया कि नस-नाड़ियों का पिंजरा भी दिखाई देने लगा था। उसके तप से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने वर दिया। उसने ब्रह्माजी से इस प्रकार निवेदन किया ॥२३०॥ भगवन् ! देव, दानव, यक्ष, नाग, गन्धर्व और राक्षस किसी के द्वारा भी मैं मारा न जाऊँ। मैंने यही वर आपसे माँगा है ॥२३१॥ ब्रह्माजी ने 'एवमस्तु' कहा और तभी धुन्धु उनके चरणों में मस्तक झुका कर और चरण छूकर चला गया ॥२३२॥ वर प्राप्त कर बल और पराक्रम से सम्पन्न हुए धुन्धु को अपने पिता मधु-कैटभ की मृत्यु का स्मरण हो आया और वह तुरन्त ही भगवान् विष्णु के समक्ष पहुँचा ॥२३३॥ वह अमर्ष में भरा था। गन्धर्वों सहित सब देवताओं को जीत कर वह भगवान् विष्णु तथा अन्य देवताओं को बारम्बार कष्ट देने लगा ॥२३४॥

समुद्रे बालुकापूर्णे उज्जालक इति स्मृते ।
आगम्य च स दुष्टात्मा तं देशं भरतर्षभ ॥२३५
बाधते स्म परं शक्त्या तमुत्तङ्काश्रमंविभो ।
अन्तर्भूमिगतस्तत्र बालुकान्तर्हितस्तथा ॥२३६
मधुकैटभयोः पुत्रो धुन्धुर्भीमपराक्रमः ।
शेते लोकविनाशाय तपोबलमुपाश्रितः ॥२३७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्तङ्कस्याश्रमाभ्याशे निःश्वसन् पावकार्चिषः ।
एतस्मिन्नेव काले तु राजा सबलवाहनः ॥२३८
उत्तङ्कविप्रसहितः कुवलाश्वो महीपतिः ।
पुत्रैः सह महीपालः प्रययौ भरतर्षभ ॥ ३९
सहस्रैरेकविंशत्या पुत्राणामरिमर्दनः ।
कुवलाश्वो नरपतिरन्वितो बलशालिनाम् ॥२४०

वह दुष्टात्मा बालुकायुक्त उज्जालक समुद्र में निवास करने लगा और वहाँ रहने वालों को कष्ट देने लगा। वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा कर पृथिवी के भीतर बालू में छिपता और महर्षि उत्तङ्क के आश्रम में भी उपद्रव करता रहता ॥२३५-२३६॥ मधु कैटभ का महान् पराक्रमी पुत्र धुन्धु तपोबल के आश्रम में सभी लोकों को नष्ट करने के लिए उस मरु प्रदेश में सोता था। उत्तङ्क के आश्रम के निकट साँस ले लेकर वह अग्नि की चिंगारी फैलाता था ॥२३७॥ इसी अवसर पर राजा कुवलाश्व ने अपनी सेना, वाहन और पुत्रों सहित प्रस्थान किया। महर्षि उत्तङ्क भी उनके साथ थे ॥२३८-२३९॥ अरिमर्दन महाराज कुवलाश्व अपने इक्कीस हजार बलशाली पुत्रों सहित वहाँ से चले थे ॥२४०॥

तमाविशत् ततो विष्णुर्भगवांस्तेजसा प्रभुः ।
उत्तङ्कस्य नियोगेन लोकानां हितकाम्यया ॥२४१
तस्मिन् प्रयाते दुर्धर्षे दिवि शब्दो महानभूत् ।
एष श्रीमानवध्योऽद्य धुन्धुमारो भविष्यति ॥ ४२
दिव्यैश्च पुष्पैस्तं देवाः समन्तात् पर्यवारयन् ।
देवदुन्दुभयश्चापि नेदुः स्वयतनीरिताः ॥२४३
शीतश्च वायुः प्रववौ प्रयाणे तस्य धीमतः ।
विपांसुलां महीं कुर्वन् ववर्ष च सुरेश्वरः ॥२४४
अन्तरिक्षे विमानादि देवतानां युधिष्ठिर ।
तत्रैव समदृश्यन्त धुन्धुर्यत्र महासुरः ॥२४५

फिर उत्तङ्क अनुरोध करने पर सम्पूर्ण विश्व के कल्याणार्थ भगवान् विष्णु ने अपने तेजोमय स्वरूप से कुवलाश्व के भीतर प्रवेश किया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

॥२४१॥ वीर कुवलाश्व के प्रस्थान करते ही देवलोक में हर्ष पूर्ण कोलाहल होने लगा। देवगण कहने लगे--महाराज कुवलाश्व अवध्य हैं। धुन्धु का वध करके यह 'धुन्धुमार' हो जायेंगे ॥२४२॥ सब ओर से देवगण उन पर पुष्पवृष्टि करने लगे। उनकी दुन्दुभियाँ बिना प्रयास ही बजने लगीं ॥२४३॥ उन मेधावी कुवलाश्व के चलते ही शीतल समीर चलने लगी और पृथिवी की धूल दबाने के लिए इन्द्र वर्षा करने लगे ॥२४४॥ युधिष्ठिर ! महान् दैत्य धुन्धु जहाँ रहता था, वहीं देवताओं के यान आदि दिखाई पड़ने लगे ॥२४५॥

कुवलाश्वस्य धुन्धोश्च युद्धकौतूहलान्विताः ।
देवगन्धर्व सहिताः समवैक्षन् महर्षयः ॥२ ६
नारायणेन कौरव्य तेजसाऽऽप्यायितस्तदा ।
स गतो नृपतिः क्षिप्रं पुत्रैस्तैः सर्वतो दिशम् ॥२४७
अर्णवं खानयामास कुवलाश्वो महीपतिः ।
कुवलाश्वस्य पुत्रैश्च तस्मिन् वै बालुकार्णवे ॥२४८
सप्तभिर्दिवसैः खात्वा दृष्टो धुन्धुर्महाबलः ।
आसीद् घोरं वपुस्तस्य बालुकान्तर्हितं महत् ॥२४९
दीप्यमानं यथा सूर्यस्तेजसा भरतर्षभ ।
ततो धुन्धुर्महाराज दिशमावृत्य पश्चिमाम् ॥२५०

कुवलाश्व और धुन्धु का संग्राम देखने की इच्छा से देवताओं और गन्धर्वों के साथ ऋषिगण भी वहाँ आकर सभी बातें देखने लगे ॥२४६॥ उस समय भगवान् विष्णु के तेज से सम्पन्न हुए राजा कुवलाश्व अपने पुत्रों सहित वहाँ पहुँच कर बालुकामय समुद्र को सब ओर से खुदवाने लगे ॥२४७॥ कुवलाश्व के पुत्रों ने सात दिनों तक खुदाई करके उस बालुका युक्त समुद्र में छिपे महाबली धुन्धु को देखा ॥२४८॥ बालू के भीतर छिपा हुआ उसका शरीर विशाल और भयानक था तथा वह अपने तेज से सूर्य के समान प्रकाशित हो रहा था ॥२४९॥ फिर धुन्धु पश्चिम दिशा को घेर कर सो गया। उस समय उसका तेज प्रलय काल के अग्नि जैसा प्रतीत होता था ॥२५०॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुतोऽभूद्राजशार्दूल कालानलसमद्युतिः ।
कुबलाश्वस्य पुत्रैस्तु सर्वतः परिवारितः ॥२५१
अभिद्रुतः शरैस्तीक्ष्णैर्गदाभिर्मुसलैरपि ।
पट्टिशैः परिघैः प्रासैः खड्गैश्च विमलैः शितैः ॥२५२
स वध्यमानः सक्रुद्धः समुत्तस्थौ महाबलः ।
क्रुद्धश्चाभक्षयत् तेषां शस्त्राणि विविधानि च ॥२५३
आस्याद् वमन् पावकं स संवर्तकसमं तदा ।
तान् सर्वान् नृपतेः पुत्रानदहत् स्वेन तेजसा ॥२५४
मुखजेनाग्निना क्रुद्धो लोकानुद्वर्तयन्निव ।
क्षणेन राजशार्दूल पुरेव कपिलः प्रभुः ।
सगरस्यात्मजान् क्रुद्धस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥२५५

तब राजा कुवलाश्व के पुत्रों ने उसे सब ओर से घेर कर आक्रमण किया । तीक्ष्ण बाण, गदा, मुसल, पट्टिश, परिघ प्रास और तेज धार वाले खड्ग—इन सब के आघात से महाबली धुन्धु क्रोधित होकर उन विभिन्न प्रकार के शस्त्रास्त्रों को भक्षण कर गया ॥२५१-२५३॥ फिर उसने अपने मुख से प्रलय काल के अग्नि जैसी चिंगारियाँ निकालीं और उन सब राजकुमारों को अपने तेज से भस्म कर डाला ॥२५४॥ राजन् ! जैसे महर्षि कपिल ने अपने क्रोध से राजा सगर के सब पुत्रों को क्षण भर में भस्म कर दिया था, वैसे ही क्रोध में भरे हुए धुन्धु न अपने मुख से अग्नि प्रकट कर कुवलाश्व-पुत्रों को भस्म कर दिया, यह एक अद्भुत घटना थी ॥२५५॥

तेषु क्रोधाग्निदग्धेषु तदा भरतसत्तम ॥२५६
त प्रबुद्धं महात्मानं कुम्भकर्णमिवापरम् ।
आससाद दहातेजाः कुवलाश्वो महीपतिः ॥२५७
तस्य वारि महाराज सुस्राव बहु देहतः ।
तदापीय ततस्तेजो राजा वारिमयं नृप ॥२५८
योगी योगेन वह्निं च शमयामास वारिणा ।
ब्रह्मास्त्रेण च राजेन्द्र दैत्यं क्रूरपराक्रमम् ॥२५९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ददाह भरतश्रेष्ठ सर्वलोकभयाय वै ।
सोऽस्त्रेण दग्धा राजर्षिः कुवलाश्वो महासुरम् ।
सुरशत्रुममित्रघ्नं त्रैलोक्येश इवापरः ।।२६०

जब सभी राजकुमार उसकी क्रोधाग्नि में भस्म हो गए, तब महा तेजस्वी कुवलाश्व ने कुम्भकर्ण के समान जगे हुए उस महाकाय दानव पर प्रहार किया ।।२५६-२५९।। उस समय धुन्धु के देह से बहुत-सा जल बहने लगा । परन्तु, योगिराज कुवलाश्व ने योगबल से उस जल रूप तेज को पी लिया तथा जल प्रकट करके धुन्धु की मुखाग्नि को भी शान्त कर कर दिया ।।२५८।। फिर सभी लोकों के कल्याणार्थ राजर्षि कुवलाश्व ने ब्रह्मास्त्र के प्रयोग द्वारा उस क्रूर एवं पराक्रमी धुन्धु को भस्म कर डाला । इस प्रकार उसे मारकर कुवलाश्व इन्द्र के समान सुशोभित होने लगे ।।२५९-२६०।।

धुन्धोर्वधात् तदा राजा कुवलाश्वो महामनाः ।।२६१
धुन्धुमार इति ख्यातो नाम्नाप्रतिरथोऽभवत् ।
प्रीतैश्च त्रिदशैः सर्वैर्महर्षिसहितैस्तदा ।।२६२

वरं वृणीष्वेत्युक्तः स प्राञ्जलिः प्रणतस्तदा।
अतीवमुदितो राजन्निदं वचनमब्रवीत् ।।२६३
दद्यां वित्तं द्विजाग्र्येभ्यः शत्रूणां चापि दुर्जयः ।
सख्यं च विष्णुना मे स्याद् भूतेष्वद्रोह एव च ।।२६४
धर्मे रतिश्च सततं स्वर्गे वासस्तथाक्षयः ।
तथास्त्विति ततो देवैः प्रीतैरुक्तः स पार्थिवः ।।२६५

तब राजा कुवलाश्व धुन्धु को मारने के कारण धुन्धुमार नाम से प्रसिद्ध होगए । उस समय उनका सामना करने वाला कोई वीर न रहा ।।२६१।। फिर महर्षियों सहित प्रसन्न होकर सब देवता वहाँ पर आकर राजा से वर माँगने का अनुरोध करने लगे । इससे कुवलाश्व बहुत प्रसन्न हुए और मस्तक झुकाकर हाथ जोड़ते हुए बोले ।।२६२-२६३।। देवगण ! मैं श्रेष्ठ ब्राह्मणों को धन दूँ, शत्रुओं के लिए दुर्जय रहूँ, भगवान् विष्णु से मित्र-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भाव और प्रेम रहे और किसी प्राणी के प्रति मेरे मन में दुर्भाव न रहें ॥२६४॥ धर्म में सदा अनुरक्त रहूं, अन्त में स्वर्ग में निवास करूँ। यह सुनकर देवताओं ने प्रसन्नता पूर्वक कहा—ऐसा ही होगा ॥२६५॥

ऋषिभिश्च सगन्धर्वैरुत्तङ्केन च धीमता।
सम्भाष्य चैनं विविधैराशीर्वादैस्ततो नृप ॥२६६
देवा महर्षयश्चापि स्वानि स्थानानि भेजिरे।
तस्य पुत्रास्त्रयः शिष्टा युधिष्ठिर तदाभवन् ॥२६७
दृढाश्वः कपिलाश्वश्च चन्द्राश्वश्चैव भारत।
तेभ्यः परम्परा राजन्निक्ष्वाकूणां महात्मनाम् ॥२६८
वंशस्य सुमहाभाग राज्ञाममिततेजसाम्।
एव स निहतस्तेन कुवलाश्वेन सत्तम ॥२६९
धुन्धुर्नाम महादत्यो मधुकैटभयोः सुतः।
कुवलाश्वश्च नृपतिर्धुन्धुमार इति स्मृतः ॥२७०
नाम्ना च गुणसंयुक्तस्तदाप्रभृति सोऽभवत्।
एतत् ते सर्वमाख्यातं यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥२७१
धौन्धुमारमुपाख्यानं प्रथितं यस्य कर्मणा।
इदं तु पुण्यमाख्यानं विष्णोः समनुकीर्तनम् ॥२७२
श्रृणुयाद् यः स धर्मात्मा पुत्रवांश्च भवेन्नरः।
आयुष्मान् भूतिमांश्चैव श्रुत्वा भवति पवमु।
न च व्याधिभयं किंचित्प्राप्नोति विगतज्वरः ॥२७३

फिर ऋषियों गंधर्वों और बुद्धिमान महर्षि उत्तङ्क ने भी अनेक प्रकार से राजा को आशीर्वाद दिया और वार्तालाप किया ॥२६६॥ इसके पश्चात् देवता और ऋषि अपने-अपने स्थान को गये। उस युद्ध में राजा कुवलाश्व के तीन पुत्र ही शेष बचे थे ॥२६७॥ उनके नाम दृढाश्व, कपिलाश्व और चन्द्राश्व थे। उन्हीं तीनों से अत्यन्त तेजस्वी इक्ष्वाकु वंशी राजाओं की वंश-परम्परा चली ॥२६८॥ इस प्रकार मधु-कैटभ पुत्र धुन्धु राजा कुवलाश्व के द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुआ और कुवलाश्व की 'धुन्धुमार' नाम से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ख्याति हुई ।।२६९-२७०।। तभी से वे अपने नाम के अनुसार वीरता आदि गुणों से विभूषित हो पृथिवी पर प्रसिद्ध हो गये। युधिष्ठिर ! तुम्हारे प्रश्न के अनुसार धुन्धुमार का सम्पूर्ण आख्यान मैंने तुम्हें कह सुनाया और जिनके पराक्रम से यह उपाख्यान पूर्ण हुआ, उनका परिचय दे दिया ।।२७१।। भगवान् विष्णु के कीर्तन रूप इस पवित्र उपाख्यान को जो कोई सुनता है, वह धर्मात्मा एवं पुत्रवान होता है। इस कथा को पर्वों पर सुनने वाला दीर्घायु एवं ऐश्वर्यवन्त होता है। उसे रोग आदि का भय नहीं रहता और सभी चिन्ताएँ नष्ट हो जाती हैं ।।२७१-२७३।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२—मनु गीता

किं फलं ज्ञानयोगस्य वेदानां नियमस्य च ।
भूतात्मा च कथं ज्ञेयस्तन्मे ब्रूहि पितामह ॥१
अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
मनोः प्रजापतेर्वादं महर्षेश्च बृहस्पतेः ॥२
प्रजापतिं श्रेष्ठतमं प्रजानां
देवर्षिसंघप्रवरो महर्षिः ।
बृहस्पतिः प्रश्नमिमं पुराणं
पप्रच्छ शिष्योऽथ गुरुं प्रणम्य ॥३
यत्कारणं यत्र विधिः प्रवृत्तो
ज्ञाने फलं यत्प्रवदन्ति विप्राः ।
यन्मन्त्रशब्दैरकृतप्रकाशं
तदुच्यतां मे भगवन् यथ वत् ॥४
यच्चार्थशास्त्रागममन्त्रविद्भि-
र्यज्ञैरनेकैरथ गोप्रदानैः ।
फलं महद्भिर्यदुपास्यते च
कितत्कथं वा भविता क्व वा तत् ॥५

युधिष्ठिर ने कहा—हे पितामह ! ज्ञान योग का, वेदों का और वेदों में कहे हुए नियमों का क्या फल है ? सभी प्राणियों के अन्तर में निवास करने वाले परमात्मा का ज्ञान किस प्रकार हो सकता है ? यह मेरे प्रति कहिये ॥१॥ भीष्मजी ने कहा—हे राजन् ! इस विषय में प्रजापति मनु और महर्षि बृहस्पति के संवाद रूप इतिहास को दृष्टान्त रूप में कहा जाता है ॥२॥ एक समय देवताओं और ऋषियों की मंडली में प्रधान महर्षि बृहस्पतिजी ने प्रजापतियों में श्रेष्ठ गुरु मनुजी को शिष्य भाव से प्रणाम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करके इस प्राचीन प्रश्न को किया ।।३।। हे भगवन् ! जो इस विश्व का कारण है, जिसके निमित्त सभी वैदिक कर्म किये जाते हैं, विप्रगण जिसे ज्ञान होने पर मिलने वाला फल कहते हैं और वेद-मंत्रों के वाक्यों द्वारा जिसका पूर्ण तत्त्व समझ में नहीं आता, उस नित्य वस्तु को आप मेरे प्रति यथार्थ रूप से कहने की कृपा करें ।।४।। अर्थ शास्त्र, आगम और मंत्र के ज्ञाता पुरुष अनेकानेक महायज्ञों और गोदानों द्वारा जिस सुखमय फल की कामना करते हैं, वह क्या है ? कहाँ स्थित है ? और किस प्रकार मिलता है ? ।।५।।

महीं महीजाः पवनोऽन्तरिक्षं
जलौकसश्चैव जलं दिवं च ।
दिवौकसश्चापि यतः प्रसूताः
स्तदुच्यतां मे भगवन् पुराणम् ।।६
ज्ञानं यतः प्रार्थयते नरो वै
ततस्तदर्था भवति प्रवृत्तिः ।
न चाप्यहं वेद परं पुराणं
मिथ्याप्रवृत्तिं च कथं नु कुर्याम् ।।७
ऋकसामसंघांश्च यजूंषि चापि
च्छन्दांसि नक्षत्रगतिं निरुक्तम् ।
अधीत्य च व्याकरणं सकल्पं
शिक्षां च भूतप्रकृतिं न वेद्मि ।।८
स मे भवान् शंसतु सर्वमेतत्
सामान्यशब्दैश्च विशेषणैश्च ।
स मे भवान् शंसतु तावदेत-
ज्ज्ञाने फलं कर्मणि वा यदस्ति ।।९
यथा च देहाच्च्यवते शरीरी
पुनः शरीरं च यथाभ्युपैति ।
यद् यत्प्रियं यस्य सुखं तदाहु-
स्तदेव दुःखं प्रवदन्त्यनिष्टम् ।।१०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इष्टं च मे स्यादितरच्च न स्या-
देतत्कृते कर्मविधिः प्रवृत्तः ।
इष्टं त्वनिष्टं च न मां भजेते-
त्येतत्कृते ज्ञानविधिः प्रवृत्तः ॥११

हे भगवन् ! पृथिवी, पृथिवी के पदार्थ, वायु, आकाश, जल के जन्तु, जल, देवलोक तथा देवगण जिसके द्वारा उत्पन्न होते हैं, वह पुरातन वस्तु क्या है ? यह मेरे प्रति कहें ॥६॥ मनुष्य जिस वस्तु को जानता है, उसी को पाने की इच्छा करता है । जब पाने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है, तब प्राप्ति का यत्न करता है । परन्तु, मैं तो उस प्राचीन और परम श्रेष्ठ वस्तु के संबंध में कुछ नहीं जानता तो उसे प्राप्त करने का मिथ्या प्रयत्न किस प्रकार करूँ ? ॥७॥ मैंने ऋक्, साम, यजुः और अथर्ववेद का तथा नक्षत्रों की गति, निरुक्त, व्याकरण, कल्प और शिक्षा का भले प्रकार अध्ययन किया है, तो भी मैं पंचभूतों के उपादान कारण को नहीं जान पाया ॥८॥ इसलिये आप सामान्य और विशेष शब्दों के द्वारा इस सम्पूर्ण विषय को मुझसे कहिये । तत्त्वज्ञान हो जाने पर कौन-सा फल मिलता है ? कर्म करने पर कौन-सा फल मिलता है ? देहाभिमानी जीव शरीर से कैसे निकलता और पुनः शरीर में किस प्रकार पहुँचता है—यह सब मुझे बताने का कष्ट करें ॥९॥ मनुजी ने कहा—जिसे जो विषय प्रिय है, उसके लिये वही सुख रूप कहा है तथा जो विषय अप्रिय है, उसे दुःख रूप समझना चाहिए । इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट की निवृत्ति के लिये ही कर्मों का अनुष्ठान होता है । परन्तु, इष्ट और अनिष्ट दोनों ही की कामना न हो तो इसके लिये ज्ञान योग का उपदेश सुनना ही श्रेयस्कर है ॥१०-११॥

कामात्मकाश्छन्दसि कर्मयोगा
एभिर्विमुक्तः परमश्नुवीत ।
नानाविधे कर्मपथे सुखार्थी
नरः प्रवृत्तो न परं प्रयाति ॥१२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इष्टं त्वनिष्टं च सुखासुखं च
साशीस्त्ववच्छन्दति कर्मभिश्च ।
एभिर्विमुक्तः परमाविवेश
एतत् कृते कर्मविधिः प्रवृत्तः ।
कामात्मकांश्छन्दति कर्मयोग
एभिर्विमुक्तः परमाददीत ।।१३
आत्मादिभिः कर्मभिरिन्ध्यमानो
धर्मे प्रवृत्तो द्युतिमान् सुखार्थी ।
परं हि तत् कर्मपथादपेतं
निराशिषं ब्रह्मपरं ह्यवैति ।।१४
प्रजाः सृष्टा मनसा कर्मणा च
द्वावेवैतो सत्पथौ लोकजुष्टौ ।
इष्टं कर्म शाश्वतं चान्तवच्च
मनस्त्यागः कारणं नान्यदस्ति ।।१५

वेद में कर्मों के जो प्रयोग कहे गये हैं, वे प्रायः सभी सकाम भाव वाले हैं । परमात्मा की प्राप्ति उसी को हो सकती है, जो इन कामनाओं से मुक्त हो चुका है । विभिन्न प्रकार के कर्म मार्ग में सुख की इच्छा से प्रवृत्त होने वाले को परब्रह्म की प्राप्ति संभव नहीं है ।।१२।। बृहस्पतिजी ने कहा—हे भगवन् ! सुख की कामना सभी करते हैं और दुःख किसी को भी अच्छा नहीं लगता । इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट की निवृत्ति वाली कामना ही मनुष्यों को कर्मों में लगाती और उन कर्मों के द्वारा उनका मनोरथ पूरा करती है । इसलिये, आप उस कामना को त्यागने योग्य किस प्रकार बताते हैं ? ।।१२३।। मनुजी ने कहा—इन कामनाओं का त्याग करके मनुष्य निष्काम भाव से कर्मानुष्ठान कर ब्रह्म को प्राप्त करने का प्रयत्न करे । इसी उद्देश्य से कर्मों का विधान हुआ है । वेद में स्वर्ग आदि की कामना वाले जिन कर्मों का विधान किया गया है, वे कर्म आसक्तियों में लगे पुरुषों को ही आकर्षित करते हैं । यथार्थ में तो इन कामनाओं का त्याग करके परब्रह्म की प्राप्ति का ही यत्न करना चाहिये। जब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मन नित्य कर्मों का अनुष्ठान करता हुआ रागादि दोषों से मुक्त होकर स्वच्छ और दीप्तिमान हो जाता है। तब वह प्रकाशमान् और नित्य सुख की अभिलाषा वाला होकर निर्वाण भाव से धर्म में लगता है और कर्म भाव से परे और कामनाओं से पृथक् परब्रह्म को प्राप्त हो जाता है। ब्रह्माजी ने मन, कर्म वाली प्रजा की रचना की है, इसलिये यह दोनों, लोक में व्यवहृत सत्पथ स्वरूप हैं। कर्म के भी दो भेद देखे जाते हैं--एक तो सनातन और दूसरा नाशवान्। मन के द्वारा किये जाने वाले फल की कामना का त्याग ही कर्मों को सनातन बनाने वाला तथा उनके द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति कराने वाला है, अन्य कुछ नहीं है ॥१४-१५॥

स्वेनात्मना चक्षुरिव प्रणेता
निशात्यये तमसा संवृतात्मा।
ज्ञानं तु विज्ञानगुणेन युक्तं
कर्माशुभं पश्यति वर्जनीयम् ॥१६
सर्पान् कुशाग्राणि तथोदपानं
ज्ञात्वा मनुष्याः परिवर्जयन्ति।
अज्ञानतस्तत्र पतन्ति केचि-
ज्ज्ञाने फल पश्य यथा विशिष्टम् ॥१७
कृत्स्नस्तु मन्त्रो विधिवत् प्रयुक्तो
यथा यथोक्तास्त्विह दक्षिणाश्च।
अन्नप्रदानं मनसः समाधिः
पञ्चात्मकं कर्म फलं वदन्ति ॥१८
गुणात्मकं कर्म वदन्ति वेदा-
स्तस्मान्मन्त्रो मन्त्रपूर्वं हि कर्म।
विधिर्विधेयं मनसोपपत्तिः
फलस्य भोक्ता तु तथा शरीरी ॥१९
शब्दाश्च रूपाणि रसाश्च पुण्याः
स्पर्शाश्च गन्धाश्च शुभास्तथैव।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नरो न संस्थानगतः प्रभुः स्या-
देतत् फलं सिद्धचति कर्मलोके ।।२०

रात्रि के व्यतीत होने पर जब अन्धकार दूर हो जाता है, तब जीव को चलने में प्रवृत्त करने वाली आँखें ज्योतिर्मयी होकर मार्ग में बिछे हुए काँटों को देखती हैं, उसी प्रकार मोह का आवरण दूर हो जाने पर ज्ञान के प्रकाश से मुक्त हुई बुद्धि भी त्यागने योग्य अशुभ कर्मों को देखती रहती है ।।१६।। मार्ग में सर्प, कुशों के काँटे और कुँए आदि को जानते हुए सभी लोग उनसे बचकर चलते हैं । जो नहीं जानते, वे उन पर गिर पड़ते हैं । इस प्रकार ज्ञान के विशिष्ट फल को तुम प्रत्यक्ष ही देख लो ।।१७।। विधिवत् सभी मन्त्रों का उच्चारण, यज्ञ का अनुष्ठान, यथा योग्य दक्षिणा, अन्न का दान और मन की एकाग्रता, इन पाँचों अंगों की सम्पन्नता से ही यज्ञ का पूर्ण फल प्राप्त हो सकता है—यह विद्वानों का कथन है ।।१८।। वेद कहते हैं कि कर्म सात्त्विक, राजस और तामस तीन प्रकार के हैं, इसलिये मंत्र भी त्रिगुणात्मक होते हैं । क्योंकि मन्त्रों का उच्चारण करते हुए ही कर्मों का अनुष्ठान होता है । उसी प्रकार उन कर्मों की विधि, विधेय, मन के द्वारा इच्छित फल का सिद्ध होना और उसका भोगने वाला देहाभिमानी जीवात्मा—यह सब तीन-तीन प्रकार के हैं ।।१९।। शब्द, रूप, पुण्य रस, स्पर्श और श्रेष्ठ गंध—यह कर्मों के ही फल हैं । परन्तु, इस देह में स्थित हुआ मनुष्य इन फलों को प्राप्त नहीं कर सकता । कर्मों का फल भोगने के लिए प्राप्त शरीर में होने वाले फलों की प्राप्ति दैव के अधीन ही है ।।२०।।

यद् यच्छरीरेण करोति कर्म
शरीरयुक्त. समुपाश्नुते तत् ।
शरीरमेवायतनं सुखस्य
दुःखस्य चाप्यायतनं शरीरम् ।।२१
वाचा तु यत् कर्म करोति किंचिद्
वाचैव सर्वं समुपाश्नुते तत् ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मनस्तु यत् कर्म करोति किञ्चि-
न्मनःस्थ एवायमुपाश्नुते तत् ॥२२
यथा यथा कर्मगुणं फलार्थी
करोत्ययं कर्मफले निविष्टः ।
तथा तथायं गुणसम्प्रयुक्तः
शुभाशुभं कर्मफलं भुनक्ति ॥२३
मत्स्यो यथा स्रोत इवाभिपाती
तथा कृतं पूर्वमुपैति कर्म ।
शुभे त्वसौ तुष्यति दुष्कृते तु
न तुष्यते वै परमः शरीरी ॥२४
यतो जगत् सर्वमिदं प्रसूतं
ज्ञात्वाऽऽत्मवन्तो व्यतियान्ति यत् तत् ।
यन्मन्त्रशब्दैरकृतप्रकाशं
तदुच्यमानं शृणु मे परं यत् ॥२५

शरीर के द्वारा जीव जिन-जिन शुभ या अशुभ कर्म को करता है न-उन के फलों को शरीर में रह कर ही भोगता है, क्योंकि सुख-दुःख को भोगने का स्थान शरीर ही है ॥२१॥ वाणी के द्वारा मनुष्य जो कर्म करता है, उसका समस्त फल वाणी से ही भोगना होता है । तथा मन के द्वारा जो कर्म करता है, उसे मन के द्वारा ही भोगता है ॥२२॥ फल की कामना वाला मनुष्य कर्म-फल में आसक्त हुआ जिस-जिस गुण का कर्म करता है, उसे उसी-उसी सात्त्विक, राजस या तामस गुण से प्रेरित होकर अपने कर्म या अशुभ फल को भोगना होता है ॥२३॥ मछल जैसे जल-प्रवाह में प्रवाहित होती है, वैसे ही मनुष्य भी अपने पूर्व कर्म के पीछे चलता है उसे कर्म के प्रवाह में ही बहना होता है । परन्तु, उस दशा में श्रेष्ठ फल की प्राप्ति में संतुष्टि और अशुभ फल की प्राप्ति में असन्तुष्टि रहती है ॥२४॥ जिससे यह सम्पूर्ण विश्व उत्पन्न हुआ है, जिसे जान कर मन पर नियंत्रण रखने वाले ज्ञानी जन इस विश्व से पार होकर परमपद पाते हैं

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और वेद-मंत्रों के द्वारा जिसका तात्त्विक रूप पूरी तरह नहीं जाना जाता, उस सर्व श्रेष्ठ तत्त्व को मैं कहता हूँ। उसे तुम श्रवण करो ॥२५॥

रसैर्विमुक्तं विविधैश्च गन्धै-
रशब्दमस्पर्शमरूपवच्च ।
अग्राह्यमव्यक्तमवर्णमेकं
पञ्चप्रकारान् ससृजे प्रजानाम् ॥२६
न स्त्री पुमान् नापि नपुंसकं च
न सन्न चासत् सदसच्च तन्न ।
पश्यन्ति यद् ब्रह्मविदो मनुष्या-
स्तदक्षरं न क्षरतीति विद्धि ॥२७
अक्षरात् खं ततो वायुस्ततो ज्योतिस्ततो जलम् ।
जलात् प्रसूता जगती जगत्यां जायते जगत् ॥२८
एतैः शरीरैर्जलमेव गत्वा
जलाच्च तेजः पवनोऽन्तरिक्षम् ।
खाद् वै निवर्तन्ति न भाविनस्ते
मोक्षं च ते वै परमाप्नुवन्ति ॥२९
नोष्णं न शीतं मृदु नापि तीक्ष्णं
नाम्लं कषायं मधुरं न तिक्तम् ।
न शब्दवन्नापि च गन्धवत्त
न्न रूपवत्तत् परमस्वभावम् ॥३०

वह अनिर्वचनीय वस्तु विभिन्न प्रकार के रस-गंधों से रहित है। शब्द, स्पर्श और रूप से भी दूर है। मन, बुद्धि और वाणी के द्वारा भी अग्राह्य है। वह अव्यक्त, अद्वितीय और रूप-रंग से हीन है तो भी उसी ने प्रजाओं के लिये पाँचों विषयों को रचा है ॥२६॥ वह स्त्री, पुरुष अथवा नपुंसक भी नहीं है, न वह सत् है, न असत् है और न सदसत् प्रकार से उभय रूप वाला ही है। ब्रह्मज्ञानी ही उसका साक्षात् कर सकते हैं। वह कभी क्षय नहीं होता, इसलिये उस अविनाशी ब्रह्म को अक्षर कहते हैं, इसे ठीक प्रकार समझ लेना चाहिए ॥२७॥ मनुजी ने कहा—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अविनाशी ब्रह्म से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल और जल से इस पृथिवी की उत्पत्ति हुई। फिर पृथिवी में सम्पूर्ण पार्थिव जगत् उत्पन्न होता है ॥२८॥ इन पूर्वोक्त शरीरों के साथ प्राणी जल में लीन होते हैं। फिर जल से अग्नि में, अग्नि से वायु में और वायु से आकाश में लीन हो जाते हैं। जब सृष्टि काल होता है तब वे आकाश से पूर्वोक्त क्रम से ही उत्पन्न होते हैं। परन्तु, ज्ञानी पुरुष उस मोक्ष स्वरूप परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होकर इस जगत् में पुनर्जन्म धारण नहीं करते ॥२९॥ वह परमात्म तत्व न उष्ण है, न शीतल है और न कोमल ही है। तीक्ष्ण, खट्टा, कसैला, मीठा अथवा तिक्त भी नहीं है। शब्द, गंध और रूप वाला भी नहीं है। उसका स्वरूप तो सभी से श्रेष्ठ तथा विलक्षण है ॥३०॥

स्पर्शं तनुर्वेद रसं च जिह्वा
घ्राणं च गन्धान् श्रवणौ च शब्दान्।
रूपाणि चक्षुर्न च तत्परं यद्
गृह्णन्त्यनध्यात्मविदो मनुष्याः ॥३१

निवर्तयित्वा रसनां रसेभ्यो
घ्राण च गन्धाच्छ्रवणौ च शब्दात्।
स्पर्शात् त्वचं रूपगुणात् तु चक्षु-
स्ततः परं पश्यति स्वं स्वभावम् ॥३२

यतो गृहीत्वा हि करोति यच्च
यस्मिश्च तामारभते प्रवृत्तिम्।
यस्मिश्च यद् येन च यश्च कर्ता
यत् कारणं ते समुदायमाहुः ॥३३

यद् व्याप्यभूद् व्यापकं साधकं च
यन्मन्त्रवत् स्थास्यति चापि लोके।
यः सर्वहेतुः परमात्मकारी
तत् कारणं कार्यमतो यदन्यत् ॥३४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यथा हि श्वित् सुकृतैर्मनुष्यः
शुभाशुभं प्राप्नुतेऽथाविरोधात् ।
एवं शरीरेषु शुभाशुभेषु
स्वकर्मजैर्ज्ञानमिदं निबद्धम् ।।३५

त्वचा से स्पर्श क , जिह्वा से रस का, नासिका से गंध का, श्रोत्र से शब्द का और नेत्रों से रूप का ज्ञान होता है । यह इन्द्रियां परमात्मा को नहीं देख सकतीं । जो मनुष्य अध्यात्म ज्ञान से रहित हैं, उन्हें परमात्म तत्व का अनुभव नहीं हो सकता ।।३१।। इसलिए जो मनुष्य जिह्वा को रस से, नासिका को गं से, श्रोत्र को शब्द से, त्वचा को स्पर्श से और नेत्रों को रूप से हटाकर अन्तरमुखी अर्थात् भीतर का अनुभव करने वाले बना लेता है, वही अपने मूल ब्रह्म का सत्कार कर सकता है ।।३२।। महर्षियों का कहना है कि जो कर्त्ता जिस कारण से, जिस फल की कामना से, जिस देश में, जिस समय में, जिस प्रिय अथवा अप्रिय के हेतु, जिस जिस राग अथवा द्वेष से प्रभावित होकर प्रवृत्ति मार्ग के आश्रय में जिस कर्म को करता है, इन सभी का जो कारण है, वह केवल परमात्मा ही है ।।३३।। श्रुति के अनुसार जो व्यापक, व्याप्त अथवा उनका साधन है, जो सभी लोकों में सदा स्थित कूटस्थ, सब का और स्वयं सब कर्मों का कर्त्ता है, वही परम कारण समझना चाहिये । उसके अतिरिक्त जो कुछ है, वह सब केवल कार्य ही है ।।३४।।जैसे कोई पुरुष भले प्रकार अपने कर्मों का विभिन्न देश काल में भ या अशुभ फल प्राप्त करता है, वैसे ही अपने कर्मों के अनुसार प्राप्त श्रेष्ठ या अधम देहों में यह चिन्मय ज्ञान सदा विद्यमान रहता है ।।३५।।

यथा प्रदीप्तः पुरतः प्रदीपः
प्रकाशमन्यस्य करोति दीप्यन् ।
तथेह पञ्चेन्द्रियदीपवृक्षा
ज्ञानप्रदीप्ताः परवन्त एव ।।३६
यथा च राज्ञा बहवो ह्यमात्याः
पृथक् प्रमाणं प्रवदन्ति युक्ताः ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तद्वच्छरीरेषु भवन्ति पञ्च
ज्ञानैकदेशः परमः स तेभ्यः ॥३७
यथार्चिषोऽग्नेः पवनस्य वेगो
मरीचयोऽर्कस्य नदी [illegible]पः ।
गच्छन्ति चायान्ति च संचर[illegible]
स्तद्वच्छरीरा[illegible]णि शरीरिणां तु ॥३८
यथा च कश्चित् परशुं गृहीत्वा
धूमं न पश्येज्ज्वलनं च काष्ठे ।
तद्वच्छरीपोदरपाणिपादं
छित्त्वा न पश्यन्ति ततो यदन्यत् ॥३९
ह्यन्येव काष्ठानि यथा विमथ्य
धूमं च पश्येज्ज्वलनं च योगात् ।
तद्वत् सबुद्धिः सममिन्द्रियात्मा
बुधः परं पश्यति तं स्वभावम् ॥४०

जैसे अग्नि से जलता हुआ दीपक स्वयं प्रकाशित होता हुआ निकटस्थ सभी वस्तुओं को प्रकाशित करता है, वैसे ही इस देह रूपी वृक्ष में स्थित हुई पंचेन्द्रिय चिन्मय ज्ञान के प्रकाश से स्वयं प्रकाशित होकर विषयों को भी प्रकाशित करती हैं ॥३६॥ जैसे विभिन्न कार्यों में किसी राजा द्वारा नियुक्त मन्त्रीगण अपने-अपने कार्यों की सूचना राजा को देते हैं, वैसे ही शरीरों में स्थित पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ अपने-अपने विषय की सूचना बुद्धि को देती हैं । जैसे मन्त्रियों से राजा श्रेष्ठ है, वैसे उन इन्द्रियों से ज्ञान श्रेष्ठ है ॥३७॥ जैसे अग्नि की शिखायें, वायु का वेग, सूर्य की रश्मियाँ और नदियों का बहता हुआ जल-यह सदा आवागमन शील हैं । वैसे ही, देह धारियों के शरीरों को भी आवागमन वाला समझना चाहिये ॥३८॥ जैसे किसी लकड़ी को कुल्हाड़ी से चीरने पर अग्नि अथवा धुँआ कुछ भी दिखाई नहीं देता, वैसे ही इस देह को चीरने अथवा हाथ-पाँव काटने से, शरीर से भिन्न उस अन्तर्यामी की आत्मा को भी कोई देख नहीं सकता ॥३९॥ परन्तु, उन्हीं लकड़ियों को युक्ति पूर्वक रगड़ने पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अग्नि और धुआ दोनों ही दिखाई देते है, वसे ही योग के द्वारा मन-इन्द्रियों को बुद्धि के सहित समाहित करने वाला ज्ञानी इन सबसे उत्कृष्ट ज्ञान को प्राप्त कर आत्मा का साक्षात्कार कर लेता है ।।४०।।

यथात्मनोऽङ्गं पतितं पृथिव्यां
स्वप्नान्तरे पश्यति चात्मनोऽन्यत् ।
श्रोत्रादियुक्तः सुमनाः सुबुद्धि-
लिङ्गात्तथा गच्छसि लिङ्गमन्यत् ।।४१
उत्पत्तिवृद्धिव्ययसंनिपातै-
र्न युज्यतेऽसौ परमः शरीरी ।
अनेन लिङ्गेन तु लिङ्गमन्यद्
गच्छत्यदृष्टः फलसंनियोगात् ।।४२
न चक्षुषा पश्यति रूपमात्मनो
न चापि संस्पर्शमुपैति किंचित् ।
न चापि तैः साधयते तु कार्यं
ते तं न पश्यन्ति स पश्यते तान् ।।४३
यथा समीपे ज्वलतोऽनलस्य
संतापजं रूपमुपैति कश्चित् ।
न चान्तरं रूपगुणं बिभर्ति
तथैव तद् दृश्यति रूपमस्य ।।४४
तथा मनुष्यः परिमुच्य काय-
मदृश्यमन्यद् विशते शरीरम् ।
विसृज्य भूतेषु महत्सु देहं
तदाश्रयं चैव बिभर्ति रूपम् ।।४५

जैसे स्वप्न में मनुष्य अपने शरीर के कटे हुए अङ्ग को अपने से पृथक् होकर पृथ्वी पर पड़ा हुआ देखता है, वैसे ही दस इंद्रिय, पंच प्राण, मन और बुद्धि-इन सत्रह तत्वों को शुद्ध मन-बुद्धि वाला मनुष्य अपने से पृथक् ही समझे । ऐसा न समझने वाला मनुष्य ही एक देह से दूसरे देह में आता जाता रहता है ।।४१।। आत्मा शरीर से नितान्त भिन्न है । वह शरीर के

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्पत्ति, वृद्धि, क्षय, मृत्यु आदि किसी भी दोष से लिप्त नहीं होता। परन्तु, अज्ञानी पुरुष अपने पहले किये हुए कर्मों के फल रूप सम्बन्ध से उपरोक्त सूक्ष्म शरीर सहित अन्य शरीर को प्राप्त होता है ।।४२।। इन नेत्रों के द्वारा कोई भी आत्मा के स्वरूप को देखने में समर्थ नहीं है। अपनी त्वचा से उसका स्पर्श भी नहीं कर सकता। तात्पर्य यह है कि इन्द्रियों के द्वारा आत्मा को जानने का कोई कार्य सिद्ध नहीं होता। वे इन्द्रियाँ उस आत्मा को नहीं देख सकतीं, परन्तु, आत्मा उन इन्द्रियों को सदा देखता रहता है।।४३।।जैसे कोई पदार्थ पास में जलती हुई अग्नि का उष्णता से लाल रंग का हो जाता है और कुछ अंश में उसमें अग्नि का दाहक गुण भी आ जाता है, परन्तु अग्नि के आंतरिक यथार्थ रूप और गुण को वह पदार्थ ग्रहण नहीं कर सकता, वैसे ही आत्मा का स्वरूप चेतनता ही इद्रिय आदि में दिखाई देती है, परन्तु, यथार्थ रूप में वे इन्द्रिथ और शरीर चेतन नहीं होते। समीपस्थ पदार्थ के समान जैसे अग्नि का रूप दिखाई देने लगता है, वैसे ही आत्मा भी इन्द्रियों के विषयों से वैसा ही होने लगता है ।।४४।। इसी प्रकार मनुष्य जब अपने दिखाई देते हुए शरीर को छोड़ कर, न दिखाई देने वाले दूसरे शरीर में प्रविष्ट होता है, तब अपने शरीर को पंच महाभूतों में मिलने के लिए छोड़ देता और अपने दूसरे शरीर को ही अपना स्वरूप मान लेता है ।।४५।।

खं वायुमग्निं सलिलं तथोर्वीं
समन्ततोऽभ्याविशते शरीरी।
नानाश्रयाः कर्मसु वर्तमानाः
श्रोत्रादयः पञ्च गुणाञ्श्रयन्ते ।।४६
श्रोत्रं खतो घ्राणमथो पृथिव्या-
स्तेजोमयं रूपमथो विपाकः।
जलाश्रयं स्वेदमुक्तं रसं च
वाय्वात्मकः स्पर्शकृतो गुणश्च ।।४७
महत्सु भूतेषु वसन्ति पञ्च
पञ्चेन्द्रियार्थाश्च तथेन्द्रियाणि।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्वाणि चैतानि मनोऽनुगानि
बुद्धि मनोऽन्वेति मतिः स्वभावम् ॥४८
शुभाशुभं कर्म कृतं यदन्यत्
तदेव प्रत्याददते स्वदेहे ।
मननु [illegible] परावराणि
जलौकसः स्रोत इवानुकूलम् ॥४९
चलं यथा दृष्टिपथं परैति
सूक्ष्मं महद् रूपमिवाभिभाति ।
स्वरूपमालोचयते च रूपं
परं तथा बुद्धिपथं परैति ॥५०

जब प्राणी शरीर का त्याग कर देता है तब उस शरीर का आकाश तत्व आकाश में, वायु तत्व वायु में, अग्नि तत्व अग्नि में, जल तत्व जल में और पार्थिव तत्व पृथ्वी में मिल जाता है। परन्तु, इन जीवों के आश्रित श्रोत्र आदि विलीन नहीं होते। वे अपने-अपने कर्मों में लगे रहते तथा दूसरा देह धारण करने पर उनमें पंचभूतों का आश्रय प्राप्त कर लेते हैं ॥ ४६ ॥ आकाश से श्रोत्रेन्द्रिय क्षौर पृथ्वी से घ्राणेन्द्रिय तथा रूप और विपाक तेजोमय [illegible] स्वेद और रस जल के आश्रित तथा स्पर्शेन्द्रिय वायु के आश्रित है ॥ [illegible] ॥ पाँचों इन्द्रियाँ और उसके विषय पाँच सूक्ष्म भूतों में रहते हैं। यह शब्द आदि विषय, आकाश आदि भूत तथा श्रोत्रादि इंद्रियाँ यह सभी मन के आज्ञाकारी हैं। वह मन बुद्धि का आश्रित तथा बुद्धि आत्मा की आश्रित है ॥४८॥ जब जीव अपने कर्मों से प्राप्त नये शरीर में जाता है, तब वह अपने पहिले किये हुए शुभ-अशुभ कर्मों का फल भोगता है। जैसे जल के जन्तु जल-प्रवाह का अनुकरण करते हैं। वैसे ही पहिले किये हुए शुभाशुभ कर्म मन का अनुकरण करते हैं ॥४९॥ जैसे द्रुतगामी नाव पर बैठे हुए मनुष्य की दृष्टि में बगल के वृक्ष पीछे की ओर भागते हुए दिखाई देते हैं, वैसे ही विकार-रहित आत्मा बुद्धि के विकार से ही विकारवान् दिखाई देता है। जैसे दूरबीन से छोटे आकार की वस्तु बड़ी दिखाई देती है, वैसे ही सूक्ष्म आत्मा भी बुद्धि और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विवेकों के शरीर में मिलने से शरीर रूप ही दिखाई देता है। जैसे स्वच्छ दर्पण में अपने मुख का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है, वैसे ही शुद्ध बुद्धि में आत्मा के स्वरूप का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है ॥५०॥

यदिन्द्रियैस्तूपहितं पुरस्तात्
प्राप्तान् गुणान् संस्मरते चिराय ।
तेष्विन्द्रियेषूपहतेषु पश्चात्
स बुद्धिरूपः परमः स्वभावः ॥५१
यथेन्द्रियार्थान् युगपत् समस्ता-
न्नोपेक्षते कृत्स्नमतुल्यकालम् ।
तथाचलं संचरते स विद्वां-
स्तस्मात् स एकः परमः शरीरी ॥५२
रजस्तमः सत्त्वमथो तृतीयं
गच्छत्यसौ स्थानगुणान् विरूपान् ।
तथेन्द्रियाण्याविशते शरीरी
हुताशनं वायुरिवेन्धनस्थम् ॥५३
न चक्षुषा पश्यति रूपमात्मनो
न पश्यति स्पर्शनमिन्द्रियेन्द्रियम् ।
न श्रोत्रलिङ्गं श्रवणेन दर्शनं
तथा कृतं पश्यति तद् विनश्यति ॥५४
श्रोत्रादीनि न पश्यन्ति स्वं स्वमात्मानमात्मना ।
सर्वज्ञः सर्वदर्शी च सर्वज्ञस्तानि पश्यति ॥५५

मनुजी ने कहा—बुद्धि के साथ तद्रूपता को प्राप्त हुआ जीव संज्ञक चेतन तत्व अपने पूर्वकाल के भोगे हुए विषयों को इन्द्रियों के द्वारा बहुत समय तक याद रखता है। यद्यपि उस समय उन भोगे हुए विषयों का इन्द्रियों से कोई सम्पर्क नहीं रहता, उनका सम्बन्ध समाप्त हो चुका होत है, फिर भी वे बुद्धि में संस्कार रूप से चित्रित होने के कारण याद आते रहते हैं ॥५१॥ वह एक या अनेक कालों में, भूत भविष्य के अथवा इस जन्म या अन्य जन्मों में देखे गये सब पदार्थों की उपेक्षा नहीं कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाता और परस्पर अलग न होने वाली तीनों अवस्थाओं में घूमता रहता है। इसलिये सभी का जानने वाला, साक्षी और परमोत्तम शरीर का स्वामी वह आत्मा एक ही है ॥५२॥ जागरित आदि तीनों अवस्थाएँ सत्त्व, रज और तम—इन तीनों गुणों से विभक्त हैं। इन अवस्थाओं से संबन्धित सुख-दुःख आदि गुण भी एक दूसरे से विलक्षण हैं। वह आत्मा बुद्धि के सम्बन्ध से ही उन सब का अनुभव करता है। जैसे—काष्ठ में लगी हुई अग्नि में प्रविष्ट हुई वायु अग्नि को उद्दीप्त कर देती है, वैसे ही इन्द्रियों को आत्मा से चैतन्यता प्राप्त होती है ॥५३॥ नेत्रों के द्वारा मनुष्य आत्मा के स्वरूप को नहीं देख सकता। त्वचा के द्वारा उसका स्पर्श भी नहीं कर सकता। क्योंकि आत्मा तो इन्द्रिय है। वह आत्मा श्रोत्र द्वारा सुना नहीं जा सकता, क्योंकि वह शब्द रहित है। परन्तु, जब ज्ञान के द्वारा आत्मा का साक्षात्कार होता है, तब उसके साधनों का नाश हो जाता है ॥५४॥ श्रोत्रादि इन्द्रियाँ भी अपने द्वारा ही स्वयं को नहीं जान सकतीं। परन्तु, आत्मा उन सबको जानता है, क्योंकि वह सर्वज्ञ तथा सर्वसाक्षी है ॥५५॥

यथा हिमवतःपार्श्वं पृष्ठं चन्द्रमसो यथा।
न दृष्टपूर्वं मनुजैर्न च तन्नास्ति तावता ॥५६
तद्वद् भूतेषु भूतात्मा सूक्ष्मो ज्ञानात्मवानसौ।
अदृष्टपूर्वश्चक्षुर्भ्यां न चासौ नास्मि तावता ॥५७
पश्यन्नपि यथा लक्ष्म जगत् सोमे न बिन्दति।
एवमस्ति न चोत्पन्नं न च तन्न परायणम् ॥५८
रूपवन्तमरूपत्वादुदयास्तमने बुधाः।
धिया समनुपश्यन्ति तद्गताः सवितुर्गतिम् ॥५९
तथा बुद्धिप्रदीपेन दूरस्थं सुविपश्चितः।
प्रत्यासन्नं निनीषन्ति ज्ञेयं ज्ञानाभिसंहितम् ॥६०

जैसे, मनुष्यों ने हिमालय का द्वितीय पार्श्व और चन्द्रमा का पिछला भाग नहीं देखा है, तो भी यह नहीं कह सकते कि हिमालय का द्वितीय पार्श्व और चन्द्रमा का पृष्ठ भाग है ही नहीं। वैसे ही सब भूतों के भीतर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्थित आत्मा अत्यन्त सूक्ष्म होने के कारण इन नेत्रों से कभी नहीं देखा गया तो भी आत्मा का अस्तित्व अमान्य नहीं हो सकता ।।५६-५७।। जैसे चन्द्रमा का कलङ्क जगत् का ही चिह्न है, परन्तु, उसको देखने वाले मनुष्य वैसा नहीं समझते । वैसे ही 'मैं हूँ' इस रूप में आत्मा का ज्ञान सबको है, परन्तु यथार्थ ज्ञान न होने से मनुष्य उसके परायण नहीं हैं ।।५८।। रूपवान् पदार्थ अपने उत्पन्न होने से पहिले और नष्ट हो जाने पर रूपहीन ही रहते हैं और इसकी अरूपता का निश्चय बुद्धिमानों को इसी से हो जाता है तथा सूर्य के उदय और अस्त से सूर्य की गति का अनुमान कर लिया जाता है, वैसे ही विवेकीजन बुद्धि रूपी दीपक से इन्द्रियातीत ब्रह्म का साक्षात्कार करते हुए इस दृश्य प्रपञ्च को ज्ञान स्वरूप ब्रह्म में लीन करने की चेष्टा करते हैं ।।५९-६०।।

न हि खल्वनुपायेन कश्चिदर्थोऽभिसिद्ध्यति ।
सूत्रजालैर्यथा मत्स्यान् वध्नन्ति जलजोविनः ।।६१
मृगैर्मृगाणां ग्रहणं पक्षिणां पक्षिभिर्यथा ।
गजानां च गजैरेव ज्ञेयं ज्ञानेन गृह्यते ।।६२
अहिरेव ह्यहेः पादान् पश्यतीति हि नः श्रुतम् ।
तद्वन्मूर्तिषु मूर्तिस्थं ज्ञेयं ज्ञानेन पश्यति ।।६३
नोत्सहन्ते यथा वेत्तुमिन्द्रियैरिन्द्रियाण्यपि ।
तथैवेह परा बुद्धिः परं बोध्यं न पश्यति ।।६४
यथा चन्द्रो ह्यमावास्यामलिङ्गत्वान्न दृश्यते ।
न च नाशोऽस्य भवति तथा विद्धि शरीरिणम् ।।६५

उचित उपाय के अभाव में किसी भी प्रयोजन की सिद्धि नहीं होती । जैसे जल-जन्तुओं से जीविका चलाने वाले जाल में मछलियों को बाँधते हैं अथवा जैसे मृगों के द्वारा मृगों को, पक्षियों के द्वारा पक्षियों को और हाथियों के द्वारा हाथियों को पकड़ते हैं वैसे ही जानने योग्य वस्तु का ग्रहण ज्ञान के द्वारा ही होता है ।।६१-६२।। सुना जाता है कि सांप के पाँवों को साँप ही पहिचान सकता है, वैसे ही सब शरीरों में निवास करने वाली ज्ञेय रूप आत्मा को मनुष्य ज्ञान के द्वारा ही पहिचान सकता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है ॥६३॥ जैसे इन्द्रियाँ भी अपने द्वारा किसी ज्ञेय को नहीं जान पातीं, वैसे ही पराबुद्धि भी उस परमबोध्य तत्व को स्वयं देखने में असमर्थ है । केवल ज्ञाता पुरुष ही बुद्धि के द्वारा उसे देख सकता है ॥६४॥ जैसे अमावस्या का चन्द्रमा प्रकाश-रहित होने से दिखाई नहीं देता, परन्तु यह नहीं कह सकते कि उसका अस्तित्व ही नहीं है। वैसे ही शरीरस्थ आत्मा अदृश्य होते हुए भी अस्तित्व हीन नहीं है ॥६५॥

क्षीणकोशो ह्यमावास्यां चन्द्रमा न प्रकाशते ।
तद्वन्मूर्तिविमुक्तोऽसौ शरीरी नोपलभ्यते ॥६६

यथाऽऽकाशान्तरं प्राप्य चन्द्रमा भ्राजते पुनः ।
तद्वल्लिङ्गान्तरं प्राप्य शरीरी भ्राजते पुनः ॥६७
जन्म वृद्धिः क्षयश्चास्य प्रत्यक्षेणोपलभ्यते ।
सा तु चान्द्रमसी वृत्तिर्न तु तस्य शरीरिणः ॥६८
उत्पत्तिवृद्धिवयसा यथा स इति गृह्यते ।
चन्द्र एव त्वमावास्यां तथा भवति मूर्तिमान् ॥६९
नोपसर्पद् विमुञ्चद् वा शशिनं दृश्यते तमः ।
विसृजंश्चोपसर्पंश्च तद्वत् पश्य शरीरिणम् ॥७०

जैसे अमावस्या को चन्द्रमा अपने दिखाई देने वाले स्थान से हटने के कारण दिखाई नहीं देता, वैसे ही देह-धारण करने वाला आत्मा देह से निकलने पर दिखायी नहीं देता ॥६६॥ फिर वही चन्द्रमा आकाश के अन्य स्थान को प्राप्त होकर पुनः प्रकाशित होता है। वैसे ही जीवात्मा भी दूसरे देह को धारण करके फिर प्रकट हो जाता है ॥६७॥ जन्म, वृद्धि और क्षय प्रत्यक्ष रूप से देखे जाते हैं, परन्तु, चन्द्रमण्डल में प्रतीत होने वाली वह वृत्ति चन्द्रमा की नहीं है । वैसे ही शरीर की वृत्ति ही जन्म, वृद्धि आदि है, आत्मा की नहीं है ॥६८॥ जब किसी व्यक्ति का जन्म होता है, वह वृद्धि को प्राप्त होता है और किशोर, युवा आदि विभिन्न अवस्थाओं में पहुँचने पर भी यही समझा जाता है कि यह व्यक्ति वही है, वैसे ही अमावस्या के पश्चात् जब चन्द्रमा पुनः मूर्तिमान होता है, तब

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वही चन्द्रमा माना जाता है ॥६६॥ जैसे अन्धकार रूपी राहु चन्द्रमा की ओर बढ़ता हुआ और छोड़ कर जाता हुआ दिखाई नहीं देता, वैसे ही जीवात्मा भी शरीर में आता हुआ या शरीर छोड़ कर जाता हुआ दिखाई नहीं देता ॥७०॥

यथा चन्द्रार्कसंयुक्तं तमस्तदुपलभ्यते ।
तद्वच्छरीरसंयुक्तः शरीरीत्युपलभ्यते ॥७१
तथा चन्द्रार्कनिर्मुक्तः स राहुर्नोपलभ्यते ।
तद्वच्छरीरनिर्मुक्तः शरीरी नोपलभ्यते ॥७२
यथा चन्द्रो ह्यमावास्यां नक्षत्रैर्युज्यते गतः ।
तद्वच्छरीरनिर्मुक्तः फलैर्युज्यति कर्मणः ॥७३
यथा व्यक्तमिदं शेते स्वप्ने चरति चेतनम् ।
ज्ञानमिन्द्रियसंयुक्तं तद्वत् प्रेत्य भवाभवौ ॥७४
यथाम्भसि प्रसन्ने तु रूपं पश्यति चक्षुषा ।
तद्वत्प्रसन्नेन्द्रियत्वाज्ज्ञेयं ज्ञानेन पश्यति ॥७५

जैसे जब सूर्यग्रहण पड़ता है चन्द्रमा सूर्य से संयुक्त हो जाता है और सूर्य में छाया रूपी राहु दिखाई देता है, वैसे ही आत्मा शरीर से संयुक्त होने पर ही जाना जाता है ॥७१॥ जैसे चन्द्रमा के सूर्य से पृथक् होने पर सूर्य में राहु का होना दिखायी नहीं देता, वैसे ही शरीर से निकल जाने पर शरीर धारण करने वाला आत्मा प्रत्यक्ष नहीं होता ॥७२॥ जैसे अमावस्या के बाद चन्द्रमा नक्षत्रों से युक्त हो जाता है, वैसे ही जीवात्मा भी एक शरीर को छोड़ने के बाद कर्म-फल स्वरूप दूसरे देह से युक्त हो जाता है ॥७३॥ मनुजी ने कहा—जैसे स्वप्नावस्था प्राप्त होने पर स्थूल शरीर सोता रहता है और सूक्ष्म शरीर घूमता रहता है, वैसे ही इस शरीर का त्याग करने पर यह ज्ञान रूप आत्मा इन्द्रियों युक्त देह को पुनः धारण कर लेता है अथवा सुषुप्ति के समान मुक्त हो जाता है ॥७४॥ जैसे मनुष्य स्वच्छ और स्थिर जल में अपनी छाया देखता है, वैसे ही मन और इन्द्रियों के स्वच्छ तथा स्थिर हो जाने पर ज्ञान दृष्टि के द्वारा उस जानने योग्य आत्मा का दर्शन करता है ॥७५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स एव लुलिते तस्मिन् यथारूपं न पश्यति ।
तथेन्द्रियाकुलीभावे ज्ञेयं ज्ञाने न पश्यति ।।७६
अबुद्धिरज्ञानकृता अबुद्धया कृष्यते मनः ।
दुष्टस्य मनसः पञ्च सम्प्रदुष्यन्ति मानसाः ७७
अज्ञानतृप्तो विषयेष्ववगाढो न तृप्यते ।
अदृष्टवच्च भूतात्मा विषयेभ्यो निवर्तते ।।७८
तर्षच्छेदो न भवति पुरुषस्येह कल्मषात् ।
निवर्तते तदा तर्षः पापमन्तगतं यदा ।।७९
विषयेषु तु संसर्गाच्छाश्वतस्य तु संश्रयात् ।
मनसा चान्यथा काङ्क्षन् परं न प्रतिपद्यते ।।८०

परन्तु, हिलते हुए जल में जैसे अपना रूप दिखाई नहीं देता, वैसे ही मन और इन्द्रियों की चंचलता के कारण ज्ञेय रूप आत्मा का ज्ञान दृष्टि के अभाव में दर्शन नहीं होता ।।७६।। अविवेक से बुद्धि भ्रष्ट होती है, बुद्धि के भ्रष्ट होने से मन राग आदि दोषों में लिप्त हो जाता है । मन के दूषित होने के कारण उसकी अधीनस्थ पञ्च ज्ञानेन्द्रिय भी दोष पूर्ण हो जाती हैं ।।७७।। जिसे अज्ञान से तृप्ति मिलती हो, वह मनुष्य विषयों के अथाह जल में डूबा रह कर भी तृप्ति प्राप्त कहीं करता। वह जीव प्रारब्ध के अधीन होकर विषय भोगों की इच्छा से इस संसार में बारम्बार जन्मता मरता है ।।७८।। इस लोक में पाप के ही कारण पुरुष की तृष्णा का अन्त नहीं हो पाता । जब पाप समाप्त होते हैं, तभी तृष्णा का निवारण होता है ।।७९।। विषयों के संसर्ग-दोष से, उन्हीं में लिप्त रहने के कारण और मन के द्वारा साधन के विपरीत भोगों की कामना करते रहने से परब्रह्म की प्राप्ति नहीं हो पाती ।।८०।।

ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां क्षयात् पापस्य कर्मणः ।
यथाऽऽदर्शतले प्रख्ये पश्यत्यात्मानमात्मनि ।।८१
प्रसृतैरिन्द्रियैर्दुःखी तैरेव नियतैः सुखी ।
तस्मादिन्द्रियरूपेभ्यो यच्छेदात्मानमात्मना ।।८२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन्द्रियेभ्यो मनः पूर्वं बुद्धिः परतरा ततः ।
बुद्धेः परतरं ज्ञानं ज्ञानात् परतरं महत् ॥८३
अव्यक्तात् प्रसृतं ज्ञानं ततो बुद्धिस्ततो मनः ।
मनः श्रोत्रादिभिर्युक्तं शब्दादीन् साधु पश्यति ॥८४
यस्तांस्त्यजति शब्दादीन् सर्वाश्च व्यक्तयस्तथा ।
विमुञ्चेत् प्राकृतान्ग्रामांस्तान् मुक्त्वामृतमश्नुते ॥८५

पाप-कर्मों के क्षीण होने पर ही अन्तःकरण में ज्ञान का प्राकट्य होता है । जैसे कि स्वच्छ दर्पण में ही अपनी छाया को स्पष्ट देखा जा सकता है ॥८१॥ इंद्रियों का विषयों की और विस्तार ही मनुष्य को दुःखी बनाता है । यदि इन्द्रियों को वश में करले, तो ही सुख प्राप्त हो सकता है । अतः बुद्धि के द्वारा मन को इन्द्रियों के विषयों से दूर रखना चाहिये ॥८२॥ इन्द्रियों की अपेक्षा मन श्रेष्ठ है, मन की अपेक्षा बुद्धि श्रेष्ठ है,बुद्धि से ज्ञान और ज्ञान से परात्पर ब्रह्म श्रेष्ठ है ॥८३॥ ज्ञान का प्रसार अव्यक्त ब्रह्म से हुआ है । ज्ञान से बुद्धि का प्रसार हुआ और बुद्धि से मन का । वही मन श्रोत्र आदि इन्द्रियों के सहित शब्दादि विषयों का भले प्रकार अनुभव करता है ॥८४॥ जो मनुष्य शब्दादि विषयों, उनके आश्रय भूत व्यक्त पदार्थों, स्थूल भूतों और प्राकृत गुणों को त्याग देता है, वह अमृत स्वरूप परब्रह्म को प्राप्त हो जाता है ॥८५॥

उद्यन् हि सविता यद्वत्सृजते रश्मिमण्डलम् ।
स एवास्तमपागच्छंस्तदेवात्मनि यच्छति ॥८६
अन्तरात्मा तथा देहमाविश्येन्द्रियरश्मिभिः ।
प्राप्येन्द्रियगुणान् पञ्च सोऽस्तमावृत्य गच्छति ॥८७
प्रणीतं कर्मणा मार्गं नीयमानः पुनः पुनः ।
प्राप्नोत्ययं कर्मफलं प्रवृत्तं धर्ममात्मवान् ॥८८
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥८९
बुद्धिः कर्मगुणैर्हीना यदा मनसि वर्तते ।
तदा सम्पद्यते ब्रह्म तत्रैव प्रलयं गतम् ॥९०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जैसे उदय होने पर सूर्य अपनी किरणों का विस्तार सब ओर करता है और अस्त होते समय समेट लेता है, वैसे ही यह जीवात्मा शरीर में प्रवेश कर इन्द्रियों की विस्तृत वृत्तियों द्वारा विषयों को ग्रहण करता है और जब उस शरीर का त्याग करता है, तब उन वृत्तियों को समेट कर अपने साथ ले जाता है ॥८६-८७॥ जिस जीवात्मा ने प्रवृत्ति युक्त पाप-पुण्यमय कर्म का सहारा लिया है, वह उन कर्मों द्वारा ही बारम्बार कर्म-मार्ग पर लाया जाकर सुख-दुःख रूप कर्म-फल को प्राप्त करता रहता है ॥८८॥ इन्द्रिय द्वारा विषयों का ग्रहण न किये जाने से विषय तो शान्त हो जाते हैं, परन्तु उनकी आसक्ति रही आती है। परन्तु, परब्रह्म का साक्षात् हो जाने पर, वह आसक्ति भी नहीं रहती ॥८९॥ कर्मजनित गुणों से मुक्त हुई बुद्धि जब हृदय में स्थित हो जाती है, तब जीवात्मा ब्रह्म को प्राप्त होकर उसी में लीन हो जाता है ॥९०॥

अस्पर्शनमश्रृण्वानमनास्वादमदर्शनम् ।
अघ्राणमवितर्कं च सत्त्वं प्रविशते परम् ॥९१
मनस्याकृतयो मग्ना मनस्त्वभिगतं मतिम् ।
मतिस्त्वभिगता ज्ञानं ज्ञानं चाभिगतं परम् ॥९२
नेन्द्रियैर्मनसः सिद्धिर्न बुद्धि बुद्धचते मनः ।
न बुद्धिर्बुद्धचतेऽव्यक्तं सूक्ष्मं त्वेतानि पश्यति ॥९३
दुःखोपघाते शारीरे मानसे चाप्युपस्थिते ।
यस्मिन् न शक्यतेकर्तुं यत्नस्तं नानुचिन्तयेत् ॥९४
मैषज्यमेतद् दुःखस्य यदेतन्नानुचिन्तयेत् ।
चिन्त्यमानं हि चाभ्येति भूयश्चापि प्रवर्तते ॥९५

स्पर्श, श्रवण, रसन, दर्शन, घ्राण तथा संकल्प-विकल्प से भी वह ब्रह्म पृथक् है। उसमें तो केवल बुद्धि ही प्रविष्ट हो सकती है ॥९१॥ मन में शब्दादि विषय रूप सभी पदार्थ लीन हो जाते हैं। मन बुद्धि में लीन होता, बुद्धि ज्ञान में लीन होती और ज्ञान परब्रह्म परमात्मा में लीन होता है ॥९२॥ इन्द्रियों को मन का ज्ञान नहीं होता। मन को बुद्धि का ज्ञान नहीं और बुद्धि को सूक्ष्म और अव्यक्त आत्मा का ज्ञान नहीं होता।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परन्तु, अव्यक्त आत्मा इन सब को देखता जानता है ॥९३॥ मनुजी ने कहा—कोई ऐसा शारीरिक या मानसिक कष्ट उपस्थित हो जाय, जिसके कारण साधन करने की सामर्थ्य भी न रहे, तो उस कष्ट का चिन्तन ही त्याग दे ॥९४॥ कष्ट को दूर करने की सर्वोत्तम औषधि उसका चिन्तन छोड़ देना ही है। क्योंकि चिन्तन करने से वह सदा सामने आ जाता और वृद्धि को प्राप्त होता रहता है ॥९५॥

प्रज्ञया मानसं दुःखं हन्याच्छारीरमौषधैः ।
एतद् विज्ञानसामर्थ्यं न बालैः समतामियात् ॥९६

अनित्यं यौवनं रूपं जीवितं द्रव्यसंचयः ।
आरोग्यं प्रियसंवासो गृध्येत् तत्र न पण्डितः ॥९७

न जानपदिकं दुःखमेकः शोचितुमर्हति ।
अशोचन् प्रतिकुर्वीत यदि पश्येदुपक्रमम् ॥९८

सुखाद् बहुतरं दुःखं जीविते नास्ति संशयः ।
स्निग्धस्य केन्द्रियार्थेषुमोहान्मरणमप्रियम् ॥९९

परित्यजति यो दुःखं सुखं वाप्युभयं नरः ।
अभ्येति ब्रह्म सोऽत्यन्तं न ते शोचन्ति पण्डिताः ॥१००

मानसिक कष्ट हो तो उसे बुद्धि पूर्वक विचार के द्वारा दूर करे और शारीरिक दुःख हो तो उसके लिए औषधि-सेवन करे। यही विज्ञान की शक्ति है। इससे मनुष्य को बालक के समान रोना नहीं पड़ता ॥९६॥ यौवन, रूप, जीवन, धन का संग्रह, आरोग्य तथा प्रियजनों से मिलना यह सभी नाशवान् हैं। विवेकी जनों को इनमें आसक्ति नहीं रखनी चाहिए ॥९७॥ जो दुःख सम्पूर्ण देश पर हो, उस पर कोई एक व्यक्ति शोक न करे। यदि उसके दूर होने का कोई उपाय सूझ पड़े तो, शोक न करके, उसे दूर करने का प्रयत्न करे ॥९८॥ जीवन में सुख की अपेक्षा दुःख ही ज्यादा है, इसमें संशय नहीं है। विषयों में अधिक आसक्त मनुष्य मोह के कारण मरण रूप तथा प्रिय न लगने वाले कष्टों को भोगता है

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

॥९९॥ जो मनुष्य सुख-दुःख दोनों का ही त्याग कर देता है । वह अक्षय ब्रह्म को प्राप्त करता है । इसीलिये, वे ज्ञानी पुरुष कभी शोक-संतप्त नहीं होते ॥१००॥

दुःखमर्था हि युज्यन्ते पालने न च ते सुखम् ।
दुःखेन चाधिगम्यन्ते नाममेषां न चिन्तयेत् ॥१०१
ज्ञानं ज्ञेयाभिनिर्वृत्तं विद्धि ज्ञानगुणं मनः ।
प्रज्ञाकरणसंयुक्तं ततो बुद्धिः प्रवर्तते ॥१०२
यदा कर्मगुणैर्हीना बुद्धिर्मनसि वर्तते ।
तदा प्रज्ञायते ब्रह्म ध्यानयोगसमाधिना ॥१०३
सेयं गुणवती बुद्धिर्गुणेष्वेवाभिवर्तते ।
अपरादभिनिःसृत्य गिरेः शृङ्गादिवोदकम् ॥१०४
यदा निर्गुणमाप्नोति ध्यानं मनसि पूर्वजम् ।
तदा प्रज्ञायते ब्रह्म निकर्ष निकषे यथा ॥१०५

विषयों का संचय करने में दुःख ही है । उनकी रक्षा करने से भी सुख प्राप्त नहीं हो सकता। दुःख से ही विषयों की प्राप्ति होती है । इसलिये उनके नष्ट होने से चिन्ता न करे ॥१०१॥ तुम्हें यह जानना चाहिये कि परमात्मा से ज्ञेय रूप में ज्ञान का प्राकट्य है तथा मन को ज्ञान का ही गुण समझो । उसके ज्ञानेन्द्रियों से युक्त होने पर बुद्धि कर्मों में प्रवृत्त होती है ॥१०२॥ जब कर्म-संस्कारों से विहीन हुई बुद्धि हृदय में स्थित होती है, तभी ध्यान योग से उत्पन्न समाधि के द्वारा ब्रह्म का भले प्रकार ज्ञान हो जाता है ॥१०३॥ जैसे पर्वत शिखर से निकली हुई जल धारा ढाल की ओर प्रवाहित होती है, वैसे ही यह गुण युक्त बुद्धि अज्ञान के कारण परब्रह्म से नियुक्त होकर रूप आदि गुणों की ओर प्रवाहित होती है ॥१०४॥ परन्तु, जब साधक उसके निर्गुण तत्त्व को ध्यान के द्वारा अन्तःकरण में पा लेता है, तब कसौटी पर कसे गये सुवर्ण के तुल्य ब्रह्म के यथार्थ रूप को जाना जाता है ॥१०५॥

मनस्त्वपहृतं पूर्वमिन्द्रियार्थनिदर्शकम् ।
न समक्षगुणापेक्षि निर्गुणस्य निदर्शकम् ॥१०६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सर्वाण्येतानि संवार्य द्वाराणि मनसि स्थितः ।
मनस्येकाग्रतां कृत्वा तत्परं प्रतिपद्यते ।।१०७
यथा महान्ति भूतानि निवर्तन्ते गुणक्षये ।
तथेन्द्रियाण्युपादाय बुद्धिर्मनसि वर्तते ।।१०८
यदा मनसि सा बुद्धिर्वर्ततेऽन्तरचारिणी ।
व्यवसायगुणोपेता तदा सम्पद्यते मनः ।।१०९
गुणवद्भिर्गुणोपेतं यदा ध्यानगुणं मनः ।
तदा सर्वान् गुणान् हित्वा निर्गुणं प्रतिपद्यते ।।११०

परन्तु, इन्द्रियों के विषय का निदर्शन कराने वाला मन, जब विषयों की ओर चला जाता है, तब वह विषय-गुण की अपेक्षा रखने वाला मन उस निर्गुण तत्व को दिखाने में समर्थ नहीं होता ।।१०६।। सभी इन्द्रियों को रोक कर केवल संकल्प से ही मन में स्थित हुआ साधक उस सब को हृदय में एकत्र कर उससे भी परे स्थित परब्रह्म को पा लेता है ।।१०७।। जैसे गुणों के क्षीण हो जाने पर पञ्चमहाभूत निवृत्त हो जाते हैं वैसे ही बुद्धि सब इन्द्रियों के सहित हृदय में विद्यमान् हो जाती है ।।१०८।। जब निश्चय करने वाली बुद्धि अन्तर्मुखी होकर हृदय में रहती है, तब मन भी पवित्र हो जाता है ।।१०९।। शब्दादि गुणों वालो इन्द्रियों के विषय रूप गुणों से आवृत्त मन जब ध्यान से उत्पन्न हुए गुणों से संयुक्त है, तब उन सभी गुणों को छोड़ कर निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है ।।११०।।

अव्यक्तस्येह विज्ञाने नास्ति तुल्यं निदर्शनम् ।
यत्र नास्ति पदन्यासः कस्तं विषयमाप्नुयात् ।।१११
तपसा चानुमानेन गुणैर्जात्या श्रुतेन च ।
निनीषेत् परमं ब्रह्म विशुद्धेनान्तरात्मना ।।११२
गुणहीनो हि तं मार्गं बहिः समनुवर्तते ।
गुणाभावात् प्रकृत्या वा निस्तर्क्यं ज्ञेयसम्मितम् ।।११३
निर्गुण्याद् ब्रह्म चाप्नोति सगुणत्वान्निवर्तते ।
गुणप्रचारिणी बुद्धिर्हुताशन इवेन्धने ।।११४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यथा पञ्च विमुक्तानि इन्द्रियाणि स्वकर्मभिः ।
तथा हि परमं ब्रह्म विमुक्तं प्रकृतेः परम् ॥११५

उस अव्यक्त ब्रह्म को बताने वाली कोई भी उपमा नहीं मिलती है । जो विषय वाणी का है ही नहीं, उसे कौन मनुष्य कहने योग्य बना सकता है ? ॥११४॥ तप, अनुमान, और इंद्रिय संयम आदि गुणों से, जाति-धर्मों के पालन से और शास्त्र के अध्ययन से अन्तःकरण को पवित्र बना कर उसके द्वारा परब्रह्म को पाने का यत्न करे ॥११२॥ उन तप आदि गुणों से हीन मनुष्य बाह्य मार्ग का अनुसरण करने वाला होता है। वह परमात्मा ज्ञेय स्वरूप तथा गुणातीत होने के कारण स्वभाव से ही तर्क-रहित है ॥११३॥ जैसे अग्नि सूखे ईंधन में विचरती है, वैसे ही बुद्धि भी शब्दादि गुणों में विचरती है और जब वह उन गुणों के संबंध से रहित हो जाती है, तब निर्गुण होकर ब्रह्म को प्राप्त कर लेती है । जब तक गुणों के प्रति मोह रहता है, तब तक वह गुणमयी रहने के कारण ब्रह्म को न प्राप्त होकर वापिस लौट आती है ॥११४॥ जैसे पाँचों इन्द्रियाँ अपने कार्य रूप गुणों से पृथक् हैं, वैसे ही ब्रह्म भी प्रकृति से नितान्त अलग ही है ॥११५॥

एवं प्रकृतितः सर्वे प्रवर्तन्ते शरीरिणः ।
निवर्तन्ते निवृत्तौ च स्वर्गं चैवोपयान्ति च ॥११६
पुरुषः प्रकृतिबुद्धिर्विषयाश्चेन्द्रियाणि च ।
अहंकारोऽभिमानश्च समूहो भूतसंज्ञकः ॥११७
एतस्याद्या प्रवृत्तिस्तु प्रधानात् सम्प्रवर्तते ।
द्वितीया मिथुनव्यक्तिमविशेषान्नियच्छति ॥११८
धर्मादुत्कृष्यते श्रेयस्तथाश्रेयोऽप्यधर्मतः ।
रागवान् प्रकृतिं ह्येति विरक्तो ज्ञानवान् भवेत् ॥११९

इस प्रकार सभी प्राणी प्रकृति से उत्पन्न होते हैं और अन्त में उसी में लीन हो जाते हैं । उसके बाद पुण्य और पाप के फल स्वरूप उन्हें स्वर्ग या नरक की प्राप्ति होती है ॥११६॥ पुरुष, प्रकृति, बुद्धि, पाँचों विषय,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दसों इन्द्रियाँ, अहंकार, मन और पंच महाभूत—इन पच्चीस तत्वों के समूह को ही प्राणी कहा गया है ॥११७॥ बुद्धि आदि तत्व पहिले प्रकृति से ही उत्पन्न हुए । फिर दूसरी बार से वे मैथुन-धर्म से सम्पन्न होकर प्रकट होने लगे ॥११८॥ धर्म करने से कल्याण होता है और अधर्म करने से अमंगल होता है । विषयों में आसक्त हुआ मनुष्य प्रकृति को प्राप्त होता है, परन्तु विरक्त पुरुष आत्म ज्ञानी होकर मुक्ति को प्राप्त हो जाता है ॥१ ६॥

यदा तैः पञ्चभिः पञ्च युक्तानि मनसा सह ।
अथ तद् रक्ष्यते ब्रह्म मणौ सूत्रमिवार्पितम् ॥१२०
तदेव च यथा सूत्र सुवर्णे वर्तते पुनः ।
मुक्तास्वथ प्रवालेषु मृन्मये राजते तथा ॥१२१
तद्वद् गोऽश्वमनुष्येषु तद्वद्धस्तिमृगादिषु ।
तद्वत् कीटपतङ्गेषु प्रयुक्तात्मा स्वकर्मभिः ॥१२२
येन येन शरीरेण यद्यत्कर्म करोत्ययम् ।
तेन तेन शरीरेण तत् तत् फलमुपाश्नुते ॥१२३
यथा ह्येकरसा भूमिरोषध्यर्थानुसारिणी ।
तथा कर्मानुगा बुद्धिरन्तरात्मानुदर्शिनी ॥१२४
ज्ञानपूर्वा भवेल्लिप्सा लिप्सापूर्वाभिसंधिता ।
अभिसंधिपूर्वकं कर्म कर्मफलं ततः फलम् ॥१२५

मनुजी ने कहा—जब मनुष्य शब्दादि विषयों सहित अपनी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को वश में कर लेता है, तब वह मणियों में लगे हुए धागे के समान सर्वत्र व्याप्त ब्रह्म की समीपता प्राप्त करता है ॥१२०॥ जैसे वही धागा सुवर्ण की मालाओं में, मोती या मूँगों की लड़ियों में और मिट्टी से बनी माला में गुँथकर भी शोभा पाता है, वैसे ही गौ, घोड़ा, हाथी, हरिण, कीट-पतंग आदि के देहों में भी वही ब्रह्म व्याप्त है । विषयों में आसक्त हुआ जीव अपने कर्म के अनुसारही शरीर धारण करता है ॥१२१-१२२॥ जिस-जिस शरीर के द्वारा यह आत्मा जो जो कर्म करता है, उस-उस कर्म को, उसी-उसी शरीर को धारण करके अपने कर्म का फल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भोग करता है ॥१२३॥ जैसे एक रस वाली पृथिवी में जैसा बीज बोया जाता है, वह उसमें वैसा ही रस उत्पन्न करती है, वैसे ही अन्तरात्मा द्वारा प्रकट हुई बुद्धि प्रारब्ध कर्म के अनुसार ही एक देह से दूसरे देह को प्राप्त होती रहती है ॥१२४॥ प्रथम तो मनुष्य किसी विषय को जानता है। जब जान लेता है, तब उसे प्राप्त करने की इच्छा करता है। फिर 'इसे प्राप्त करूँ' इस निश्चय के साथ कर्म करता है और कर्म के पूर्ण होने पर उसका फल प्राप्त हो जाता है ॥१२५॥

फलं कर्मात्मकं विद्यात् कर्म ज्ञेयात्मकं तथा ।
ज्ञेयं ज्ञानात्मक विद्याज्ज्ञानं सदसदात्मकम् ॥१२६
ज्ञानानां च फलानां च ज्ञेयानां कर्मणां तथा ।
क्षयान्ते यत् फलं विद्याज्ज्ञानं ज्ञेयप्रतिष्ठितम् ॥१२७
महद्धि परमं भूतं यत् प्रपश्यन्ति योगिनः ।
अबुधास्तं न पश्यन्ति ह्यात्मस्थं गुणबुद्धयः ॥१२८
पृथिवीरूपतो रूपमपामिह महत्तरम् ।
अद्भ्यो महत्तरं तेजस्तेजसः पवनो महान् ॥१२९
पवनाच्च महद् व्योम तस्मात् परतरं मनः ।
मनसो महती बुद्धिर्बुद्धेः कालो महान् स्मृतः ॥१३०
कालात् स भगवान् विष्णुर्यस्य सर्वमिदं जगत् ।
नादिर्न मध्यं नैवान्तस्तस्य देवस्य विद्यते ॥१३१

इस प्रकार फल कर्मात्मक है और कर्म ज्ञेयात्मक ज्ञेय है ज्ञानात्मक है और ज्ञान का स्वरूप कार्य तथा कारण है ॥१२६॥ ज्ञान, फल, ज्ञेय और कर्म का अन्त होने पर जो प्राप्त होने वाला फल शेष रहता है, उसी को ज्ञेय मात्रा में व्याप्त ज्ञान रूप ब्रह्म समझो ॥१२७॥ विषयों में आसक्त हुए मनुष्य अपने ही भीतर स्थित उस परब्रह्म को नहीं देख पाते, उसे तो केवल योगीजन ही देखने में समर्थ हैं ॥१२८॥ इस लोक में पृथिवी के स्वरूप की अपेक्षा जल का स्वरूप ही महान् है। जल से महान् तेज है, तेज से महान् पवन और पवन से महान् आकाश है, आकाश से मन महानतम है। मन से बुद्धि महान् है, बुद्धि से काल महान् है काल से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जिनका आदि, मध्य और अन्त नहीं है और यह सम्पूर्ण जगत् जिनकी रचना है, वे भगवान् विष्णु महान् हैं ॥१२९-१३१॥

अनादित्वादमध्यत्वादनन्तत्वाच्च सोऽव्ययः ।
अत्येति सर्वदुःखानि दुःखं ह्यन्तवदुच्यते ॥१३२
तद् ब्रह्म परमं प्रोक्तं तद्धाम परमं पदम् ।
तद् गत्वा कालविषयाद् विमुक्तामोक्षमाश्रिताः ॥१३३
गुणेष्वेते प्रकाशन्ते निर्गुणत्वात् ततः परम् ।
निवृत्तिलक्षणो धर्मस्तथाऽऽनन्त्याय कल्पते ॥१३४
ऋचो यजूंषि सामानि शरीराणि व्यपाश्रिताः ।
जिह्वाग्रेषु प्रवर्तन्ते यत्नसाध्या विनाशिनः ॥१३५

वे अनादि, अमध्य और अनन्त होने के कारण ही अव्यय हैं। उनको प्राप्त होने वाले जीव काल के विषयों से मुक्त होकर मोक्ष में स्थित हो जाते हैं ॥१३२-१३३॥ वे जीव गुणों में प्रकाशित हो रहे हैं, परन्तु, ब्रह्म निर्गुण होने के कारण उन जीवों से नितान्त परे हैं। निवृत्ति रूपी धर्म ही अक्षय पद की प्राप्ति कराने वाला है ॥१३४॥ ऋग्, यजुः और साम यह तीनों वेद अध्ययन के समय शरीर के आश्रित रहते हैं तथा जिह्वा के अग्रभाग पर व्यक्त होते हैं इसलिये वे यत्न से सिद्ध होने वाले और नष्ट हो जाने वाले हैं ॥१३५॥

न चैवमिष्यते ब्रह्म शरीराश्रयसम्भवम् ।
न यत्नसाध्यं तद् ब्रह्म नादिमध्यं न चान्तवत् ॥१३६
ऋचामादिस्तथा साम्नां यजुषामादिरुच्यते ।
अन्तश्चादिमतां दृष्टो न त्वादिर्ब्रह्मणः स्मृतः ॥१३७
अनादित्वादनन्तत्वात् तदनन्तमथाव्ययम् ।
अव्ययत्वाच्च निर्दुःखं द्वन्द्वाभावस्ततः परम् ॥१३८
अदृष्टतोऽनुपायाच्च प्रतिसंधेश्च कर्मणः ।
न तेन मर्त्याः पश्यन्ति येन गच्छन्ति तत् पदम् ॥१३९
विषयेषु च संसर्गाच्छाश्वतस्य च दर्शनात् ।
मनसा चान्यदाकाङ्क्षन् परं न प्रतिपद्यते ॥१४०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परन्तु, परमात्मा इस प्रकार शरीर के आश्रित होने पर भी वेदाध्ययन के समान यत्न से सिद्ध नहीं होता, क्योंकि वह अनादि, अमध्य और अनन्त है ॥१३६॥ वही ऋग्, यजुः और सामवेद कहा गया है। जिन पदार्थों का आदि है, उनका ही अन्त होता है, परन्तु उस परमात्मा का तो आदि ही नहीं कहा गया तो अन्त कैसे होगा ? ॥१३७॥ वह अनादि और अनन्त होने के कारण अन्तहीन अविनाशी है तथा अविनाशी होने से दुःख-रहित भी है। इसलिये उसे सब से परे समझना चाहिए ॥१३८॥ परन्तु, अदृष्ट, अनुपाय और प्रतिसन्धि के कारण, मनुष्य उस मार्ग को नहीं देख सकते, जिस पर चलने से परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति होती है ॥१३९॥ मनुष्य विषय सुख को स्थायी मानकर उनमें आसक्ति रखते हैं तथा अपने मन को सांसारिक पदार्थों की प्राप्ति में लगाये रहते हैं, इसलिये वे उस परब्रह्म को प्राप्त नहीं कर सकते ॥१४०॥

गुणान् यदिह पश्यन्ति तदिच्छन्त्यपरे जनाः ।
परं नैवाभिकाङ्क्षन्ति निर्गुणत्वाद् गुणार्थिनः ॥१४१
गुणैर्युक्त्ववरैर्युक्तः कथं विद्यात् परान् गुणान् ।
अनुमानाद्धि गन्तव्यं गुणैरवयवैः परम् ॥१४२

सूक्ष्मेण मनसा विद्यो वाचा वक्तुं न शक्नुमः ।
मनो हि मनसा ग्राह्यं दर्शनेन च दर्शनम् ॥१४३
ज्ञानेन निर्मलीकृत्य बुद्धि बुद्धया मनस्तथा ।
मनसा चेन्द्रियग्रामक्षरं प्रतिपद्यते ॥१४४

बुद्धिप्रवीणो मनसा समृद्धो
निराशिषं निर्गुणमभ्युपैति ।
परं त्यजन्तोह विलोड्यमाना
हुताशनं वायुरिवेन्धनस्थम् ॥१४५

इस संसार में मनुष्य जिन-जिन विषयों को देखते हैं, उन-उन को प्राप्त करने की इच्छा करते हैं। परन्तु, जो सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म है, उसे प्राप्त करने की इच्छा उन्हें नहीं होती। क्योंकि वे गुणों को चाहते हैं और ब्रह्म

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन गुणों से परे है ॥१४१॥ इन तुच्छ विषयों में पड़ा हुआ मनुष्य परम दिव्य गुणों को किस प्रकार जानेगा ? जैसे धुँए को देख कर अग्नि का होना जाना जाता है, वैसे ही नित्यत्व आदि दिव्य गुणों के द्वारा परब्रह्म परमात्मा को भी जाना जा सकता है ॥१४२॥ ध्यान के द्वारा शुद्ध और सूक्ष्म हुए मन से हमें परब्रह्म का स्वरूप-ज्ञान तो हो सकता है, परन्तु, हम वाणी के द्वारा उसका वर्णन नहीं कर सकते । क्योंकि मन मानसिक विषय को ही ग्रहण कर सकता है और ज्ञान ज्ञेय को ही बता सकता है ॥१४३॥ अतः ज्ञान से बुद्धि को निर्मल करे और बुद्धि से मन को । मन के द्वारा इन्द्रियों को शुद्ध-पवित्र करके उस अक्षर परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं ॥१४४॥ बुद्धि में प्रवीण और मानसिक बल से समृद्ध पुरुष ही सब इच्छाओं से परे, गुण-रहित उस ब्रह्म को प्राप्त होता है । जैसे काष्ठ में अदृश्य अग्नि को वायु बिना जलाये ही छोड़ देती है, वैसे ही आसक्तियों में फँसे हुए पुरुष अपने ही देह में स्थित उस परब्रह्म परमात्मा को छोड़ देते हैं ॥१४५॥

गुणादाने विप्रयोगे च तेषां
मनः सदा बुद्धिपरावराभ्याम् ।
अनेनैव विधिना सम्प्रवृत्तो
गुणापाये ब्रह्म शरीरमेति ॥१४६
अव्यक्तात्मा पुरुषो व्यक्तकर्मा
सोऽव्यक्तत्वं गच्छति ह्यन्तकाले ।
तैरेवायं चेन्द्रियैर्वर्धमानै-
र्ग्लायद्भिर्वाऽऽवर्ततेऽकामरूपः ॥१४७
सर्वैरयं चेन्द्रियैः सम्प्रयुक्तो
देहं प्राप्तः पञ्चभूताश्रयः स्यात् ।
नासामर्थ्याद् गच्छति कर्मणोह
हीनस्तेन परमेणाव्ययेन ॥१४८
पृथ्व्यां नरः पश्यति नान्तमस्या
ह्यन्तश्चास्या भविता चेति विद्धि ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परं नयन्तीह विलोड्यमानं
यथा प्लवं वायुरिवार्णवस्थम् ॥१४६

दिवाकरो गुणमुपलभ्य निर्गुणो
यथा भवेदपगतरश्मिमण्डलः ।

तथा ह्यसौ मुनिरिह निर्विशेषवान्
स निर्गुणं प्रविशति ब्रह्म चाव्ययम् ॥१५०

अनागतं सुकृतवतां परां गतिं
स्वयम्भुवं प्रभवनिधानमव्ययम् ।
सनातनं यदमृतमव्ययं ध्रुवं
निचाय्य तत् परममृतत्वमश्नुते ॥१५१

साधन रूप गुणों को ग्रहण करने वाला साधक जब अपने मन को सांसारिक पदार्थों से हटा लेता है, तब उसका मन बुद्धि उत्पन्न होने वाले शुभाशुभ विचारों से दूर होकर पवित्र हो जाता है। इस प्रकार साधन-रत साधक जब गुणों से परे हो जाता है, तब वह ब्रह्म के रूप को देख पाता है ॥१४६॥ पुरुष का आत्मा अव्यक्त है और उसके कर्म व्यक्त हैं। इसलिये वह मरण काल में अव्यक्तत्व को प्राप्त होता है। परन्तु, कामनाओं के कारण उनके स्वरूप वाला जीवात्मा उन विषयेन्द्रियों की प्रबलता के सहित संसार में फिर लौट आता है ॥१४७॥ सब इन्द्रियों से युक्त यह जीव पंचभूत रूप शरीर का आश्रय लेता है, वह ज्ञानादि का अभाव होने से केवल कर्मों को करके ही ब्रह्म को प्राप्त नहीं कर सकता, इसलिये वह उस अविनाशी ब्रह्म से वंचित रह जाता है ॥१४८॥ यद्यपि इस पृथिवी पर रहने वाला मनुष्य पृथिवी का अन्त नहीं देखता, फिर भी इसका कभी न कभी अन्त अवश्य ही मानना चाहिये। जैसे समुद्र की लहरों में उछलते हुए जहाज को अनुकूल वायु किनारे पार लगा देती है, वैसे ही संसार सागर में डूबते हुए मनुष्य को उचित वातावरण पार लगा देता है ॥१४९॥ जैसे सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित करने वाला सूर्य अपने प्रकाश रूपी गुण को अस्त होते हुए समेट कर निर्गुण हो जाता है, वैसे ही भेद-भाव से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहित मुनि भी उस अविनाशी और निर्गुण ब्रह्म में प्रविष्ट हो जाता है ॥१५०॥ अनागत, नित्य, सुकृत करने वालों की परमगति, स्वयंभू, सब का उत्पत्ति और निवृत्ति स्थान, अविनाशी, सनातन, अमृत, अधिकारी और ध्रुव है, उस परब्रह्म परमात्मा का ज्ञान पाकर मनुष्य परम मोक्ष को प्राप्त होता है ॥१५१॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

६-जापक गीता

कालमृत्युयमानां ते इक्ष्वाकोर्ब्राह्मणस्य च ।
विवादो व्याहृतः पूर्वे तद् भवान् वक्तुमर्हति ॥१
अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
इक्ष्वाकोः सूर्यपुत्रस्य यद् वृत्तं ब्राह्मस्य च ॥२

कालस्य मृत्योश्च तथा यद् वृत्तं तन्निबोध मे ।
यथा स तेषां संवादो यस्मिन् स्थानेऽपि चामवत् ॥३
ब्राह्मणो जापकः कश्चिद् धर्मवृत्तो महायशाः ।
षडङ्गविन्महाप्राज्ञः पैप्पलादिः स कौशिकः ॥४
तस्यापरोक्षं विज्ञानं षडङ्गेषु बभूव ह ।
वेदेषु चैव निष्णातो हिमवत्पादसंश्रयः ॥५

युधिष्ठिर ने कहा—हे पितामह ! आपने काल, मृत्यु, यम, इक्ष्वाकु और जापक ब्राह्मण के विवाद की बात चलायी थी, उसे मेरे प्रति कहने की कृपा करें ॥१॥ भीष्मजी ने कहा—हे राजन् ! इस प्रसङ्ग में राजा इक्ष्वाकु, सूर्यपुत्र यमराज, जापक ब्राह्मण, काल और मृत्यु के वृत्तान्त का उदाहरण दिया करते हैं। जहाँ अथवा जिस प्रकार वह संवाद हुआ था, उस सबको विस्तृत रूप से कहता हूँ ॥२-३॥ कहा जाता है कि हिमालय की समीपवर्त्ती पहाड़ियों पर एक ब्राह्मण निवास करता था। वह वेद के छओं अङ्गों का ज्ञाता, महायशस्वी, परम बुद्धिमान और जप में सदा तत्पर रहने वाला तथा धर्मात्मा था। वह कौशिक वंशी पिप्पलाद का पुत्र था और वेदों का परम विद्वान् था ॥४-५॥

सोद्यं ब्राह्मं तपस्तेपे संहितां संयतो जपन् ।
तस्य वर्षसहस्रं तु नियमेन तथा गतम् ॥६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स देव्या दर्शितः साक्षात् प्रीतास्मीति तदा किल ।
जप्यमावर्तयंस्तूष्णीं न स तां किञ्चिदब्रवीत् ॥७
तस्यानुकम्पया देवी प्रीता समभवत् तदा ।
वेदमाता ततस्तस्य तज्जप्यं समपूजयत् ॥८
समाप्तजप्यस्तूत्थाय शिरसा पादयोस्तदा ।
पपात देव्या धर्मात्मा वचनं चेदमब्रवीत् ॥९
दिष्ट्या देवि प्रसन्ना त्वं दर्शनं चागता मम ।
यदि चापि प्रसन्नासि जप्ये मे रमतां मनः ॥१०

वह अर्थज्ञान के सहित संहिता का जप करता और इन्द्रियों को वश में रखता हुआ तप में संलग्न रहने लगा। इस प्रकार नियम पूर्वक तपस्या करते हुए उसे एक सहस्र वर्ष बीत गये ॥६॥ कहा जाता है कि उसके जप से प्रसन्न होकर भगवती सावित्री ने उसे दर्शन देकर कहा कि 'मैं तुझ पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ।' परन्तु, ब्राह्मण अपने जपनीय गायत्री मन्त्र की आवृत्ति में लगा था, इसलिये भगवती सावित्री के आगमन पर भी उसने उनसे कुछ नहीं कहा, चुप ही बैठा रहा ॥७॥ भगवती सावित्री की उस पर परम अनुकम्पा हो गई थी इसलिये, वे उसके उस व्यवहार से भी सन्तुष्ट ही हुईं और उसके जप की उन्होंने अपने मन ही मन प्रशंसा की ॥८॥ जब उसका जप समाप्त हो गया, तब उठ कर भगवती के चरणों में अपना मस्तक रख कर साष्टाङ्ग-दण्डवत की और भगवती से इस प्रकार बोला ॥९॥ हे देवि ! मेरा अहोभाग्य है कि आज आप मुझ पर प्रसन्न हुईं और दर्शन दिया है। यदि आप मुझ पर यथार्थ में प्रसन्न हैं तो मेरा मन जप में ही लगा रहे—यह कृपा करिये ॥१०॥

किं प्रार्थयसि विप्रर्षे किं चेष्टं करवाणि ते ।
प्रब्रूहि जपतां श्रेष्ठ सर्वं तत् ते भविष्यति ॥११
इत्युक्तः स तदा देव्या विप्रः प्रोवाच धर्मवित् ।
जप्यं प्रति ममेच्छेयं वर्धत्विति पुनः पुनः ॥१२
मनसश्च समाधिर्मे वर्धेताहरहः शुभे ।
तत् तथेति ततो देवी मधुरं प्रत्यभाषत ॥१३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इदं चैवापरं प्राह देवी तत्प्रियकाम्यया ।
निरयं नैव याता त्वं यत्र याता द्विजर्षभाः ॥१४
यास्यसि ब्रह्मणः स्थानमनिमित्तमनिन्दितम् ।
साधये भविता चैतद् यत्त्वयाहमिहार्थिता ॥१५
नियतो जप चैकाग्रो धर्मस्त्वां समुपैष्यति ।
कालो मृत्युर्यमश्चैव समायास्यन्ति तेऽन्तिकम् ॥
भविता च विवादोऽत्र तव तेषां च धर्मतः ॥१६

सावित्रीजी ने कहा—हे ब्रह्मर्षे ! तुम्हें किस वस्तु की इच्छा है ? क्या चाहते हो ? मुझसे कहो ! मैं तुम्हारी कामना पूर्ण करूँगी । हे जप करने वालों में श्रेष्ठ द्विज ! तुम अपनी इच्छा कहो, वह सब पूर्ण हो जायगी ॥११॥ सावित्री देवी के इस प्रकार कहने पर उस धर्मात्मा ब्राह्मण ने कहा—हे शुभे ! इस मन्त्र का जप करने की मेरी इच्छा में वृद्धि हो और मेरे मन की एकाग्रता भी बढ़े, यही चाहता हूँ ॥१२॥ तब सावित्री देवी ने 'तथास्तु' कहा और फिर ब्राह्मण का प्रिय करने की इच्छा से यह भी कहा कि हे प्रिय श्रेष्ठ ! जिन स्वर्गादि लोकों में अन्य ब्राह्मण गये हैं, तुम उन लोकों में नहीं जाओगे । तुम्हें स्वभावसिद्ध निर्दोष ब्रह्म-पद प्राप्त होगा । तुमने मुझसे जो निवेदन किया है, वह भी पूर्ण होगा । तुम नियम पूर्वक और एकाग्र मन से जप करते रहो । धर्म स्वयं तुम्हारे पास आवेगा और काल, मृत्यु तथा यम भी तुम्हारे पास आवेंगे । उन सबके साथ तुम्हारी धर्मानुकूल वार्ता भी होगी ॥१३-१६॥

एवमुक्त्वा भगवती जगाम भवनं स्वकम् ।
ब्राह्मणोऽपि जपन्नास्ते दिव्यं वर्षशत तथा ॥१७
सदा दान्तो जितक्रोधः सत्यसंधोऽनसूयकः ॥१८
समाप्ते नियमे तस्मिन्नथ विप्रस्य धीमतः ।
साक्षात् प्रीतस्तदा धर्मोदर्शयामास तं द्विजम् ॥१९
द्विजाते पश्य मां धर्ममहं त्वां द्रष्टुमागतः ।
जप्यस्यास्य फलंयत्तत् सम्प्राप्तं तच्च मे शृणु ॥२०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भीष्मजी ने कहा—हे राजन् ! यह कह कर भगवती सावित्री अपने धाम को गयीं और ब्राह्मण भी दिव्य सौ वर्ष तक जप करने में लगा रहा ॥१७॥ वह अपने मन और इन्द्रियों को सदा वशीभूत रखता था, उसने क्रोध पर विजय प्राप्त कर ली थी और अपनी प्रतिज्ञा का पालन सत्यता पूर्वक कर रहा था। वह कभी किसी के दोषों को नहीं देखता था। उसका नियम पूर्ण होने पर धर्म उस पर अत्यन्त प्रसन्न हुए और प्रत्यक्ष दर्शन देने के लिये उसके पास पधारे ॥१८-१९॥ धर्म ने कहा—हे द्विजश्रेष्ठ ! मेरो ओर देखो। मैं धर्म तुम्हारा दर्शन करने के लिये यहाँ आया हूँ। इस जप का जो फल तुम्हें मिला है, वह मुझसे श्रवण करो ॥२०॥

जिता लोकास्त्वया सर्वे ये दिव्या ये च मानुषाः ।
देवानां निलयान् साधो सर्वानुत्क्रम्य यास्यसि ॥२१
प्राणत्यागं कुरु मुने गच्छ लोकान् यथेप्सितान् ।
त्यक्त्वाऽऽत्मनः शरीरं च ततो लोकानवाप्स्यसि ॥२२
किं नु लोकैर्हि मे धर्मगच्छ त्वं च यथासुखम् ।
बहुदुःखसुखं देहं नोत्सृजेयमहं विभो ॥२३
अवश्यं भोः शरीरं ते त्यक्तव्यं मुनिपुङ्गव ।
स्वर्गमारोह भो विप्र किं वा वै रोचतेऽनघ ॥२४
न रोचये स्वर्गवासं विना देहमहं विभो ।
गच्छ धर्म न मे श्रद्धा स्वर्गं गन्तुं विनाऽऽत्मना ॥२५

तुमने दिव्य लोक और मनुष्यादि सब लोकों पर विजय प्राप्त करली है। तुम सभी देवताओं के लोकों को लांघते हुए उनसे भी उच्च स्थान को प्राप्त होओगे ॥२१॥ अब तुम अपने प्राणों का परित्याग कर अपने इच्छित लोकों को गमन करो। क्योंकि अपने इस शरीर को छोड़ कर ही उन पुण्यलोकों में जा सकोगे ॥२२॥इस पर ब्राह्मण ने कहा–हे धर्म ! हे प्रभो ! मैं उन लोकों को पाकर क्या करूँगा ? आप यहां से सुखपूर्वक अपने स्थान को गमन करें। मैंने अपने इस देह के साथ रहते हुए बहुत सुख-दुःख प्राप्त किया है, इसलिए इसे नहीं छोड़ सकता ॥२३॥ धर्म ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहा–हे मुनिश्रेष्ठ ! तुम्हें यह शरीर अवश्य ही त्यागना होगा । अब आप स्वर्गलोक में चलिये, अथवा कोई और इच्छा हो तो मुझे बताइये ॥२४॥ ब्राह्मण बोला—हे प्रभो ! इस शरीर के बिना में स्वर्गलोक में नहीं रहना चाहता, इसलिये आप यहाँ से पधारें । क्योंकि इस शरीर को छोड़ कर कहीं जाने का उत्साह मेरे मन में बिल्कुल भी नही है ॥२५॥

अलं देहे मनः कृत्वा त्यक्त्वा देहं सुखी भव ।
गच्छ लोकानरजसो यत्र गत्वा न शोचसि ॥२६
रमे जपन् महाभाग किं नु लोकैः सनातनैः ।
सशरीरेण गन्तव्यं मया स्वर्गं न वा विभो ॥२७
यदि त्वं नेच्छसे त्यक्तुं शरीरं पश्य वै द्विज ।
एष कालस्तथा मृत्युर्यमश्च त्वामुपागताः ॥२८
अथ वैवस्वतः कालो मृत्युश्च त्रितयं विभो ।
ब्राह्मणं तं महाभागमुपगम्येदमब्रवन् ॥२९
तपसोऽस्य सुतप्तस्य तथा सुचरितस्य च ।
फलप्राप्तिस्तव श्रेष्ठा यमोऽहं त्वामुपब्रुवे ॥३०

धर्म ने कहा––शरीर में आसक्ति रखना कदापि उचित नहीं है । तुम इसे छोड़ कर अत्यन्त सुख का अनुभव करो और उन रजोगुण-रहित लोकों को प्राप्त होओ, जहाँ जाने पर फिर किसी प्रकार का शोकादि दुःख उपस्थित नहीं होगा ॥२६॥ ब्राह्मण ने कहा—हे प्रभो ! मैं तो जप में सुखी हूँ । उन सनातन लोकों को लेकर मैं क्या करूँगा ? आप मुझे यह बताने की कृपा करें कि मैं अपने इस शरीर के सहित स्वर्गलोक में पहुंच सकता हूँ अथवा नहीं ? ॥२७॥ धर्म ने कहा—हे विप्र ! यदि आप यह देह नहीं छोड़ना चाहते हैं तो देखिये—काल, मृत्यु, और यम आपके पास उपस्थित हो रहे हैं ॥२८॥ भीष्मजी ने कहा—हे युधिष्ठिर ! फिर वैवस्वत यम, काल और मृत्यु तीनों ही उस महाभाग ब्राह्मण के पास आये और इस प्रकार कहने लगे ॥२९॥ यमराज ने कहा–हे ब्राह्मण ! तुम्हारे द्वारा भले प्रकार की गई तपस्या का तुम्हें श्रेष्ठ फल मिला है । मैं स्वयं यमराज यहाँ उपस्थित होकर तुमसे यह कह रहा हूँ ॥३०॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यथावदस्य जप्यस्य फलं प्राप्तमनुत्तमम् ।
कालस्ते स्वर्गमारोढुं कालोऽहं त्वामुपागतः ।।३१
मृत्युं मां विद्धि धर्मज्ञ रूपिणं स्वयमागतम् ।
कालेन चोदितो विप्र त्वामितो नेतुमद्य वै ।।३२
स्वागतं सूर्यपुत्राय कालाय च महात्मने ।
मृत्यवे चाथ धर्माय किं कार्यं करवाणि वः ।।३३
अर्घ्यं पाद्यं च दत्त्वा स तेभ्यस्तत्र समागमे ।
अब्रवीत् परमप्रीतः स्वशक्त्या किं करोमि वः ।।३४
तस्मिन्नेवाथ काले तु तीर्थयात्रानुपागतः ।
इक्ष्वाकुरगमत् तत्र समेता यत्र ते विभो ।।३५

काल ने कहा—हे ब्रह्मन् ! तुम्हारे जप के अनुरूप तुम्हें सर्वश्रेष्ठ फल मिला है। इसलिये अब तुम्हारा स्वर्गलोक में जाने का समय आ गया है। मैं स्वयं काल तुम से यही कहने के लिये यहाँ उपस्थि हुआ हूँ ।।३१।। मृत्यु ने कहा—हे ब्रह्मन् ! मैं मृत्यु हूँ। मैं स्वयं शरीर धारण कर यहाँ उपस्थित हुआ। तुम्हें यहाँ से ले जाने की प्रेरणा मुझे काल के द्वारा प्राप्य हुई है ।।३२।। ब्राह्मण ने कहा—हे सूर्यपुत्र यम, महात्मा काल मृत्यु और धर्म ? आप सबका स्वागत है। कहिये, मैं आप लोगों का क्या कार्य करूँ ? ।।३३।। भीष्मजी ने कहा— हे युधिष्ठिर ! सब के वहाँ आने पर ब्राह्मण ने उनको अर्घ्यपाद्य निवेदन कर अत्यन्त प्रसन्नता पूर्वक कहा कि मैं अपनी शक्ति के अनुसार आपका क्या कार्य करूँ ? ।।३४।। उसी समय तीर्थ यात्रा के लिये चलते हुए महाराज इक्ष्वाकु भी वहाँ आ गये, जहाँ यह सब लोग एकत्रित हुए थे ।।३५।।

सर्वानेव तु राजर्षिः सम्पूज्याथ प्रणम्य च ।
कुशलप्रश्नमकरात् सर्वेषां राजसत्तमः ।।३६
तस्मै सोऽथासनं दत्त्वा पाद्यमर्घ्यं तथैव च ।
अब्रवीद् ब्राह्मणोवाक्यं कृत्वा कुशलसंविदम् ।।३७
स्वागतं ते महाराज ब्रूहि यद् यदिहेच्छसि ।
स्वशक्त्याकिं करोमीह तद् भवान्प्रब्रवीतुमाम् ।।३८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

राजाहं ब्राह्मणश्च त्वं यदा षट्कर्मसंस्थितः ।
ददानि वसु किंचित्ते प्रथितं तद् वदस्व मे ।।३९
द्विविधाब्राह्मणा राजन् धर्मश्च द्विविधःस्मृतः ।
प्रवृत्ताश्च निवृत्ताश्च निवृत्तोऽहं प्रतिग्रहात् ।।४०

राजाओं में श्रेष्ठ राजर्षि इक्ष्वाकु ने उन सब को प्रणाम कर, उनका पूजन किया और सभी से कुशल प्रश्न किया ।।३६।। उस ब्राह्मण ने भी राजा को अर्घ्यपाद्य और आसन देकर कुशल-प्रश्न के पश्चात् कहा।।३७।। हे महाराज ! आपका स्वागत है । आपकी जो इच्छा हो, वह मेरे प्रति कहिये । मैं अपनी शक्ति से क्या कार्य करूँ यह मुझे बताइये ।।३८।। राजा ने कहा—हे विप्र ! मैं क्षत्रिय राजा हूँ । आप छः कर्मों से युक्त ब्राह्मण हैं, इसलिए आपको कुछ धन देने की मेरी इच्छा है । आप प्रसिद्ध धन मुझ से माँगिये ।।३९।। ब्राह्मण ने कहा—हे राजन् ! ब्राह्मण दो प्रकार के हैं और धर्म भी प्रवृत्ति और निवृत्ति के भेद से दो प्रकार का है । उनमें मैं प्रतिग्रह से निवृत्त हुआ ब्राह्मण हूँ ।।४०।।

तेभ्यः प्रयच्छ दानानि ये प्रवृत्ता नराधिप ।
अहं न प्रतिगृह्णामि किमिष्टं किं ददामि ते ।
ब्रूहि त्वं नृपतिश्रेष्ठ तपसा साधयामि किम् ।।४१
क्षत्रियोऽहं न जानामि देहीति वचनं क्वचित् ।
प्रयच्छ युद्धमित्येवंवादिनः स्मो द्विजोत्तम ।।४२
तुष्यसि त्वं स्वधर्मेण तथा तुष्टा वयं नृप ।
अन्योन्यस्यान्तरं नास्ति यदिष्टं तत् समाचर ।।४३
स्वशक्त्याहं ददानीति त्वया पूर्वमुदाहृतम् ।
याचे त्वां दीयतां मह्यं जप्यस्यास्य फलं द्विज ।।४४
युद्धं मम सदा वाणी याचतीति विकत्थसे ।
न च युद्धं मया सार्धं किमर्थं याचसे पुनः ।।४५

हे राजन् ! जो ब्राह्मण प्रवृत्ति युक्त हैं,उन्हीं को आप दान दीजिये ! मैं आप से दान नहीं ले सकता । परन्तु, इस समय आप क्या चाहते हैं, वह मुझे बताइये । अपनी तपस्या के द्वारा मैं आपको क्या दूँ अथवा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आपका कौन-सा कार्य पूरा करूँ। यह मुझ से कहिये ।।४१।। राजा ने कहा—हे विप्र श्रेष्ठ ! मैं क्षत्रिय हूँ ! 'दीजिये' इस प्रकार कह कर कुछ माँगने को मैं नहीं जानता। माँगने की बात कहने पर तो हम 'युद्ध दो' कह कर युद्ध ही माँगा करते हैं।।४२।।ब्राह्मणने कहा—हे राजन् ! जिस प्रकार आप अपने धर्म से संतुष्ट हैं, वैसे ही मैं अपने धर्म से संतुष्ट हूँ। हम दोनों में इस प्रकार कोई अन्तर नहीं है, इसलिये जो आपकी इच्छा हो, वह करिये ।।४३।। राजाने कहा—हे विप्र ! आपने मुझसे पहिले ही कहा था कि 'मैं अपनी शक्ति के अनुसार दूँगा' तो मैं आपसे आपके जप का फल माँगता हूँ, वही मुझे दीजिये ।।४४।। ब्राह्मण ने कहा—आप तो बहुत बढ़-बढ़कर कह रहे थे कि मेरी वाणी सदा युद्ध ही माँगती है, तब आप मुझ से भी युद्ध ही क्यों नहीं माँगते ? ।।४५।।

वाग्वज्रा ब्राह्मणाः प्रोक्ताःक्षत्रिया बाहुजीविनः ।
वाग्युद्धं तदिदं तीव्रं मम विप्र त्वया सह ।।४६
सैवाद्यापि प्रतिज्ञा मे स्वशक्त्या किं प्रदीयताम् ।
ब्रूहि दास्यामि राजेन्द्र विभवे सति मा चिरम् ।।४७
तत्तद् वर्षशतं पूर्णं जप्यं वै जपता त्वया ।
फलं प्राप्तं तत् प्रयच्छ मम दित्सुर्भवान् यदि ।।४८
परमं गृह्यतां तस्य फलं यज्जपितं मया ।
अर्धं त्वमविचारेण भलं तस्य ह्यवाप्नुहि ।।४९
अथवा सर्वमेवेह मामकं जापकं फलम् ।
राजन् प्राप्नुहि कामं त्वं यदि सर्वमिहेच्छसि ।।५०

राजा ने कहा—हे ब्रह्मन् ! ब्राह्मणों की वाणी में ही वज्र के समान प्रभाव होता है और क्षत्रिय अपने भुजबल से जीवन-विर्वाह करते हैं। इस लिये,आपके साथ मेरा यह तीव्र वाग्युद्ध हो रहा है।।४६।।ब्राह्मण ने कहा—हे राजेन्द्र ! मेरी वह प्रतिज्ञा इस समय भी वैसी ही हैं। कहिये, मैं अपनी शक्ति के अनुसार आपको क्या दूँ ? मैं अपनी शक्ति के अनुसार आपकी मुँहमांगी वस्तु दूँगा। माँगिये, देर मत करिये ।।४७।। राजा ने कहा—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि आप देने की इच्छा ही करते हैं तो आपने पूरे सौ वर्षों तक जप करके जिस फल को पाया है, वही मुझे देने की कृपा करें ।।४८।। ब्राह्मण ने कहा—हे राजन् ! मेरे द्वारा किये गये जप के श्रेष्ठ फल को आप लीजिये । मेरे जप का आधा फल तो बिना सोच विचार के ही लेलें और यदि सम्पूर्ण फल लेने की इच्छा हो तो आप उस सभी फल को प्राप्त कर लें ।।४९-५०।।

कृतं सर्वेण भद्रं ते जप्यं यद् याचितं मया ।
स्वस्ति तेऽस्तु गमिष्यामि किञ्च तस्य फलं वद ।।५१
फलप्राप्तिं न जानाति दत्तं यज्जपितं मया ।
अयं धर्मश्च कालश्च यमो मृत्युश्च साक्षिणः ।।५२
अज्ञातमस्य धर्मस्य फलं किं मे करिष्यति ।
फलं ब्रवीषि धर्मस्य न चेज्जप्यकृतस्य माम् ।
प्राप्नोतुतत् फलं विप्रो नाहमिच्छे ससंशयम् ।।५३
नाददेऽपरवक्तव्यं दत्तं चास्य फलं मया ।
वाक्यं प्रमाणं राजर्षे ममाद्य तव चैव हि ।।५४
नाभिसंधिर्मया जप्ये कृतपूर्वः कदाचन ।
जप्यस्य राजशार्दूल कथं वेत्स्याम्यहं फलम् ।।५५

राजा ने कहा—हे ब्रह्मन् ! मैंने जप का जो फल माँगा, उस सब की प्राप्ति हो गयी । आप का कल्याण हो । अब मैं यहाँ से चला जाऊँगा, परन्तु, मुझे उस जप का फल बताने की कृपा करें ।।५१।। ब्राह्मण ने कहा—हे राजन् ! जप के फल को तो मैं भी नहीं जानता । परन्तु, मैंने जो जप किया था, वह सम्पूर्ण रूप से आप को दे दिया है । यह धर्म, काल, यम, और मृत्यु इसके साक्षी हैं ।।५२।। राजा ने कहा—यदि आप अपने जप से होने वाले फल को नहीं बताते है तो यह न जाना हुआ फल मेरे किस काम में आवेगा ? अतः मैं संदिग्ध फल नहीं लेना चाहता, वह सम्पूर्ण फल आपके पास ही रहे ।।५३।। ब्राह्मण ने कहा—हे राजर्षे ! मैं तो आपको अपने जप का फल दे चुका, अब दूसरी बात कैसे मान लुँ ? इस विषय में मेरी-आपकी बातें ही प्रमाण स्वरूप होंगी ।।५४।। हे राज

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शार्दूल ! मैंने जप करते समय फल की कामना नहीं की थी, इसलिये, इस जप का क्या फल मिलेगा, यह बात किस प्रकार जान सकता हूं ? ॥५५॥

ददस्वेति त्वया चोक्तं ददानीति मया तथा ।
न वाचं दूषयिष्यामि सत्यं रक्ष स्थिरो भव ॥५६
अथैवं वदतो मेऽद्य वचनं न करिष्यसि ।
महानधर्मो भविता तव राजन् मृषाकृतः ॥५७
न युक्तं तु मृषा वाणी त्वया वक्तुमरिंदम ।
तथा मयाप्यभिहितं मिथ्या कर्तुं न शक्यते ॥५८
संश्रुतं च मया पूर्वं ददानीत्यविचारितम् ।
तद् गृह्णीष्वाविचारेण यदि सत्ये स्थितो भवान् ॥५९
इहागम्य हि मां राजन् जाप्यं फलमयाचथाः ।
तन्मे निसृष्टं गृह्णीष्व भव सत्ये स्थिरोऽपि च ॥६०

आपने कहा—'दीजिए' मैंने कहा था—दूँगा । तो अब अपनी बात मिथ्या नहीं होने दूँगा । आप सत्य की रक्षा करने के लिये दृढ़ हो जाइये ॥५६॥ हे राजन् ! यदि इन स्पष्ट बातों के न होने पर भी आज आप मेरे इन वचनों को न मानेंगे तो असत्य कर्म का महान् पाप आपको लगेगा ॥५७॥ हे राजन् ! मृषा भाषण आपके लिये भी उचित नहीं है और मैं भी अपनी कही हुई बात को मिथ्या नहीं कर सकता ॥५८॥ बिना कुछ सोचे-विचारे ही मैंने देने की प्रतिज्ञा कर ली है, इसलिये, आप भी मेरे दिये हुए जप को बिना विचारे ही स्वीकार करें । यदि आप सत्यनिष्ठ हैं तो ऐसा अवश्य करें ॥५९॥ हे राजन् ? आपने स्वयं ही यहाँ आकर मुझसे जप का फल माँगा है और मैंने वह आपको दे भी दिया है, इसलिये आप उसे ग्रहण करते हुए सत्य में स्थिर रहें ॥६०॥

नायं लोकोऽस्ति न परो न च पूर्वान् स तारयेत् ।
कुत एव जनिष्यांस्तु मृषावादपरायणः ॥६१
न यज्ञाध्ययने दानं नियमास्तारयन्ति हि ।
यथा सत्यं परे लोके तथेह पुरुषर्षभ ॥६२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तपांसि यानि चीर्णानि चरिष्यन्ति च यत् तपः ।
शतैः शतसहस्रैश्च तैः सत्यान्न विशिष्यते ॥६३
सत्यमेकाक्षरं ब्रह्म सत्यमेकाक्षरं तपः ।
सत्यमेकाक्षरो यज्ञः सत्यमेकाक्षरंश्रुतम् ॥६४
सत्यं वेदेषु जागर्ति फलं सत्ये परं स्मृतम् ।
सत्याद् धर्मो दमश्चैव सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥६५

मिथ्या भाषी को इस लोक या परलोक में कहीं भी सुख प्राप्त नहीं होता। वह अपने पूर्वजों का उद्धार भी नहीं कर सकता तो संततिका उद्धार ही किस प्रकार करेगा ? ॥६१॥ हे राजन् ! जिस प्रकार सत्य परलोक में जीवों को तारता है, उस प्रकार तो यज्ञ, वेदाध्ययन, दान और नियम भी तारने में समर्थ नहीं हैं ॥६२॥ अब तक लोगों ने जितने तप किये हैं और आगे भी जितने करेंगे, उस सब को सौगुणा अथवा लक्ष गुणा करें तो भी सत्य से बढ़ कर उनका कोई महत्व नहीं हो सकता ॥६३॥ सत्य ही एकाक्षर ब्रह्म है, सत्य ही एक मात्र अक्षय तप है, सत्य ही एक अक्षय यज्ञ है और सत्य को ही एक मात्र अविनाशी वेद समझना चाहिये ॥६४॥ वेदों में सत्य ही जागता रहता है, सत्य का ही सर्व श्रेष्ठ फल कहा गया है। धर्म और इन्द्रिय संयम का पालन भी सत्य के ही द्वारा होता है तथा सत्य के आधार पर ही सब कुछ टिका है ॥६५॥

सत्यं वेदास्तथाङ्गानि सत्यं विद्यास्तथा विधिः ।
व्रतचर्या तथा सत्यमोङ्कारः सत्यमेव च ॥६६
प्राणिनां जननं सत्यं सत्यं संततिरेव च ।
सत्येन वायुरभ्येति सत्येन तपते रविः ॥६७
सत्येन चाग्निर्दहति स्वर्गः सत्ये प्रतिष्ठितः ।
सत्यं यज्ञस्तपो वेदाः स्तोभा मन्त्राः सरस्वती ॥६८
तुलामारोपितो धर्मः सत्यं चैवेति नः श्रुतम् ।
समकक्षां तुलयतो यतः सत्यं ततोऽधिकम् ॥६९
यतो धर्मस्ततः सत्यं सर्वं सत्येन वर्धते ।
किमर्थमनृतं कर्म कर्तुं राजंस्त्वमिच्छसि ॥७०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्य ही वेदाङ्ग है। सत्य ही विद्या तथा विधि है। सत्य ही व्रत-चर्या और सत्य ही ओंकार है ॥६६॥ सत्य ही प्राणियों का जन्मदाता पिता है। सत्य ही सन्तान रूप है, सत्य से ही वायु चलती तथा सत्य से ही सूर्य तपता है ॥६७॥ सत्य से ही अग्नि प्रज्वलित होती है, सत्य पर ही स्वर्गलोक प्रतिष्ठित है। यज्ञ, तप, वेद, स्तोम, मंत्र और सरस्वती सत्य स्वरूप ही है ॥६८॥ यह सुना जाता है कि कभी धर्म और सत्य को तराजू के दो समान पलड़ों पर रख कर तौला गया था, उस समय जिस पलड़े पर सत्य रखा था, वह भारी बैठा ॥६९॥ जहाँ धर्म है, वहीं सत्य है, सत्य के द्वारा सभी की वृद्धि होती है, तब हे राजन् ! आप असत्य व्यवहार क्यों कर रहे हैं ? ॥७०॥

सत्ये कुरु स्थिरं भावं मा राजन्नृतं कृथाः ।
कस्मात्त्वमनृतं वाक्यं देहीति कुरुषेऽषुभम् ॥७१
यदि जप्यफलं दत्तं मया नैषिष्यसे नृप ।
धर्मेभ्यः सम्परिभ्रष्टो लोकाननुचरिष्यसि ॥७२
संश्रुत्य यो न दित्सेत याचित्वा यश्च नेच्छति ।
उभावानृतिकावेतौ न मृषा कर्तुमर्हसि ॥७३
योद्धव्यं रक्षितव्यं च क्षत्रधर्मः किल द्विज ।
दातारः क्षत्रियाः प्रोक्ता गृह्णीयां भवतः कथम् ॥७४
न च्छन्दयामि ते राजन्नापि ते गृहमाव्रजम् ।
इहागम्य तु याचित्वा न गृह्णीषे पुनः कथम् ॥७५

हे राजन् ! आप अपने मन को सत्य में ही दृढ़ करिये। मिथ्या व्यवहार न करिये। यदि लेना नहीं था तो 'दीजिये' इस प्रकार का असत्य और अशुभ वचन क्यों कहा था ? ॥७१॥ हे राजन् ! अब यदि मेरे दिए हुए जप के फल को आप अस्वीकार करोगे तो धर्म से भ्रष्ट होकर सभी लोकों में भटकते हुए फिरोगे ॥७२॥ जो देने की प्रतिज्ञा करके, फिर देता नहीं अथवा माँगी हुई, वस्तु मिलने पर लेता नहीं, वे दोनों ही झूठ बोलने वाले होते हैं। इसलिए आप मेरी या अपनी, दोनों में से किसी भी बात को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मिथ्या न होने दीजिए ।।७३।। राजा ने कहा—हे ब्रह्मन् ! क्षत्रिय का धर्म प्रजा की रक्षा करना और युद्ध करना ही है । क्षत्रिय तो दाता कहे जाते हैं तो मैं ही आपसे दान किस प्रकार ले सकता हूँ ।।७४।। ब्राह्मण ने कहा—हे राजन् ! मैंने आपसे दान लेने के लिये कभी आग्रह नहीं किया था और न दान देने के लिये आपके पास ही गया था । आपने स्वयं ही यहाँ आकर दान माँगा है, तब उसे अस्वीकार क्यों करते हो ? ।।७५।।

अविवादोऽस्तु युवयोर्वित्त मां धर्ममागतम् ।
द्विजो दानफलयुक्तो राजा सत्यफलेन च ।।७६
स्वर्गं मा विद्धि राजेन्द्र रूपिणं स्वयमागतम् ।
अविवादोऽस्तु युवयोरुभौ तुल्यफलौ युवाम् ।।७७
कृतं स्वर्गेण मे कार्यं गच्छ स्वर्गं यथागतम् ।
विप्रो यदीच्छते गन्तुं चीर्णं गृह्णातु मे फलम् ।।७८
बाल्ये यदि स्यादज्ञानान्मया हस्तः प्रसारितः ।
निवृत्तलक्षणं धर्ममुपासे संहितां जपन् ।।७९
निवृत्तं मां चिराद्राजन् विप्रलोभयसे कथम् ।
स्वेन कार्यं करिष्यामि त्वत्तो नेच्छे फलं नृप ।
तपःस्वाध्यायशीलोऽहं निवृत्तश्च प्रतिग्रहात् ।।८०

धर्म ने कहा—आप दोनों में विवाद नहीं होना चाहिये । मैं साक्षात् धर्म यहाँ आकर उपस्थित हूँ । यह ब्राह्मण के दान के फल से और राजा सत्य के फल से सम्पन्न हो जाय ।।७६।। स्वर्ग ने कहा—हे राजेन्द्र ! मैं स्वर्ग हूँ, इसे आप जान लें । मैं स्वयं ही शरीर धारण कर यहाँ उपस्थित हुआ हूँ । आप दोनों में कोई विवाद न हो और दोनों को समान फल प्राप्त हो ।।७७।। राजा ने कहा मुझे स्वर्ग नहीं चाहिये । तुम जिस प्रकार यहाँ आ हो, उसी प्रकार चले जाओ । यदि यह विप्र देवता स्वर्ग में जाने की इच्छा रखते हों तो मेरे पुण्य-फल को ले लें ।।७८।। ब्राह्मण ने कहा—बाल्य काल में अज्ञानवश भी यदि मैंने कभी किसीके सामने हाथ फैलाया हो तो उसकी मुझे याद नहीं है । परन्तु, अब तो मैं मन्त्रजप करता हुआ निवृत्त रूप धर्म का उपासक हूँ ।।७९।। हे राजन् ! मैं निवृत्तिमार्ग का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यात्री हूँ। आप बहुत समय से मुझे प्रलोभन में डालने का प्रयत्न क्यों कर रहे हैं ? मैं तो अपना कर्म स्वयं करूँगा, आप से किसी फल की इच्छा नहीं करता। मैं प्रतिग्रह से निवृत्त होकर तपस्या और स्वाध्याय परायण हुआ हूँ ॥८०॥

यदि विप्र विसृष्टं ते जप्यस्य फलमुत्तमम् ।
आवयोर्यत् फलं किञ्चित् सहितं नौ तदस्त्विह ॥८१
द्विजाः प्रतिग्रहे युक्ता दातारो राजवंशजाः ।
यदि धर्मः श्रुतो विप्र सहैव फलमस्तु नौ ॥८२
मा वा भूत् सहभोज्यं नौ मदीयं फलमाप्नुहि ।
प्रतीच्छ मत्कृतं धर्मं यदि ते मय्यनुग्रहः ॥८३
ततो विकृतवेषौ द्वौ पुरुषौ समुपस्थितौ ।
गृहीत्वान्योन्यमावेष्ट्य कुचैलावूचतुर्वचः ॥८४
न मे धारयसीत्येको धारयामीति चापरः ।
इहास्ति नौ विवादोऽयमयं राजानुशासकः ॥८५

राजा ने कहा—हे ब्रह्मन् ! यदि आप अपने जप का श्रेष्ठ फल दे ही चुके हैं तो हम दोनों के जो भी पुण्य-फल हों, उन सब को मिला कर हम दोनों ही उन्हें समान रूप से भोगें ॥८१॥ ब्राह्मण दान ग्रहण करते हैं और क्षत्रिय केवल दान देते हैं, ग्रहण नहीं करते। यह आपने भी सुना होगा। इसलिए, हे द्विजश्रेष्ठ ! हम दोनों के पुण्य कर्मों का फल समान रूप से दोनों भोगें ॥८२॥ अथवा, यदि आप न चाहते हों तो हमें एक साथ समान रूप से कर्म फल भोगने की आवश्यकता नहीं है। तब तो मैं यही कहना हूं कि यदि आपकी मुझ पर कृपा हो तो आप ही मेरे सब शुभ कर्मों को ले लें। मैंने जो कुछ भी पुण्य किया है, उस सब को आप ही ग्रहण करलें ॥८३॥ भीष्मजी ने कहा—हे युधिष्ठिर ! तभी वहाँ विकराल वेश वाले दो पुरुष आये। उन दोनों ने परस्पर एक दूसरे को हाथों में जकड़ रखा था। दोनों ही मैले वस्त्र पहिने हुए थे और बारम्बार इस प्रकार कहते थे ॥८४॥ एक ने कहा—'तुम पर मेरा कोई ऋण नहीं है'

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दूसरे ने कहा—मैं तुम्हारा ऋणी हूं' तब पहिले व्यक्ति ने कहा कि 'हम दोनों के विवाद का निर्णय यह सभी के शासक राजा करेंगे ।।८५।।

सत्यं ब्रवीम्यहमिदं न मे धारयते भवान् ।
अनृतं वदसीह त्वमृणं ते धारयाम्यहम् ।।८६
तावुभौ सुभृशं तप्तौ राजानमिदमूचतुः ।
परीक्ष्य त्वं यथा स्यावो नावामिह विगर्हितौ ।।८७

धारयामि नरव्याघ्र विकृतस्येह गोः फलम् ।
ददतश्च न गृह्णाति विकृतो मे महीपते ।।८८
न मे धारयते किञ्चिद् विरूपोऽयंनाराधिप ।
मिथ्या ब्रवीत्ययं हि त्वां सत्याभाषं नराधिप ।।८९
विरूप किं धारयते भवानस्य ब्रवीतु मे ।
श्रुत्वा तथा करिस्येऽहमिति मे धीयते मनः ।।९०

पहले ने कहा—तुम पर मेरा कोइ ऋण नहीं है—मैं यह सत्य कहता हूँ । दूसरे ने कहा—तुम मिथ्या कहते हो, मुझ पर तुम्हारा ऋण अवश्य है ।।८६।। तब उन दोनों ने अत्यन्त संतप्त होते हुए, राजा से कहा कि आप हमारे विवाद का भले प्रकार निर्णय करें, जिससे कि हम दोनों किसी दोष के अथवा निन्दा के भागी न हों ।।८७।। विरूप ने कहा—हे राजन् ! मेरे पास विकृत के एक गोदान का फल ऋण के रूप में है । उस ऋण को मैं दे रहा हूँ, परन्तु, यह उसे लेता नहीं ।।८८।। विकृत ने कहा—हे राजन् ! इस विरूप पर मेरा कोई ऋण नहीं है । यह आपके समक्ष मिथ्या भाषण कर रहा है, इसके कथन में सत्य का आभास मात्र ही है ।।८९।। राजा ने कहा—विरूप ! तुम पर विकृत का कौन-सा ऋण है,उसे जान कर ही मैं कोई निर्णय दे सकूँगा, मेरा यही निश्चय है ।।९०।।

शृणुष्वावहितो राजन् यथैतद् धारयाम्यहम् ।
विकृतस्यास्य राजर्षे निखिलेन नराधिप ।।९१
अनेन धर्मप्राप्त्यर्थं शुभा दत्ता पुरानघ ।
धेनुर्विप्राय राजर्षे तपःस्वाध्यायशीलिने ।।९२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तस्याश्चायं मया राजन् फलमत्येत्य याचितः ।
विकृतेन च मे दत्तं विशुद्धेनान्तरात्मना ।।९३
ततो मे सुकृतं कर्म कृतमात्मविशुद्धये ।
गावौ च कपिले क्रीत्वा वत्सले बहुदोहने ।।९४
ते चोञ्छवृत्तये राजन् मया समपवर्जिते ।
यथाविधि यथाश्रद्धं तस्याहं पुनः प्रभो ।।९५

विरूप ने कहा—हे राजन् ! आप सावधानी से मेरी बातें सुनें । हे राजर्षे ! इस विकृत का ऋण मुझ पर जिस प्रकार है, वह सब यथार्थ रूप से कहता हूँ ।।९१।। हे राजर्षे ! धर्न की प्राप्ति के निमित्त इस विकृत ने एक स्वाध्याय-परायण तपस्वी को एक उत्तम गौ दी थी ।।९२।। हे राजन् ! मैंने इसके पास जाकर उसी गो-दान के फल की इससे याचना की थी और इसने भी शुद्ध हृदय से वह फल मुझे प्रदान कर दिया ।।९३।। फिर मैंने भी अपनी शुद्धि के लिये पुण्य कर्म किया । अधिक दूध देने वाली दो सवत्सा कपिला गौएँ खरीद कर मैंने एक उञ्छ वृत्ति वाले ब्राह्मण को विधिवत् दान कर दीं । हे प्रभो ! उसी गोदान का फल मैं इसे लौट रहा हूँ ।।९४-९५।।

इहाद्यैव गृहीत्वा तु प्रयच्छे द्विगुणं फलम् ।
एवं स्यात् पुरुषव्याघ्र कः शुद्धः कोऽत्र दोषवान् ।।९६
एवं विवदमानौ स्वस्त्वामिहाभ्यागतौ नृप ।
कुरु धर्ममधर्मं वा विनये नौ समादध ।।९७
यदि नेच्छति मे दानं यथा दत्तमनेन वै ।
भवानत्र स्थिरो भूत्वा मार्गे स्थापयिताद्य नौ ।।९८
दीयमानं न गृह्णासि ऋणं कस्मात् त्वमद्य वै ।
यथैव तेऽभ्यनुज्ञातं तथा गृह्णीष्व मा चिरम् ।।९९
धारयामीत्यनेनोक्तं ददानीति तथा मया ।
नायं मे धारयत्यद्य गच्छतां यत्र वाञ्छति ।।१००

हे राजन् ! मैंने इससे एक गो-दान का फल लिया था और आज मैं उसे दूना करके लौटाता हूँ । अब आप ही इसमें निर्णय दीजिये कि कौन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शुद्ध है और कौन दोषी है ॥९६॥ हे राजन् ! हम दोनों परस्पर इस प्रकार झगड़ते हुए आपके पास आये हैं। अब आप न्याय करें या अन्याय परन्तु, इस झंझट का निर्णय कर दीजिये तथा हम दोनों को आप सही-न्याय के मार्ग पर लगा दीजिये ॥९७॥ इसने जिस प्रकार मुझे दिया है, यदि यह उसी प्रकार नहीं लेना चाहता, तो आप ही अपने दृढ़ विचार से हम दोनों को धर्म-मार्ग पर लगा दीजिये ॥९८॥ राजा ने कहा—हे विकृत ! जब विरूप तुम्हारा ऋण लौटा रहा है, तब तुम उसे लेते क्यों नहीं ? जैसे इसने तुम्हारी दी हुई वस्तु ले ली थी, वैसे ही तुम भी इसकी दी हुई वस्तु को ग्रहण कर लो। इसमें देर मत करो ॥९९॥ विकृत ने कहा—हे राजन् ! विकृत ने जिस वस्तु के ऋण-स्वरूप लेने की बात कही है, वह वस्तु मैंने 'दान' कह कर दी थी। इसलिये इस पर मेरा कोई ऋण नहीं है और यह जहाँ जाना चाहे वहाँ चला जाय ॥१००॥

ददतोऽस्य न गृह्णासि विषमं प्रतिभाति मे ।
दण्ड्यो त्वं मम मतो नास्त्यत्र खलु संशयः ॥१०१
मयास्य दत्तं राजर्षे गृह्णीयां तत् कथं पुनः ।
काममत्रापराधो मे दण्डमाज्ञापय प्रभो ॥१०२
दीयमानं यदि मया नेषिष्यसि कथञ्चन ।
नियंस्यति त्वां नृपतिरयं धर्मानुशासकः ॥१०३
स्वं मया याचितेनेह दत्तं कथमिहाद्य तत् ।
गृह्णीयां गच्छतु भवानभ्यनुज्ञां ददानि ते ॥१०४
श्रुतमेतत्त्वया राजन्नयोः कथितं द्वयोः ।
प्रतिज्ञातं मया यत्ते तद् गृहाणाविचारितम् ॥१०५

राजा ने कहा—हे विकृत ! यह तुम्हारी दी हुई वस्तु को दे रहा है और तुम उसे लेते नहीं हो। इसे मैं उचित नहीं समझता। इसलिये मेरे मत में तुम दण्ड पाने के योग्य हो, इसमें संदेह नहीं है ॥१०१॥ विकृत ने कहा—हे राजर्षे ! इसे जो मैंने दान दिया था, उस दान को कैसे वापिस ले लूँ। चाहे इसमें मेरा अपराध माना जाय, परन्तु मैं दान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वापिस नहीं लूँगा। आप मुझे दण्डाज्ञा सुनावें ।।१०२।। विरूप ने कहा—हे विकृत ! यदि तुम मेरी दी हुई वस्तु नहीं लोगे तो धर्म पूर्वक राज्य करने वाले यह महाराज तुम्हें बंदीगृह में डाल देंगे ।।१०३।। विकृत ने कहा—तुमने माँगा, वह मैंने दान रूप में दिया। आज उसी दान को कैसे वापिस लूँ। तुम पर मेरा कोई ऋण नहीं है। इसलिये मैं तुम्हें चले जाने की आज्ञा देता हूँ ।।१०४।। तभी जापक ब्राह्मण ने कहा—हे राजन् ! आपने इन दोनों की बात सुन ली है। अब आप भी, मेरे द्वारा देने की प्रतिज्ञा करने के अनुसार मेरे दान को बिना किसी विचार के ग्रहण कर लें ।।१०५।।

प्रस्तुतं सुमहत् कार्यमनयोर्गह्वरं यथा।
जापकस्य दृढीकारः कथमेतद् भविष्यति ।।१०६
यदि तावन्न गृह्णामि ब्राह्मणेनापवर्जितम्।
कथं न लिप्येयमहं पापेन महताद्य वै ।।१०७
तौ चोवाच स राजर्षिः कृतकार्यौ गमिष्यथः।
नेदानीं मामिहासाद्य राजधर्मो भवेन्मृषा ।।१०८
स्वधर्मः परिपाल्यस्तु राज्ञामिति विनिश्चयः।
विप्रधर्मश्च गहनो मामनात्मानमाविशत् ।।१०९
गृहाण धारयेऽहं च याचितं संश्रुतं मया।
न चेद् ग्रहीष्यसे राजञ्शपिष्ये त्वां न संशयः ।।११०

राजा ने कहा—इन दोनों का मामला जटिल और गंभीर रूप से उपस्थित हुआ है और जापक ब्राह्मण का आग्रह भी पूर्ववत् बना हुआ है। अब इसका निपटारा किस प्रकार हो ? ।।१०६।। यदि आज मैं इस जापक ब्राह्मण की दी हुई वस्तु स्वीकार न करूँ तो वचन भंग रूपी महापाप से किस प्रकार बच सकूँगा ।।१०७।। फिर राजर्षि इक्ष्वाकु ने उन दोनों से कहा—तुम अपने विवाद का निर्णय होने पर ही जाना, तुम्हारे कार्य के पूर्ण हुए बिना चले जाने से मुझे राजधर्म के कलंकित होने का डर है ।।१०८।। राजाओं का कर्त्तव्य है कि वे अपने धर्म का पालन करें। शास्त्र का निश्चय भी यही है। इधर मेरी आत्मा में गंभीर ब्राह्मण धर्म प्रविष्ट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हो चुका है ॥१०९॥ ब्राह्मण ने कहा—हे राजन् आपने जिस वस्तु की याचना की थी और जिसे देने की मैंने भी प्रतिज्ञा कर ली थी, वह मेरे पास आपकी धरोहर के रूप में रखी है। इसलिये आप उसे शीघ्र ही ग्रहण करें। यदि आप उसे स्वीकार नहीं करेंगे तो मैं आपको शाप दे डालूँगा, इसमें संशय नहीं है॥११०॥

धिगराजधर्मं यस्यायं कार्यस्येह विनिश्चयः।
इत्यर्थं मे ग्रहीतव्यं कथं तुल्यं भवेदिति ॥१११
एष पाणिरपूर्व मे निक्षेपार्थं प्रसारितः।
यन्मे धारयसे विप्र तदिदानीं प्रदीयताम् ॥११२
संहितां जपता यावान् गुणः कश्चित् कृतो मया।
तत् सर्वं प्रतिगृह्णीष्व यदि किञ्चिदिहास्तिमे ॥११३
जलमेतन्निपतितं मम पाणौ द्विजोत्तम।
सममस्तु सहैवास्तु प्रतिगृह्णातु वै भवान् ॥११४
कामक्रोधौ विद्धि नौ त्वमावाभ्यां कारितो भवान्।
सहेति च यदुक्तं ते समा लोकास्तवास्य च ॥११५

राजा ने कहा—उस राजधर्म को धिक्कार है, जिसके कार्य का यह परिणाम है। ब्राह्मण को और मुझे समान फल प्राप्त हो सके, इसी उद्देश्य से मुझे यह दान लेना है ॥१११॥ हे ब्रह्मन्! मेरा यह हाथ आज से पहिले कभी किसी के आगे नहीं पसरा, वह आज आपसे धरोहर लेने के लिये पसर रहा है। आपके पास जो मेरी धरोहर है, मुझे दे दीजिये ॥११२॥ ब्राह्मण ने कहा—हे महाराज! संहिता का जप करते हुए अब तक मैंने जो कुछ भी पुण्य अथवा सद्गुण संचित किये हैं, वह सब आप ग्रहण करें। इसके अतिरिक्त भी जो पुण्य मेरे पास है, उसे भी आप ले लें ॥११३॥ राजा ने कहा—हे द्विजोत्तम! मेरे हाथ पर संकल्प का यह जल पड़ा है। मेरा और आपका सभी पुण्य हम दोनों के लिये समान हो और हम समान रूप से ही उसका उपभोग करें। इसी उद्देश्य से आप मेरा प्रतिग्रह भी स्वीकार करें ॥११४॥ विरूप ने कहा—हे राजन्! हम दोनों काम क्रोध हैं। आपको इस कार्य में हमने ही लगाया है। आपने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समान फल भोगने की बात कही है, इसलिये आपको और ब्राह्मण को समान लोकों की प्राप्ति ही होगी ॥११५॥

नायं धारयते किञ्चिज्जिज्ञासा त्वत्कृते कृता ।
कालो धर्मस्तथा मृत्युः कामक्रोधौ तथा युवाम् ॥११६
सर्वमन्योन्यनिष्कर्षं निवृष्टं पश्यतस्तव ।
गच्छ लोकान् जितान् स्वेन कर्मणा यत्र वाञ्छसि ॥११७
जापकानां फलावाप्तिर्मया ते सम्प्रदर्शिता ।
गतिः स्थानं च लोकाश्च जापकेन यथा जिताः ॥११८
प्रयाति संहिताध्यायी ब्रह्माणं परमेष्ठिनम् ।
अथवाग्निं समायाति सूर्यमाविशतेऽपि वा ॥११९
स तैजसेन भावेन यदि तत्र रमत्युत ।
गुणांस्तेषां समाधत्तेरागेण प्रतिमोहितः ॥१२०

मेरे इस साथी का भी मुझ पर ऋण नहीं है । यह सब तो आपकी परीक्षा के लिये ही था । काल, धर्म, मृत्यु, काम, क्रोध और आप दोनो सभी पारस्परिक कसौटी पर कसे जा चुके । अब आप अपने कर्म के द्वारा विजय किये हुए इच्छित लोकों को प्रस्थान कीजिये ॥११६-११७॥ भीष्मजी ने कहा— हे युधिष्ठिर ! जापकों को फल किस प्रकार मिलता है, यह मैंने तुम्हें बता दिया । अब उस जापक ब्राह्मण को कौन-सी गति मिली, यह उसने किस लोक पर अधिकार किया और कौन-से लोक उसने जीते तथा यह सब कैसे हुआ यह अब कहा जायगा ॥११८॥ संहिता का स्वाध्याय करने वाला ब्राह्मण परमेष्ठी ब्रह्मा के लोक में या अग्नि लोक में गमन करता है अथवा सूर्य लोक में प्रविष्ट होता है ॥११९॥ यदि वह जापक अपने तैजस् देह से उन लोकों में रमण करता है तो रागसे मोहित हुआ वह उन लोकों के गुणों को अपने अन्तर में स्थित करलेता है ।१२०।

एवं सोमे तथा वायौ भूम्याकाशशरीरगः ।
सरागस्तत्र वसति गुणांस्तेषां समाचरन् ॥१२१
अथ तत्र विरागी स गच्छति त्वथ संशयम् ।
परमव्ययमिच्छन् स तमेवाविशते पुनः ॥१२२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अमृतान्नामृतं प्राप्तः शान्तीभूतो निरात्मवान् ।
ब्रह्मभूतः स निर्द्वन्द्वः सुखी शान्तो निरामयः ॥१२३
ब्रह्मस्थानमनावर्तमेकमक्षरसंज्ञकम् ।
अदुःखमजरं शान्तं स्थानं यत् प्रतिपद्यते ॥१२४
चतुर्भिर्लक्षणैर्हीनं तथा षड्भिः सषोडशैः ।
पुरुषं तमतिक्रम्य आकाशं प्रतिपद्यते ॥१२५

इसी प्रकार जप करने वाला ब्राह्मण राग युक्त होने पर चन्द्रलोक, वायुलोक, भूलोक अथवा अन्तरिक्ष लोक के योग्य देह धारण कर उनमें रहता है तथा वहाँ के निवासियों के समान आचरण करता है ॥१२१॥ यदि उन लोकों के उत्कृष्ट होने में संशय होने पर जापक वहाँ से विरक्त हो जाय तो फिर वह श्रेष्ठ और नित्य मोक्ष की कामना करता हुआ उन्हीं परमेष्ठी ब्रह्मा में लीन हो जाता है ॥१२२॥ अन्य लोकों की प्राप्ति की अपेक्षा परमेष्ठी भाव का प्राप्त होना अमृत है जिसे पाकर वह शान्त, अहङ्कार-रहित, सुखी, शान्ति-परायण और रोग-शोकादि से मुक्त तथा ब्रह्मरूप हो जाता है ॥१२३॥ ब्रह्मपद प्राप्त होने पर पुनरावृत्ति नहीं होती। क्योंकि वह अविनाशी, संज्ञा-रहित, दुःख-रहित और शान्त-आश्रय है, यह जापक उसी को प्राप्त होता है ॥१२४॥ पहिले कहे हुए परमेष्ठी रूप से भी ऊपर जाता हुआ जापक आकाश रूप निर्गुण ब्रह्म को प्राप्त होता है। यहाँ प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द यह प्रमाण और लक्षण काम नहीं देते। तथा भूख, प्यास, शोक, मोह, जरा और मृत्यु भी जहाँ नहीं हैं। दसों इन्द्रिय, पञ्च प्राण और मन यह उपकरण भी वहाँ नहीं होते ॥१२५॥

अथ नेच्छति रागात्मा सर्वं तदधितिष्ठति ।
यच्च प्रार्थयते तच्च मनसा प्रतिपद्यते ॥१२६
अथवा चेक्षते लोकान् सर्वान् निरयसंज्ञितान् ।
निस्पृहः सर्वतो मुक्तस्तत्र वै रमते सुखम् ॥१२७
एवमेषा महाराज जापकस्य गतिर्यथा ।
एतत् ते सर्वमाख्यातं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥१२८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किमुत्तरं तदा तौ स्म चक्रतुस्तस्य भाषिते।
ब्राह्मणो वाथवा राजा तन्मे ब्रूहि पितामह ॥१२९
अथवा तौ गतौ तत्र यदेतत् कीर्तितं त्वया।
संवादो वा तयोः कोऽभूत् किं वा तौ तत्र चक्रतुः ॥१३०

यहि वह ब्रह्म प्राप्ति की इच्छा न कर भोगों के प्रति आसक्त हो तो वह सभी पुण्य लोकों का अधिष्ठाता बन कर जिस वस्तु की कामना करे, उसे तुरन्त प्राप्त कर लेता है ॥१२६॥ अथवा वह सभी पुण्य लोकों को नरक के समान ही देखता और सब ओर से निस्पृह तथा मुक्त होकर उस निर्गुण ब्रह्म में ही सुख पूर्वक रम जाता है ॥१२७॥ हे महाराज ! इस प्रकार जापक की गति कही गई है। यह सब विषय मैं तुमसे कह चुका। अब और क्या सुनने की इच्छा करते हो ? ॥१२८॥ युधिष्ठिर ने कहा—हे पितामह ! विरूप के पूर्वोक्त वचनों पर ब्राह्मण और राजा दोनों ने ही क्या कहा, यह मेरे प्रति कहिये ॥१२९॥ आपने जो तीन प्रकार की गति कही है, उनमें से उन दोनों को कौन सी गति मिली ? उस समय उनमें क्या संवाद हुआ और उन्होंने क्या किया ? ॥१३०॥

तथेत्येव प्रतिश्रुत्य धर्मं सम्पूज्य च प्रभो।
यमं कालं च मृत्युं च स्वर्गं सम्पूज्य चार्हत ॥१३१
पूर्वं ये चापरे तत्र समेता ब्राह्मणर्षभाः।
सर्वान् सम्पूज्य शिरसा राजानं सोऽब्रवीद् द्विजः ॥१३२
फलेनानेन संयुक्तो राजर्षे गच्छ मुख्यताम्।
भवता चाभ्यनुज्ञातो जपेयं भूय एव ह ॥१३३
वरश्च मम पूर्वं हि दत्तो देव्या महाबल।
श्रद्धा ते जपतो नित्यं भवत्विति विशाम्पते ॥१३४
यच्चेवमफला सिद्धिः श्रद्धा च जपितुं तव।
गच्छ विप्र मया सार्धं जापकं फलमाप्नुहि ॥१३५

भीष्मजी ने कहा—हे राजन् ! ब्राह्मण ने 'ऐसे ही हो' कह कर धर्म, यम, काल, मृत्यु और स्वर्ग सभी का पूजन किया। जो ब्राह्मण वहाँ पहिले-से थे या बाद में आये थे, उन सबको मस्तक झुका कर और यथा-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योग्य पूजन कर जापक ब्राह्मण ने कहा ॥१३१-१३२॥ हे राजर्षे ! इस फल से सम्पन्न होकर आप श्रेष्ठ गति को पाइये और मैं भी आपकी आज्ञा पाकर पुनः जप-परायण हो जाऊँगा ॥१३३॥ हे महाबलवान् ! मुझे भगवती सावित्री ने वर दिया है कि 'तुम्हारी जप में नित्य श्रद्धा रहेगी।' ॥१३४॥ राजा ने कहा—हे ब्रह्मन् ! यदि मुझे फल दे देने के कारण आपको फल नहीं मिल रहा है और आपकी श्रद्धा पुनः जप करने में है तो आप मेरे साथ चल कर ही जप के दान से उत्पन्न फल को ही भोगें ॥१३५॥

कृतः प्रयत्नः सुमहान् सर्वेषां संनिधाविह ।
सह तुल्यफलावावां गच्छावो यत्र नौ गति ॥१३६
व्यवसायं तयोस्तत्र विदित्वा त्रिदशेश्वरः ।
सह देवैरुपययौ लोकपालैस्तथैव च ॥१३७
साध्याश्च विश्वे मरुतो वाद्यानि सुमहान्ति च ।
नद्यः शैलाः समुद्राश्च तीर्थानि विविधानि च ॥१३८
तपांसि संयोगविधिर्वेदाः स्तोभाः सरस्वती ।
नारदः पर्वतश्चैव विश्वावसुर्हाहाहूहूः ॥१३९
गन्धर्वश्चित्रसेनश्च परिवारगणैर्युतः ।
नागाः सिद्धाश्च मुनयो देवदेवः प्रजापतिः ॥१४०
विष्णुःसहस्रशीर्षश्च देवोऽचिन्त्यः समागमत् ।
अवाद्यन्तान्तरिक्षे च भेर्यस्तूर्याणि वा विभो ॥१४१

ब्राह्मण ने कहा—मैंने समी के सामने आपको अपने जप का फल देने की चेष्टा की है, परन्तु, आपका आग्रह साथ-साथ फल को भोगने का है, इसलिए हम दोनों ही समान फल प्राप्त करें। चलिये, हम दोनों जहाँ तक साथ-साथ चल सकते हों, चलें ॥१३६॥ भीष्मजी ने कहा—हे राजन् उन दोनों का निश्चय जान कर सब देवताओं और लोकपालों सहित इन्द्र वहाँ पधारे। साध्यगण, विश्वेदेवा और मरुद्गण भी उनके साथ थे। बाजे बज रहे थे। नदी, पहाड़, समुद्र, तीर्थ, तप, संयोग विधि, वेद, स्तोभ, सरस्वती, नारद, पर्वत, विश्वावसु, हाहा, हूहू,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सपरिवार चित्रसेन गंधर्व, नाग, सिद्ध, मुनि,प्रजापति ब्रह्माजी, सहस्रशीर्ष शेषजी और अचिन्त्य भगवान् विष्णु का भी वहाँ समागम हुआ। उस समय आकाश मण्ड़ल में भेरी और तुरही आदि वाद्य बजने लगे ॥१३७-१४१॥

पुष्पवर्षाणि दिव्यानि तत्र तेषां महात्मनाम् ।
ननृतुश्चाप्सरःसंघास्तत्र तत्र समन्ततः ॥१४२
अथ स्वर्गस्तथा रूपी ब्राह्मणं वाक्यमब्रवीत् ।
संसिद्धस्त्वं महाभाग त्वं च सिद्धस्तथा नृप ॥१४३
अथ तौ सहितौ राजन्नन्योन्यविधिना ततः ।
विषयप्रतिसंहारमुभावेव प्रचक्रतुः ॥१४४
प्राणापानौ तथोदानं समानं व्यानमेव च ।
एवं तौ मनसि स्थाप्य दधतुः प्राणयोर्मनः ॥१४५
उपस्थितकृतौ तौ च नासिकाग्रमधो भ्रुवोः ।
भ्रुकुट्या चैव मनसा शनैर्धारयतस्तदा ॥१४६

उस स्थान पर, उन महात्माओं के ऊपर पुष्प-वृष्टि होने लगी ।अप्सराओं के झुण्ड एकत्र हो गये और नृत्य चलने लगा ॥'४२॥ फिर स्वर्ग ने ब्राह्मण से कहा—'हे महाभाग ! अब तुम सिद्ध हो गये' और राजा से कहा—'हे राजन् ! तुम भी सिद्ध हो गये हो' । १४३॥ हे राजन् ! फिर वे दोनों परस्पर एक दूसरे का उपकार करते हुए साथ-साथ चले तथा दोनों ने ही अपने-अपने मनों को विषयों की ओर से खींच लिया ॥१४४॥ फिर प्राण, अपान, उदान, समान और व्यान वायुओं को हृदय में स्थित कर मन को प्राण और अपान में संयुक्त किया और भौंहों के नीचे,नासिक के अग्रभाग को देखते हुए मन के सहित प्राणापान को भौंहों के मध्य में स्थापित किया ॥१४५-१४६॥

निश्चेष्टाभ्यां शरीराभ्यां स्थिरदृष्टी समाहितौ ।
जितात्मानौ तथाऽऽधाय मूर्धन्यात्मानमेव च ॥१४७
तालुदेशमथोद्दाल्य ब्राह्मणस्य महात्मनः ।
ज्योतिर्ज्वाला सुमहती जगाम त्रिदिवं तदा ॥१४८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हाहाकारस्तथा दिक्षु सर्वषां सुमहानभूत् ।
तज्ज्याति: स्तूयमानं स्म ब्रह्माणंप्राविशत् तदा ॥१४६
तत: स्वागतमित्याह तत् तेज: प्रपितामह: ।
प्रादेशमात्रं पुरुषं प्रत्युद्गम्य विशाम्पते ॥१५०

इस प्रकार मन को वश में कर, दृष्टि को एकाग्र किया और प्राण सहित मन को सुषुम्णा मार्ग द्वारा मूर्धा में स्थापित कर दोनों ही समाधिस्थ हो गये । उस समय उन दोनों के देह चेष्टाहीन प्रतीत होने लगे—॥१४७॥ तभी उस महात्मा ब्राह्मण के ब्रह्मरन्ध्र को भेदती हुई ज्योतिर्मयी एक महती ज्वाला निकल कर स्वर्ग की ओर ऊँची उठने लगी ॥१४८॥ तब तो सभी दिशाओं में कोलाहल मचने लगा । सभी उस ज्वाला की स्तुति करने लगे । प्रादेश मात्र आकार वाला वह तेज जब ब्रह्माजी की ओर बढ़ा, तब ब्रह्माजी ने आगे बढ़ कर उसका स्वागत किया ॥१४६-१५०॥

भूयश्चैवापरं प्राह वचनं मधुरं तदा ।
जाप कैस्तुल्यफलता योगानां नात्र संशय: ॥१५१
योगस्य तावदेतेभ्य: प्रत्यक्षं फलदर्शनम् ।
जापकाना विशिष्टं तु प्रत्युत्थानं समाहितम् ॥१५२
उष्यतां मयि चेत्युक्त्वाचेतयत् सततं पुन: ।
अथास्यं प्रविवेशास्य ब्राह्मणो विगतज्वर: ॥१५३
राजाप्येतेन विधिना भगवन्तं पितामहम् ।
यथैव द्विजशार्दूलस्तथैव प्राविशत् तदा ॥१५४
स्वयम्भुवमथो देवा अभिवाद्य ततोऽब्रुवन् ।
जापकानां विशिष्टं तु प्रत्युत्थानं समाहितम् ॥१५५

उसका स्वागत करके ब्रह्माजी ने मधुर वाणी में कहा—हे ब्रह्मन् ! जो फल योगियों को प्राप्त होता है, वही फल जापकों को भी मिलता है, इसमें संशय नहीं है ॥१५१॥ योगियों को जो फल मिलता है, उसे इन सभासदों ने प्रत्यक्ष देखा है । किन्तु जप करने वालों को उनसे भी विशिष्ट फल मिलता है, यह बताने के लिये ही मैंने उठकर तुम्हारा स्वा-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गत किया है ॥१५२॥ 'अब तुम मेरे भीतर सुख पूर्वक रहो' यह कह कर ब्रह्माजी ने उस ब्राह्मण को फिर तत्त्वज्ञान दिया। वह रोग-शोक से मुक्त हुआ तेज स्वरूप ब्राह्मण ब्रह्माजी के मुख में घुस गया ॥१५३॥ उसी प्रकार राजा इक्ष्वाकु भी उस ब्राह्मण के समान यथा विधि ब्रह्माजी के मुख में प्रविष्ट हो गये ॥१५४॥ फिर देवताओं ने ब्रह्माजी को प्रणाम कर कहा—आपने आगे बढ़ कर इस ब्राह्मण का स्वागत करके यह सूचित कर दिया कि जापकों को योगियों से भी श्रेष्ठ फल मिलता है ॥१५५॥

जापकार्थमयं यत्नो यदर्थं वयमागताः ।
कृतपूजाविमौ तुल्यौ त्वया तुल्यफलाविमौ ॥१५६
योगजापकयोर्दृष्टं फलं सुमहदद्य वै ।
सर्वाँल्लोकानतिक्रम्य गच्छेतां यत्र वाञ्छितम् ॥१५७
महास्मृतिं पठेद् यस्तु तथैवानुस्मृतिं शुभाम् ।
तावप्येतेन विधिना गच्छेतां मत्सलोकताम् ॥१५८
यश्च योगे भवेद् भक्तः सोऽपि नास्त्यत्र संशयः ।
विधिनानेन देहान्ते मम लोकानवाप्नुयात् ।
साधये गम्यतां चैव यथास्थानानि सिद्धये ॥१५९
इत्युक्त्वा स तदा देवस्तत्रैवान्तरधीयत ।
आमन्त्र्य च ततो देवा ययुःस्वं स्वं निवेशनम् ॥१६०
ते च सर्वे महात्मानो धर्मं सत्कृत्य तत्र वै ।
पृष्ठतोऽनुययू राजन् सर्वे सुप्रीतचेतसः ॥१६१

इस जापक ब्राह्मण की सद्गति के लिये ही आपने ऐसा किया और हम भी यही देखने के लिये आये थे। आपने इन दोनों का ही समान आदर किया और यह दोनों आपके समान ही फल के अधिकारी हो गये हैं ॥१५६॥ आज हमने योगी और जापक के महान् फल के अन्तर को प्रत्यक्ष देख लिया। वे सब लोकों को लाँघ कर अपने इच्छित लोकों में पहुंच सकते हैं ॥१५७॥ ब्रह्माजी बोले—हे देवगण ! महास्मृति और अनुस्मृति का पाठ करने वाला मेरे लोक को प्राप्त होता है। योग में स्थित पुरुष भी इसी प्रकार मेरे लोक में आता है। अब तुम अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिये

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने-अपने स्थान को गमन करो। मैं भी तुम सबका अभीष्ट साधन करता रहूँगा ॥१५८-१५९॥ भीष्मजी ने कहा—हे युधिष्ठिर ब्रह्माजी यह कह कर वहीं अन्तर्धान हो गये और उनकी आज्ञानुसार देवता भी अपने अपने स्थान को गये ॥१६०॥ फिर वे सभी महात्मा धर्म को आदर सहित आगे करके प्रसन्न मन होकर वहाँ से चले गये ॥१६१॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

७-हंस गीता

सत्यं दमं क्षमां प्रज्ञां प्रशंसन्ति पितामह ।
विद्वांसो मनुजा लोके कथमेतन्मतं तव ।।१
अत्र ते वर्तयिष्येऽहमितिहासं पुरातनम् ।
साध्यानामिह संवादं हंसस्य च युधिष्ठिर ।।२
हंसो भूत्वाथ सौवर्णस्त्वजो नित्यः प्रजापतिः ।
स वै पर्येति लोकांस्त्रीनथ साध्यानुपागमत् ।।३
शकुने वयं स्म देवा वै साध्यास्त्वामनुयुङ्क्ष्महे ।
पृच्छामस्त्वां मोक्षधर्मं भवाश्च किल मोक्षवित् ।।४
श्रुतोऽसि नः पण्डितो धीरवादी
साधुशब्दश्चरते ते पतत्रिन् ।
किं मन्यसे श्रेष्ठतमं द्विज त्वं
कस्मिन् मनस्ते रमते महात्मन् ।।५

युधिष्ठिर ने पूछा—हे पितामह ! संसार में अनेक विद्वानों द्वारा सत्य, इन्द्रिय संयम, क्षमा शौर श्रेष्ठ बुद्धि की प्रशंसा की जाती है। इस विषय में आप अपना मत मेरे प्रति कहिये ।।१।। भीष्मजी ने कहा—हे युधिष्ठिर ! प्राचीन काल में साध्यगणों का हंस से सम्वाद हुआ था, उस प्राचीन इतिहास को मैं तुम्हारे प्रति कहता हूँ ।।२।। एक समय की बात है—अविनाशी और अजन्मा प्रजापति सोने के हंस का रूप धारण कर तीनों लोकों में घूम रहे थे। तभी वे साध्यगणों के पास गये ।।३।। तब साध्यगणों ने उनसे कहा—हे हंस हम साध्य देवता हैं और आपसे मोक्ष-धर्म के सम्बंध में पूछना चाहते हैं। क्योंकि, आपके तत्व के ज्ञाता होने की बात सभी जानते हैं ।।४।। हे महात्मन् ! यह सुना गया है कि आप पंडित और धीर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वक्ता हैं। आपकी श्रेष्ठ वाणी का सर्वत्र प्रचार है। आपके मत में सर्वोत्तम वस्तु कौन-सी है और आपका मन किसमें रमता है ॥५॥

तन्नः कार्यं पक्षिवर प्रशाधि
यत् कार्याणां मन्यसे श्रेष्ठमेकम् ।
यत् कृत्वा वै पुरुषः सर्वबन्धैः
विमुच्यते विहगेन्द्रेह शीघ्रम् ॥६
इदं कार्यममृताशाः शृणोमि
तपो दमः सत्यमात्माभिगुप्तिः ।
ग्रन्थीन् विमुच्य हृदयस्य सर्वान्
प्रियाप्रिये स्वं वशमानयीत ॥७
नारुन्तुदः स्यान्न नृशंसवादी
न हीनतः परमभ्याददीत ।
ययास्य वाचा पर उद्विजेत
न तां वदेद् रुषतीं पापलोक्याम् ॥८
वाक्सायका वदनान्निष्पतन्ति
यैराहतः शोचति रात्र्यहानि ।
परस्य नाममर्मसु ते पतन्ति
तान् पण्डितो नावसृजेत परेषु ॥९
परश्चेदेनमतिवादबाणै-
र्भृशं विध्येच्छम एवेह कार्यः ।
संरोष्यमाणः प्रतिहृष्यते यः
स आदत्ते सुकृतं वै परस्य ॥१०

हे विहगेन्द्र ! सभी कार्यों में आप जिस एक कार्य को सर्वश्रेष्ठ मानते हों और जिसके करने से जीव सब प्रकार के बंधनों से मुक्त हो सकता हो उसी का उपदेश देने की कृपा करें ॥६॥ हंस ने कहा—हे अमृत का पान करने वाले देवगण ! मैं सुनता हूँ कि तप, दम, सत्य वचन, मनोनिग्रह आदि कार्य सर्वोत्तम हैं। हृदय की सभी ग्रंथियों को खोलकर प्रिय और अप्रिय को अपने वश में करना चाहिये ॥७॥ किसी के मर्म पर आघात

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न करे, किसी से कठोर वचन न बोले, किसी नीच पुरुष से आध्यात्मिक उपदेश न सुने और जिसे सुनकर दूसरों को उद्वेग हो, ऐसी पाप लोक में डालने वाली अमंगलमयी बात न कहे ॥८॥ मुख से निकले वचन-वाणों से बिंधा हुआ मनुष्य रात-दिन शोक-मग्न रहता है, क्योंकि इनसे दूसरों के मर्म पर चोट पहुँचती है । अतः विद्वान् पुरुष किसी दूसरे पर वाग्बाण का प्रयोग न करे ॥९॥ विद्वान् पुरुष को यदि कोई पुरुष वाग्बाण से चोट पहुँचावे तो भी, उसे शान्त रहना चाहिये । दूसरों के क्रोध को सह कर भी जो प्रसन्न रहता है, वह क्रोधी के पुण्य को स्वयं ग्रहण कर लेता है ॥१०॥

क्षेपायमाणमभिषङ्गव्यलीकं
निगृह्णाति ज्वलितं यश्च मन्युम् ।
अदुष्टचेता मुदितोऽनसूयुः
स आदत्ते सुकृतं वै परेषाम् ॥११

आक्रुश्यमानो न वदामि किंचित्
क्षमाम्यहं ताड्यमानश्चनित्यम् ।
श्रेष्ठं ह्येतद् यत्क्षमामाहुरार्याः
सत्यं तथैवार्जवमानृशंस्यम् ॥१२

वेदस्योपनिषत् सत्यं सत्यस्योपनिषद् दमः ।
दमस्योपनिषन्मोक्ष एतत् सर्वानुशासनम् ॥१३
वाचो वेगं मनसः क्रोधवेगं
विधित्सावेगमुदरोपस्थवेगम् ।
एतान् वेगान् यो विषहेदुदीर्णां
स्तं मन्येऽहं ब्राह्मणं वै मुनिं च ॥१४

अक्रोधनः क्रुध्यतां वै विशिष्ट-
स्तथा तितिक्षुरतितिक्षोर्विशिष्टः ।
अमानुषान्मानुषो वै विशिष्ट-
स्तथाज्ञानाज्ज्ञानविद् वै विशिष्टः ॥१५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संसार में निन्दा कराने वाले तथा अप्रिय जान पड़ने वाले प्रज्वलित क्रोध को रोक कर जो पुरुष अपने मन में विकार नहीं आने देता तथा स्वयं प्रसन्न रह कर दूसरों के दोषों को नहीं देखता, वह पुरुष उन व्यक्तियों के पुण्यों को ग्रहण कर लेता है, जो उससे शत्रु-भाव रखते हैं ॥११॥ मैं गाली खाकर भी बदले में कुछ नहीं कहता, कोई मुझे मार दे तो भी क्षमा करता हूँ, क्योंकि श्रेष्ठ पुरुष क्षमा, सत्य, सरलता और दया को ही श्रेष्ठ कहते हैं ॥१२॥ वेदाध्ययन का सार सत्य है भाषण का सार इन्द्रिय संयम है और इन्द्रिय संयम का सार मोक्ष है। सभी शास्त्र यही उपदेश देते हैं ॥१३॥ जो पुरुष वाणी का, मन और क्रोध का, तृष्णा का, उदर का और उपस्थ का वेग सहन कर लेता है, मैं उसी को ब्रह्मज्ञानी और मुनि समझता हूँ ॥१४॥ क्रोधी से श्रेष्ठ क्रोध न करने वाला है, सहन न करने वाले से श्रेष्ठ सहन शील है, मनुष्यों से भिन्न प्राणियों से श्रेष्ठ मनुष्य है तथा अज्ञानी से श्रेष्ठ ज्ञानी है ॥१५॥

आक्रुश्यमानो नाक्रुश्येन्मन्युरेनं तितिक्षतः ।
आक्रोष्टारं निर्दहति सुकृतं चास्य विन्दति ॥१६

यो नात्युक्तः प्राह रूक्षं प्रियं वा
यो वा हतो न प्रतिहन्ति धैर्यात् ।
पापं च यो नेच्छति तस्य हन्तु-
स्तस्येह देवाः स्पृहयन्ति नित्यम् ॥१७

पापीयसः क्षमेतैव श्रेयसः सदृशस्य च ।
विमानितो हतोत्क्रुष्ट एवं सिद्धिं गमिष्यति ॥१८
सदाहमार्यान्निभृतोऽप्युपासे
न मे विधित्सोत्सहते न रोषः ।
न वाप्यहं लिप्समानः परैमि
न चैव किंचिद् विषयेण यामि ॥१९
नाहं शप्तः प्रतिशपामि कंचिद्
दमं द्वारं ह्यमृतस्येह वेद्मि ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गुह्यं ब्रह्म तदिदं वो ब्रवीमि
न मानुषाच्छ्रेष्ठतरं हि किंचित् ॥२०

जो दूसरे से गाली सुन कर भी बदले में गाली नहीं देता, उस क्षमा-शील पुरुष का आन्तरिक कोप ही गाली देने वाले को भस्म कर डालता है और वह उसके पुण्य को भी छीन लेता है ॥१६॥ जो किसी से कठोर बात सुन कर भी उसके लिये प्रिय अप्रिय कुछ नहीं कहता तथा किसी के द्वारा आहत होकर भी धैर्य रखता और बदले में मारने वाले को नहीं मारता और न उसकी हानि की ही इच्छा करता है, उस महान्, आत्मा पुरुष से भेंट करने की देवगण भी इच्छा किया करते हैं ॥१७॥ पापकर्मा अपराधी अपने से अधिक आयु वाला हो अथवा समान आयु का, उसके द्वारा पिट कर, अपमानित होकर और गाली सुन कर भी उसे क्षमा कर दे। ऐसा करने वाले मनुष्य को परम सिद्धि प्राप्त होती है ॥१८॥ यद्यपि मैं स्वयं सब प्रकार से परिपूर्ण हूं फिर भी मैं उत्तम पुरुषों की उपासना में लगा रहता हूं। मुझ पर तृष्णा या रोष अधिकार नहीं कर सकते। प्राप्ति के लोभ से मैं धर्म का उल्लंघन नहीं करता और न विषयों की प्राप्ति के लिये कहीं जाता हूँ ॥१९॥यदि मुझे कोई शाप दे तो भी बदले में मैं उसे शाप नहीं देता। इन्द्रिय संयम को ही मोक्ष-द्वार समझता हूं। अब, तुम्हें एक गोपनीय बात बताता हूं, उसे सुनो ॥२०॥

निमुच्यमानः पापेभ्यो घनेभ्य इव चन्द्रमाः।
विरजाः कालमाकाङ्क्षन् धीरो धैर्येण सिद्धयति ॥२१
यः सर्वेषां भवति ह्यचनीय
उत्सैधनस्तम्भ इवाभिजातः।
यस्मै वाचं सुप्रसन्नां वदन्ति
स वै देवान् गच्छति संयतात्मा ॥२२
न तथावक्तुमिच्छन्ति कल्याणान् पुरुषे गुणान्।
यथैषां वक्तुमिच्छन्ति नैर्गुण्यमनुयुञ्जकाः ॥२३
यस्य वाङ्मनसी गुप्ते सम्यक् प्रणिहिते सदा।
वेदास्तपश्च त्यागश्च स इदं सर्वमाप्नुयात् ॥२४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आक्रोशमविमानाभ्यांनाबुधान् बोधयेन् बुधः ।
तस्मान्न वर्धयेदन्यं न चात्मानं विहिंसयेत् ॥२५

जैसे बादलों की ओट से निकला हुआ चन्द्रमा अपनी प्रभा से प्रकाशित होता है, वैसे ही पापों से छूटा हुआ निर्मल अन्तःकरण वाला धीर मनुष्य काल की धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा करता हुआ, सिद्धि प्राप्त करता है ॥२१॥ मन को वश में रखने वाला विद्वान् पुरुष ऊँचे उठे खम्भे के समान उच्चकुल में उत्पन्न होकर सब के लिये आदरणीय बनता है और जिसके प्रति सभी मीठे वचन कहते हैं, वह पुरुष दैवत्व को प्राप्त होता है ॥२२॥ ईर्ष्यालु मनुष्य जिससे ईर्ष्या रखते हैं, उसके दोषों को जिस प्रकार कहने में उत्सुक रहते हैं, उस प्रकार उसके शुभ कर्मों को नहीं कहना चाहते ॥२३॥ जिसके मन वाणी सुरक्षित होकर सदा सब ओर से परमात्मा की ओर लगे रहते हैं, वह मनुष्य वेदाध्ययन तपस्या और त्याग इन सब के फल को प्राप्त कर लेता है ॥२४॥ इसलिये विद्वान मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह कठोर भाषी और अपमान करने वाले अज्ञानियों को उनके दोषों को बात कर न समझावे । उसके सामने किसी अन्य को बढ़ावा न दे और उस पर किसी प्रकार का आक्षेप करके उसके द्वारा अपने को हिंसत न होने दे ॥२५॥

अमृतस्येव संतृप्येदवमानस्य पण्डितः ।
सुखं ह्यवमतः शेते योऽवमन्ता स नश्यति ॥२६

यत् क्रोधनो यजति यद् ददाति
यद् वा तपस्तप्यति यज्जुहोति ।
वैवस्वयस्तद्धरतेऽस्य सर्वं
मोघः श्रमो भवति हि क्रोधनस्य ॥२७

चत्वारि यस्य द्वाराणि सुगुप्तान्यमरोत्तमाः ।
उपस्थमुदरं हस्तौ वाक् चतुर्थी स धर्मवित् ॥२८

सत्यं दमं ह्यार्जवमानृशंस्यं
धृतिं तितिक्षामतिसेवमानः ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वाध्यायनित्योऽपृहयन् परेषा-
मेकान्तशील्यूध्वगतिर्भवेत् सः ।।२९
सर्वांश्चैनाननुचरन् वत्सवच्चतुरः स्तनान् ।
न पावनतमं किंचित् सत्यादध्यगमं क्वचित् ।।३०

विद्वान् को अपना अपमान होने पर भी अमृत–पान के समान संतुष्ट हो । क्योंकि, अपमानित मनुष्य तो सुख पूर्वक शयन करता है, परन्तु अपमान करने वाला मनुष्य स्वयं ही नष्ट हो जाता है ।।२६।। क्रोधी पुरुष यज्ञ, दान, तप, हवन आदि जो भी कर्म करता है, उसके उन सब कर्मों के भलों का यमराज हरण कर लेते हैं । इस प्रकार क्रोधी मनुष्य का किया हुआ सब परिश्रम निष्फल होता है ।।२७।। हे देवेश्वरो ! जिस पुरुष के उपस्थ, उदर, हाथ और वाणी—यह चारों द्वार सुरक्षित रहते हैं, वही पुरुष धर्म का जानने वाला है ।।२८।। जो सत्य, संयम, सरलता, दया, धैर्य और क्षमा का अधिक सेवन करता और सदा स्वाध्याय में लगा रहता है, परायी वस्तु लेने की इच्छा नहीं करता और एकान्त में रहता है, वह पुरुष ऊर्ध्व लोक को जाता है ।।२९।। जैसे बछड़ा अपनी जननी गौ के चारों स्तनों को पीता है,वैसे ही मनुष्य को उपरोक्त सभी सद्गुणों का पान करना चाहिये । मैं तो सत्य से अधिक पवित्र किसी भी अन्य वस्तु को नहीं मानता ।।३०।।

आचक्षेऽहं मनुष्येभ्यो देहेभ्यः प्रतिसंचरन् ।
सत्यं स्वर्गस्य सोपानं पारावारस्य नौरिव ।।३१
यादृशैः संनिवसति यादृशांश्चोपसेवते ।
यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग् भवति पूरुषः ।।३२
यदि सन्तं सेवति यद्यसन्तं
तपस्विनं यदि वा स्तेनमेव ।
वासो यथा रंगवशं प्रयाति
तथा स तेषां वशमभ्युपैति ।।३३
सदा देवाः साधुभिः संवदन्ते
न मानुषं विषयं यान्ति द्रष्टुम् ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नेन्दुः समः स्यादसमो हि वायु-
रुच्चावचं विषयं यः स वेद ॥३४
अदुष्टं वर्तमाने तु हृदयान्तरपूरुषे ।
तेनैव देवाः प्रीयन्ते सतां मार्गस्थितेन वै ॥३५

जैसे जहाजके द्वारा समुद्र पार किया जा सकता है, वैसे ही सत्य स्वर्ग लोक में पहुंचने की सीढ़ी है—यह बात सर्वत्र घूमता हुआ मैं मनुष्यों और देवताओं से बराबर कहा करता हूं ॥३१॥ जो मनुष्य जैसे लोगों के संग रहता, जैसे पुरुषों का सेवन करता अथवा जैसा बनना चाहता है, वह वैसा ही हो जाता है॥३२॥वस्त्र को जिस रंग में रंगे, उसी रंग का हो जाता है, वैसे ही सज्जन के संग से सज्जन, तपस्वी के संग तपस्वी और चोर के संग से चोर हो जाता है ॥३३॥ देवगण सदा सत्पुरुषों का संग करते हैं, इसलिये वे मनुष्यों के क्षण भंगुर भोगों की ओर देखते भी नहीं। जो विविध विषयों के नाशवान् स्वभाव को ठीक प्रकार से जानता है, उसकी बराबरी चन्द्रमा या वायु भी नहीं कर सकते ॥३४॥ हृदय में निवास करने वाला अन्तर्यामी आत्मा जब दोष भाव से छूट जाता है, तब उसका साक्षात्कार कर्त्ता पुरुष सन्मार्ग पर चलने वाला समझा जाता है। उसकी इस स्थिति पर देवगण प्रसन्न होते हैं ॥३५॥

शिश्नोदरे ये निरताः सदैव
स्तेनानरा वाक्परुषाश्च नित्यम् ।
अपेतदोषानपि तान् विदित्वा
दूराद् देवाः सम्परिवर्जयन्ति ॥३६
न वै देवा हीनसत्त्वेन तोष्याः
सर्वाशिना दुष्कृतकर्मणा वा ।
सत्यव्रता ये तु नराः कृतज्ञा
धर्मं रतास्तैः सह सम्भजन्ते ॥३७
अव्याहृतं व्याहृताच्छ्रेय आहुः
सत्यं वदेद् व्याहृतं तद् द्वितीयम् ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वदेद् व्याहृतं तत् तृतीयं
प्रियं धर्मं वदेद् व्याहृतं तच्चतुर्थम् ।।३८
केनायमावृतो लोकः केन वा न प्रकाशते ।
केन त्यजति मित्राणि केन स्वर्गं न गच्छति ।।३९
अज्ञानेनावृतो लोको मात्सर्यान्न प्रकाशते ।
लोभात् त्यजति मित्राणि संगात् स्वर्गं न गच्छति ।।४०

परन्तु जो सदा उदर और उपस्थ के भोगों में ही लगे रहते हैं तथा जो चोरी और कटु भाषा करते रहते हैं, वे प्रायश्चित आदि करके उन कर्मों के दोष से मुक्त हो जाँय, तो भी देवगण उन्हें दूर से ही त्याग देते हैं।।३६।। सत्वगुण-हीन, सर्व भक्षी और पाप का आचरण करने वाले मनुष्य देवताओं को संतुष्ट नहीं कर सकते। जो स्वभाव से सत्य बोलने वाले और धर्म परायण हैं, देवता उन्हीं से सम्बन्ध स्थापित करते हैं।।३७।। व्यर्थ भाषण की अपेक्षा मौन रहना उचित है। सत्यभाषण वाणी की दूसरी विशेषता है। प्रिय बोलना वाणी की तीसरी विशेषता है और धर्म सम्मत बात कहना वाणी की चौथी विशेषता है।।३८।।साध्यगणों ने कहा—हे हंस ! इस संसार को किसने आवृत्त किया हुआ है ? उसका स्वरूप किस कारण से प्रकाश में नहीं आता ? मनुष्य मित्रों का त्याग किस हेतु से करता है ? तथा किस दोष से वह स्वर्ग में नहीं पहुंच पाता ? ।।३९।। हंस ने कहा—हे देवताओ ! इस संसार को अज्ञान ने आवृत्त कर रखा है। परस्पर में मात्सर्य के कारण इसका स्वरूप ज्ञान नहीं होता। मनुष्य अपने मित्रो को लोभ से छोड़ देता है और आसक्ति के दोष से वह स्वर्ग नहीं पहुंच पाता ? ।।४०।।

कः स्विदेको रमते ब्राह्मणानां
कः स्विदेको बहुभिर्जोषमास्ते ।
कः स्विदेको बलवान् दुर्बलोऽपि
कः स्विदेषां कलहं नान्ववैति ।।४१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राज्ञ एको रमते ब्राह्मणानां
प्राज्ञश्चैको बहुभिर्जोषमास्ते ।
प्राज्ञ एको बलवान् दुर्बलोऽपि
प्राज्ञ एषां कलहं नान्ववैति ॥४२

किं ब्राह्मणानां देवत्वं किं च साधुत्वमुच्यते ।
असाधुत्वं च किं तेषां किमेषां मानुषं मतम् ॥४३

स्वाध्याय एषां देवत्वं व्रतं साधुत्वमुच्यते ।
असाधुत्वं परीवादो मृत्युर्मानुष्यमुच्यते ॥४४

इत्युक्त्वा परमोदेवो भगवान् नित्य अव्ययः ।
साध्यैर्देवगणैः सार्धं दिवमेवारुरोह सः ॥४५
एतद् यशस्यमायुष्यं पुण्यं स्वर्गाय च ध्रुवम् ।
दर्शितं देवदेवेन परमेणाव्ययेन च ॥४६

संवाद इत्ययं श्रेष्ठः साध्यानां परिकीर्तितः ।
क्षेत्रं वै कर्म्मणां योनिः सद्भावः सत्यमुच्यते ॥४७

साध्य गणों ने कहा—हे हंस ! सुख का अनुभव करने वाला ब्राह्मणों में एक मात्र कौन है ? बहुतों के साथ रह कर भी चुप रहने वाला एक मात्र मनुष्य कौन है ? जो दुर्बल होने पर भी बलवान है ऐसा एक मनुष्य कौन-सा है ? इनमें ऐसा कौन है जो किसी के साथ कलह नहीं करता ? ॥४१॥ हंस ने कहा—हे देवताओ ! परम सुख का अनुभव ब्राह्मणों में जो एक मात्र ज्ञानी है, वही कर सकता है । ज्ञानी ही अनेकों के साथ रहता हुआ मौन रहता है । ज्ञानी ही दुर्बल होने पर भी बलवान है । ज्ञानी ही ऐसा है जो किसी के साथ कलह नहीं करता ॥४२॥ साध्यों ने प्रश्न किया—हे हंस ! ब्राह्मणों में देवत्व क्या है ? उनमें साधुत्व क्या बताया गया हैं ? तथा उनमें असाधुत्व और मानवता कौन-सी मानी जाती है ? ॥४३॥ हंस ने कहा—वेद शास्त्रों का स्वाध्याय ही ब्राह्मणों का देवत्व है । श्रेष्ठ व्रत का पालन ही उनमें साधुत्व है । परनिन्दा उनमें असाधुत्व है और मरना ही उनमें मानवता समझनी चाहिये ॥४४॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भीष्मजी ने कहा—ऐसा कह कर नित्य, अव्यय परम देव ब्रह्माजी साध्य देवों के साथ ही स्वर्ग लोक के लिये ऊपर की ओर चल दिये ।। ४५ ।। महान्, अविनाशी, देवाधिदेव ब्रह्माजी के द्वारा कहा गया यह पुण्यमय तत्वज्ञान यश और आयु का बढ़ाने वाला है और यह स्वर्ग लोक के मिलने का निश्चित साधन है ।।४६।। हे युधिष्ठिर ! इस प्रकार साध्यगण और हंस में जो संवाद हुआ, वह मैंने तुम से कह दिया । यह देह ही कर्मों की योनि और सद्भाव ही सत्य कहा जाता है ।।४७।।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

८—कौशिक गीता

कश्चिद् द्विजातिप्रवरो वेदाध्यायी तपोधनः ।
तपस्वी धर्मशीलश्च कौशिको नाम भारत ॥१
साङ्गोपनिषदो वेदानधीते द्विजसत्तमः ।
स वृक्षमूले कस्मिंश्चिद् वेदानुच्चारयन् स्थितः ॥२
उपरिष्टाच्च वृक्षस्य बलाका संन्यलीयत ।
तया पुरीषमुत्सृष्टं ब्राह्मणस्य तदोपरि ॥३
तामवेक्ष्य ततः क्रुद्धः समपध्यायत द्विजः ।
भृशं क्रोधाभिभूतेन बलाका सा निरीक्षिता ॥४
अपध्याता च विप्रेण न्यपतद् धरणीतले ।
बलाकां पतितां दृष्ट्वा गतसत्त्वामचेतनाम् ॥५
कारुण्यादभिसंतप्तः पर्यशोचत तां द्विजः ।
अकार्यं कृतवानस्मि रोषरागबलात्कृतः ॥६
इत्युक्त्वा बहुशो विद्वान्ग्रामंभैक्ष्याय संश्रितः ।
ग्रामे शुचीनि प्रचरन् कुलानि भरतर्षभ ॥७
प्रविष्टस्तत् कुलं यत्र पूर्वं चरितवांस्तु सः ।
देहीति याचमानोऽसौ तिष्ठेत्युक्तः स्त्रियातदः ॥८

मार्कण्डेयजी बोले कि—भारत ! कौशिक नाम से प्रसिद्ध एक वेदाध्यायी, तपोधन तथा धर्मज्ञ ब्राह्मण था । वह तपस्वी ब्राह्मण सभी द्विजातीयों में श्रेष्ठ माना जाता था ॥१॥ उस द्विजोत्तम कौशिक सभी अंगों के सहित वेदों और उपनिषदों का अध्ययन कर चुका था । एक दिन वह किसी वृक्ष के नीचे बैठा हुआ वेद पाठ कर रहा था ॥२॥ उस समय उस वृक्ष पर एक बगुली बैठी हुई थी, उसने उस ब्राह्मण के ऊपर बीट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर दी ।।३।। यह देख कर ब्राह्मण को क्रोध आ गया और वह उस पक्षी की ओर देखता हुआ उसका अनिष्ट सोचने लगा। उसने अत्यन्त क्रोध पूर्वक उस बगुली की ओर देखा और उसका अनिष्ट चिंतन किया, तभी वह बगुली भूमि पर आगिरी ।।४।। उस बगुली को निष्प्राण और मूर्छित देखकर उस ब्राह्मण का हृदय दया से भर उठा और वह अपने कृत्य पर अत्यन्त पश्चात्ताप करने लगा। उसने शोक-पूर्वक कहा—'मेरा आज का यह कार्य क्रोध और आसक्ति के कारण ही हुआ है ।।५-६।। मार्कण्डेयजी बोले—राजन् ! इस प्रकार बारम्बार पश्चात्ताप करने के बाद वह ब्राह्मण भिक्षा के लिये ग्राम में पहुँचा। उस ग्राम के निवासी पवित्र आचरण से पूर्ण थे। उस ग्राम में भिक्षा माँगता हुआ वह एक घर पर गया। उस घर से वह पहिले भी एक बार भिक्षा ले चुका था। द्वार पर पहुँच कर उसने कहा—'भिक्षा दो' भीतर से स्त्री-कंठ सुनाई दिया—'ठहरो' ।।७-८।।

शौचं तु यावत् कुरुते भाजनस्य कुटुम्बिनी ।
एतस्मिन्नन्तरे राजन् क्षुधासम्पीडितो भृशम् ।।९
भर्ता प्रविष्टः सहसा तस्या भरतसत्तम ।
सा तु दृष्ट्वा पतिं साध्वी ब्राह्मणं व्यवहाय तम् ।।१०
पाद्यमाचमनीयं वै ददौ भर्तुस्तथाऽऽसनम् ।
प्रह्वा पर्यचरच्चापि भर्तारमसि तेक्षणा ।।११
आहारेणाथ भक्ष्यैश्च भोज्यैः सुमधुरैस्तथा ।
उच्छिष्टं भावितापतिं र्भुङ्क्ते नित्यं युधिष्ठिर ।।१२
दैवतं च पतिं मेने भर्तुश्चित्तानुसारिणी ।
कर्मणामनसावाचानान्यचित्ताभ्यगात् पतिम् ।।१३
तं सर्वभावोपगता पतिशुश्रूषणे रता ।
साध्वाचारा शुचिर्दक्षा कुटुम्बस्य हितैषिणी ।।१४

राजन् ! वह गृह स्वामिनी थी जो भीतर जूँठे बर्तन माँज रही था और जैसे ही वह बर्तन माँज कर चुकी, वैसे ही उसके पति सहसा घर पर आ गये। उस समय वे व्याकुल हो रहे थे ।।९।। उस सती नारी ने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जैसे ही अपने पति को देखा, वैसे ही अत्यन्त विनीत भाव से वह पति-सेवा में लग गई उसने ब्राह्मण को उसी दशा में छोड़ दिया। जल लाकर अपने पति के पाँव धोकर, हाथ-मुख धुलाकर, आसन बिछा दिया। फिर वह श्रेष्ठ स्वादिष्ट अन्न परोस कर अपने पति को भोजन कराने में लग गई। हे युधिष्ठिर ! वह पतिव्रता नारी पति को भोजन कराकर उन के उच्छिष्ट को प्रसाद मानकर अत्यन्त श्रद्धा और प्रेम से प्रतिदिन भोजन करती थी ॥१०-१२॥ वह अपने पति को देवता मानती हुए उनकी इच्छा के अनुकूल चलती थी, उसने कभी किसी पर पुरुष की ओर मन नहीं चलाया। वह मन, वचन, कर्म से पति की अनुगामिनी थी ॥१३॥ अपने हृदय की सम्पूर्ण भावनाएँ और प्रेम पति-चरणों में अर्पित करती हुई वह उनकी सेवा में अनन्य भाव से लगी रहती थी। वह सदाचारिणी, बाह्याभ्यंतर से शुद्ध, गृह-कार्य में निपुण और कुटुम्बीजनों की हितैषिणी थी ॥१४॥

भर्तुश्चापि हितं यत् तत् सततं सानुवर्तते ।
देवतातिथिभृत्यानां श्वश्रूश्वशुरयोस्तथा ॥१५
शुश्रूषणपरा नित्यं सततं संयतेन्द्रिया ।
सा ब्राह्मणं तदा दृष्ट्वा संस्थितं भैक्ष्यकाङ्क्षिणम् ।
कुर्वती पतिशुश्रूषां सस्माराथ शुभेक्षणा ॥१६
व्रीडिता साभवत् साध्वी तदा भरतसत्तम ।
भिक्षामादाय विप्राय निर्जगाम यशस्विनी ॥१७
किमिदं भवति त्वं मां तिष्ठेत्युक्त्वा वराङ्गने ।
उपरोधं कृतवती न विसर्जितवत्यसि ॥१८
ब्राह्मणं क्रोधसंतप्तं ज्वलन्तमिव तेजसा ।
दृष्ट्वा साध्वी मनुष्येन्द्र सान्त्वपूर्वमवचोऽब्रवीत् ॥१९
क्षन्तुमर्हसि मे विद्वन् भर्ता मे दैवतं महत् ।
स चापिक्षुधितः श्रान्तः शुश्रूषितो मया ॥२०
ब्राह्मणा न गरीयांसो गरीयांस्ते पतिः कृतः ।
गृहस्थधर्मे वर्तन्ती ब्राह्मणानवमन्यसे ॥२१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो कार्य पति का हित करने वाला होता, उसमें सदा लगी रहती थी। देव-पूजन, अतिथि-सत्कार, भृत्यों का भरण-पोषण और सास-श्वसुर की सेवा आदि में लगी रहती हुई वह सती अपने मन और इन्द्रियों को सदा वश में रखती थी ॥१५॥ पति की सेवा में लगी हुई उस शुभ दृष्टि वाली सती को भिक्षा के लिये द्वार पर खड़े हुए उस ब्राह्मण की याद आयी ॥१६॥ हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ युधिष्ठिर ! वह स्त्री अपनी उस भूल पर अत्यन्त लज्जित होती हुई ब्राह्मण को देने के लिये भिक्षा लेकर घर के द्वार पर आई ॥१७॥ उसे देखकर ब्राह्मण बोला—हे श्रेष्ठ मुख वाली ! तुम्हारा यह कैसा व्यवहार है ? यदि तुम्हें इतना विलम्ब करना था तो 'ठहरो' कह कर मुझे क्यों रोके रखा था ? ॥१८॥ मार्कण्डेयजी बोले—क्रोध से सन्तप्त हुआ ब्राह्मण अपने तेज से दग्ध होता हुआ सा लग रहा था। उसे इस प्रकार देखकर उस साध्वी नारी ने अत्यन्त शांति से कहा ॥१९॥ स्त्री बोली—हे विद्वन् ! क्षमा कीजिये। पति देवता मेरे लिये अत्यन्त महान् हैं। वे भूखे और थके हुए घर पर आये थे, इसलिये उनकी सेवा में लग गयी थी ॥२०॥ ब्राह्मण ने कहा—क्या ब्राह्मण महान् नहीं हैं ? तुमने तो पति को ही सब से महान् बना दिया। गृहस्थ धर्म में रहती हुई भी तुम ब्राह्मणों का अपमान करती हो ? ॥२१॥

इन्द्रोऽप्येषां प्रथमते किं पुनर्मानवो भुवि।
अवलिप्ते न जानीषे वृद्धानां न श्रुतं त्वया ॥२२

ब्राह्मणा ह्यग्निसदृशा दहेयुः पृथिवीमपि।
नाहं बलाका विप्रर्षे त्यज क्रोधं तपोधन ॥२३
अनया क्रुद्धया दृष्ट्या क्रुद्धः किं मां करिष्यसि।
नावजानाम्यहं विप्रान् देवैस्तुल्यान् मनस्विनः ॥२४

अपराधमिमं विप्र क्षन्तुमर्हसि मेऽनघ।
जानामि तेजो विप्राणां महाभाग्यं च धीमताम् ॥२५

अपेयः सागरः क्रोधात् कृतो हि लवणोदकः।
तथैव दोषतपसां मुनीनां भावितात्मनाम् ॥२६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

येषां क्रोधाग्निरद्यापि दण्डके नोपशाम्यति ।
ब्राह्मणानां परिभवाद् वातापिः सुदुरात्मवान् ॥२७
अगस्त्यमृषिमासाद्य जीर्णः क्रूरो महासुरः ।
बहुप्रभावाः श्रूयन्ते ब्राह्मणानां महात्मनाम् ॥२८
क्रोधः सुविपुलो ब्रह्मन् प्रसादश्च महात्मनाम् ।
अस्मिंस्त्वतिक्रमे ब्रह्मन् क्षन्तुमर्हसि मेऽनघ ॥२९

इन ब्राह्मणों के सामने इन्द्र को भी मस्तक झुकाना होता है, तो पृथिवी के मनुष्यों का कहना ही क्या ? अरी, अहंकारिणी स्त्री ! क्या तुम ब्राह्मणों के प्रभाव को नहीं जानतीं ? क्या कभी वृद्धजनों से भी नहीं सुना ? ब्राह्मण अग्नि के समान तेजस्वी होते हैं और पृथिवी तक को जला कर भस्म करने में समर्थ हैं ॥२२॥ स्त्री बोली—हे तपोधन ! क्रोध न करिये । ब्रह्मर्षे ! मैं तुम्हारी क्रोधमयी दृष्टि से जल मरने वाली बगुली नहीं हूँ । इस प्रकार क्रोध करके आप मेरा क्या करेंगे ? मैं ब्राह्मणों का अपमान कभी नहीं करती । क्योंकि मनस्वी ब्राह्मण तो देवताओं के तुल्य ही होते हैं ॥२३-२४॥ हे पाप-रहित विप्र ! मेरा यह अपराध क्षमा करो । मैं विद्वान् ब्राह्मणों के तेज को भले प्रकार जानती हूँ ॥२५॥ ब्राह्मणों के क्रोध से ही समुद्र का जल पीने के अयोग्य खारी हो गया । इसी प्रकार जो तप में महान् थे और जिनका अन्तःकरण शुद्ध हो चुका था, ऐसे मुनियों ने भी क्रोधाग्नि प्रज्वलित की थी, जो दण्डकारण्य में आज तक नहीं बुझ सकी है ॥२६॥ ब्राह्मणों का तिरस्कार करने के कारण ही क्रूरकर्मा असुर वातापि अगस्त ऋषि के उदर में जाकर पच गया ॥२७॥ महात्मा ब्राह्मणों का प्रभाव कहने वाले अनेकों चरित्र सुने जाते हैं । ब्राह्मणों का क्रोध और कृपा दोनों में ही महानता होती है । हे ब्रह्मन् ! मुझसे आपका जो अपराध हुआ है, उसे क्षमा कर दीजिये॥२८-२९॥

पतिशुश्रूषया धर्मो यः स मे रोचते द्विज ।
दैवतेष्वपि सर्वेषु भर्ता मे दैवतं परम् ॥३०
अविशेषेण तस्याहं कुर्यां धर्मं द्विजोत्तम ।
शुश्रूषायाः फलं पश्य पत्युर्ब्राह्मण यादृशम् ॥३१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वलाका हित्वया दग्धा रोषात् तद् विदितं मया ।
क्रोधः शत्रुः शरीरस्थो मनुष्याणां द्विजोत्तम ।।३२
यः क्रोधमोहौ त्यजति तं देवा ब्राह्मणं विदुः ।
यो ददेदिह सत्यानि गुरुं संतोषयेत च ।।३३
हिंसितश्च न हिंसेत तं देवा ब्राह्मणं विदुः ।
जितेन्द्रियो धर्मपरः स्वाध्यायनिरतः शुचिः ।।३४
कामक्रोधौ वशौ यस्य तं देवा ब्राह्मणं विदुः ।
यस्य चात्मसमो लोको धर्मज्ञस्य मनस्विनः ।।
सर्वधमषु च रतस्तं देवा ब्राह्मणं विदुः ।।३५

ब्रह्मन् ! पति की सेवा का जो धर्म है, मुझे वही रुचिकर है । सब देवताओं में भी पति देवता को ही मैं महान् समझती हूँ ।।३०।। हे द्विजोत्तम ! मैं तो सामान्य रूप से ही पति सेवा रूपी धर्म का पालन करती हूँ । इस पति-सेवा का जो फल है, उसे आप प्रत्यक्ष देख सकते हैं ।।३१।। आपने अपने क्रोध से एक बगुली को भस्म कर दिया था, यह मैं जान गयी । हे द्विजोत्तम ! मनुष्यों का एक महान् शत्रु उनके शरीर में ही रहता है, उसे 'क्रोध' कहते हैं ।।३२।। देवगण उसी को ब्राह्मण मानते हैं जिसने क्रोध और मोह का त्याग कर दिया । जो सदा सत्य बोले, गुरु को संतुष्ट रखे, पिट कर भी पीटने की इच्छा न करे, उसे ही देवताओं ने ब्राह्मण कहा है ।।३३।। जिसने इन्द्रियों को और काम, क्रोध को जीत लिया है, जो धर्म परायण और स्वाध्याय में तत्पर रहता है तथा जो सब प्रकार से पवित्र है, उसी को देवताओं ने ब्राह्मण माना है ।।३४।। जो धर्मज्ञ और मनस्वी पुरुष सम्पूर्ण संसार के प्रति आत्म-भाव रखता है तथा जो सभी धर्मों में समान श्रद्धा रखता है, उसे देवतागण ब्राह्मण मानते हैं ।।३५।।

योऽध्यापयेदधीयीत यजेद् वा याजयीत वा ।।३६
दद्याद् वापि यथाशक्ति त देवा ब्राह्मणं विदुः ।
ब्रह्मचारी वदान्यो योऽधीयीत द्विजपुङ्गवः ।।३७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वाध्यायवानमत्तो वै तं देवा ब्राह्मणं विदुः ।
यद् ब्राह्मणानां कुशलं तदेषां परिकीर्तयेत् ॥३८

सत्यं यथा व्याहरतां नानृते रमते मनः ।
धर्मं तु ब्राह्मणस्याहुः स्वाध्यायं दममार्जवम् ॥३९
इन्द्रियाणां निग्रहं च शाश्वतं द्विजसत्तम ।
सत्यार्जवे धर्ममाहुः परं धर्मविदो जनाः ॥४०

दुर्ज्ञेयः शाश्वतो धर्मः स च सत्ये प्रतिष्ठितः ।
श्रुतिप्रमाणो धर्मः स्यादिति वृद्धानुशासनम् ॥४१
बहुधा दृश्यते धर्मः सूक्ष्म एव द्विजोत्तम ।
भवानपि च धर्मज्ञः स्वाध्यायनिरतः शुचि ॥४२

जो वेदाध्ययन और वेदाध्यापन में लगा रहे, जो यज्ञानुष्ठान करे और करावे तथा शक्ति के अनुसार दान दे, उसी को देवगण ब्राह्मण मानते हैं ॥३६॥ जो विप्र श्रेष्ठ ! ब्रह्मचर्य-पालन पूर्वक उदार चित्त रहे और वेदों का अध्ययन करे तथा सदा सावधान रहता हुआ स्वाध्याय में लगा रहे, उसी को देवगण ब्राह्मण मानते हैं ॥३७॥ ब्राह्मण के लिये जो कर्म हित करने वाला हो, उसी कर्म को उसके सामने कहे । जो लोग सत्यवक्ता हैं उनका मन असत्य भाषण में कभी नहीं होता ॥३८॥ हे द्विजोत्तम ! स्वाध्याय, सरलता, मन और इन्द्रियों का निग्रह यह सब ब्राह्मण के लिये सनातन बताये गये हैं ॥३९॥ धर्म के जानने वाले पुरुषों ने सत्य और सरलता को सर्व श्रेष्ठ धर्म कहा है । सनातन धर्म का यथार्थ रूप तो जानना दुष्कर है, परन्तु, उसका सत्य में स्थित होना जाना जाता है । वृद्ध पुरुषों का कहना है कि जो धर्म वेदों से प्रमाणित होता हो, वही धर्म मानना चाहिये ॥४०-४१॥ धर्म का स्वरूप बहुधा सूक्ष्म ही दिखाई देता है । द्विजोत्तम ! आप भी धर्म के जानने वाले, स्वाध्याय-परायण और पवित्र हो ॥४२॥

न तु तत्त्वेन भगवन् धर्मं वेत्सीति मे मतिः ।
यदि विप्र न जानीषे धर्मं परमकं द्विज ॥४३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्मव्याधं ततः पृच्छ गत्वा तु मिथिलां पुरीम् ।
मातापितृभ्यां शुश्रूषुः सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥४४
मिथिलायां वसेद् व्याधः सते धर्मान् प्रवक्ष्यति ।
तत्र गच्छस्व भद्रं ते यथाकामं द्विजोत्तम ॥४५
अत्युक्तमपि मे सर्वं क्षन्तुमर्हस्यनिन्दित ।
स्त्रियोह्यवध्याः सर्वेषां ये च धर्मविदो जनाः ॥४६
प्रीतोऽस्मि तव भद्रं ते गतः क्रोधश्च शोभने ।
उपालम्भस्त्वयात्युक्तो मम निःश्रेयसं परम् ।
स्वस्तितेऽस्तु गमिष्यामि साधयिष्यामि शोभने ॥४७
(धन्यात्ममसि कल्याणि यस्यास्तेवृत्तमीदृशम् ।)
तया विसृष्टो निर्गम्य स्वमेव भवनं ययौ ।
विनिन्दन् स स्वमात्मानं कौशिकोद्विजसत्तमः ॥४८

फिर भी मैं समझती हूँ कि आपको धर्म का यथार्थ ज्ञान नहीं है। भगवन् ! यदि आप परम धर्म को नहीं जानते तो मिथिलापुरी में रहने वाले धर्मव्याध के पास जाकर पूछिये ॥४३॥ मिथिलापुरी में एक व्याध रहता है। वह माता-पिता की सेवा करने वाला, सत्यवादी और जितेन्द्रिय है, वह आपको धर्मोपदेश करेगा। हे द्विजोतम ! आप अपनी कामना के अनुसार वहीं जाइये, आपका कल्याण होगा ॥४४-४५॥ हे निन्दा-रहित विप्र ! यदि मेरे भाषण में कुछ अत्युक्ति हुई हो तो, मुझे क्षमा कीजिये। क्योंकि, धर्मज्ञ पुरुषों की दृष्टि में स्त्रियाँ दण्डनीय नहीं होतीं ॥४६॥ ब्राह्मण ने कहा—शुभे ! तुम्हारा कल्याण हो। मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। मेरा सम्पूर्ण क्रोध शांत हो गया। तुम्हारा उपालम्भ उचित और मेरे लिये कल्याणकारी है। हे कल्याणि ! अब मैं अपने कार्य-साधन के निमित्त जाऊँगा। तुम्हारा आचरण उच्च कोटि का है। तुम धन्य हो ॥४७॥ मार्कण्डेयजी बोले कि उस पतिव्रता स्त्री से विदा लेकर द्विजों में श्रेष्ठ कौशिक अपने को धिक्कारता हुआ अपने घर गया ॥४८॥

चिन्तयित्वा तदाश्चर्यं स्त्रिया प्रोक्तमशेषतः ।
विनिन्दन् स स्वमात्मानमागस्कृत इवाबभौ ॥४९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चिन्तयानः स्वधर्मस्य सूक्ष्मां गतिमथाब्रवीत् ।
श्रद्दधानेन वै भाव्यं गच्छमि मिथिलामहम् ॥५०
कृतात्माधर्मवित् तस्यां व्याधो निवहते किलः ।
तं गच्छाम्यहमद्यैव धर्मं प्रष्टुं तपोधनम् ॥५१
इति संचित्य मनसा श्रद्दधानः स्त्रिया वचः ।
वलाकाप्रत्ययेनासौ धर्म्यैश्च वचनैः शुभैः ॥५२
सम्प्रतस्थे स मिथिलां कौतूहलसनन्वितः ।
अतिक्रामन्नरण्यानि ग्रामांश्च नगराणि च ॥५३
ततो जगाम मिथिलां जनकेन सुरक्षिताम् ।
धर्मसेतुसमाकीर्णां यज्ञोत्सववतीं शुभाम् ॥५४
गोपुराट्टालकवतीं हर्म्यप्राकारशोभनाम् ।
प्रविश्य नगरीं रम्यां विमानैर्बहुभिर्युताम् ॥५५
पण्यश्च बहुभिर्युक्तां सुविभक्तमहापथाम् ।
अश्वै रथैस्तथा नागैर्योधैश्च बहुभिर्युताम् ॥५६
हृष्टपुष्टजनाकीर्णां नित्योत्सवसमाकुलाम् ।
सोऽपश्यद् बहुवृत्तान्तांब्राह्मणः समतिक्रमन् ॥५७

मार्कण्डेयजी कहने लगे—हे राजन् ! उस साध्वी के सम्पूर्ण कथन पर विचार करते हुए कौशिक को अत्यन्त आश्चर्य हो रहा था। वह स्वयं को धिक्कारता हुआ बड़ा लज्जित हो रहा था ॥४९॥ फिर अपने धर्म का सूक्ष्म रूप से पर्यालोचन करता हुआ वह मन में विचार करने लगा कि 'मैं श्रद्धा और विश्वास पूर्वक मिथिलापुरी अवश्य जाऊँगा' ॥५०॥ वहाँ एक पुण्यात्मा व्याध रहता बताया जाता है। मैं उस तपोधन व्याध के पास, धर्म का प्रश्न करने आज ही जाऊँगा ॥५१॥ मन ही मन ऐसा निश्चय करके कौशिक मिथिलापुरी की ओर चला। बगुली वाली घटना का उस साध्वी द्वारा स्वयं जान लेना और श्रेष्ठ धर्मानुकूल वचनों से उपदेश करना, यह सब उस पर अधिक श्रद्धा होने का कारण था ॥५२॥ वह बहुत-से वनों, ग्रामों, नगरों को पार करता हुआ, राजा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जनक के द्वारा सुरक्षित, धर्म से मर्यादित और यज्ञोत्सवों से सुशोभित मिथिलापुरी में पहुंच गया ॥५३-५४॥ अनेक गोपुर, अट्टालिकाएँ, भवन, प्राचीरें आदि उस नगरी को सुशोभित कर रही थीं। अनेक विमानों और दुकानों से युक्त वह पुरी रमणीक लग रही थी। श्रेष्ठ महापथ(सड़क) दिखाई दे रही थीं। असंख्य घोड़े, रथ, हाथी, सैनिक और हृष्ट पुष्ट मनुष्यों से वह पुरी भरी हुई थी। वहाँ प्रतिदिन विभिन्न प्रकार के उत्सव होते रहते थे. कौशिक ब्राह्मण उस पुरी में जाकर सब ओर घूम-घूम कर देखने लगा ॥५५-५७॥

धर्मव्याधमपृच्छच्च स चास्य कथितो द्विजैः।
अपश्यत् तत्र गत्वा तं सूनामध्ये व्यवस्थितम् ॥५८
मार्गमाहिषमांसानि विक्रीणन्तं तपस्विनम्।
आकुलत्वाच्च क्रेतृणामेकान्ते संस्थितो द्विजः ॥५९
स तु ज्ञात्वा द्विजं प्राप्तं सहसा सम्भ्रमोत्थितः।
आजगाम यतो विप्रः स्थित एकान्तदर्शने ॥६०
अभिवादये त्वां भगवन् स्वागतं ते द्विजोत्तम।
अहं व्याधो हि भद्रं ते किं करोमि प्रशाधि माम् ॥६१
एकपत्न्या यदुक्तोऽसि गच्छ त्वं मिथिलामिति।
जानाम्येतदहं सर्वं यदर्थं त्वमिहागतः ॥६२
श्रुत्वा च तस्य तद् वाक्यं स विप्रो भृशविस्मितः।
द्वितीयमिदमाश्चर्यमित्यचिन्तयत द्विजः ॥६३

वहाँ उसने धर्मव्याध का पता पूछा तो ब्राह्मणों ने उसे बता दिया। कौशिक ने उसके स्थान पर जाकर देखा कि वह अपने कसाईखाने में बैठा हुआ सूअर,भैंसा आदि का मांस बेच रहा है। वहाँ ग्राहकों की अधिक संख्या देख कर कौशिक एकान्त स्थान में जाकर खड़ा हो गया ॥५८-५९॥ ब्राह्मण को वहाँ आया हुआ जान कर व्याध शीघ्रता पूर्वक खड़ा होकर वहीं आ गया जहाँ कौशिक खड़ा था ॥६०॥ व्याध ने कहा—भगवन्! मैं आपको प्रणाम करता हूं। हे द्विजोत्तम! आपका स्वागत है। मैं ही वह व्याध हूँ, कहिये, क्या सेवा करूँ? आपका कल्याण हो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

॥६१॥ उस पतिव्रता ने आपको 'मिथिलापुरी जाइये' कह कर यहाँ भेजा है, यह सब मैं जानता हूँ। आप जिसलिये यहाँ पधारे हैं उसे भी मैं जानता हूँ ॥६२॥ व्याध की बात से ब्राह्मण को अत्यन्त विस्मय हुआ और उसने मन ही मन सोचा कि 'यह दूसरा आश्चर्य दिखाई दिया है' ॥६३॥

अदेशस्थं हि ते स्थानमिति व्याधोऽब्रवीदिदम् ।
गृहं गच्छाव भगवन् यदि ते रोचतेऽनघ ॥६४
बाढमित्येव तं विप्रो हृष्टो वचनमब्रवीत् ।
अग्रतस्तु द्विजं कृत्वा स जगाम गृहं प्रति ॥६५
प्रविश्य च गृहं रम्यमासनेनाभिपूजितः ।
अर्घ्येण च स वै तेन व्याधेन द्विजसत्तमः ॥६६
ततः सुखोपविष्टस्तं व्याधं वचनमब्रवीत् ।
कर्मैतद् वै न तादृशं भवतः प्रतिभाति मे ।
अनुतप्ये भृशं तात तव घोरेण कर्मणा ॥६७
कुलोचितमिदं कर्म पितृपैतामहं परम् ।
वर्तमानस्य मे धर्मे स्वे मन्युं मा कृथा द्विज ॥६८
विधात्रा विहितं पूर्वं कर्म स्वमनुपालयन् ।
प्रयत्नाच्च गुरू वृद्धौ शुश्रूषेऽहं द्विजोत्तम ॥६९
सत्यं वदे नाभ्यसूये यथाशक्ति ददामि च ।
देवतातिथिभृत्यानामवशिष्टेन वर्तये ॥७०

फिर व्याध ने कहा—भगवन् ! यह स्थान आपके योग्य नहीं है। हे निष्पाप ! यदि आप चाहें तो मेरे घर पर चलें ॥६४॥ मार्कण्डेयजी बोले कि—यह सुन कर कौशिक ब्राह्मण को बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने कहा—'ऐसाही करो' तब ब्राह्मण को आगे करके व्याध घर की ओर चल दिया ॥६५॥ उसका घर अत्यन्त रम्य था। वहाँ पहुंच कर व्याध ने ब्राह्मण को श्रेष्ठ आसन और अर्घ्य आदि देकर आदर सहित ब्राह्मण का पूजन किया ॥६६॥ ब्राह्मण ने आसन पर सुख पूर्वक बैठ कर व्याध से कहा कि—हे तात ! मांस बेचने का यह कार्य तुम्हारे योग्य कदापि नहीं है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मुझे तुम्हारे इस चोर कर्म को देख कर बड़ा संताप हो रहा है ॥६७॥ व्याध ने कहा--हे विप्रवर ! वह कार्य मेरे पिता और पितामह भी करते रहे हैं। जो कर्म मेरे कुल में चला आ रहा है, उसी को कर रहा हूँ। इसलिये आप मुझ पर क्षुब्ध न हों ॥६८॥ हे द्विजोत्तम ! विधाता ने मेरा जन्म ऐसे कुल में दिया है। उस कुल परम्परा वाले धर्म का पालन करता हुआ मैं अपने वृद्ध माता-पिता की प्रयत्न पूर्वक सेवा करता हूँ ॥६९॥ मैं सदा सत्य बोलता हूँ, किसी की निन्दा नहीं करता और शक्ति के अनुसार दान करता हूँ। देवगण, अतिथिगण, कुटुम्बीजन तथा सेवकों को भोजन देने के बाद जो शेष रहता है, उसी से अपना निर्वाह करता हूँ ॥७०॥

न कुत्सयाम्यहं किंचिन्न गर्हे बलवत्तरम् ।
कृतमन्वेति कर्तारं पुरा कर्म द्विजोत्तम ॥७१
कृषिगोरक्ष्यवाणिज्यमिह लोकस्य जीवनम् ।
दण्डनीतिस्त्रयी विद्या तेन लोको भवत्युत ॥७२
कर्म शूद्रे कृषिर्वैश्ये संग्रामः क्षत्रिये स्मृतः ।
ब्रह्मचर्यं तपो मन्त्राः सत्यं च ब्राह्मणे सदा ॥७३
राजा प्रशास्ति धर्मेण स्वकर्मनिरताः प्रजाः ।
विकर्माणश्च ये केचित् तान् युनक्ति स्वकर्मसु ॥७४
भेतव्यं हि सदा राज्ञः प्रजानामधिपा हि ते ।
वारयन्ति विकर्मस्थं नृपा मृगमिवेषुभिः ॥७५
जनकस्येह विप्रर्षे विकर्मस्थो न विद्यते ।
स्वकर्मनिरता वर्णाश्चत्वारोऽपि द्विजोत्तम ॥७६
स एष जनको राजा दुर्वृत्तमपि चेत् सुतम् ।
दण्ड्यं दण्डे निक्षिपति तथा न ग्लाति धार्मिकम् ॥७७

हे द्विजोत्तम ! मैं कभी किसी के दोषों की चर्चा नहीं करता तथा अपने से बलिष्ठ की निन्दा नहीं करता। क्योंकि, कर्त्ता को अपने ही किये कर्मों का शुभ अशुभ फल भोगना पड़ता है ॥७१॥ कृषि, गोरक्षा, वाणिज्य, दण्डनीति और तीन वेदों के अनुसार कर्मों का अनुष्ठान, यह लोक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के लिये जीविका के साधन हैं। इन्हीं के द्वारा लोक-परलोक सुधरते हैं ॥७२॥ शूद्र का कर्म सेवा, वैश्य का कर्म कृषि और क्षत्रिय का कर्म युद्ध करना मानते हैं। और ब्रह्मचर्य, तप, मन्त्र-जप, अध्ययन और सत्य बोलना ब्राह्मण के धर्म कहे गये हैं ॥७३॥ अपने-अपने वर्णाश्रम धर्म के अनुकूल रहने वाली प्रजा का शासन राजा करता है। वही अपने कर्म से गिर कर विरुद्ध पथ पर चलने वालों को पुनः कर्त्तव्य में प्रेरित करता है ॥७४॥ राजा प्रजा के स्वामी हैं,इसलिये उनसे सदा डरते रहना चाहिये। धर्म के विरुद्ध कार्य करने वालों को राजा अपने दण्ड के द्वारा उसी प्रकार रोकते हैं, जिस प्रकार हिंसक पशुओं को हिंसा करने से वे अपने बाणों द्वारा रोकने में समर्थ हैं ॥७५॥ हे विप्रश्रेष्ठ ! राजा जनक के इस नगर में वर्ण-धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला कोई भी नहीं हैं। यहाँ सभी वर्णों के मनुष्य अपने अपने धर्म में लगे हुए हैं ॥७६॥ यदि अपना पुत्र भी दुराचारी हो तो उसे दण्डनीय मानते हुए राजा जनक दण्ड देते हैं और कभी किसी धर्मात्मा को कभी कष्ट नहीं होने देते ॥७७॥

सुयुक्तचारो नृपतिः सर्वं धर्मेण पश्यति ।
श्रीश्च राज्यं च दण्डश्च क्षत्रियाणां द्विजोत्तम ॥७८
राजानो हि स्वधर्मेण श्रियमिच्छन्ति भूयसीम् ।
सर्वेषामेव वर्णानां त्राता राजा भवत्युत ॥७९
परेण हि हतान् ब्रह्मन् वराहमहिषानहम् ।
न स्वयं हन्मि विप्रर्षे विक्रीणामि सदा त्वहम् ॥८०
न भक्षयामि मांसानि ऋतुगामी तथा ह्यहम् ।
सदोपवासी च तथा नक्तभोजी सदा द्विज ॥८१
अशीलश्चापि पुरुषो भूत्वा भवति शीलवान् ।
प्राणिहिंसारतश्चापि भवते धार्मिकः पुनः ॥८२
व्यभिचारान्नरेन्द्राणां धर्मः संकीर्यते महान् ।
अधर्मो वर्धते चापि संकीर्यन्ते ततः प्रजाः ॥८३
भेरुण्डा वामनाः कुब्जाः स्थूलशीर्षास्तथैव च ।
क्लीवाश्चान्धाश्च बधिरा जायन्तेऽत्युच्चलोचनाः ॥८४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हे द्विज श्रेष्ठ ! राजा जनक के गुप्तचर सभी ओर लगे हैं,उनके द्वारा वे सभी पर धर्म-दृष्टि रखते हैं। सम्पत्ति का उपार्जन, राज्य की रक्षा और अपराधियों को दण्ड—यह क्षत्रियों के कर्त्तव्य हैं ॥७८॥ राजागण अपने धर्म का पालन करते हुए ही सम्पत्ति प्राप्त करने की कामना करते हैं। सभी वर्णों की रक्षा करने वाला राजा ही होता है ॥७९॥ हे ब्रह्मन् ! मैं स्वयं किसी जीव का वध नहीं करता। दूसरों के द्वारा वध किये हुए शूकर और भैंसों का मांस बेचा करता हूं ॥८०॥ मैं स्वयं मांस-भक्षण नहीं करता। ऋतुकाल होने पर ही पत्नी-समागम करता हूं। दिन में भूखा रह कर, केवल रात्रि में ही भोजन करता हूँ ॥८१॥ अशील व्यक्ति भी कभी शीलवान् हो जाता है और जीवों की हिंसा में लगा हुआ पुरुष भी कभी धर्मवान् हो जाता है ॥८२॥ राजाओं में व्यभिचार-दोष हो तो धर्म में सङ्कीर्णता आ जाती है और अधर्म बढ़ने से प्रजा में वर्ण-सङ्करता आ जाती है ॥८३॥वैसा होने पर भयङ्कर आकृति वाले, बौने, कुबड़े, स्थूल मस्तक वाले, क्लीव, नेत्रहीन, वधिर तथा अत्यन्त ऊँचे नेत्र वाले मनुष्यों की उत्पत्ति होती है ॥८४॥

पार्थिवानामधर्मत्वात् प्रजानामभवः सदा ।
स एष राजा जनकः प्रजा धर्मेण पश्यति ॥८५
अनुगृह्णन् प्रजाः सर्वा स्वधर्मनिरताः सदा ।
(पात्येव राजा जनकः पितृवज्जनसत्तम ।)
ये चैव मां प्रशंसन्ति ये च निन्दन्ति मानवाः ।
सर्वान् सुपरिणीतेन कर्मणा तोषयाम्यहम् ॥८६
ये जीवन्ति स्वधर्मेण संयुञ्जन्ति च पार्थिवाः ।
न किंचिदुपजीवन्ति दान्ता उत्थानशीलिनः ॥८७
शक्त्यान्नदानं सततं तितिक्षा धर्मनित्यता ।
यथार्हं प्रति पूजा च सर्वभूतेषु वै सदा ॥८८
त्यागान्नान्यत्र मर्त्यानां गुणास्तिष्ठन्ति पूरुषे ।
मृषा वादं परिहरेत् कुर्यात् प्रियमयाचितः ॥८९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न च कामान्न संरम्भान्न द्वेषाद् धर्ममुत्सृजेत् ।
प्रिये नातिभृशं हृष्येदप्रिये न च संज्वरेत् ॥९०
न मुह्येदर्थकृच्छ्रेषु न च धर्मं परित्यजेत् ॥९१

राजाओं के अधर्म-रत होने पर प्रजा की अवनति होती है। हमारे यह राजा जनक सम्पूर्ण प्रजा का धर्म युक्त दृष्टि से अवलोकन करते हैं ॥८५॥ राजा जनक अपने धर्म में सदा तत्पर रहने वाली प्रजा पर अनुग्रह रखते हुए पिता के समान पालन करते हैं। मैं भी अपने प्रशंसकों और निन्दा करने वालों को सदा अपने सद्व्यवहार से संतुष्ट रखता हूँ ॥८६॥ जो राजा अपने धर्म के अनुकूल आचरण करते हुए जीवन विर्वाह करते हैं, किसी अन्य की वस्तु को अपने उपयोग में नही लाते तथा अपनी इंद्रियों को वश में रखते हैं, उन्हीं का उत्थान होता है ॥८७॥ अपने सामर्थ्यानुसार अन्न-दान करना, दूसरों के अपराध और ठंडे-गर्म द्वन्द्वों को सहन करना, धर्म में दृढ़ रहना, पूजनीय पुरुषों का पूजन करना, यह सभी सद्गुण स्वार्थ को त्यागे बिना नहीं रह सकते ॥८८-८९॥ मिथ्या भाषण का त्याग करे, बिना कहे ही दूसरों का प्रिय करे तथा काम, क्रोध और द्वेष के वशीभूत होकर अपने धर्म को कभी भी न छोड़े ॥९०॥ प्रिय वस्तु मिल जाने पर हर्ष में न फूले, मन के विरुद्ध बात होने पर दुःखी न हो, अर्थ-संकट आने पर भी न घबरावे और किसी भी अवस्था में अपने धर्म का त्याग न करे ॥९१॥

कर्म चेत्किंचिदन्यत् स्यादितरन्न तदाचरेत् ।
यत् कल्याणमभिध्यायेत् तत्रात्मानं नियोजयेत् ॥९२
न पापे प्रतिपापः स्यात् साधुरेव सदा भवेत् ।
आत्मनैव हतः पापो यः पापं कर्तुमिच्छति ॥९३
कर्म चैतदसाधूनां वृजिनानामसाधुवत् ।
न धर्मोऽस्तीति मन्वानाः शुचीनवहसन्ति ये ॥९४
अश्रद्दधाना धर्मस्य ते नश्यन्ति न संशयः ।
महाद्रतिरिवाम्भातः पापो भवति नित्यदा ॥९५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

(साधुः सन्नतिमानेव सर्वत्र द्विजसत्तम ।)
मूढानामवलिप्तानामसारं भावितं भवेत् ।
दर्शयत्यन्तरात्मा तं दिवा रूपमियांशुमान् ।।९६

न लोके राजते मूर्खः केवलात्मप्रशंसया ।
अपि चेह श्रिया हीनः कृतविद्यः प्रकाशते ।।९७

अब्रुवन् कस्यचिन्निन्दामात्मपूजामवर्णयन् ।
न कश्चिद् गुणसम्मन्नः प्रकाशो भुवि दृश्यते ।।९८

यदि भूल से कोई बुरा काम हो जाय, तो वह दुबारा न हो इसमें सावधान रहे । अपने मन, बुद्धि के द्वारा जिस कर्म में कल्याण दिखाई दे, उसी कर्म में लग जाय ।।९२।। यदि अपने साथ कोई बुराई करे तो स्वयं भी उसके साथ बदले में बुराई न करे । सब के साथ सदा सद्व्यवहार करे, क्योंकि दूसरों का अहित चाहने वाला पापी स्वयं ही नष्ट हो जाता है ।।९३।। ऐसा कार्य तो दुराचारी के समान दुर्व्यसनों में आसक्त हुए पापियों का ही हो सकता है । धर्म को कुछ भी न मान कर जो व्यक्ति श्रेष्ठ आचारवान् पुरुषों की हँसी उड़ाते हैं, वे अधार्मिक पुरुष निःसन्देह नाश को प्राप्त होते हैं । क्योंकि पापीजन लोहार की धौंकनी के समान फूले हुए मालुम पड़ते हैं ।।९४-९५।। द्विज श्रेष्ठ ! साधु पुरुष सदा विनय शील रहता है । अहंकारी मूर्खों की सोची हुई सभी बातें व्यर्थ होती हैं । जैसे सूर्य दिन के स्वरूप को प्रकट करता है, वैसे ही मूर्खों के आन्तरिक भाव उनके यथार्थ रूप को दिखा देते हैं ।।९६।। मूर्ख पुरुष की प्रतिष्ठा केवल आत्म-प्रशंसा के बल से ही नहीं होती और विद्वान् पुरुष कान्ति-हीन हो तो भी उसकी अत्यन्त ख्याति हो जाती है ।।९७।। पर-निन्दा न करे और अपनी ही मान-प्रतिष्ठा की प्रशंसा न करे । क्योंकि, परनिन्दा और आत्म-प्रशंसा का त्याग किये बिना कोई भी गुणवान् पुरुष इस पृथ्वी पर सम्मान पाता हुआ दिखाई नहीं देता ।।९८।।

विकर्मणा तप्यमानः पापाद् विपरिमुच्यते ।
न तत् कुर्यां पुनरिति द्वितीयात् परिमुच्यते ।।९९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर्मणा येन तेनेह पापाद् द्विजवरोत्तम ।
एवं श्रुतिरियं ब्रह्मन् धर्मेषु प्रतिदृश्यते ।।१००
पापान्यबुद्धवेह पुरा कृतानि
प्राग् धर्मशीलोऽपि विहन्ति पश्चात् ।
धर्मो राजन् नुदते पूरुषाणां
यत् कुर्वते पापमिह प्रमादात् ।।१०१
पापं कृत्वा हि मन्येत नाहमस्मीति पूरुषः ।
तं तु देवाः प्रपश्यन्ति स्वस्यैवान्तरपूरुषः ।।१०२
चिकीर्षेदेव कल्याणं श्रद्दधानोऽनसूयकः ।
वसनस्येव छिद्राणि साधूनां विवृणोति यः ।।१०३
(अपश्यन्नात्मनो दोषान् स पापः प्रेत्य नश्यति ।।)
पापं चेत् पुरुषः कृत्वा कल्याणमभिपद्यते ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो महाभ्रेणेव चन्द्रमाः ।।१०४
यथाऽऽदित्यः समुद्यन् वै तमः पूर्वव्यपोहति ।
एवं कल्याणमातिष्ठन् सर्वपापैः प्रमुच्यते ।।१०५

पाप-कर्म हो जाने पर जो सच्चे हृदय से पश्चात्ताप करता है, वह पाप से मुक्त हो जाता है और 'फिर कभी ऐसा न करूँगा' इस निश्चिय से वह भविष्य में होने वाले पाप में भी नहीं पड़ता ।।९९।। द्विजवरों में श्रेष्ठ ! शास्त्र विहित किसी भी कर्म को निष्काम भाव से करे तो पाप से मुक्त हो सकता है । ब्रह्मन् ! धर्म-विषयक श्रुति ऐसी ही देखी जाती है ।।१००।। यदि किसी धर्मज्ञ पुरुष से अनजाने में कोई पाप हो जाता हैं तो वह अपने पाप को नष्ट कर सकता है । वे प्रमादवश किये गये पाप मनुष्यों के सामान्य धर्माचरण से ही दूर हो जाते हैं ।।१०१।। पाप-कर्म करते हुए भी जो कोई अपने को पापी न माने, यह उसका भ्रम ही है । क्योंकि, देवतागण उसे और उसके पाप को देखते हैं तथा हृदय में निवास करने वाला ईश्वर भी देखता है ।।१०२।। श्रद्धालु पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह दूसरे के दोष-दर्शन का त्याग करे । जो पापी अपने दोषों की ओर से नेत्र बन्द कर लेता और वस्त्र-छिद्रों के समान सदा दूसरों के दोष

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रकट करता और उसे बढ़ाता है, वह मरने पर नष्ट हो जाता अर्थात् परलोक में उसे कोई सुख नहीं मिलता ॥१०३॥ पाप करने वाला पापी भी यदि कल्याणकारी कार्यों में लग जाता है तो वह घोर बादलों से मुक्त हुए चन्द्रमा के समान, पापों से छूट जाता है ॥१०४॥ जैसे सूर्य उदय होते ही प्रथम अंधकार दूर करते हैं, वैसे ही कल्याणकारी शुभ कर्म का निष्काम भाव से अनुष्ठाता सभी पापों से मुक्त होता है ॥१०५॥

पापानां विद्धचधिष्ठानं लोभमेव द्विजोत्तम ।
लुब्धाः पापं व्यवस्यन्ति नरा नातिबहुश्रुताः ॥१०६
अधर्मा धर्मरूपेण तृणैः कूपा इवावृताः ।
तेषां दमः पवित्राणि प्रलापा धर्मसंश्रिताः ।
सर्वं हि विद्यते तेषु शिष्टाचारः सुदुर्लभः ॥१०७

स तु विप्रो महाप्राज्ञो धर्मव्याधमपृच्छत ।
शिष्टाचारं कथमहं विद्यामिति नरोत्तम ॥१०८
एतदिच्छामि भद्रं ते श्रोतुं धर्मभृतां वर ।
त्वत्तो महामते व्याध तद् ब्रवीहि यथातथम् ॥१०९

यज्ञो दानं तपो वेदाः सत्यं च द्विजसत्तम ।
पञ्चैतानि पवित्राणि शिष्टचारेषु सर्वदा ॥११०
कामक्रोधौ वशे कृत्वा दम्भं लोभमनार्जवम् ।
धर्ममित्येव संतुष्टास्ते शिष्टाः शिष्टसम्मताः ॥१११
न तेषां विद्यतेऽवृत्तं यज्ञस्वाध्यायशीलिनाम् ।
आचारपालनं चैव द्वितीयं शिष्टलक्षणम् ॥११२

विप्र श्रेष्ठ ! लोभ ही पापों का घर है । जिन्होंने प्रायः शास्त्रों को नहीं सुना, उनका लोभ दूर नहीं होता और लोभी ही पाप-कर्म की प्रवृत्ति रखते हैं ॥१०६॥ जैसे तृण आदि से ढका होने पर कुआ दिखाई नहीं देता, वैसे ही धर्म के आवरण में अनेकों अधर्म चल रहे हैं । धर्मात्मा के वेश वाले इन अधार्मिक मनुष्यों में संयम, पवित्रता और धार्मिक चर्चा आदि गुण प्रतीत होने पर भी उनमें शिष्टाचार का होना अत्यन्त दुर्लभ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है ॥१०७॥ मार्कण्डेयजी कहने लगे--हे राजन् ! फिर परम बुद्धिमान कौशिक ने धर्मव्याध से प्रश्न किया कि 'मैं शिष्टाचार का ज्ञान कैसे प्राप्त करूँ ॥१०८॥ हे धर्मात्माओं में उत्तम महामते व्याध ! तुम्हारा कल्याण हो । मैं तुम्हारे द्वारा उसे सुनना चाहता हूँ । इसलिये तुम इनका विस्तार सहित वर्णन करो ॥१०९॥ व्याध ने उत्तर दिया—द्विजोत्तम ! यज्ञ, दान तपस्या, वेदाभ्ययन और सत्यभाषण यह पाँच बातें शिष्ट पुरुषों के आचरण में सदा प्रयुक्त होती रही हैं ॥११०॥ काम, क्रोध, लोभ, दम्भ और कुटिलता को वश में कर लेने वाले जो पुरुष धर्माचरण में संतुष्ट रहते हैं, वे शिष्ट कहे जाते हैं और शिष्ट पुरुष उनका सदा आदर करते हैं॥१११॥ उनमें स्वेच्छाचरिता नहीं होती । वे सदा यज्ञ और स्वाध्याय में रत रहते हैं । शिष्ट पुरुषों का दूसरा लक्षण सदाचार का पालन करना है ॥११२॥

गुरुशुश्रूषणं सत्यमक्रोधो दानमेव च ।
एतच्चतुष्टयं ब्रह्मन् शिष्टाचारेषु नित्यदा ॥११३
शिष्टाचारे मनः कृत्वा प्रतिष्ठाप्य च सर्वशः ।
यामयलभते वृत्तिं शक्या ह्यतोऽन्यथा॥११४
वेदस्योपनिषत् सत्यं सत्यस्योपनिषद् दमः ।
दमस्योपनिषत् त्यागः शिष्टाचारेषु नित्यदा ॥११५
ये तु धर्मानसूयन्ते बुद्धिमोहान्विता नराः ।
अपथा गच्छतां तेषामनुयाता च पीड्यते ॥११६
ये तु शिष्टाः सुनियताः श्रुतित्यागपरायणाः ।
पन्थानमारूढाः सत्यधर्मपरायणाः ॥११७
नियच्छन्तिपरां बुद्धिं शिष्टाचारान्विता जनाः ।
उपाध्यायमते युक्ताः स्थित्या धर्मार्थदर्शिनः ॥११८
नास्तिकान् भिन्नमर्यादान् क्रूरान् पापमतौ स्थितान् ।
त्यजतान् ज्ञानमाश्रित्य धार्मिकानुपसेव्य च ॥११९

हे ब्रह्मन् ! गुरु-सेवा, सत्य-भाषण, क्रोध का अभाव और दान यह चारों गुण शिष्टाचारी व्यक्तियों में सदा रहते हैं ॥११३॥ शिष्टों के उपरोक्त आचार में भले प्रकार मन को लगाने से जिस श्रेष्ठ प्रतिष्ठा की प्राप्ति

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

होती है, वह प्रतिष्ठा किसी अन्य प्रकार से प्राप्त नहीं हो सकती ।।११४।। वेद का सार सत्य है, सत्य का सार इंद्रिय-संयम है और इन्द्रिय संयम का सार त्याग है । इस त्याग की विद्यमानता शिष्टाचार में निन्तर रहती हैं ।।११५।। बुद्धि के भ्रमित होने से जो व्यक्ति धर्म में दोष देखते हैं, वे स्वयं तो श्रेष्ठ मार्ग पर चलते ही नहीं, बल्कि जो व्यक्ति उनका अनुगमन करते हैं, वे भी दुःख उठाते हैं ।।११६।। शिष्ट पुरुष निरन्तर नियमित जीवन व्यतीत करते हैं । वे वेदों के स्वाध्याय में लगे रहते और त्यागमय वृत्ति रखते हैं । धर्म मार्ग पर चलते हुए सत्य धर्म को ही अपना आश्रय समझते हैं ।।११७।। शिष्टाचार पर चलने वाले पुरुष अपनी श्रेष्ठ बुद्धिको भी संयम में रखते हैं तथा गुरु के उपदेश पर चलते और मर्यादा में रह कर धर्म और उसके विषय को देखते हैं।।११८।।इसलिये नास्तिक, धार्मिक मर्यादा का उल्लंघन करने वाले, क्रूर कर्मा, पापमय विचार वाले पुरुषों का साथ छोड़ कर ज्ञान का आश्रय लेना और धर्मात्माओं की सेवा में रत रहना चाहिये ।।११९।।

कामलोभग्रहाकीर्णा पञ्चेन्द्रियजलां नदीम् ।
नावं धृतिमयीं कृत्वा जन्मदुर्गाणि संतर ।।१२०
क्रमेण संचितो धर्मो बुद्धियागमयो महान् ।
शिष्टाचारे भवेत् साधू रागः शुक्लेव वाससि ।।१२१

अहिंसा सत्यवचनं सर्वभूतहितं परम्।
अहिंसा परमो धर्मः स च सत्ये प्रतिष्ठितः ।
सत्ये कृत्वा प्रतिष्ठां तु प्रवर्तन्ते प्रवृत्तयः ।।१२२

सत्यमेव गरीयस्तु शिष्टाचारनिषेवितम् ।
आचारश्च सतां धर्मः सन्तश्चाचारलक्षणाः ।।१२३
यो यथाप्रकृतिर्जन्तुः स स्वां प्रकृतिमश्नुते ।
पापात्मा क्रोधकामादीन् दोषानाप्नोत्यनात्मवान् ।।१२४

आरम्भो न्याययुक्तोयः स हि धर्म इति स्मृतः ।
अनाचारस्त्वधर्मति एतच्छिष्टानुशासनम् ।।१२५।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अक्रुद्धचन्तोऽनसूयन्तो निरहंकारमत्सराः ।
ऋजवः शमसम्पन्नाः शिष्टाचारा भवन्ति ते ।।१२६

शरीर एक नदी है, इसमें पाँच इन्द्रियाँ जल रूप हैं, इसके भीतर काम और लोभ रूपी मगर निवास करते हैं। यह नदी जन्म-मरण के दुर्गम प्रदेश में प्रवाहित है, इसके दुर्गम स्थान जन्म मरण आदि क्लेशों को धैर्य की नाव पर बैठ कर पार कर सकते हो ।।१२०।। सफेद वस्त्र पर कोई-सा भी रंग भले प्रकार खिल सकता है, वैसे ही शिष्टाचार को पालने वाले पुरुष में बुद्धि के संयोग से महान् धर्म भले प्रकार प्रकाशित होता है ।।१२१।। अहिंसा और सत्य भाषण सभी प्राणियों का हित करने वाले हैं। सब से महान् धर्म अहिंसा सत्य में ही प्रतिष्ठित है और सत्य के आश्रय में ही श्रेष्ठ पुरुषों के कार्य चलते हैं ।।१२२।। इस लिये, शिष्ट पुरुषों के आचार में ग्रहण किया हुआ सत्य सर्वाधिक गौरव का कारण है। सत्य का आचरण ही श्रेष्ठ पुरुष का धर्म है और वही संतजनों का लक्षण है ।।१२३।। प्रत्येक जीव अपनी प्रकृति के अनुसार व्यवहार करता है। जो पापात्मा पुरुष अपने मन को वश में नहीं रख सकता, वह काम क्रोध आदि दोषों को प्राप्त होता है।।१२४।। न्याययुक्त आरम्भ ही धर्म कहा गया है। इसके विपरीत अनाचार को अधर्म समझना चाहिये। शिष्ट पुरुष ऐसा ही कहते हैं ।।१२५।। जिनमें क्रोध नहीं है, जो दूसरों के दोषों को नहीं देखते, जो ईर्ष्या-रहित और निरहंकारी हैं तथा सरल हृदय वाले और मन को संयम में रखने वाले हैं, वे शिष्टाचार युक्त कहे जाते हैं ।।१२६।।

त्रैविद्यवृद्धाः शुचयो वृत्तवन्तो मनस्विनः ।
गुरुशुश्रूषवो दान्ताः शिष्टाचारा भवन्त्युत ।।१२७
तेषामहीनसत्त्वानां दुष्कराचारकर्मणाम् ।
स्वैः कर्मभिः सत्कृतानां घोरत्वं सम्प्रणश्यति ।।१२८
तं सदाचारमाश्रित्य पुराणं शाश्वतं ध्रुवम् ।
धर्मं धर्मेण पश्यन्तः स्वर्गं यान्ति मनीषिणः १२९
आस्तिका मानहीनाश्च द्विजातिजनपूजकाः ।
श्रुतवृत्तोपसम्पन्नाः सन्तः स्वर्गनिवासिनः ।।१३०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेदोक्तः परमो धर्मो धर्मशास्त्रेषु चापरः ।
शिष्टाचारश्च शिष्टानां त्रिविधं धर्मलक्षणम् ।
धारणं चापि विद्यानां तीर्थानावगाहनम् ॥१३१

क्षमा सत्यार्जवं शौचं सतामाचार दर्शनम् ।
सर्वभूतदयावन्तो अहिंसानिरताः सदा ॥१३२

परुषं च न भाषन्ते सदा सन्तो द्विजप्रियाः ॥१३३

शिष्टाचारी वही है जो तीनों वेदों के ज्ञाता विद्वानों में अत्यन्त श्रेष्ठ, पवित्र, सदाचारी, मनस्वी, गुरु सेवक और इन्द्रियों पर नियंत्रण रखने वाले हैं ॥१२७॥ जो पुरुष सतोगुणी हैं, जिनके आचरण ऐसे हैं, जिन पर पापी लोग नहीं चल सकते, तथा जो अपने सत्कर्मों के द्वारा सत्कृत कहे जाते हैं, उनके हिंसा आदि दोषों का नाश स्वयं हो जाता है ॥१२८॥ श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा जिसका पालन किया जो अनादि, सनातन और नित्य है, उस धर्म को ही धर्म रूप में देखने वाले मनीषी स्वर्ग लोक में गमन करते हैं ॥१२९॥ आस्तिक, अहंकार-रहित, ब्राह्मणों का आदर करने वाले, सदाचारी एवं विद्वान पुरुष ही स्वर्ग लोक में निवास करने के अधिकारी होते हैं ॥१३०॥ वेदों में जिसका वर्णन हुआ है, वह धर्म का प्रथम लक्षण है । धर्मशास्त्रों में जिसे कहा गया है, वह धर्म का दूसरा लक्षण है । तथा शिष्टाचार को धर्म का तीसरा लक्षण कहा गया है । इस प्रकार धर्म के यह तीन लक्षण ही शिष्ट पुरुषों द्वारा स्वीकार किये गए हैं ॥१३१॥ सभी विद्याओं का अध्ययन, सभी तीर्थों में स्नान, क्षमा, सत्य, सरलता और पवित्रता यह शिष्ट पुरुषों के आचार को दिखाने वाले हैं ॥१३२॥ सभी प्राणियों पर दया करने वाले, अहिंसा-धर्म का पालन करने में तत्पर रहने वाले और कभी किसी से कठोर वचन न बोलने वाले सन्त सभी द्विजों के प्रिय होते हैं ॥१३३॥

शुभानामशुभानां च कर्मणां फलसंचये ॥१३४
विपाकमभिजानन्ति ते शिष्टाः शिष्टसम्मता ।
न्यायोपेता गुणोपेताः सर्वलोकहितैषिणः ॥१३५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सन्तः स्वर्गजितः शुक्लाः संनिविष्टाश्च सत्पथे ।
दातारः संविभक्तारो दीनानुग्रहकारिणः ॥१३६
सर्वपूज्याः श्रुतधनास्तथैव च तपस्विनः ।
सर्वभूतदयावन्तस्ते शिष्टाः शिष्टसम्मताः ॥१३७
दानशिष्टाः सुखाँल्लोकानाप्नुवन्तीह च श्रियम् ।
पीडया च कलत्रस्य भृत्यानां च समाहिताः ॥१३८
अतिशक्त्या प्रयच्छन्ति सन्तः सद्भिः समागताः ।
लोकयात्रां च पश्यन्तो धर्ममात्महितानि च ॥१३९

शुभाशुभ कर्मों के फल-संचय से सम्बन्धित परिणाम को जो जानते हैं, वे शिष्ट कहे गये हैं। वे शिष्ट पुरुषों के आदर के पात्र भी होते हैं ॥१३४॥न्याय-परायण, सद्गुण सम्पन्न, सभी का हित चाहने वाले, हिंसा-रहित और श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाले पुरुष स्वर्ग को जीत लेने में समर्थ होते हैं ॥१३५॥ सबको दान देने वाले, अपने कुटुम्बियों में सभी वस्तुओं को समान रूप से बाँट कर उपयोग करने वाले, दीनों पर कृपा रखने वाले शास्त्र-ज्ञान को धन समझ कर उसका संचय करने वाले सब के लिये समान आदरणीय, तपस्वी और सभी प्राणियों के प्रति दयालु पुरुष शिष्ट पुरुषों के द्वारा शिष्ट कहे जाते हैं ॥१३६-१३७॥ दान से बची हुई वस्तु का उपयोग करने वाले पुरुष इस लोक में सम्पत्ति और परलोक में सुखमय लोक में जाते हैं। श्रेष्ठ पुरुष जब शिष्ट पुरुषों के पास कुछ माँगने के लिये जाते हैं, तब वे अपनी पत्नी तथा परिवारिक जनों को कष्ट देकर भी अपनी शक्ति से अधिक देते हैं। न्याय-पूर्वक संसार-यात्रा चले और आत्मा का अल्याण हो, इन विषयों की ओर उनकी दृष्टि लगी रहती है ॥१३८-१३९॥

एवं सन्तो वर्तमानास्त्वेधन्ते शाश्वतीः समाः ।
अहिंसा सत्यवचनमानृशंस्यमथार्जवम् ॥१४०
अद्रोहो नाभिमानश्च ह्रीस्तितिक्षा दमः शमः ।
धीमन्तो धृतिमन्तश्च भूतानामनुकम्पकाः ॥१४१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अकामद्वेषसंयुक्तास्ते सन्तो लोकसाक्षिणः ।
त्रीण्येव नु पदान्याहुः सतां व्रतमनुत्तमम् ॥१४२
न चैव द्रुह्येद् दद्याच्च सत्यं चैव सदा वदेत् ।
सर्वत्र च दयावन्तः सन्तः करुणवेदिनः ॥१४३
गच्छन्तीह सुसंतुष्टा धर्मपन्थानमुत्तमम् ।
शिष्टाचारा महात्मानो येषां धर्मः सुनिश्चितः ॥१४४
अनसूया क्षमा शान्तिः संतोषः प्रियवादिता ।
कामक्रोधपरित्यागः शिष्टाचारनिषेवणम् ॥१४५
कर्म च श्रुतसम्पन्नं सतां मार्गमनुत्तमम् ।
शिष्टाचारं निषेवन्ते नित्यं धर्ममनुव्रताः ॥१४६
प्रज्ञाप्रासादमारुह्य मुच्यन्ते महतो भयात् ।
प्रेक्षन्तो लोकवृत्तानि विविधानि द्विजोत्तम ॥१४७
अतिपुण्यानि पापानि तानि द्विजवरोत्तम ।
एतत् ते सर्वमाख्यातं यथाप्रज्ञं यथाश्रुतम् ।
शिष्टाचारगुणं ब्रह्मन् पुरस्कृत्य द्विजर्षभ ॥१४८

इस प्रकार का व्यवहार करने वाले सन्तजन अनन्त काल तक उन्नति की ओर बढ़ते जाते हैं । जो अहिंसा, सत्य बोलना, कोमलता, सरलता, अद्वेष, निरहंकार, लज्जा, क्षमा, शम, दम, इन गुणों से युक्त बुद्धिमान, धैर्यवान्, जीवों पर अनुकम्पा करने वाले, राग-द्वेष से रहित सन्तजन सम्पूर्ण लोकों के लिये साक्षि स्वरूप हैं श्रेष्ठ पुरुषों के अनुसार तीन पद ही हैं—किसी से द्रोह न करना, दान देना और सदा सत्य बोलना, यही श्रेष्ठ पुरुषों का उत्तम व्रत है। सर्वत्र दया करने और हृदय में करुणा की अनुभूति करने वाले पुरुष ही इस लोक में सन्तुष्टि पूर्वक श्रेष्ठ मार्ग पर गमन करते हैं । सदाचारी वही हैं जो धर्म पर चलने के लिए कृत संकल्प हैं । दोष दृष्टि का न होना, क्षमा, शान्ति, सन्तोष, मीठे वचन और काम-क्रोध से रहित होना, यही श्रेष्ठ पुरुषों का श्रेष्ठ पथ है । हे द्विजवरों में श्रेष्ठ ! शिष्टाचार का सदैव सेवन करने वाले श्रेष्ठ पुरुष प्रज्ञा रूपी भवन पर चढ़ कर विभिन्न प्रकार के लोक चरित्रों को देखते हुए

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पाप-पुण्य की समीक्षा करते हैं और महा भयों से छूट जाते हैं ।।१४२-१४८।।

स तु विप्रमथोवाच धर्मव्याधो युधिष्ठिर ।
यदहमाचरे कर्म घोरमेतदसंशयम् ।।१४९
विधिस्तु बलवान् ब्रह्मन् दुस्तरंहि पुरा कृतम् ।
पुरा कृतस्य पापस्य कर्मदोषो भवत्ययम् ।।१५०
दोषस्यतस्य वै ब्रह्मन् विघाते यत्नवानहम् ।
विधिना हि हते पूर्वं निमित्तं घातको भवेत् ।।१५१
निमित्तभूता हि वयं कर्मणोऽस्य द्विजोत्तम ।
येषां हतानां मांसानि विक्रीणामीह वै द्विज ।।१५२
तेषामपि भवेद् धर्म उपयोगे न भक्षणे ।
देवतातिथिभृत्यानां पितृणां चापि पूजनम् ।।१५३
ओषध्यो वीरुधश्चैव पशवो मृगपक्षिणः ।
अनादिभूता भूतानामित्यपि श्रूयते श्रुतिः ।।१५४

मार्कण्डेयजी ने कहा—युधिष्ठिर ! उसके पश्चात् धर्म व्याध ने कौशिक से कहा कि मैं जो माँस बेचने का कार्य कर रहा हूँ, वह यथार्थ में एक घोर कर्म है, इसमें सन्देह नहीं किन्तु, दैव बलवान है । पूर्व जन्म में किये हुए कर्म का नाम ही दैव है । उससे पार होना अत्यन्त कठिन है । कर्म-दोष जनित व्याधि के घर जो यह जन्म हुआ है, वह मेरे पूर्व जन्म कृत पाप का ही भोग है और उस पाप से छुटकारा पाने के लिए मैं प्रयत्नशील हूं क्योंकि विधाता के द्वारा पहिले से ही जीव की मृत्यु निश्चित रहती है । परन्तु उसमें मारने वाला निमित्त मात्र रहता है । इस प्रकार इस हिंसा कर्म में हम निमित्त मात्र हैं । मारे गये जिन प्राणियों का माँस मैं बेचता हूं, यदि उनके जीवित रहते हुए उनका सदुपयोग किया जाता तो महान् धर्म-कार्य होता । देव, अतिथि, भरण-पोषण योग्य कुटुम्बियों और पितरों का पूजन अवश्य ही धर्म है । औषधियाँ, अन्न, तृण, लता, पशु, मृग और पक्षी आदि सम्पूर्ण वस्तुएँ सभी जीवों के उप-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

योग में अनादि काल से आती रहती हैं, श्रुतियों में सुना जाता है ॥१४९-१५४॥

आत्ममांसप्रसादेन शिबिरौशीनरो नृपः ।
स्वर्गं सुदुर्गमं प्राप्तः क्षमावान् द्विजसत्तम ॥१५५
स्वधर्म इति कृत्वा तु न यजामि द्विजोत्तम ।
पुरा कृतमिति ज्ञात्वा जीवाम्येतेन कर्मणा ॥१५६
स्वकर्म त्यजतो ब्रह्मन्नधर्म इह दृश्यते ।
स्वकर्मनिरतो यस्तु धर्मः स इति निश्चयः ॥१५७
पूर्वं हि विहितं कर्म देहिनं न विमुञ्चति ।
धात्रा विधिरयं दृष्टो बहुधा कर्मनिर्णये ॥१५८
द्रष्टव्या तुभवेत् प्रज्ञा क्रूरे कर्मणि वर्तता ।
कथं कर्म शुभं कुर्यां कथं मुच्ये पराभवात् ॥१५९
कर्मणस्तस्य घोरस्य बहुधा निर्णयो भवेत् ।
दाने च सत्यवाक्ये च गुरुशुश्रूषणे तथा ॥१६०
द्विजातिपूजने चाहं धर्मे च निरतः सदा ।
अभिमानातिवादाभ्यां निवृत्तोऽस्मि द्विजोत्तम ॥१६१

उशीनर के पुत्र राजा शिवि ने अपने शरीर का मांस अर्पण किया और उसी के प्रभाव से उन्हें अत्यन्त दुर्लभ स्वर्ग की प्राप्ति हुई । द्विजोत्तम मैं इस धन्धे को अपना धर्म समझ कर ही नहीं छोड़ रहा हूं । क्योंकि, मेरे पूर्वज इसी कर्म को करते रहे हैं, यही समझ कर मैं परम्परागत कर्म से जीवन निर्वाह करता हूँ । ब्रह्मन् ! अपना कर्म छोड़ने वाले को यहाँ अधर्म प्राप्त होता हुआ देखा नहीं जाता है । जो अपने कर्म में तत्पर है, उसी का बर्ताव धर्मयुक्त है, यही सिद्धान्त है । पूर्व कृत कर्म देहधारी मनुष्य से पृथक् नहीं होता । बहुधा कर्म के निर्णय मे ब्रह्मा ने इसी विधि को अपनाया है । जो क्रूर कर्म में लगा है, उसे यही सोचना चाहिए कि मैं किस प्रकार शुभ कर्म करता हुआ, निन्दित कर्म से मुक्त हो सकूँ । बारम्बार ऐसा करने पर उस घोर कर्म से मुक्त होने के विषय में कोई निश्चित उपाय मिल जाता है । मैं दान, सत्यभाषण, गुरुसेवा, ब्राह्मणों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की पूजा तथा धर्म-पालन में सदा तत्पर रहता और अभिमान एवं अति-वाद बचता रहता हूं ॥१६०-१६१॥

कृषि साध्विति मन्यन्त्रे तत्र हिंसा परा स्मृता ।
कर्षन्तो लाङ्गलैःपुंसोघ्नन्तिभूमिशयान् बहून् ।
जीवानन्यांश्च बहुशस्तत्र किं प्रतिभाति ते ॥१६२
धान्यबीजानि यान्याहुर्व्रीह्यादीनि द्विजोत्तम ।
सर्वाण्येतानि जीवानि तत्र किं प्रतिभाति ते ॥१६३
अध्याक्रम्य पशूंश्चापि घ्नन्ति वै भक्षयन्ति च ।
वृक्षांस्तथौरधीश्चापि छिन्दन्ति पुरुषा द्विज ॥१६४
जीवा हि बहवो ब्रह्मन् वृक्षेषु च फलेषु च ।
उदके बहवश्चापि तत्र किं प्रतिभाति ते ॥१६५
सर्वं व्याप्तमिदं ब्रह्मन् प्राणिभिः प्राणिजीवनैः ।
मत्स्यान् ग्रसन्ते मत्स्याश्च तत्र किं प्रतिभाति ते ॥१६६
सत्त्वैः सत्त्वानि जीवन्ति बहुधा द्विजसत्तम ।
प्राणिनोऽन्योन्यभक्षाश्च तत्र किं प्रतिभाति ते ॥१६७
चङ्क्रम्यमाणाजीवांश्च धरणीसंश्रितान् बहून् ।
पद्भ्यांघ्नन्ति नरा विप्र तत्र किं प्रतिभाति ते ॥१६८

कुछ व्यक्ति खेती को श्रेष्ठ मानते हैं, परन्तु उसमें भी अधिक हिंसा होती है । हल चालक कृषक धरती के भीतर सोने वाले अनेकों जीवोंकी हत्या करते है । इनके अतिरिक्त अन्य अनेक जीवों की भी वे हत्या करते रहते हैं । इस विषय में आपका क्या मत है ? ब्रह्मन् ! धान आदि अन्नों के बीज भी सभी जीव ही हैं, अतः इस विषय में आप क्या समझते हैं ? द्विजश्रेष्ठ ! अनेक मनुष्य पशुओं पर आक्रमण कर उनका वध करते और उन्हें भक्षण करते हैं । वृक्षों और औषधियों को काटते हैं । वृक्षों फलों और जल में भी विभिन्न जीव रहते हैं, उनके विषय में आपका क्या मत है ? जीवों से ही जीवन निर्वाह करने वालों द्वारा यह सम्पूर्ण विश्व व्याप्त है । मत्स्य ही मत्स्यों को खा लेते हैं । उनके विषय में आपके क्या विचार हैं ? बहुधा जीव जीवों के द्वारा ही जीवन धारण करते तथा जीव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जीव को ही अपना ग्रास बना लेते हैं। उनके विषय में आपका क्या विचार है ? चलते-फिरते में भी मनुष्य पाँव रख कर अनेक जीवों की हत्या कर डालते हैं। उनके विषय में आपका क्या विचार है ?॥१६२-१६८॥

उपविष्टाः शयानाश्च घ्नन्ति जीवावनेकशः।
ज्ञानविज्ञानवन्तश्च तत्र किं प्रतिभाति ते ॥१६९
जीवैर्ग्रस्तमिदं सर्वमाकाशं पृथिवी तथा।
अविज्ञानाच्च हिंसन्ति तत्र किं प्रतिभाति ते ॥१७०
अहिंसेति यदुक्तं हि पुरुषैर्विस्मितैः पुरा।
के न हिंसन्ति जीवान् वै लोकेऽस्मिन् द्विजसत्तम।
बहु संचित्य इति वै नास्ति कश्चिदहिंसकः ॥१७१
अहिंसायां तु निरता यतयो द्विजसत्तम।
कुर्वन्त्येव हि हिंसां ते यत्नादल्पतरा भवेत् ॥१७२
आलक्ष्याश्चैव पुरुषाः कुले जाता महागुणाः।
महाघोराणि कर्माणि कृत्वा लज्जन्ति व द्विज ॥१७३
सुहृदः सुहृदोन्यांश्च दुर्हृदश्चापि दुर्हृदः।
सम्यक् प्रवृत्तान् पुरुषान् न सम्यगनुपश्यतः ॥१७४
समृद्धैश्च न नन्दन्ति बान्धवा बान्धवैरपि।
गुरूंश्चैव विनिन्दन्ति मूढाः पण्डितमानिनः ॥१७५
बहु लोके विपर्यस्तं दृश्यते द्विजसत्तम।
धर्मयुक्तमधर्मं च तत्र किं प्रतिभाति ते ॥१७६
वक्तुं बहुविधं शक्यं धर्माधर्मेषु कर्मसु।
स्वकर्मनिरतो यो हि स यशः प्राप्नुयान्महत् ॥१७७

ज्ञानी-विज्ञानी पुरुष भी सोते बैठते में अनेक जीवों की हत्या कर डालते हैं ? आकाश से पृथ्वी पर्यंत यह सम्पूर्ण विश्व जीवों से परिपूर्ण है। अनेक मनुष्यों के द्वारा अनजाने ही जीव हत्या हो जाती है। उनके विषय में आपका क्या विचार है ? प्राचीन कालीन निरभिमान श्रेष्ठ पुरुषों ने अहिंसा का उपदेश दिया है, परन्तु इस संसार में ऐसा कौन है, जो जीव-हिंसा नहीं करता। बहुत सोच-विचार करने पर मैंने यही निश्चय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किया है कि अहिंसक कोई भी नहीं है। विप्रवर ! अहिंसा-धर्म के पालन में यतिगण तत्पर रहते हैं, परन्तु, उनके द्वारा भी हिंसा हो ही जाती है। प्रयत्न पूर्वक चेष्टा करने पर हिंसा-कर्म में कमी हो सकती है। श्रेष्ठकुल में उत्पन्न, अत्यन्त सद्गुणी और उत्तम कहे जाने वाले पुरुष भी जब अत्यन्त भयानक कर्म कर बैठते हैं तो लज्जा का अनुभव करते ही हैं। मित्र अन्य मित्रों को और शत्रु अपने शत्रु को, वे अच्छे कर्म करने वाले हों तो भी अच्छी दृष्टि से नहीं देखना चाहते। बन्धु बान्धव अपने समृद्ध कुटुम्बियों से भी प्रसन्न नहीं रहते। अपने को विद्वान् समझने वाले मूर्ख गुरुजनों की निन्दा करने में भी नहीं चूकते। विप्रवर ! इस प्रकार विश्व में अनेक विपरीत बातें देखी जाती हैं। अधर्म भी धर्मयुक्त दिखाई देता है। इस विषय में आपका क्या विचार है ? धर्म-अधर्म विषयक कार्यों के सम्बन्ध में और भी अनेक बातें कही जा सकती हैं। इसलिये जो अपने वंश परम्परागत कर्म में रत रहता है, वही अत्यन्त यश को प्राप्त करता है ॥१६६-१७७॥

धर्मव्याधस्तु निपुणं पुनरेव युधिष्ठिर।
विप्रर्षभमुवाचेदं सर्वधर्मभृतां वर ॥१७८
श्रुतिप्रमाणो धर्मोऽयमिति वृद्धानुशासनम्।
सूक्ष्मा गतिर्हि धर्मस्य बहुशाखा ह्यनन्तिका ॥१७९
प्राणान्तिके विवाहे च वक्तव्यमनृतं भवेत्।
अनृतेन भवेत् सत्यं सत्येनैवानृतं भवेत् ॥१८०
यद् भूतहितमत्यन्तं तत् सत्यमिति धारणा।
विपर्ययकृतोऽधर्मः पश्य धर्मस्य सूक्ष्मताम् ॥१८१
यत् करोत्यशुभं कर्म शुभं वा यदि सत्तम।
अवश्यं तत् समाप्नोति पुरुषो नात्र संशयः ॥१८२

मार्कण्डेयजी ने कहा--सभी धर्मात्माओं में श्रेष्ठ ! फिर धर्म व्याध ने कौशिक ब्राह्मण से कहना प्रारम्भ किया है। व्याध ने कहा—वृद्ध पुरुष कहते हैं कि धर्म के विषय में वेद ही प्रमाण है। इसके ठीक होने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर भी धर्म की गति अत्यन्त सूक्ष्म है। उसके अनन्त भेद और बहुत-सी शाखाएँ हैं। यदि किसी के प्राणों पर संकट आ पड़े अथवा किसी को अपनी कन्या आदि के विवाह की बातें चलानी पड़ें, तो उस समय मिथ्या भाषण करना पड़े, वहाँ झूँठ बोलने से भी सत्य का ही फल प्राप्त होता है। इसके विपरीत सत्य से असत्य का फल मिलता है। जिसके द्वारा परिणाम में प्राणियों का अत्यन्त हित हो, वह कार्य ही सत्य है। इसके विपरीत यदि किसी कार्य से किसी का अहित होता हो या किसी की हत्या होती हो, वह सत्य प्रतीत होने पर भी असत्य और अधर्म है। इस प्रकार धर्म की गति कितनी सूक्ष्म है इस पर विचार कीजिये। सज्जनों में श्रेष्ठ ! मनुष्य अपने द्वारा किये शुभाशुभ कर्म का फल अवश्य भोगता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥१७८-१८२॥

विषमां च दशां प्राप्तो देवान् गर्हति वै भृशम् ।
आत्मनः कर्मदोषाणि न विजानात्यपण्डितः ॥१८३
मूढो नैकृतिकश्चापि चपलश्च द्विजोत्तमः ।
सुखदुःखविपर्यासान् सदा समुपपद्यते ॥
नैनं प्रज्ञा सुनीतं वा त्रायते नैव पौरुषम् ॥१८४
योऽभिच्छेदयथा यथाकामंतंतंकामं स आप्नुयात् ।
यदि स्यादपराधीनं पौरुषस्य क्रियाफलम् ॥१८५
संतताश्चापि दक्षाश्च मतिमन्तश्च मानवाः ।
दृश्यन्ते निष्फलाःसन्तः प्रहीणाःसर्वकर्मभिः ॥१८६
भूतानामपरः कश्चिद्धिंसायां सततोत्थितः ।
वञ्चनायां च लोकस्य स सुखी जीवते सदा ॥१८७
अचेष्टमपि चासीनं श्रीः कचिदुपतिष्ठति ।
कश्चित् कर्माणि कुर्वन् हि न प्राप्यमधिगच्छति ॥१८८
देवानिष्ट्वा तपस्तप्त्वा कृपणैः पुत्रगृद्धिभिः ।
दशमासधृता गर्भे जायन्ते कुलपांसनाः ॥१८९

मूर्ख मनुष्य संकट में पड़ने पर देवताओं को कोसता है और उनकी अत्यन्त निन्दा करता है। परन्तु, वह इस बात को नहीं समझता कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यह अपने ही कर्मों का दोष पूर्ण फल है ।।१८३।। विप्रवर ! मूर्ख, शठ एवं चंचल चित्त का मनुष्य भ्रम के वशीभूत होकर सुख में दुःख की और दुःख में सुख की वृद्धि कर लेता है । उस समय बुद्धि, श्रेष्ठनीति एवं पुरुषार्थ भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते ।।१८४।। यदि पुरुषार्थ से उत्पन्न कर्म का फल पराधीन न होता तो प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार ही फल प्राप्त कर लेता ।।१८५।। बड़े-बड़े संयमी, कार्य कुशल और बुद्धिमान् पुरुष भी अपना कार्य करते-करते हार जाते हैं तो वे भी इच्छा के अनुसार फल प्राप्त नहीं कर पाते ।।१८६।। निरंतर जीव हिंसा के लिए उद्यत रहने वाला मनुष्य लोगों को ठगने का सदा कार्य करता रहता है । वह सुख से जीवन व्यतीत करता दिखाई देता है ।।१८७।। किसी की सेवा में बिना उद्यम ही लक्ष्मी उपस्थित हो जाती है और कोई सदैव परिश्रम करता रह कर भी उचित पारिश्रमिक नहीं पाता ।।१८८।। अनेकों दीन मनुष्य पुत्र की कामना से देवताओं का पूजन करते और घोर तप करते हैं, फिर भी उनके द्वारा गर्भ में स्थापित तथा दस महीने तक माता के गर्भ में पुष्ट होने पर भी जो पुत्र उत्पन्न होते हैं, वे कुलांगार निकल आते हैं ।।१८९।।

अपरे धनधान्यैश्च भोगैश्च पितृसंचितैः ।
विपुलैरभिजायन्ते लब्धास्तैरेव मङ्गलैः ।।१९०
कर्मजा हि मनुष्याणां रोगा नास्त्यत्र संशयः ।
आधिभिश्चैव बाध्यन्ते व्याधैः क्षुद्रमृगा इव ।।१९१
ते चापि कुशलैर्वैद्यैर्निपुणैः सम्भृतौषधैः ।
व्याधयो विनिवार्यन्ते मृगा व्याधैरिव द्विज ।।१९२
येषामस्ति च भोक्तव्यं ग्रहणीदोषपीडिताः ।
न शक्नुवन्ति ते भोक्तुं पश्य धर्मभृतां वर ।।१९३
अपरे बाहुबलिनः क्लिश्यन्ते बहवो जनाः ।
दुःखेन चाधिगच्छन्ति भोजनं द्विजसत्तम ।।१९४
इति लोकमनाक्रन्दं मोहशोकपरिप्लुतम् ।
स्रोतसासकृदाक्षिप्तं ह्रियमाणं बलीयसा ।।१९५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न म्रियेयुर्न जीर्येषुः सर्वे स्युः सार्वकामिकाः ।
नाप्रियं प्रतिपश्येयुर्वशित्वं यदि वै भवेत् ॥१९६

और अन्य अनेक ऐसे हैं, जो अपने पिता द्वारा संचित धन-धान्य और भोग-विलास के प्रचुर साधनों से परिपूर्ण घर में उत्पन्न होते और उनकी प्राप्ति भी उन्हीं मांगलिक कर्मों का अनुष्ठान करने से होती है ॥१९०॥ मनुष्यों के जो रोग उत्पन्न होते हैं, वे सब उनके कर्मों का ही फल है । छोटे मृगों को बहेलियों द्वारा पीड़ा देने के समान, रोग एवं आधि-व्याधियाँ जीवों को पीडित करते रहते हैं ॥१९१॥ ब्रह्मन् ! औषधियों के संग्राहिक कुशल चिकित्सक उन रोगों को वैसे ही दूर कर देते हैं, जैसे व्याध मृगों को भगाते हैं ॥१९२॥ धर्मात्मा श्रेष्ठ कौशिक ! जिन के यहाँ भोजन के भण्डार भरे पड़े हैं, परन्तु, संग्रहणी के कारण वे उसका उपभोग नहीं कर पाते ॥१९३॥ अन्य अनेक मनुष्य, जिनमें बाहु-बल है, स्वस्थ हैं और अन्न पचाने में भी समर्थ हैं, फिर भी उन्हें कष्ट पूर्वक भोजन मिल पाता है ॥१९४॥ इस प्रकार यह विश्व असहाय है और शोक में निमग्न है । कर्मों के अत्यन्त प्रवाह में पड़ कर बारम्बार आधि-व्याधि रूप लहरों के थपेड़े खाकर इधर उधर बहता फिरता है ॥१९५॥ यदि इच्छानुसार कार्य कर सकते तो न मरते और न वृद्धावस्था को ही प्राप्त कर पाते । सब प्रकार की इच्छित वस्तुओं को पा लेते और किसी को कोई बुरी घटना देखनी न पड़ती ॥१९६॥

उपर्युपरि लोकस्य सर्वो गन्तुं समीहिते ।
यतते च यथाशक्ति न च तद् वर्तते तथा ॥१९७

बहवः सम्प्रदृश्यन्ते तुल्यनक्षत्रमङ्गलाः ।
महच्च फलवैषम्यं दृश्यते कर्मसंधिषु ॥१९८

न केचिदीसते ब्रह्मन् स्वयंग्राह्यस्य सत्तम !
कर्मणां प्राक् कृतानां वै इह सिद्धिः प्रदृश्यते ॥१९९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यथाश्रुतिरियं ब्रह्मन् जीवः किल सनातनः ।
शरीरमध्रुवं लोके सर्वेषां प्राणिनामिह ॥२००
वध्यमाने शरीरे तु देहनाशो भवत्युत ।
जीवः सङ्क्रमतेऽन्यत्र कर्मबन्धनिबन्धनः ॥२०१
कथं धर्मविदां श्रेष्ठ जीवो भवति शाश्वतः ।
एतदिच्छाम्यहं ज्ञातुं तत्त्वेन वदतां वर ॥२०२
न जीवनाशोऽस्ति हि देहभेदे
मिथ्यैतदार्ता म्रियते किलेति ।
जीवस्तु देहान्तरितः प्रयाति
दशार्धतैवास्य शरीरभेदः ॥२०३

सभी मनुष्य विश्व के ऊपर जाने की इच्छा करते हैं और सभी उसके लिये प्रयत्न करते हैं, परन्तु वैसा हो नहीं पाता ॥१९७॥ अनेक मनुष्य एक नक्षत्र में उत्पन्न हुए, उनके मांगलिक कार्य भी समान रूप से सम्पन्न हुए, परन्तु कर्मों में विभिन्नता होने के कारण उन्हें प्राप्त होने वाले फल में अत्यन्त अन्तर दिखाई देता है ॥१९८॥ ब्रह्मन् ! कोई-कोई तो अपने हाथ में उपलब्ध वस्तु के उपयोग में भी समर्थ नहीं है । इस विश्व में पूर्व जन्म कृत कर्मों का फल ही प्राप्त होता देखा जाता है ॥१९९॥ ब्रह्मन् ! श्रुति के अनुसार यह प्राणी अवश्य ही शाश्वत है और इस विश्व में सम्पूर्ण प्राणियों का देह नाशवान है ॥२००॥ शरीर पर आघात करने से उसका तो नाश हो जाता है, परन्तु, अविनाशी जीव मरता नहीं है । वह कर्म बंधन में पड़कर ही अन्य देह धारण करता है ॥२०१॥ ब्राह्मण ने कहा— धर्मज्ञों और वक्ताओं में श्रेष्ठ व्याध ! जीव सनातन किस प्रकार है ? मैं इस विषय को यथार्थ रूप से जानने का इच्छुक हूँ ॥२०२॥ व्याध ने कहा—देह के नष्ट होने पर जीव नष्ट नहीं होता । मनुष्यों का यह कहना मिथ्या है कि 'जीव मरता है' । जीव तो इस देह को त्याग कर अन्य देह में चला जाता है । देह के पंच तत्वों का पृथक् पृथक् पाँचों भूतों में मिलना ही उसका नष्ट होना कहा जाता है ॥२०३॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अन्यो हि नाश्नाति कृतं हि कर्म
मनुष्यलोके मनुजस्य कश्चित् ।
यत् तेन किंचिद्धि कृतं हि कर्म
तदश्नुते नास्ति कृतस्य नाशः ॥२०४
सुपुण्यशीला हि भवन्ति पुण्या
नराधमाः पापकृतो भवन्ति ।
नरोऽनुयातस्त्विह कर्मभिः स्वैः-
स्ततः समुत्पद्यपि भावितस्तैः ॥२०५
कथं सम्भवते योनौ कथं वा पुण्यपापयोः ।
जातीः पुण्यास्त्वपुण्याश्च कथं गच्छति सत्तम ॥२०६
गर्भाधानसमायुक्तं कर्मेदं सम्प्रदृश्यते ।
समासेन तु ते क्षिप्रं प्रवक्ष्यामि द्विजोत्तम ॥२०७
यथा सम्भृतसम्भारः पुनरेव प्रजायते ।
शुभकृच्छुभयोनीषु पापकृत् पापयोनिषु ॥२०८
शुभैः प्रयोगैर्देवत्वं व्यामिश्रैर्मानुषो भवेत् ।
मोहनीयैर्वियोनीषु त्वधोगामी च किल्बिषी ॥२०९
जातिमृत्युजरादुःखैः सततं समभिद्रुतः ।
संसारे पच्यमानश्च दोषैरात्मकृतैर्नरः ॥२१०

इस लोक में एक मनुष्य के द्वारा किये गये कर्म को अन्य कोई भी नहीं भोगता । उसने जो कुछ किया है, उसे स्वयं ही भोगेगा । किये हुए कर्म कभी नष्ट नहीं होते । पुण्यात्मा पुरुष पुण्य कर्मों को और नीच पुरुष पाप कर्मों को करते हैं । अपने किये हुए कर्म का ही इस लोक में मनुष्य अनुसर करते और उन्हीं कर्मों के प्रभाव से अन्य जन्म ग्रहण करते हैं । ब्राह्मण ने कहा—जीव अन्य योनि में कैसे उत्पन्न होता है, पाप-पुण्य से उसका सम्बन्ध कैसे होता है और उसे पाप-योनि अथवा पुण्य-योनि किस प्रकार प्राप्त होती है ? व्याध बोला—ब्रह्मन् ! गर्भाधान संस्कार आदि से सम्बन्धित ग्रंथों ने प्रतिपादित किया है कि 'यह जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह सभी कर्मों का फल है ।' इसलिए किस कर्म के प्रभाव से

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कहाँ जन्म होता है, इस विषय को में संक्षेप में कहता हूँ। कर्म रूप बीजों को इकट्ठा करके मनुष्य जैसे पुनर्जन्म को प्राप्त करता है। शुभ कर्म कर्त्ता शुभ योनियों में और पाप कर्मा पाप योनियों में उत्पन्न होता है। शुभ कर्मों द्वारा प्राणी देवत्व को प्राप्त होता है। शुभ-अशुभ कर्मों के मिश्रण से मनुष्य योनि मिलती है। तामसी कर्मों से पशु-पक्षी आदि की योनि मिलती है और केवल पाप का ही संचय करने वाला जीव नरक में पड़ता है। अपने ही द्वारा किये गए अपराधों के कारण मनुष्य जन्म, मरण एवं वृद्धावस्था के कष्टों से सदैव पीडित होता हुआ, बारम्बार संसार में फँसता रहता है ।।२०४-२१०।।

तिर्यग्योनिसहस्राणि गत्वा नरकमेव च ।
जीवाः सम्परिवर्तन्ते कर्मबन्धनिबन्धनाः ।।२११
जन्तुस्तु कर्मभिस्तैस्तैः स्वकृतैःप्रेत्य दुःखितः ।
तद्दुःखप्रतिघातार्थमपुण्यां योनिमाप्नुते ।।२१२
ततः कर्म समादत्ते पुनरन्यं नवं बहु ।
पच्यते तु पुनस्तेन भुक्त्वापथ्यमिवातुरः ।।२१३
अजस्रमेव दुःखार्तोऽदुःखितः सुखसंज्ञितः ।
ततोऽनिवृत्तबन्धत्वात् कर्मणामुदयादपि ।।२१४
परिक्रामति संसारे चक्रवद् बहुवेदनः ।
स चेन्निवृत्तबन्धस्तु विशुद्धश्चापि कर्मभिः ।।२१५
तपोयोगसमारम्भं कुरुते द्विजसत्तम ।
कर्मभिर्बहुभिश्चापि लोकानश्नाति मानवः ।।२१६
स चेन्निवृत्तबन्धस्तु विशुद्धश्चापि कर्मभिः ।
प्राप्नोति सुकृतांल्लोकान् यत्र गत्वा न शोचति ।।२१७

कर्मों के बंधन में बँधे हुए प्राणी हजारों प्रकार की तिर्यक् योनियों अथवा नरकों में घुमते फिरते हैं। प्रत्येक प्राणी अपने द्वारा किये हुए कर्मों से ही मरने के पश्चात् दुःख भोगता है और दुःख-भोग के लिये ही पाप योनियों को प्राप्त होता है। वहाँ भी अनेक नये पापों को करने के कारण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बैसे ही कष्ट भोगता है जैसे कुपथ्य करने वाले रोगी को अनेक प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं। इस प्रकार निरन्तर दुःख भोगते रहने पर भी अपने को दुखी नहीं मानता। इसी दुःखको सुख समझता है और कर्मों का भोग जब तक पूर्ण नहीं हो जाता और नवीन कर्म करता रहता है, तब तक उसे अनेक प्रकार के कष्ट सहन करने होते हैं और वह चक्र के समान आवागमन में घूमता रहता है। जब बन्धन में डालने वाले कर्मों का भोग पूर्ण हो जाता है और सत्कर्मों के द्वारा मनुष्य में पवित्रता आ जाती है, तब वह तप और योग में लगता है। इसलिए अनेक शुभ कर्मों के फल रूप में उसे श्रेष्ठ लोकों का भोग मिल पाता है। इस प्रकार बन्धन से छूटा और पवित्र हुआ मनुष्य अपने शुभ कर्मों के प्रभाव से पुण्य लोक पाता और वहाँ जाकर किसी प्रकार का शोक नहीं करता ॥२११-२१७॥

पापं कुर्वन् पापवृत्तः पापस्यान्तं न गच्छति ।
तस्मात् पुण्यं यतेत् कर्तुं वर्जयेत पापकम् ॥२१८
अनसूयुः कृतज्ञश्च कल्याणानि च सेवते ।
सुखानि धर्ममर्थं च स्वर्गं च लभते नरः ॥२१९
संस्कृतस्य च दान्तस्य नियतस्य यतात्मनः ।
प्राज्ञस्यानन्तरा वृत्तिरिह लोके परत्र च ॥२२०
सतां धर्मेण वर्तेत क्रियां शिष्टवदाचरेत् ।
असंक्लेशेन लोकस्य वृत्तिं लिप्सेत वै द्विज ॥२२१
सन्ति ह्यागमविज्ञानाःशिष्टाः शास्त्रे विचक्षणाः ।
स्वधर्मेण क्रिया लोके कर्मणः सोऽप्यसंकरः ॥२२२
प्राज्ञो धर्मेण रमते धर्मं चैवोपजीवति ।
तस्माद् धर्मादवाप्तेन धनेन द्विजसत्तम ॥२२३
तस्यैव सिंचते मूलं गुणान् पश्यति तत्र वै ।
धर्मात्मा भवति ह्येवं वित्तं चास्य प्रसीदति ।
स मित्रजनसंतुष्ट इह प्रेत्य च नन्दति ॥२२४

पाप कर्मा मनुष्य को पाप का स्वभाव पड़ जाता और तब उसके पाप का कभी अन्त नहीं होता। इसलिए मनुष्य को पुण्य कर्म करने का

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और पाप से बचने का सदा प्रयत्न करना चाहिए। पुण्यात्मा में दोष दृष्टि नहीं रहती, वह कृतज्ञ होकर कल्याण कारी कार्यों में लगता है और उसे सुख, धर्म अर्थ तथा स्वर्ग की प्राप्ति (सहज ही) हो जाती है। संस्कार-वान्, जितेन्द्रिय और शौच का आचरण करने वाला, तथा मन को वश में रखने वाला बुद्धिमान पुरुष इहलोक और परलोक में भी सुख प्राप्त करता है। इसलिए सत्पुरुषों के धर्म का पालन करना मनुष्य का कर्त्तव्य है। शिष्ट पुरुषों जैसा बर्ताव करे और संसार में किसी भी जीव को सताये बिना जीवन निर्वाह हो सके, ऐसी आजीविका की इच्छा करे। संसार में अनेकों वेदों में पारंगत और शास्त्र-विचक्षण शिष्ट पुरुष है, उनके उपदे-शानुसार ही अपने धर्म का पालन करते हुए, प्रत्येक कार्य करे, इस प्रकार कर्मों में संकरत्व नहीं होता। विप्रवर ! बुद्धिमान व्यक्ति धर्म में ही आनन्दित रहता है। धर्म के आश्रय में ही जीवन-निर्वाह करता है और धर्म से उपलब्ध धन से ही धन की जड़ को सींचता है। उसे धर्म में गुण दृष्टि गोचर होते हैं। इस प्रकार उसका अन्तःकरण निर्मल होकर वह धर्मात्मा होता है और मित्रजनों से सन्तुष्ट होकर इहलोक और परलोक में भी सुखी होता है ॥२१८-२२४॥

शब्दं स्पर्शं तथा रूपं गन्धानिष्टांश्च सत्तम ।
प्रभुत्वं लभते चापि धर्मस्यैतत् फलं विदुः ॥२२५
धर्मस्य च फलं लब्ध्वा न तृप्यति महाद्विज ।
अतृप्यमाणो निर्वेदमापेदे ज्ञानचक्षुषा ॥२२६
प्रज्ञाचक्षुर्नर इह दोषं नैवानुरुध्यते ।
विरज्यति यथाकामं न च धर्मं विमुञ्चति ॥२२७
सर्वत्यागे च यतते दृष्ट्वा लोकं क्षयात्मकम् ।
ततो मोक्षे प्रयतते नानुपायादुपायतः ॥२२८
एवं निर्वेदमादत्ते पापं कर्म जहाति च ।
धार्मिकश्चापि भवति मोक्षं च लभते परम् ॥२२९
तपो निःश्रेयसं जन्तोस्तस्य मूलं शमो दमः ।
तेन सर्वानवाप्नोति कामान् यान् मनसेच्छसि ॥२३०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन्द्रियाणां निरोधेन सत्येन च दमेन च ।
ब्रह्मणः पदमाप्नोति यत् परं द्विजसत्तम ।।२३१
इन्द्रियाणि तु यान्याहुः कानि तानि यतव्रत ।
निग्रहश्च कथं कार्यो निग्रहस्य च किं फलम् ।।२३२
कथं च फलमाप्नोति तेषां धर्मभृतां वर ।
एतदिच्छामि तत्त्वेन धर्मं ज्ञातुं निबोध मे ।।२३३

धर्मात्मा को शब्द, स्पर्श, रूप और गंध आदि सभी प्रकार के विषय एवं प्रभुत्व की भी प्राप्ति होती है । उसकी यह स्थिति धर्म-पालन ही कही गयी है । जो कोई धर्म के फल रूप में साँसारिक सुख को प्राप्त कर सन्तुष्ट नहीं होता, वह ज्ञान रूप दृष्टि के कारण विषय भोग में तृप्ति न देख कर वैराग्य ले लेता है । इस विश्व में ज्ञान-दृष्टि वाला मनुष्य राग-द्वेष आदि दोषों पर नहीं चलता, उसे वैराग्य उत्पन्न हो जाता है और वह धर्म को कभी नहीं छोड़ता । सभी विश्व को नाशवान समझ कर सब वस्तुओं के त्याग का वह यत्न करता और फिर उचित उपाय से मोक्ष प्राप्ति की चेष्टा करता है । भाग्य के भरोसे कभी नहीं बैठा रहता । इस प्रकार वैराग्य ग्रहण कर पाप-कर्म का त्याग कर देता है और सर्वथा धर्मात्मा हो जाता है तथा अन्त में वह परम मोक्ष को प्राप्त होता है । जीव के कल्याण का साधन तप और उसका मूल शम एवं दम है । मन के द्वारा मनुष्य जिन-जिन इच्छित पदार्थों को प्राप्त करना चाहता है, उन सब को वह तप-बल से पा लेता है । विप्रवर ! इन्द्रिय संयम, सत्य भाषण और मन का निग्रह करके ही मनुष्य ब्रह्म के परम पद को पा लेता है । ब्राह्मण ने प्रश्न किया—श्रेष्ठ व्रती व्याध ! इन्द्रिय कौन-कौन हैं, उनका निग्रह कैसे करे ? और उस निग्रह का फल क्या है ? धर्मियों में श्रेष्ठ ! इन्द्रियों के निग्रह का फल किस प्रकार मिलता है ? उस इन्द्रिय निग्रह रूपी धर्म को मैं यथार्थ रूप से जानने का इच्छुक हूँ, वह मुझे भले प्रकार समझाइये ।।२२५-२३३।।

एवमुक्तस्तु विप्रेण धर्मव्याधो युधिष्ठिर ।
प्रत्युवाच यथा विप्रं तच्छृणुष्व नराधिप ।।२३४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विज्ञानार्थं मनुष्याणां मनः पूर्वं प्रवर्तते ।
तत् प्राप्य कामं भजते क्रोधं च द्विजसत्तम ॥२३५

ततस्तदर्थं यतते कर्म चारभते महत् ।
इष्टानां रूपगन्धानामभ्यासं च निषेवते ॥२३६
ततो रागः प्रभवति द्वेषश्च तदनन्तरम् ।
ततो लोभः प्रभवति मोहश्च तदनन्तरम् ॥२३७
ततो लोभाभिभूतस्य रागद्वेषहतस्य च ।
न धर्मे जायते बुद्धिर्व्याजाद् धर्मं करोति च ॥२३८

मार्कण्डेयजी ने कहा—युधिष्ठिर ! ब्राह्मण के इस प्रकार प्रश्न करने पर धर्म व्याध ने उसे जो उत्तर दिया, वह तुम्हें सुनाता हूँ । ध्यान पूर्वक सुनो । व्याध ने कहा—विप्रवर ! इन्द्रियों के द्वारा किसी विषय के ज्ञानार्थ सर्व प्रथम मन प्रवृत्त होता है । उस विषय को पा लेने पर उसके प्रति मन का राग अथवा द्वेष हो जाता है । जब किसी विषय में राग होता है, तब मनुष्य उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता है और उसके लिए महान् कार्य भी कर डालता है । जब वे इच्छित रूप, गंध आदि विषय प्राप्त हो जाते हैं, तब वह उसके सेवन में लीन हो जाता है । उनका सेवन करने से राग उत्पन्न हो जाता है और उसकी प्रतिकूलता होने पर द्वेष की उत्पत्ति होती है । उसके पश्चात् इच्छित वस्तु के प्रति लोभ उत्पन्न होता और बुद्धि पर मोह छा जाता है । इस प्रकार लोभ से अभिभूत और राग-द्वेष से पीडित मनुष्य की बुद्धि धर्म नहीं लगती । वह धर्म कार्य करता भी है तो किसी बहाने से ही करता है ॥२३४-२३८॥

व्याजेन चरते धर्ममर्थं व्याजेन रोचते ।
व्याजेन सिध्यमानेषु धनेषु द्विजसत्तम ॥२३९

तत्रैवरमते बुद्धिस्ततः पातं चिकीर्षति ।
सुहृद्भिर्वार्यमाणश्च पण्डितैश्च द्विजोत्तम ।
उत्तरं श्रुतिसम्बद्धं ब्रवीत्यश्रुतियोजितम् ॥२४०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधर्मस्त्रिविधस्तस्य वर्तते रागदोषजः ।
पापं चिन्तयते चैव ब्रवीति च करोति च ॥२४१
तस्याधमप्रवृत्तस्य गुणा नश्यन्ति साधवः ।
एकशीलैश्च मित्रत्वं भजन्ते पापकर्मिणः ।
स तेन दुःखमाप्नोति परत्र च विपद्यते ॥२४२
पापात्मा भवति ह्येवं धर्मलाभ तु मे शृणु ।
यस्त्वेतान् प्रज्ञया दोषान् पूर्वमेवानुपश्यति ॥२४३
कुशलः सुखदुःखेषु साधूश्चाप्युपसेवते ।
तस्य साधुसमारम्भाद् बुद्धिर्धर्मेषु राजते ॥२४४

जो किसी बहाने से धर्म का आचरण करता है, वह यथार्थ रूप से धन की ओट में धन चाहता है और जब उसे धर्म के बहाने से धन मिलने लगता है, तब उसकी बुद्धि में रम कर पाप की इच्छा जाग्रत हो जाती है। द्विजश्रेष्ठ ! जब उसे वैसा कार्य करने से उसके हितैषी मित्र या विद्वान् पुरुष रोकते हैं, तब वह अपने कार्य के समर्थन में शास्त्र-विरुद्ध उत्तर देता हुआ वेद-प्रतिपादित बताता है। राग रूप द्वेष से उसके द्वारा तीन प्रकार के अधर्म होने लगते हैं-प्रथम, मन के द्वारा पाप का चिन्तन, द्वितीय–वाणी द्वारा पाप पूर्ण बातें और तृतीय–क्रिया द्वारा भी पाप का आचरण। इस प्रकार अधर्म में लगने पर उसके सभी श्रेष्ठ गुणों का नाश हो जाता है। वह अपने समान पापकर्मी मनुष्यों से ही मित्रता स्थापित करता है। उस पाप के कारण इहलोक में तो दुःख मिलता ही है, परलोक में भी घोर संकट भोगना पड़ता है। इस प्रकार मनुष्य पापात्मा हो जाता है। अब, जिस प्रकार धर्म की प्राप्ति होती है, वह भी सुनो। सुख दुःख के विवेचन में जो कुशल है, वह विषय-सम्बन्धी इन दोषों को पहले ही समझ कर उनसे दूर हो जाता है और श्रेष्ठ पुरुषों की संगति में रहता है। उस सत्संग के द्वारा उसकी बुद्धि धर्म में प्रवृत्त हो जाती है ॥२३९-२४४॥

ब्रवीषि सूनृतं धर्म्यं यस्य वक्ता न विद्यते ।
दिव्यप्रभावः सुमहान्नृषिरेव मतोऽसि मे ॥२४५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्मणा वै महाभागाः पितरोऽग्रभुजः सदा ।
तेषां सर्वात्मना कार्यं प्रियं लोके मनीषिणा ।।२४६
यत् तेषां च प्रियं तत् ते वक्ष्यामि द्विजसत्तम ।
नमस्कृत्वा ब्राह्मणेभ्यो ब्राह्मीं विद्यां निबोध मे ।।२४७
इदं विश्वं जगत् सर्वमजय्यं चापि सर्वशः ।
महाभूतात्मकं ब्रह्म नातः परतरं भवेत् ।।२४८
महाभूतानि खं वायुरग्निरापस्तथा च भूः ।
शब्दः स्पर्शश्च रूप च रसो गन्धश्च तद्गुणाः ।।२४९
तेषामपि गुणाः सर्वे गुणवृत्तिः परस्परम् ।
पूर्वपूर्वगुणाः सर्वे क्रमशो गुणिषु त्रिषु ।।२५०
षष्ठस्तु चेतना नाम मन इत्यभिधीयते ।
सप्तमी तु भवेद् बुद्धिरहंकारस्ततः परम् ।।२५१
इन्द्रियाणि च पञ्चात्मा रजः सत्त्वं तमस्तथा ।
इत्येष सप्तदशको राशिरव्यक्तसञ्ज्ञकः ।।२५२
सर्वैरिहेन्द्रियार्थैस्तु व्यक्ताव्यक्तैः सुसंवृतैः ।
चतुर्विंशक इत्येष व्यक्ताव्यक्तमयी गुणः ।
एतत् ते सर्वमाख्यातं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।।२५३
एवमुक्तः स विप्रस्तु धर्मव्याधेन भारत ।
कथामकथयद् भूयो मनसः प्रीतिवर्धनीम् ।।२५४
महाभूतानि यान्याहुः पञ्च धर्मभृतां वर ।
एकैकस्य गुणान् सम्यक् पञ्चानामपि मे वद ।।२५५
भूमिरापस्तथा ज्योतिर्वायुराकाशमेव च ।
गुणोत्तराणि सर्वाणि तेषां वक्ष्यामि ते गुणान् ।।२५६
भूमिः पञ्चगुणा ब्रह्मन्नुदकं च चतुर्गुणम् ।
गुणास्त्रयस्तेजसि च त्रयश्चाकाशवातयोः ।।२५७
शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसो गन्धश्च पञ्चमः ।
एते गुणाः पञ्च भूमेः सर्वेभ्यो गुणवत्तरा ।।२५८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसश्चापि द्विजोत्तम ।
अपामेते गुणा ब्रह्मन् कीर्तितास्तव सुव्रत ॥२५६

ब्राह्मण ने कहा--तुम धर्म विषयक अत्यन्त मधुर और प्रिय बातें कह रहे हो । ऐसी बातों के कहने वाला अन्य कोई नहीं है । तुम कोई दिव्य प्रभाव वाले महर्षि हो--मुझे ऐसा प्रतीत होता है । धर्मव्याध ने कहा--महाभाग ब्राह्मण और पितर यह सदा ही प्रथम भोजन के अधिकारी माने जाते हैं । इसलिए बुद्धिमान मनुष्य को इस लोक में उनको सन्तुष्ट करना चाहिए । द्विजोत्तम ! उन ब्राह्मणों को नमस्कार करके, जो वस्तु उनके लिए प्रिय है, वह तुम्हें बताता हूँ । तुम मुझसे ब्राह्मी विद्या सुनो । पंचमहाभूतों से निर्मित यह सम्पूर्ण विश्व, सब प्रकार अजेय ब्रह्मरूप है । ब्रह्म से बढ़ कर अन्य कोई वस्तु नहीं है । आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथिवी यह पाँच महाभूत हैं तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध क्रमशः यह पाँच उनके विशेष गुण हैं । उन गुणों के भी अनेक गुण भेद हैं, क्योंकि इन गुणों का भी परस्पर संक्रमण दिखाई देता है । प्रथम-प्रथम के सभी गुण क्रमशः पीछे के तीन गुणवान् भूतों में पाये जाते हैं अर्थात् अग्नि में शब्द, स्पर्श और रूप, जल में शब्द, स्पर्श रूप और रस तथा पृथिवी में पाँचों गुण उपलब्ध होते हैं । इन पंच भूतों के अतिरिक्त चित्त को छठा तत्व कहा गया है, यही मन है । बुद्धि सातवाँ और अहंकार आठवाँ तत्व है । इनके अतिरिक्त पंच ज्ञानेन्द्रिय, प्राण और सत्व, रज, तम, इन सत्रह तत्वों का समूह अव्यक्त माना गया है । पंच ज्ञानेन्द्रिय और मन, बुद्धि के व्यक्त-अव्यक्त बिषय बुद्धि रूपी गुफा में विलीन रहते हैं, उन्हें सम्मिलित करने पर चौबीम तत्वों का समुदाय होता है । यही व्यक्त और अव्यक्त गुण हैं । ब्रह्मन् ! इस प्रकार यह सब बातें मैंने तुम्हारे प्रति कह दीं, अब और क्या सुनना चाहते हो ? । मार्कण्डेयजी ने कहा--युधिष्ठिर ! धर्मव्याध के इस उपदेश को सुन कर कौशिक ब्राह्मण ने मन की प्रसन्नता बढ़ाने वाली बातें फिर प्रारम्भ कीं । ब्राह्मण ने कहा--धर्मियों में श्रेष्ठ व्याध ! जो पंच महा भूत कहे गये हैं, उनके पृथक् पुथक् गुणों को भले प्रकार मुझे बताओ । धर्म व्याध ने कहा--पृथिवी, जल, अग्नि,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वायु और आकाश ये सब पहिले-पहिले के तत्व अपने से बाद वालों के गुणों से युक्त हैं। उनके गुणों को तुम्हारे प्रति कहता हूँ। पृथिवी में पाँच गुण हैं, जल में चार, तेज में तीन, वायु में दो तथा आकाश में एक ही गुण है। शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध ये पाँच गुण पृथिवी के हैं। इस प्रकार पृथिवी अन्य सब भूतों से अधिक गुणवाली है। शब्द, स्पर्श, रूप, रस—यह चारों जल के गुण हैं। द्विजोत्तम ! इनका वर्णन पहिले भी कर चुका हूँ ॥२४५-२५९॥

शब्दः स्पर्शश्च रूपं च तजसोऽथ गुणास्त्रयः।
शब्दः स्पर्शश्च वायौ तु शब्दश्चाकाश एव तु ॥२६०
एते पञ्चदश ब्रह्मन् गुणा भूतेषु पञ्चसु।
वर्तन्ते सर्वभूतेषु येषु लोकाः प्रतिष्ठिताः ॥२६१
अन्योन्यं नातिवर्तन्ते सम्यक् च भवति द्विज।
यदा तु विषमं भावमाचरन्ति चराचराः ॥२६२
तदा देही देहमन्यं व्यतिरोहति कालतः।
आनुपूर्व्या विनश्यन्ति जायन्ते चानुपूर्वशः ॥२६३
तत्र तत्र हि दृश्यन्ते धातवः पाञ्चभौतिकाः।
यैरावृतमिदं सर्वं जगत् स्थावरजङ्गमम् ॥२६४
इन्द्रियैःसृज्यतेयद् यत् ततद् व्यक्तमिति स्मृतम्।
तदव्यक्तमिति ज्ञेयं लिङ्गग्राह्यमतीन्द्रियम् ॥२६५
यथास्वं ग्राहकाण्येषां शब्दादीनामिमानि तु।
इन्द्रियाणि यदा देही धारयन्निव तप्यते ॥२६६

शब्द, स्पर्श और रूप--यह तीनों अग्नि के गुण हैं। वायु के दो गुण शब्द और स्पर्श हैं तथा आकाश का गुण शब्द है। इस प्रकार पञ्च भूतों में यह पन्द्रह गुण कहे गये हैं। इन्हीं में सब लोक विद्यमान हैं। यह पञ्च भूत एक दूसरे के बिना स्थित नहीं रहते, परस्पर मिल कर ही व्यक्त रहते हैं। जब व्यक्त और अव्यक्त पञ्चभूत विषय भाव को पाते हैं, तब यह प्राणी काल की प्रेरणा से अपने सङ्कल्प के अनुसार दूसरे शरीर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

को प्राप्त होता है। यह पाँचों भूत मृत्यु-काल में प्रतिलोम क्रम से लीन होते और उत्पत्ति काल में अनुलोम क्रम से प्रकट हो जाते हैं। विभिन्न देहों में दिखाई पड़ने वाले रक्त आदि सब धातु पञ्चभूतों के ही परिणाम हैं और उन्हीं से यह सम्पूर्ण स्थावर जंगम जगत् व्याप्त हो रहा है। बाह्य इन्द्रियों के संसर्ग में आने वाले पदार्थ व्यक्त माने गये हैं और इन्द्रियों से ग्राह्य न होने वाले विषय, जो अनुमान से जाने जाते हैं, अव्यक्त माने गये हैं। अपने-अपने विषयों का अतिक्रमण करके विषयों को ग्रहण करने वाली इन्द्रियों को जब आत्मा अपने अधिकार में कर लेता है, तब तपस्या करता हुआ-सा प्रतीत होता है ॥२६०-२६६॥

लोके विततमात्मानं लोकं चात्मनि पश्यति ।
परावरज्ञो यः शक्तः स तु भूतानि पश्यति ॥२६७
पश्यतः सर्वभूतानि सर्वावस्थासु सर्वदा ।
ब्रह्मभूतस्य संयोगो नाशुभेनोपपद्यते ॥२६८
अज्ञानमूलं तं क्लेशमतिवृत्तस्य पौरुषम् ।
लोकवृत्तिप्रकाशेन ज्ञानमार्गेण गम्यते ॥२६९
अनादिनिधनं जन्तुमात्मयोनिं सदाव्ययम् ।
अनौपम्यममूर्तं च भगवानाह बुद्धिमान् ॥२७०
तपोमूलमिदं सर्वं यन्मां विप्रानुपृच्छसि ।
इन्द्रियाण्येव संयम्य तपो भवति नान्यथा ॥२७१
इन्द्रियाण्येव तत् सर्वं यत् स्वर्गनरकावुभौ ।
निगृहीतविसृष्टानि स्वर्गाय नरकाय च ॥२७२
एष योगविधिः कृत्स्नो यावादिन्द्रियधारणम् ।
एतन्मूलं ही तपसः कृत्स्नस्य नरकस्य च ॥२७३

वह सभी लोकों में अपने को व्याप्त और सब लोकों को अपने में स्थित देखता है। इस प्रकार निर्गुण ब्रह्म का ज्ञाता ज्ञानी पुरुष सभी भूतों को आत्मरूप से देखता है। सभी अवस्थाओं में सब भूतों को आत्म-रूप मानने वाले उस ब्रह्मज्ञानी का अशुभ कर्मों से कभी सम्पर्क नहीं हो सकता। उन अज्ञान से उत्पन्न क्लेशों से पार हो जाने वाले उस महा-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पुरुष का प्रभाव उसकी लौकिक चेष्टाओं और ज्ञान मार्ग से जाना जा सकता है। बुद्धिमान् ब्रह्माजी ने मुक्त जीव को आदि-अन्त से रहित, स्वयम्भू, विकार-रहित, आकार-रहित तथा अनुपम कहा है। आपके प्रश्न के उत्तर में कहता हूँ कि इस सब का मूल तप ही है। वह तप इंद्रिय-संयम से ही सम्पन्न होता है, अन्य प्रकार से नहीं होता। स्वर्ग,नरक आदि जो कुछ है वह इन्द्रिय रूप है। अर्थात् इन्द्रिय ही उनका कारण है। संयमित इन्द्रियाँ स्वर्ग प्राप्त कराने वाली तथा स्वच्छंद इन्द्रियाँ नरक में डालने वाली हैं। योग का पूर्ण अनुष्ठान मन सहित सम्पूर्ण इंद्रियों को वश में रखना ही है। क्योंकि तप का मूल यही है, तथा इन्द्रियों को वश में रखना ही नरक का कारण है ॥२६७-२७३॥

इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन दोषमार्च्छत्यसंशयम् ।
संनियम्य तु तान्येव ततः सिद्धिं समाप्नुयात् ॥२७४
षण्णामात्मनि नित्यानामैश्वर्यं योऽधिगच्छति ।
न स पापैः कुतोऽनर्थैर्युज्यते विजितेन्द्रियः ॥२७५
रथः शरीरं पुरुषस्य दृष्ट-
मात्मा नियन्तेन्द्रियाण्याहुरश्वान् ।
तैरप्रमत्तः कुशली सदश्वै-
र्दान्तैः सुखं याति रथीव धीरः ॥२७६
षण्णामात्मनियुक्तानामिन्द्रियाणां प्रमाथिनाम् ।
योधीरोधारयेद्यस्तु स स्यात् परमसारथिः ॥२७७
इन्द्रियाणां प्रसृष्टानां हयानामिव वर्त्मसु ।
धृतिं कुर्वीत सारथ्ये धृत्यातानि जयेद्ध्रुवम् ॥२७८
इन्द्रियाणां विचरतां यन्मनोऽनुविधीयते ।
तदस्य हरते बुद्धिं नावं वायुरिवाम्भसि ॥२७९
येषु विप्रतिपद्यन्ते षट्सु मोहात् फलागमम् ।
तेष्वध्यवसिताध्यायी विन्दते ध्यानजं फलम् ॥२८०

इन्द्रिय-संसर्ग से ही दुर्गुण, दुराचारादि दोषों की प्राप्ति होती है। उन्हीं इन्द्रियों के भले प्रकार नियन्त्रण से सर्वथा सिद्धि प्राप्त हो सकती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

है। अपने देह में सदा स्थित रहने वाले मन सहित छहों इन्द्रियों को जो वश में कर लेता है, वह जितेन्द्रिय पुरुष पाप बुद्धि नहीं रखता तो वह पाप कर्म ही कैसे करेगा ? यह प्रत्यक्ष दिखाई देने वाला मनुष्य-देह रथ है, आत्मा सारथि और इन्द्रियाँ अश्व कही गई हैं। जैसे कुशल, सावधान तथा धैर्यवान् रथी श्रेष्ठ अश्वों को अपने वश में रखता हुआ सुख-पूर्वक यात्रा पूर्ण करता है, वैसे ही सावधान, धैर्यवान् और साधन-रत पुरुष इन्द्रियों को वश में कर जीवन यात्रा को सुख से पूर्ण कर लेता है। जो धैर्यवान् पुरुष अपने देह में स्थित छः इन्द्रिय रूपी अश्वों की लगाम संभाले रखता है, वही श्रेष्ठ सारथि हो सकता है। मार्ग में दौड़ने वाले अश्वों के समान विषयों में विचरण करने वाली इन इन्द्रियों को वश में रखने का धैर्यपूर्वक यत्न करे। ऐसा करने वाला अवश्य ही उन्हें जीत लेता है। जैसे जल में चलती हुई नाव का वायु हरण कर लेती है, वैसे ही विषयों में भ्रमती हुई इन्द्रियों में से मन जिस इन्द्रिय के संसर्ग में रहता है, वह एक ही इन्द्रिय इस अयुक्त पुरुष की बुद्धि का हरण कर लेती है। इन छः इन्द्रियों के विषयों में, उनसे मिलने वाले सुख के सम्बन्ध में सब मनुष्य मोह के कारण संशय में पड़ते हैं। परन्तु, उनके दोषों को देखने वाला वीतराग पुरुष उनका निग्रह कर, ध्यान से उत्पन्न आनन्द का अनुभव करता है ॥२७४-२८०॥

एवं तु सूक्ष्मे कथिते धर्मव्याधेन भारत।
ब्राह्मणः स पुनः सूक्ष्मं पप्रच्छ सुसमाहितः ॥२८१
सत्त्वस्य रजसश्चैव तमसश्च यथातथम्।
गुणांस्तत्त्वेन मे ब्रूहि यथावदिह पृच्छतः ॥२८२
हन्त ते कथयिष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि।
एषां गुणान् पृथक्त्वेन निबोध गदतो मम ॥२८३
मोहात्मकं तमस्तेषां रज एषां प्रवर्तकम्।
प्रकाशबहुलत्वाच्च सत्त्वं ज्याय इहोच्यते ॥२८४
अविद्याबहुलो मूढः स्वप्नशीलो विचेतनः।
दुर्हृषीकस्तमोध्वस्तः सक्रोधस्तामसोऽलसः ॥२८५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रवृत्तवाक्यो मन्त्री च यो नराग्रयोऽनसूयकः ।
विधित्समानो विप्रर्षे स्तब्धोमानीसराजसः ॥२८६

प्रकाशबहुलो धीरो निर्विधित्सोऽनसूयकः ।
अक्रोधनोनरोधीमान्दान्तश्चैव स सात्त्विकः ॥२८७

मार्कण्डेयजी बोले—भारत ! धर्मव्याध के द्वारा इस प्रकार सूक्ष्म तत्त्व निरूपण हुआ और तब कौशिक ब्राह्मण ने फिर एक सूक्ष्म प्रश्न उपस्थित किया। कौशिक ब्राह्मण ने कहा—अब मैं एक प्रश्न यथोचित रूप से करता हूँ कि सत्त्व, रज और तम का क्या गुण है,वह मुझे यथार्थ रूप से कहो। धर्मव्याध ने कहा--आपने जो प्रश्न किया है, वह अब कहता हूँ। सत्त्व, रज, तम का पृथक् वर्णन भी सुनिये। इनमें तमोगुण मोह उत्पन्न करने वाला है। रजोगुण से कर्मों में प्रवृत्ति होती है। परंतु सत्त्वगुण में प्रकाश की अधिकता होने से उसे उत्तम कहा गया है। जिसमें अज्ञान अधिक है, जो मूढ़ और अचेतावस्था में निद्रित रहता है, जिसकी इंद्रियाँ अनियंत्रित होने से दूषित हैं, जो विवेकहीन, क्रोधी एवं आलसी है, ऐसा मनुष्य तमोगुणी होता है। ब्रह्मर्षे ! प्रवृत्ति मार्ग की बात करने वाला, परामर्श देने में कुशल, पराये गुणों में दोष न देखने वाला, सदा कर्म की इच्छा वाला,कठोरता और अभिमान से युक्त, दूसरों पर आतङ्क जमाने वाला पुरुष रजोगुणी है। जिसमें प्रकाश की बहुलता है, जो नवीन कार्यों के आरम्भ करने को उत्सुक नहीं रहता, जो दूसरों के दोष देखने का स्वभाव नहीं रखता, जो क्रोध-रहित, बुद्धिमान और जितेन्द्रिय है, वह पुरुष सात्विक है ॥२८१-२८७॥

सात्त्विकस्त्वथ सम्बुद्धो लोकवृत्तेन विलश्यते ।
यदा बुध्यति बोद्धव्यं लोकवृत्तं जुगुप्सते ॥२८८
वैराग्यस्य च रूपं तु पूर्वमेव प्रवर्तते ।
मृदुर्भवत्यहङ्कारः प्रसीदत्यार्जवं च यत् ॥२८९
ततोऽप्य सर्वद्वन्द्वानि प्रशाम्यन्ति परस्परम् ।
न चास्य संशयो नाम क्वचिद् भवति कश्चन ॥२९०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शूद्रयोनौ हि जातस्य सद्गुणानुपतिष्ठतः ।
वैश्यत्वं लभते ब्रह्मन् क्षत्रियत्वं तथैव च ।।२६१
आर्जवे वर्तमानस्य ब्राह्मण्यमभिजायते ।
गुणास्ते कीर्तिताःसर्वेकि भूयः श्रोतुमिच्छसि ।।२६२

सात्त्विक पुरुष ज्ञान युक्त होकर रजोगुण और तमोगुण के कार्यों में नहीं पड़ता और जब वह ज्ञातव्य तत्व का ज्ञान पा लेता है, तब उसे साँसारिक व्यवहार अच्छा नहीं लगता । सात्त्विक पुरुष में वैराग्य के लक्षण पहिले से ही दिखाई देने लगते हैं । उनका अहंकार हलका हो जाता है और सरलता प्रकट होने लगती है । फिर उसके राग-द्वेष आदि सभी द्वन्द परस्पर शान्त हो जाते हैं और उसके हृदय में कोई संशय नहीं रहता । शूद्र के घर उत्पन्न हुआ मनुष्य भी यदि श्रेष्ठ गुणों के आश्रय में चले तो वह वैश्य अथवा क्षत्रिय भाव वाला हो जाता है । 'सरलता' नामक गुण में प्रतिष्ठित व्यक्ति को ब्राह्मणत्व की प्राप्ति हो जाती है । इस प्रकार मैं सभी गुणों का वर्णन कर चुका हूँ, अब और क्या सुनने की इच्छा है ? ।।२८८-२६२।।

पार्थिवंधातुमासाद्यशारीरोऽग्निः कथं भवेत् ।
अवकाशविशेषेण कथं वर्तयतेऽनिलः ।।२६३
प्रश्नमेतं समुद्दिष्टं ब्राह्मणेन युधिष्ठिर ।
व्याधस्तु कथयामास ब्राह्मणाय महात्मने ।।२६४
मूर्धानमाश्रितो वह्निः शरीरं परिपालयन् ।
प्राणो मूर्धनि चाग्नौ च वर्तमानो विचेष्टते ।।२६५
भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं प्राणे प्रतिष्ठितम् ।
श्रेष्ठं तदेव भूतानां ब्रह्मयोनिमुपास्महे ।।२६६
स जन्तुः सर्वभूतात्मा पुरुषः स सनातनः ।
महान् बुद्धिरहङ्कारो भूतानां विषयश्च सः ।।२६७
अव्यक्तं सत्त्वसंज्ञं च जीवः कालः स चैव हि ।
प्रकृतिः पुरुषश्चैव प्राण एव द्विजोत्तम ।
जागर्ति स्वप्नकाले च स्वप्ने स्वप्नायते च सः ।।२६८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जाग्रत्सु बलमाधत्ते चेष्टत्सु चेष्टयत्यपि ।
तस्मिन् निरुद्धे विप्रेन्द्र मृत इत्याभिधीयते ।
त्यक्त्वा शरीरं भूतात्मा पुनरन्यत् प्रपद्यते ।।२९९
एवं त्विह स सर्वत्र प्राणेन परिपाल्यते ।
पृष्ठतस्तु समानेन स्वां स्वां गतिमुपाश्रितः ।।३००

ब्राह्मण ने प्रश्न किया—शरीर में निवास करने वाला अग्नि रूप प्राण पार्थिव धातु के अवलम्बन में किस प्रकार रहता है ? और नाड़ियों के मार्ग विशेष द्वारा प्राणवायु कैसे संचालन करता है ? मार्कण्डेय जी ने कहा—युधिष्ठिर ! ब्राह्मण के इस प्रश्न को सुनकर धर्मव्याध ने उससे इस प्रकार कहा । धर्मव्याध बोला—प्राणी के देह को सुरक्षित रखता हुआ अग्नि रूप उदान वायु मस्तिष्क के सहारे देह में निवास करता है और मुख्य प्राण मस्तक और उदान वायु में स्थित होकर सम्पूर्ण देह में जीवन-संचार करता है । भूत, वर्तमान और भविष्य प्राण के ही आश्रित हैं । प्राण ही सब भूतों में श्रेष्ठ है । इसलिए परब्रह्म से प्रकट प्राण की हम सभी उपासना करते हैं । प्राण ही जीव है, वही सब का आत्मा है, महत्तत्व, बुद्धि और अहङ्कार तथा पञ्चभूतों के कार्य रूप इन्द्रियां और उनके विषय सब कुछ प्राण ही है । विप्रवर ! प्राण ही अव्यक्त, सत्त्व, जीव, काल, प्रकृति और पुरुष हैं, जाग्रत् अवस्था में वही जागता है । वही स्वप्नावस्था में, स्वप्न जगत की सृष्टि कर, स्वप्न की सभी चेष्टाएँ करता है । जाग्रत के समय में वही बल को भरता और चेष्टा करने वाले जीवों में चेष्टा उत्पन्न करता है । उस प्राण के अवरोध होने पर ही जीव मृत कहा जाता है । वही भूतात्मा प्राण एक देह को त्याग कर दूसरे देह में चला जाता है । इस विश्व में प्राण की स्थिति इसी प्रकार है । प्राण के द्वारा ही सबका पालन होता और वही प्राण समान वायु रूप होने पर अपनी-अपनी अलग गति का आश्रय ले लेता है ।।२९३-३००।।

वस्तिमूलं गुदं चैव पावकं समुपाश्रितः ।
वहन् मूत्र पूरीषं वाप्यपानः परिवर्तते ।।३०१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रयत्ने कर्मणि बले स एष त्रिषु वर्तते ।
उदानमिति तं प्राहुरध्यात्मविदुषो जनाः ।।३०२
संधौ संधौ संनिविष्टः सर्वेष्वपि तथानिलः ।
शरीरेषु मनुष्याणां व्यान इत्युपदिश्यते ।।३०३
धातुष्वग्निस्तु विततः स तु वायुसमीरितः ।
रसान् धातूंश्च दोषांश्च वर्तयन् परिधावति ।।३०४
प्राणानां संनिपातात् तु संनिपातः प्रजायते ।
ऊष्माचाग्निरितिज्ञेयो योऽन्नं पचति देहिनाम् ।।३०५
समानोदानयोर्मध्ये प्राणापानौ समाहितौ ।
समर्थितस्त्वधिष्ठानं सम्यक् पचति पावकः ।।३०६
अस्यापि पायुपर्यन्तस्तथा स्याद् गुदसंज्ञितः ।
स्रोतांसि तस्माज्जायन्ते सर्वप्राणेषु देहिनाम् ।।३०७
अग्निवेगवहः प्राणो गुदान्ते प्रतिहन्यते ।
स ऊर्ध्वमागम्य पुनः समुत्क्षिपति पावकम् ।।३०८

समान वायु रूप हुआ वह प्राण जठराग्नि के आश्रय में जब मूत्राशय और गुदा में स्थित होता है, तब मलमूत्र का भार वाहक होने से अपान वायु कहलाता हुआ संचरण करता है । वही प्राण जब प्रयत्न, कर्म और बल—इन विषयों में प्रवृत्त होता है, तब अध्यात्म के ज्ञाता उसे उदान कहते हैं । वही प्राण जब मनुष्य देह की प्रत्येक संधि में व्याप्त हो जाता है, तब वह व्यान कहलाता है । त्वचा आदि सब धातुओं में व्याप्त जठरानल प्राण आदि वायुओं की प्रेरणा से अन्न आदि रसों, त्वचा आदि धातुओं और पित्त आदि दोषों को परिपक्व कर सम्पूर्ण शरीर में संचार करता है । प्राण आदि वायुओं के पारस्परिक संयोग से एक संघर्ष की उत्पत्ति होती है, उससे उत्पन्न उत्ताप को जठरानल समझो । वही देहधारियों द्वारा भक्षण किये गए अन्न को पचाता है । समान और उदान वायुओं के मध्य में ही प्राण-अपान की स्थिति है । उनसे उत्पन्न हुआ जठरानल अन्न का परिपाक करता तथा उसके रस से इस देह को भले प्रकार पुष्ट करता है । नाभि से पायुपर्यंत इस जठरानल का स्थान है ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इसी को 'गुदा' कहते हैं। उसी स्थान से सब प्राणों में नाडीमार्ग प्रकट होते हैं। गुदा से अग्नि के वेग को लेकर प्राण गुदान्त में टकराता और वहाँ से ऊपर उठकर जठराग्नि को भी ऊपर उठाता है ॥३०१-३०८॥

पक्वाशयस्त्वधो नाभ्यामूर्ध्वमामाशयः स्थितः ।
नाभिमध्ये शरीरस्य प्राणाः सर्वे प्रतिष्ठिताः ॥३०९
प्रवृत्ता हृदयात् सर्वे तिर्यगूर्ध्वमधस्तथा ।
वहन्त्यन्नरसान् नाड्यो दशप्राणप्रचोदिताः ॥३१०
योगनामेष मार्गस्तु येन गच्छन्ति तत् परम् ।
जितक्लमाः समा धीरा मूर्धन्यात्मानमादधुः ।
एवं सर्वेषु विततौ प्राणापानौ हि देहिषु ॥३११
तावग्निसहितौ ब्रह्मन् विद्धि वै प्राणमात्मनि ।
एकादशविकारात्मा कलासम्भारसंभृतः ।
मूर्तिमन्तं हि तं विद्धि नित्यं योगजितात्मकम् ॥३१२
तस्मिन् यः संस्थितो ह्यग्निर्नित्यं स्थाल्यामिवाहितः ।
आत्मानं तं विजानीहि नित्यं योगजितात्मकम् ॥३१३
देवो यः संस्थितस्तस्मिन्नम्बिन्दुरिव पुष्करे ।
क्षेत्रज्ञं तं विजानीहि नित्यं योगजितात्मकम् ॥३१४
जीवात्मकानि जानीहि रजः सत्त्वं तमस्तथा ।
जीवमात्मगुणं विद्धि तथाऽऽत्मानं परात्मकम् ॥३१५

नाभि के नीचे पक्वाशय है और ऊपर आमाशय। देह स्थित समस्त प्राण नाभि में ही प्रतिष्ठित हैं। नाड़ियाँ हृदय से नीचे-ऊपर, अगल-बगल फैली हुई हैं। वे दस प्राण वायुओं द्वारा प्रेरित होकर अन्न के रसों को देह के सभी अङ्गों में पहुंचाती हैं। जिन्होंने सम्पूर्ण क्लेशों पर विजय प्राप्त करली है, जो समदर्शी और धैर्यवान् हैं, जिन्होंने अपने प्राणमय आत्मा को मस्तक में स्थापित कर लिया है, उन योगियों के लिए यह मार्ग है, जिसके द्वारा वे परब्रह्म को प्राप्त होते हैं। इस प्रकार सभी जीवात्माओं के देह में यह प्राण और अपान वायु स्थित हैं। वे प्राण और अपान जठरानल के साथ रहते है। प्राण को आत्मा में स्थित

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

समझो। आत्मा ग्यारह इन्द्रिय रूप विकारों तथा सोलह कलाओं के समूह से युक्त है। वही देह को धारण करने वाला तथा नित्य है। उसने योगबल से मन और इन्द्रिय को अपने वश में किया हुआ है। इस प्रकार आत्मा के विषय में जानो। जैसे बर्तन में अग्नि रखी हो, वैसे ही पूर्वोक्त कला समूह रूपी प्रकाश स्वरूप आत्मा सदा देह में स्थित रहता है। वह नित्य तथा योगबल से मन बुद्धि को अपने अधीन रखता है, उसे जानो। जैसे कमल पत्र पर पड़ी हुई जल की बूँदें निर्लिप्त होती हैं, वैसे ही ये आत्मा रूपी देवता कलात्मक देह में निर्लिप्त भाव से निवास करता है। वही क्षेत्रज्ञ है, आप उसे जानें। वह योग-बल से मन बुद्धि को वश करने वाला एवं नित्य है। सत्त्व, रज और तम यह तीनों गुण जीवात्मा के अन्तःकरण के विकार हैं। जीवात्मा का गुण तो आत्मा और परमात्म-स्वरूप है ॥३०६-३१५॥

अचेतनं जीवगुणं वदन्ति
स चेष्टते चेष्टयते च सर्वम्।
ततः परं क्षेत्रविदो वदन्ति
माकल्पयद् यो भुवनानि सप्त ॥३१६
एवं सर्वेषु भूतेषु भूतात्मा सम्प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्रयया बुद्धया सूक्ष्मया ज्ञानवेदिभिः ॥३१७
चित्तस्य हि प्रसादेन हन्ति कर्म शुभाशुभम्।
प्रसन्नात्माऽऽत्मनि स्थित्वा सुखमानन्त्यमश्नुते ॥३१८
लक्षणं तु प्रसादस्य यथा तृप्तः सुखं स्वपेत्।
निवाते वा यथा दीपो दीप्येत् कुशलदीपितः ॥३१९
पूर्वरात्रे परे चैव युञ्जानः सततं मनः।
लघ्वाहारो विशुद्धात्मा पश्यन्नात्मानमात्मनि ॥३२०
प्रदीप्तेनेव दीपेन मनोदीपेन पश्यति।
दृष्ट्वाऽऽत्मानं निरात्मानं स तदा विप्रमुच्यते ॥३२१
सर्वोपायैस्तु लोभस्य क्रोधस्य च विनिग्रहः।
एतत् पवित्रं लोकानां तपो वै संक्रमो मतः ॥३२२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शरीर के तत्त्व को जानने वाले महात्मा पुरुष जड़ शरीर को जीव का भोग्य कहते हैं। शरीर के भीतर निवास करता हुआ वह जीव स्वयं चेष्टाशील होकर देह और इन्द्रियों को चेष्टाओं में प्रवृत्त करता है। सातों भुवनों के निर्माता परमात्मा को ज्ञानी पुरुष जीवात्मा से श्रेष्ठ कहते हैं। इस प्रकार सभी भूतों के आत्मा रूप परमेश्वर सब जीवों के अन्तर में प्रकाशित हैं। ज्ञानीजन अपनी श्रेष्ठ और सूक्ष्म बुद्धि से ही उनके दर्शन कर पाते हैं। मनुष्य अपने चित्त की स्वच्छता से ही सब शुभाशुभ कर्म को नष्ट कर देता है। जिसका अन्तःकरण प्रसन्न है, वह स्वयं में ही स्थित होकर अक्षय सुख का भागी होता है। जैसे भोजन आदि से तृप्त हुआ मनुष्य सुखपूर्वक शयन करता है और जैसे वायुहीन स्थान में चतुर व्यक्ति द्वारा जलाया हुआ दीपक निश्चल भाव से प्रदीप्त रहता है, चित्त की पवित्रता का लक्षण भी वैसा ही है। मनुष्य को हल्का भोजन करना और अन्तकरण शुद्ध रखना चाहिए। रात्रि के प्रथम और अन्तिम पहर में अपना मन सदा परमात्म-चिन्तन में लगावे। इस प्रकार परमात्मा के साक्षात्कार का निरन्तर अभ्यास करने वाला पुरुष प्रज्वलित दीपक के समान, अपने मनोमय दीपक द्वारा निराकार ब्रह्म का साक्षात् कर तुरन्त मुक्त हो जाता है। सभी उपायों से लोभ और क्रोध की वृत्तियों को वश में करे। विश्व में यही पवित्र तप और भवसागर से पार करने वाला सेतु है ॥३१६-३२२॥

नित्यं क्रोधात् तपो रक्षेद् धर्मं रक्षेच्च मत्सरात्।
विद्यां मानापमानाभ्यामात्मानं तु प्रमादतः ॥३२३

आनृशंस्यं परो धर्मः क्षमा च परमं बलम्।
आत्मज्ञानं परं ज्ञानं सत्यं व्रतपरं व्रतम् ॥३२४

सत्यस्य वचनं श्रेयः सत्यं ज्ञानं हितं भवेत्।
यद् भूतहितमत्यन्तं तद् वै सत्यं परं मतम् ॥३२५

यस्य सर्वं समारम्भा निराशीर्बन्धनाः सदा।
त्यागे यस्य हुतं सर्वं स त्यागी स च बुद्धिमान् ॥३२६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यतो न गुरुरप्येनं श्रावयेदुपपादयेत् ।
तं विद्याद् ब्रह्मणो योगं वियोगं योगसंज्ञितम् ॥३२७
न हिंस्यात् सर्वभूतानि मैत्रायणगतश्चरेत् ।
नेदं जीवितमासाद्य वैरं कुर्वीत केनचित् ॥३२८
आकिञ्चन्य सुसंतोषो निराशित्वमचापलम् ।
एतदेव परं ज्ञानं सदात्मज्ञानमुत्तमम् ॥३२९

क्रोध से तप को, द्वेष से धर्म को, मानापमान से विद्या को और प्रमाद से स्वयं को सदा दूर रखना चाहिए । क्रूरता का न रखना सबसे श्रेष्ठ धर्म है, क्षमा सबसे बड़ा बल है, सत्य सर्वश्रेष्ठ तप है, और परमात्मा का तत्व-ज्ञान ही सर्वोत्तम ज्ञान है । सत्य भाषण सदा कल्याण जनक है । यथार्थ ज्ञान सदा हितकारी होता है । जिससे प्राणियों का अत्यन्त हित होता हो, वही सर्वश्रेष्ठ तप कहा गया है । जिसके सभी आयोजन किसी कामना के बन्धन में नहीं होते तथा जिसने अपना सर्वस्व त्याग की अग्नि में होम दिया है, वही पुरुष त्यागी और बुद्धिमान है । इसलिए दिखाई पड़ने वाले जगत से वियोग कराने वाले तथा 'योग' नाम से विख्यात इस ब्रह्मयोग को स्वयं जान कर सम्पादित करे । गुरु इसे किसी अपात्र शिष्य को न सुनावे । किसी जीव की हिंसा न करे, सभी में मित्रभाव रखता हुआ विचरण करे । इस दुर्लभ मनुष्य-देह को प्राप्त कर किसी से वैर न करे । कुछ भी संग्रह न करे, सभी दशाओं में अत्यन्त सन्तुष्ट रहे और कामना तथा लोलुपता को छोड़ दे । यही परम ज्ञान एवं सत्य रूप श्रेष्ठ आत्मज्ञान है ॥३२३-३२९॥

परिग्रहं परित्यज्य भवेद् बुद्धया यतव्रतः ।
अशोकं स्थानमाश्रित्य निश्चलं प्रेत्य चेह च ॥३३०
तपोनित्येन दान्तेन मुनिना संयतात्मन ।
अजितं जेतुकामेन भाव्यं सङ्क्लेशसङ्क्षय ॥३३१
गुणागुणमनासङ्गमेककार्यमनन्तरम् ।
एतत् तद् ब्रह्मणो वृत्तमाहुरेकपदं सुखम् ॥३३२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परित्यजति यो दुःखं सुखं चाप्युभयं नरः ।
ब्रह्म प्राप्नोति सोऽत्यन्तमसङ्गेन च गच्छति ।।३३३
यथाश्रुतमिदं सर्वं समासेन द्विजोत्तम ।
एतत् ते सर्वमाख्यातकिं भूयःश्रोतुमिच्छसि ।।३३४

इहलोक-परलोक के सभी भोगों और सब प्रकार के संग्रहों का त्याग करे और शोक रहित निश्चल परम धाम को लक्ष्य में रखकर बुद्धि के द्वारा मन और इन्द्रियों को वश में करे। जो मनुष्य जितेन्द्रिय है, जिसने मन को वश में कर लिया है और जो अजित पद पर विजय पाने की कामना रखता है, उस नित्य तप में लगे रहने वाले मुनि को आसक्तिप्रद भोगों से बचे रहना चाहिये। गुण में रहता हुआ भी जो गुणों से रहित है, निर्लिप्त है और एक मात्र अन्तरात्मा द्वारा ही साध्य है, जिसकी प्राप्ति में अविद्या ही रोड़ा है वही ब्रह्म का अद्वितीय नित्य पद है तथा वहाँ सुख स्वरूप है। जो मनुष्य दुःख के साथ सुख का भी त्याग कर देता है, वही अनन्त ब्रह्मपद को प्राप्त होता है। आसक्ति-रहित होने पर भी उसी पद की प्राप्ति होती है। विप्रवर! जैसा मैंने सुना है, वैसा सब संक्षेप में तुम्हें सुना दिया है। अब और क्या सुनना चाहते हो ? ।।३३०-३३४।।

एवं सकथिते कृत्स्ने मोक्षधर्मे युधिष्ठिर ।
दृढप्रीतमना विप्रो धर्मव्याधमुवाच ह ।।३३५
न्याययुक्तमिदं सर्वं भवता परिकीर्तितम् ।
न तेऽस्त्यविदितं किंचिद्धर्मेष्विह हि दृश्यते ।।३३६
प्रत्यक्षं मम यो धर्मस्तं च पश्य द्विजोत्तम ।
येन सिद्धिरियं प्राप्ता मया ब्राह्मणपुङ्गव ।।३३७
उत्तिष्ठ भगवन् क्षिप्रं प्रविश्याभ्यन्तरं गृहम् ।
द्रष्टुमर्हसि धर्मज्ञ मातरं पितरं च मे ।।३३८
इत्युक्तः स प्रविश्याथ ददर्श परमार्चितम् ।
सौधं हृद्यं चतुःशालमतीव च मनोरमम् ।।३३९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवतागृहसंकाशं दैवतैश्च सुपूजितम् ।
शयनासनसम्बाधं गन्धश्च परमैर्युतम् ।।३४०
तत्र शुक्लाम्बरधरो पितरावस्य पूजितौ ।
कृताहारौ तु संतुष्टावुपविष्टौ वरासने ।
धर्मव्याधस्तु तौ दृष्ट्वा पादेषु शिरसापतत् ।।३४१
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ धर्मज्ञ धर्मस्त्वामभिरक्षतु ।
प्रीतौ स्वस्तव शौचेन दीर्घमायुरवाप्नुहि ।।३४२
गतिमिष्टां तपो ज्ञान मेधां च परमां गतः ।
सत्पुत्रेण त्वया पुत्र नित्यं काले सुपूजितौ ।।३४३

मार्कण्डेयजी ने कहा—युधिष्ठिर ! धर्मव्याध के इस प्रकार पूर्णरूप से मोक्ष-धर्म का वर्णन करने पर कौशिक ने अत्यन्त प्रसन्न हो कर उसके प्रति कहा । तुमने जो कुछ कहा है, वह सब न्यायपूर्ण है । मैं समझता हूं कि धर्म विषयक कोई भी ऐसी बात नहीं, जिसका ज्ञान तुम्हें न हो । धर्म व्याध बोला—विप्रवर । अब मेरा जो प्रत्यक्ष धर्म मुझे सिद्धि प्राप्त कराने वाला है, उसके दर्शन करिये । भगवन् ! आप धर्म के जानने वाले हैं, उठ कर घर में चलने की कृपा करें और वहाँ मेरे माता-पिता का दर्शन करें । मार्कण्डेयजी ने कहा—धर्मव्याध की बात सुन कर कौशिक ब्राह्मण ने घर में जाकर देखा—स्वच्छ घर, लिपा-पुता, चार कमरों से युक्त,मन को मोहने वाला, देवस्थान-सा प्रतीत होता था । देवगण भी उस का आदर करते थे । एक ओर स्वर्णमय शय्या और दूसरी ओर बैठने के लिए आसन रखे थे । वहाँ धूप, चन्दन, केसर आदि की श्रेष्ठ सुगन्ध फैली हुई थी । भोजन करके सन्तुष्ट हुए व्याध के माता-पिता एक सुन्दर आसन पर बैठे थे । उनके देह पर श्वेत वस्त्र सुशोभित थे । पुष्प, चन्दन आदि के द्वारा उनका पूजन किया गया था । धर्मव्याध ने उन्हें देखते ही अपना मस्तक उनके चरणों में रखा और पृथ्वी में लेट कर साष्टाँग प्रणाम किया तब वृद्ध माता-पिता बोले—बेटा, उठो, तुम धर्म के ज्ञाता हो । धर्म तुम्हारी सब ओर से रक्षा करे । तुम्हारे आचरण और सेवा से हम दोनों अत्यन्त प्रसन्न हैं । तुम दीर्घायु हो । तुमने श्रेष्ठ गति, तप, ज्ञान और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उत्तम बुद्धि प्राप्त की है। तुम श्रेष्ठ पुत्र हो। तुमने नियम पूर्वक नित्य ही हमारा पूजन किया है ॥३३५-४३॥

सुखमावां वसावोऽत्र देवलोकगताविव ।
न तेऽन्यद् दैवतं किंचिद् दैवतेष्वपि वर्तते ।
प्रयतत्वाद् द्विजातीनां दमेनासि समन्वितः ॥३४४
पितुः पितामहा ये च तथैव प्रपितामहाः ।
प्रीतास्ते सततं पुत्र दमेनावां च पूजया ॥३४५
मनसा कर्मणा वाचा शुश्रूषा नैव हीयते ।
न चान्या हि तथा बुद्धिर्दृश्यते साम्प्रतं तव ॥३४६
जामदग्न्येन रामेण यथा वृद्धौ सुपूजितौ ।
तथा त्वया कृतं सर्वं तद्विशिष्टं च पुत्रक ॥३४७
ततस्तं ब्राह्मणं ताभ्यां धर्मव्याधो न्यवेदयत् ।
तौ स्वागतेतेन तं विप्रमर्चयामासतुस्तदा ॥३४८
प्रतिपूज्य च तां पूजां द्विजः पप्रच्छ तावुभौ ।
सुपुत्राभ्यां सभृत्याभ्यां कच्चिद् वां कुशलं गृहे ॥३४९
कुशलं नौ गृहे विप्र भृत्यवर्गे च सर्वत्रः ।
कच्चित् त्वमप्यविघ्नेन सम्प्राप्तो भगवन्निति ॥३५०

इस घर में हम ऐसे सुखी रहते हैं, जैसे देवलोक में हों। देवताओं में भी हमारे अतिरिक्त तुम्हारे कोई अन्य देवता नहीं हैं। तुम हमको ही देवता मानते हो। अपने मन को पवित्र और संयम में रखते हो, इसलिए द्विजोचित शम-दम से युक्त हो। वत्स ! मेरे पिता और उनके भी पिता आदि पूर्व पुरुषा तुम्हारे इन्द्रिय संयम से प्रसन्न रहते हैं और हम दोनों तो तुम्हारे द्वारा की जाने वाली सेवा तथा सत्कार से अत्यन्त सन्तुष्ठ हैं ही। मन, वाणी और कर्म के द्वारा भी कभी तुम हम दोनों की सेवा से विमुख नहीं होते। इस समय भी तुम्हारा विचार इसी प्रकार का है। महर्षि परशुराम ने अपने माता-पिता की जैसी सेवा-सुश्रूषा की थी, वैसी ही अथवा उससे भी अधिक सेवा तुमने हमारी की है। फिर धर्मव्याध ने अपने माता पिता को कौशिक ब्राह्मण का परिचय दिया और उन्होंने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वागत करते हुए ब्राह्मण की पूजा की। कौशिक ब्राह्मण ने उनके द्वारा की गई पूजा को स्वीकार कर कृतज्ञ होते हुए उनसे प्रश्न किया—आप दोनों अपने इस घर में, अपने पुत्र और सेवकादि के साथ कुशल पूर्वक तो हैं? आपका स्वास्थ्य तो ठीक रहता है? वृद्धों ने कहा—ब्रह्मन्! हम इस घर में कुशलपूर्वक हैं। हमारे सेवक और बुटुम्बीजन भी सकुशल हैं। अब आप अपनी कहें कि यहाँ तक कुशलपूर्वक तो आ पहुँचे? मार्ग में किसी प्रकार का विघ्न तो उपस्थित नहीं हुआ? ॥३४४-३५०॥

बाढमित्येव तौ विप्रः प्रत्युवाच मुदान्वितः ।
धर्मव्याधो निरीक्ष्याथ ततस्तं वाक्यमब्रवीत् ॥३५१
पिता माता च भगवन्नेतौ मद्दैवतं परम् ।
यद् दैवतेभ्यः कर्तव्यं तदेताभ्यां करोम्यहम् ॥३५२
त्रयस्त्रिंशद् यथा देवाः सर्वे शक्रपुरोगमाः ।
सम्पूज्याः सर्वलोकस्य तथा वृद्धाविमौ मम ॥३५३
उपाहारानाहरन्तो देवतानां यथा द्विजाः ।
कुर्वन्ति तद्वदेताभ्यां करोम्यहमतन्द्रितः ॥३५४
एतौ मे परमं ब्रह्मन् पिता माता च दैवतम् ।
एतौ पुष्पैः फलैः रत्नैस्तोषयामि सदा द्विज ॥३५५
एतावेवाग्नयो मह्यं यान् वदन्ति मनोषिणः ।
यज्ञा वेदाश्च चत्वारः सर्वमेतौ मम द्विज ॥३५६
एतदर्थं मम प्राणा भार्या पुत्रः सुहृज्जनः ।
सपुत्रदारः शुश्रूषां नित्यमेव करोम्यहम् ॥३५७

मार्कण्डेयजी ने कहा—राजन्! ब्राह्मण ने उनके प्रश्न का प्रसन्नता से उत्तर दिया—हाँ मुझे किसी प्रकार का कष्ट नहीं हुआ। फिर अपने माता पिता की ओर देखते हुए धर्मव्याध ब्राह्मण से बोला। व्याध ने कहा—भगवन्! यह माता-पिता ही मेरे लिए तो प्रमुख देव हैं। जो कार्य देवताओं के लिए करने योग्य है, वह कार्य मैं इन दोनों के लिए करता हूं। सम्पूर्ण विश्व के लिए जैसे इन्द्रादि तेतीस देवता पूजनीय हैं,

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैसे ही मेरे लिए मेरे यह वृद्ध माता-पिता पूजनीय हैं। ब्राह्मण जैसे देवताओं के लिए विभिन्न प्रकार के उपहार भेंट करते हैं, वैसे ही मैं इन के लिए करता हूँ, मुझे इनकी सेवा करने में किसी प्रकार का आलस्य नहीं है। ब्रह्मन्! मेरे यह माता-पिता ही मेरे लिए सर्वोत्तम देव हैं और इन्हीं को मैं फल-फूल, रत्नादि से सदैव सतुष्ट रखता हूं। ब्रह्मन्! विद्वान् जिन्हें अग्नि कहते हैं, वह मेरे लिए मेरे माता-पिता ही हैं। मैं चारों वेद और यज्ञ सभी कुछ इन्हीं को मानता हूं।मेरे प्राण, स्त्री, पुत्र और सुहृद सब इन्हीं की सेवा-सुश्रूषा के लिए हैं, जिसे मैं अपने पुत्र, पत्नी सहित सदा किया करता हूँ ॥३५१-३५७॥

स्वयं च स्नापयाभ्येतौ यथा पादौ प्रधावये ।
आहारं च प्रयच्छामि स्वयं च द्विजसत्तम ॥३५८
अनुकूलं तथा वच्मि विप्रियं परिवर्जये ।
अधर्मेणापि सयुक्तं प्रियामाभ्यां करोम्यहम् ॥३५९
धर्मेमेव गुरुं ज्ञात्वा करोमि द्विजसत्तम ।
अतन्द्रितः सदा विप्र शुश्रूषां वै करोम्यहम् ॥३६०
पञ्चैव गुरवो ब्रह्मन् पुरुषस्य बुभूषतः ।
पिता माताग्निरात्मा च गुरुश्च द्विजसत्तम ॥३६१
एतेषु यस्तु वर्तेत सम्यगेव द्विजोत्तम ।
भवेयुरग्नयस्तस्य परिचीर्णास्तु नित्यशः ।
गार्हस्थ्ये वर्तमानस्य एष धर्मः सनातनः ॥३६२
गुरुं विवेद्य विप्राय तौ मातापितरावुभौ ।
पुनरेव स धर्मात्मा व्याधो ब्राह्मणमब्रवीत् ॥३६३
प्रवृत्तचक्षुर्जातोऽस्मि सम्पश्य तपसो बलम् ।
यदर्थमुक्तोऽसि तया गच्छ त्वं त्वमिथिलामिति ॥३६४
पतिशुश्रूषपरया दान्तया सत्यशीलया ।
मिथिलायां वसेद् व्याधः सते धर्मान् प्रवक्ष्यति। ।३६५

विप्रवर! इन्हें स्नान मैं ही कराता, मैं ही इनके चरण धोता और मैं ही इनके लिए भोजन परोसता हूँ। मैं सदा इनके मनोनुकूल बात कहता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हूँ। इन्हें जो अप्रिय लगे वैसी बात कभी नहीं बोलता। यदि यह अधर्म युक्त कार्य को पसंद करें तो मैं उसे भी कर सकता हूं। इस प्रकार माता पिता के सेवा-धर्म को ही महान् समझता हुआ मैं, उसका सदा पालन करता हुआ, इनकी सेवा में रत रहता हूं। विप्रवर ! उन्नति की कामना वाले पुरुष के पाँच ही गुरु हैं—माता, पिता, अग्नि, परमात्मा और गुरु। विप्रवर ! इनके प्रति श्रेष्ठ बर्ताव करने वाले गृहस्थ के द्वारा सदैव सब अग्नियों की सेवा सम्पन्न होती रहेगी, यही सनातन धर्म है। मार्कण्डेयजी ने कहा—राजन् ! धर्मात्मा धर्मव्याध ने अपने माता-पिता स्वरूप गुरु जनों का कौशिक ब्राह्मण को दर्शन करा कर उससे फिर बोला। विप्रवर ! माता-पिता की सेवा ही मेरा तप है। इस तप का प्रभाव देखिये। मुझे दिव्य दृष्टि मिल गयी है, जिसके कारण पतिसेवा में सदा तत्पर रहने वाली जितेन्द्रिय एवं सदाचाररत उस पतिव्रता ने आपसे कहा था कि आप मिथिलापुरी को जाइये। वहाँ धर्म व्याध रहता है, वह आपको धर्मोपदेश करेगा ॥३५८-३६५॥

पतिव्रतायाः सत्यायाः शीलाढ्यायाः यतव्रत ।
संस्मृत्य वाक्यं धर्मज्ञ गुणवानसि मे मतः ॥३६६
यतू तदा त्वं द्विजश्रेष्ठ तयोक्तो मां प्रति प्रभो ।
दृष्टमेव तया सम्यगेकपत्न्या न संशय ॥३६७
त्वदनुग्रहबुद्धया तु विप्रैतद् दर्शितं मया ।
वाक्यं च शृणु मे तात यत् ते वक्ष्ये हितं द्विज ॥३६८
त्वया विनिकृता माता पिता च द्विजसत्तम ।
अनिसृष्टोऽसि निष्क्रान्तो गृहात् ताभ्यामनिन्दित ॥३६९
वेदोच्चारणकार्यार्थमयुक्तं तत् त्वया कृतम् ।
तव शोकेन वृद्धौ तावपन्धीभूतौ तपस्विनौ ॥३७०
तौ प्रसादयितुं गच्छ मा त्वां धर्मोऽत्यगादयम् ।
तपस्वी त्वं महात्मा च धर्मे च निरतः सदा ॥३७१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ब्राह्मण ने कहा—श्रेष्ठव्रती धर्मव्याध ! उस सत्य परायणा और उत्तम शील वाली पतिव्रता के वचनों का ध्यान करके मुझे तुम्हारे श्रेष्ठगुण-सम्पन्न होने का दृढ़ विश्वास हो गया है। धर्मव्याध बोला—विप्रवर ! उस पतिव्रता ने आपसे मेरे विषय में जो कुछ कहा, वह सब ठीक है। अवश्य ही उसने अपने पातिव्रत्य के बल से सब कुछ प्रत्यक्ष देखा है। ब्रह्मन् ! आप पर अनुग्रह करने के लिए ही मैंने यह सब आपसे कहा है। आप मेरी बात सुनें, आपके लिए जो हित करने वाली बात हैं, वही आपसे कहूंगा। विप्रवर ! आपने माता-पिता की उपेक्षा की है उनकी आज्ञा प्राप्त किये बिना ही अपने घर से निकल पड़े हैं। हे अनिन्दित ! आपका यह कार्य अनुचित रहा है, क्योंकि आपके शोक से वे वृद्ध तपस्वी माता-पिता नेत्रहीन हो गये हैं। आप उन्हें प्रसन्न करने के लिए घर जायें, इससे आपका धर्म नष्ट नहीं होगा। आप तपस्वी, महात्मा और सदा धर्म में लगे रहने वाले हैं ॥३६६-३७१॥

सर्वमेतदपार्थं ते क्षिप्रं तौ सम्प्रसादय ।
श्रद्दधस्व मम ब्रह्मन् नान्यथा कर्तुमर्हसि ।
गम्यतामद्य विप्रर्षे श्रेयस्ते कथयाम्यहम् ॥३७२

यदेतदुक्तं भवता सर्वं सत्यमसंशयम् ।
प्रीतोऽस्मि तव भद्रं ते धर्माचारगुणान्वित ॥३७३
दैवतप्रतिमो हि त्व यस्त्वं धर्ममनुव्रतः ।
पुराणं शाश्वतं दिव्यं दुष्प्राप्यमकृतात्मभिः ॥३७४

मातापित्रोः सकाशं हि गत्वा त्वं द्विजसत्तम ।
अतन्द्रितः कुरु क्षिप्रं मातापित्रोर्हि पूजनम् ।
अतः परमहं धर्मं नान्य पश्यामि कंचन ॥३७५
इहाहमागतो दिष्ट्या दिष्ट्या मे सङ्गतं त्वया ।
ईदृशा दुर्लभा लोके नरा धर्मप्रदर्शकाः ॥३७६

एको नरसहस्रेषु धर्मविद् विद्यते न वा ।
प्रीतोऽस्मि तव सत्येन भद्रं ते पुरुषर्षभ ॥३७७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पतमानोऽद्य नरके भवतास्मि समुद्धृतः ।
भवितव्यमथैवं च यद् दृष्टोऽसि मयानघ ।।३७८

परन्तु, माता-पिता की असंतुष्टि से आपका सम्पूर्ण धर्म और व्रत निरर्थक हो गया, इसलिए शीघ्र जाकर उन्हें प्रसन्न करिये । ब्रह्मन् ! मेरी बात पर विश्वास कर, इसके विपरीत न कीजिये । आप अपने घर जा कर माता पिता की सेवा करिये । यह मैं आपके परम हित की बात कह रहा हूं । ब्राह्मण ने कहा—धर्म, सदाचार और सद्गुण-सम्पन्न व्याध ! तुम्हारा कल्याण हो । तुमने जो कुछ कहा है वह निःसन्देह सत्य है । मैं तुम पर अत्यन्त प्रसन्न हूं । व्याध ने कहा—ब्रह्मन् ! आप देव-तुल्य हैं । क्यों कि आपने पुरातन सनातन, दिव्य तथा मन को वश में न करने वालों के लिए दुर्लभ धर्म में अपना मन लगाया है । विप्रवर ! आप माता-पिता के निकट जाकर, आलस्य-रहित हो उनकी सेवा में रत हों, यही सर्व-श्रेष्ठ धर्म है । ब्राह्मण ने कहा—मेरा अत्यन्त सौभाग्य हुआ जिससे यहाँ आ सका और तुम्हारा सत्संग प्राप्त कर सका । तुम्हारे जैसे धर्म मार्ग-दर्शक इस संसार में दुर्लभ ही हैं । हजारों मनुष्यों में कितने व्यक्ति धर्म के तत्व को जानते हैं—यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता । पुरुष श्रेष्ठ ! तुम्हारा कल्याण हो । तुम्हारे सत्य कर्म पर मैं बहुत प्रसन्न हूं । हे निष्पाप ! मैं नरक में जा रहा था, तुमने मुझे बचा लिया । इस प्रकार मुझे जब तुम्हारा दर्शन हो गया, तब तुम्हारे उपदेश से भविष्य में भी सभी कुछ होगा ।।३७२-३७८।।

राजा ययातिर्दौहित्रैः पतितस्तारितो यथा ।
सद्भिः पुरुषशार्दूल तथाहं भवता द्विजः ।।३७९
मातापितृभ्यां शुश्रूषां करिष्ये वचनात् तव ।
नाकृतात्मा वेदयति धर्माधर्मविनिश्चयम् ।।३८०
दुर्ज्ञेयः शाश्वतो धर्मः शूद्रयोनौ हि वर्तते ।
न त्वां शूद्रमहं मन्ये भवितव्यं हि कारणम् ।।३८१
येन कर्मविशेषेण प्राप्तेयं शूद्रता त्वया ।
एतदिच्छामि विज्ञातुं तत्त्वेन हि महामते ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कामया ब्रूहि मे सर्वं सत्येन प्रयतात्मना ॥३८२

अनतिक्रमणीया वै ब्राह्मणा मे द्विजोत्तम ।
शृणु सर्वं मिदं वृत्तं पूर्वदेहे ममानघ ॥३८३

अहं हि ब्राह्मणः पूर्वमासं द्विजवरात्मजः ।
वेदाध्यायी सुकुशलो वेदाङ्गानां च पारग ॥३८४

आत्मदोषकृतैर्ब्रह्मन्नवस्थामाप्तवानिमाम् ।
कश्चिद् राजा मम सखा धनुर्वेदपरायणः ।
संसर्गाद् धनुषि श्रेष्ठस्तोऽहमभवं द्विज ॥३८५

जिस प्रकार राजा ययाति के स्वर्ग से गिरने पर उनके श्रेष्ठ स्वभाव वाले दौहित्रों ने उनका पुनः उद्धार किया। इसी प्रकार तुमने भी मुझे नरक में पतित होने से बचा लिया है तुम्हारे कथनानुसार मैं अब माता-पिता की सेवा करूँगा। जिस व्यक्ति का अन्तःकरण शुद्ध नहीं है वह धर्म-अधर्म का निर्णय किस प्रकार कर सकता है? जानने में अत्यन्त कठिन यह सनातन धर्म शूद्र योनि से मनुष्य में भी विद्यमान है! मैं तुम्हें शूद्र नहीं मानता। क्योंकि तुम्हारा शूद्र योनि में जिस प्रकार जन्म हो गया है, उसका अवश्य ही कोई कारण होना चाहिए। महामते! जिस विशेष कर्म के प्रभाव से यह शूद्र योनि तुम्हें मिली है, उसे जानने को मैं उत्सुक हूँ। सत्य और पवित्र अन्तःकरण के द्वारा तुम मुझे स्वेच्छा पूर्वक सब कुछ बताओ। धर्मव्याध ने कहा—ब्रह्मन्! ब्राह्मणों का अपराध मुझे कभी नहीं करना चाहिये। निष्पाप! मेरे पूर्व जन्म के शरीर द्वारा जो घटना हुई, उसे कहता हूँ, आप सुनें। पूर्व जन्म में मैं एक श्रेष्ठ ब्राह्मण का पुत्र तथा वेदाध्ययन परायण था। विद्याध्ययन में मैं अत्यन्त कुशल था और वेदों में पारंगत माना जाता था। विप्रवर! अपने ही दोष से मैं इस अवस्था को प्राप्त हुआ हूँ। पूर्वजन्म में एक धनुर्वेद परायण राजा से मेरी मित्रता हो गयी और मैं उनके संसर्ग से धनुर्वेद सीखने लगा तथा धनुष के प्रयोग की कला में भी मैंने उत्तम योग्यता प्राप्त कर ली ॥३७६-३८५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एतस्मिन्नेव काले तु मृगयां निर्गतो नृपः ।।३८६
सहितो योधमुख्यैश्च मन्त्रिभिश्च सुसंवृतः ।
ततोऽभ्यहन् मृगांस्तत्र सुबहूनाश्रमं प्रति ।।३८७
अथ क्षिप्तः शिरो घोरो मयापि द्विजसत्तम ।
ताडितश्च ऋषिस्तेन शरेणानतपर्वणा ।।३८८
भूमौ निपतितो ब्रह्मन्नुवाच प्रतिनादयन् ।
नापराध्याम्यहं किंचित् केन पापमिदं कृतम् ।।३८९
मन्वानस्तं मृगं चाहं सम्प्राप्तः सहसा प्रभो ।
अपश्यं तमृषिं विद्धं शरेणानतपर्वणा ।।३९०
अकार्यकरणाच्चापि भृशं मे व्यथितं मन ।
तमुग्रतपसं विप्रं निहतन्तं महीतले ।।३९१
अजानता कृतमिदं मयेत्यहमथाब्रुवम् ।
क्षन्तुमर्हसि मे सर्वमिति चोक्तो मया मुनि ।।३९२
ततः प्रत्यब्रवीद् वाक्यमृषिर्मां क्रोधमूर्च्छित ।
व्याधस्त्वं भविता क्रूर शूद्रयोनाविति द्विज ।।३९३

तभी राजा अपने मन्त्रियों और मुख्य वीरों के सहित आखेट को चले और एक ऋषि के आश्रम के पास अनेक हिंसक पशुओं का सहार किया। विप्रवर ! उस समय मैंने भी एक भीषण बाण चलाया। उसकी गाँठ कुछ झुकी हुई थी, जिससे एक ऋषि की हत्या हो गयी। ब्रह्मन् ! बाण लगते ही ऋषि धराशायी हो गये, उनके आर्त्तनाद से जंगल गूँज उठा। वे बोले—मैं तो किसी का कभी कोई अपराध नहीं करता, फिर यह पाप-कर्म किसने किया है ? प्रभो ! उन्हें हिंसक पशु समझ कर मैंने बाण चलाया था, इसलिए सहसा उनके निकट पहुँच कर देखा कि झुकी हुई गाँठ वाले उस बाण से आहत होकर ऋषि भूमि पर पड़े हैं। न करने योग्य इस पाप के हो जाने से उस समय मेरे मन में अत्यन्त पीड़ा हुई उस समय वे उग्र तपस्वी पृथिवी पर पड़े हुए कराह रहे थे। साहसपूर्वक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मैंने उनसे कहा—मेरे द्वारा अनजाने में यह अपराध बन पड़ा है। इसलिए आप क्षमा कर दें। मेरी बात सुन, क्रोध से व्याकुल हुए ऋषि ने उत्तर दिया—अरे निर्दय ब्राह्मण ! तू शूद्र योनि को प्राप्त होकर व्याध बनेगा ।।३८६-३९३।।

एवं शप्तोऽहमृषिणा तदा द्विजवरोत्तम ।
अभिप्रसादयमृषिं गिरा त्राहीति मां तदा ।।३९४
अजानता मयाकार्यमिदमद्य कृतं मुने ।
क्षन्तुमर्हसि तत् सर्वं प्रसीद भगवन्निति ।।३९५
नान्यथा भविता शाप एवमेतदसंशयम् ।
आनृशंस्यात् त्वहं किंचित् कर्तानुग्रहमद्य ते ।।३९६
शूद्रयोन्यां वर्तमानो धर्मज्ञो हि भविष्यसि ।
मातापित्रोश्च शुश्रूषां करिष्यसि न संशयः ।।३९७
तया शुश्रूषया सिद्धिं महत्त्वं समवाप्स्यसि ।
जातिस्मरश्च भविता स्वर्गं चैव गमिष्यसि ।।३९८
शापक्षये तु निर्वृत्ते भवितासि पुनर्द्विजः ।
एवं शप्तः पुरा तेन ऋषिणास्म्युग्रतेजसा ।।३९९

धर्मव्याध ने कहा—द्विजोत्तम ! जब ऋषि ने इस प्रकार शाप दे डाला, तब मैंने उनसे कहा—भगवन् ! मेरी रक्षा करिये। यह अनुचित कार्य अनजाने में ही मुझ से बन पड़ा है। मेरे अपराध को क्षमा कर प्रसन्न हो जाइये। इस प्रकार मैंने उन्हें प्रसन्न करने का प्रयत्न किया। ऋषि बोले—यह शाप मिथ्या नहीं हो सकता। निःसंदेह ऐसा होगा। परन्तु, मेरे स्वभाव में क्रूरता न होने से मैं तुझ पर कुछ अनुग्रह करता हूँ। तू शूद्र योनि प्राप्त करके भी धर्मज्ञ होगा और माता-पिता की सेवा करेगा। इसमें संदेह नहीं है। उस सेवा से तुझे सिद्धि और महत्व की प्राप्ति होगी। तुझे पूर्व जन्म की बात याद रहेगी और अन्त में तू स्वर्गलोक को प्राप्त होगा। शाप के निवारण होने पर पुनः ब्राह्मण के यहाँ जन्म लेगा। इस प्रकार उन उग्र तेजस्वी महर्षि ने पूर्व काल में मुझे शाप दिया था ।।३९४-३९९।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रसादश्च कृतस्तेन ममैव द्विपदां वर ।
शरं चोद्धृतवानस्मि तस्य वै द्विजसत्तम ।।४००
आश्रमं च मया नीतो न च प्राणैर्व्ययुज्यत ।
एतत् ते सर्वमाख्यातं तथा मम पुराभवत् ।।४०१
अभितश्चापि गन्तव्यं मया स्वर्गं द्विजोत्तम ।।४०२
एवमेतानि पुरुषा दुःखानि च सुखानि च ।
आप्नुवन्ति महाबुद्धे नोत्कण्ठां कर्तुमर्हसि ।।४०३
दुष्करं हि कृतं कर्म जानता जातिमात्मनः ।
लोकवृत्तान्ततत्त्वज्ञ नित्यं धर्मपरायण ।।४०४
कर्मदोषश्च वै विद्वन्नात्मजातिकृतेन ते ।
कञ्चित् कालमुष्यतां वै ततोऽसि भविता द्विजः ।।४०५
साम्प्रतं च मतो मेऽसि ब्राह्मणो नात्र संशयः ।
ब्राह्मणः पतनीयेषु वर्तमानो विकर्मसु ।
दाम्भिको दुष्कृतः प्रायः शूद्रेण सदृशो भवेत् ।।४०६

फिर उन्होंने ही मुझ पर अनुग्रह किया । मैंने उनके देह से बाण निकाला और उन्हें उनके आश्रम पर पहुँचा दिया । परन्तु, उनके प्राण नहीं निकले । द्विजोत्तम ! पूर्व जन्म में मेरे साथ जो घटना हुई, वह सब आपके प्रति मैंने सुना दी । इस जीवन के बाद मुझे स्वर्गलोक में जाना है । ब्राह्मण ने कहा—महामते ! मनुष्यों को इसी प्रकार दुःख-सुख प्राप्त होते रहते हैं । इसलिए आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए । जिस माता-पिता की सेवा रूप कर्म के द्वारा आपको अपने पूर्व जन्म की बातों का स्मरण बना हुआ है, वह कर्म अन्य व्यक्तियों के लिए दुर्लभ है । परन्तु, आपने उसे सुलभ कर लिया है । आप लोक वृत्तान्त के सम्पूर्ण तत्व के ज्ञाता और धर्म में लगे रहने वाले हैं । विद्वन् ! आपको प्राप्त कर्म दोष, आपके पूर्व जन्म के कर्म का ही फल है, इनलिए कुछ समय तक इसी रूप में रह कर आप ब्राह्मण हो जायेंगे । मैं तो आपको अभी से ब्राह्मण मानता हूँ । आपके ब्राह्मण होने में संदेह ही नहीं है । ब्राह्मण होकर भी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पतन के गर्त में गिरा हुआ पापकर्मी और पाखंडी शूद्र के ही समान है ॥४००-४०६॥

यस्तु शूद्रो दमे सत्ये धर्मे च सततोत्थितः ।
तं ब्राह्मणमहं मन्ये वृत्तेन हि भवेद् द्विजः ॥४०७
कर्मदोषेण विषमां गतिमाप्नोति दारुणाम् ।
क्षीणदोषमहं मन्ये चाभितस्त्वां नरोत्तम ॥४०८
कर्तुमर्हसि नोत्कण्ठां त्वद्विधा ह्यविषादिनः ।
लोकवृत्तानुवृत्तज्ञा नित्यं धर्मपरायणाः ॥४०९
प्रज्ञया मानसं दुःखं हन्याच्छारीरमौषधैः ।
एतद् विज्ञानसामर्थ्यं न बालैः समतामियात् ॥४१०
अनिष्टसम्प्रयोगाच्च विप्रयोगात् प्रियस्य च ।
मनुष्या मानसैर्दुःखैर्युज्यन्ते चाल्पबुद्धयः ॥४११
गुणैर्भूतानि युज्यन्ते वियुज्यन्ते तथैव च ।
सर्वाणि नैतदेकस्य शोकस्थानं हि विद्यते ॥४१२
अनिष्टं चान्वितं पश्यंस्तथा क्षिप्रं विरज्यते ।
ततश्च प्रतिकुर्वन्ति यदि पश्यन्त्युपक्रमात् ॥४१३

इसके विपरीत शूद्र होकर भी दम, सत्य एवं धर्म का पालन करने में उद्यत रहे, उसे ब्राह्मण ही समझता हूँ। क्योंकि द्विज तो सदाचार से ही बना जा सकता है। कर्म दोष के ही कारण मनुष्य विषम एवं भयंकर दुर्गति में पड़ता है। परन्तु, मैं समझता हूँ कि आपके सभी कर्मदोष नष्ट हो चुके हैं। इसलिए, आप अपने विषय में कोई चिन्ता न करें। आपके जैसे ज्ञानी पुरुष, जो लोकवृत्त के ज्ञाता तथा धर्म परायण हैं, कभी भी विवाद ग्रस्त नहीं होते। धर्मव्याध बोला—ज्ञानीजन को औषधि सेवन से शारीरिक कष्टों का तथा विवेकी पुरुष को बुद्धि से मानसिक कष्टों का निवारण करना उचित है। ज्ञान की शक्ति यही है। बुद्धिमान को बालकों के समान शोक करना उचित नहीं है। अल्प बुद्धि वाले मनुष्य ही अप्रिय वस्तु की प्राप्ति और प्रिय वस्तु की अप्राप्ति से मानसिक कष्ट पाते हैं। सभी जीव त्रिगुणात्मक पदार्थों से जिस प्रकार संयुक्त होते हैं, वैसे ही उन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वस्तुओं से उनका वियोग भी होता है। इसलिए किसी का संयोग और किसी का वियोग शोक का कारण नहीं होता। किसी कार्य में अनिष्ट का संयोग दिखाई देने पर मनुष्य उससे निवृत्त होजाता है और आरम्भ होने से पूर्व ही अनिष्ट का आभास मिलने पर उसके प्रतीकार का उपाय किया जाता है ॥४०७-४१३॥

शोचतो न भवेत् किंचित् केवलं परितप्यते ।
परित्यजन्ति ये दुःखं सुखं वाप्युभयं नराः ॥४१४
त एव सुखमेधन्ते ज्ञानतृप्ता मनीषिणः ।
असंतोषपरा मूढाः संतोषं यान्ति पण्डिताः ॥४१५

असंतोषस्य नास्त्यन्तस्तुष्टिस्तु परमं सुखम् ।
न शोचन्ति गताध्वानः पश्यन्तः परमां गतिम् ॥४१६
न विषादे मनः कार्यं विषादो विषमुत्तमम् ।
भारयत्यकृतप्रज्ञं बालं क्रुद्ध इवोरगः ॥४१७

यं विषादे ऽभिभवति विक्रमे समुपस्थिते ।
तेजसा तस्य हीनस्य पुरुषार्थो न विद्यते ॥४१८
अवश्यं क्रियमाणस्य कर्मणो दृश्यते फलम् ।
न हि निर्वेदमागम्य किंचित् प्राप्नोति शोभनम् ॥४१९
अथाप्युपायं पश्येत दुःखस्य परिमोक्षणे ।
अशोचन्नारभेतैवं मुक्तश्चाव्यसनी भवेत् ॥४२०

परन्तु, शोक करने से तो संताप ही रह जाता है। जो ज्ञानतृप्त विद्वान् सुख-दुःख दोनों को ही छोड़ देते हैं, वे ही सुखी होते हैं। मूर्खों को असंतोष और ज्ञानियों को सन्तोष की प्राप्ति होती है। असन्तोष का अन्त नहीं मिलता, इसलिए सन्तोष ही परम सुख है। ज्ञान मार्ग को पार करके परमात्मा का साक्षात्कार करने वालों को फिर शोक में नहीं पड़ना होता। विषाद उग्र विष है, इसलिए मन को विषाद युक्त न होने दे। क्योंकि विषाद क्रोधित सर्प के समान अविवेकी और अज्ञानी मनुष्य को मार डालता है। जिस मनुष्य को पराक्रम का अवसर आने पर विषाद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घेर ले, वह तेज से हीन हुए व्यक्ति का कोई पुरुषार्थ नहीं बनता। किये जाने वाले कर्म का फल अवश्य दिखाई देता है। केवल खिन्न होकर बैठे रहने से कभी कोई सुफल प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए दुःख से मुक्त होने के उपाय को अवश्य देखे। शोक और विषाद को त्याग कर कार्यारम्भ करे। इस प्रकार प्रयत्न करने से दुःख से अवश्य ही छुटकारा मिल जाता तथा फिर किसी संकट की प्राप्ति नही होती ।।४१४-४२०।।

भूतेष्वभावं संचिन्त्य ये तु बुद्धेः परं गताः।
न शोचन्ति कृतप्रज्ञाः पश्यन्तः परमां गतिम् ।। २१
न शोचामि च वै विद्वन् कालाकांक्षी स्थितो ह्यहम् ।
एतैर्निदर्शनैर्ब्रह्मन् नावसीदामि सत्तम ।।४२२
कृतप्रज्ञोऽसि मेधावी बुद्धिर्हि विपुला तव ।
नाहं भवन्तं शोचामि ज्ञानतृप्तोऽसि धर्मवित् ।।४२३
आपृच्छेत्वां स्वां स्वस्ति तेऽस्तु धर्मस्त्वां परिरक्षतु ।
अप्रमादस्तु कर्तव्यो धर्मे धर्मभृतां वर ।।४२४
बाढमित्येव तं व्याधः कृताञ्जलिरुवाच ह ।
प्रदक्षिणमथो कृत्वा प्रस्थितो द्विजसत्तमः ।।४२५
स तु गत्वा द्विजः सर्वां शुश्रूषां कृतवांस्तदा ।
मातापितृभ्यां वृद्धाभ्यां यथान्यायं सुशंसितः ।।४२६

संसार के सभी पदार्थों को अनित्य जानकर बुद्धि से पार हुए जो ज्ञानी महापुरुष परब्रह्म को प्राप्त हो गए हैं, वे ब्रह्म-साक्षात्कार करते हुए कभी शोक को प्राप्त नहीं होते। मैं अन्त काल की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, और शोक मग्न कभी नहीं होता। सत्पुरुषों में श्रेष्ठ ! उपरोक्त विचारों का मनन करते रहने से मुझे दुःख अथवा उत्साह–हीनता कभी नहीं व्याप्त होते। ब्राह्मण ने कहा—आप ज्ञानी, मेधावी तथा विशाल बुद्धि वाले हैं, आपको धर्म तत्व का ज्ञान है और ज्ञानानन्द में आप तृप्त रहते हैं। इसलिए आपके विषय में, मैं शोक नहीं करता। अब मैं जाने की अनुमति चाहता हूँ। आपका कल्याण हो। धर्म सदा आपकी रक्षा करे। धर्मात्माओं में श्रेष्ठ व्याध ! धर्म के आचरण में आप कभी प्रमाद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न करें। मार्कण्डेयजी से कहा—युधिष्ठिर ! कौशिक ब्राह्मण की बात सुन कर धर्मव्याध ने हाथ जोड़े और बोला—'अच्छा, अब आप अपने घर को जाँय।' इसके पश्चात् ब्राह्मणों में श्रेष्ठ कौशिक धर्मव्याध की परिक्रमा कर वहाँ से चल दिये। कौशिक ब्राह्मण ने घर जाकर अपने माता-पिता की भले प्रकार सेवा-शुश्रूषा की और तब उसके वृद्ध माता-पिता ने सन्तुष्ट होकर उसकी उचित प्रशंसा की ॥४२१-४२६॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

६-विदुर गीता

ततोऽमृतसमैर्वाक्यैर्ह्लादयन् पुरुषर्षभम् ।
वैचित्रवीर्यं विदुरो यदुवाच निबोध तत् ।।१

उत्तिष्ठ राजन् किं शेषे धारयात्मानमात्मना ।
एषा वै सर्वसत्त्वानां लोकेश्वर परा गतिः ।।२

सर्वे क्षयान्ता निचयाःपतनान्ताःसमुच्छ्रयाः ।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम् ।।३

यदा शूरं च भीरुं च यमः कर्षति भारत ।
तत् किं न योत्स्यन्ति हि ते क्षत्रियाःक्षत्रियर्षभ ।।४

अयुध्यमानो म्रियते युध्यमानश्च जीवति ।
कालं प्राप्य महाराज न कश्चिदतिवर्तते ।।५

अभावादीनि भूतानि भावमध्यानि भारत ।
अभावनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ।।६
न शोचन् मृतमन्वेति न शोचन् म्रियते नरः ।
एवं सांसिद्धिके लोके किमर्थमनुशोचसि ।।७

वैशम्पायनजी ने कहा—हे जनमेजय ! विदुर जी ने अपने अमृतोपम मधुर वचनों के द्वारा पुत्रों के लिये शोकग्रस्त राजा धृतराष्ट्र को जिस प्रकार सान्त्वना दी, उसे ध्यान पूर्वक सुनो । विदुर जी ने कहा—हे राजन् ! उठिये, आप पृथिवी पर क्यों पड़े हैं ? बुद्धि से मन को स्थिर करके विचार कीजिये कि सभी प्राणियों की अन्तिम गति यही है । सभी संग्रहों का अन्त क्षय हो जाना ही है । जितनी भी भौतिक उन्नतियाँ हैं, उन सभी का अन्त में पतन होना है । सभी संयोगों का अन्त वियोग है और सम्पूर्ण जीवन का अन्त निश्चय ही मृत्युरूप से होता है । हे क्षत्रिय-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रेष्ठ ! हे भरतनन्दन ! जब शूरवीर और कायर दोनों प्रकार के व्यक्तियों को खींचकर यमराज ले जाते हैं तो वे क्षत्रिय वीर युद्ध क्यों नहीं करते। हे राजन् ! युद्ध न करने वाले भी मृत्यु को प्राप्त होते हैं। जो युद्ध करता है, वह जीवित भी बच जाता है। जब काल आता है, तब उसका उल्लंघन करने में कोई समर्थ नहीं है। जितने भी देहधारी हैं, वे सभी जन्म से पहिले इस लोक में दिखाई नहीं देते थे। वे बीच में दिखाई देते हैं और अन्त में फिर उनका अभाव हो जाता है। ऐसी अवस्था में उनके लिये संतृप्त क्यों होना चाहिये ? शोक करने वाला मनुष्य न तो मरने वाले के साथ जा सकता है और न मृत्यु को ही प्राप्त हो सकता है। जब लोक की यह स्थिति स्वाभाविक रूप से है, तब आप क्यों शोक करते हैं ? ।।१-७।।

कालः कर्षति भूतानि सर्वाणि विविधान्युत ।
न कालस्य प्रियः कश्चिन्न द्वेष्यः कुरुसत्तम ।।८
यथा वायुस्तृणाग्राणि संवर्तयति सर्वशः ।
तथा कालवशं यान्ति भूतानि भरतर्षभ ।।९
एकसार्थप्रयातानां सर्वेषां तत्र गामिनाम् ।
यस्य कालः प्रयात्यग्रे तत्र का परिदेवना ।।१०
न चाप्येतान् हतान् युद्धे राजञ्शोचितुमर्हसि ।
प्रमाणं यदि शास्त्राणि गतास्ते परमां गतिम् ।।११
सर्वे स्वाध्यायवन्तो हि सर्वे च चरितव्रताः ।
सर्व चाभिमुखाः क्षीणास्तत्र का परिदेवना ।।१२
अदर्शनादापतिताः पुनश्चादर्शनं गताः ।
नैते तव न तेषां त्वं तत्र का परिदेवना ।।१३
हतोऽपि लभते स्वर्गं हत्वा च लभते यशः ।
उभयं नो बहुगुणं नास्ति निष्फलता रणे ।।१४

हे राजन् ! विभिन्न प्रकार के सभी प्राणियों को काल खींच लेता है। उस काल के लिये न तो कोई प्रिय है और न वह किसी से द्वेष भाव ही रखता है। जैसे वायु तृण को उड़ाता हुआ उसे इधर और बिखेर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देता है, वैसे ही काल के आधीन हुए समस्त प्राणी आवागमन में लगे रहते हैं। जो जीव एक साथ इस संसार की यात्रा में यहाँ आये हैं, उन्हें एक दिन वहीं जाना पड़ेगा। उनमें से जिनका काल पहले आगया, वह आगे निकल जाता है। ऐसी दशा में किसी के लिये भी शोक क्या करे ? हे राजन् ! युद्ध में मारे गये इन वीरों के लिये शोक करना कदापि उचित नहीं है। यदि आप शास्त्रों के प्रमाण पर विश्वास करते हैं, तो वे अवश्य ही परमगति को प्राप्त हुए हैं। वे सभी वेदों का स्वाध्याय करने वाले थे, सभी ने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया था और वे सभी रणभूमि में शत्रु से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए हैं, इसलिये उनके प्रति शोक करने का क्या कारण हो सकता है ? वे अदृश्य लोक से आकर फिर उसी अदृश्य लोक को चले गये। वे आपके कभी नहीं थे और आप भी उनके नहीं हैं, तो फिर वहाँ शोक क्यों करना चाहिये। जो वीर युद्ध में मारा जाता है, उसे स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है और जो शत्रु को मार देता है, उसे यश प्राप्त होता है। यह दोनों अवस्थायें क्षत्रिय के लिये अत्यन्त लाभ देने वाली हैं। युद्ध में निष्फलता मिलने का तो प्रश्न ही नहीं है ॥८-१४॥

तेषां कामदुघाल्लोकानिन्द्रः संकल्पयिष्यति ।
इन्द्रास्यातिथयो ह्येते भवन्ति भरतर्षभ ॥१५
न यज्ञैर्दक्षिणावद्भिर्न तपोभिर्न विद्यया ।
स्वर्गं यान्ति तथा मर्त्या याथशूरारणे हताः ॥१६
शरीराग्निषु शूराणां जुहुवुस्ते शराहुतीः ।
हूयमानाञ्शरांश्चैव सेहुस्तेजस्विनो मिथः ॥१७
एवं राजस्तवाचक्षे स्वर्ग्यं पन्थानमुत्तमम् ।
न युद्धादधिकं किंचित् क्षत्रियस्येह विद्यते ॥१८
क्षत्रियास्ते महात्मानः शूराः समितिशोभनाः ।
आशिषःपरमाःप्राप्ता न शोच्याः सर्व एव हि ॥१९
आत्मानमात्मनाऽऽश्वास्य माशुचः पुरुषर्षभ ।
नाद्य शोकाभिभूतस्त्वं कायमुत्स्रष्टुमर्हसि ॥२०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मातापितृसहस्राणि पुत्रदारशतानि च ।
संसारेष्वनुभुतानि कस्य ते कस्त वा वयम् ॥२१

हे भरतश्रेष्ठ ! उन वीरों की इच्छा के अनुसार भोग प्रदान करने वाले लोकों को प्राप्त कराने की व्यवस्था इन्द्र करेंगे । वे सभी इन्द्र के अतिथि ही होंगे । जितनी सुगमता से युद्ध में प्राण त्याग करने वाले वीरों को स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है, उतनी सुगमता से प्रचुर दक्षिणा वाले यज्ञ, तप और विद्या के द्वारा भी स्वर्ग नहीं मिलता । वीरों के देह रूपी अग्नियों में उन्होंने बाणों की आहुतियाँ दी हैं और उन तेजस्वी वीरों ने परस्पर एक-दूसरे के शरीर रूप अग्नियों में होम किये जाने वाले बाणों को सहा है । हे राजन् ! इसीलिये मैं आपसे कहता हूँ कि इस लोक में क्षत्रिय के लिये स्वर्ग प्राप्ति का धर्मयुद्ध से अधिक अन्य कोई श्रेष्ठ मार्ग नहीं है । वे महामनस्वी वीर क्षत्रिय संग्राम भूमि में सुशोभित होने वाले थे । इसलिये उन्होंने अपनी इच्छाओं के अनुसार श्रेष्ठ लोकों को प्राप्त किया है । फिर उन सबके लिये कदापि शोक न करना चाहिये । हे पुरुषप्रवर ! आप स्वयं ही अपने मन को सान्त्वना देकर शोक को छोड़ दीजिये । क्योंकि शोक से व्याकुल होकर आपको अपने शरीर का परित्याग करना उचित नहीं है । हमने इस लोक में बारम्बार जन्म लेकर हजारों माता पिता अथवा सैकड़ों स्त्री-पुत्रों के सुखों को पाया है ? परन्तु, आज वे किसके हैं अथवा उनमें से हम ही किसके है ? ॥१५-२१॥

शोकस्थानसहस्राणि भयस्थानशतानि च ।
दिवसे दिवसे मूढमाविशन्ति न पण्डितम् ॥२२
न कालस्य प्रियः क्वश्चिन्न द्वेष्यः कुरुसत्तम ।
न मध्यस्थः क्वचित्कालः सर्वं कायः प्रकर्षति ॥२३
कालः पचति भूतानि कालः संहरते प्रजाः ।
कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः ॥२४
अनित्य यौवनं रूपं जीवितं द्रव्यसंचयः ।
आरोग्य प्रियसंवासो गृद्धयेदेषु न पण्डितः ॥२५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न जानपदिकं दुःखमेकः शोचितुमर्हसि ।
अप्यभावेन युज्येत तच्चास्य न निवर्तते ॥२६
अशोचन् प्रतिकुर्वीत यदि पश्येत् पराक्रमम् ।
भैषज्यमेतद् दुःखस्य यदेतन्नानुचिन्तयेत् ॥२७
चिन्त्यमानं हि न व्येति भूयश्चापि प्रवर्धते ।
अनिष्टसम्प्रयोगाच्च विप्रयोगात् प्रियस्य च ।
मानुषा मानसैर्दुःखैर्दह्यन्ते चाल्पबुद्धयः ॥२८

शोक के स्थान सहस्रों हैं, भय के स्थान सैकड़ों हैं। वे मूर्ख मनुष्य पर प्रतिदिन अपना प्रभाव डालते रहते हैं, परन्तु विद्वान् पुरुष उनसे प्रभावित नहीं होता। हे कुरुश्रेष्ठ ! काल का किसी से प्रेम अथवा द्वेष नहीं है। उसका किसी के प्रति उदासीन भाव भी नहीं है, वह तो सभी अपने पास खींचता है। काल ही प्राणियों को पकाता, वही प्रजाओं का संहार करता और सबके सो जाने पर भी जागता रहता है। उस काल का उल्लंघन करना अत्यन्त कठिन है। रूप, यौवन, जीवन, धन का संग्रह, आरोग्य और प्रिय जनों का एक साथ रहना—यह सभी अनित्य हैं। इसलिये ज्ञानी पुरुष को इनमें कभी आसक्त नहीं होना चाहिये। जिस दुःख से सम्पूर्ण देश व्याप्त है, उस दुःख के लिये अकेले आप ही शोक न करें। शोक करते-करते यदि कोई मृत्यु को भी प्राप्त हो जाय, तो भी उसका वह शोक मिट नहीं सकता। यदि अपने में पराक्रम हो तो शोक न करके, शोक के कारण को दूर करे। दुःख को मिटाने के लिये यह सर्वोत्तम औषधि है कि उसका चिन्तन छोड़ दिया जाय। क्योंकि, चिन्तन से दुःख घटने की अपेक्षा बढ़ता ही है। अल्प बुद्धि वाले मनुष्य ही अप्रिय वस्तु के संयोग से और प्रिय वस्तु के वियोग से मानसिक दुःखों से व्याप्त हुए जलने लगते हैं ॥२२-२८॥

नार्थो न धर्मो न सुखं यदेतदनुशोचसि ।
न च नापैति कार्यार्थात्त्रिवर्गाच्चैव हीयते ॥२९
अन्यामन्यां धनावस्थां प्राप्य वैशेषिकी नराः ।
असंतुष्टाः प्रमुह्यन्ति संतोषं यान्ति पण्डिताः ॥३०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रज्ञया मानसं दुःखं हन्याच्छारीरमौषधैः ।
एतद् विज्ञानसामर्थ्यं न बालैः समतामियात् ।।३१

शयानं चानुशेते हितिष्ठन्तं चानुतिष्ठति ।
अनुधावति धावन्तं कर्म पूर्वकृतं नरम् ।।३२
यस्यां यस्यामवस्थायांयत् करोति शुभाशुभम् ।
तस्यां तस्यामवस्थायां तत्फलं समुपाश्नुते ।।३३

येन येन शरीरेण यद्यत् कर्म करोति यः ।
तेन तेन शरीरेण तत्फलं समुपाश्नुते यः ।।३४

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।
आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी कृतस्यापकृतस्य च ।।३५

आप जिस शोक को कर रहे हैं, उससे न अर्थ की सिद्धि होती है और न धर्म की अथवा सुख की ही । इस शोक के द्वारा मनुष्य अपने कर्त्तव्य मार्ग से भ्रष्ट होता हुआ, धर्म, अर्थ और काम से भी वंचित हो जाता है । धन की पृथक् पृथक् अवस्था विशेषों के प्राप्त होने पर असंतोषी मनुष्य ही भ्रमित होते हैं, विद्वान् पुरुष तो सभी अवस्थाओं में सन्तुष्ट रहते हैं । मनुष्य को अपने मानसिक दुःख को बुद्धि और विचार के द्वारा तथा शारीरिक कष्ट को औषधियों के द्वारा दूर करना चाहिये । यही वैज्ञानिक ढङ्ग है । बालकों के समान विवेक-रहित आचरण से कोई लाभ नहीं होता । मनुष्य का पहिले किया हुआ कर्म शयन करने पर उसके साथ ही सोता है । जब मनुष्य जागता है, तब वह कर्म भी जागता है और मनुष्य दौड़ता है, तो कर्म भी साथ दौड़ता है । मनुष्य जिस-जिस अवस्था में जो भी शुभ या अशुभ कर्म करता है, उसे उसी-उसी अवस्था में अपने कर्म का फल भी भोगना पड़ता है । जो प्राणी जिस-जिस शरीर के द्वारा जो-जो कर्म करता है, उसे अपने दूसरे जन्म में उसी-उसी शरीर के द्वारा उस कर्म का फल भोगना होता है । मनुष्य स्वयं ही अपना बन्धु है और स्वयं ही अपना शत्रु है तथा स्वयं ही अपने शुभ अथवा अशुभ कर्म का साक्षी है ।।२९-३५।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःखं पापेन कर्मणा ।
कृतं भवति सर्वत्र नाकृतं विद्यते क्वचित् ।।३६
न हि ज्ञानविरुद्धेषु वह्वपायेषु कर्मसु ।
मूलघातिषु सज्जन्ते बुद्धिमन्तो भवद्विधाः ।।३७
सुभाषितंमहाप्राज्ञ शोकोऽयं विगतो मम ।
भूय एवतु वाक्यानि श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ।।३८
अनिष्टानां च संसर्गादिष्टानां च विसर्जनात् ।
कथं हि मानसैर्दुःखैः प्रमुच्यन्ते तु पण्डिताः ।।३९
यतो यतो मनो दुःखात् सुखाद्वा विप्रमुच्यते ।
ततस्ततो नियम्यैतच्छान्तिं विन्देत वै बुधः ।।४०
अशाश्वतमिदं सर्वं चिन्त्यमानं नरर्षभ ।
कदलीसनिभो लोकः सारो ह्यस्य न विद्यते ।।४१

शुभ कर्म करने से सुख और अशुभ कर्म करने से दुःख मिलता है। सदा अपने किये हुए कर्म का ही फल मिलता है, बिना किये हुए कभी किसी फल की प्राप्ति नहीं होती। आप जैसे ज्ञानी पुरुष अनेक विनाशकारी दोषों वाले तथा मूल भूत शरीर को भी नष्ट कर देने वाले बुद्धि के विरुद्ध कर्मों में कभी आसक्ति नहीं रखते। धृतराष्ट्र ने कहा—हे महाप्राज्ञ! तुम्हारा श्रेष्ठ उपदेश सुनकर मेरा शोक मिट गया। फिर भी तुम्हारे इन तात्त्विक वचनों को मैं अभी और सुनते रहना चाहता हूँ। विद्वान् पुरुष अनिष्ट के होने पर और इष्ट के न होने पर उत्पन्न हुए मानसिक दुःखों से किस प्रकार छूट सकते हैं, यह मुझसे कहो। विदुर जी ने कहा—विद्वान् पुरुष को जिन-जिन साधनों के द्वारा मन दुःख-सुख से मुक्त हो सकता हो, उन्हीं साधनों के द्वारा शान्ति-लाभ करना चाहिये। हे राजन्! विचार करें तो यह सम्पूर्ण जगत् अनित्य ही प्रतीत होगा। यह जगत् केले के समान सारहीन है। इसमें कोई तत्त्व नहीं है ।।३६-४१।।

यदा प्रज्ञाश्च मूढाश्च धनवन्तोऽथ निर्धनाः ।
सर्वे पितृवनं प्राप्य स्वपन्ति विगतज्वराः ।।४२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निर्मांसैरस्थिभूयिष्ठ गात्रैः स्नायुनिबन्धनैः ।
किं विशेषं प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परे जनाः ।।४३
येन प्रत्यवगच्छेयुः कुलरूपविशेषणम् ।
कस्मादन्योन्यमिच्छन्ति विप्रलब्धधिया नराः ।।४४
गृहाणीव हि मर्त्यानामाहुर्देहानि पण्डिताः ।
कालेन विनियुज्यन्ते सत्त्वमेकं तु शाश्वतम् ।।४५
यथा जीर्णमजीर्णं वा वस्त्रं त्यक्त्वा तु पूरुषः ।
अन्यद् रोचयते वस्त्रमेवं देहाः शरीरिणाम् ।।४६
वैचित्रवीर्य प्राप्यं हि दुःखं वा यदि वा सुखम् ।
प्राप्नुवन्तीह भूतानि स्वकृतेनैव कर्मणा ।।४७
कर्मणा प्राप्यते स्वर्गः सुखं दुःखं च भारत ।
ततो बहति तं भारमवशः स्ववशोऽपि वा ।।४८

जब विद्वान् और मूर्ख, धनिक और निर्धन सभी को श्मसान भूमि में निश्चिन्त सोना होता है, तब उनके माँस हीन नाड़ियों में बंधे हुए तथा हड्डियों के ढाँचे रूप अंगों को देख कर दूसरे व्यक्ति क्या उनमें कोई ऐसा अन्तर देखते हैं, जिससे उनके कुल और रूप की विशेषता समझी जासके यदि नहीं, तो भी वे एक दूसरे से स्नेह क्यों करते हैं ? इसलिये कि उनकी बुद्धि भ्रमित हो गई है । मरण-धर्म वाले देहधारियों के देहों को पण्डितजन घर के समान कहते हैं । क्योंकि, सभी देह अपने समय पर नष्ट हो जाते हैं, परन्तु उसके भीतर जो एक मात्र सत्वस्वरूप आत्मा रहता है, वह कभी नष्ट नहीं होता । जैसे पहिने हुए या पुराने वस्त्र को उतार कर दूसरे नवीन वस्त्र पहिनने की रुचि मनुष्य को होती है, वैसे ही देह-धारी समय-समय पर शरीरों को त्यागते और ग्रहण करते हैं । हे राजन् यदि दुःख या सुख प्राप्त होता है तो, वह प्राणी के किये हुए कर्म के अनुसार ही मिलता है । कर्मानुसार ही परलोक में स्वर्ग अथवा नरक मिलता है । इस लोक में भी कर्म से ही सुख दुःख प्राप्त होते हैं । मनुष्य सुख, दुःख के उस बोझ को स्वाधीन या पराधीन होकर वहन करता रहता है ।।४२-४८।।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यथा च मृन्मयं भाण्डं चक्रारूढं विपद्यते ।
किंचित् प्रक्रियमाणं वा कृतमात्रमथापि वा ।।४९

छिन्नं वाप्यवरोप्यन्तमवतीर्णमथापि वा ।
आर्द्रं वाप्यथवा शुष्कं पच्यमानमथापि वा ।।५०
उत्तार्यमाणमापाकादुद्धृतं चापि भारत ।
अथवा परिभुज्यन्तमेवं देहाः शरीरिणाम् ।।५१

गर्भस्थो वा प्रसूतो वाप्यथ वा दिवसान्तरः ।
अर्धमासगतो वापि मासमात्रगतोऽपि वा ।। २
संवत्सरगतो वापि द्विसंवत्सर एव वा ।
यौवनस्थोऽथ मध्यस्थो वृद्धो वापि विपद्यते ।।५३

प्राक्कर्मभिस्तु भूतानि भवन्ति न भवन्ति च ।
एवं सांसिद्धिके लोके किमर्थमनुतप्यसे ।।५४
यथा तु सलिलं राजन् क्रीडार्थमनुसंतरत् ।
उन्मज्जेच्च निमज्जेच्च किंचित् सत्त्वं नराधिप ।।५५
एवं संसारगहने उन्मज्जननिमज्जने ।
कर्मभोगेन बध्यन्ते क्लिश्यन्ते चाल्पबुद्धयः ।।५६

जैसे मिट्टी का बर्तन बनाते समय कभी चाक पर चढ़ते ही टूट जाता है, कभी कुछ-कुछ बनने पर, कभी पूरा बन जाने पर, कभी सूत से काट देने पर, कभी चाक से उतरते समय, कभी उतर जाने पर, कभी गीली अवस्था में, कभी सूख जाने पर, कभी पकते समय, कभी आवाँ से उतरते समय, कभी पकाने के स्थान से उठते समय अथवा कभी उपयोग में आते समय ही टूट जाता है । इसी प्रकार की दशा इन सब देहधारियों के देहों की होती है । कोई-कोई गर्भ में रहते हुए ही मर जाता है । कोई जन्म लेने पर, कोई कई दिन का होकर, कोई पन्द्रह दिन का, कोई महीने भर का, कोई एक या दो वर्ष का होकर, कोई युवावस्था प्राप्त होने पर, कोई मध्यावस्था में और कोई वृद्धावस्था में पहुंच कर मृत्यु को प्राप्त होता है । सभी प्राणी अपने पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार ही इस संसार में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रहते अथवा नहीं रहते हैं । जब संसार की स्वाभाविक स्थिति इसी प्रकार की है, तब आप शोक क्यों करते हैं ? हे राजन् ? जैसे क्रीडा के लिये जल में तैरता हुआ मनुष्य कभी जल में डूबता और कभी ऊपर आता हुआ प्रतीत होता है, वैसे ही इस अगाध संसार सागर में प्राणियों का डूबना और ऊपर जाना लगा ही रहता है । अल्प बुद्धि वाले मनुष्य ही यहाँ कर्म के बंधन में बँध कर दुःख भोगते हैं ॥४९-५६॥

ये तु प्राज्ञाः स्थिताःसत्वे संसारेऽस्मिन् हितैषिणः ।
समागमज्ञा भूतानां ते यान्ति परमां गतिम् ॥५७
कथं संसारगहनं विज्ञेयं वदतां वर ।
एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं तत्त्वमाख्याहि पृच्छतः ॥५८
जन्मप्रभृति भूतानां क्रिया सर्वोपलक्ष्यते ।
पूर्वमेवेह कलिले बसते किंचिदन्तरम् ॥५९
ततः स पञ्चमेऽतीते मासे वासमकल्पयत् ।
ततः सर्वाङ्गसम्पूर्णो गर्भो वै स तु जायते ॥६०
अमेध्यमध्ये वसति मांसशोणितलेपने ।
ततस्तु वायुवेगेन ऊर्ध्वपादो ह्यधःशिराः ॥६१
योनिद्वारमुपागम्य बहून् क्लेशान् समृच्छति ।
योनिसम्पीडनाच्चैव पूर्वकर्मभिरन्वितः ॥६२
तस्मान्मुक्तः स संसारादन्यान् पश्यत्युपद्रवान् ।
ग्रहास्तमनुगच्छन्ति सारमेया इवामिषम् ॥६३

जो विद्वान् मनुष्य इस लोक में सतोगुण सम्पन्न, सर्वहित-चिन्तक और प्राणियों के समागम को कर्म के अनुसार रूप मानने वाले हैं, उन्हें परमगति प्राप्त होती है । धृतराष्ट्र ने कहा--हे वक्ताओं में श्रेष्ठ ! मैं जानना चाहता हूं कि इस विश्व के गहन रूप का ज्ञान किस प्रकार हो ? मेरे प्रश्न के अनुरूप विषय को यथार्थ रूप से कहो । विदुरजी बोले—हे राजन् ! गर्भाशय में वीर्य और रज के मिलने पर ही जीवों की गर्भ रूप वृद्धि की सम्पूर्ण क्रिया शास्त्रानुसार होती देखी जाती है । प्रारम्भ में जीव कलिल के रूप में रहता है और पाँचवाँ मास व्यतीत होने पर चैतन्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

रूप से प्रकट हो पिण्ड में रहने लगता है। फिर वह गर्भस्थ पिण्ड सर्वाङ्ग पूर्ण हो जाता है। इस समय वह माँस और रक्त से लिप्त हुए अत्यन्त अपवित्र गर्भाशय में रहते हैं। फिर वायु के वेग से उसके पाँव ऊपर और सिर नीचे की ओर हो जाते हैं। इस स्थिति में योनि-द्वार के पास आ जाने से उसे घोर दुःख सहन करने होते हैं। फिर पूर्व कर्मों से युक्त हुआ वह जीव योनि-मार्ग मे दुःख पाता हुआ बाहर निकलता है, तब उसे यहाँ अन्यान्य प्रकार के कष्टों को सहना होता है। जैसे कुत्ते माँस पर झटपते हैं, वैसे ही बाल-ग्रह बालक के पीछे लग जाते हैं ॥५७-६३॥

ततः प्राप्तोत्तरे काले व्याधयश्चापि तं तथा।
उपसर्पन्ति जीवन्तं वध्यमानं स्वकर्मभिः ॥ ४
तं बद्धमिन्द्रियैः पाशैः संगस्वादुभिरावृतम्।
व्यसनान्यपि वर्तन्ते विविधानि नराधिप ॥६५

बध्यमानश्च तैर्भूयो नैव तृप्तिमुपैति सः।
तदा नावैति चैवायं प्रकुर्वन् साध्वसाधु वा ॥३६
तथैव परिरक्षन्ति ये ध्यानपरिनिष्ठिताः।
अयं न बुध्यते तावद् यमलोकमथागतम् ॥३७
यमदूतैर्विकृष्यंश्च मृत्युं कालेन गच्छति।
वाग्घीनस्य च यन्मात्रमिष्टानिष्टं कृतं मुखे।
भूय एवात्मनाऽऽत्मानं बध्यमानमुपेक्षते ॥६८

अहो विनिकृतो लोको लोभेन च वशीकृतः।
लोभक्रोधभयोन्मत्तो नात्मानमवबुध्यते ॥६९
कुलीनत्वे च रमते दुष्कुलीनान् विकुत्सयन्।
धनदर्पेण दृप्तश्च दरिद्रान् परिकुत्सयन् ॥७०

फिर जैसे-जैसे समय व्यतीत होता जाता है, वैसे-वैसे ही अपने कर्म बंधन में पड़े हुए उस जीव को जीवन-काल में नवीन-नवीन उपद्रवों का सामना करना होता है। आसक्ति से जिनमें रस का अनुभव होता है, उन विषयों से लिप्त इंद्रिय रूपी बंधनों में बँधे हुए उस संसारी जीव को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विभिन्न प्रकार के संकट घेरे रहते हैं। विषयों में बँध जाने पर जीव की उनसे कभी तृप्ति नहीं होती। उस अवस्था में वह शुभ-अशुभ कर्म करता हुआ भी उनके सम्बन्ध में कुछ जान नहीं पाता। परमात्मा के ध्यान में लगे रहने वाले मनुष्य ही शास्त्र के अनुसार आचरण करते हुए अपनी रक्षा कर सकते हैं। साधारण मनुष्य तो अपने सामने आये हुए यमलोक को भी समझ नहीं सकता। फिर, काल की प्रेरणा से यमदूत उसे शरीर से खींच लेते हैं, तब वह मृत्यु को प्राप्त होता है। उस समय वह बोलने में भी समर्थ नहीं होता। उसके सभी शुभाशुभ कर्म सामने आते हैं। उनके अनुसार फिर अपने को देह के बंधन में बँधा देख कर भी वह उस बंधन की उपेक्षा कर देता है। लोभ के वश में ही यह विश्व ठगा जा रहा है। लोभ, क्रोध और भय के वश में पड़ कर यह इतना मत्त हो गया है कि स्वयं को भी नहीं पहचान सकता। हीन कुल में उत्पन्न हुए पुरुषों को निन्दित बताता हुआ श्रेष्ठ कुल वाला मनुष्य अपनी कुलीनता में मत्त रहता है तथा धनवान पुरुष अपने धन-मद में चूर होकर दरिद्रों से घृणा करता है॥६४-७०॥

मूर्खानिति परानाह नात्मानं समवेक्षते ।
दोषानुक्षिपति चान्येषां नात्मनं शास्तुमिच्छति ॥७१
यदा प्राज्ञाश्च मूर्खाश्च धनवन्तश्च निर्धनाः ।
कुलीनाश्चाकुलीनाश्च मानिनोऽथाप्यमानिनः ॥७२
सर्वे पितृवनं प्राप्ताः स्वपन्ति विगतत्वचः ।
निर्मांसैरस्थिभूयिष्ठैर्गात्रैः स्नायुनिबन्धनैः ॥७३
विशेषं न प्रपश्यन्ति तत्र तेषां परे जनाः ।
येन प्रत्यवगच्छेयुः कुलरूपविशेषणम् ॥७४
यदा सर्वे समं न्यस्ताः स्वपन्ति धरणीतले ।
कस्मादन्योन्यमिच्छन्ति प्रलब्धुमिह दुर्बुधाः ॥७५
प्रत्यक्षं च परोक्षं च यो निशम्य श्रुतिं त्विमाम् ।
अध्रुवे जीवलोकेऽस्मिन् यो धर्ममनुपालयन् ।
जन्मप्रभृति वर्तेत प्राप्नुयात् परमां गतिम् ॥७६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एवं सर्वं विदित्वा वै यस्तत्त्वनुवर्तते ।
स प्रमोक्षाय लभते पन्थानं मनुजेश्वर ॥७७

वह दूसरों को मूर्ख बताता हुआ भी अपनी ओर कभी नहीं देखता। दूसरों के दोषों को देख कर उन पर तो आक्षेप करता है, परन्तु, उन दोषों से बचने के लिये स्वयं अपने मन को वश में नहीं रखता। जब ज्ञानी और मूर्ख, धनिक और निर्धन, कुलीन और निम्नकुल वाला अथवा मानी और मान रहित सभी को श्मसान में जाकर शयन करना होता है, उस समय उनकी चमड़ी नष्ट हो जाती और नाड़ियों से बँधे हुए हड्डियों के ढेर के रूप में माँस-रहित शरीर सामने आते हैं, तब वहाँ खड़े हुए लोग मनमें कोई ऐसी विशेषता नहीं देख पाते, जिससे उनके कुल और रूप में असमानता दिखाई देती हो। जब मरने के पश्चात् श्मसान में डाले जाने पर सभी को समान रूप से पृथ्वी पर सोना होता है, तब वे मूर्ख मनुष्य इस लोक में एक दूसरे को ठगने की इच्छा क्यों करते हैं ? इस क्षणभंगुर संसार में जो मनुष्य वेद के अनुसार कहे गये इस उपदेश को साक्षात् जान कर या किसी विद्वान् के द्वारा सुन कर जन्म से ही धर्म के पालन में लग जाता है, उसे परम गति की प्राप्ति होती है। हे राजन् ! इस प्रकार सब कुछ जान कर जो मनुष्य तत्व का अनुसरण करता है, वह मोक्ष रूप लक्ष्य तक पहुंचने के लिये मार्ग प्राप्त करने में समर्थ होता है ॥७१-७७॥

यदिदं धर्मगहनं बुद्ध्या समनुगम्यते ।
तद्धि विस्ततरतः सर्वं बुद्धिमार्गं प्रशंस मे ॥७८
अत्र ते वर्तयिष्यामि नमस्कृत्वा स्वयंभुवे ।
यथा संसारगहनं वदन्ति परमर्षयः ॥७९
कश्चिन्महति कान्तारे वर्तमानो द्विजः किल ।
महद् दुर्गमनुप्राप्तो वनं क्रव्यादसंकुलम् ॥८०
सिंहव्याघ्रगजक्षौंघैरतिघोरं महास्वनैः ।
पिशितादैरतिभयैर्महोग्राकृतिभिस्तथा ।
समन्तात् संपरिक्षिप्तं यत् स्म दृष्ट्वा त्रसेद् यमः ॥८१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तदस्य दृष्ट्वा हृदयमुद्वेगमगमत् परम् ।
अभ्युच्छ्वस्यश्च रोम्णां वै विक्रियाश्च परंतप ।।८२

स तद् वनं व्यनुसरन् सम्प्रधावन्निवस्ततः ।
वीक्षमाणो दिशः सर्वाः शरणं क्व भवेदिति ।।८३

स तेषां छिद्रमन्विच्छन् प्रद्रुतो भयपीडितः ।
न च निर्याति वै दूरं न वा तैर्विप्रमोच्यते ।।८४

धृतराष्ट्र बोले—धर्म का यह गूढ़ स्वरूप बुद्धि के द्वारा ही जाना जा सकता है, इसलिये हे विदुर ! तुम सम्पूर्ण बुद्धिमार्ग को मेरे प्रति विस्तार सहित कहो । विदुरजी ने कहा—मैं भगवान् स्वम्भू को नमस्कार करता हुआ संसार रूप गहन वन के उस स्वरूप को तुम्हारे प्रति कहता हूँ, जिसका बड़े-बड़े महर्षि वर्णन किया करते हैं । कहा जाता है कि किसी विशाल एवं दुर्गम वन में कोई ब्राह्मण यात्रा कर रहा था । वह बन के उस अत्यन्त दुर्गम प्रदेश में पहुंचा, जहां हिंसक जन्तु भरे हुए थे । जोर से गर्जन करने वाले सिंह, व्याघ्र, हाथी और रीछों ने उस स्थान को घोर भयंकर बना दिया था । भयंकर आकार वाले माँस भक्षी जीवों ने उस वन प्रान्त को सब ओर से घेर कर ऐसा भीषण बना दिया था कि जिसे देख कर यमराज भी भय से काँप उठे । उस स्थान को देख कर ब्राह्मण का हृदय अत्यन्त उद्विग्न हो गया । उसे रोमांच हो आया और मन विभिन्न प्रकार के विकारों से ग्रस्त हो उठा वह ब्राह्मण उन वन में इधर-उधर दौड़ता और सभी दिशाओं में शरण मिलने के लिये ढूँढते फिर रहे थे । वह उन हिंसक जन्तुओं से बचने का उपाय देखता हुआ भाग रहा था । फिर भी वह वहाँ से दूर नही निकल पाता था और वे जन्तु भी उसका पीछा नहीं छोड़ रहे थे ।।८७—८४।।

अथापश्यद् वनं घोरं समन्ताद् वागुरावृतम् ।
बाहुभ्यां सम्परिक्षिप्तं स्त्रिया परमघोरया ।।८५

पञ्चशीर्षधरैर्नागैः शैलैरिव समन्ततैं ।
नभस्पृशैर्महावृक्षैः परिक्षिप्तं महावनम् ।।८६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वनमध्ये च तत्राभूदुदपानः समावृतः ।
वल्लीभिस्तृणछन्नाभिर्दंष्ट्राभिरभिसंवृतः ॥८७
पपात स द्विजस्तत्र निगूढे सलिलाशये ।
विलग्नश्चाभवत् तस्मिन् लतासंतानसंकुले ॥८८

पनसस्य यथा जातं वृन्तबद्धं महाफलम् ।
स तथा लम्बते तत्र ह्यूर्ध्वपादो ह्यधः शिराः ॥८९
अथ तत्रापि चान्योऽस्य भूयो जात उपद्रवः ।
कूपमध्ये महानागमपश्यत महाबलम् ॥९०
कूपवीनाहवेलायामपश्यत महागजम् ।
षडवक्त्रं कृष्णशुक्लं च द्विषट्कपदचारिणम् ॥९१

इतने में ही उसने देखा वह भयानक जङ्गल चारों ओर जाल से घिर गया है और एक अत्यन्त भयावनी स्त्री ने उसे अपनी दोनों भुजाओं में आवेष्ठित किया हुआ है। पर्वतों के समान ऊँचे तथा पाँच सिर वाले नागों और आकाश को छूने वाले बड़े बड़े वृक्षों से वह जङ्गल व्याप्त हो रहा है। उस जंगल में एक कुँआ था, जो घासों से ढकी हुई लताओं से सब ओर से ढक गया था। वह ब्राह्मण उस छिपे हुए कुँए में गिर गया, परन्तु लता आदि से ढका होने के कारण वह ब्राह्मण उसी में अटक गया, नीचे नहीं गिर पाया वह ऊपर की तरफ पैर और नीचे शिर होकर इस प्रकार लटका हुआ था, जैसे कोई बहुत बड़ा कटहल फल दिखाई पड़ता है। वहाँ उसके सामने एक दूसरा उपद्रव खड़ा हो गया। उस कुँए के भीतर उसने एक अत्यन्त बलवान महानाग को बैठे हुए देखा और कुए के मुख के निकट छः मुख के एक विशाल हाथी को खड़ा था। उसका रंग श्वेत और काला था तथा बारह पाँव थे, जिनसे वह चलता था ॥८५-९१॥

क्रमेण परिसर्पन्तं वल्लीवृक्षसमावृतम् ।
तस्य चापि प्रशाखासु वृक्षशाखावलम्बिनः ॥९२
नानारूपा मधुकरा घोररूपा भयावहाः ।
आसते मधु सवृत्य पूर्वमेव निकेतजाः ॥९३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भूयो भूयः समाहन्ते मधूनि भरतर्षभ ।
स्वादनीयानि भूतानां यैर्बालो विप्रकृष्यते ।।९४
तेषां मधूनां बहुधा धारा प्रस्रवते तदा ।
आलम्बमानः स पुमान् धारां पिबति सर्वदा ।।९५
न चास्य तृष्णा विरता पिबमानस्य संकटे ।
अभीप्सति तदा नित्यमतृप्तः स पुनः पुनः ।।९६
न चास्य जीविते राजन् निर्वेदः समजायत ।
तत्रैव च मनुष्यस्य जीविताशा प्रतिष्ठिता ।।९७

वह लताओं और वृक्षों से घिरे उस कुँए में क्रमशः बढ़ रहा था। जिस वृक्ष की शाखा पर वह ब्राह्मण लटका हुआ था, उसकी छोटी-छोटी टहनियों पर पहिले से ही शहद के छत्तों से उत्पन्न हुई अनेक रूप वाली घोर और भयङ्कर मधुमक्खियाँ शहद को घेर कर बैठी हुई थीं। सभी प्राणियों को स्वादिष्ट लगने वाले और अपनी ओर बालकों को आकृष्ट कर लेने वाले उस शहद को वे मक्खियाँ बार-बार पीने का यत्न करती हैं। उस समय उस शहद की अनेक धाराऐं स्रवित हो रही थीं और वह लटकता हुआ ब्राह्मण भी निरंतर उस मधु धारा का पान कर रहा था। सङ्कट में होते हुए भी उस ब्राह्मण की मधु पीते-पीते तृष्णा शान्त नहीं हो रही थी। वह अतृप्त हुआ उसे बारम्बार पीना चाहता था। हे राजन्! अपनी उस सङ्कट पूर्ण स्थिति से उसे वैराग्य नहीं हुआ। उसके मन में, जीवित रहते हुए उसी प्रकार शहद पीने की आशा लगी हुई थी ।।९२-९७।।

कृष्णाः श्वेताश्च तं वृक्षं कुट्टयन्ति च मूषिका ।
व्यालैश्च वनदुर्गान्ते हिंसा च परमोग्रया ।।९८
वृक्षाधस्ताच्च नागेन वीनाहे कुञ्जरेण च ।
वृक्षप्रपाताच्च भयं मूषिकेभ्यश्च पञ्चमम् ।।९९
मधुलोभान्मधुकरैः षष्ठमाहुर्महद् भयम् ।
एवं स वसते तत्र क्षिप्तः संसारसागरे ।।१००

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न चैव जीविताशायां निर्वेदमुपगच्छति ॥१०१
अहो खलु महद् दुःख कृष्छ्रवासश्च तस्य ह ।
कथं तस्य रतिस्तत्र तुष्टिर्वा वदतां वर ॥१०२
स देशः क्व नु यत्रासौ वसते धर्मसंकटे ।
एतन्मे सर्वमाचक्ष्व साधु चेष्टामहे तदा ॥१०३
कृपा मे महती जाता तस्याभ्युद्धरणेन हि ॥१०४
उपमानमिदं राजन् मोक्षविद्भिरुदाहृतम् ।
सुकृतं विन्दते येन परलोकेषु मानवः ॥१०५

वह जिस वृक्ष के आश्रय में लटका हुआ था उसे कृष्णवर्ण और श्वेत वर्ण के चूहे काटने में निरन्तर लगे थे। प्रथम तो उसे वन के दुर्गम प्रदेश में अनेक सर्पों से डर है, फिर सीमा पर खड़ी हुई उस स्त्री से, तीसरा डर कुँए में नीचे बैठे हुए नाग से, चौथा डर मुख पर खड़े हाथी से और पाँचवाँ डर चूहों द्वारा काटे जाने पर उस वृक्ष के गिर जाने का है। इसके अतिरिक्त छटवाँ भय मधुमक्खियों द्वारा काटे जाने का है। इसी प्रकार संसार-समुद्र में गिरा हुआ अनेक प्रकार के डरों से घिर कर भी वहीं रहना चाहता है, उसे जीवन की आशा बनी हुई है और मन में वैराग्य की उत्पत्ति नहीं हो पाती। धृतराष्ट्र ने कहा—हे वक्ताओं में श्रेष्ठ विदुर ! यह तो महान् आश्चर्य का विषय है कि वह ब्राह्मण चोर संकट में पड़ा हुआ था और बड़े कष्ट से वहाँ टिका हुआ था, फिर भी उसका मन वहाँ कैसे लग रहा था और वह सन्तुष्ट किस प्रकार हो रहा था ? यह मुझे बताओ। वह देश कौन-सा है, जिसमें बेचारा वह ब्राह्मण ऐसे धर्म-सङ्कट में पड़ा हुआ है ? उस महान् भय वह किस प्रकार मुक्त हो सकता है ? हे विदुर ! तुम यह सब मेरे प्रति कहो। उसको छुड़ाने के लिये मुझे बड़ी दया उत्पन्न हुई है। हम लोग उसे उस सङ्कट से छुड़ाने का पूर्ण प्रयत्न करेंगे। विदुरजी ने कहा—हे राजन् ! इस दृष्टान्त को मोक्ष-तत्व के ज्ञाता पुरुषों ने कहा है, जिसे सुनकर मनुष्य के मन में वैराग्य उत्पन्न हो जाता और वह परलोक में पुण्यफल को प्राप्त करता है ॥९८-१०५॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उच्यते यत् तु कान्तारं महासंसार एव सः ।
वनं दुर्गं हि यच्चैतत् संसारगहनं हि तत् ॥१०६
ये च ते कथिताव्यालाव्याधयस्ते प्रकीर्तिताः ।
या सा नारी बृहत्काया अध्यतिष्ठत तत्र वै ॥१०७
तामाहुस्तु जरां प्राज्ञा रूपवर्णविनाशिनीम् ।
यस्तत्र कूपो नृपते स तु देहः शरीरिणाम् ॥१०८
यस्तत्र वसतेऽधस्तान्महाहिः काल एव सः ।
अन्तकः सर्वभूतानां देहिनां सर्वहार्यसौ ॥१०९
कूपमध्ये च या जाता वल्ली यत्र स मानवः ।
प्रताने लम्बते लग्नो जीविताशा शरीरिणाम् ॥११०
स यस्तु कूपवीनाहे तं वृक्षं परिसर्पति ।
षड्वक्त्रः कुञ्जरो राजन् स तु संवत्सरः स्मृतः ॥१११
मुखानि ऋतवो मासाः पादा द्वादश कीर्तिताः ।
ये तु वृक्षं निकृन्तन्ति मूषिकाः सततोत्थिताः ।
राज्यहानि तु तान्याहुर्भूतानां परिचिन्तकाः ॥११२

इस दृष्टान्त में जो दुर्गम स्थान कहा है, वह महा संसार है और जिसे गहन वन कहा है, वह इस संसार का ही गहन स्वरूप समझना चाहिये। इसमें जिन सर्पों का वर्णन हुआ है, वे विभिन्न प्रकार के रोग हैं। उस सीमा पर जिस नारी का खड़ा होना कहा है, उसे विद्वानों ने रूप और कान्ति को नष्ट करने वाली वृद्धावस्था कहा है। 'उस वन में जिस कुँए का होना कहा है, वह देह धारियों का देह है, उसमें जिस विशाल नाग की बात कही है, वह काल है। वही काल सब देह धारियों का अन्त करने और उनका सर्वस्व छीन लेने वाला है। कुँए के बीच में जो लता स्थित है, और वह ब्राह्मण जिसके सहारे लटका हुआ है, वह जीवन की आशा है। हे राजन् ! कुँए के मुख के निकट जिस छः मुखों वाले हाथी का बर्णन हुआ है, उसे संवत्सर समझना चाहिये। छः ऋतुऐं उसके छः मुख हैं और बारह माम उसके बारह पाँव। जो काले और सफेद चूहे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उस वृक्ष को काटते रहते हैं, वे चूहे विचारकों द्वारा दिन और रात्रि कहे गये हैं ॥१०६-११२॥

ये ते मधुकरास्तत्र कामास्ते परिकीर्तिताः ॥११३
यास्तु ता बहुशो धाराः स्रवन्ति मधुनिस्रवम् ।
तांस्तु कामरसान् विद्याद् यत्रमज्जन्ति मानवाः ॥११४
एवं संसारचक्रस्य परिवृत्तिं विदुर्बुधाः ।
येन संसारचक्रस्य पाशांश्छिन्दन्ति वै बुधाः ॥११५
अहोऽभिहितमाख्यानं भवता तत्त्वदर्शिना ।
भूय एव तु मे हर्षः श्रुत्वा वागमृतं तव ॥११६
शृणु भूयः प्रवक्ष्यामि मार्गस्यैतस्य विस्तरम् ।
यच्छ्रुत्वा विप्रमुच्यन्ते संसारेभ्यो विचक्षणाः ॥११७
यथा तु पुरुषो राजन् दीर्घमध्वानमास्थित ।
क्वचित् क्वचिच्छ्रमाच्छ्रान्तः कुरुते वासमेव वा ॥११८
एवं संसारपर्याये गर्भवासेषु भारत ।
कुर्वन्ति दुर्बुधा वासं मुच्यन्ते तत्र पण्डिताः ॥११९

वहाँ जो मधुमक्खियाँ कही गई है,वे सब कामनाएँ हैं । झरने के रूप में झरने वाली मधु-धाराएँ ही काम-रस के रूप में झर रही हैं, उसमें सभी मनुष्य डूब जाते हैं । विद्वज्जन संसार चक्र की गति को इस प्रकार जानते हैं,इसलिये वे वैराग्य रूपी शस्त्र को ग्रहण कर इसके सभी बंधनों को काट डालते हैं । धृतराष्ट्र ने कहा—तुमने मेरे प्रति अद्भुत आख्यान कहा है । तुम तत्वदर्शी तो हो ही, तुम्हारी वाणी भी अमृतमयी है, जिसे सुन कर मुझे अत्यन्त हर्ष होता है । विदुरजी ने कहा—हे राजन् ! इस मार्ग का विस्तार सहित फिर वर्णन करता हूँ—इसे आप सुनिये । बुद्धिमान् पुरुष इसे सुन कर संसार के बन्धन से छूट जाते हैं । हे राजन् ! जैसे किसी दूर के मार्ग पर चलने वाला मनुष्य थक कर वहीं कहीं विश्राम करने के लिये रुक जाता है वैसे ही इस संसार-यात्रा के यात्री अज्ञानी मनुष्य विश्राम के लिये गर्भ में ठहरते हैं । परन्तु, ज्ञानी जन इस संसार से मुक्त हो जाते हैं ॥११३-११९॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तस्मादध्वानमेवैतमाहुः शास्त्रविदो जनाः ।
यत्तु संसारगहनं वनमाहुर्मनीषिणः ।।१२०

सोऽयं लोकसमावर्तो मर्त्यानां भरतर्षभ ।
चराणां स्थावराणां च न गृध्येत् तत्र पण्डितः ।।१२१
शारीरा मानसाश्चैव मर्त्यानां ये तु व्याधयः ।
प्रत्यक्षाश्च परोक्षाश्च ते व्यालाः कथिता बुधैः ।।१२२

क्लिश्यमानाश्च तैर्नित्यं वार्यमाणाश्च भारत ।
स्वकर्मभिर्महाव्यालैर्नोद्विजन्त्यल्पबुद्धयः ।।१२३
अथापि तैर्विमुच्येत व्याधिभिः पुरुषो नृप ।
आवृणोत्येव तं पश्चाज्जरा रूपविनाशिनी ।।१२४

शब्दरूपरसस्पर्शैर्गन्धैश्च विविधैरपि ।
मज्जमांसमहापङ्के निरालम्बे समन्ततः ।।१२५

इसीलिये, शास्त्रों को जानने वालों ने गर्भवास को मार्ग का रूप दिया है और गहन संसार को मनीषियों ने वन की ही उपमा दी है। हे भरतश्रेष्ठ ! मनुष्यों एवं सम्पूर्ण स्थावर जंगम प्राणियों का संसार-चक्र यही है। विवेकी पुरुष को चाहिये कि वह इसमें आसक्त न हो। मनुष्यों की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष शारीरिक और मानसिक व्याधियों को ज्ञानी पुरुषों ने सर्प अथवा हिंसक जीव कहा है। यह सर्प और हिंसक प्राणी अपने कर्म ही हैं। इनके द्वारा सदा सताये और रोके जाने पर भी अल्प बुद्धि वाले मनुष्य संसार से उद्विग्न और विरक्त नहीं होते। हे राजन् ! यदि शब्द, स्पर्श, रूप, रस और विभिन्न प्रकार की गन्धों से युक्त, मज्जा और मांस रूपी कीच से भरे हुए और अवलम्बन-रहित इस देह रूपी कुँए में रहने वाला प्राणी किसी प्रकार इन व्याधियों से छूट भी जाय तो भी अन्त में रूप और सौंदय को नष्ट करने वाली वृद्धावस्था तो घेर ही लेती है ।।१२०-१२५।।

संवत्सराश्च मासाश्च पक्षाहोरात्रसंधयः ।
क्रमेणास्योपयुञ्जन्ति रूपमायुस्तथैव च ।।१२६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एते कालस्य निधयो नैताञ्जानन्ति दुर्बुधाः ।
धात्राभिलिखितान्याहुः सर्वभूतानि कर्मणा ॥१२७
रथः शरीरं भूतानां सत्त्वमाहुस्तु सारथिम् ।
इन्द्रियाणि हयानाहुः कर्मबुद्धिस्तु रश्मयः ॥१२८
तेषां हयानां यो वेगं धावतामनुधावति ।
स तु संसारचक्रेऽस्मिञ्चक्रवत् परिवर्तते ॥१२९
यस्तान् संयमते बुद्धया संयतो न निवर्तते ।
ये तु संसारचक्रेऽस्मिञ्चक्रवत् परिवर्तिते ।
भ्रममाणा न मुह्यन्ति संसारे न भ्रमन्ति ते ॥१३०
संसारे भ्रमतां राजन् दुःखमेतद्धि जायते ॥१३१
तस्मादस्य निवृत्त्यर्थं यत्नमेवाचरेद् बुधः ।
उपेक्षा नात्र कर्तव्या शतशाखः प्रवर्धते ॥१३२
यतेन्द्रियो नरो राजन् क्रोधलोभनिराकृतः ।
संतुष्टःसत्यवादी यः स शान्तिमधिगच्छति ॥१३३

वर्ष, मास, पक्ष, दिन-रात और संध्याऐं क्रमशः इसके रूप और आयु को चूसते रहते हैं। यह सब काल के प्रतिनिधि ही हैं। मूर्ख मनुष्य इन्हें इस प्रकार नहीं समझते। ज्ञानीजन कहते हैं कि विधाता ने सभी जीवों के ललाट में उनके कर्मानुसार ही रेखा खींच दी है। विद्वानों का कहना है कि भूतों का शरीर रथ के समान है, इसमें बुद्धि रूप सत्त्व सारथि, इन्द्रियाँ अश्व और मन लगाम है। स्वेच्छापूर्वक दौड़ते हुए उन अश्व रूप इन्द्रियों का जो मनुष्य अनुसरण करता है, वह इस संसार रूपी चक्र में पहिये के समान ही घूमता रहता है। किन्तु जो मनुष्य संयमशील होकर बुद्धि के द्वारा उन इन्द्रियों रूपी घोड़ों को अपने वश में रखते हैं, वे इस लोक में लौट कर नहीं आते। जो मनुष्य चक्र के समान घूमने वाले इस संसार में घूमते हुए भी मोह में नहीं पड़ते, वे इस संसार में फिर कभी नहीं भटकते। हे राजन् ! जो संसार में भटकने वाले मनुष्य हैं, उन्हें यह दुःख मिलता ही है। इसलिये विज्ञ पुरुष इस संसार के बन्धन को काटने के लिये अवश्य यत्न करे। इस विषय में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उपेक्षा न करे, अन्यथा यह संसार वृक्ष सैकड़ों शाखाओं में फैलता हुआ बहुत बढ़ता जाता है । हे राजन् ! जितेन्द्रिय, क्रोध-रहित, लोभ-शून्य, सन्तोषी और सत्यवादी मनुष्य को शान्ति प्राप्त होती है ।।१२६-१३३।।

याम्यमाहू रथं ह्येनं मुह्यन्ते येन दुर्बुधाः ।
सचैतत् प्राप्नुयाद् राजन् यत् त्वं प्राप्तो नराधिप ।।१३४
अनुतर्षुलमेवैतद् दुःखं भवति मारिष ।
राज्यनाशं सुहृन्नाशं सुतनाशं च भारत ।।१३५
साधुः परमदुःखानां दुःखभैषज्यमाचरेत् ।
ज्ञानौषधमवाप्येह दूरपारं महौषधम् ।
छिन्द्याद् दुःखमहाव्याधि नरः संयतमानसः ।।१३६
न विक्रमो न चाप्यर्थो न मित्रं न सुहृज्जनः ।
तथोन्मोचयते दुःखाद् यथाऽऽत्मा स्थिरसंयमः ।।१३७
तस्मान्मैत्रं समास्थाय शीलमापद्य भारत ।
दमस्त्यागोऽप्रमादश्च ते त्रयो ब्रह्मणो हयाः ।।१३८
शीलरश्मिसमायुक्तः स्थितो यो मानसे रथे ।
त्यक्त्वा मृत्युभयं राजन् ब्रह्मलोकं स गच्छति ।।१३९

इस विश्व को याम्य अर्थात् यमलोक प्राप्त कराने वाला रथ कहा गया है, इसमें मूर्ख मनुष्य मोह को प्राप्त होते हैं । हे राजन् ! आपको जिस दुःख की प्राप्ति हुई है, वह दुःख सभी अज्ञानी पुरुषों को प्राप्त होता है । हे भारत ! जिसकी तृष्णा अत्यन्त वेगवती होती है, उसी को राज्य के नष्ट होने का, सुहृदों और पुत्रों के नष्ट होने का घोर दुःख प्राप्त होता है । साधु पुरुष का कर्त्तव्य है कि वह अपने मन को वश में करता हुआ, ज्ञान रूपी महौषधि प्राप्त करे, जो कि साधारण मनुष्यों को परम दुर्लभ है । उसके द्वारा अपने बड़े से बड़े रोग की चिकित्सा करे । उस ज्ञान रूपी औषधि के द्वारा दुःख रूपी महारोग को नष्ट कर डाले । अपना पराक्रम, धन, मित्र और सुहृद भी उस प्रकार दुःखों से मुक्त कराने में समर्थ नहीं हैं, जिस प्रकार कि दृढ़ता पूर्वक संयम में रहने वाला मनुष्य अपना मन दुःख-मुक्त कराने में समर्थ है । इसलिये हे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भारत ! सबसे मैत्री भाव रखते हुए शील प्राप्त करे। दम, त्याग और अप्रमाद रूप तीन घोड़े परमधाम में ले जाने वाले हैं। जो पुरुष शील रूपी लगाम को पकड़ कर इन तीनों घोड़ों से जुते हुए मन रूपी रथ पर चढ़ता है, वह मृत्यु के भय से मुक्त होकर ब्रह्मलोक को गमन करता है ॥१३४-१३६॥

अभयं सर्वभूतेभ्यो यो ददाति महीपते ।
स गच्छति परं स्थानं विष्णोः पदमनामयम् ॥१४०
न तत् क्रतुसहस्रेण नोपवासैश्च नित्यशः ।
अभयस्य च दानेन यत् फलं प्राप्नुयान्नरः ॥१४१
न ह्यात्मनः प्रियतरं किंचिद् भूतेषु निश्चितम् ।
अनिष्टं सर्वभूतानां मरणं नाम भारत ॥१४२
तस्मात् सर्वेषु भूतेषु दया कार्या विपश्चिता ।
नानामोहसमायुक्ता बुद्धिजालेन संवृताः ।
असूक्ष्मदृष्टयो मन्दा भ्राम्यन्ते तत्र तत्र ह ॥१४३

जो सभी जीवों को अभयदान देता है, वह पुरुष भगवान् विष्णु के अविनाशी पद को प्राप्त होता है। अभयदान से मनुष्य को जिस फल की प्राप्ति होती है, वह फल उसे हजारों यज्ञों का अनुष्ठान करने तथा नित्य प्रति उपवास करने से भी प्राप्त नहीं हो सकता। हे राजन् ! निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि प्राणियों को अपने आत्मा से बढ़कर अन्य कोई वस्तु प्रिय नहीं हैं। इसीलिये मृत्यु किसी को अच्छी नहीं लगती। अतः सभी जीवों पर दया करना परम कर्त्तव्य है। विभिन्न प्रकार के मोह में पड़े हुए जिन पुरुषों को बुद्धि के जाल ने बाँधा हुआ है और जिनकी दृष्टि स्थूल है, वे विभिन्न योनियों में भटकते फिरते हैं ॥१४०-१४३॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

१०—अजलि गीता

सूक्ष्मं साधु समादिष्टं भवता धमलक्षणम् ।
प्रतिभात्वस्ति मे काचित् तां ब्रूयामनुमानतः ॥१
भूयांसो हृदये ये मे प्रश्नास्ते व्याहृतास्त्वया ।
इदं त्वन्यत् प्रवक्ष्यामि न राजन् निग्रहादिव ॥२
इमानि हि प्राणयन्ति सृजन्त्युत्तारयन्ति च ।
न धर्मः परिपाठेन शक्यो भारत वेदितुम् ॥३
अन्यो धर्मः समस्थस्य विषमस्थस्य चापरः ।
आपदस्तु कथं शक्याः परिपाठेन वेदितुम् ॥४
सदाचारो मतो धर्मः सन्तस्त्वाचारलक्षणाः ।
साध्यासाध्यं कथं शक्यं सदाचारोह्यलक्षणः ॥५
दृश्यते हि धर्मरूपेणाधर्मं प्राकृतश्चरन् ।
धर्मं चाधर्मरूपेण कश्चिदप्राकृतश्चरन् ॥६
पुनस्य प्रमाणं हि निर्दिष्टं शास्त्रकोविदैः ।
वेदवादाश्चानुयुगं ह्रसन्तीतीह नः श्रुतम् ॥७

युधिष्ठिर ने कहा—पितामह ! आपने धर्म का सूक्ष्म एवं श्रेष्ठ लक्षण कहा है, परन्तु मुझे कुछ और ही प्रतीत होता है । इसलिए उसी संबंध में कहता हूँ । मेरे हृदय में उठे अनेक प्रश्नों का समाधान आपने कर दिया । परन्तु, अब यह दूसरा प्रश्न करता हूँ । इसमें दुराग्रह नहीं, जिज्ञासा ही है । धर्म से ही इन जीवों की सृष्टि है । धर्म से ही जीवन धारण और उद्धार होता है । परन्तु, धर्म का ज्ञान केवल वेद पाठ से ही संभव नहीं है । अच्छी स्थिति वाले मनुष्य का धर्म दूसरा है और संकट ग्रस्त मनुष्य का धर्म उससे भिन्न है । आपद्धर्म का ज्ञान केवल वेदपाठ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से ही कैसे संभव है ? आपके कहे अनुसार सत्पुरुषों का आचरण धर्म है और जिनमें धर्म का आचरण दिखाई दे, वे ही सत्पुरुष हैं। इस दशा में अन्योन्याश्रित दोष के कारण साध्य और असाध्य को कैसे जाना जा सकता है ? इस स्थिति में धर्म का लक्षण सदाचार नहीं हो सकता। इस लोक में कितने ही प्राकृत व्यक्ति धर्म जैसे दिखाई देने वाले अधर्म पर चलते हैं और कितने ही अप्राकृत पुरुष अधर्म जैसे जान पड़ने वाले धर्म का आचरण करते हैं। शास्त्र के जानने वालों ने धर्म में वेद को ही प्रमाण माना है। परन्तु, सुना जाता है कि युग-युग में वेदों का ह्रास होता आया है ॥१-७॥

अन्ये कृतयुगे धर्मास्त्रेतायां द्वापरे परे।
अन्ये कलियुगे धर्मा यशाशक्ति कृता इव ॥८
आम्नायवचनं सत्यमित्ययं लोकसंग्रहः।
आम्नायेभ्यः पुनर्वेदाः प्रसृताः सर्वतोमुखाः ॥९
ते चेत् सर्वप्रमाणं वै प्रमाणं ह्यत्र विद्यते।
प्रमाणेऽप्यप्रमाणेन विरुद्धे शाश्वता कुतः ॥१०
धर्मस्य क्रियमाणस्य बलवद्भिर्दुरात्मभिः।
या या विक्रियते सस्था ततः सापि प्रणश्यति ॥११
विद्म चैवं न वा विद्म शक्यं वा वेदितुं न वा।
अणीयान् क्षुरधारायाः गरीयानपि पर्वतात् ॥१२
गन्धर्वनगराकारः प्रथमं सम्प्रदृश्यते।
अन्वीक्ष्यमाणः कविभिः पुनर्गच्छत्यदर्शनम् ॥१३
निपानानीव गोभ्योऽपि क्षेत्रे कुल्ये च भारत।
स्मृतिर्हि शाश्वतो धर्मो विप्रहीणो न दृश्यते ॥१४

सत्ययुग के धर्म से त्रेता और द्वापर के धर्म में भिन्नता है तथा कलियुग के धर्म तो नितान्त भिन्न कहे हैं। जैसे ऋषियों ने धर्म की व्यवस्था मनुष्यों की शक्ति के अनुकूल ही की है। वेदों का कथन सत्य और लोक रंजन मात्र है। वेदों से ही स्मृतियों का प्रचार एवं प्रसार हुआ है। यद्यपि वेद प्रामाणिक हैं तो स्मृतियाँ भी प्रामाणिक होंगी। परन्तु

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जब प्रमाणभूत वेद ही प्रामाणिक न रहेंगे तब स्मृतियाँ ही प्रमाण कैसे होंगी। स्मृतियों का श्रुति के साथ विरोध हो तो शास्त्रत्व कैसा ? धर्म का अनुष्ठान होते समय बलवान दुरात्माओं द्वारा जो जो विकार उत्पन्न किये जाते हैं, उसके कारण धर्म की मर्यादा ही मिट जाती है। हम धर्म को जानें या न जानें, धर्म का रूप जाना जा सकता हो या नहीं। परन्तु, हम इतना जानते हैं कि धर्म छुरा की धार से भी सूक्ष्म और पर्वत से भी अधिक बड़ा और भारी है। धर्म के सम्बन्ध में आलोचना होने पर गंधर्व नगर के समान दिखायी देता है, फिर विद्वानों द्वारा विचार करने पर वह अदृश्य होगया जान पड़ता है। जैसे बहुत-सी गौओं को जल पिलाने से छोटे जलाशय सूख जाते हैं और जैसे अधिक सिंचाई के कारण नहरों का जल समाप्त हो जाता है, वैसे ही प्राचीन वैदिक धर्म अथवा स्मृति शास्त्र भी धीरे-धीरे क्षीण होते हुए कलियुग के अन्त में विलीन हो जाता है ॥८-१४॥

कामादन्येच्छया चान्ये कारणैरपरैस्तथा ।
असन्तोऽपि वृथाचारं भजन्ते बहवोऽपरे ॥१५
धर्मो भवति स क्षिप्रं प्रलापस्त्वेव साधुषु ।
अर्थैतानाहुरुन्मत्तानपि चावहसन्त्युत ॥१६
महाजना ह्यपावृत्ता राजधर्मं समाश्रिताः ।
न हि सर्वहितः कश्चिदाचारः सम्प्रवर्तते ॥१७
तेनैवान्यः प्रभवति सोऽपरं बाधते पुनः ।
दृश्यते चैव स पुनस्तुल्यरूपो यदृच्छया ॥१८
येनैवान्यः प्रभवति सोऽपरानपि बाधते ।
आचाराणामनैकाग्र्यं सर्वेषामुपलक्षयेत् ॥१९
चिराभिपन्नः कविभिः पूर्वं धर्मः उदाहृतः ।
तेनाचारेण पूर्वेण संस्था भवति शाश्वती ॥२०

क्योंकि उस समय कुछ व्यक्ति स्वार्थ के वश में, कुछ लोग दूसरों की इच्छा से और कुछ विभिन्न कारणों से धर्म का आचरण करते हैं और अनेकों असाधु पुरुष भी धर्म के आचरण का ढोंग करते हैं। उस समय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकाम भाव से ही प्रायः धर्माचरण होता दिखाई देता है। श्रेष्ठ पुरुषों का यथार्थ धर्म भी मूर्खों की दृष्टि में प्रलाप मात्र रहता है। वे मूर्ख उन धर्मात्माओं को पागल कहते हुए उनकी हँसी उड़ाते हैं। द्रोणाचार्यजी जैसे महापुरुष भी अपने धर्म से हट कर क्षत्रिय धर्म ग्रहण करते हैं, इसलिए कोई भी आचार सबके लिए समान रूप से हितकर नहीं है और न सबके द्वारा पालन ही किया जाता है। उसी धर्माचरण से विश्वामित्र आदि अन्य महापुरुष उन्नति को प्राप्त हुए हैं, रावणादि राक्षस भी उसी धर्म के बल से दूसरों को दुःख देते हैं और कश्यप आदि अनेक महर्षि ईश्वररेच्छा से उसी धर्म के द्वारा सदैव समान स्थिति में देखे जाते हैं। जिस धर्म के द्वारा एक मनुष्य उन्नति करता है, उसी के द्वारा दूसरा व्यक्ति लोगों को पीडित करता है। इस प्रकार सब के लिए आचारों की समानता कहीं नहीं देखी जाती। आपने प्रथम उसी धर्म के विषय में कहा है, जिस पर विद्वज्जन चिरकाल से चलते आरहे हैं। मैं भी समझता हूँ कि उस प्राचीन धर्म का आचरण करते हुए ही समाज की मर्यादा दीर्घकाल तक बनी रह सकती है ॥१५-२०॥

अवाप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
तुलाधारस्य वाक्यानि धर्मे जाजलिना सह ॥२१
वने वनचरः कश्चिज्जाजलिर्नाम वै द्विजः ।
सागरोद्देशमागम्य तपस्तेपे महातपाः ॥२२
नियतो नियताहारश्चीराजिनजटाधरः ।
मलपङ्कधरो धीमान् बहून् वर्षगणान् मुनिः ॥२३
स कदाचिन्महातेजा जलवासो महीपते ।
चचार लोकान् विप्रर्षिः प्रेक्षमाणो मनोजवः ॥२४
स चिन्तयामास मुनिर्जलवासी कदाचन ।
विप्रेक्ष्य सागरान्तां वै महीं सवनकाननाम् ॥२५
न मया सदृशोऽस्तीह लोके स्थावरजङ्गमे ।
अप्सु वैहायसंगच्छेन्मया योऽन्यः सहेति वै ॥२६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अदृश्यमानो रक्षोभिर्जलमध्ये वदंस्तथा ।
अब्रुवंश्च पिशाचास्तं नैवं त्वं वक्तुमर्हसि ॥२७
तुलाधारो वणिग्धर्मा वाराणस्यां महायशाः ।
सोऽप्येवं नार्हते वक्तुं यथा त्वं द्विजसत्तम ॥२८

भीष्मजी ने कहा—युधिष्ठिर ! जाजलि के साथ तुलाधार वैश्य की जो धर्म विषयक वार्ता हुई थी, उसी प्राचीन इतिहास को विद्वज्जन कहा करते हैं । प्राचीन काल में जाजलि नामक एक प्रसिद्ध ब्राह्मण थे, जो वन में ही निवास करते और विचरते रहते थे । उन महा तपस्वी ऋषि ने समुद्र के तट पर घोर तप किया था । वे नियम पूर्वक रहते, नियमित भोजन करते और वल्कल-वसन, मृगचर्म एवं जटा धारण करते थे । वे बुद्धिमान मुनि अनेकों वर्ष तक देह पर मैल और कीचड़ धारण किये हुए खड़े रहे । किसी एक समय वे अत्यन्त तेजस्वी ब्रह्मर्षि सभी लोकों को देखने की इच्छा से मन के समान तीव्र गति से विचरण करने लगे : जंगलों और काननों सहित समुद्र तक पृथिवी का निरीक्षण करके समुद्र तट के जल युक्त प्रदेश में निवास करते समय जाजलि ऋषि ने इस प्रकार विचार किया । इस चराचर विश्व में मेरे सिवा ऐसा कोई अन्य पुरुष नहीं है जिसमें मेरे साथ जल में अथवा आकाश में विचरण करने की शक्ति हो । राक्षसों से अदृश्य रहते हुए जल युक्त प्रदेश में रहने वाले जाजलि ने जब ऐसा कहा, तब अदृश्य पिशाच बोले कि "आपको ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए" । विप्रवर ! काशी में महान् यशस्वी तुलाधार निवास करते हैं, जो वणिक धर्म-परायण हैं । किन्तु, जैसी बात आपने कही है, वैसी बात वे भी नहीं कह सकते ॥२१-२८॥

इत्युक्तो जाजलिर्भूतैः प्रत्युवाच महातपाः ।
पश्येयं तमहं प्राज्ञं तुलाधारं यशस्विनम् ॥२९
इति ब्रुवाणं तमृषिं रक्षांस्युद्धृत्य सागरात् ।
अब्रुवन् गच्छ पन्थानमास्थायेमं द्विजोत्तम ॥३०
इत्युक्तो जाजलिर्भूतैर्जगाम विमनास्तदा ।
वाराणस्यां तुलाधारं समासाद्याब्रवीदिदम् ॥३१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

किं कृतं दुष्करं तात कर्म जाजलिना पुरा ।
येन सिद्धिं परां प्राप्तस्तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ।।३२
अतीव तपसा युक्तो घोरेण स बभूव ह ।
तथोपस्पर्शनरतः सायं प्रातर्महातपाः ।।३३
अग्नीन् परिचरन्सम्यक्स्वाध्यायपरमोद्विजः ।
वानप्रस्थविधानज्ञो जाजलिर्ज्वलितः श्रिया ।।३४

उन अदृश्य पिशाचों की बात सुन कर महातपी जाजलि ने उनसे पूछा कि "क्या मैं उन ज्ञानी और यशस्वी तुलाधार का दर्शन प्राप्त कर सकता हूँ ?" इस प्रकार कहते हुए महर्षि को समुद्र-तट स्थित जल प्रदेश से राक्षसों ने बाहर निकाला और उनसे बोले—"द्विजोत्तम ! इस मार्ग के सहारे से आप काशी-नगरी को चले जाइये" । उन अदृश्य भूतों की यह बात सुन कर महर्षि जाजलि मन में उदास होते हुए काशीपुरी में पहुंचे और वहाँ तुलाधार वैश्य के यहाँ जाकर उससे इस प्रकार कहने लगे । युधिष्ठिर ने पूछा—प्राचीन काल में महर्षि ! जाजलि ने अपने किस दुष्कर कार्य के द्वारा परम सिद्धि को प्राप्त किया था, यह विस्तार सहित मेरे प्रति कहें । भीष्मजी बोले—महान् तपस्वी जाजलि मुनि अत्यन्त घोर तप करते थे । वे प्रातः सायं स्नान, संध्योपासन, अग्निहोत्र और वेदाध्ययन करते थे । वे वानप्रस्थ-धर्म के ज्ञाता और पालक थे तथा अपने तेज से दैदीप्यमान थे ।।२९-३४।।

वने तपस्यतिष्ठत् स न च धर्ममवैमवैक्षत ।
वर्षास्वाकाशशायी च हेमन्ते जलसंश्रयः ।।३५
वातातपसहो ग्रीष्मे न च धर्ममविन्दत ।
दुःखशय्याश्च विविधा भूमौ च परिवर्तते ।।३६
ततः कदाचित् स मुनिर्वर्षास्वाकाशमाश्रितः ।
अन्तरिक्षाज्जलं मूर्ध्ना प्रत्यगृह्णान्मुहुर्मुहुः ।।३७
अथ तस्य जटाः क्लिन्ना बभूवुर्ग्रथिताः प्रभो ।
अरण्यगमनान्नित्यं मलिनोऽमलसंयुतः ।।३८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स कदाचिन्निराहारो वायुभक्षो महातपाः ।
तस्थौ काष्ठवदव्यग्रो न चचाल च कर्हिचित् ॥३९
तस्म स्म स्थाणुभूतस्य निर्विचेष्टस्य भारत ।
कुलिङ्गशकुनौ राजन् नीडं शिरसि चक्रतुः ॥४०
स तौ दयावान् ब्रह्मर्षिरुपप्रैक्षत दम्पती ।
कुर्वाणौ नीडकं तत्र जटासु तृणतन्तुभिः ॥४१
यदा न स चलत्येव स्थाणुभूतो महातपाः ।
ततस्तौ सुखविश्वस्तौ सुखं तत्रोषतुस्तदा ॥४२

वन में रहते हुए और तपस्या में लगे हुए जाजलि मुनि अपने धर्म की अवहेलना कभी नहीं करते थे। वर्षा में खुले आकाश के नीचे शयन करते और शीत में जल के भीतर बैठते थे। भीषण गर्मी में कठिन धूप और लू को सहन करते तथा पृथिवी पर लेटते और ऐसा आचरण करते जिससे दुःख और कष्ट का अधिक अनुभव हो। परन्तु उन्हें धर्म का यथार्थ ज्ञान नहीं था। एक बार वर्षा ऋतु आने पर वे खुले आकाश के नीचे खड़े हो गये और मूसलाधार वृष्टि के आघात को उन्होंने अपने मस्तक पर ही सहन किया। उनके सिर के बाल भीगे रहने से उलझ गये और जटा के रूप में हो गये। सदा वन में विचरण करते रहने से उनके देह पर धूल और मैल जम गया, फिर भी उनका अन्तःकरण स्वच्छ था। एक समय वे निराहार रहते हुए वायु भक्षण करने लगे ओर एक स्थान पर काष्ठ के समान खड़े हो गये। उस समय उनका मन व्यग्र नहीं था और क्षणभर के लिये भी वे कभी विचलित नहीं होते थे। चेष्टा-रहित होने से वे वृक्ष के ठूँठ के समान दिखाई देते थे। इस स्थिति में गौरैया पक्षी के एक जोड़े ने उनके सिर पर घौंसला बना लिया। महर्षि जाजलि अत्यंत दयालु थे। उन पक्षियों को अपने सिर पर घौंसला बनाते देख कर भी उन्होंने उन्हें हटाने आदि की कोई चेष्टा नहीं की। जब तपस्या में निरत जाजलि अविचल भाव से बिना हिले डुले बैठे रहे तब विश्वास हो जाने पर वे पक्षी वहीं सुख से रहने लगे ॥३५-४२॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अतीतास्वथ वर्षासु शरत्काल उपस्थिते ।
प्राजापत्येन विधिना विश्वासात् काममोहितौ ॥४३
तत्रापातयतां राजन् शिरस्यण्डानि खेचरौ ।
तान्यबुध्यत तेजस्वी स विप्रः संशितव्रतः ॥४४
बुद्ध्वा च स महातेजा न चचाल च जाजलिः ।
धर्मे कृतमना नित्यं नाधर्मं स त्वरोचयत् ॥४४
अहन्यहनि चागत्य ततस्तो तस्य मूर्धनि ।
आश्वासितौ निवसतः सम्प्रहृष्टौ तदा विभो ॥४६
स रक्षमाणस्त्वण्डानि कुलिङ्गानां धृतव्रतः ।
तथैव तस्थौ धर्मात्मा निर्विचेष्टः समाहितः ॥४७
जातपक्षांश्च सोऽपश्यदुड्डीनान् पुनरागतान् ।
सायं सायं द्विजान्विप्रोनचाकम्पत जाजलिः ॥४८
ततस्तेषु प्रलीनेषु जाजलिर्जातविस्मयः ।
सिद्धोऽस्मीति मतिंचक्रे ततस्तं मान आविशत् ॥४९

वर्षा ऋतु बीतने पर शरद् ऋतु आ गई। उस समय गौरैया पक्षियों ने सन्तानोत्पत्ति की और महर्षि के सिर पर अण्डे दिये। उन कठोर व्रती जाजलि को पक्षियों द्वारा उनकी जटाओं में अण्डे देने वाली बात मालुम हो गई। पर इस पर भी जाजलि दुःखित अथवा विचलित नहीं हुए और स्वधर्म पालन में ही संलग्न रहे। पक्षियों के जोड़े चारा चुगने जाते और महर्षि के सिर पर ही रैन-बसेरा करते थे। वहाँ उन्हें अत्यन्त आश्वासन और प्रसन्नता मिलती थी। दृढ़ता पूर्वक व्रत को पालने वाले और एकाग्र मन वाले महर्षि उन पक्षियों और अण्डों की रक्षा करते हुए निश्चेष्ट भाव से खड़े रहे अर्थात् हिले डुले नहीं। बच्चों के पंख निकलने पर दिन में चारा चुगने जाते और सायंकाल में वहीं लौट आते। महर्षि जाजलि उन पक्षियों को इस प्रकार से देखते हुए, निश्चेष्ट भाव से रहे आते। राजन्! एक समय वे पक्षी उड़ कर जब एक मास तक भी नहीं लौटे तो जाजलि वहाँ से दूसरे स्थान को चल दिये। उन पक्षियों के अदृश्य होने से जाजलि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अत्यन्त विस्मित हुए और वे अपने को सिद्ध पुरुष मानने लगे। इस प्रकार उनमें अहंकार भाव की उत्पत्ति हो गई ।।४३-४६।।

सम्भाव्य चटकान् मूर्ध्नि जाजलिर्जपतां वरः ।
आस्फोटयत् तथाऽऽकाशे धर्मः प्राप्तो मयेति वै ।।५०
अथान्तरिक्षे वागासीत् तां च शुश्राव जाजलिः ।
धर्मेण न समस्त्वं वै तुलाधारस्य जाजले ।।५१
वाराणस्यां महाप्राज्ञस्तुलाधारः प्रतिष्ठितः ।
सोऽप्येवं नार्हते वक्तुं यथा त्वं भाषसे द्विज ।।५२
सोऽमर्षवशमापन्नस्तुलाधारदिदृक्षया ।
पृथिवीमचरद् राजन् यत्र सायंगृहो मुनिः ।।५३
कालेन महतागच्छत् स तु वाराणसीं पुरीम् ।
विक्रीणन्तं च पण्यानि तुलाधारं ददर्श सः ।।५४
सोऽपि दृष्ट्वैव तं विप्रमायान्तं भाण्डजीवन ।
समुत्थाय सुसंहृष्टः स्वागतेनाभ्यपूजयत् ।।५५
आयानेवासि विदितो मम ब्रह्मन् न संशयः ।
ब्रवीमि यत् तु वचनं तच्छृणुष्व द्विजोत्तम ।।५६

जप करने वालों में श्रेष्ठ महर्षि जाजलि अपने सिर पर पक्षियों के उत्पन्न होने, बढ़ने आदि की बातों को सोचते हुए अपने को परम धर्मात्मा मानने लगे और ऐसे लगते थे, जैसे मैंने धर्म को पा लिया है, यह बात ताल ठोंक कर सिद्ध कर रहे हों। यह देख कर आकाशवाणी हुई कि— हे जाजले ! काशी नगरी में महाज्ञानी तुलाधार नामक वैश्य हैं, वे भी ऐसी बात नहीं कह सकते, जैसी तुमने कही है। इसलिए, धर्म में तुम उस तुलाधार के समान नहीं हो। राजन् ! इस आकाशवाणी से अमर्ष के वशीभूत हुए महर्षि उस तुलाधार को देखने के लिये पृथिवी पर घूमने लगे। जहाँ सायंकाल हो जाता, वहीं ठहर जाते थे। इस प्रकार बहुत समय बीतने पर वाराणसी में महर्षि जा पहुँचे और उन्होंने तुलाधार को सौदा बेचते हुए देखा। विभिन्न पदार्थों की खरीद-बेच करने वाले तुलाधार वैश्य महर्षि जाजलि को आया देख कर तुरन्त खड़े हो गये और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उन्होंने अत्यन्त हर्ष के साथ महर्षि का स्वागत किया। तुलाधार ने कहा—हे द्विजश्रेष्ठ! आपके यहां आने की बात मैं पहिले ही जान गया था, इसमें संशय नहीं है। अब मैं जो कहता हूँ उसे सुनिये ॥५०-५६॥

सागरानूपमाश्रित्य तपस्तप्तं त्वया महत्।
न च धर्मस्य संज्ञां त्वं पुरा वेत्थ कथंचन ॥५७
ततः सिद्धस्य तपसा तव विप्र शकुन्तकाः।
क्षिप्रं शिरस्यजायन्त ते च सम्भावितास्त्वया ॥५८
जातपक्षा यदा ते च गताश्चारीमितस्ततः।
मन्यमानस्ततो धर्मं चटकप्रभवं द्विज ॥५९
खे वाचं त्वमथाश्रौषीर्मां प्रति द्विजसत्तम।
अमर्षवशमापन्नस्ततः प्राप्तो भवानिह।
करवाणि प्रियं किं ते तद् ब्रूहि द्विजसत्तम ॥६०
इत्युक्तः स तदा तेन तुलाधारेण धीमता।
प्रोवाच वचनं धीमाञ्जाजलिर्जपतां वरः ॥६१
विक्रीणतः सर्वरसान् सर्वगन्धांश्च वाणिज।
वनस्पतीनोषधीश्च तेषां मूलफलानि च ॥६२
अध्यगा नैष्ठिकीं बुद्धिं कुतस्त्वामिदमागतम्।
एतदाचक्ष्व मे सर्वं निखिलेन महामते ॥६३

आपने समुद्र के तट पर जल में रहते हुए घोर तप किया है, परन्तु आपको ऐसा बोध पहिले कभी नहीं हुआ था कि मैं अत्यन्त धर्मात्मा हूँ। हे द्विजोत्तम! आपके तपस्या-सिद्ध होने पर पक्षियों ने आपके सिर पर अण्डे दिये। उनसे जो बच्चे उत्पन्न हुए उनकी आपने भले प्रकार रक्षा की। पर निकलने पर वे चारा चुगने के लिये अन्यत्र उड़ गये. उन पक्षियों के पालन करने को ही आप बहुत बड़ा धर्म मानने लगे। तभी मेरे विषय में आकाशवाणी हुई, जिसे सुनते ही आप अमर्ष के वशीभूत होकर मेरे पास आ गये। अब मुझे बताइये कि आपका कौन-सा प्रिय करूँ। भीष्मजी बोले—बुद्धिमान् तुलाधार के ऐसा कहने पर जप करने

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वालों में श्रेष्ठ बुद्धि वाले महर्षि जाजलि ने इस प्रकार कहा। जाजलि ने कहा—हे वैश्यपुत्र ! तुम सब प्रकार के रस, गंध, वनस्पति, ओषधि, मूल, फल आदि बेचते हो। हे महामते ! धर्म में निष्ठा वाली यह बुद्धि तुम्हें कैसे प्राप्त हो गई ? किस प्रकार तुम्हें यह ज्ञान सुलभ होसका, यह मेरे प्रति कहिये ।।५७-६३।।

एवमुक्तस्तुलाधारो ब्राह्मणेन यशस्विना ।
उवाच धर्मसूक्ष्माणि वैश्यो धर्मार्थतत्त्ववित् ।।६४
वेदाहं जाजले धर्मं सरहस्यं सनातनम् ।
सर्वभूतहितं मैत्रं पुराणं यं जना विदुः ।।६५

अद्रोहेणैव भूतानामल्पद्रोहेण वा पुनः ।
या वृत्तिः स परो धर्मस्तेन जीवामि जाजले ।।६६
परच्छिन्नैः काष्ठतृणैर्मयेदं शरणं कृतम् ।
अलक्तं पद्मकं तुङ्गं गन्धाश्चोच्चावचांस्तथा ।।६७
रसांश्च तांस्तान् विप्रर्षे मद्यवर्ज्यान् बहूनहम् ।
क्रीत्वा वै प्रतिविक्रीणे परहस्तादमायया ।।६८
सर्वेषां यः सुहृन्नित्यं सर्वेषां च हिते रतः ।
कर्मणा मनसा वाचा स धर्मं वेद जाजले ।।६९

नानुरुद्धचे निरुध्ये वा न द्वेष्मि न च कामये ।
समोऽहं सर्वभूतेषु पश्य मे जाजले व्रतम् ।
तुला मे सर्वभूतेषु समा तिष्ठति जाजले ।।७०

भीष्मजी ने कहा—राजन् ! यशस्वी ब्राह्मण जाजलि के ऐसा प्रश्न करने पर धर्म और अर्थ को जानने वाले तुलाधार वैश्य ने धर्म विषयक सूक्ष्म तत्वों को इस प्रकार कहना प्रारम्भ किया। तुलाधार बोले—हे जाजले ! जो सब प्राणियों के लिये हितकर और सभी के लिये मित्रता स्थापित करने वाला तथा सभी का पुरातन धर्म रूप में जाना हुआ जो सनातन धर्म है, उसका गूढ़ तत्वों सहित मुझे ज्ञान है। हे जाजले ! जिसमें किसी भी प्राणी के साथ द्रोह न करना पड़े अथवा कम से कम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

द्रोह करना पड़े, ऐसी जीवन-वृत्ति ही श्रेष्ठ धर्म है। मैं उसी वृत्ति से अपना निर्वाह करता हूँ। मैंने अपना यह घर दूसरों के द्वारा काटे गये काष्ठ तथा तृण आदि से बनाया है। मैं अलक्तक, पद्मक, तुङ्गकाष्ठ, चन्दन आदि गंध द्रव्य तथा अन्य सभी वस्तुओं को दूसरों से खरीद कर बेचने का कार्य करता हूँ। मैं मदिरा बेचने का कार्य नहीं करता। उसके अतिरिक्त अन्य सभी पेय रसों को खरीदता और बेचता हूं। परन्तु, विक्री करने में छल, कपट, असत्य, आदि से काम नहीं लेता। हे जाजले! धर्म का ज्ञाता वही है जो सब जीवों के लिये सुहृद है यथा मन, वाणी और कर्म से सभी के हित में सदा लगा रहता है। मैं किसी से अनुरोध अथवा विरोध नहीं करता। किसी से द्वेष अथवा कामना भी नहीं करता। सभी प्राणियों से प्रति मेरा समान भाव है। यही मेरा व्रत और नियम है—इसे देखो। मेरी यह तराजू सभी के लिये समान तोलती है ॥६४-७०॥

नाहं परेषां कृत्यानि प्रशंसामि न गर्हये।
आकाशस्येव विप्रेन्द्र पश्यँल्लोकस्य चित्रताम् ॥७१
इति मां त्वं विजानीहि सर्वलोकस्य जाजले।
समं मतिमतां श्रेष्ठ समलोष्टाश्मकाञ्चनम् ॥७२
यथान्धबधिरोन्मत्ता उच्छ्वासपरमाः सदा।
देवैरपिहितद्वाराः सोपमा पश्यतो मम ॥७३
यथा वृद्धातुरकृशा निःस्पृहा विषयान् प्रति।
तथार्थकामभोगेषु ममापि विगता स्पृहा ॥७४
यदा चायं न बिभेति यदा चास्मान्न बिभ्यति।
यदा नेच्छति न द्वेष्टि ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥७५
यदा न कुरुते भावं सर्वभूतेषु पापकम्।
कर्मणा मनसा वाचा ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥७६
न भूतो नभविष्योऽस्ति न च धर्मोऽस्ति कश्चन।
योऽभयः सर्वभूतानां स प्राप्नोत्यभयं पदम् ॥७७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विप्रश्रेष्ठ ! मैं आकाश के समान असङ्ग रहता हुआ और संसार के कार्यों की विलक्षणता को देखता हुआ दूसरों के कार्यों की प्रशंसा या निंदा नहीं करता। बुद्धिमानों में श्रेष्ठ जाजले ! इस प्रकार तुम मुझे सभी के प्रति समान भाव रखने वाला और मिट्टी, पाषाण या स्वर्ण को भी समान मानने वाला समझो। अन्धे, बहरे, उन्मत्त, नेत्र-हीन और श्रोत्र-हीन मनुष्य उन-उन इन्द्रियों से कार्य नहीं ले सकता, वैसे ही मुझ द्रष्टा पुरुष को जानो। वृद्ध, रोगी और दुर्बल मनुष्य, जैसे विषयों की कामना नहीं करते, वैसे ही मेरे मन से धन और विषयों की कामना दूर हो चुकी है। जो दूसरों से भयभीत नहीं होता अथवा दूसरे भी जिससे भयभीम नहीं होते, जो न किसी की इच्छा और न किसी के प्रति द्वेष करता है, वह ब्रह्मभाव को प्राप्त होजाता है। जब सभी प्राणियों के प्रति मन, वाणी और कर्म से भी बुरे भाव नहीं होते, तभी मनुष्य को ब्रह्मभाव की प्राप्ति हो सकती है। भूत, भविष्य में जिसका कोई कार्य नहीं है तथा जिसके लिये कोई धर्म शेष नहीं है और जो सब भूतों को अभय देता है, वह स्वयं भी निर्भय पद को प्राप्त होता है ॥७१-७७॥

यस्मादुद्विजते लोकः सर्वो मृत्युमुखादिव ।
वाकक्रू राद्दण्डपरुषात् स प्राप्नोतिमहद् भयम् ॥७८

यथावद् वर्तमानानां वृद्धानां पुत्रपौत्रिणाम् ।
अनुवर्तामहे वृत्तमहिंस्राणां महात्मनाम् ॥७९

प्रणष्टः शाश्वतो धर्मस्त्वनाचारेण मोहितः ।
तेन वैद्यस्तपस्वी वा बलवान् वा विमुह्यते ॥८०

आचाराज्जाजले प्राज्ञः क्षिप्रं धर्ममवाप्नुयात् ।
एवं यः साधुभिर्दान्तश्चरेदद्रोहचेतसा ॥८१

नद्यां चेह यथा काष्ठमुह्यमानं यदृच्छया ।
यदृच्छयैव काष्ठेन सन्धिं गच्छेत् केनचित् ॥८२

तत्रापराणि दारूणि संसृज्यन्ते परस्परम् ।
तृणकाष्ठकरीषाणि कदाचिन्न समीक्षया ॥८३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यस्मान्नोद्विजते भूतं जातु किंचित् कथंचन ।
अभयं सर्वभूतेभ्यः स प्राप्नोति सदा मुने ।।८४

मृत्यु मुख में जाने से जैसे सभी भयभीत होते हैं, वैसे ही जिसकी याद आते ही सब उद्विग्न हो जाँय तथा जो कठोरभाषी और कठोर दण्ड देने वाला है, उसे महान् भय का सामना करना होता है । पुत्र-पौत्रों वाले जो वृद्ध पुरुष शास्त्रानुकूल आचरण करते हैं और किसी प्राणी की हिंसा नहीं करते, उन्हीं महात्माओं के आचरण का मैं पालन करता हूँ । अनाचार के कारण भ्रमित हुआ सनातन धर्म नष्ट हो जाता है । उसके द्वारा विद्वान्, तपस्वी तथा काम-क्रोध का विजेता पुरुष भी मोह में पड़ जाता है । हे जाजले ! जो जितेन्द्रिय पुरुष दूसरों के प्रति विद्वेष न रखता हुआ श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा पाले गये आचार के अनुसार ही आचरण करता है, वह वेदानुकूल सदाचार का पालन करने से धर्म के रहस्य को शीघ्र जान लेता है । जैसे दैवेच्छा से बहता हुआ एक काष्ठ सहसा किसी दूसरे काष्ठ से मिल जाता है, फिर वहाँ अन्य काष्ठ, तृण, लकड़ियाँ, सूखे गोबर आदि परस्पर मिलते हैं तो उनका वह संयोग आकस्मिक ही होता है । जिस व्यक्ति से कोई प्राणी, कभी किसी प्रकार उद्विग्नता को प्राप्त नहीं होता, वह सदा सभी भूतों से अभय प्राप्त करता है ।।७८-८४।।

यस्मादुद्विजते विद्वन् सर्वलोको वृकादिव ।
क्रोशतस्तीरमासाद्य यथा सर्वे जलेचराः ।
स भयं सर्वभूतेभ्यः सम्प्राप्नोति महामते ।।८५
एवमेवायमाचारः प्रादुर्भूतो यतस्ततः ।
सहायवान् द्रव्यवान् यः सुभगोऽथ परस्तथा ।।८६
ततस्तानेव कवयः शास्त्रेषु प्रवदन्त्युत ।
कीर्त्यर्थमल्पहृल्लेखाः पटवः कृत्स्ननिर्णयाः ।।८७
तपोभिर्यज्ञदानैश्च वाक्यैः प्रज्ञाश्रितैस्तथा ।
प्राप्नोत्यभयदानस्य यद् यत् फलमिहाश्नुते ।।८८
लोके यः सर्वभूतेभ्यो ददात्यभयदक्षिणाम् ।
स सर्वयज्ञैरीजानः प्राप्नोत्यभयदक्षिणाम् ।।८९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न भूतानामहिंसाया ज्यायान् धर्मोऽस्ति कश्चन ।
यस्मान्नोद्विजते भूतं जातु किंचित् कथंचन ।
सोऽभयं सर्वभूतेभ्यः सम्प्राप्नोति महामुने ।।९०
यस्मादुद्विजते लोकः सर्पाद् वेश्मगतादिव ।
न स धर्ममवाप्नोति इहलोके परत्र च ।।९१

हे महामते ! नदी के किनारे कोलाहल करने वाले मनुष्य के भय से सभी जलचर छिप जाते हैं और जैसे भेड़िया को देखकर सभी कांप उठते हैं, वैसे ही जिससे सभी भय मानते हैं, उसे भी सब प्राणियों से भय मिलता है। इस प्रकार सभी उपायों से साध्य अभयदान रूप आचार उत्पन्न हुआ है, इसका यथा शक्ति पालन करे। इसे आचरण में लानेवाले व्यक्ति सहायवान्, द्रव्यवान् तथा सौभाग्यवान् माना जाता है। विद्वानों ने शास्त्रों में उन्हीं को श्रेष्ठ कहा है जो अभय देने में समर्थ होते हैं। विषय सुखकी इच्छा वाले पुरुष तो केवल मान, प्रतिष्ठा और कीर्ति आदि के लिये ही अभदान रूप व्रत का पालन करते हैं। परन्तु, प्रवीण पुरुष पूर्ण स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के निमित्त इस व्रत को पालते हैं। तप, यज्ञ, दान एवं ज्ञान विषयक उपदेश से मनुष्य को जिस-जिस फल की प्राप्ति होती है, वह फल उसे अभयदान मात्र से ही मिल जाता है। संसार में सभी प्राणियों को जो दक्षिणा रूप में अभय दान देता है, उसे भी सब से अभयदान प्राप्त होता है और उसे भी यज्ञानुष्ठानों का फल प्राप्त हो जाता है। जीव-हिंसा न करने से जिस धर्म की प्राप्ति होती है, उससे अधिक कोई धर्म नहीं है। जिसके द्वारा किसी प्राणी को भयजन्य उद्विग्नता प्राप्त नहीं होती, उसे भी सब प्राणियों से अभय की प्राप्ति होती है। घर में निवास करने वाले सर्प के समान जिससे सबको डर लगा रहता है। वह व्यक्ति धर्म के फल को इहलोक अथवा परलोक में कहीं भी प्राप्त नहीं करता ।।८५-९१।।

सर्वभूतात्मभूतस्य सर्वभूतानि पश्यतः ।
देवाऽपि मार्गे मुह्यन्ति अपदस्य पदैषिणः ।।९२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दानं भूताभयस्याहुः सर्वदानेभ्य उत्तमम् ।
ब्रवीमि ते सत्यमिदं श्रद्दधस्व च जाजले ।।९३
स एव सुभगो भूत्वा पुनर्भवति दुर्भगः ।
व्यापत्तिं कर्मणां दृष्ट्वाजुगुप्सन्ति जनाः सदा ।।९४
अकारणो हि नैवास्ति धर्मः सूक्ष्मो हि जाजले ।
भूतभव्यार्थमेवेह धर्मप्रवचनं कृतम् ।।९५
सूक्ष्मत्वान्न स विज्ञातुं शक्यते बहुनिह्नवः ।
उपलभ्यान्तरा चान्यानाचारानवबुध्यते ।।९६
ये चच्छिन्दन्ति वृषणान् ये च भिन्दन्तिनस्तकान् ।
वहन्ति महतो भारान् बध्नन्ति दमयन्ति च ।।९७
हत्वा सत्वानि खादन्ति तान् कथं न विगर्हसे ।
मानुषा मानुषानेव दासभावेन भुञ्जते ।।९८
वधबन्धनिरोधेन कारयन्ति दिवानिशम् ।
आत्मनश्चापि जानाति यद् दुःखं वधबन्धने ।।९९
पञ्चेन्द्रियेषु भूतेषु सर्वं वसति दैवतम् ।
आदित्यश्चन्द्रमा वायुर्ब्रह्मा प्राणः क्रतुर्यमः ।
तानि जीवानि विक्रीय का मृतेषु विचारणा ।।१००
अजोऽग्निर्वरुणो मेषः सूर्योऽश्वः पृथिवी विराट् ।
धेनुर्वत्सश्च सोमो वै विक्रीयैतन्न सिध्यति ।।१०१
का तैले का घृते ब्रह्मन् मधुन्यप्यौषधेषु वा ।
अदंशमशके देशे सुखसंवर्धितान् पशून् ।।१०२
तांश्च मातुः प्रियाज्ञानन्नाक्रम्य बहुधा नराः ।
बहुदंशाकुलान् देशान् नयन्ति बहुकर्दमान् ।।१०३
वाहसम्पीडिता घुर्याः सीदन्त्यविधिना परे ।।१०४

जो सभी भूतों का आत्मा होकर सब को अपने से अभिन्न देखता है, उसे किसी स्थान विशेष की प्राप्ति न होते हुए, वह ब्रह्मस्वरूप हो जाता है । उसके चरण चिह्न की खोज करने वाले देवता भी उस ज्ञानी के मार्ग में भ्रमित हो जाते हैं । सभी दानों से श्रेष्ठ प्राणियों को अभयदान है !

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हे जाजले ! आप मेरे इस सत्य वचन पर विश्वास कीजिये । स्वर्ग आदि की कामना से धर्म कार्य करने वालों को ही स्वर्गादि लोकों की प्राप्ति होती है । फिर वे ही पुण्य क्षीण होने पर नीचे गिरते हैं और दुर्भाग्यवश दोष युक्त माने जाते हैं । इस प्रकार कर्मों को नष्ट होते देख कर सकाम कर्म की सभी ज्ञानीजन निन्दा करते हैं । कोई भी धर्म फल-रहित नहीं है । उसका स्वरूप अत्यन्त सूक्ष्म है । ब्रह्म की प्राप्ति के निमित्त ही धर्म का यह प्रवचन किया गया है । अत्यन्त सूक्ष्म स्वरूप होने के कारण धर्म सब की समझ में नहीं आता, क्योंकि अनेक वाधायें उसके रूपको छिपाती हैं । परन्तु, समय-समय पर विभिन्न सत्पुरुषों के आचरण से मनुष्य को यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है । बैलों को बधिया करके नाथने वाले, उन पर बोझ ढोने वाले अथवा उनका दमन करके काम लेने वाले, अनेक जीवों को मार कर भक्षण करने वाले, मनुष्यों को दास बना कर उनके परिश्रम के फल को स्वयं भोगने वाले व्यक्तियों की आप निन्दा क्यों नहीं करते ! बध और बन्धन के कष्टों को जानते हुए भी जो लोग दूसरों की हत्या करते, बन्धन में डालते और उनसे रात-दिन काम लेते हैं, उन व्यक्ति को आप बुरा क्यों नहीं कहते ? पांच इंद्रियों वाले सभी जीवों में सूर्य, चन्द्र, वायु, ब्रह्मा, प्राण, यज्ञ और यमराज—इन सभी का निवास है । उन्हें जीवित बेच कर जीविका चलाने वालों को अधर्म की प्राप्ति होती है । तो फिर मरे हुए जीवों पर जीविका चलाने वालों का तो कहना ही क्या है ? बकरा अग्नि का, भेड़ वरुण का, अश्व सूर्य का, पृथ्वी विराट् का तथा गाय-बछड़े चन्द्रमा के रूप हैं, इनका व्यापार करना कल्याणकारी नहीं है । किन्तु, हे ब्रह्मन् ! तेल, घृत, मधु, औषधि के बेचने में क्या हानि है ? अनेक मनुष्य दंश, मच्छर आदि से शून्य प्रदेशों में रहने वाले पशुओं को, उनकी माता आदि के विरह-संताप को जानते हुए भी, उन्हें पकड़ कर देश, मच्छर, कीचड़ आदि से युक्त प्रदेशों में ले जाते हैं । अनेकों पशु भारी बोझ को ढोते हुए उससे संतप्त होते हैं । उस क्रूरकर्म से अधिक तो भ्रूण हत्या के पाप को भी मैं नहीं मानता । खेती को अच्छा मानने पर भी वह वृत्ति अत्यन्त कठोरता पूर्ण है ॥९२-१०४॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

न मन्ये भ्रूणहत्यापि विशिष्टा तेन कर्मणा ।
कृषिं साध्विति मन्यन्ते सा च वृत्तिः सुदारुणा ॥१०५
भूमिं भूमिशयांश्चैव हन्ति काष्ठमयोमुखम् ।
तथैवानड्वहो युक्तान् समवेक्षस्व जाजले ॥१०६
अघ्न्या इति गवां नाम क एता हन्तुमर्हति ।
महच्चकाराकुशलं वृषं गां वाऽऽलभेत् तु यः ॥१०७
ऋषयो यतयो ह्येतन्नहुषे प्रत्यवेदयन् ।
गां मातरं चाप्यवधीर्वृषभं च प्रजापतिम् ॥१०८
अकार्यं नहुषाकार्षीर्लप्स्यामस्त्वत्कृते व्यथाम् ।
शतं चैकं च रोगाणां सर्वभूतेष्वपातयन् ॥१०९
ऋषयस्ते महाभागाः प्रजास्वेव हि जाजले ।
भ्रूणहं नहुष त्वाहुर्न ते होष्यामहे हविः ॥११०
इत्युक्त्वा ते महात्मानः सर्वे तत्त्वार्थदर्शिनः ।
ऋषयो यतयः शान्तास्तपसा प्रत्यवेदयन् ॥१११
ईदृशानशिवान् घोरानाचारानिह जाजले ।
केवलाचरितत्वात् तु निपुणो नावबुद्धयसे ॥११२
कारणाद् धर्ममन्विच्छेन्न लोकचरितं चरेत् ।
यो तन्यात् यश्च मां स्तौति तत्रापि शृणु जाजले ॥११३

हे जाजले ! मुख पर जुड़े हुए फाल वाला हल पृथ्वीको कष्ट पहुँचता है और उसमें रहने वाले जीवोंकी हिंसा बैल करता है । उसमें जो बैल जुतते हैं, उनकी दुर्दशा भी देखनी चाहिये । श्रुति ने गौओं को न मारने योग्य कहा है, फिर उन्हें कौन मारना चाहेगा ? जो गौओं और बैलों को मारता है, वह उसका महान् पाप-कर्म ही है । एक समय ऋषियों और यतियों ने राजा नहुष ने कहा कि 'आपने माता गौ और प्रजापति बैल की हत्या की है । तुम्हारे द्वारा यह न करने योग्य कुकर्म सभी की व्यथा का कारण हुआ है ।' उन ऋषियों ने ऐसा कह कर उस पाप को एक सौ एक रोगों के रूप में बाँट कर सब प्राणियों पर डाल दिया तथा नहुष को भ्रूण हत्यारा मान कर उन्होंने उसके यज्ञ में आहुति न देने की स्पष्ट

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

घोषणा कर दी। यह कह कर उन सभी महात्माओं ने तप के द्वारा सभी बातें जान लीं और नहुष के अज्ञान वश हुए उस पाप में उन्हें दोषी न पा कर सभी ऋषिगण शान्त हो गये। हे जाजले ! इस संसार में अनेक प्रकार के अमंगलकारी और भयंकर आचरण प्रचलित है। तुम चतुर होते हुए भी उन कर्मों के पूर्वजों द्वारा किये गये होने के कारण उसमें बुराई नहीं मानते ॥१०५-११३॥

समौ तावपि मे स्यातां न हि मेऽस्ति प्रियाप्रियम्।
एतदीदृशकं धर्मं प्रशंसन्ति मनीषिणः ॥११४
उपपत्त्या हि सम्पन्नो यतिभिश्चैव सेव्यते।
सततं धर्मशीलैश्च निपुणोपलक्षितः ॥११५
अयं प्रवर्तितो धर्मस्तुलां धारयता त्वया।
स्वर्गद्वारं च वृत्तिं च भूतानामवरोत्स्यते ॥११६
कृष्या ह्यन्नं प्रभवति ततस्त्वमपि जीवसि।
पशुभिश्चौषधीभिश्च मर्त्या जीवन्ति वाणिज ॥११७
ततो यज्ञः प्रभवति नास्तिक्यमपि जल्पसि।
न हि वर्तेदयं लोको वार्तामुत्सृज्य केवलाम् ॥११८
वक्ष्यामि जाजले वृत्तिं नास्मि ब्राह्मण नास्तिकः।
न यज्ञं च विनिन्दामि यज्ञवित् तु सुदुर्लभः ॥११९

इस कर्म का क्या हेतु है,इसका विचार करके ही कर्म करना चाहिये पूर्वजों ने किया है, अथवा अब लोग कर रहे हैं, इसी से उनका अन्धानुकरण उचित नहीं। अब मेरा निवेदन सुनो कि जो मुझे मारे अथवा मेरी निन्दा करे, यह दोनों ही मेरे लिये समान हैं। मैं उनमें से किसी को प्रिय और किसी को अप्रिय नहीं मानता। मनीषी पुरुष इस धर्म की प्रशंसा करते हैं। यह युक्ति संगत है, यति भी इसका सेवन करते हैं। धर्मात्मा मनुष्य इस पर भले प्रकार विचार करके ही धर्म कार्य करते हैं। जाजलि बोले—हाथ में तराजू लेकर तुम जिस धर्म का प्रवचन करते हो, उससे तो स्वर्ग-द्वार को ही बन्द कर रहे हो और इससे प्राणियों की जीविका वृत्ति में भी बाधा उत्पन्न होती है। हे वणिक पुत्र ! जिससे तुम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जी रहे हो, वह अन्न खेती के द्वारा ही उत्पन्न होता है। अन्न और पशुओं के द्वारा ही मनुष्यों का जीवन-निर्वाह हो सकता है। उन्हीं के द्वारा यज्ञ-कार्य सम्पन्न होता है। तुम्हारी बातें तो नास्तिकों जैसी हैं। पशुओं के कष्ट का विचार कर कृषि-वृत्ति को त्याग दिया जाय, तो इस लोक में जीवन ही नहीं रहेगा। तुलाधार बोले—हे जाजले ! मैं तुम्हें हिंसा से अतिरिक्त जीवन-वृत्ति बताता हूँ। मैं नास्तिक या यज्ञ-निन्दक नहीं हूँ, परन्तु यज्ञ के वास्तविक रूप का जानने वाला पुरुष दुर्लभ है ॥११४-११६॥

नमो ब्राह्मणयज्ञाय ये च यज्ञविदो जनाः।
स्वयज्ञं ब्राह्मणा हित्वा क्षत्रयज्ञमिहास्थिताः ॥१२०
लुब्धैर्वित्तपरैर्ब्रह्मन् नास्तिकैः सम्प्रवर्तितम्।
वेदवादानविज्ञाय सत्याभासमिवानृतम् ॥१२१
इदं देयमिदं देयमिति चायं प्रशस्यते।
अतः स्तैन्यं प्रभवति विकर्माणि च जाजले ॥१२२
यदेव सुकृतं हव्यं तेन तुष्यन्ति देवताः।
नमस्कारेण हविषा स्वाध्यायैरौषधैस्तथा।
पूजा स्याद् देवतानां हि यथा शास्त्रनिदर्शनम् ॥१२३
इष्टापूर्तादसाधूनां विगृणा जायते प्रजा ॥ १२४
लुब्धेभ्यो जायते लुब्धः समेभ्यो जायते समः।
यजमाना यथाऽऽत्मानमृत्विजश्च तथा प्रजाः ॥१२५
यज्ञात् प्रजा प्रभवति नभसोऽम्भ इवामलम्।
अग्नौ प्रास्ताहुतिर्ब्रह्मन्नादित्यमुपगच्छति।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः ॥१२६

हे ब्राह्मणदेव ! जिस यज्ञ का विधान ब्राह्मणों के लिये है, मैं उसे नमस्कार करता हूं और उस यज्ञ के यथार्थ ज्ञाताओं के चरणों में अपना सिर झुकाता हूँ। परन्तु, खेद है कि अपने यज्ञ को छोड़ कर क्षत्रियों के योग्य यज्ञों के अनुष्ठान में ही ब्राह्मण प्रवृत्त हो रहे हैं। हे ब्रह्मन् ! धनोपार्जन के प्रयत्न में लगे अनेक लोभियों और नास्तिकों ने वेद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाक्यों का तात्पर्य न समझ कर सत्य जैसे लगने वाले मिथ्या यज्ञों को प्रचलित कर दिया है। हे जाजले! श्रुतियों और स्मृतियों में इस-इस कर्म के लिये यह-यह दक्षिणा देने की बात कही गयी है। वह दक्षिणा दे, उसके अनुसार वैसी दक्षिणा दें, यह यज्ञ श्रेष्ठ है। यदि यज्ञ कर्त्ता ने कहीं लोभ किया तो, उसे चोरी का पाप लगता है और कर्म का फल भी विपरीत बताया जाता है। शुभकर्म करके जिस हविष्य का संग्रह करते हैं, उसके होम से देवता संतुष्टरहते हैं। नमस्कार, स्वाध्याय घृत और अन्न के द्वारा पूजन होने की बात शास्त्र कहता है। कामना के वश में यज्ञ करने वाले, तालाब खुदवाने या बाग लगवाने वाले असाधु पुरुषों से उनके ही समान दुर्गुण वाली सन्तान होती है। लोभी से लोभी की उत्पत्ति होती है और समभावी पुरुष से समान भाव वाली सन्तान होती है। जैसे यजमान और ऋष्विज् होते हैं, वैसी ही उनकी सन्तान होती है। आकाश से निर्मल जल की वर्षा होने के समान ही शुद्ध भावना वाले यज्ञ से योग्य प्रजोत्पत्ति होती है। अग्नि में दी गई आहुति सूर्य मंडल में व्याप्त होकर जल वृष्टि कराती है। उस वृष्टि से अन्न और अन्न से सम्पूर्ण प्रजा जन्म लेकर जीव धारण करती है ॥१२०-१२६॥

तस्मात् सुनिष्ठिताः पूर्वे सर्वान् कामांश्च लेभिरे।
अकृष्टपच्या पृथिवी आशीर्भिर्वीरुधोऽभवन् ॥१२७
न ते यज्ञेष्वात्मसु वा फलं पश्यन्ति किंचन।
शङ्कमानाः फलं यज्ञे ये यजेरन् कथंचन ॥१२८
जायन्तेऽसाधवो धूर्ता लुब्धा वित्तप्रयोजना ॥१२९
स स्म पापकृतां लोकान् गच्छेदशुभकर्मणा।
प्रमाणमप्रमाणेन यः कुर्यादशुभं नरः।
पापात्मा सोऽकृतप्रज्ञः सदैवेह द्विजोत्तम ॥१३०
कर्तव्यमिति कर्तव्यं वेत्ति वै ब्राह्मणो भयम्।
ब्रह्मैव वर्तते लोके नैव कर्तव्यतां पुनः ॥१३१
बिगुणं च पुनः कर्म ज्याय इत्यनुशुश्रुम।
सर्वभूतोपघातश्च फलभावे च संयमः ॥१३२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्ययज्ञा दमयज्ञा अर्थब्धार्थतृप्तयः ।
उत्पन्नत्यागिनः सर्वेजना आसन्नमत्सराः ।।१३३

पूर्व पुरुष यज्ञ को कर्त्तव्य समझ कर उसे श्रद्धा पूर्वक करते थे, जिसके द्वारा उनकी कामनाएँ स्वतः पूर्ण होती थीं । बिना जोते बोये ही पृथिवी से अन्न उत्पन्न होता और शुभ संकल्प द्वारा ही वृक्षों और लताओं में फल-पुष्प आदि लग जाते थे । वे यज्ञों में किसी फल की कामना नहीं रखते थे । जो मनुष्य यज्ञ में फल मिलेगा या नहीं, ऐसा संशय रखकर उसमें प्रवृत्त होते हैं, वे धन की कामना वाले धूर्त्त पुरुष लोभी और दुष्ट होते हैं । हे द्विजोत्तम ! प्रमाण भूत वेद को जो पुरुष प्रमाण-विरुद्ध कुतर्क के द्वारा अमङ्गल करने वाला बताता है, उस अपवित्र बुद्धि वाले का मन सदा पाप कर्मों में लगा रहता है और वह अपने बुरे कर्मों के कारण पापियों के लोक को प्राप्त होता है । करने योग्य को कर्त्तव्य समझने वाला तथा कर्त्तव्य का पालन न होने से डरने वाला, सबको ब्रह्म समझने वाला और किसी भी कर्म में अपनत्व न रखने वाला पुरुष ही सच्चा ब्राह्मण समझना चाहिये । सुना जाता है कि त्रुटि होने के कारण गुणहीन हुआ कर्म भी निष्काम भाव से किया जाने पर श्रेष्ठ होता है । निष्काम कर्म में श्वान आदि अपवित्र पशुओं का स्पर्श होने पर भी वह कर्म नष्ट नही होता और कल्याणकारी ही रहता है । इसलिये जो कर्म किया जाय, उसमें फल की कामना को संयत रखना चाहिये । पूर्व कालीन ब्राह्मण सत्यभाषण और इन्द्रिय संयम रूप यज्ञ करते थे । वे परम पुरुषार्थ से क्षुब्ध रहते और धन के प्यासे नहीं थे । प्राप्त वस्तुओं को भी त्याग कर ईर्ष्या-द्वेष में नहीं पड़ते थे ।।१२७-१३३।।

क्षेत्रक्षेत्रज्ञतत्त्वज्ञाः स्वयज्ञपरिनिष्ठिताः ।
ब्राह्मं वेदमधीयन्तस्तोषयन्त्यपरानपि ।।१३४
अखिलं दैवतं सर्वं ब्रह्म ब्रह्मणि संश्रितम् ।
तुष्यन्ति तृप्यतो देवास्तृप्तास्तृप्तस्य जाजले ।।१३५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यथा सर्वरसैस्तृप्तो नाभिनन्दति किंचन ।
तथा प्रज्ञानतृप्तस्य नित्यतृप्तिः सुखोदया ॥१३६
धर्माधारा धर्मसुखाः कृत्स्नव्यवसितास्तथा ।
अस्ति नस्तत्त्वतो भूय इति प्राज्ञास्त्ववेक्षते ॥१३७
ज्ञानविज्ञानिनः केचित् परं पारं तितीर्षवः ।
अतीव पुण्यदं पुण्यं पुण्याभिजनसंहितम् ॥१३८
यत्र गत्वा न शोचन्ति न च्यवन्ति व्यथन्ति च ॥१३९
ते तु तद् ब्रह्मणः स्थानं प्रप्नुवन्तीह सात्विकाः ।
नैव ते स्वर्गमिच्छन्ति न यजन्ति यशोधनैः ।
सतां वर्त्मानुवर्तन्ते युजन्ते चाविहिंसया ॥१४०
वनस्पतीनोषधीश्च फलं मूलं च ते विदुः ।
न चैतानृत्विजो लुब्धा याजयन्ति फलार्थिनः ॥१४१

वे क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ के तत्वज्ञानी और आत्म-यज्ञ के अनुष्ठाता थे। उपनिषदों का अध्ययन करते रहते और स्वयं सन्तुष्ट रहकर दूसरों को भी तुष्ट करते थे। ब्रह्म सर्व रूप है, सभी देवता ब्रह्म के रुप हैं। वही ब्रह्म तत्ववेत्ता ब्राह्मण के हृदय में प्रतिष्ठित हैं। अतः हे जाजले ! इसकी तृप्ति से ही सभी देवता तृप्त रहते हैं। जैसे सब रसों की उपलब्धि से तृप्त मनुष्य किसी रस की कामना नहीं करता, वैसे ही ज्ञान के आनन्द से तृप्त मनुष्य को अक्षय सुख वाली तृप्ति सदा रही आती है। हममें से अनेक व्यक्तियों का आधार धर्म है, हम उसी में सुख मानते हैं और कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का पूर्ण ज्ञान रखते हैं, परन्तु, हमारे वास्तविक स्वरूप के सिवाय, अत्यन्त महान् और सर्व व्यापक ब्रह्म सर्वात्मा रूप से सभी में निवास करते हैं, ऐसा ज्ञानियों को दिखाई देता है। भव सागर से पार जाने की कामना वाले ज्ञान-विज्ञान मय पुरुष ही अति पवित्र और पुण्यात्माओं के सेवन-योग्य पुण्यलोक को प्राप्त होते हैं वहाँ पहुँच कर शोक नहीं करते। न पतित होते और न मन में किसी प्रकार से व्यथित होते हैं। वे सात्विक पुरुष स्वयं की इच्छा न करते हुए, ब्रह्मधाम को ही प्राप्त होते हैं। वे सत्पुरुषों के मार्ग का अनुसरण करते तथा यज्ञ और

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धन के निमित्त यज्ञ का अनुष्ठान नहीं करते, बल्कि हिंसा-रहित यज्ञों को ही करते हैं। वनस्पति, अन्न तथा फल मूल को ही हविष्य मानते हैं। परन्तु, धन के लोभ से यज्ञ कराने वाले ऋत्विज् इस हविष्य से अनुष्ठान नहीं कराते ॥१३४-१४१॥

स्वमेव चार्थं कुर्वाणा यज्ञं चक्रुः पुनर्द्विजाः ।
परिनिष्ठितकर्माणः प्रजानुग्रहकाम्यया ॥१४२
तस्मात् तानृत्विजो लुब्धा याजयन्त्यशुभान् नरान् ॥१४३
प्रापयेयुः प्रजाः स्वर्गं स्वधर्माचरणेन वै ।
इति मे वर्तते बुद्धिः समा सर्वत्र जाजले ॥१४४
यानि यज्ञेष्विहेज्यन्ति सदा प्राज्ञा द्विजर्षभाः ।
तेन ते देवयानेन पथा यान्ति महामुने ॥१४५
आवृत्तिस्तस्य चैकस्य नास्त्यावृत्तिर्मनीषिणः ।
उभौ तौ देवयानेन गच्छतो जाजले यथा ॥१४६
स्वयं चैषामनड्वहो युज्यन्ति च वहन्ति च ।
स्वयमुस्राश्च दुह्यन्ते मनः संकल्पसिद्धिभिः ॥१४७

ज्ञानी ब्राह्मणों ने अपने स्वयं को ही यज्ञ-साधन मान कर मानसिक यज्ञ का अनुष्ठान किया। वह अनुष्ठान प्रजा के हित की इच्छा से ही किया गया था। लोभी ऋत्विज् तो अशुभ यज्ञ का ही अनुष्ठान करते हैं। परंतु श्रेष्ठ पुरुष अपने धर्म के आचरण से ही प्रजा को स्वर्ग-लाभ करा देते हैं। हे जाजले ! इसीलिये मेरी बुद्धि सब में समान भाव से रहती है। हे महामुने ! जिन द्रव्यों से श्रेष्ठ विद्वान् ब्राह्मण यज्ञ करते हैं, उन्हीं द्रव्यों के द्वारा देवयान पर चढ़ कर वे पुण्य लोकों को प्राप्त होते हैं। हे जाजले ! कामनाओं में आसक्ति रखने वाला पुरुष ही इस संसार में फिर-फिर कर आता है। ज्ञानी को पुनः जन्म नहीं लेना पड़ता। यद्यपि दोनो ही देव-यान मार्ग से पुण्य लोकों को प्राप्त होते हैं, परन्तु, सङ्कल्प-भेद से ही उनका जन्म लेना या न लेना होता है। ज्ञानियों की कामना से ही उनके मानसिक सङ्कल्पों के सिद्ध होने पर, बैल उनकी गाड़ी में स्वयं जुड़ जाते और गौऐं स्वयं ही दूध देने लगती हैं ॥१४२-१४७॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स्वयं यूपानुपादाय यजन्ते स्वाप्तदक्षिणैः ।
यस्तथा भावितात्मा स्यात् स गामालब्धुमर्हति ॥१४८
ओषधीभिस्तथा ब्रह्मन् यजेरंस्ते न तादृशाः ।
इति त्यागं पुरस्कृत्य तादृशं प्रब्रवीमि ते ॥१४९
निराशिषमनारम्भं निर्नमस्कारमस्तुतिम् ।
अक्षीणं क्षीणकर्माणं तं देवा ब्राह्मणं विदुः ॥१५०
न श्रावयन् न च यजन् न ददद् ब्राह्मणेषु च ।
काम्यां वृत्तिं लिप्समानः किंगतिं याति जाजले ।
इदं तु दैवतं कृत्वा यथा यज्ञमवाप्नुयात् ॥१५१
न वै मुनीनां शृणुमः स्म तत्त्वंपृच्छामि तेवाणिज कष्टमेतत् ।
पूर्वे पूर्वेचास्य नावेक्षमाणानातः परं तमृषयः स्थापयन्ति ॥१५२
यस्मिन्ने वात्मतीर्थे न पशवः प्राप्नुयुर्मखम् ।
अथ स्म कर्मणा केन वाणिज प्रानुयात्सुखम् ।
शंस मे तन्महाप्राज्ञ भृशं वै श्रद्दधामि ते ॥१५३
उत यज्ञा उता यज्ञा मखं नार्हन्ति ते क्वचित् ॥१५४
आज्येन पयसा दध्ना पूर्णाहुत्या विशेषतः ।
वालः शृङ्गेण पादेन सम्भरत्येव गौर्मखम् ॥१५५

योगसिद्धों के पास यज्ञयूप स्वयं उपस्थित होते हैं और वे उन्हें प्राप्त कर प्रचुर दक्षिणा वाले यज्ञों को करते हैं उनके ऋत्विजों को दक्षिणा स्वयं प्राप्त हो जाती है। ऐसे शुद्ध अन्तःकरण वाले सिद्ध पुरुष ही पृथिवी को उपलब्ध कर सकते हैं। हे ब्रह्मन् ! इसीलिये वे सिद्ध पुरुष औषधियों से यज्ञ करने में समर्थ हैं। पूर्व कथित मूढ़ वैसा यज्ञ नहीं कर सकते। कर्म-फल-विहीन महात्माओं का ऐसा महात्म्य है। अतः मैं तुम्हारे समक्ष त्याग को ही रख रहा हूँ। कामना-रहित, फल की इच्छा से कर्म न करने वाला, नमस्कार और स्तुति से दूर रहने वाला, अक्षुण्ण धर्म वाला और कर्म-बन्धन-विहीन पुरुष को देवगण ब्राह्मण कहते हैं। हे जाजले ! वेदाध्ययन, यजन, दान आदि वर्णोचित कर्म न करने वाला और भोगों की कामना में रत ब्राह्मण कुत्सित गति को पाता है। परन्तु, निष्काम

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

धर्म को देव-तुल्य आराध्य बनाने वाला मनुष्य यज्ञ के यथार्थ फल को पा लेता है। जाजलि ने कहा—हे वैश्य श्रेष्ठ! तुम्हारे द्वारा प्रतिपादित तत्व को मैंने मुनियों से भी नहीं सुना। पूर्व कालीन मुनियों ने इस पर विचार नहीं किया जान पड़ता, इसलिये यह कठिन भी है। जिन्होंने विचार किया, उन्होंने भी इस श्रेष्ठ धर्म को स्थापित नहीं किया। इसलिये, मैं तुमसे ही जानना चाहता हूँ। यदि इस प्रकार के आत्मयज्ञ का सौभाग्य अज्ञानियों को नहीं मिल सकता, तो उन्हें किसकर्म के करने से सुख मिल सकता है? यह मेरे प्रति कहिये। मैं तुम्हारे वाक्यों पर अत्यन्त श्रद्धा रख रहा हूँ। तुलाधार बोले—जो दम्भी पुरुष यज्ञ करते हैं, उनमें अश्रद्धा आदि दोष होने से, यज्ञ नहीं कह सकते। वे मानसिक और क्रियात्मक यज्ञ के अधिकारी हैं। श्रद्धावान् पुरुष घी, दूध, दही आदि तथा पूर्णाहुति से अपने यज्ञ को पूर्ण करते हैं। असमर्थ श्रद्धालुओं के यज्ञ को तो गौ अपनी पूँछ के बाल स्पर्श कराके, सींगों में लगे जल से और अपने पाँवों की धूल का स्पर्श करा कर ही सम्पूर्ण कर देती है ॥१४८-१५५॥

पत्नीं चानेन विधिना प्रकरोति नियोजयन्।
इष्टं तु दैवतं कृत्वा यथा यज्ञमवाप्नुयात् ॥१५६
पुरोडाशो हि सर्वेषां पशूनां मेध्य उच्यते।
सर्वा नद्यः सरस्वत्यः सर्वे पुण्याः शिलोञ्चयाः ॥१५७
जाजले तीर्थमात्मैव मा स्म देशातिथिर्भव।
एतानीदृशजान् धर्मानाचरन्निह जाजले ॥१५८
कारणैर्धर्ममन्विच्छन् स लोकानाप्नुते शुभान्।
एतानीदृशकान् धर्मांस्तुलाधारः प्रशंसति ॥१५९
उपपत्त्याभिसम्पन्नान् नित्यं सद्भिर्निषेवितान् ॥१६०
सद्भिर्वा यदि वासद्भिः पन्थानमिममास्थितम्।
प्रत्यक्षं क्रियतां साधु ततो ज्ञास्यसि तद् यथा ॥१६१

इस प्रकार घृत आदि द्रव्य देवता के लिये समर्पित करने के लिये श्रद्धा को ही पत्नी बनावे और यज्ञ को ही देवता के समान आराध्य बना

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कर यज्ञ-पुरुष ईश्वर को विधिवत् प्राप्त करे। यज्ञ विहित सभी पशुओं के दूध आदि से बनाये गये पुरोडाश को ही पवित्र कहा है। सभी नदियाँ सरस्वती स्वरूप हैं और सभी पर्वत पुण्यमय प्रदेश हैं। यह आत्मा ही प्रधानतीर्थ है, इसलिये तीर्थों की कामना से देश-विदेशों में भटकने की आवश्यकता नहीं, मेरे बताये हुए इस अहिंसा-प्रधान धर्म का आचरण करता हुआ, विशेष कारण वश धर्म का अनुसन्धान करने वाला पुरुष कल्याण करने वाले लोकों में जाता है। भीष्मजी बोले कि हे युधिष्ठिर! तुलाधार वैश्य ने हिंसा रहित, युक्ति सङ्गत और श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा सेवन किये धर्मों की इस प्रकार प्रशंसा की। तुलाधार बोले—मेरे बताये हुए धर्म-मार्ग पर सज्जन चलते हैं या दुर्जन? इसे भले प्रकार जाँच कर देख लो। तब तुम इसकी यथार्थता को जान सकोगे ॥१५६-१६१॥

एते शकुन्ता बहवः समन्ताद् विचरन्ति ह ।
तवोत्तमाङ्गे सम्भूताः श्येनाश्चान्याश्च जातयः ॥१६२
आहूयैनान् महाब्रह्मन् विशमानांस्ततस्ततः ।
पश्येमान् हस्तपादैश्च श्लिष्टान् देहेषु सर्वशः ॥१६३
सम्भावयन्ति पितरं त्वया सम्भाविताः खगाः ।
असंशयं पिता वै त्वं पुत्रानाहूय जाजले ॥१६४
ततो जाजलिना तेन समाहूताः पतत्त्रिणः ।
वाचमुच्चारयन्ति स्म धर्मस्य वचनात् किल ॥१६५
अहिंसादिकृतं कर्म इह चैव परत्र च ।
श्रद्धां निहन्ति वै ब्रह्मन् सा हता हन्ति तं नरम् ॥१६६
समानां श्रद्दधानानां संयतानां सुचेतसाम् ।
कुर्वतां यज्ञ इत्येव न यज्ञो जातु नेष्यते ॥१६७
श्रद्धा सरस्वती सेयं सूर्यस्य दुहिता द्विज ।
सावित्री च बहिर्वापसी ततः ॥१६८

आकाश में यह कबूतर आदि अनेक पक्षी उड़ रहे हैं, इनमें वे पक्षी भी हैं जो तुम्हारे सिर पर ही उत्पन्न हुए थे। यह जहाँ तहाँ घोंसलों में रह रहे हैं। इन सब के हाथ पाँव सिकुड़ कर शरीरों से चिपट गये हैं।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इन्हें अपने पास बुला कर प्रश्न करो। तुम्हारे द्वारा पालित और समादृत होने के कारण यह पक्षी, पिता के समान तुम्हारा सम्मान करते हैं। इस प्रकार तुम इनके पिता ही हो। इसलिये अपने इन पुत्रों को बुला कर इनसे पूछो। भीष्मजी बोले कि हे युधिष्ठिर! जाजलि ने उन पक्षियों को बुलाया और उनकी धर्मयुक्त वाणी सुन कर वे पक्षी वहाँ आये तथा मनुष्य के समान स्पष्ट वचन कहने लगे। अहिंसा और दया आदि से प्रेरित होकर किया हुआ कर्म इहलोक और परलोक दोनों में श्रेष्ठ फल दायक है। मन में स्थित हिंसा-भावना श्रद्धा को नष्ट करने वाली है और वह नष्ट हुई श्रद्धा, कर्म कर्त्ता हिंसक को भी नष्ट कर डालती है। हानि-लाभ में समान भाव रखने वाले श्रद्धालु, संयमी और शुद्ध मन वाले पुरुष कर्त्तव्य समझ कर ही यज्ञ को करते हैं। इसलिये उनका यज्ञ कभी विफल नहीं हो पाता। हे विप्र! श्रद्धा सूर्य की पुत्री है, इसलिये वह वैवस्वती, सावित्री तथा प्रसवित्री भी कही जाती है। श्रद्धा की अपेक्षा मन और वाणी भी बहिरङ्ग ही हैं ॥१६२-१६८॥

वाग्वृद्धं त्रायते श्रद्धा मनोवृद्धं च भारत ।
श्रद्धावृद्धं वांमनसी न कर्म त्रातुमर्हति ॥१६९
अत्र गाथा ब्रह्मगीता कीर्तयन्ति पुराविदः ।
शुचेरश्रद्दधानस्य श्रद्दधानस्य चाशुचेः ॥१७०
देवा वित्तममन्यन्त सदृशं यज्ञकर्मणि ।
श्रोत्रियस्य कदर्यस्य वदान्यस्य च वार्धुषे ।
मीमांसित्वोभयं देवाः सममन्नमकल्पयन् ॥१७१
प्रजापतिस्तानुवाच विषमं कृतमित्युत ।
श्रद्धापूतं वदान्यस्य हतमश्रद्धयेतरत् ॥१७२
भोज्यमन्नं वदान्यस्य कदर्यस्य न वार्धुषेः ॥१७३
अश्रद्दधान एवैको देवानां नार्हते हविः ।
तस्यैवान्नं न भोक्तव्यमिति धर्मविदो विदुः ॥१७४
अश्रद्धा परम पापं श्रद्धा पापप्रमोचिनी ।
जहाति पापं श्रद्धावान् सर्पो जीर्णामिव त्वचम् ॥१७५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाणी के दोष से मन्त्रोच्चारण में त्रुटि रहे अथवा मन के चंचल होने से इष्टदेव का ध्यान आदि कर्म सम्पन्न न हो पावे, तो भी श्रद्धा उस कर्म की रक्षा करने में समर्थ है। परन्तु श्रद्धा के अभाव में त्रुटि पूर्ण कर्म की वाणी और मन रक्षा करने में समर्थ नहीं हैं। प्राचीन वृत्तान्तों के ज्ञाता पुरुष इस सम्बन्ध में ब्रह्माजी द्वारा गायी हुई इस गाथा को कहते हैं कि पूर्वकाल में श्रद्धा-रहित पवित्र अथवा पवित्रता-रहित श्रद्धालु के द्रव्य को यज्ञ कर्म के लिये देवगण समान समझते थे तथा कृपण वेदज्ञाता और सूद खाने वाले महादानी के अन्न को भी समान मानते थे। क्योंकि, उन्होंने दोनों प्रकार के अन्नों को भले प्रकार विचार करके ही समान माना था। एक बार प्रजापति ने यज्ञ में उनसे कहा था—हे देवगण ! तुम्हारा यह कार्य उचित नहीं है। क्योंकि उदार पुरुष का अन्न उसकी श्रद्धा के कारण पवित्र होता है और कृपण मनुष्य की अश्रद्धा के कारण उसका अन्न अपवित्र और नष्टप्रायः माना जाता है। इसलिये, उदार पुरुष का अन्न ही सेवन करना चाहिये। कृपण, श्रोत्रिय और सूदखोर का नहीं। श्रद्धा-रहित पुरुष को देवताओं को हविष्य अर्पण करने का अधिकार नहीं है। धर्मज्ञ पुरुष यह मानते हैं कि उसका अन्न सेवन न करे। अश्रद्धा परम पाप है, परन्तु श्रद्धा पाप को नष्ट करने वाली है। श्रद्धालु पुरुष पाप को उसी प्रकार त्याग देते हैं जैसे सर्प अपनी पुरानी केंचुली को त्याग देता है ॥१६६-१७५॥

ज्यायसी या पवित्राणां निवृत्तिः श्रद्धया सह।
निवृत्तशीलदोषो यः श्रद्धावान् पूत एव सः ॥१७६
किं तस्य तपसा कार्यं किं वृत्तेन किमात्मना।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यच्छ्रद्धः स एव सः ॥१७७
इति धर्मा समाख्यातः सद्भिर्धर्मार्थदर्शिभिः।
वयं जिज्ञासमानास्तु सम्प्राप्ता धर्मदर्शनात् ॥१७८
श्रद्धां कुरु महाप्राज्ञ तत प्राप्स्यसि वै परम्।
श्रद्धावाञ्श्रद्दधानश्च धर्मश्चैव हि जाजले ॥१७९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रद्धा तो हो ही, साथ ही पापों से छुटकारा भी मिल जाय तो यह सभी पवित्रताओं से श्रेष्ठ है। तथा जिसके शील-सम्बन्धी दोष नष्ट हो गये, वह श्रद्धावान् पुरुष सदा ही पवित्र होता है। तप के द्वारा उसे क्या चाहिये ? आचार व्यवहार अथवा आत्म चिन्तन से उसे क्या प्रयोजन ? यह पुरुष श्रद्धावान् है। वह अपनी सात्त्विकी, राजसी या तामसी श्रद्धा के अनुसार ही सात्त्विक, राजस अथवा तामस होता है। धर्म और अर्थ का साक्षात्कार करने वाले सत्पुरुष ही इस प्रकार धर्म की व्याख्या करते हैं। हमने धर्मदर्शन नामक मुनि से जिज्ञासा कर धर्म का ऐसा ज्ञान पाया है। हे जाजले ! तुम इस पर श्रद्धा करो। इसके अनुसार आचरण करने पर परम गति को प्राप्त होगे। श्रद्धालु पुरुष साक्षात् धर्म रूप है और श्रद्धापूर्वक धर्म पर दृढ़ मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ समझा जाता है ॥१७६-१७९॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

२१—श्रीमहेश्वर गीता

तिलोत्तमा नाम पुरा ब्रह्मणा योषिदुत्तमा ।
तिलं तिलं समुद्धृत्य रत्नानां निर्मिता शुभा ।।१
साभ्यगच्छत मां देवि रूपेणाप्रतिमा भुवि ।
प्रदक्षिणं लोभयन्ती मां शुभे रुचिराननां ।।२
यतो यतः सा सुदती मामुपाधावदन्तिके ।
ततस्ततो मुखं चारु मम देवि विनिर्गतम् ।।३
तां दिदृक्षुरहं योगाच्चमूर्तित्वमागतः ।
चतुर्मुखश्च संवृत्तो दर्शयन् योगमुत्तमम् ।।४
पूर्वेण वदनेनाहमिन्द्रत्वमनुशास्मि ह ।
उत्तरेण त्वया सार्धं रमाम्यहमनिन्दिते ।।५
पश्चिमं मे मुखं सौम्यं सर्वप्राणिसुखावहम् ।
दक्षिणं भीमसंकाशं रौद्रं संहरति प्रजाः ।।६
जटिलो ब्रह्मचारी च लोकानां हितकाम्यया ।
देवकार्यार्थसिद्धयर्थं पिनाकं मे करे स्थितम् ।।७

भगवान् शिवजी ने पार्वतीजी से कहा—हे प्रिये ! प्राचीन काल में ब्रह्माजी ने एक श्रेष्ठ नारी को उत्पन्न किया उन्होंने सभी रत्नों का तिल तिल भर सार लेकर उसके अंगों की रचना की थी। इसलिये उसका नाम तिलोत्तमा हुआ। इस तिलोत्तमा के रूप की पृथिवी पर कहीं समता नहीं थी। वह सुन्दर मुख वाली बाला मुझे लुभाती हुई मेरी परिक्रमा करने लगी। वह श्रेष्ठ दाँतों वाली सुन्दरी निकट से मेरी परिक्रमा करती हुई जिस-जिस दिशा में गयी उसी-उसी दिशा में मेरा मुख उसे दिखाई देने लगा। तिलोत्तमा के रूप को देखते रहने की इच्छा से मैं योगबल

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के द्वारा चतुर्मुख हो गया। इस प्रकार मैंने अपनी योगशक्ति का चमत्कार भी दिखाया। मैं पूर्व दिशा वाले अपने मुख से इन्द्रपद का शासन करता हूं और उत्तर दिशा वाले मुख से तुम्हारे साथ संवाद का सुख प्राप्त करता हूं। पश्चिम दिशा में स्थित मेरा मुख सौम्य है। वह सब प्राणियों के लिये सुख दायक है और दक्षिण दिशा में स्थित मुख भयानक तथा रौद्र है, उसके द्वारा संपूर्ण प्रजा का संहार किया जाता है। लोकहित की भावना से मैंने जटाधारी ब्रह्मचारी का वेश धारण किया हुआ है। देवताओं के हित-साधनार्थ मेरे हाथ में सदा धनुष रहता है ॥१-७॥

इन्द्रेण च पुरा वज्रं क्षिप्तं श्रीकांक्षिणा मम ।
दग्ध्वा कण्ठं तु तद् यातं तेन श्रीकण्ठता मम ॥८
पुरा युगान्तरे यत्नादमृतार्थं सुरासुरैः ।
बलवद्भिर्विमथितश्चिरकालं महोदधिः ॥९
रज्जुना नागराजेन मथ्यमाने महोदधौ ।
विषं तत्र समुद्भूतं सर्वलोकविनाशनम् ॥१०
तद् दृष्ट्वा विबुधाः सर्वे तदा विमनसोऽभवन् ।
ग्रस्तं हि तन्मया देवि लोकानां हितकारणात् ॥११
तत्कृता नीलता चासीत् कण्ठे बर्हिनिभा शुभे ।
तदाप्रभृति चैवाहं नीलकण्ठ इति स्मृतः ।
एतत् ते सर्वमाख्यातं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ॥१२
नीलकण्ठ नमस्तेऽस्तु सर्वलोकसुखावह ।
बहूनामायुधानां त्वं पिनाकं धर्तुमिच्छसि ।
किमर्थं देवदेवेश तन्मे शंसितुमर्हसि ॥१३
शस्त्रागमं ते वक्ष्यामि शृणु धर्म्यं शुचिस्मिते ।
युगान्तरे महादेवि कण्वो नाम महामुनिः ।
स हि दिव्यां तपश्चर्यां कर्तुमेवोपचक्रमे ॥१४

प्राचीन काल में इन्द्र ने मेरी श्री प्राप्त करने की इच्छा से मुझ पर वज्र-प्रहार किया था। उस वज्र से मेरा कण्ठ दग्ध हो गया। तभी से मेरी प्रसिद्धि 'श्रीकण्ठ' नाम से है। प्राचीन कालीन दूसरे युग में बल-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वान् देवताओं और दैत्यों ने अमृत प्राप्त करने के महान् प्रयत्न में चिर काल तक महान् समुद्र का मन्थन किया था। नागराज वासुकी को रस्सी और मदराचल को रई बना कर जब वह महासागर मथा जाने लगा, तब उसमें से सभी लोकों को नष्ट करने में समर्थ विष प्रकट हुआ। उसे देख कर सभी देवगण उदास हो गये, तब तीनों लोकों का हित साधन करने के लिये मैंने ही उस विष का पान किया। हे शुभे! उसी विष के कारण मेरे कण्ठ में मोरपंख जैसा नीले रंग का चिह्न बन गया, तभी से मुझे सब नीलकण्ठ कहने लगे। मैंने यह सब बातें तुम से कह दीं, अब तुम्हें और क्या सुनना है। पार्वतीजी ने कहा-हे सर्व लोक सुखावह नीलकण्ठ! आपको नमस्कार है। हे देवदेवेश! अनेक प्रकार के आयुधों के होते हुए भी आप धनुष को ही क्यों धारण करते हैं, यह मेरे प्रति कहने की कृपा कीजिये। श्रीशिवजी ने कहा—हे महादेवि! मुझे धर्मानुकूल शस्त्र जिस प्रकार प्राप्त हुए हैं, उसे कहता हूँ। हे पवित्र मुस-कान वाली? युगान्तर में कण्व नामक एक महामुनि हुए थे, उन्होंने दिव्य तप करना आरम्भ किया ॥८-१४॥

तथा तस्य तपो घोरं चरतः कालपर्यायात्।
वल्मीकं पुनरुद्भूतं तस्यैव शिरसि प्रिये।
धरमाणश्च तत् सर्वं तपश्चर्यां तथाकरोत् ॥१५
तस्मै ब्रह्मा वरं दातुं जगाम तपसार्चितः।
दत्त्वा तस्मै वरं देवो वेणुं दृष्ट्वा त्वचिन्तयत् ॥१६
लोककार्यं समुद्दिश्य वेणुनानेन भामिनि।
चिन्तयित्वा तमादाय कार्मुकार्थे न्ययोजयत् ॥१७
विष्णोर्मम च सामर्थ्यं ज्ञात्वा लोकपितामहः।
धनुषी द्वे तदा प्रादाद् विष्णवे मम चैव तु ॥१८
पिनाकं नाम मे चापं शार्ङ्गं नाम हरेर्धनुः।
तृतीयमवशेषेण गाण्डीवमभवद् धनुः ॥१९
तच्च सोमाय निर्दिश्य ब्रह्मा लोकं गतः पुनः।
एतत् ते सर्वमाख्यातं शस्त्रागममनिन्दिते ॥२०

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बाहनेष्यत्र सर्वेषु श्रीमत्स्वन्येषु सत्तम ।
कथं च वृषभो देव वाहनत्वमुपागतः ।।२१

हे प्रिये ! तपस्या करते हुए उन मुनि के मस्तक पर बाँबी जम गई तो भी वे उसी प्रकार तप में लगे रहे । मुनि के तप से प्रभावित होकर ब्रह्मा जी उन्हें वर देने के लिये पहुंचे । वर देने के पश्चात् ब्रह्माजी को एक बाँस दिखाई दिया तब उन्होंने उसके उपभोग करने का उपाय सोचा । हे भामिनि ! उस बाँस से जगत् का कुछ उपहार हो सके, इसलिये उन्होंने उसे हाथ में लेकर धनुष के काम में लिया । संसार के पितामह ब्रह्माजी ने भगवान् विष्णु की और मेरी शक्ति जान कर हम दोनों के लिये उसी समय दो धनुष बनाये । मेरे धनुष का नाम 'पिनाक' और श्री विष्णु भगवान् के धनुष का नाम 'शार्ङ्ग' रखा गया । उस बाँस के बचे हुए भाग से 'गाण्डीव' नामक एक तीसरा धनुष बनाया गया । वह गाण्डीव उन्होंने सोम को प्रदान किया और फिर वे अपने लोक को चले गये । हे अनिन्दिते ! शस्त्रों के प्रगट होने का सम्पूर्ण वृत्तान्त तुम्हें बता दिया । पार्वतीजी ने कहा—हे देव ! आप सत्पुरुषों में श्रेष्ठ हैं । संसार में अन्य श्रेष्ठ वाहन उपलब्ध हैं, परन्तु आपका वाहन तो वृषभ ही है ।।१५-२१।।

सुरभीमसृजद् ब्रह्मा देवधेनुं पयोमुचम् ।
सा सृष्टा बहुधा जाता क्षरमाणा पयोऽमृतम् ।।२२
तस्या वत्समुखोत्सृष्टः फेनो मद्गात्रमागतः ।
ततो दग्धा मया गावो नानावर्णत्वमागताः ।।२३
ततोऽहं लोकगुरुणा शमं नीतोऽर्थवेदिना ।
वृषं चैनं ध्वजार्थं मे ददौ वाहनमेव च ।।२४
निवासा बहुरूपास्ते दिवि सर्वगुणान्विताः ।
तांश्च संत्यज्य भगवञ्श्मशाने रमसे कथम् ।।२५
केशास्थिकलिले भीमे कपालघटसंकुले ।
गृध्रगोमायुबहुले चिताग्निशतसंकुले ।।२६
अशुचौ मांसकलिले वसाशोणितकर्दमे ।
विकीर्णास्त्रास्थिनिचये शिवानादविनादिते ।।२७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्री महेश्वर ने कहा— ब्रह्माजी ने देवताओं को दूध देने वाली सुरभि नाम की गौ उत्पन्न की। वह गौ मेघ के समान दूध की वर्षा करती थी। वह सुरभि अमृतमय दूध को बहाती हुई विभिन्न रूपों में प्रकट हुई। एक दिन उसके बछड़े के मुँह से फेन निकल कर मेरे देह पर आ पड़ा। इस से क्रोधित होकर मैंने गौओं को संतप्त करना आरम्भ किया। मेरे क्रोध में जलती हुई गौओं के रंग बदल कर अनेक प्रकार के हो गये। तब अर्थ शास्त्र के ज्ञाता लोकगुरु ब्रह्माजी ने मुझे शान्त कर दिया और ध्वज-चिह्न तथा वाहन के रूप में मुझे यह वृषभ दिया। पार्वतीजी ने कहा— हे भगवान्! स्वर्गलोक में अनेकों स्थान सर्वगुण सम्पन्न हैं, उन सब को त्याग कर आप श्मशान भूमि में ही क्यों रहते हैं? श्मसान भूमि तो केशों और अस्थियों से भरी रहती है। उस भयंकर स्थान में मनुष्यों के कपाल और घड़े पड़े रहते हैं। गीधों और गीदड़ों के समुदाय सदा रहते और सब ओर चिताएँ जलती रहती हैं। जिधर देखो, मांस, वसा, रुधिर आदि की कीचड़ दिखाई देती है। बिखरी हुई आँतों की हड्डियाँ पड़ी रहती हैं और सियारिनियाँ बोलती रहती हैं। आप ऐसे पवित्रता-रहित स्थान में क्यों निवास करते हैं? ॥२२-२७॥

मेध्यान्वेषी महीं कृत्स्नां विचराम्यनिशं सदा।
न च मेध्यतरं किंचिच्छ्मशानादिह लक्ष्यते ॥२८
तेन मे सर्ववासानां श्मशाने रमते मनः।
न्यग्रोधशाखासंछन्ने निभुग्नस्रग्विभूषिते ॥२९
तत्र चैव रमन्तीमे भूतसंघाः शुचिस्मिते।
न च भूतगणैर्देवि विनाहं वस्तुमुत्सहे ॥३०
एष वासो हि मे मेध्यः स्वर्गीयश्च मतः शुभे।
पुण्यः परमकश्चैव मेध्यकामैरुपास्यते ॥३१
अस्माच्छ्मशानमेध्यंतुनास्ति किंचिदनिन्दिते।
निस्सम्पातान्मनुष्याणां तस्माच्छुचितमंस्मृतम् ॥३२
स्थानं मे तत्र विहितं वीरस्थानमिति प्रिये।
कपालशतसम्पूर्णमभिरूपं भयानकम् ॥३३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मध्याह्ने संध्ययोस्तत्र नक्षत्रे रुद्रदैवते ।
आयुष्कामैरशुद्धैर्वा न गन्तव्यमिति स्थितिः ।।३४

मदन्येन न शक्यं हि निहन्तुं भूतजं भजम् ।
तत्रस्थोऽहं प्रजाः सर्वाः पालयामि दिने दिने ।।३५

श्रीमहेश्वर ने कहा—मैं पवित्र स्थान की खोज करने के लिये सदा सम्पूर्ण पृथ्वी पर रात्रि-दिवस घूमता रहता हूँ। परन्तु श्मशान भूमि से श्रेष्ठ कोई अन्य स्थान मुझे दिखाई ही नहीं दिया। इसलिये सभी स्थानों में से श्मसान भूमि में ही मेरा मन लग पाता है। वह श्मसान भूमि बरगद की डालियों से युक्त और मुर्दों से टूट कर गिरी हुई फूल मालाओं से सुशोभित होरही है। हे शुचिस्मिते! मेरे यह भूतगण श्मसान भूमि में ही रमण करते हैं। इन भूतों के बिना तो मैं कहीं रह ही नहीं सकता। हे शुभे! इस श्मसान में रहना ही मैं अपने लिये पवित्र और स्वर्गीय समझता हूं। यही परम पुण्य स्थल है। जो उपासक पवित्र वस्तु की कामना रखते हैं, वे इसी की उपासना करते हैं। हे अनिन्दिते! इस श्मसानभूमि से पवित्र कोई अन्य स्थान नहीं है। क्योंकि वहां मनुष्य अधिक आते जाते नहीं हैं, इसीलिये वह स्थान अत्यधिक पवित्र माना जाता है। हे प्रिये! वह वीरस्थान है, इसलिये मैं वहाँ रहता हूं। मरे हुए लोगों की खोपड़ियों से भरा हुआ वह वीभत्स स्थान भी मुझे सुन्दर प्रतीत होता है। उस स्थान पर मध्याह्न काल में, दोनों संध्याओं के समय और आर्द्रा नक्षत्र में, जो व्यक्ति जीवन की कामना करने वाला हो अथवा अशुद्ध हो, वह न जावे। भूतों से उत्पन्न भय को मेरे अतिरिक्त और कोई भी दूर नहीं कर सकता। इसीलिये मैं श्मसान में निवास करता हुआ नित्य प्रति प्रजाओं का पालन करता हूँ ।।२८-३५।।

मन्नियोगाद् भूतसंघा न च घ्नन्तोह कंचन ।
तांस्तु लोकहितार्थाय श्मशाने रमयाम्यहम् ।
एतत्ते सर्वमाख्यातं किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।।३६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगवन् देवदेवेश त्रिनेत्र वृषभध्वज ।
पिङ्गलं विकृतं भाति रूपं ते तु भयानकम् ।।३७
भस्मदिग्धं विरूपाक्षं तीक्ष्णदंष्ट्रं जटाकुलम् ।
व्याघ्रोदरत्वक्संवीतं कपिलश्मश्रुसंततम् ।।३८
रौद्रं भयानकं घोरं शूलपट्टिशसंयुतम् ।
किमर्थं त्वीदृशं रूपं तन्मे शंसितुमर्हसि ।।३९
तदहं कथयिष्यामि श्रृणु तत्त्व समाहिता ।
द्विविधो लौकिको भावः शीतमुष्णमिति प्रिये ।।४०
तयोर्हि ग्रथितं सर्वं सौम्याग्नेयमिदं जगत् ।
सौम्यत्वं सततं विष्णौ मय्याग्नेयं प्रतिष्ठितम् ।
अनेन वपुषा नित्यं सर्वलोकान् बिभर्म्यहम् ।।४१
रौद्राकृति विरूपाक्षं शूलपट्टिशसंयुतम् ।
आग्नेयमिति मे रूपं देवि लोकहिते रतम् ।।४२

मेरी आज्ञा के अनुसार ही अब यह भूत समुदाय किसी की हत्या नहीं करते हैं। मैं उन भूतों को सम्पूर्ण विश्व के हितार्थ स्मशान भूमि में ही रखता हूं। यह सब रहस्य मैंने तुम्हें यथावत् सुना दिया, अब और क्या सुनना चाहती हो। पार्वतीजी ने कहा—हे भगवन् ! हे देवदेवेश ! हे त्रिनेत्र ! हे वृषभध्वज ! आपका रूप पिङ्गल, विकृत और विकराल प्रतीत होता है। आपने सम्पूर्ण शरीर में भस्म रमा रखी है, आपके नेत्र विरूप दिखाई देते हैं। तीक्ष्ण दाढें, शीश पर जटाऐं, वाघम्बर धारण किये हुए आप अपने मुख पर कपिल वर्ण की मूँछें रखते हैं। आपका रौद्र, भयानक और घोर रूप है, आप शूल पट्टिश धारण किये हुए क्यों रहते हैं, यह मुझ से कहिये। श्रीमहेश्वर बोले—हे प्रिये ! मैं इसका वास्तविक कारण तुमसे कहता हूं। ध्यान पूर्वक सुनो। जगत् के सम्पूर्ण पदार्थ शीत और उष्ण के भेद से दो भागों में विभक्त हैं। अग्नि-सोम रूप यह सम्पूर्ण विश्व उन शीत और उष्ण तत्वों में गुँथा है। सौम्य गुण सदा भगवान् विष्णु में स्थित रहता है और आग्नेय गुण मुझ में स्थित है। इस प्रकार विष्णु और शिव रूप से मैं सब लोकों की सदा रक्षा

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करता हूं। हे देवि ! मेरा विरूप नेत्र,शूल पट्टिश युक्त तथा रौद्र आकृति वाला रूप ही आग्नेय है। यह सम्पूर्ण विश्व के हित में सदा लगा रहता है ॥३६-४२॥

यद्यहं विपरीतः स्यामेतत् त्यक्त्वा शुभानने ।
तदेव सर्वलोकानां विपरीतं प्रवर्तते ।।४३
तस्मान्मयेदं ध्रियते रूपं लोकहितैषिणा ।
इति ते कथितं देवि किं भूयः श्रोतुमिच्छसि ।।४४

एवं ब्रुवति देवेशे विस्मिताः परमर्षयः ।
वाग्भिःसाञ्जलिमालाभिरभितुष्टुवुरीश्वरम् ।।४५
नमः शङ्कर सर्वेश नमः सर्वजगद्गुरो ।
नमो देवादिदेवाय नमः शशिकलाधर ।।४६
नमो घोरतराद् घोर नमो रुद्राय शङ्कर ।
नमः शान्ततराच्छान्त नमश्चन्द्रस्य पालक ।।४७

नमः सोमाय देवाय नमस्तुभ्यं चतुर्मुख ।
नमो भूतपते शम्भो जह्नुकन्याम्बुशेखर ।।४८
नमस्त्रिशूलहस्ताय पन्नगाभरणाय च ।
नमोऽस्तु विषमाक्षाय दक्षयज्ञप्रदाहक ।।४९

हे शुभानने ! यदि मैं इस रूप को त्याग दूँ और इसके विपरीत रूप धारण करलूँ तो सभी लोकों की दशा बदल जायगी। हे देवि ! मैंने लोक-कल्याण की इच्छा से ही अपना यह रूप बनाया है। यह सब रहस्य तुम से कह चुका, अब क्या सुनने की इच्छा है ! नारदजी बोले—श्री महेश्वर भगवान् के इस प्रकार कहने पर सभी ऋषिगण अत्यन्त आश्चर्यान्वित हुए और हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे। ऋषियों ने कहा हे सर्वेश्वर ! हे सम्पूर्ण विश्व के गुरुदेव ! हे देवदेवेश्वर ! हे चन्द्रकला धारी शंकर आपको नमस्कार है। हे घोरतर रुद्र ! हे शंकर ! हे अत्यंत शान्त ! हे चन्द्रमा का पालन करने वाले प्रभो ! आपको नमस्कार है। हे सौम्य ! हे देव ! हे चतुर्मुख भगवान् ! आपने भगवती जाह्नवी को

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने शिर पर धारण किया हुआ है। आपको नमस्कार है। हे प्रभो ! हे हाथों में शूल धारण करने वाले, सर्प युक्त आभूषणों से सुशोभित, दक्ष-यज्ञ-विध्वंसक त्रिलोचन ! आपको नमस्कार है ॥४३-४९॥

नमोऽस्तु बहुनेत्राय लोकरक्षणतत्पर ।
अहो देवस्य माहात्म्यमहो देवस्य वै कृपा ।
एवं धर्मपरत्वं च देवदेवस्य चार्हति ॥५०
एवं ब्रुवत्सु मुनिषु वचो देव्यब्रवीद्धरम् ।
सम्प्रीत्यर्थं मुनीनां सा क्षणज्ञा परमं हितम् ॥५१
भगवन् सर्वभूतेश सर्वधर्मविदां वर।
पिनाकपाणे वरद संशयो मे महानयम् ॥५२
अयं मुनिगणः सर्वस्तपस्तेप इति प्रभो ।
तपोवेषकरो लोके भ्रमते विविधाकृतिः ॥५३
अस्य चैवर्षिसंघस्य मम च प्रियकाम्यया ।
एतं ममेह संदेहं वक्तुमर्हस्यरिंदम ॥५४
धर्मः किंलक्षणः प्रोक्तः कथं वा चरितुं नरैः ।
शक्यो धर्ममविन्दद्भिर्धर्मज्ञ वद मे प्रभो ॥५५
ततो मुनिगणः सर्वस्तां देवीं प्रत्यपूजयत् ।
वाग्भिर्ऋग्भूषितार्थाभिः स्तवैश्चार्थविशारदैः ॥५६

हे लोक-रक्षा-परायण ! आपकेअनेक नेत्र हैं, आपको नमस्कार है। हे प्रभो ! आपका महात्म्य कैसा है ? आपकी कितनी महती कृपा है ! यह धर्मपरत्व आपके ही योग्य है। नारदजी ने कहा—जब मुनिगणों ने इस प्रकार की स्तुति की, तभी भगवती पार्वती ने सर्व हितके लिये निम्न प्रश्न किया। पार्वतीजी बोलीं—हे धर्म के जानने वालों में श्रेष्ठ ! हे पिनाकपाणे ! मेरे मन में एक महान् संदेह उत्पन्न हुआ है। हे प्रभो ! मुनियों का उप-स्थित समुदाय, तपस्या में संलग्न रह कर लोक विचरण कर रहा है। इन सब की आकृति विभिन्न प्रकार की है। आप इस ऋषि-समुदाय के तथा मेरे भी हित के लिये मेरे संदेह को दूर करें। हे प्रभो ! धर्म का लक्षण क्या है ? जो धर्म को नहीं जानते वे मनुष्य धर्माचरण-पर यण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कैसे रह सकते हैं ? यह कहिये। नारदजी ने कहा कि इस पर सभी ऋषियों ने भगवती पार्वती की ऋग्वेद के मन्त्रों द्वारा स्तुति की थी ॥५०-५६॥

अहिंसा सत्यवचणं सर्वभूतानुकम्पनम् ।
शमो दानं यथाशक्तिगार्हस्थ्यो धर्म उत्तमः ॥५७
परदारेष्वसंसर्गो न्यासस्त्रीपरिरक्षणम् ।
अदत्तादानविरमो मधुमांसस्य वर्जनम् ॥५८
एष पञ्चविधो धर्मो बहुशाखः सुखोदयः ।
देहिभिर्धर्मपरमैश्चर्तव्यो धर्मसम्भवः ॥५९
भगवन् संशयः पृष्टस्तन्मे शंसितुमर्हसि ।
चातुर्वर्ण्यस्य यो धर्मः स्वे स्वे वर्णे गुणावहः ॥६०
ब्राह्मणे कीदृशो धर्मः क्षत्रिये कीदृशोऽभवत् ।
वैश्ये किलक्षणो धर्मः शूद्रे किलक्षणो भवेत् ॥६१
एतत्ते कथयिष्यामि यत्तो देवि मनःप्रियम् ।
शृणु तत् सर्वमखिलं धर्मः वर्णाश्रमाश्रितम् ॥६२
ब्राह्मणाःक्षत्रियावैश्याःशूद्राश्चेति चतुर्विधम् ।
ब्रह्मणा विहिताः पूर्वं लोकतन्त्रमभीप्सता ।
कर्माणि च तदर्हाणि शास्त्रेषु विहितानि वै ॥६३

श्री महेश्वर ने कहा—किसी भी प्राणी की हिंसा न करना, सत्य वचन कहना, जीवों पर दया करना, मन और इन्द्रियों को वश में रखना और शक्ति के अनुसार दान देना, यह गृहस्थाश्रम का श्रेष्ठ धर्म समझो। परनारी के संसर्ग से बचते रहना, धरोहर रूप वाली स्त्री की रक्षा करना, किसी के द्वारा दिये बिना उसकी वस्तु न लेना, माँस-मदिरा का सेवन न करना। धर्म के यह पाँच भेद सुख को प्राप्त कराने वाले हैं। इनमें से प्रत्येक धर्म की अनेक शाखाएँ हैं। धर्म को श्रेष्ठ समझने वाले व्यक्तियों को पुण्यदायक धर्म में लगे रहना चाहिये। पार्वतीजी ने पूछा—हे भगवन् ! मेरे मन में एक संदेह और हुआ है—चारों वर्णों को जो-जो धर्म

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने-अपने लिये हितकर हो, वह मुझे बतावें। ब्राह्मण के लिये धर्म का स्वरूप क्या है ? क्षत्रिय के लिये क्या है ? वैश्य के लिये अथवा शूद्र के लिये भी क्या-क्या स्वरूप है, यह कहने की कृपा करें। श्री महेश्वर ने कहा—हे देवि ! तुम्हारे मन को अच्छा लगने वाला जो धर्म विषयक प्रश्न है, उसे कहता हूं। अब वर्ण और आश्रम पर अवलम्बित सभी धर्मों को सुनो। वर्णों के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह चार भेद हैं। लोक तन्त्र की कामना से ब्रह्माजी ने सर्व प्रथम ब्राह्मणों को उत्पन्न किया और शास्त्रों में उनके योग्य कर्मों का विधान किया ॥५७-६३॥

यदीदमेकवर्णं स्याज्जगत् सर्वं विनश्यति।
सहैव देवि वर्णानि चत्वारि विहितान्यतः ॥६४
मुखतो ब्राह्मणाः सृष्टास्तस्मात् ते वाग्विशारदाः।
बाहुभ्यां क्षत्रियाःसृष्टास्तस्मात् ते बाहुगर्विताः ॥६५
उदरादुद्गता वैश्यास्तस्माद् वार्तोपजीविनः।
शूद्राश्च पादतः सृष्टास्तस्मात् ते परिचारकाः।
तेषां धर्माश्च कर्माणि शृणु देवि समाहिता ॥६६
विप्राः कृता भूमिदेवा लोकानां धारणे कृताः।
तेकैश्चिन्नावमन्तव्या ब्राह्मणाहितमिच्छुभिः ॥६७
यदि ते ब्राह्मणा न स्युर्दानयोगवहाः सदा।
उभयोर्लोकयोर्देवि स्थितिर्न स्यात् समासतः ॥६८
ब्राह्मणान् योऽवमन्येत निन्देच्च क्रोधयेच्च वा।
प्रहरेत हरेद् वापि धनं तेषां नराधमाः।
कारयेद्धीनकर्माणि कामलोभविमोहनात् ॥६९
स च मामवमन्येत मां क्रोधयति निन्दति।
मामेव प्रहरेन्मूढो मद्धनस्यापहारकः।
मामेव प्रेषणं कृत्वा निन्दते मूढचेतनः ॥७०

हे देवि ! यह सम्पूर्ण विश्व यदि एक ही वर्ण का होता तो सभी एक साथ नष्ट हो जाते, इसलिये, ब्रह्माजी ने इसे चार वर्णों में विभक्त कर दिया। ब्राह्मणों की उत्पत्ति ब्रह्माजी के मुख से होने के कारण, वे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वाग्विशारद होते हैं। क्षत्रियों की उत्पत्ति भुजाओं से होने के कारण उन्हें अपने भुज-बल पर भरोसा रहता है। वैश्य उदर से उत्पन्न होने के कारण कृषि, वाणिज्य आदि उदर पोषक वृत्ति का आश्रय लिये हुए हैं। शूद्र पावों से उत्पन्न होने के कारण परिचर्या में लगे रहते हैं। अब तुम उन सबके धर्मों और कर्मों का विवेचन सुनो। ब्राह्मण को भूमिदेवता माना गया है। उनकी सृष्टि सम्पूर्ण लोकों की रक्षा के लिये है। इसलिये अपना कल्याण चाहने वाले व्यक्ति ब्राह्मणों का कभी अपमान न करें। हे देवि ! ब्राह्मण दान और योग का वहन करने वाले हैं। यदि वे न हों तो लोक-परलोक दोनों ही स्थित नहीं रह सकते। जो मनुष्य ब्राह्मणों की निन्दा करता, उनका धन छीन लेता, उन पर प्रहार करता या उन्हें क्रोध दिलाता है अथवा काम, लोभ, मोह के वश में उनसे नीच कर्म कराता है, वह मेरा ही अपमान करता, मुझे ही क्रोध दिलाता, मुझ पर ही प्रहार करता, मेरा ही धन ले लेता और मुझ से नीच कर्म कराता है।।६४-७०।।

स्वाध्यायो यजनं दानं तस्य धर्म इति स्थितिः।
कर्माण्यध्यापनं चैव याजन च प्रतिग्रहः।।
सत्यं शान्तिस्तपः शौचं तस्य धर्मः सनातनः।।७१
विक्रयो रसधान्यानां ब्राह्मणस्य विगर्हितः।।७२
तप एव सदा धर्मो ब्राह्मणस्य न संशयः।
स तु धर्मार्थमुत्पन्नः पूर्वं धात्रा तपोबलात्।।७३
न्यायतस्ते महाभागे सर्वशः समुदीरितः।
भूमिदेवा महाभागाः सदा लोके द्विजातयः।।७४
उपवासः सदा धर्मो ब्राह्मणस्य न संशयः।
स हि धर्मार्थसम्पन्नो ब्रह्मभूयाय कल्पते।।७५
तस्य धर्मक्रिया देवि ब्रह्मचर्या च न्यायतः।
व्रतोपनयनं चैव द्विजो येनाधिगच्छते।।७६
गुरुदेवतपूजार्थं स्वाध्यायाभ्यसनात्मकः।
देहिभिर्धर्मपरमैश्चर्तव्यो धर्मसम्भवः।।७७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वेदों का स्वाध्याय, यज्ञ करना, दान लेना ब्राह्मण का धर्म कहा गया है। वेदों का पढ़ना, यज्ञानुष्ठान कराना और प्रतिग्रह प्राप्त करना ही उसकी जीविका का साधन है। सत्य, मन का संयम और पवित्र आचार का पालन--यही उसका सनातन धर्म समझना। परन्तु, रस अथवा धान्यादि का विक्रय करना ब्राह्मण के लिये निन्दनीय कर्म है। सदा तप-परायणता ब्राह्मण का परम धर्म है। प्राचीन काल में धर्म का अनुष्ठान करने के लिये ही ब्रह्माजी ने अपने तपोबल से ब्राह्मण की सृष्टि की, इसमें संदेह नहीं है। हे महाभागे! मैंने तुमसे सब प्रकार का धर्म कहा है। ब्राह्मणों को इस संसार में भूमि देवता माना गया है। उपवास व्रत का संयम पूर्वक आचरण ही ब्राह्मण का धर्म कहा है—इसमें संशय नहीं है। धर्म के अर्थ से सम्पन्न ब्राह्मण ही ब्रह्मत्व को प्राप्त होता है। हे देवि! वह धर्म का अनुष्ठान करे और न्यायपूर्वक ब्रह्मचर्य को पाले। व्रत का पालन करते हुए, उपनयन संस्कार युक्त होने से ही उसकी द्विज संज्ञा होती है। ब्राह्मण का कर्त्तव्य है कि वह गुरु और देवताओं का पूजन अवश्य करे और स्वाध्याय तथा अभ्यास-परायण रहे। पुण्यमय धर्म का आचरण करना तो सभी धर्म-परायण मनुष्यों के लिये आवश्यक है॥७१-७७॥

भगवन् संशयो मेऽस्ति तन्मे व्याख्यातुमर्हसि।
चातुर्वर्ण्यस्य धर्मं वै नैपुण्येन प्रकीर्तय ॥७८

रहस्यश्रवणं धर्मो वेदव्रतनिषेवणम्।
अग्निकार्यं तथा धर्मो गुरुकार्यप्रसाधनम् ॥७९
भैक्षचर्या परो धर्मो नित्ययज्ञोपवीतिता।
नित्यं स्वाध्यायिता धर्मो ब्रह्मचर्याश्रमस्तथा ॥८०

गुरुणा चाभ्यनुज्ञातः समावर्तेत वै द्विजः।
विन्देतान्नरं भार्यामनुरू[illegible]विधि ॥८१

शूद्रान्नवर्जनं धर्मस्तथा सत्प[illegible]वनम्।
धर्मो नित्योपवासित्वं ब्रह्मचर्यं तथैव च ॥८२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आहिताग्निरधीयानो जुह्वानः संयतेन्द्रियः ।
विघसाशी यताहारो गृहस्थः सत्यवाक् शुचिः ।।८३

अतिथिव्रतता धर्मो धर्मस्त्रेताग्निधारणम् ।
इष्टीश्च पशुबन्धांश्च विधिपूर्वं समाचरेत् ।।८४

पार्वतीजी ने कहा–हे भगवन् ! चारों वर्णों के धर्मों का पूर्ण रूप से प्रतिपादन कीजिये । मेरे मन में अभी उसके प्रति संशय बना हुआ है । श्री महेश्वर ने कहा–धर्म का रहस्य श्रवण, वेदोक्त व्रत का पालन, अग्निहोत्र और गुरु की परिचर्या––यह धर्म ब्रह्मचारी का कहा गया है । भैक्षचर्या ब्रह्मचारी का परम धर्म है । यज्ञोपवीत धारण किये रहना, वेदाध्ययन करना और ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करते रहना, ब्रह्मचारी का प्रमुख धर्म समझो । ब्रह्मचर्याश्रम की अवधि पूर्ण होजाने पर गुरु से आज्ञा लेकर अपने घर आवे तथा अनुरूप पत्नी को यथाविधि प्राप्त करे । ब्राह्मण का धर्म है कि नीचे पुरुषों का अन्न ग्रहण न करे । सन्मार्ग पर चलता हुआ उपवास और ब्रह्मचर्यव्रत परायण रहे । गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह अग्निहोत्र-परायण, स्वाध्यायशील, यज्ञ करने वाला, विघसाशी, स्वल्पाहारी, सत्यवादी और सदा पवित्र रहे । अतिथि-सत्कार और गार्हपत्य आदि तीनों प्रकारकी अग्नियों की रक्षा करना और अनेक प्रकार की इष्टियों और पशु-रक्षा आदि का भी यथा शक्ति पालन करे ।।७८-८४।।

यज्ञश्च परमो धर्मस्तथाहिंसा च देहिषु ।
अपूर्वभोजनं धर्मो विघसाशित्वमेव च ।।८५
भुक्ते परिजने पश्चाद् भोजनं धर्म उच्यते ।
ब्राह्मणस्य गृहस्थस्य श्रोत्रियस्य विशेषतः ।।८६

दम्पत्योः समशीलत्वं धर्मः स्याद् गृहमेधनः ।
गृह्याणां चैव देवानां नित्यपुष्पबलिक्रिया ।
नित्योपलेपनं धर्मस्तथा नित्योपवासिता ।।८७
सुसमृष्टोपलिप्ते च साज्यधूमो भवेद् गृहे ।।८८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एष द्विजजने धर्मो गार्हस्थ्यी लोकधारणः ।
द्विजानां च सतां नित्यं सदैवैष प्रवर्तते ॥८९
यस्तु क्षत्रगतो देवि मया धर्म उदीरितः ।
तमहं ते प्रवक्ष्यामि तन्मे शृणु समाहिता ॥९०
क्षत्रियस्य स्मृतो धर्मः प्रजापालनमादितः ।
निर्दिष्टफलभोक्ता हि राजा धर्मेण युज्यते ॥९१

यज्ञ-कर्म और प्राणियों की अहिंसा यह उसका परम धर्म है । कुटुम्बियों को भोजन कराने के बाद बचे हुए अन्न का भोजन करना भी उसका कर्त्तव्य है । जब कुटुम्बीजन भोजन कर लें, उसके बाद ही स्वयं भोजन करे । यह धर्म ब्राह्मण गृहस्थ अथवा श्रोत्रिय का कहा गया है । पति-पत्नी का समान स्वभाव हो । यह देवताओं का पुष्पादि से सदा पूजन करे । उन्हें अन्न की बलि दे । नित्य प्रति घर को लीप कर स्वच्छ करना और व्रत रखना गृहस्थ का परम धर्म है । झाड़े-बुहारे और लिपे-पुते घर में घृतयुक्त आहुति देकर धुँआ फैलावे, यह ब्राह्मणों का गृहस्थ धर्म है । इस संसार रक्षक धर्म का पालन श्रेष्ठ ब्राह्मण सदा करते हैं । मेरे द्वारा जो क्षत्रिय-धर्म कहा गया है, अब उसका विवेचन करता हूँ । तुम एकाग्र मन से इसे सुनो । क्षत्रिय का प्रथम धर्म प्रजा-पालन है । प्रजा की आय का षष्ठ भाग लेने वाला राजा धर्म-फल का भागी होता है ॥८५-९१॥

क्षत्रियास्तु ततो देवि द्विजानां पालने स्मृता ।
यदि न क्षत्रियो लोके जगत् स्यादधरोत्तरम् ॥
रक्षणात् क्षत्रियैरेव जगद् भवति शाश्वतम् ॥९२
सम्यग्गुणहितो धर्मो धर्मः पौरहितक्रिया ।
व्यवहारस्थितिर्नित्यं गुणयुक्तो महीपतिः ॥९३
प्रजा पालयते यो हि धमण मनुजाधिपः ।
तस्य धर्मार्जिता लोकाः प्रजापालनसचिताः ॥९४
तस्य राज्ञः परो धर्मो दमः स्वाध्याय एव च ।
अग्निहोत्रपरिस्पन्दो दानाध्ययनमेव च ॥९५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यज्ञोपवीतधरणं यज्ञो धर्मक्रियास्तथा ।
भृत्यानां भरणं धर्मः कृते कर्मण्यमोघता ॥९६
सम्यग्दण्डे स्थितिर्धर्मो धर्मो वेदक्रतुक्रियाः ।
व्यवहारस्थितिर्धर्मः सत्यवाक्यरतिस्तथा ॥९७

क्षत्रियों का कर्त्तव्य है कि वे ब्राह्मणों का पालन करें। यदि ससार में क्षत्रिय की उत्पत्ति नहीं होती तो विप्लव हो जाता। उनके द्वारा रक्षा होने से ही यह विश्व टिका हुआ है। श्रेष्ठ गुणों का सम्पादन और प्रजाओं का हित साधन करना उसका परम धर्म है। उसे न्याय युक्त कार्य में सदा लगे रहना चाहिये। जो राजा धर्मपूर्वक प्रजा-पालन में तत्पर है, उसे उसके उसी धर्म के प्रभाव से श्रेष्ठ लोकों की प्राप्ति होती है। राजा का परम धर्म इन्द्रिय-संयम, स्वाध्याय, अग्निहोत्र, दान, अध्ययन, यज्ञोपवीत धारण, यज्ञानुष्ठान, धार्मिक कार्य, पोषण योग्य व्यक्तियों का पोषण, आरम्भ किये कर्म की पूर्ति, अपराधियों को न्याय पूर्वक दण्ड, वैदिक कर्मों का पालन, न्याय की रक्षा और सत्य वचनों में अनुरक्ति है ॥९२-९७॥

आर्तहस्तप्रदो राजा प्रेत्य चेह महीयते ।
गोब्राह्मणार्थे विक्रान्तः संग्रामे निधनं गतः ॥९८
अश्वमेधजिताँल्लोकानाप्नोति त्रिदिवालये ॥९९
वैश्यस्य सततं धर्मः पाशुपाल्यं कृषिस्तथा ।
अग्निहोत्रपरिस्पन्दो दानाध्ययनमेव च ॥१००
वाणिज्यं सत्पथस्थानमातिथ्यं प्रशमो दमः ।
विप्राणां स्वागतं त्यागो वैश्यधर्मः सनातनः ॥१०१
तिलान् गन्धान् रसांश्चैव विक्रीणीयान्न चैव हि ।
वणिक्पथमुपासीनो वैश्यः सत्पथमाश्रितः ॥१०२
सर्वातिथ्यं त्रिवर्गस्य यथाशक्ति यथार्हतः ।
शूद्रधर्मः परो नित्यं शुश्रूषा च द्विजातिषु ॥१०३
स शूद्रः संशिततपाः सत्यवादी जितेन्द्रियः ।
शुश्रूषुरतिथिं प्राप्तं तपः सञ्चिनुते महत् ॥१०४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नित्यं स हि शुभाचारो देवतादिजपूजकः ।
शूद्रो धर्मफलैरिष्टैः सम्प्रयुज्येत बुद्धिमान् ॥१०५

दुःखी मनुष्यों को हाथ का सहारा देने वाला राजा, इहलोक, परलोक दोनों में सम्मान प्राप्त करता है। गौओं और ब्राह्मणों को सङ्कट-मुक्त करने के लिये युद्ध में अपना पराक्रम करते हुए मर जाता है, वह राजा अश्वमेध यज्ञ द्वारा जीते जाने वाले लोकों को ही जीत लेता है। पशु-पालन, कृषि, व्यापार, अग्निहोत्र दान, अध्ययन, सन्मार्ग का आश्रय, सदाचार-पालन, अतिथि-सेवा, शम, दम, ब्राह्मणों का सत्कार और त्याग वैश्यों के यह सब सनातन धर्म हैं। व्यापारी एवं सदाचारी वैश्य तिल, चन्दन,और रस का विक्रय न करे और ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य इन वर्णों में से किसी के अतिथि होने पर यथाशक्ति सत्कार करे। तीनों वर्णों की सेवा करना शूद्र का धर्म कहा है। परन्तु, जो शूद्र सत्यभाषी, जितेन्द्रिय और अतिथ्य-सत्कार परायण है, वह महान् तप का भागी होता है। उसका सेवा-कार्य ही उसके लिये महान् तपस्या है। सदाचार का सदा पालन और देवताओं तथा द्विजों का पूजन करने वाला बुद्धिमान् शूद्र अपने धर्म का इच्छित फल प्राप्त करता है ॥९८-१०५॥

(तथैव शूद्रा विहिताः सर्वधर्मप्रसाधकाः ।
शूद्राश्च यदि ते न स्युः कर्मकर्ता न विद्यते ॥१०६
त्रयः पूर्वे शूद्रमूलाः सर्व कर्मकराः स्मृताः ।
ब्राह्मणादिषु शुश्रूषा दासधर्म इति स्मृतः ॥१०७
वार्ता च कारुकर्माणि शिल्पं नाट्यं तथैव च ।
अहिंसकः शुभाचारो दैवतद्विजवन्दकः ॥१०८
शूद्रो धर्मफलैरिष्टैः स्तधर्मेणोपयुज्यते ।
एवमादि तथान्यच्च शूद्रधर्म इति स्मृतः ॥)१०९
एतत् ते सर्वमाख्यातं चातुर्वर्ण्यस्य शोभने ।
एकैकस्येह सुभगे किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि ॥११०
(भगवन् देवदेवेश नमस्ते वृषभध्वज ।
श्रोतुमिच्छाम्यहं देव धर्ममाश्रमिणां विभो ॥१११

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

तथाश्रमगतं धर्मं शृणु देवि समाहिता ।
आश्रमाणां तु यो धर्मः क्रियते ब्रह्मवादिभिः ॥११२

शूद्रों को भी इस प्रकार सभी धर्मों को सिद्ध करने वाला कहा गया है। यदि शूद्र न हों तो सेवा-कार्य के बिना भी संसार का कार्य नहीं चल सकता। पहिले के तीनों वर्ण शूद्र मूलक हैं। क्योंकि शूद्र सेवा कर्म में रह कर ब्राह्मण आदि की सेवा करते हुए अपना धर्म पालन करते हैं। वाणिज्य, शिल्पकार्य, कारीगरी और नाट्यकर्म भी शूद्र का धर्म है। उसे अहिंसक, सदाचारी और देवताओं तथा ब्राह्मणों की पूजा करने वाला होना चाहिये। ऐसा शूद्र अपने धर्म से युक्त और इच्छित फलों का भागी होता है। यह सभी शूद्रधर्म कहा गया। इस प्रकार मैंने तुमसे चारों वर्णों का सम्पूर्ण धर्म कहा। अब और क्या सुनने की इच्छा है ? पार्वतीजी ने कहा—हे वृषभध्वज ! आपको नमस्कार है। अब मैं आपसे आश्रम-धर्म सुनाने की प्रार्थना करती हूँ। श्री महेश्वर ने कहा—आश्रम-धर्म का वर्णन भी एकाग्र चित्त से सुनो। ब्रह्मवादी ऋषियों ने जो आश्रय धर्म कहा है, वह तुम्हें बताता हूँ ॥१०६-११२॥

गृहस्थः प्रवरस्तेषां गार्हस्थ्यं धर्ममाश्रितः ।
पञ्चयज्ञक्रिया शौचं दारतुष्टिरतन्द्रिता ।
ऋतुकालाभिगमनं दानयज्ञतपांसि च ।
अविप्रवासस्तस्येष्टः स्वाध्यायश्चाग्निपूर्वकम् ॥११३

तथैव वानप्रस्थस्य धर्माः प्रोक्ताः सनातनाः ।
गृहवासं समुत्सृज्य निश्चित्यैकमनाः शुभैः ।
वन्यैरेव सदाहारैर्वर्तयेदिति च स्थितिः ॥११४

भूमिशय्या जटाश्मश्रुचर्मवल्कलधारणम् ।
देवतातिथिसत्कारो महाकृच्छ्राभिपूजनम् ।
अग्निहोत्रं त्रिषवणं तस्य नित्यं विधीयते ।
ब्रह्मचर्यं क्षमा शौचं तस्य धर्मः सनातनः ।
एवं स विगते प्राणे देवलोके महीयते ॥११५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यतिधर्मास्तथा देवि गृहांस्त्यक्त्वा यतस्ततः ।
आकिञ्चन्यमनारम्भः सर्वतः शौचमार्जवम् ।
सर्वत्र भैक्षचर्यां च सर्वत्रैव विवासनम् ।
सदाध्यानपरत्वं च दोषशुद्धिः क्षमा दया ।
तत्त्वानुगतबुद्धित्वं तस्य धर्मविधिर्भवेत् ॥११६

सभी आश्रमों में गृहस्थाश्रम सर्वश्रेष्ठ है। पाँचों महायज्ञों का अनुष्ठान, बाहर-भीतर की पवित्रता, स्वस्त्री से ही अनुरक्ति, आलस्य का त्याग, पत्नी से ऋतुकाल में ही समागम, दान-यज्ञ-तप-परायणता और अग्निहोत्र पूर्वक वेद शास्त्रों का स्वाध्याय—यह सभी धर्म गृहस्थ के लिये पालनीय हैं। इसी प्रकार वानप्रस्थ आश्रम के सनातन धर्म कहे हैं। जो वानप्रस्थी होना चाहे वह एकचित्त होकर गृह त्याग कर वन में चला जाय और वन में मिलने वाले श्रेष्ठ आहारों से ही जीवन निर्वाह करे। यह उसके लिये शास्त्र की मर्यादा है। भूमि पर शयन करना, जटा-दाढ़ी-मूँछ रखना, मृगचर्म और वल्कल वस्त्र पहिनना, देवताओं और अतिथियों का सत्कार करना, कष्ट सहकर भी नियमों का पालन करना वानप्रस्थ का कर्त्तव्य है। उसे अग्निहोत्र और त्रिकाल स्नान करना चाहिये, ब्रह्मचर्य, शौच, क्षमा आदि से सम्पन्न वानप्रस्थ प्राणों को त्याग कर देवलोक में निवास करता है। हे देवि! सन्यासी गृह-त्याग करके इधर-उधर विचरण करता रहे। वह किसी वस्तु का संचय न करे, कर्मों के आरम्भ से दूर रहे, अपने हृदय में पवित्रता और सरलता को प्रतिष्ठित करे, भिक्षावृत्ति से जीविका चलावे, ध्यान में तत्पर रहे, दोषों से शुद्ध होकर सबके प्रति क्षमा और दया-भाव रखे तथा बुद्धि के द्वारा सदा तत्त्व चिन्तन करता रहे। यह सन्यासी के धर्म कहे गये हैं ॥११३-११६॥

बुभुक्षितं पिपासार्तमतिथिं श्रान्तमागतम् ।
अर्चयन्ति वरारोहे तेषामपि फलं महत् ॥११७
पात्रमित्येव दातव्यं सर्वस्मै धर्मकाङ्क्षिभिः ।
आगमिष्यति यत् पात्रं तत्पात्रं तारयिष्यति ॥११८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काले सम्प्राप्तमतिथिं भोक्तुकाममुपस्थितम् ।
यस्तं सम्भावयेत् तत्र व्यासोऽयं समुपस्थितः ॥११९
तस्य पूजां यथाशक्त्या साम्यचित्तः प्रयोजयेत् ।
चित्तमूलो भवेद् धर्मो धर्ममूलं भवेद् यशः ॥१२०
तस्मात् सौम्येन चित्तेन दातव्यं देवि सर्वथा ।
सौम्यचित्तस्तु यो दद्यात् तद्धि दानमनुत्तमम् ॥१ १
यथाम्बुबिन्दुभिः सूक्ष्मैः पतद्भिर्मेदिनीतले ।
केदाराश्च तटाकानि सरांसि सरितस्तथा ।
तोयपूर्णानि दृश्यन्ते अप्रतर्क्यानि शोभने ।
अल्पमल्पमपि ह्येकं दीयमानं विवर्धते ॥१२२

जो मनुष्य क्षुधा-पिपासा से पीड़ित और मार्ग से थके हुए अतिथियों का सत्कार करते हैं, वे भी महान् फल प्राप्त करते हैं। अपने गृह पर आने वाले अतिथियों को दान देना धर्माभिलाषी मनुष्यों का कर्त्तव्य है। वे इस विश्वास के साथ कर्त्तव्य में तत्पर रहें कि आज आने वाला पात्र, हमारा उद्धार करने वाला होगा। भोजन के समय पर अन्न की इच्छा से उपस्थित हुए अतिथि का यथोचित आदर करने वालों के यहां साक्षात् व्यास भगवान् का पधारना ही समझो, इसलिये सौम्यचित्त से अतिथि का यथाशक्ति पूजन करे, क्योंकि चित्त का शुद्ध भाव ही धर्म का मूल है और धर्म ही यश की जड़ है। इसलिये हे देवि ! सदा कोमल चित्त से दान दे। क्योंकि कोमल चित्त पुरुष द्वारा दान सर्वश्रेष्ठ माना गया है। जैसे पृथिवी पर गिरी हुई वर्षा की बूंदें ही खेतों की क्यारियों को सरोवरों और सरिताओं को जल से भर देती हैं, वैसे ही थोड़ा-थोड़ा दिया गया दान भी वृद्धि को प्राप्त होता है ॥११७-१२२॥

पीड्यापि च भृत्यानां दानमेव विशिष्यते ।
पुत्रदारधनं धान्यं न मृताननुगच्छति ॥१२३
श्रेयो दानं च भोगश्च धनं प्राप्य यशस्विनि ।
दानेन हि महाभाग भवन्ति मनुजाधिपाः ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

नास्ति भूमौ दानसमं नास्ति दानसमो निधिः ।
नास्ति सत्यात् परो धर्मो नानृतात् पातकं परम् ॥१२४
आश्रमे यस्तु तप्येत तपो मूलफलाशनः ।
आदित्याभिमुखो भूत्वा जटावल्कलसंवृतः ।
मण्डूकशायी हेमन्ते ग्रीष्मे पञ्चतपा भवेत् ।
सम्यक् तपश्चरन्तीह श्रद्दधाना वनाश्रमे ।
गृहाश्रमस्य ते देवि कलां नार्हन्ति षोडशीम् ॥१२५
गृहाश्रमस्य या चर्या व्रतामि नियमाश्च ये ।
यथा च देवताः पूज्याः सततं गृहमेधिना ।
यद् यच्च परिहर्तव्यं गृहिणा तिथिपर्वसु ।
तत् सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यमानं त्वया विभो ॥१२६
गृहाश्रमस्य यन्मूलं फलं धर्मोऽयमुत्तमः ।
पादैश्चतुर्भिः सततं धर्मो यत्र प्रतिष्ठितः ।
सारभूतं वरारोहे दध्नो घृतमिवोद्धृतम् ।
तदहं ते प्रवक्ष्यामि श्रूयतां धर्मचारिणि ॥१२७
शुश्रूषन्ते ये पितरं मातरं च गृहाश्रमे ।
भर्तारं चैव या नारी अग्निहोत्रं च ये द्विजाः ।
तेषु तेषु च प्रीणन्ति देवा इन्द्रपुरोगमाः ।
पितरः पितृलोकस्थाः स्वधर्मेण स रज्यते ॥१८२

भरणपोषण के योग्य कुटुम्बियों को भी थोड़ा कष्ट देकर यदि दान किया जाय तो दान श्रेष्ठ ही रहेगा । क्योंकि, मरने पर स्त्री, पुत्र, धन, धान्यादि कुछ भी साथ नहीं जाता । धन पाकर उसका दान करे और भोग भी करे । परन्तु, दान करने से मनुष्य राजा होता है । इस पृथिवी पर दान के समान कोई अन्य वस्तु अथवा अन्य निधि नहीं है । सत्य से बढ़ कर कोई पुण्य और असत्य से अधिक कोई पाप भी नहीं है । वान-प्रस्थाश्रम में जो फल-मूल का भोजन करता, जटा बढ़ाये और वल्कल धारण किये रहता तथा सूर्य की ओर मुख करके तप करता है, हेमन्त ऋतु में जल में शयन करता और ग्रीष्म ऋतु में पंचाग्नि में तपता है, वह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्रेष्ठ तप करने वाले वानप्रस्थ भी गृहस्थाश्रम के पालन से होने वाले धर्म की सोलहवीं कला की भी समानता नहीं कर सकते। पार्वतीजी ने कहा—हे प्रभो! गृहस्थाश्रम के जो आचरण और व्रत-नियमादि हैं तथा गृहस्थ को जिस प्रकार देव-पूजन आदि कर्म करना और जिस-जिस तिथि-पर्व में जिस-जिस वस्तु को छोड़ना—यह सब आपके द्वारा सुनने की मुझे इच्छा है। श्रीमहेश्वरजी ने कहा—हे देवि! हे धर्माचारिणि! गृहस्थाश्रम का मूल और फल रूप श्रेष्ठ धर्म जहाँ अपने चारों चरणों से प्रतिष्ठित रहता है। जिस प्रकार दही से सार रूप घृत निकलता है, उसी प्रकार जो सभी धर्मों का सार है, वह मैं तुमसे कहता हूँ। गृहस्थाश्रम में रह कर जो माता पिता की सेवा करते हैं तथा स्त्री पति-सेवा करती है और जो ब्राह्मण नित्य प्रति अग्निहोत्र करते हैं, उन सब पर इन्द्र आदि देवगण तथा पितरगण प्रसन्न होते और वे अपने-अपने धर्म में स्थित रहते हैं ॥१२३-१२८॥

मातापितृवियुक्तानां का चर्या गृहमेधिनाम्।
विधवानां च नारीणां भवानेतद् ब्रवीतु मे ॥१२९
देवतातिथिशुश्रूषा गुरुवृद्धाभिवादनम्।
अहिंसा सर्वभूतानामलोभः सत्यसंधता।
ब्रह्मचर्यं शरण्यत्वं शौचं पूर्वाभिभाषणम् ॥१३०
कृतज्ञत्वमपैशुन्यं सततं धर्मशीलता।
दिने द्विरभिषेकं च पितृदैवतपूजनम् ॥१३१
गवाह्निकप्रदानं च संविभागोऽतिथिष्वपि।
दीपं प्रतिश्रयं चैव दद्यात् पाद्यासनं तथा ॥१३२
पञ्चमेऽहनि षष्ठे वा द्वादशेऽप्यष्टमेऽपि वा।
चतुर्दशे पञ्चदशे ब्रह्मचारी सदा भवेत् ॥१३३
श्मश्रुकर्म शिरोऽभ्यङ्गमञ्जनं दन्तधावनम्।
नैतेष्वहस्सु कुर्वीत तेषु लक्ष्मीः प्रतिष्ठिता ॥१३४
व्रतोपवासनियमस्तपो दानं च शक्तितः।
भरणं भृत्यवर्गस्य दीनःनामनुकम्पनम्।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

परदारनिवृत्तिश्च स्वदारेषु रतिः सदा ।।१३५
शरीरमेकं दम्पत्योर्विधात्रा पूर्वनिर्मितम् ।
तस्मात् स्वदारनिरतो ब्रह्मचारी विधीयते ।।१३६

पार्वतीजी ने कहा—जिन गृहस्थों के माता-पिता मर गये हों अथवा जिस स्त्री का पति मृत्यु को प्राप्त हो गया हो, उनकी जीवन चर्या क्या हो ? यह मुझसे कहिये । श्रीमहेश्वरजी ने कहा—देवताओं और अतिथियों की सेवा, गुरुजनों और वृद्धों का अभिवादन सब जीवों के प्रति अहिंसा-भाव, लोभ का परित्याग, सत्यनिष्ठता, ब्रह्मचर्य, शरणागत वत्सलता, शौचाचार, पूर्वाभिभाषण, उपकारी के प्रति कृतज्ञता, अपैशुन्य, सदा धर्मशीलता, दिन में दो बार स्नान, देवगण और पितरगण का पूजन, गो ग्रास-दान, अतिथियों को भोजन, दीप, निवास, पाद्य और आसन देना तथा पञ्चमी, षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, चतुर्दशी और पूर्णिमा को ब्रह्मचर्य पालन करना चाहिये । इन तिथियों में सिर मुँडाना, सिर में तैल लगाना, नेत्र में काजल या सुर्मा लगाना और दाँत आदि धोने का कार्य करना वर्जित है । इन नियमों का पालन करने वालों के यहाँ लक्ष्मीजी सदा निवास करती हैं । व्रत और उपवास का नियम पालन करना, शक्ति भर दान देना, पोष्य जनों का पोषण करना, दीनों पर कृपा करना, पर-स्त्री से दूर रहना और सदा अपनी पत्नी से ही प्रेम करना गृहस्थ का परम धर्म है । प्राचीन काल में विधाता ने पति-पत्नी का एक ही देह बनाया था। इसीलिये अपनी ही पत्नी में अनुरक्ति रखने वाला पुरुष ब्रह्मचारी कहा जाता है ।।१२९-१३६।।

शीलवृत्तविनीतस्य निगृहीतेन्द्रियस्य च ।
आर्जवे वर्तमानस्य सर्वभूतहितैषिणः ।।१३७
प्रियातिथेश्च क्षान्तस्य धर्मार्जितधनस्य च ।
गृहाश्रमपदस्थस्य किमन्यैः कृत्यमाश्रमैः ।।१३८
यथा मातरमाश्रित्य सर्वे जीवन्ति जन्तवः ।
तथा गृहाश्रमं प्राप्य सर्वे जीवन्ति चाश्रमाः ।।१३९
राजा नः सर्वपाषण्डाः सर्वे रङ्गोपजीविनः ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

व्यालग्रहाश्च डम्भाश्च चोरा राजभटास्तथा ।
सविद्याः सर्वशीलज्ञाः सर्वे वै विचिकित्सका ।.१४०
दूराध्वानं प्रपन्नाश्च क्षीणपथ्योदना नराः ।
एते चान्ये च बहवः तर्कयन्ति गृहाश्रमम् ।।१४१
मार्जारा मूषिकाः श्वानः सूकराश्च शुकास्तथा ।
कपोतका कर्कटका. सरीसृपनिषेवणाः ।।१४२
अरण्यवासिनश्चान्ये सङ्घा ये मृगपक्षिणाम् ।
एवं बहुविधा देवि लोकेऽस्मिन् सचराचराः ।।१४३
गृहे क्षेत्रे बिले चैव शतशोऽथ सहस्रशः ।
गृहस्थेन कृतं कर्म सर्वैस्तैरिह भुज्यते ।।१४४

जो शील और सदाचार से सदा नत मस्तक रहता है, जो अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखता है, जो सभी से सरल बर्त्ताव करता है, जो सब जीवों के हित-साधन में लगा है, जिसे अतिथि प्रिय है, जो क्षमाशील है तथा जिसने धर्म पूर्वक धनोपार्जन किया है–ऐसे गृहस्थ के लिये अन्य आश्रमों में दीक्षित होने की क्या आवश्यकता है ? जैसे माता के सहारे से सभी जीव प्राण धारण करते हैं, वैसे ही सब आश्रम गृहस्थाश्रम के आश्रय में ही जीवन-यापन करते हैं । राजा, पाखण्डी, नट, सपेरा, दम्भी, चोर, राजपुरुष, विद्वान्, सब शीलों के ज्ञाता, सभी विचिकित्सक, दूर के मार्ग से चल कर आये हुए पथिक–यह सभी तथा अन्य बहुत से व्यक्ति इस गृहस्थाश्रम को ही ताकते रहते हैं । हे देवि ! मूषक, बिलाव, श्वान, शूकर, तोते, कपोत, कर्कट, सरीसृप आदि बहुत से मृग-पक्षियों के समुदाय वन में रहते हैं तथा और भी अनेक सैकड़ों या सहस्रों प्रकार के प्राणी गृह, क्षेत्र तथा बिलों में रहते हैं, वे सभी गृहस्थ के किये हुए कर्म को ही भोगने वाले हैं ।।१३७-१४४।।

उपयुक्तं च यत् तेषां मतिमान् नानुशोचति ।
धर्म इत्येव संकल्प्य यस्तु तस्य फलं शृणु ।।१४५
सर्वयज्ञप्रणीतस्य हयमेधेन यत् फलम् ।
वर्षे स द्वादशे देवि फलेनैतेन युज्यते ।।१४६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

उक्तस्त्वया पृथग्धर्मश्चातुर्वर्ण्यहितः शुभः ।
सर्वव्यापीं तु यो धर्मो भगवंस्तद् ब्रवीहि मे ॥१४७
ब्राह्मणा लोकसारेण सृष्टा धात्रा गुणार्थिना ।
लोकांस्तारयितुं कृत्स्नान् मर्त्येषु क्षितिदेवताः ॥१४८
तेषामपि प्रवक्ष्यामि धर्मकर्मफलोदयम् ।
ब्राह्मणेषु हि यो धर्मः स धर्मः परमो मतः ॥१४९
इमे ते लोकधर्मार्थं त्रयः सृष्टाः स्वयम्भुवा ।
पृथिव्यां सर्जने नित्यं सृष्टांस्तानपि मे शृणु ॥१५०
वेदोक्तः परमो धर्मः स्मृतिशास्त्रगतोऽपरः ।
शिष्टाचीर्णोऽपरः प्रोक्तस्त्रयो धर्माः सनातनाः ॥१५१

उनके उपयोग में जो वस्तु आ जाय, उसके लिये शोक न करने वाला विज्ञ पुरुष उन सबका पालन करना अपना ही कर्त्तव्य समझ कर सन्तोष कर लेता है, उसे जो फल प्राप्त होता है, वह ध्यान से सुनो। सम्पूर्ण यज्ञों का सम्पादन करने पर अथवा अश्वमेध यज्ञ के करने पर जो फल प्राप्त होता है, वही बारह वर्षों तक उक्त नियमों के पालन करने वाले इस गृहस्थ को मिल जाता है। पार्वतीजी ने कहा—हे भगवन्! आपने चारों वर्णों का हित करने वाले श्रेष्ठ धर्म को अलग-अलग कहा है, अब सब वर्णों के लिये समान रूप से उपयोगी धर्म का मेरे प्रति वर्णन कीजिये। श्रीमहेश्वरजी ने कहा-- हे देवि! लोकों का उद्धार करने की इच्छा से जगत् के रचयिता ब्रह्माजी ने जगत् की सार वस्तु के द्वारा मर्त्यलोक में ब्राह्मणों को उत्पन्न किया। ब्राह्मण इस पृथिवी के देवता हैं, इसलिये प्रथम उन्हीं के धर्म, कर्म और फलों को कहता हूँ। क्योंकि ब्राह्मणों में जो धर्म है, वही परम धर्म समझना चाहिये। सम्पूर्ण विश्व की रक्षा के लिये, ब्रह्माजी ने तीन प्रकार का धर्म निश्चत किया है। पृथिवी के उत्पन्न होने के साथ ही इन तीनों धर्मों की उत्पत्ति हो गई, यह भी मेरे द्वारा सुन लो। प्रथम वेदोक्त धर्म सबसे श्रेष्ठ है, दूसरा वेदानुकूल स्मृति शास्त्र में कहा गया स्मार्त्त धर्म और तीसरा है शिष्ट पुरुष द्वारा आचरण में लाया गया धर्म—यह तीनों ही धर्म सनातन माने गये हैं ॥१४५-१५१॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

त्रैविद्यो ब्राह्मणो विद्वान्न चाध्ययनजीवकः ।
त्रिकर्मा त्रिपरिक्रान्तो मैत्र एष स्मृतो द्विजः ॥१५२

षडिमानि तु कर्माणि प्रोवाच भुवनेश्वरः ।
वृत्त्यर्थं ब्राह्मणानां वै शृणु धर्मान् सनातनान् ॥१५३
यजनं याजनं चैव तथा दानप्रतिग्रहौ ।
अध्यापनं चाध्ययनं षट्कर्मा धर्मभाग् द्विजः ॥१५४

नित्यः स्वाध्यायिता धर्मो धर्मो यज्ञः सनातनः ।
दानं प्रशस्यते चास्य यथाशक्ति यथाविधि ॥१५५
शमस्तूपरमो धर्मः प्रवृत्तः सत्सु नित्यशः ।
गृहस्थानां विशुद्धानां धर्मस्य निचयो महान् ॥१५६

पञ्चयज्ञविशुद्धात्मा सत्यवागनसूयकः ।
दाता ब्राह्मणसत्कर्ता सुसंतृष्टनिवेशनः ॥१५७
अमानी च सदाजिह्मः स्निग्धवाणीप्रदस्तथा ।
अतिथ्यभ्यागतरतिः शेषान्नकृतभोजनः ॥१५८
पाद्यमर्घ्यं यथान्यायमासनं शयनं तथा ।
दीपं प्रतिश्रयं चैव यो ददाति स धार्मिकः ॥१५९

जो तीनों वेदों का जानने वाला विद्वान् हो, पठन-पाठन से जीविकोपार्जन न करता हो, दान, धर्म, और यज्ञ का सदा अनुष्ठान करता हो, काम, क्रोध,लोभ तीनों को त्याग चुका हो और सब जीवों के प्रति मैत्री भाव रखता हो–ऐसे पुरुष को ही यथार्थ रूप में ब्राह्मण कहा जाता है। सभी भुवनों के ईश्वर ब्रह्माजी ने ब्राह्मणों की जीविका के निमित्त यह छः कर्म कहे है। उनके लिये यही सनातन धर्म है, तुम इनको श्रवण करो। यज्ञ करना, यज्ञ कराना, दान देना, प्रतिग्रह लेना, वेद पढ़ना, वेद पढ़ाना यह छः कर्म हैं। इनका आश्रय लेने वाला ब्राह्मण धर्म का भागी माना गया है। इनमें भी स्वाध्याय-परायणता ब्राह्मण का प्रमुख धर्म है, यज्ञ करना सनातन धर्म और शक्ति पूर्वक विधिवत् दान देना प्रशस्त धर्म है। सभी प्रकार के विषयों से उपरत होना 'शम' है। यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सत्पुरुषों में सदा दिखाई देता है। जो शुद्ध चित्त वाले गृहस्थ इसका पालन करते हैं उन्हें महान् महान् धर्म-राशि मिलती है। गृहस्थ का कर्त्तव्य है कि वह पंच महायज्ञों के अनुष्ठान द्वारा अपने मन को शुद्ध करे। जो सदा सत्य भाषण करता, अपने गृह को स्वच्छ रखता, अभिमान नहीं करता, सरलता रखता, स्नेहमय वाणी बोलता, अतिथि और अभ्यागतों की सेवा में तत्पर रहता, यज्ञ से बचे अन्न का भक्षण करता और अतिथि को पाद्य, अर्घ्य, आसन, शय्या, दीपक और निवास के लिये स्थान देता है, उस गृहस्थ को धार्मिक कहा गया है ॥१५२-१५९॥

प्रातरुत्थाय चाचम्य भोजनेनोपमन्त्र्य च ।
सत्कृत्यानुव्रजेद् तस्तु तस्य धर्मः सनातनः ॥१६०
सर्वातिथ्यं त्रिवर्गस्य यथाशक्ति निशानिशम् ।
शूद्रधर्मः समाख्यातस्त्रिवर्गपरिचारणम् ॥१६१
प्रवृत्तिलक्षणो धर्मो गृहस्थेषु विधीयते ।
तमहं वर्तयिष्यामि सर्वभूतहितं शुभम् ॥१६२
दातव्यमसकृच्छक्त्या यष्टव्यमसकृत् तथा ।
पुष्टिकर्मविधानं च कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥१६३
धर्मेणार्थः समाहार्यो धर्मलब्धं त्रिधा धनम् ।
कर्तव्यं धर्मपरमं मानवेन प्रयत्नतः ॥१६४
एकेनांशेन धर्मार्थौ कर्तव्यौ भूतिमिच्छता ।
एकेनांशेन कामार्थं एकमंशं विवर्धयेत् ॥१६५
निवृत्तिलक्षणस्त्वन्यो धर्मो मोक्षाय तिष्ठति ।
तस्य वृत्तिं प्रवक्ष्यामि शृणु मे देवि तत्त्वतः ॥१६६
सर्वभूतदया धर्मो न चैकग्रामवासिता ।
आशापाशविमोक्षश्च शस्यते मोक्षकाङ्क्षिणाम् ॥१६७

प्रातःकाल उठ कर आचमन करे और ब्राह्मण को भोजन के लिये निमन्त्रण देकर उसे समय पर सत्कार पूर्वक भोजन करावे और फिर ब्राह्मण को पहुँचाने के लिये कुछ दूर तक उसके पीछे-पीछे जाय, उसी गृहस्थ के द्वारा सनातन धर्म का पालन होता हुआ समझना चाहिये।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

शूद्र गृहस्थ अपने शक्ति भर तीनों वर्णों का आतिथ्य-सत्कार करे। क्योंकि द्विजातियों की सेवा करना उसका परम धर्म कहा गया है। गृहस्थों के लिये प्रवृत्ति लक्षण वाले धर्म का विधान किया गया है। वह धर्म सब प्राणियों का हित करने वाला है। अब उसी शुभ धर्म को मैं कहता हूँ। अपने कल्याण की इच्छा करने वाला पुरुष अपनी शक्ति के अनुसार सदा दान देता रहे। यज्ञानुष्ठान करे और पुष्टि कर्मों में लगा रहे। मनुष्य का कर्त्तव्य है कि वह धर्म से ही धन कमावे और उस धर्म से कमाये हुए धन के तीन भाग करके धर्मयुक्त कर्म का अनुष्ठान करे। अपनी उन्नति की कामना करने वाला मनुष्य धन के उन तीन भागों में से एक भाग के द्वारा धर्म कार्य करे, दूसरे भाग को कामादि में उपभोग करे और तीसरे भाग को वृद्धि के लिये जोड़ कर रखे। इससे भिन्न, निवृत्ति धर्म है, वही मोक्ष का साधन है। अब मैं उस निवृत्ति धर्म का यथार्थ रूप तुम्हें बताता हूँ, उसे ध्यान पूर्वक श्रवण करो। जिन मनुष्यों को मोक्ष की कामना हो उन्हें सभी प्राणियों पर दया-भाव रखना चाहिये। यही उनका धर्म है। वे सदा एक ही ग्राम में न रहें और आशा रूपी बन्धनों को बिल्कुल काट डालें। उनके लिये यही उचित है ॥१६०-१६७॥

न कुट्यां नोदके सङ्गो न वाससि म चासने।
न त्रिदण्डे न शयने नाग्नौ न शरणालये ॥१६८
अध्यात्मगतिचित्तो यस्तन्मनास्तत्परायणः।
युक्तो योगं प्रति सदा प्रतिसंख्यानमेव च ॥१६९
वृक्षमूलपरो नित्यं शून्यागारनिवेशनः।
नदीपुलिनशायी च नदीतीररतिश्च यः ॥१७०
विमुक्तः सर्वसङ्गेषु स्नेहबन्धेषु च द्विजः।
आत्मन्येवात्मनो भावं समासज्जेत वै द्विजः ॥१७१
स्थाणुभूतो निराहारो मोक्षदृष्टेन कर्मणा।
परिव्रजेति यो युक्तस्तस्य धर्मः सनातनः ॥१७२
न चैकत्र समासक्तो न चैकग्रामगोचरः।
मुक्तो ह्यटति निर्मुक्तो न चैकपुलिनेशयः ॥१७३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एष मोक्षविदां धर्मो वेदोक्तः सत्पथः सताम् ।
यो मार्गमनुयातीमं पदं तस्य च विद्यते ॥१७४

चतुर्विधा भिक्षवस्ते कुटीचकबहूदकौ ।
हंसः परमहंसश्च यो यः पश्चात् स उत्तमः ॥१७५

मुमुक्षु को न तो कुटिया के प्रति मोह हो और न किसी अन्य शरणालय में ही आसक्ति हो । जल, वस्त्र, आसन, त्रिदण्ड, शय्या और अग्नि आदि में भी आसक्त न रहे । उसे तो आध्यात्मिक ज्ञान का ही चिन्तन, मनन और निदिध्यासन करना उचित है । उसी में तत्पर रहता हुआ वह मुमुक्षु योगाभ्यास में लगा रह कर केवल तत्त्व का ही विचार करे । सन्यासी को सब प्रकार की आसक्तियों और स्नेह बन्धनों से मुक्त होजाना चाहिये । वह सदा वृक्ष के नीचे, सूने घर में अथवा नदी के किनारे शयन करे और अपने अन्तःकरण को सदा ही परमात्मा के ध्यान में लगाये रखे । जो सन्यास में युक्त चित्त होता है और मोक्ष के उपयुक्त साधन श्रवण, मनन, निदिध्यासन आदि में ही अपना सम्पूर्ण समय व्यतीत करता है तथा आहार का भी त्याग कर काठ के ठूँठ की तरह स्थिर रहता है, उसे ही सनातन धर्म के मोक्ष स्वरूप धर्म की प्राप्ति होती है। सन्यासी को किसी एक स्थान में आसक्ति नहीं रखनी चाहिये । उसे एक ही ग्राम अथवा एक ही नदी के किनारे सदा नहीं रहना या सोना चाहिये । उसे तो सब प्रकार की आसक्तियों का त्याग करके सर्वत्र स्वच्छन्द विचरण करना चाहिये । मोक्ष धर्म के जानने वाले सत्पुरुषों का यही धर्म वेद के द्वारा प्रतिपादित है । मोक्ष के लिये यही सन्मार्ग है । इस मार्ग पर चलने वाले पथिक को ब्रह्मपद की प्राप्ति होती है । संन्यासी कुटीचक, बहूदक, हंस और परमहंस के भेद से चार प्रकार के होते हैं । इनमें कुटीचक से बहूदक श्रेष्ठ हैं, बहूदक से हंस और हंस से परमहंस को श्रेष्ठ समझना चाहिये ॥१६८-१७५॥

अतः परतर नास्ति नावरं न तिरोग्रतः ।
अदुःखमसुखं सौम्यमजरानरमव्ययम् ॥१७६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गार्हस्थ्यो मोक्षधर्माश्च सज्जनाचरितस्त्वया ।
भाषितो जीवलोकस्य मार्गः श्रेयस्करो महान् ।।१७७
ऋषिधर्मं तु धर्मज्ञ श्रोतुमिच्छाम्यतः परम् ।
स्पृहा भवति मे नित्यं तपोवननिवासिषु ।।१७८
आज्यधूमोद्भवो गन्धो रुणद्धीव तपोवनम् ।
तं दृष्ट्वा मे मनः प्रीतं महेश्वर सदा भवेत् ।।१७९
एतन्मे संशयं देव मुनिधर्मकृतं विभो ।
सर्वधर्मार्थतत्त्वज्ञ देवदेव वदस्व मे ।
निखिलेन मया पृष्टं महादेव यथातथम् ।।१८०
हन्त तेऽहं प्रवक्ष्यामि मुनिधर्ममनुत्तमम् ।
यं कृत्वा मुनयो यान्ति सिद्धिं स्वतपसा शुभे ।।१८१
फेनपानामृषीणां यो धर्मो धर्मविदां सताम् ।
तन्मे शृणु महाभागे धर्मज्ञे धर्ममादितः ।।१८२

इस परमहंस धर्म के द्वारा जो आत्मज्ञान प्राप्त होता है, उससे बढ़ कर और कुछ नहीं है । यह ज्ञान किसी से निकृष्ट नहीं समझना चाहिये । इस ज्ञान के सामने परमात्मा का साक्षात् होता है । यही दुःख-सुख से रहित अजर, अमर सौम्यपद है । पार्वतीजी ने कहा—हे प्रभो ! आपने सज्जनों द्वारा आचरित गृहस्थ धर्म और मोक्ष धर्म का विवेचन किया । जीव लोक के लिये यह दोनों मार्ग ही महान् एवं कल्याणकारी हैं । हे भगवन् ! तपोवन में रहने वाले ऋषियों के प्रति मेरे मन में सदा से ही स्नेह रहा है, इसलिये अब मैं ऋषि-धर्म सुनने की इच्छुक हूं । मेरे प्रति वही कहने की कृपा करें । हे महेश्वर ! यह ऋषिगण जब अग्नि में घृताहुति देते हैं, तब उसके धुँए से उत्पन्न सुगन्ध सम्पूर्ण तपोवन को सुवासित कर देती है । उससे मेरा चित्त अत्यन्त प्रसन्न होता है । हे विभो ! मुनि धर्म के विषय में यह मेरी जिज्ञासा है । आप सभी धर्मों के तत्वों को जानते हैं, इसलिये, मेरे प्रश्न का यथावत् वर्णन करने की कृपा करिये । श्रीमहेश्वरजी ने कहा—तुम्हारे इस प्रश्न को सुनकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई है । अब मैं तुम्हें उस सर्व श्रेष्ठ धर्म को बताता हूँ, जिसका

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पालन करके ऋषिगण परम सिद्धि को प्राप्त कर लेते हैं। हे महाभागो ! सर्व प्रथम धर्म के जानने वाले साधु पुरुष फेनप ऋषियों का धर्म मुझसे सुनो ॥१७६-१८२॥

उञ्छन्ति सततं ये ते ब्राह्मघं केनोत्करं शुभम् ।
अमृतं ब्रह्मणा पीतमध्वरे प्रसृतं दिवि ॥१८३
एष तेषां विशुद्धानां फेनपानां तपोधने ।
धर्मचर्याकृतो मार्गो वालखिल्यगणैः शृणु ॥१८४

वालखिल्यास्तपःसिद्धा मुनयः सूर्यमण्डले ।
उञ्छे तिष्ठन्ति धर्मज्ञाः शाकुनीं वृत्तिमास्थिताः ॥१८५
मृगनिर्मोकवसनाश्चीरवल्कलवाससः ।
निर्द्वन्द्वाः सत्पथं प्राप्ता वालखिल्यास्तपोधनाः ॥१८६

अंगुष्ठपर्वमात्रा ये भूत्वा स्वे स्वे व्यवस्थिताः ।
तपश्चरणमीहन्ते तेषां धर्मं फलं महत् ॥१८७
ते सुरैः समतां यान्ति सुरकार्यार्थसिद्धये ।
द्योतयन्ति दिशः सर्वास्तपसा दग्धकिल्बिषाः ॥१८८
ये त्वन्ये शुद्धमनसो दयाधर्मपरायणाः ।
सन्तश्चक्रचरा पुण्याः सोमलोकचराश्च ये ।
पितृलोकसमीपस्थास्त उञ्छन्ति यथाविधि ॥१८९

प्राचीन काल में ब्रह्माजी ने यज्ञ करते समय जिस अमृत का पान किया था और जो अमृत स्वर्ग में फैला हुआ है, उस अमृत को ब्राह्म कहते हैं। उसके फेन को जो थोड़ा-थोड़ा करके इकट्ठा कर लेते और पीते रहते हैं, उन्हें फेनप कहते हैं। यह धर्माचरण का मार्ग उन विशुद्ध फेनपों का ही मार्ग समझो। अब बालखिल्यों का जो धर्म-मार्ग है, उसे सुनो। बालखिल्यगण तपस्या के प्रभाव से सिद्धि हो गये। वे सभी धर्मों के जानने वाले, सूर्यमण्डल में रहते हैं। वहाँ उञ्छवृत्ति के आश्रय में अर्थात् एक-एक दाना बीन कर उससे अपनी उदर-पूर्ति करते हैं। मृगछाला, चीर और वल्कल ही उनके वस्त्र हैं। वे बालखिल्यगण शीत, उष्ण आदि द्वन्द्वों

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

से रहित, सन्मार्ग के पथिक और तपस्या के धनी हैं। उन सभी का शरीर अंगूठे के पोरुवे के बराबर है। इतने छोटे शरीर के होने पर भी वे अपने-अपने कर्त्तव्य में लगे रहते हैं। उनके धर्म का फल भी महान् है। देवताओं का कार्य सिद्ध करने के लिये वे उन्हीं जैसा रूप धारण करते हैं और अपने तप के प्रभाव से सब पापों को भस्म करके अपने तेज से सब दिशाओं को प्रकाशित करते हैं। इनके सिवा अन्य अनेकों शुद्ध चित्त, दया धर्म-परायण और पुण्यात्मा सन्त हैं, जिनमें से कुछ चक्र के समान ही सर्वत्र घूमते रहने वाले चक्रधर, कुछ सोमलोक में और कुछ पितृ-लोक के समीप रहने वाले हैं। यह सभी उञ्छवृत्ति से उदर-पोषण करते हैं ॥१८३-१८६॥

सम्प्रक्षालाश्मकुट्टाश्च दन्तोलूखिलिकाश्च ते ॥१६०
सोमपानां च देवानामूष्मपाणां तथैव च।
उञ्छन्ति ये समीपस्थाः सदारा नियतेन्द्रियाः ॥१६१
तेषामग्निपरिस्पन्दः पितृणां चाचनं तथा।
यज्ञानां चैव पञ्चानां यजनं धर्म उच्यते ॥१६२
एष चक्रचरैर्देवि देवलोकचरैर्द्विजैः।
ऋषिधर्मः सदा चीर्णो योऽन्यस्तमपि मे शृण ॥१६३
सर्वेष्वेवर्षिधर्मेषु ज्ञेयोऽऽत्मा सयतेन्द्रियैः।
कामक्रोधौ ततः पश्चाज्जेतव्याविति मे मतिः ॥१६४
अग्निहोत्रपरिस्पन्दो धर्म रात्रिसमासनम्।
सोमयज्ञाभ्यनुज्ञान पञ्चमी यज्ञदक्षिणा ॥१६५

कोई सम्प्रक्षाल, कोई अश्मकुट्ट और कोई दन्तोलूखलिक कहे जाते हैं। यह सोमप और उष्णप देवताओं के पास रह कर इन्द्रिय संयम पूर्वक उञ्छवृत्ति का ही पालन करते हैं। उनका मुख्य धर्म अग्निहोत्र, पितर-पूजन और पंच-महायज्ञों का अनुष्ठान करना ही है। चक्र के समान विचरण करने वाले और देवलोक में रहने वाले उन ब्राह्मणों ने इस ऋषि धर्म का सदा पालन किया है। इसके सिवा, अन्य ऋषियों के धर्म भी सुनो। सभी आर्ष धर्मों में इन्द्रियों को अपने वश में रखते हुए आत्मज्ञान

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्राप्त करना आवश्यक माना गया है। फिर काम, क्रोध पर भी विजय प्राप्त करे—यह मेरा मत है। प्रत्येक प्रकार के ऋषि के लिये अग्निहोत्र, धर्मसत्र में स्थित होना, सोमयाग का अनुष्ठान, यज्ञ विधि का ज्ञान और यज्ञ दक्षिणा का देना आवश्यक कर्म माने गये हैं ।।१६०-१६५।।

नित्यं यज्ञक्रिया धर्मः पितृदेवार्चने रतिः ।
सर्वातिथ्यं च कर्तव्यमन्नेनोञ्छार्जितेन वै ।।१६६
निवृत्तिरुपभोगेषु गोरसानां शमे रतिः ।
स्थण्डिले शयने योगः शाकपर्णनिषेवणम् ।।१६७
फलमूलाशनं वायुरापः शैवलभक्षणम् ।
ऋषीणां नियमा ह्येते यैर्जयन्त्यजितां गतिम् ।।१६८
विधूमे सन्नमुसले व्यङ्गारे भुक्तवज्जने ।
अतीतपात्रसंचारे काले विगतभिक्षुके ।।१६९
अतिथिं कांक्षमाणो वै शेषान्नकृतभोजनः ।
सत्यधर्मरतः शान्तो मुनिधर्मेण युज्यते ।।२००
न स्तम्भी न च मानी स्यान्नाप्रसन्नो न विस्मितः ।
मित्रामित्रसमो मैत्रो यः स धर्मविदुत्तमः ।।२०१

दैनिक रूप से यज्ञानुष्ठान और धर्म पालत करे। पितर तथा देव-पूजन करे और उञ्छवृत्ति से उपार्जित अन्न से सब का आतिथ्य-सत्कार करना ऋषियों का आवश्यक कर्त्तव्य है। विषयों से निवृत्ति, गोरस का आहार, इन्द्रिय-संयमों के साधन में रुचि, खुले स्थान में शयन, योगाभ्यास शाक-पत्ते अथवा फल-मूल का सेवन अथवा वायु या जल मात्र का आहार—यह ऋषियों के धर्म हैं। इनका पालन करने से उत्तम गति मिलती है। जब रसोईघरों का धुँआ बन्द हो जाय, मूसल से धान कूटना रुक जाय, चूल्हे की अग्नि बुझ जाय और घर के सभी मनुष्य भोजन कर चुकें, बर्तनों के इधर उधर जाने की आवाज बन्द हो जाय, और भिक्षुक भीख लेकर लौट जाँय, तब तक ऋषियों को अतिथियों की प्रतीक्षा करनी चाहिये और फिर उस बचे हुए अन्न को स्वयं खाना चाहिये। ऐसा करने वाला पुरुष सत्य धर्म परायण रह कर मुनि धर्म से युक्त होता है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो किसी प्रकार का गर्व अथवा अभिमान नहीं करता अथवा अप्रसन्न या विस्मित नहीं होता, शत्रु-मित्र को समान समझ कर सभी से मित्र-भाव रखता है, उसी को धर्म के जानने वालों में श्रेष्ठ ऋषि समझना चाहिये ॥१९६-२०१॥

देशेषु रमणीयेषु नदीनां निर्झरेषु च ।
स्रवन्तीनां निकुञ्जेषु पर्वतेषु वनेषु च ॥२०२
देशेषु च पवित्रेषु फलवत्सु समाहिताः ।
मूलवत्सु च मध्येषु वसन्ति नियतव्रताः ॥२०३
तेषामपि विधिं पुण्यं श्रोतुमिच्छामि शङ्कर ।
वानप्रस्थेषु देवेश स्वशरीरोपजीविषु । २०४
वानप्रस्थेषु यो धर्मस्तं मे शृणु समाहिता ।
श्रुत्वा चैकमना देवि धर्मबुद्धिपरा भव ॥२०५
संसिद्धैर्नियमैः सद्भिर्वनवासमुपागतैः ।
वानप्रस्थैरिदं कर्म कर्तव्यं शृणु यादृशम् ॥२०६
भूत्वा पूर्वं गृहस्थस्तु पुत्रानृण्यमवाप्य च ।
कलत्रकार्यं संतृप्य कारणात् संत्येजद् गृहम् ॥२०७

पार्वतीजी ने कहा—हे महेश्वर ! नियम पूर्वक व्रत-पालक, एकाग्र-चित्त वाले वानप्रस्थी नदियों के किनारे, झरनों में, सरिताओं के समीप-वर्त्ती निकुञ्जों में, पर्वतों या वनों में तथा फल-मूलादि से युक्त पवित्र स्थानों में रहते हैं। हे देवेश ! वे वानप्रस्थी अपने शरीर को कष्ट देते हुए जीवन-निर्वाह करते हैं, इसलिये उनके पालन करने योग्य पवित्र कर्त्तव्य को मैं सुनना चाहती हूँ। श्रीमहेश्वरजी ने कहा—हे देवि ! वानप्रस्थों के धर्म को मुझसे सुनो और अपनी बुद्धि को एकाग्र चित्त होकर धर्म में लगाओ। नियमों के पालन से सिद्ध हुए वनवासी वानप्रस्थों को जो कर्म करना चाहिये, उसे कहता हूँ। प्रथम गृहस्थ होकर जो कार्य पत्नी के द्वारा सम्पन्न होता है, उससे पुत्रोत्पत्ति कर पितरों के ऋण को चुकावे और फिर धर्म-सम्पादन हेतु घर को छोड़ दे ॥२०२-२०७॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवस्थाप्य मनो धृत्या व्यवसायपुरस्सरः ।
निर्द्वन्द्वो वा सदारो वा वनवासाय स व्रजेत् ॥२०८
देशाः परमपुण्या ये नदीवनसमन्विताः ।
अबोधमुक्ताःप्रायेण तीर्थायतनसंयुताः ॥२०९
तत्र गत्वा विधिं ज्ञात्वा दीक्षां कुर्याद् यथाक्रमम् ।
दीक्षित्वैकमना भूत्वा परिचर्यां समाचरेत् ॥२१०
कल्योत्थानं च शौचं च सर्वदेवप्रणामनम् ।
शकृदालेपनं काये त्यक्तदोषप्रमादता ॥२११
सायम्प्राप्तश्चाभिषेकं चाग्निहोत्रं यथाविधि ।
काले शौचं च कार्यं च जटावल्कलधारणम् ॥२१२
सततं वनचर्या च समित्कुसुमकारणात् ।
नीवाराग्रयणं काले शाकमूलोपचायनम् ।
सदायतनशौचं च तस्य धर्माय चेष्यते ॥२१३
अतिथीनामाभिमुख्यं तत्परत्वं च सर्वदा ॥२१४
पाद्यासनाभ्यां सम्पूज्य तथाहारनिमन्त्रणम् ।
अग्राम्यपचनं काले पितृदेवार्चनं तथा ।
पश्चादतिथिसत्कारस्तस्य धर्माः सनातनाः ॥२१५

मन को धैर्य पूर्वक स्थिर करे और दृढ़ निश्चय के सहित एकाकी ही अथवा स्त्री को साथ लेकर वन के लिये चल दे। नदी और वन युक्त परम पुण्यात्म प्रदेश अज्ञान से रहित और देव स्थानों से सुशोभित तीर्थ रूप हैं। उनमें जाकर विधि ज्ञान और ऋषि धर्म की दीक्षा ले और एक चित्त होकर परिचर्या प्रारम्भ कर दे। प्रातःकाल उठ कर शौचाचार का पालन करे और देवताओं को नमस्कार कर देह में गौ का गोबर लगा स्नान करे। दोष और प्रमाद को त्याग दे, दोनों समय स्नान करे, विधिवत् अग्निहोत्र करे, सिर पर जटा और कमर में वल्कल धारण करे, समिधा और पुष्प एकत्रित करने के लिये वन में विचरे, समय पर आग्रयण कर्म करे, शाक-मूल का संकलन करे और स्थान को स्वच्छ रखे—यह कार्य वानप्रस्थी के लिये आवश्यक हैं। क्योंकि, इन कार्यों के द्वारा उसके धर्म

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

की सिद्धि होती है। प्रथम अतिथियों के सामने उपस्थित हो और फिर उनकी परिचर्या में लगे। पाद्य और आसनादि देकर उन्हें भोजन के लिये आमंत्रित करे। ग्राम में उत्पन्न न हुए हों, ऐसे पदार्थों से समय पर भोजन बनावे। प्रथम उस रसोई को देवताओं और पितरों के लिये अर्पण करे, फिर अतिथि को सत्कार पूर्वक भोजन करावे। ऐसा करने से वानप्रस्थी को सनातन धर्म की सिद्धि होती है ॥२०८-२१५॥

शिष्टैर्धर्मासने चैव धर्मार्थसहिताः कथाः।
प्रतिश्रयविभागश्च भूमिशय्या शिलासु वा ॥२१६
व्रतोपवासयोगश्च क्षमा चेन्द्रियनिग्रहः।
दिवारात्रं यथायोगं शौचं धर्मस्य चिन्तनम् ॥२१७
त्रिकालमभिषेकं च पितृदेवार्चनं तथा।
अग्निहोत्रपरिस्पन्द इष्टिहोमविधिस्तथा ॥२१८
नीवारग्रहणं चैव फलमूलनिषेवणम्।
इंगुदैरण्डतैलानां स्नेहार्थे चनिषेवणम् ॥२१९
योगचर्याकृतैः सिद्धैः कामक्रोधविवर्जितैः।
वीरशय्यामुपासद्भिर्वीरस्थानोपसेविभिः ॥२२०
युक्तैर्योगपथैःसद्भिर्ग्रीष्मे पञ्चतपैस्तथा।
मण्डूकयोगनियतैर्यथान्यायं निषेविभिः ॥२२१

धर्मासन पर प्रतिष्ठित शिष्टों द्वारा धर्म के अर्थ सहित कथाऐं सुने। अपने रहने के लिये पृथक् आश्रम बना ले और भूमि या पत्थर पर शयन करे। व्रत और उपवास-परायण रहे, दूसरों के प्रति क्षमा-भाव रखे, अपनी इन्द्रियों पर संयम रखे, शौचाचार का हर समय पालन करे और धर्म का ही चिन्तन करे। दिन में तीन बार स्नान, पितर-देवताओं का पूजन, अग्निहोत्र और विधि पूर्वक यज्ञ करे। जीविका के लिये नीवार तथा फल-मूल का सेवन करे, देह में स्निग्धता लाने के लिये या तैल से होने वाले कार्य की पूर्ति के लिये गुद या अरंड का तैल प्रयोग में लावे। योगाभ्यास के द्वारा योग-सिद्धि प्राप्त करे। काम, क्रोध का त्याग कर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दे । वीरासन लगा कर बैठे तथा वीर स्थान अर्थात् घने वन में निवास करे । मन को एकाग्र करे, योग साधन में लगा रहे, ग्रीष्म ऋतु में पंचाग्नि का सेवन करे । हठयोग के अन्तर्गत मण्डूक योग का अभ्यास करे । जिस किसी वस्तु का सेवन करे, वह वानप्रस्थो के लिये न्यायानुकूल हो, उसी का करे ।।२१६-२२१।।

वीरासनरतौनित्यं स्थण्डिले शयनं तथा ।
शीततोयाग्नियोश्च चर्तव्यो धर्म बुद्धिभिः ।।२२२
अब्भक्षैर्वायुभक्षैश्च शैवलोत्तरभोजनैः ।
अश्मकुट्टैस्तथा दान्तैः सम्प्रक्षालैस्तथापरैः ।।२२३
चीरवल्कलसंवीतैर्मृगचर्म निवासिभिः ।
कार्या यात्रा यथाकालं यथाधर्म यथाविधि ।।२२४
वननित्यैर्वनचरैर्वनस्थैर्वनगोचरैः ।
वनं गुरुमिवासाद्य वस्तव्यं वनजीविभिः ।।२२५
तेषां होमक्रिया धर्मः पञ्चयज्ञनिषेवणम् ।
भागं च पञ्चयज्ञस्यवेदोक्तस्यानुपालनम् ।।२२६
अष्टमीयज्ञपरता चातुर्मास्यनिषेवणम् ।
पौर्णमासादयो यज्ञा नित्ययज्ञस्तथैव च ।।२२७
विमुक्ता दारसंयोगैर्विमुक्ताः सर्वसंकरैः ।
विमुक्ताः सर्वपापैश्च च रन्ति मुनयो वने ।।२२८

सदा वीरासन से बैठे, वेदी या चबूतरे पर शयन करे, शीत ऋतु में रात्रि समय जल में बैठे या खड़ा रहे, वर्षा काल में खुले स्थान में शयन करे और ग्रीष्म में पंचाग्नियों का सेवन करे। वायु अथवा जल पीकर रहें, सेवार का भोजन करें, पत्थर से अन्न या फल को दुचल कर खावें या दाँतों से चर्वण करें । दूसरे दिन के लिये अन्न या फल का संग्रह कदापि न करें । नीचे के अंग में चीर और वल्कल धारण करें, उत्तरीय के स्थान में मृगचर्म का उपयोग करें और समयानुसार धर्म-सम्पादन के लिये तीर्थ-यात्रा आदि करते हुए घूमें । वन में रहे, वन में ही विचरण करे और वन में ही ठहरे—यही वानप्रस्थी के लिये उचित है । गुरु के पद

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चिह्नों पर चलता हुआ, सब प्रकार से वन का ही आश्रय ले। नित्य प्रति अग्निहोत्र और पंच महायज्ञों का सेवन करना चाहिये तथा विभाग पूर्वक वेदों में कहे हुए पंचयज्ञों का भी पालन करना वानप्रस्थों का धर्म है। अष्टमी तिथि को अष्टका यज्ञ में तत्पर रहे, चातुर्मास्य व्रत का सेवन करे, पौर्णमास आदि यज्ञों का तथा नित्य यज्ञ का भी अनुष्ठान करना चाहिये। सब प्रकार के संकर कर्म, स्त्री समागम आदि से वानप्रस्थी को दूर रहना और अन्य सब प्रकार के पापों से बचते हुए वन में विचरण करते रहना चाहिये ॥२२२ २२८॥

स्रुगभाण्डपरमा नित्यं त्रेताग्निशरणाः सदा।
सन्तः सत्पथनित्या ये ते यान्ति परमां गतिम् ॥२२९
ब्रह्मलोकं महापुण्यं सोमलोकं च शाश्वतम्।
गच्छन्ति मुनयः सिद्धाः सत्यधर्मव्यपाश्रयाः ॥२३०
एष धर्मो मया देवि वानप्रस्थाश्रितः शुभः।
विस्तरेणाथ सम्पन्नो यथास्थलमुदाहृतः ॥२३१
भगवन् सर्वभूतेश सर्वभूतनमस्कृत।
यो धर्मो मुनिसंघस्य सिद्धिवादेषु तं वद ॥२३२
सिद्धिवादेषु संसिद्धास्तथा वननिवासिनः।
स्वैरिणो दारसंयुक्तास्तेषां धर्मं कथं स्मृतः ॥२३३
स्वैरिणस्तपसा देवि सर्वे दारविहारिणः।
तेषां मौण्ड्यं कषायश्च वासे रात्रिश्च कारणम् ॥२३४
त्रिकालमभिषेकश्च होत्रं त्वृषिकृतं महत्।
समाधिसत्पथस्थानं यथोद्दिष्टनिषेवणम् ॥२३५

वानप्रस्थियों के लिये श्रेष्ठ उपकरण स्रुक-स्रुवा आदि यज्ञ पात्र ही हैं। वे आहवनीयादि त्रिविध अग्नियों के आश्रय में, इन्हीं के परायण रहते हुए सन्मार्ग पर चलते हैं। इस प्रकार अपने धर्म में लगे रहने वाले वे वानप्रस्थी मुनि परम गति को प्राप्त करते हैं। वे सदा सत्य धर्म का आश्रय लेते हुए सिद्ध हो जाते हैं। इसलिये उन्हें महान् पुण्यमय ब्रह्मलोक अथवा सनातन सोमलोक की प्राप्ति होती है। इस प्रकार यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

विस्तार युक्त तथा कल्याण प्रद वानप्रस्थ धर्म को मैंने तुम्हारे प्रति कहा है। पार्वतीजी ने कहा—हे भगवन्! आप सम्पूर्ण प्राणियों द्वारा स्तुत हैं। अब मुझे मुनि-समुदाय में द्वारा निश्चित धर्म बताने की कृपा करिये। ज्ञान गोष्ठियों में जो सिद्ध कहे गये हैं, उनमें से कोई एकाकी ही विचरण करते हैं और कोई पत्नी के सहित रहते हैं। आप उनके धर्म के विषय में बताइये। श्रीमहेश्वरजी ने कहा—हे देवि! सभी वानप्रस्थी तप में लगे रहते हैं। उनमें से कुछ तो एकाकी स्वच्छन्द घूमते हैं और कुछ अपनी अपनी स्त्रियों को भी साथ रखते हैं। जो मुनि स्वच्छन्द विचरण करते हैं, वे सिर मुँड़ा कर गेरुए वस्त्र धारण करते हैं। परन्तु, जो स्त्री को साथ रखते हैं, वे अपने आश्रम में ही रात्रि-निवास करते हैं। दोनों प्रकार के ही वानप्रस्थियों को नित्य प्रति तीनों समय स्नान करना चाहिये और अग्नि में आहुति देनी चाहिये। समाधि लगाना, सन्मार्ग पर चलना और शास्त्रोक्त कर्मों का अनुष्ठान करना उनका परम कर्त्तव्य है ॥२२९-२३५॥

ये च ते पूर्वकथिता धर्मास्ते वनवासिनाम् ।
यदि सेवन्ति धर्मांस्तानाप्नुवन्ति तपः फलम् ॥२३६
ये च दम्पतिधर्माणः स्वदारनियतेन्द्रियाः ।
चरन्ति विधिवद् दृष्टं तदनुकालाभिगामिनः ॥२३७
तेषामृषिकृतो धर्मो धर्मिणामुपपद्यते ।
न कामकारात् कामोऽन्यः संसेव्यो धर्मदर्शिभिः॥२३८
सर्वभूतेषु यः सम्यग् ददात्यभयदक्षिणाम् ।
हिंसादोषविमुक्तात्मा स वै धर्मेण युज्यते ॥२३९
सर्वभूतानुकम्पी यः सर्वभूतार्जवव्रतः ।
सर्वभूतात्मभूतश्च स वै धर्मेण युज्यते ॥२४०
सर्ववेदेषु वा स्नानं सर्वभूतेषु चार्जवम् ।
उभे एते समे स्यातामार्जवं वा विशिष्यते ॥२४१
आर्जवं धर्ममित्याहुरधर्मो जिह्म उच्यते ।
आर्जवेनेह संयुक्तो नरो धर्मेण युज्यते ॥२४२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वनवासियों के को धर्म मैंने पहिले तुमसे कहे हैं, उन सब का पालन करने वालों को उनके तप का पूर्ण फल प्राप्त हो जाता है। दाम्पत्य धर्म का पालन करते हुए स्त्री को साथ रखने वाले व्यक्ति इन्द्रियों को वश में रखते हुए वेद विहित धर्म पर चलते और ऋतु-प्राप्त होने पर ही स्त्री-संसर्ग करते हैं। धर्मदर्शी पुरुषों को किसी कामना से भोग का उपभोग करना उचित नहीं है। उन्हें तो ऋषियों द्वारा उपदेशित मार्ग पर ही चलना चाहिये। हिंसा के दोष से मुक्त हुआ जो पुरुष सब प्राणियों को अभय प्रदान करता है, वही धर्म के फल को पाता है। सभी प्राणियों पर दया करने वाला, सबके प्रति सरल भाव से वर्तने वाला और सब प्राणियों को अपने ही समान देखने वाला धर्म का सम्पूर्ण फल पाता है। सभी वेदों का ज्ञाता और सब प्राणियों के प्रति सरलता का भाव रखने वाला—यह दोनों समान समझे जाते हैं। बल्कि, सरलभावी पुरुष का ही महत्त्व अधिक है। सरलता को धर्म और कुटिलता को अधर्म कहा गया है। सरल भाव वाला मनुष्य ही धर्म-फल का सदैव अधिकारी होता है ॥२३६-२४२॥

आर्जवे तु रतो नित्यं वसत्यमर संनिधौ ।
तस्मादार्जवयुक्तः स्याद् य इच्छेद् धर्ममात्मनः ॥२४३
क्षान्तो दन्तो जितक्रोधो धर्मभूतो विहिंसकः ।
धर्मे रतमना नित्यं नरो धर्मेण युज्यते ॥२४४
व्यपेततन्द्रिर्धर्मात्मा शक्त्या सत्पथमाश्रितः ।
चारित्रपरमो बुद्धो ब्रह्मभयाय कल्पते ॥२४५
आश्रमाभिरता देव तापसा ये तपोधनाः ।
दीप्तिमन्तः कया चैव चर्ययाथ भवन्ति ते ॥२४६
राजानो राजपुत्राश्च निर्धना ये महाधनाः ।
कर्मणा केन भगवन् प्राप्नुवन्ति महाफलम् ॥२४७
नित्यं स्थानमुपागम्य दिव्यचन्दनभूषिताः ।
केन वा कर्मणा देव भवन्ति वनगोचराः ॥२४८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

एतन्मे संशयं देव तपश्चर्याऽऽश्रितं शुभम् ।
शंस सर्वमशेषेण त्र्यक्ष त्रिपुरनाशन ।।२४६

सदा सरल बर्ताव करने वाला ही देवताओं के निकट रहता हैं। इसलिये धर्म-फल की इच्छा वाले पुरुष को सरल बर्ताव से सम्पन्न होना चाहिये। क्षमाशील, जितेन्द्रिय, क्रोध को वश में करने वाला, धर्मशील, अहिंसक और धर्म में लगे रहने वाले पुरुष ही धर्म-फल के अधिकारी होते हैं। आलस्य-रहित, धर्मात्मा, शक्ति भर सन्मार्ग पर चलने वाला और ज्ञानी पुरुष ब्रह्मभाव को प्राप्त होता है। पार्वतीजी ने कहा—हे देव ! जो तप के धन से धनी तापस अपने आश्रम में ही रहते हैं, वे तपस्वी किस प्रकार होते हैं। अथवा राजा, राजकुमार, धनवान् या धनहीन मनुष्य अपने किस कर्म के प्रताप से महान् फल प्राप्त कर लेते हैं। वनवासी मुनि दिव्य चन्दन से किस प्रकार विभूषित होते हैं और किस कर्म से दिव्य स्थान को पाते हैं। हे त्रिलोचन ! तप के आश्रय वाले शुभ फल के सम्बन्ध में जो मेरा संशय है, उसका समाधान करिये ।।२४३-२४६।।

उपवासव्रतैर्दान्ता ह्यहिंस्राः सत्यवादिनः ।
संसिद्धाः प्रेत्य गन्धर्वैः सह मोदन्त्यनानामयाः ।।२५०
मण्डूकयोगशयनो यथान्यायं यथाविधि ।
दाक्षां चरति धर्मात्मा स नागैः सह मोदते ।।२५१
शष्पं मृगमुखोच्छिष्टं यो मृगैः सह भक्षति ।
दीक्षितो वै मुदा युक्तः स गच्छत्यमरावतीम् ।।२५२
शैवालं शीर्णपर्णं वा तद्व्रती यो निषेवते ।
शातयोगवहो नित्यं स गच्छेत् परमां गतिम् ।।२५३
वायुभक्षोऽम्बुभक्षो वा फलमूलाशनोऽपि वा ।
यक्षेष्वैश्वर्यमाधाय मोदतेऽप्सरसां गणैः ।।२५४
अग्नियोगवहो ग्रीष्मे विधिदृष्टेन कर्मणा ।
चीर्त्वा द्वादशवर्षाणि राजा भवति पार्थिवः ।।२५५
आहारनियमं कृत्वा मुनिर्द्वादशवार्षिकम् ।
मरुं संसाध्य यत्नेन राजा भवति पार्थिवः ।२५६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

श्री महेश्वरजी ने कहा—उपवास-व्रत-परायण, जितेन्द्रिय, अहिंसक और सत्य बोलने वाले सिद्ध पुरुष मरने पर रोग-शोक से मुक्त होकर गन्धर्वों के साथ रह कर सुख का उपभोग करते हैं। जो धर्मात्मा व्यक्ति विधिपूर्वक हठयोग में प्रसिद्ध मण्डूक योग के अनुसार शयन करता और यज्ञ की दीक्षा लेता है, वह नाग लोक में जाकर नागों के साथ रहता हुआ सुख-भोग करता है। जो मृगचर्याव्रत का आचरण करता हुआ उनके साथ रह कर घास को भक्षण करता है, वह मरने पर अमरावती पुरी में निवास करता है। जो वानप्रस्थी व्रत-धारण पूर्वक सेवार या जीर्ण-शीर्ण पत्तों को खाकर रहता और शीत ऋतु में नित्यप्रति शीत के कष्ट झेलता है, वह परमगति को पाता है। जो वायु, जल अथवा फल-मूल खाकर रहता है, वह यक्षों के ऐश्वर्य को प्राप्त होकर अप्सराओं के साथ सुख भोगता है। जो ग्रीष्म ऋतु में पञ्चाग्नि का सेवन करता है, वह बारह वर्षों तक श्रेष्ठ व्रत का पालन करके मरने के बाद पृथिवी का राजा होता है। जो मुनि बारह वर्षों तक आहार पर संयम करता हुआ मरु-साधना द्वारा तप करता है, उसे भी भूमण्डल का राज्य मिलता है ॥२५०-२५६॥

स्थण्डिले शुद्धमाकाशं परिगृह्य समन्ततः।
प्रविश्य च मुदा युक्तो दीक्षां द्वादशवार्षिकीम्।
देहं चानशने त्यक्त्वा स स्वर्गे सुखमेधते ॥२५७
स्थण्डिलस्य फलान्याहुर्यानानि शयनानि च।
गृहाणि च महार्हाणि चन्द्रशुभ्राणि भामिनि ॥२५८
आत्मानमुपजीवन् यो नियतो नियताशनः।
देहं वानशने त्यक्त्वा स स्वर्गं समुपाश्नुते ॥२५९
आत्मानमुपजीवन् यो दीक्षां द्वादशवार्षिकीम्।
त्यक्त्वा महार्णवे देहं वारुणं लोकमश्नुते ॥२६०
आत्मानमुपजीवन् यो दीक्षां द्वादशवार्षिकीम् ॥२६१
अश्मना चरणौ भित्त्वा गुह्यकेषु स मोदते।
साधयित्वाऽऽत्मनाऽऽत्मानं निर्द्वन्द्वो निष्परिग्रहः ॥२६२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चीर्त्वा द्वादशवर्षाणि दीक्षामेतां मनोगताम् ।
स्वर्गलोकमवाप्नोति देवैश्च सह मोदते ।।२६३

जो वानप्रस्थी अपने सब ओर आकाश को रखता हुआ खुले स्थान में शयन करता है और बारह वर्ष के लिये व्रत की दीक्षा लेकर उपवास करता है वह मरने के पश्चात् स्वर्गलोक में जाकर आनन्दोपभोग करता है। हे भामिनि ! वेदी पर सोने वालों को सवारी, शय्या और चन्द्रमा के समान उज्वल गृह की फल रूप में प्राप्ति होती है। अपने ही सहारे जीवन-यापन करता हुआ नियम पूर्वक रहने और नियमित आहार करने वाला पुरुष अथवा अनशन व्रत-परायण मनुष्य शरीर को छोड़ कर स्वर्ग-लोक के सुखों को भोगता है। जो वानप्रस्थी अपने सहारे ही जीवन यापन करता हुआ द्वादश वर्षीय व्रत की दीक्षा लेकर महासागर में देह त्याग करता है, वह वरुणलोक में सुख-भोग करता है। जो अपने सहारे जीवन-यापन करता हुआ बारह वर्ष की दीक्षा लेकर अन्त में अपने पांवों को स्वयं ही पत्थर मार कर विदीर्ण करता हुआ शरीर त्याग करता है, वह गुह्यकलोक में जाकर सुख भोगता है। जो बारह वर्षों तक इस मनोगत दीक्षा के व्रत का पालन करता है, वह मृत्यु के बाद स्वर्गलोक में जाकर देवताओं के साथ सुख भोगता है ।।२५७-२६३।।

आत्मानमुपजीवन् यो दीक्षां द्वादशवार्षिकीम् ।
हुत्वाग्नौ देहमुत्सृज्य वह्निलोके महीयते ।।२६४
यस्तु देवि यथान्यायं दीक्षितो नियतो द्विजः ।
आत्मन्यात्मानमाधाय निर्ममो धर्मलालसः ।।२६५

चीर्त्वा द्वादशवर्षाणि दीक्षामेतां मनोगताम् ।
अरणीसहितं स्कन्धे बद्ध्वा गच्छत्यनावृतः ।।२६६
वाराध्वानगतो नित्यं वीरासनरतस्तथा ।
वीरस्थायी च सततं स वीरगतिमाप्नुयात् ।।२६७

स शक्रलोकगो नित्यं सर्वकामपुरस्कृतः ।
दिव्यपुष्पसमाकीर्णो दिव्यचन्दनभूषितः ।।२६८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुखं वसति धर्मात्मा दिवि देवगणैः सह ।
वीरलोकगतो नित्यं वीरयोगसहः सदा ॥२६९
सत्त्वस्थः सर्वमृत्सृज्यदीक्षितो नियतः शुचिः ।
वीराध्वानं प्रपद्येद् यस्तस्य लोकाः सनातनाः ॥२७०
कामगेन विमानेन स वै चरति छन्दतः ।
शक्रलोकगतः श्रीमान् मोदते च निरामयः ॥२७१

जो बारह वर्षों की दीक्षा का पालन कर, अपने ही सहारे जीवन-यापन करता हुआ, अपने देह को स्वयं ही अग्नि में होम देता है, वह अग्निलोक को प्राप्त होता है। नियम पालन करता हुआ जो द्विज वन-वास व्रत की दीक्षा लेकर अपने मन को परमात्मा के चिन्तन में लगाता है और ममता को छोड़कर धर्म की अभिलाषा से बारह वर्षों तक इस मनोगत दीक्षा का पालन करता है तथा अग्नि का परित्याग कर अना-वृत भाव से विचरण करता हुआ वीर मार्ग से चलता, वीरासन से बैठता और वीर के समान ही खड़ा होता है उसे वीरगति की प्राप्ति होती है। वह इन्द्रलोक को प्राप्त होकर सदा सभी कामनाओं से सम्पन्न होता है। वह दिव्य चन्दन से विभूषित होता है और उस पर दिव्य पुष्पों की वृष्टि होती है। वह धर्मात्मा देवताओं के साथ ही देवलोक में सुख से रहता है और वीरलोक को प्राप्त होकर वीरों के साथ ही निवास करता है। जो सर्वत्यागी होकर वनवास की दीक्षा ले, सत्त्वगुण में प्रतिष्ठित होता है तथा नियम का पालन करता हुआ वीर-मार्ग का अनुसरण करता है, वह सनातन लोकों को पाता है। वह इन्द्रलोक को प्राप्त होकर रोग-रहित तथा दिव्य गुणों से सुशोभित होता हुआ आनन्दोपभोग करता है तथा इच्छानुसार चलने वाले विमान के द्वारा स्वच्छन्द विचरण करता है ॥२६४-२७१॥

भगवन् भगनेत्रघ्न पूष्णो दन्तनिपातनः ।
दक्षक्रतुहर त्र्यक्ष संशयो मे महानयम् ॥२७२
चातुर्वर्ण्यं भगवता पूर्वं सृष्टं स्वयम्भुवा ।
केन कर्मविपाकेन वैश्यो गच्छति शूद्रताम् ॥२७३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वैश्यो वाक्षत्रियःकेन द्विजो वा क्षत्रियो भवेत् ।
प्रतिलोमः कथं देव शक्यो धर्मो निवर्तितुम् ।।२७४
केन वा कर्मणा विप्रः शूद्रयोनौ प्रजायते ।
क्षत्रियः शूद्रतामेति केन वा कर्मणाविभो ।।२७५
एतन्मे संशयं देव वद भूतपतेऽनघ ।
त्रयो वर्णाः प्रकृत्येह कथं ब्राह्मण्यमाप्नुयुः ।।२७६
ब्राह्मण्यं देवि दुष्प्रापं निसर्गाद् ब्राह्मणः शुभे ।
क्षत्रियो वैश्यशूद्रौ वा निसर्गादिति मे मतिः ।।२७७

पार्वजी ने कहा—हे त्रिलोचन भगवान् ! हे शङ्कर ! मेरे मन में एक और महान् संशय है । प्राचीन काल में ब्रह्माजी ने जिन चार वर्णों की उत्पत्ति की है, उनमें से वैश्य अपने किस कर्म से शूरत्व को प्राप्त होता है ? क्षत्रिय किस कर्म से वैश्य हो जाता है अथवा ब्राह्मण को किस कर्म से क्षत्रियत्व की प्राप्ति हो जाती है ? हे प्रभो ! प्रतिलोम धर्म को कैसे रोका जा सकता है ? किस कर्म को करके ब्राह्मण शूद्रत्व को प्राप्त होता है अथवा क्षत्रिय को भी किस कर्म से शूद्रत्व की प्राप्ति होती है । हे भूतपते ! मेरे इस संशय को दूर कीजिये । शूद्र, वैश्य और क्षत्रिय को ब्राह्मणत्व की प्राप्ति किस प्रकार हो सकती है, यह बात भी मुझे बताने की कृपा कीजिये । श्री महेश्वरजी ने कहा—हे शुभे ! ब्राह्मणत्व दुर्लभ है । परन्तु ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र यह चारों वर्ण स्वभाव से हैं, ऐसा मैं मानता हूं ।।२७२-२७७।।

कर्मणा दुष्कृतेनेह स्थानाद् भ्रश्यति वै द्विज ।
ज्येष्ठं वर्णमनुप्राप्य तस्माद् रक्षेद् वै द्विजः ।।२७८
स्थितो ब्राह्मणधर्मेण ब्राह्मण्यमुपजीवति ।
क्षत्रियो वाथ वैश्यो वा ब्रह्मभूयं स गच्छति ।।२७९
यस्तु विप्रत्वमुत्सृज्य क्षात्रं धर्मं निषेवते ।
ब्राह्मण्यात् स परिभ्रष्टः क्षत्रयोनौ प्रजायते ।।२८०
वैश्यकर्म च यो विप्रो लोभमोहव्यपाश्रयः ।
ब्राह्मण्यं दुर्लभं प्राप्य करोत्यल्पमतिः सदा ।।२८१

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

स द्विजो वैश्यतामेति वैश्यो वा शूद्रतामियात् ।
स्वधर्मात् प्रच्युतो विप्रस्ततः शूद्रत्वमाप्नुते ।।२८२
तत्रासौ निरयं प्राप्तो वर्णभ्रष्टो बहिष्कृतः ।
ब्रह्मलोकात् परिभ्रष्टः शूद्रः समुपजायते ।।२८३
क्षत्रियो वा महाभागे वैश्यो वा धर्मचारिणि ।
स्वानि कर्माण्यपाहाय शूद्रकर्म निषेवते ।।२८४
स्वस्थानात् स परिभ्रष्टो वर्णसंकरतां गतः ।
ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रत्वं याति तादृशः ।।२८५

परन्तु, पाप करने वाला द्विज अपने स्थान से गिरेगा ही । इसलिए द्विज का कर्त्तव्य है कि वह श्रेष्ठ वर्ण में जन्म लेकर तो अपनी मर्यादा की रक्षा करे। यदि क्षत्रिय या वैश्य ब्राह्मण-धर्म का पालन करे और ब्राह्मणत्व का आश्रय ले तो ब्रह्मभाव को प्राप्त हो सकता है । और जो ब्राह्मण ब्राह्मणत्व को छोड़ दे और क्षत्रिय-वृत्ति का आश्रय लेले, तो उसे अपने धर्म से गिरना ही होगा । ऐसी दशा में वह क्षत्रियत्व को प्राप्त हो जाता है । जो ब्राह्मण अपने दुर्लभ ब्राह्मणत्व को पाकर भी उसे लोभ और मोह के कारण छोड़ देता और वैश्य का कर्म करने लगता है, उसे वैश्यत्व की प्राप्ति होती है । इसी प्रकार, शूद्रत्व को अपनाने वाला वैश्य शूद्रत्व को प्राप्त होता है । शूद्रत्व को अपनाने वाला ब्राह्मण भी अपने धर्म से गिर कर शूद्रभाव को ही प्राप्त हो जाता है । अशुभ कर्म करने वाला ब्राह्मण अपने वर्ण से भ्रष्ट हो जाता तथा मरने पर ब्रह्मलोक न पाकर, नरक में जाता है और फिर नीच योनि को प्राप्त होता है । क्षत्रिय या वैश्य भी यदि अपने-अपने कर्म को छोड़ कर अशुभ कर्म करने लगें तो जाति से गिर कर नीच योनि को पाते हैं, अच्छे कर्म न करने वाला कोई भी क्यों न हो अपनी जाति से पतित होगा ही ।।२७८-२८५।।

यस्तु बुद्धः स्वधर्मेण ज्ञानविज्ञानवाञ्शुचिः ।
धर्मज्ञो धर्मनिरतः स धर्मफलमश्नुते ।।२८६

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इदं चैवापरं देवि ब्रह्मणा समुदाहृतम् ।
अध्यात्मं नौष्ठिकं सद्भिर्धर्मकामैर्निषेव्यते ।।२८७
उग्रान्नं गर्हितं देवि गणान्नं श्राद्धसूतकम् ।
दुष्टान्नं नैव भोक्तव्यं शूद्रान्नं नैव कर्हिचित् ।।२८८
शूद्रान्नं गर्हितं देवि सदा देवैर्महात्मभिः ।
पितामहमुखोत्सृष्टं प्रमाणमिति मे मतिः ।।२८९
शूद्रान्नेनावशेषेण जठरे यो म्रियेद् द्विजः ।
आहिताग्निस्तथा यज्वा स शूद्रगतिभाग् भवेत् ।।२९०
तेन शूद्रान्नशेषेण ब्रह्मस्थानादपाकृतः ।
ब्राह्मणः शूद्रतामेति नास्ति तत्र विचारणा ।।२९१

जो मनुष्य अपने धर्म का पालन करता हुआ ज्ञान-विज्ञान से सम्पन्न पवित्र तथा धर्मज्ञ होकर धर्म-परायण ही रहता है, वह धर्म के यथार्थ फल को पाता है। धर्म की कामना वालों को जीवन भर अध्यात्म तत्व का ही सेवन करना चाहिये—यह श्री ब्रह्मा जी का स्पष्ट उपदेश है। उग्र कर्म वाले मनुष्य का अन्न निन्दित समझना चाहिये। किसी समुदाय का, श्राद्ध का तथा बालक उत्पन्न होने के सूतक का अन्न खाना भी वर्जित कहा गया है। देवताओं और महात्माओं ने नीच पुरुष के अन्न की प्रशंसा नहीं की है। इस विषय में ब्रह्माजी ने जो कुछ कहा है, वही प्रमाण समझना चाहिये—यह मेरा विचार है। जो ब्राह्मण अपने उदर में खराब अन्न लेकर मर जाता है वह अग्निहोत्री अथवा याज्ञिक होते हुए भी अधम योनि को प्राप्त होता है। उदर में बुरा अन्न होने से ब्राह्मण को ब्रह्मलोक से वंचित रहना पड़ता है। इसमें कोई भी भिन्न मत नहीं है ।।२८६-२९१।।

यस्यान्नेनावशेषेण जठरे यो म्रियेद् द्विजः ।
तां तां योनिं व्रजेद् विप्रो यस्यान्नमुपजीवति ।।२९२
ब्राह्मणत्वं शुभं प्राप्य दुर्लभं योऽवमन्यते ।
अभोज्यान्नानि चाश्नाति स द्विजत्यात् पतेत वै ।।२९३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सुरापो ब्रह्महा क्षुद्रश्चोरो भग्नव्रतोऽशुचिः ।
स्वाध्यायवर्जितः पापो लुब्धो नैकृतिकः शठः ॥२९४
अव्रतो वृषलीभर्ता कुण्डाशी सोमविक्रयी ।
निहीनसेवी विप्रो हि पतति ब्रह्मयोनितः ॥२९५
गुरुतल्पो गुरुद्रोही गुरुकुत्सारतिश्च यः ।
ब्रह्मविच्चापि पतति ब्राह्मणो ब्रह्मयोनितः ॥२९६
एभिस्तु कर्मभिर्देवि शुभैराचरितस्तथा ।
शूद्रो ब्राह्मणतां श्तय यविः क्षत्रियतां व्रजेत् ॥२९७

जिस किसी का अन्न उदर में लिये हुए ब्राह्मण की मृत्यु होती है, उसे उसी की योनि प्राप्त होती है। जिसका अन्न खाता है, वैसी ही योनि में जन्म लेता है। जो श्रेष्ठ तथा दुर्लभ ब्राह्मणत्व को प्राप्त करके भी उसकी अवहेलना करता है, तथा अखाद्य अन्न का भोजन करता है, वह अवश्य ही ब्राह्मणत्व से पतित हो जाता है। सुरापान करने वाला ब्रह्महत्यारा, नीच, चोर, व्रत को तोड़ देने वाला, अपवित्र, स्वाध्याय-हीन पापी, लोभी, कपटी, शठ, अव्रती, अधम जाति की स्त्री का पति, कुण्डाशी सोमरस विक्रेता तथा नीच सेवी ब्राह्मण ब्राह्मणत्व से भ्रष्ट हो जाता है। गुरु की शय्या पर शयन करने वाला,गुरु-द्रोही, गुरु की निन्दा करने वाला ब्राह्मण वेदवेत्ता हो तो भी ब्रह्मयोनि से पतित होजाता है। हे देवि ! यदि कोई शूद्र शुभ कर्मों और अच्छे आचरणों को करे तो वह भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो सकता है। शुभ आचरण वाला वैश्य भी क्षत्रिय-योनि में उत्पन्न होता है ॥२९२-२९७॥

शूद्रकर्माणि सर्वाणि यथान्यायं यथाविधि ।
शुश्रूषां परिचर्यां च ज्येष्ठे वर्णे प्रयत्नतः ॥२९८
कुर्यादविमनाः शूद्रः सततं सत्पथे स्थितः ।
देवद्विजातिसत्कर्ता सर्वातिथ्यकृतव्रतः ॥२९९
ऋतुकालाभिगामी च नियतो नियताशनः ।
त्रोक्षश्चोक्षजनान्वेषी शेषान्नकृतभोजनः ।
वृथामांसं न भुञ्जीत शूद्रो वैश्यत्वमृच्छति ॥३००

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ऋतवागनहंवादी निर्द्वन्द्वः शमकोविदः ।।३०१
यजते नित्ययज्ञैश्च स्वाध्यायपरमः शुचिः ।
दान्तो ब्राह्मणसत्कर्ता सर्ववर्णबुभूषकः ।।३०२
गृहस्थव्रतमातिष्ठन् द्विकालकृतभोजनः ।
शेषाशी विजिताहारो निष्कामो निरहंवदः ।।३०३
अग्निहोत्रमुपासश्च जुह्वानश्च यथाविधि ।
सर्वातिथ्यमुपातिष्ठञ्शेषान्नकृतभोजनः ।।३०४
त्रेताग्निमन्त्रविहितो वैश्यो भवति वै द्विजः ।
स वैश्यः क्षत्रियकुले शुचौ महति जायते ।।३०५

शूद्र को अपने सभी कर्म न्याय पूर्वक करने चाहिये । अपने से ऊँचे वर्णों की परिचर्या में तत्पर रहे । सदा सन्मार्ग पर स्थित रहे । देवताओं और द्विजों का सत्कार करे । सभी के आतिथ्य में लगा रहे । पत्नी समागम ऋतुकाल में ही करे । नियमित भोजन करे । स्वयं शुद्ध रहे और शुद्ध पुरुषों की ही सेवा करे । अतिथि-सत्कार और कुटुम्बियों को भोजन कराने पर बचे हुए अन्न को खाय । मांस का सेवन न करे । इस नियम का पालन करने वाला व्यक्ति अपने से ऊँचे वर्ण में जन्म लेता है । वैश्य को सत्यवादी, अहंकार-रहित, द्वन्द्व-रहित, शान्ति-साधनों का ज्ञाता, स्वाध्याय परायण और पवित्र होकर नित्ययज्ञों द्वारा यजन करना चाहिये । जितेन्द्रिय होकर ब्राह्मणों का सत्कार तथा सभी वर्णों का हितसाधन करे । गृहस्थ धर्म का पालन करता हुआ दिन में दो बार भोजन करे । सभी कामनाओं का त्याग करे । अहंकार छोड़ कर विधिवत आहुति दे । सब का आतिथ्य सत्कार करने पर बचे हुए अन्न को खाय । त्रिविध अग्नियों की मन्त्रोचारण करता हुआ परिचर्या करे । ऐसा करने वाला वैश्य पवित्र होकर अगले जन्म में क्षत्रिय होता है ।।२९८-३०५।।

स वैश्यः क्षत्रियो जातो जन्मप्रभृति संस्कृतः ।
उपनीतो व्रतपरो द्विजो भवति सत्कृतः ।।३०६
ददाति यजते यज्ञैः समृद्धैराप्तदक्षिणैः ।
अधीत्य स्वर्गमन्विच्छंस्त्रेताग्निशरणः सदा ।।३०७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आर्तहस्तप्रदो नित्यं प्रजा धर्मेण पालयन् ।
सत्यः सत्यानि कुरुते नित्यं यः सुखदर्शनः ॥३०८
धर्मदण्डो न निर्दण्डो धर्मकार्यानुशासकः ।
यन्त्रितः कार्यकरणैः षड्भागकृतलक्षणः ॥३०९
ग्राम्यधर्मं न सेवेत स्वच्छन्देनार्थकोविदः ।
ऋतुकाले तु धर्मात्मा पत्नीमुपशयेत् सदा ॥३१०
सदोपवासी नियतः स्वाध्यायनिरतः शुचिः ।
बर्हिष्कान्तरिते नित्यं शयानोऽग्निगृहे सदा ॥३११
सर्वातिथ्यं त्रिवर्गस्य कुर्वाणः सुमनाः सदा ।
शूद्राणां चान्नकामानां नित्यं सिद्धमिति ब्रुवन् ॥३१२

क्षत्रिय जाति में उत्पन्न हुआ वह वश्य उपनयन के बाद ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता हुआ सम्मानित द्विज होता है। वह दानी तथा पर्याप्त दक्षिणा वाले यज्ञों से भगवान् का यजन करता है। वेदाध्ययन करता हुआ, स्वर्ग की कामना से त्रिविध अग्नियों की परिचर्या करता है। दुःखी और पीड़ितों को हाथ का सहारा देता हुआ प्रजा-पालन में सदा धर्म पूर्वक तत्पर रहता है। सत्य परायण होकर सत्य का ही व्यवहार करता है और देखने से ही सब को सुखदायी होता है। धर्म के अनुसार ही अपराधी को दण्ड देना चाहिये। दण्डनीति को न छोड़े। प्रजा को धर्म-कार्य के लिये सपझावे और स्वयं भी राज-काज के लिये नियम और विधान का पालन करे तथा प्रजा की आय का छठा भाग कर के रूप में लेता रहे। कार्य में कुशल क्षत्रिय स्वच्छन्दता पूर्वक कामादि का सेवन न करे। ऋतुकाल प्राप्त होने पर ही पत्नी-संसर्ग करे। उपवास करता रहे। अन्य दिनों में भी दो बार भोजन करे, बीच में कुछ न खाय। नियम पूर्वक रहे, वेदादि का स्वाध्याय करे तथा प्रतिदिन पवित्र होकर कुश की चटाई पर अग्निशाला में सोवे। क्षत्रियों का कर्त्तव्य है कि वे सदा सबका अतिथि सत्कार करते हुए धर्म, अर्थ और काम का सेवन करें। शूद्र भी यदि भोजन की इच्छा से आवे तो उसे भी यही उत्तर दो कि भोजन तैयार है चलो भोजन कर लो ॥३०६-३१२॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अर्थाद् वा यदि वा कामान्न किंचिदुपलक्षयेत् ।
पितृदेवातिथिकृते साधनं कुरुते च यः ।।३१३
स्ववेश्मनि यथान्यायमुपास्ते भैक्ष्यमेव च ।
त्रिकालमग्निहोत्रं च जुह्वानो वै यथाविधि ।।३१४
गोब्राह्मणहितार्थाय रणे चाभिमुखो हतः ।
त्रेताग्निमन्त्रपूतात्मा समाविश्य द्विजा भवेत् ।।३१५
ज्ञानविज्ञानसम्पन्नः संस्कृतो वेदपारगः ।
विप्रो भवति धर्मात्मा क्षत्रियः स्वेन कर्मणा ।।३१६
एतैः कर्मफलैर्देवि न्यूनजातिकुलोद्भवः ।
शूद्रोऽप्यागमसम्पन्नो द्विजो भवति संस्कृतः ।।३१७
ब्राह्मणो वाप्यसद्वृत्तः सर्वसंकरभोजनः ।
ब्राह्मण्यं स समुत्सृज्य शूद्रो भवति तादृशः ।।३१८
कर्मभिः शुचिभिर्देवि शुद्धात्मा विजितेन्द्रियः ।
शूद्रोऽपिद्विजवत् सेव्य इति ब्रह्माब्रवीत्स्वयम् ।।३१९

उसे किसी स्वार्थ अथवा कामना के वशीभूत होकर किसी वस्तु का प्रदर्शन नहीं करना चाहिये । वही क्षत्रिय श्रेष्ठ है जो पितर, देवता और अतिथि-सेवा में सदा तत्पर रहता है । क्षत्रिय अपने ही गृह में न्याय पूर्वक अन्न भक्षण करे तथा त्रिकाल अग्निहोत्र भी विधिवत् करे । धर्म में स्थित हुआ क्षत्रिय त्रिविध अग्नियों की मन्त्रोच्चार पूर्वक परिचर्या से पवित्र चित्त होकर गौ ब्राह्मणों की रक्षा के लिये युद्ध में शत्रु का मुकाबला करता हुआ मारा जाय तो वह मरने पर ब्राह्मण योनि में जन्म लेता है इस प्रकार वह धर्मात्मा क्षत्रिय अपने श्रेष्ठ कर्म से दूसरे जन्म में ज्ञान-विज्ञान युक्त, संस्कार युक्त और वेदों का विद्वान् होता है । हे देवि ! इस प्रकार कर्म-फलों के प्रभाव से नीच कुलोत्पन्न भी जन्मान्तर में शास्त्र ज्ञान सम्पन्न द्विज होता है । ब्राह्मण भी दुराचारी होकर संकर जातियों के यहाँ भोजन करने लगे तो वह ब्राह्मणत्व से गिर कर शूद्र ही होजाता है । और शूद्र भी यदि जितेन्द्रिय होकर पवित्र कर्मों को करता हुआ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपना अन्तःकरण शुद्ध बनाले तो द्विज के ही समान होता है—यह स्वयं ब्रह्माजी का कथन है ।।३१३-३१९।।

स्वभावः कर्म च शुभं यत्र शूद्रेऽपि तिष्ठति ।
विशिष्टः स द्विजातेर्वै विज्ञेय इति मे मतिः ।।३२०
न योनिर्नापि संस्कारो न श्रुतं न च संततिः ।
कारणानि द्विजत्वस्य वृत्तमेव तु कारणम् ।।३२१

सर्वोऽयं ब्राह्मणो लोके वृत्तेन तु विधीयते ।
वृत्ते स्थितस्तु शूद्रोऽपि ब्राह्मणत्वं नियच्छति ।।३२२
ब्राह्मः स्वभावः सुश्रोणि समः सर्वत्र मे मतिः ।
निर्गुणं निर्मलं ब्रह्म यत्र तिष्ठति स द्विजः ।।३२३
एते योनिफला देवि स्थानभागनिदर्शकाः ।
स्वयं च वरदेनोक्ता ब्रह्मणा सृजता प्रजाः ।।३२४

ब्राह्मणोऽपि महत् क्षेत्रं लोके चरति पादवत् ।
यत् तत्र बीजं वपति सा कृषिः प्रेत्य भाविनि ।।३२५

मेरे मत में तो यदि शूद्र के स्वभाव और कर्म, दोनों ही श्रेष्ठ हैं तो वह द्विजातियों से अधिक समझना चाहिये । ब्राह्मणत्व केवल योनि, संस्कार, शास्त्रज्ञान और संतति से ही प्राप्त नहीं होता, उसका प्रधान कारण तो सदाचार ही है । संसार में यह सम्पूर्ण ब्राह्मण समुदाय सदाचार से ही अपने पद पर टिका हुआ है । जो शूद्र सदाचारी है, वह भी ब्राह्मणत्व को प्राप्त हो सकता है । ब्रह्म का स्वभाव तो सर्वत्र एक-सा है । जिसके अन्तर में उस निर्गुण और निर्मल ब्रह्म का ज्ञान स्थित है, वही यथार्थ रूप में ब्राह्मण है—ऐसा मेरा मत है । प्रजोत्पत्ति के समय वरदाता ब्रह्माजी का स्वयं ही यह कथन है कि यह चारों वर्णों के स्थान और विभाग कहे गये हैं, वे उस-उस जाति में उत्पन्न होने के फल मात्र ही हैं । यह ब्राह्मण संसार में एक महान् क्षेत्र है । अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा इसमें यह विशेषता है कि यह पाँवों से चलता-फिरता है । इसमें जो बीज डाला जाता है, वह परलोक की जीविका के साधन रूपी खेती

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के रूप में बदल जाता है। अपने कल्याण की कामना करने वाले ब्राह्मण का कर्त्तव्य है कि वह श्रेष्ठ जनों के मार्ग पर चले और अतिथि तथा पोष्यवर्ग को भोजन कराने से बचे अन्न का भोजन करे तथा वेदोक्त मार्ग के आश्रय में सदा श्रेष्ठ बर्ताव करे ॥३२०-३२५॥

विघसाशिनासदाभाव्यं सत्पथालम्बिना तथा ।
ब्राह्मं हि मार्गमाक्रम्य वर्तितव्यं बुभूषता ॥३२६
संहिताध्यायिना भाव्यं गृहे वै गृहमेधिना ।
नित्यं स्वाध्यायिना भाव्यं न चाध्ययनजीविना ॥३२७
एवंभूतो हि यो विप्रः सत्पथं सत्पथे स्थितः ।
आहिताग्निरधीयानो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥३२८
ब्राह्मण्यं देवि सम्प्राप्य रक्षितव्यं यतात्मना ।
योनिप्रतिग्रहादानैः कर्मभिश्च शुचिस्मिते ॥३२९
एतत् ते गुह्यमाख्यातंयथा शूद्रो भवेद् द्विजः ।
ब्राह्मणोवा च्युतोधर्माद्यथा शूद्रत्वमाप्नुते ॥३३०
भगवन् सर्वभूतेश देवासुरनमस्कृत ।
धर्माधर्मौ नृणां देव ब्रूहि मेऽसंशयं विभो ॥३३१
कर्मणा मनसा वाचा त्रिविधं हि नरः सदा ।
बध्यते बन्धनैः पाशैर्मुच्यतेऽप्यथवा पुनः ॥३३२
केन शीलेन वृत्तेन कर्मणा कीदृशेन वा ।
समाचारैर्गुणैः कैर्वा स्वर्गं यान्तीह मानवाः ॥३३३

गृहस्थ ब्राह्मण का कर्त्तव्य है कि वह अपने गृह में रह कर ही संहिता-पाठ और शास्त्रों का स्वाध्याय करे तथा अध्ययन को अपनी उदर पूर्ति का साधन न बनावे। इस प्रकार सन्मार्ग पर स्थित हुआ ब्राह्मण सत्पथ पर चलता है और अग्निहोत्र तथा स्वाध्याय पूर्वक जीवन व्यतीत करता है, उसे ब्रह्म भाव की प्राप्ति होती है। ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर मन और इन्द्रियों को अपने वश में करे तथा योनि, प्रतिग्रह और दान की शुद्धि और सत्कर्मों से उस ब्राह्मणत्व की सदा रक्षा करे। जिस प्रकार शूद्र भी धर्माचरण से ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है और ब्राह्मण

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अपने धर्म को छोड़ कर जाति भ्रष्ट होकर शूद्र बन जाता है, यह एक गूढ़ रहस्य था जो मैंने तुम्हें यथार्थ रूप से बता दिया है। पार्वतीजी ने कहा—हे सर्वभूतेश्वर ! अब धर्म और अधर्म दोनों का स्वरूप मुझसे कहिये, जिससे कि इस विषय में भी मुझे संशय न रहे। मनुष्य मन, वाणी और कर्म के बंधनों में बंधता और उनसे मुक्त भी होता रहता है परन्तु, किस शील से, किस व्यवहार से, किस कर्म से और किन श्रेष्ठ आचरणों से मनुष्य बन्धनों में पड़ते और मुक्त होकर स्वर्गलोक में चले जाते हैं ।।३२६-३३३।।

देवि धर्मार्थतत्त्वज्ञे धर्मनित्ये दमे रते ।
सर्वप्राणिहितः प्रश्नः श्रूयतां बुद्धिवर्धनः ।।३३४
सत्यधर्मरताः सन्तः सर्वलिङ्गविवर्जिताः ।
धर्मलब्धार्थभोक्तारस्ते नराः स्वर्गगामिनः ।।३३५

नाधर्मेण न धर्मेण बध्यन्ते छिन्नसंशयाः ।
प्रलयोत्पत्तितत्त्वज्ञाः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः ।।३३६
वीतरागा विमुच्यन्ते पुरुषाः कर्मबन्धनैः ।
कर्मणा मनसा वाचा ये न हिंसन्ति किंचन ।।३३७
ये न सज्जन्तिकस्मिंश्चित्तेन बद्ध्यन्तिकर्मभिः ।
प्राणातिपाताद् विरताःशीलवन्तो दयान्विताः ।
तुल्यद्वेष्यप्रिया दान्ता मुच्यन्ते कर्मबन्धनैः ।।३३८

सर्वभूतदयावन्तो विश्वास्याः सर्वजन्तुषु ।
त्यक्तहिंसासमाचारास्ते नराः स्वर्गगामिनः ।।३३९
परस्वे निर्ममा नित्यं परदारविवर्जकाः ।
धर्म लब्धान्नभोक्तारस्ते नराः स्वर्गगामिनः ।।३४०

श्री महेश्वरजी ने कहा—हे देवि ! तुम धर्म-अर्थ के तत्व को जानने वाली, धर्म-परायणा तथा इन्द्रियों को संयम में रखने वाली हो। तुम्हारा यह प्रश्न सभी प्राणियों के लिये हितकारी तथा बुद्धिवर्द्धक है। जो धर्म के द्वारा उपार्जित धन का ही उपभोग करते हैं, सभी आश्रम सम्बन्धी

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

चिह्नों से पृथक् रह कर, सत्य-धर्म-परायण रहते हैं, वे मनुष्य स्वर्ग-गामी होते हैं। जो सब प्रकार से संशयों से रहित, सृष्टि और प्रलय के तत्व के ज्ञाता, सर्वज्ञ तथा सर्वद्रष्टा हैं, वही महात्मा धर्म या अधर्म के बन्धन में नहीं बँध पाते। मन, वाणी और कर्म के द्वारा जो किसी जीव की हिंसा नहीं करते तथा जो आसक्तियों का बिल्कुल त्याग कर चुके हैं, वे भी कर्म-बन्धनों से मुक्त हो जाते हैं। जिन्हें किसी में भी आसक्ति नहीं है, किसी की हत्या से भी जो दूर रहते हैं, जो शीलवंत और दयावंत हैं, वे कभी कर्मों के बंधन में नहीं पड़ते तथा जो शत्रु-मित्र को समान समझते हैं वे संयमी पुरुष भी कर्मों के बंधनों से छूट जाते हैं। जो समस्त जीवों पर दया करते हैं, सभी के विश्वासपात्र और हिंसामय आचरणों से दूर रहते हैं, वे श्रेष्ठ आचरण वाले पुरुष स्वर्गलोक को प्राप्त होते हैं। जो पराये धन में लालच नहीं करते, परनारी से दूर रहते हैं और धार्मिक उपायों से प्राप्त अन्न का ही भोजन करते हैं, वे पुरुष भी स्वर्ग में जाते हैं ॥३३४-३४०॥

मातृवत् स्वसृवच्चैव नित्यं दुहितृवच्च ये।
परदारेषु वर्तन्ते ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३४१
स्तैन्यान्निवृत्ताः सततं संतुष्टा स्वधनेन च।
स्वभाग्यान्युपजीवन्ति ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३४२
स्वदारनिरता ये च ऋतुकालाभिगामिनः।
अग्राम्यसुखभोगाश्च ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३४३
परदारेषु ये नित्यं चरित्रावृतलोचनाः।
जितेन्द्रियाः शीलपरास्ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३४४
एष देवकृतो मार्गः सेवितव्यः सदा नरैः।
अकषायकृतश्चैव मार्गः सेव्यः सदा बुधैः ॥३४५
दानधर्मतपोयुक्तः शौलशौचदयात्मकः ॥३४६
वृत्त्यर्थं धर्महेतोर्वा सेवितव्यः सदा नरैः।
स्वर्गवासमभीप्सद्भिर्न सेव्यस्त्वत उत्तरः ॥३४७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

जो मनुष्य पर-नारियों को माता बहिन और पुत्री के समान मान कर उनके प्रति वैसा ही बर्ताव करते हैं, उन पुरुषों को भी स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है। जो मनुष्य अपने पास जितना धन है, उसी में सन्तुष्ट रहते हुए चोरी आदि से दूर रहते और अपने भाग्य पर ही भरोसा रख कर जीवन-निर्वाह करते हैं, वे भी स्वर्ग में जाते हैं। जो अपनी स्त्री में ही अनुराग रख कर ऋतुकाल में संसर्ग करते हैं तथा अन्य कामादि सुखों में आसक्त नहीं रहते वे पुरुष भी स्वर्गलोक को प्राप्त होते हैं। जो सदाचारी पुरुष पर-स्त्रियों की ओर से अपने नेत्र बन्द किये रहते हैं, उन शीलवान् जितेन्द्रियों को भी स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। यह मार्ग देव-निर्मित है। राग-द्वेष को मिटाने के लिये यह मार्ग बना है। इस लिये, साधारण मनुष्य तथा विद्वज्जनों को भी इस मार्ग को अपनाना चाहिये। यह मार्ग दान,धर्म, तप, शील, शौच और दया का है, जीविका तथा धर्म आदि की सिद्धि के लिये इसी मार्ग का सेवन करना उचित है। स्वर्गलोक में निवास करने की कामना वाले मनुष्यों के लिये इस मार्ग से बढ़ कर कोई और उत्तम अन्य मार्ग नहीं है ॥३४१-३४७॥

वाचा तु बद्ध्यते येन मुच्यतेऽप्यथवा पुनः ।
तानि कर्माणि मे देव वद भूतपतेऽनघ ॥३४८
आत्महेतोः परार्थे वा नर्महास्याश्रयात् तथा ।
ये मृषा न वदन्तीह ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३४९
वृत्त्यर्थं धर्महेतोर्वा कामकारात् तथैव च ।
अनृतं ये न भाषन्ते ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३५०
श्लक्ष्णां वाणीं निराबाधां मधुरां पापवर्जिताम् ।
स्वागतेनाभिभाषन्ते ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३५१
परुषं ये न भाषन्ते कटुकं निष्ठुरं तथा ।
अपैशुन्यरताः सन्तस्ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३५२
पिशुनां न प्रभाषन्ते मित्रभेदकरीं गिरम् ।
ऋतं मंत्रं तु भाषन्ते ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३५३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

ये वर्जयन्ति परुषं परद्रोहं च मानवाः ।
सर्वभूतसमा दान्तास्ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३५४

पार्वतीजी ने कहा—हे भूतनाथ ! हे अनघ ! किस प्रकार की वाणी से मनुष्य को बन्धन प्राप्त होता है और किस प्रकार की वाणी के द्वारा बन्धन-मुक्त होता है ? वाणी द्वारा होने वाले उन कर्मों को मुझे बताने की कृपा कीजिये । श्री महेश्वरजी ने कहा—जो हास-परिहास के लिये अपने अथवा पराये पक्ष में मिथ्या भाषण नहीं करते, वे मनुष्य स्वर्गलोक को जाते हैं । जो आजीविका के लिये, धर्म के लिये अथवा स्वेच्छाचारिता वश भी कभी मिथ्या वचन नहीं कहते, वे मनुष्य स्वर्गलोक में पहुँचते हैं । जो स्निग्ध, मधुर, बाधारहित, पाप-रहित और स्वागतसत्कारमयी वाणी का प्रयोग करते हैं, वे स्वर्गगामी होते हैं । जो किसी की चुगली नहीं करते तथा किसी से रूखी, कटु और निष्ठुरता पूर्ण बात मुख से नहीं कहते, वे मनुष्य स्वर्गलोक में ही जाते हैं । जो दो मित्रों में फूट डालने वाली वाणी नहीं बोलते, सत्य और मित्रता की बात करते हैं, वे स्वर्ग में जाते हैं । जो किसी से कटु वचन कहना और द्रोह करना छोड़ देते हैं, वे सर्वभूतों को समान भाव से देखने वाले जितेन्द्रिय पुरुष स्वर्ग-लोक को प्राप्त होते हैं ॥३४८-३५४॥

शठप्रलापाद् विरता विरुद्धपरिवर्जकाः ।
सौम्यप्रलापिनो नित्यं ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३५५
न कोपाद् व्याहरन्ते ये वाचं हृदयदारणीम् ।
सान्त्वं वदन्ति क्रुद्धाऽपि ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३५६
एष वाणीकृतो देवि धर्मः सेव्यः सदा नरैः ।
शुभः सत्यगुणो नित्यं वर्जनीयौ मृषा बुधैः ॥३५७
मनसा बद्ध्यते येन कर्मणा पुरुषः सदा ।
तन्मे ब्रूहि महाभाग देवदेव पिनाकधृत् ॥३५८
मानसेनेह धर्मेण संयुक्ताः पुरुषाः सदा ।
स्वर्गं गच्छन्ति कल्याणि तन्मे कीर्तयतः शृणु ॥३५९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

दुष्प्रणीतेन मनसा दुष्प्रणीततरा कृतिः ।
मनो बद्ध्यति येनेह शृणु वाक्यं शुभानने ॥३६०
अरण्ये विजने न्यस्तं परस्वं दृश्यते यदा ।
मनसापि न हिंसन्ति ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३६१

जो कभी शठता पूर्ण बात नहीं करते, जो विरोध युक्त वाणी को छोड़ देते हैं और सदा सौम्य वचन कहते हैं, वे मनुष्य स्वर्गलोक में पहुंचते हैं। जो क्रोध आने पर भी हृदय में चुभने वाली बात मुख से नहीं कहते तथा सान्त्वना पूर्ण वचन ही कहते हैं,वे मनुष्य भी स्वर्गलोक को प्राप्त होते हैं। हे देवि ! यह वाणीजनित धर्म कहा गया है। मनुष्यों को सदा ही इस धर्म का सेवन करना चाहिये। विद्वान् पुरुषों को सदा शुभ और सत्य वचन बोलने चाहिये। मिथ्या भाषण का परित्याग करना ही श्रेयस्कर है। पार्वतीजी ने कहा—हे देवाधिदेव ! जो मानसिक कर्म मनुष्य को बंधन में डालने वाले हैं, वह मुझ से कहिये। श्रीमहेश्वर जी ने कहा—हे कल्याणि ! जो मनुष्य मन से धर्म का चिन्तन करते रहते हैं, उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इस विषय में, मैं जो कहता हूँ उसे सुनो। हे शुभानने ! मन में बुरे विचार उत्पन्न होने पर कार्य भी दूषित और दुर्नीतिपूर्ण हो जाते हैं, जिससे मन बंधन में पड़ जाता है, इसका वर्णन सुनो। जो किसी का धन निर्जन वन में पड़ा होने पर भी, उसे लालच से नहीं देखते और किसी की हिंसा नहीं करते, उन मनुष्यों को स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है ॥३५५-३६१॥

ग्रामे गृहे वा ये द्रव्यं पारक्यं विजने स्थितम् ।
नाभिनन्दन्ति वै नित्यं ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३६२
तथैव परदारान् ये कामवृत्तान् रहोगतान् ।
मनसापि न हिंसन्ति ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३६३
शत्रुं मित्रं च ये नित्यं तुल्येन मनसा नराः ।
भजन्ति मैत्राः संगम्य ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३६४
श्रुतवन्तो दयावन्तः शुचयः सत्यसंगराः ।
स्वैरर्थैः हरिसंतुष्टास्ते नराः स्वर्गगामिनः ॥३६५

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अवैरा ये त्वनायासा मैत्रीचित्तरताः सदा ।
सर्वभूतदयावन्तस्ते नराः स्वर्गगामिनः ।।३६६
श्रद्धावन्तो दयावन्तश्चोक्षाश्चोक्षजनप्रियाः ।
धर्माधर्मविदो नित्यं ते नराः स्वर्गगामिनः।।३६७
शुभानामशुभानां च कर्मणां फलसंचये ।
विपाकज्ञाश्च ये देवि ते नराः स्वर्गगामिनः ।।३६८

किसी ग्राम या गृह के सूने स्थान में पड़े हुए पराय धन की भी जो मनुष्य इच्छा नहीं करते वे स्वर्ग में जाते हैं। इसी प्रकार, एकान्त में प्राप्त कामासक्त परनारी पर मन से भी अन्याय करने की बात नहीं सोचते, वे मनुष्य स्वर्गलोक को प्राप्त होते हैं। जो सभी से मैत्री भाव रख कर मिलते और शत्रु-मित्र दोनों को समान मानते हैं,वे मनुष्य स्वर्ग में जाते हैं। जो शास्त्रों के जानने वाले, दयावान्, पवित्र, सत्यप्रतिज्ञ तथा अपने पास के धन में ही संतुष्ट रहने वाले हैं, उनको भी स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। जो किसी के प्रति वैर-भाव नहीं रखते, जो आयास रहित हैं, मैत्री-भाव युक्त हृदय वाले और सब जीवों के प्रति दया-भाव रखने वाले हैं, वे स्वर्गलोक को जाते हैं। जो मनुष्य श्रद्धावान, दयावान पवित्र, शुद्ध जनों से प्रेम करने वाले तथा धर्माधर्म को जानने वाले हैं, वे ज्ञानी पुरुष स्वर्गलोक को गमन करते हैं। जो शुभ और अशुभ कर्मों का फल एकत्र होने वाले परिणाम के जानने वाले हैं, वे पुरुष स्वर्ग में जाते हैं ।।३६२-३६८।।

न्यायोपेता गुणोपेता देवद्विजपराः सदा ।
समुत्थानमनुप्राप्तास्ते नराः स्वर्गगामिनः ।।३६९
शुभैः कर्मफलैर्देवि मयैते परिकीर्तिताः ।
स्वर्गमार्गपरा भूयः किं त्वं श्रोतुमिहेच्छसि ।।३७०
महान् मे संशयः कश्चिन्मर्त्यान् प्रति महेश्वर ।
तस्मात् त्वं नपुणोनाद्य मम व्याख्यातुमर्हसि ।।३७१
केनायुर्लभते दीर्घं कर्मणा पुरुषः प्रभो ।
तपसा वापि देवेश केनायुर्लभते महत् ।।३७२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्षीणायुः केन भवति कर्मणा भुवि मानवः।
विपाकं कर्मणां देव वक्तुमर्हस्यनिन्दितः ।।३७३
अपरे च महाभाग्या मन्दभाग्यास्तथापरे।
अकुलीनास्तथा चान्ये कुलीनाश्च तथापरे ।।३७४
दुर्दशाः केचिदाभान्ति नराः काष्टमया इव ।
प्रियदर्शास्तथा चान्ये दर्शनादेव मानवाः ।।३७५

जो न्यायवान्, गुणवान्, देवताओं और ब्राह्मणों के भक्त तथा उत्थान प्राप्त पुरुष हैं, उन्हें स्वर्ग मिलता है। हे देवि ! जो शुभ कर्मों के फल से स्वर्गलोक के मार्ग में स्थित हैं, उनका वर्णन मैं कर चुका, अब तुम्हें और क्या सुनने की इच्छा है ? पार्वती जी ने कहा—हे महेश्वर ! मुझे मनुष्यों के प्रति एक शंका है, आप उस शंका का समाधान कीजिये। हे प्रभो ! किस कर्म के द्वारा मनुष्य दीर्घायु प्राप्त करता है ? अथवा किस तप के प्रभाव से उसे दीर्घायु मिलती है ? और इस पृथिवी पर मनुष्य की आयु किस कर्म के करने से क्षीण हो जाती है ? आप कर्म-विपाक का वर्णन कीजिये। इस लोक में कुछ मनुष्य भाग्यवान् हैं और कुछ मनुष्य भाग्य-हीन हैं। कुछ व्यक्ति निन्दित कुछ में उत्पन्न होते हैं तो कुल लोग उच्चकुल में जन्म लेते हैं। कुछ मनुष्य दुर्दशा ग्रस्त होकर निश्चल काष्ठ के समान हो जाते हैं, उनकी ओर देखा भी नहीं जाता और कुछ लोग दर्शन मात्र से ही प्रसन्न कर देते हैं। उनकी ओर देखना भी अच्छा मालूम होता है ।।३६६-३७५।।

दुष्प्रज्ञाः केचिदाभान्तिकेचिदाभान्ति पण्डिताः।
महाप्राज्ञास्तथैवान्ये ज्ञानविज्ञानभाविनः ।।३७६
अल्पाबाधास्तथा केचिन्महाबाधास्तथापरे।
दृश्यन्ते पुरुषा देव तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ।।३७७
हन्त तेऽहं प्रवक्ष्यामि देवि कर्मफलोदयम्।
मर्त्यलोके नरः सर्वो येन स्वफलमश्नुते ।।३७८
प्राणातिपाते यो रौद्रो दण्डहस्तोद्यतः सदा ।
नित्यमुद्यतशस्त्रश्च हन्ति भूतगणान् नरः ।।३७९

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

निर्दयः सर्वभूतानां नित्यमुद्वेगकारकः ।
अपि कीटपिपीलानामशरण्यः सुनिर्घृणः ।
एवंभूतो नरो देवि निरयं प्रतिपद्यते ॥३८०
विपरीतस्तु धर्मात्मा रूपवानभिजायते ॥३८१
पापेन कर्मणा देवि वध्यो हिंसारतिर्नरः ।
अप्रियः सर्वभूतानां हीनायुरुपजायते ॥३८२

कुछ लोग बुद्धिहीन और कुछ विद्वान् दिखाई देते हैं। कुछ ज्ञान-विज्ञान युक्त महाप्राज्ञ प्रतीत होते हैं। हे देव ! कुछ व्यक्ति साधारण और छोटी व्याधाओं में पड़े होते हैं और कुछ लोग बड़ी बाधाओं के शिकार बन जाते हैं। इस प्रकार विभिन्न अवस्थाओं और विषम स्थितियों में दिखाई पड़ने वाले मनुष्यों की उन अवस्थाओं का क्या कारण है, यह मेरे प्रति वर्णन कीजिये। श्री महेश्वरजी ने कहा—हे देवि ! कर्मफल का उदय कैसे होता है तथा पृथिवीलोक के सब मनुष्य अपने-अपने कर्मों का फल किस प्रकार भोगते हैं, यह बात तुम्हें प्रसन्नता पूर्वक कहता हूं। हे देवि ! जो मनुष्य किसी के प्राण लेने की इच्छा से डण्डा लिये हुए और भयङ्कर वेश धारण किये रहता है तथा जो नित्य प्रति हथियार हाथ में लिये हुए जीव-हत्या में तत्पर रहता है, जिसके मन में दया का भाव किंचित् भी नहीं होता, जो सब प्राणियों को सदा उद्वेग में डाले रखता है तथा जो इतना क्रूरकर्मा होता है कि चीटियों और कीड़े-मकोड़ों को भी आश्रय नहीं देता, वह मनुष्य घोर नरक को प्राप्त होता है। इससे विपरीत स्वभाव वाला मनुष्य धर्मात्मा और श्रेष्ठ रूप वाला होता है। जो मनुष्य हिंसा से प्रेम करता है, वह अपने पाप कर्म के कारण दूसरों के द्वारा मारने योग्य होता है अर्थात् उसे अपनी हत्या की आशङ्का रहती है और वह अल्प आयु वाला तथा सब प्राणियों का अप्रिय होता है ॥३७६-३८२॥

निरयं याति हिंसात्मा याति स्वर्गमहिंसकः ।
यातनां निरये रौद्रां स कृच्छ्रां लभते नरः ॥३८३

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यः कश्चिन्निरयात् तस्मात् समुत्तरति कर्हिचित् ।
मानुष्यं लभते चापि हीनायुस्तत्र जायते ॥३८४

पापेन कर्मणा देवि बद्धो हिंसारतिर्नर ।
अप्रियः सर्वभूतानां हीनायुरुपजायते ॥३८५

यस्तु शुक्लाभिजातीयः प्राणिघातविवर्जकः ।
निक्षिप्तशस्त्रो निर्दण्डो न हिंसति कदाचन ।
न घातयति नो हन्ति घ्नन्तं नैवानुमोदते ॥३८६

सर्वभूतेषु सस्नेहो यथाऽऽत्मनि तथापरे ॥३८७
ईदृशः पुरुषोत्कर्षो देवि देवत्वमश्नुते ।
उपपन्नान् सुखान् भोगानुपाश्नाति मुदा युतः ॥३८८

अथ चेन्मानुषे लोके कदाचिदुपपद्यते ।
तत्र दीर्घायुरुत्पन्नः स नरः सुखमेधते ॥३८९
एष दीर्घायुषां मार्गः सुवृत्तानां सुकर्मिणाम् ।
प्राणिहिंसाविमोक्षेण ब्रह्मणा समुदीरितः ॥३९०

जिसका चित्त हिंसा में लगा होता है, उसे घोर नरक की प्राप्ति होती है और जो अहिंसक होता है, वह स्वर्गगामी होता है। जिसे नरक मिलता है उसे वहाँ अत्यन्त कष्टप्रद तथा भयंकर यातनाऐं भोगनी होती हैं। जब वह नरक से मुक्त होता है, तब पुनः मनुष्य योनि में उत्पन्न होता है, परन्तु उसकी अल्प आयु होती है। हे देवि ! पाप कर्म के बन्धनों में बँधा होने से वह हिंसा-कर्म में लगा हुआ मनुष्य, सब प्राणियों का अप्रिय होने के कारण ही अल्प आयु वाला हो जाता है। इसके विपरीत जो मनुष्य शुद्ध कुल में उत्पन्न होता है जीव हिंसा से दूर रहता है, जो शस्त्र और दण्ड का धारण नहीं करता, जिसके द्वारा कभी किसी की हिंसा नहीं हो पाती, जो न किसी को मारता है, न मारने की आज्ञा देता है और न मारने वाले के उस हिंसा कर्म का अनुमोदन ही करता है, जिसके मन में सभी जीवों के प्रति स्नेह रहता है और जो सभी को अपने समान मानता हुआ, उन पर दया-दृष्टि रखता है, ऐसा उत्तम मनुष्य

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देवत्व को प्राप्त होता हुआ, प्रसन्नता पूर्वक देवलोक में जाकर वहाँ के सुखदायक भोगों का उपभोग करता है। अथवा यदि कदाचित् उसे (पुण्य के क्षीण होने पर) इस लोक में जन्म धारण करना पड़ता है तो वह दीर्घायु और सब प्रकार से सुखी होता है। हे देवि! सत्कर्मों के करने वाले सदाचारी तथा दीर्घजीवी मनुष्यों का यह लक्षण है। इस मार्ग का उपदेश स्वयं भगवान् ब्रह्माजी ने किया है। सब जीवों की हिंसा का परित्याग करने पर ही इसकी प्राप्ति होती है ॥३८३-३९०॥

१२—मङ्कि गीता

ईहमानः समारम्भान् यदि नासादयेद् धनम्।
धनतृष्णाभिभूतश्च किं कुर्वन् सुखमाप्नुयात् ॥१
सर्वसाम्यमनायासं सत्यवाक्यं च भारत।
निर्वेदश्चाविधित्सा च यस्य स्यात् स सुखी नरः ॥२
एतान्येव पदान्याहुः पञ्च वृद्धाः प्रशान्तये।
एष स्वर्गश्च धर्मश्च सुखं चानुत्तमं मतम् ॥३
अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम्।
निर्वेदान्मङ्किना गीतं तन्निबोध युधिष्ठिर ॥४
ईहमानो धनं मङ्किर्भग्नेहश्च पुनः पुनः।
केनचिद् धनशेषेण क्रीतवान् दम्यगोयुगम् ॥५
सुसम्बद्धौ तु तौ दम्यौ दमनायाभिनिःसृतौ।
आसीनमुष्ट्रं मध्येन सहसैवाभ्यधावताम् ॥६
तयोः सम्प्राप्तयोरुष्ट्रः स्कन्धदेशममर्षणः।
उत्थायोत्क्षिप्य तौ दम्यौ प्रससार महाजनः ॥७

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

युधिष्ठिर ने कहा—हे पितामह ! यदि धन की कामना मे त्रस्त आ कोई कोई मनुष्य विभिन्न प्रकार के उद्योगों को करके भी धन न पा सके तो उसे सुख की प्राप्ति के लिये क्या करना चाहिये ? भीष्मजी बोले—हे भारत ! सब में समताका भाव, व्यर्थ परिश्रम का अभाव, सत्य बोलना, विषयों से विरक्ति और कर्म में आसक्ति का न होना—यह गुण जिसमें हैं, वही सुखी है। ज्ञानी वृद्ध पुरुष इन पाँच वस्तुओं को शान्तिप्रद मानते हैं। यही स्वर्ग है, यही धर्म और परम श्रेष्ठ सुख समझना चाहिये। इस विषय के जानने वाले पुरुष एक पुरातन इतिहास को कहते हैं। 'मङ्कि' नामक मुनि ने भोगों का त्याग होने पर जो उद्‌गार प्रकट किया, वही इस इतिहास में कहा गया है। मङ्कि द्वारा धन प्राप्ति की अनेक चेष्टाएँ करने पर भी वे अपने प्रयत्न में असफल हो जाते थे। अन्त में, जब थोड़ा-सा धन उनके पास शेष था, तब उन्होंने उस धन से दो बछड़े खरीद लिये। एक दिन उन दोनों बछड़ों को हल में जोड़ कर उन्होने हल चलाने में अभ्यस्त करना प्रारम्भ किया। जब वे बछड़े गाँव से बाहर चले तो एक बैठे हुए ऊँट को बीच में करके सहसा दौड़ पड़े। जब वे बछड़े ऊँट की गर्दन के पास पहुंचे तो ऊँट क्रोधित होकर उठ खड़ा हुआ और उन बछड़ों को ऊपर लटका कर बड़े जोर से भाग चला ॥१-७॥

ह्रियमाणौ तु तौ दम्यौ तेनोष्ट्रेण प्रमाथिना ।
म्रियमाणौ च सम्प्रेक्ष्य मङ्किस्तत्राब्रवीदिदम् ॥८
न चैवाविहितं शक्यं दक्षेणापीहितुं धनम् ।
युक्तेन श्रद्धया सम्यगीहां समनुतिष्ठता ॥९
कृतस्य पूर्वं चानर्थैर्युक्तस्याप्यनुतिष्ठतः ।
इमं पश्यत संगत्या मम दैवमुपप्लवम् ॥१०
उद्यम्योद्यम्य मे दम्यौ विषमेणैव गच्छतः ।
उत्क्षिप्य काकतालीयमुष्ट्रेणैव धावतः ॥११
मणी वोष्ट्रस्य लम्बेते प्रियौ वत्सतरौ मम ।
शुद्धं हि दैवमेवेदं हठेनैवास्ति पौरुषम् ॥१२

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि वाप्युपपद्येत पौरुषं नाम कर्हिचित् ।
अन्विष्यमाणं तदपि दैवमेवावतिष्ठते ॥१३

तस्मान्निर्वेद एवेह गन्तव्यः सुखमिच्छता ।
सुखं स्वपिति निर्विण्णो निराशश्चार्थसाधने ॥१४

बलात् अपहरण करने वाले उस ऊँट के द्वारा दोनों बछड़ों को ले जाते और मरते हुए देख कर मङ्कि मुनि कहने लगे। कैसा भी चतुर मनुष्य हो, यदि भाग्य में नहीं है तो युक्ति पूर्वक, भले प्रकार चेष्टा करने पर भी वह उस धन को प्राप्त नहीं कर सकता। मेरे पहिले किये गये प्रयत्नों में अनेक अनर्थ आड़े आ गये। उन अनर्थों के आने पर भी मैं धनोपार्जन के प्रयत्न में लगा रहा परन्तु, आज तो इन बछड़ों के कारण मुझ पर कैसी दैवी विपत्ति आगई है। मेरे बछड़ों को उछालता हुआ यह ऊँट विषम मार्ग पर दौड़ रहा है। काकतालीय न्याय से उन्हें गर्दन पर लटकाये हुए है। वे दोनों, मणियों के समान ही दिखाई दे रहे हैं। यह दैवगति ही तो है, हठ पूर्वक पुरुषार्थ करने से भी क्या होता है ? यदि कभी कहीं पुरुषार्थ को सफल होते हुए देखते हैं तो अन्वेषण करने पर उसमें भी दैव-संयोग ही कारण समझना चाहिये। इसलिये, सुख की कामना वाले पुरुष को धन आदि की ओर से विरक्त होना ही ठीक है। क्योंकि जो पुरुष धन की चेष्टा से निराश होकर विरक्त हो जाता है, वह सुख से शयन करता है ॥७-१४॥

अहो सम्यक् शुकेनोक्तं सर्वतः परिमुच्यता ।
प्रतिष्ठता महारण्यं जनकस्य निवेशनात् ॥१५
यः कामानाप्नुयात् सर्वान् यश्चैतान् केवलांस्त्यजेत् ।
प्रापणात् सर्वकामानां परित्यागो विशिष्यते ॥१६

नान्तं सर्वविधित्सानां गतपूर्वोऽस्ति कश्चन ।
शरीरे जीविते चैव तृष्णा मन्दस्य वर्धते ॥१७
निवर्तस्व विधित्साभ्यः शाम्य निर्विद्य कामुक ।
असकृच्चासि निकृतो न च निर्विद्यसे ततः ॥१८

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यदि नाहं विनाश्यस्ते यद्यं वं रमसे मया ।
मा मां योजय लोभेन वृथा त्वं वित्तकामुक ।।१९
संचितं संचितं द्रव्यं नष्टं तव पुनः पुनः ।
कदाचिन्मोक्ष्यसे मूढ धनेहां धनकामुक ।।२०
अहो नु मम बालिश्यं योऽहं क्रीडनकस्तव ।
किं नैवं जातु पुरुषः परेषां प्रेष्यतामियात् ।।२१

अहो ! जब शुकदेवजी जनक के राजभवन से गहन वन की ओर जाने लगे, तब उन्होंने कितनी श्रेष्ठ बात कही थी । जिस मनुष्य को उसकी सभी कामनाऐं प्राप्त हो जाती हैं और जो व्यक्ति इन कामनाओं का त्याग कर देता है, उन दोनों प्रकार के व्यक्तियों में कामना प्राप्ति की अपेक्षा उनका त्याग ही विशेष सुख देने वाला है । पहिले कभी किसी ने धन आदि की तृष्णा का अन्त नहीं पाया है । देह और जीवन के प्रति मूर्ख मनुष्य की तृष्णा बढ़ती ही जाती है । अरे, इच्छाओं के दास मन ! तू सब प्रकार की कामनाओं का त्याग कर और विरक्त होकर शान्ति धारण करले । धन प्राप्ति के प्रयत्नों में तू बारम्बार ठगा जाने पर भी उनसे विरक्त नहीं हो पाता । ओ धन की इच्छा वाले मन ! यदि तू मुझे नष्ट नहीं करना चाहता और मेरे साथ सुख पूर्वक रहना चाहता है तो मुझे व्यर्थ के लोभ में मत डाल । तेरे द्वारा बारम्बार द्रव्य का संचय किया जाने पर भी वह द्रव्य टिक नहीं सका । अरे, धन की कामना वाले मूर्ख मन ! तू कभी धन की इस तृष्णा और चेष्टा को छोड़ेगा भी ? यह मेरी कैसी मूर्खता है कि मैं तेरे हाथों का खिलौना बन गया । नहीं तो क्या कभी कोई विवेकी पुरुष, किसी का दास होना स्वीकार करेगा ? ।।१५-२१।।

न पूर्वे नापरे जातु कामानामन्तमाप्नुवन् ।
त्यक्त्वा सर्वसमारम्भान् प्रतिबुद्धोऽस्मि जागृमि ।।२२
नूनं ते हृदयं काम वज्रसारमयं दृढम् ।
यदनर्थशताविष्टं शतधा न विदीर्यते ।।२३
जानामि काम त्वां चैव यच्च किंचित् प्रियं तव ।
तवाहं प्रियमन्विच्छन्नात्मन्युपलभे सुखम् ।।२४

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

काम जानामि ते मूलं संकल्पात् किल जायसे ।
न त्वां संकल्पयिष्यामि समूला न भविष्यसि ॥२५

ईहा धनस्य न सुखा लब्ध्वा चिन्ता च भूयसी ।
लब्धनाशे यथा मृत्युर्लब्धं भवति वा न वा ॥२६

परित्यागे न लभते ततो दुःखतरं नु किम् ।
न च तुष्यति लब्धेन भूय एव च मार्गति ॥२७

अनुतर्षुल एवार्थः स्वादु गाङ्गमिवोदकम् ।
मद्विलापनमेतत्तु प्रतिबुद्धोऽस्मि संत्यज ॥२८

पहिले उत्पन्न हुए या भविष्य में होने वाले मनुष्य कामनाओं का अन्त न पा सके और न पायेंगे । इसलिये मैं सभी कर्मों का आयोजन छोड़ कर सावधानी पूर्वक जाग उठा हूँ । हे काम ! तेरा हृदय अवश्य ही लौह-निर्मित और अत्यन्त दृढ़ है । इसीलिये सैकड़ों अनर्थों वाला होने पर भी तेरे टुकड़े नहीं हो पाते । हे काम ! मैं तुझे भले प्रकार जानता हूँ और जो कुछ तुझे अच्छा लगता है, उसका भी मुझे ज्ञान है । मैं तेरा प्रिय करने के लिये चिरकाल से प्रयत्नशील रहा हूँ फिर भी मेरे मन में सुख का कभी अनुभव नहीं हो सका । हे काम ! मैं तेरे मूल को जानता हूँ, तू संकल्प से उत्पन्न होता है । अब कभी तेरा संकल्प नहीं करूँगा तो तेरा मूल ही नष्ट हो जायगा धन की कामना सुख देने वाली नहीं है । धन के मिल जाने पर भी उसकी रक्षा आदि की अत्यन्त चिन्ता लग जाती है । यदि वह एक बार प्राप्त होकर नष्ट हो जाता है तब तो उससे भयंकर दुःख की प्राप्ति होती है । उद्योग करने पर भी धन का मिलना, न मिलना निश्चित नहीं है । शरीर से एक दम जुट जाने पर भी धन नहीं मिलता तो इससे बढ़ कर और कौन-सा दुःख होगा ? यदि धन मिल भी जाय तो उतने से ही संतुष्टि नहीं होती, किन्तु अधिक धन की खोज में लग जाता है । हे काम ! यह धन स्वादिष्ट गंगाजल के समान तृष्णा को ही बढ़ाने वाला है । यह तृष्णा मुझे नष्ट करने वाली है, यह मैं भले प्रकार जान गया हूं । इसलिए, अब तू मेरा पीछा छोड़ दे ॥२२-२८॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

प्रहाय कामं लोभं च सुखं प्राप्तोऽस्मि साम्प्रतम् ।
नाद्य लोभवशं प्राप्तो दुःखं प्राप्स्याम्यनात्मवान् ॥२९
यद् यत् त्यजति कामानां तत् सुखस्याभिपूर्यते ।
कामस्य वशगो नित्यं दुःखमेव प्रपद्यते ॥३०
आत्मना सप्तमं कामं हत्वा शत्रुमिवोत्तमम् ।
प्राप्यावध्यां ब्रह्मपुरं राजेव स्यामहं सुखी ॥३१

एतां बुद्धिं समास्थाय मङ्किर्निर्वेदमागतः ।
सर्वान् कामान् परित्यज्य प्राप्य ब्रह्म महत्सुखम् ॥३२
दम्यनाशकृते मङ्किरमृतत्वं किलागमत् ।
अच्छिनत् काममूलं स तेन प्राप महत्सुखम् ॥३३

काम और लोभ को छोड़ कर, अब मैं प्रत्यक्ष रूप से सुखी हो गया हूँ। इसलिये मैं इन्द्रियों को न जीतने वाले पुरुष के समान लोभी बन कर अब दुःख नहीं उठा सकता। जो जिस-जिस कामना का त्याग करता है वह उस-उस कामना की ओर से सुखी हो जाता है। परन्तु, कामना के वश में रहने वाला सदा दुःखी रहता है। देह धारियों के सात शत्रु काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य और ममत्व में काम-रूप शत्रु ही सब से प्रबल है। उन सबके सहित इस महान् शत्रु को नष्ट कर मैं अविनाशी ब्रह्मनगरी में प्रतिष्ठित हो राजा के समान सुखी हो जाऊँगा। इसी बुद्धि के आश्रय से मङ्कि मुनि धन और भोगों से अनासक्त होगये और सभी कामनाओं को छोड़ कर उन्होंने परम आनन्द रूप ब्रह्म को प्राप्त कर लिया। बछड़ों के नष्ट होने रूप कारण से ही मङ्कि मुनि अमृतत्व को प्राप्त होगये। उन्होंने काम की जड़ ही नष्ट कर दी और इसी से उनको महान् सुख की प्राप्ति होगई ॥२९-३३॥

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books,Magazines,Articles,Stories,Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org